H·S·८

बापू
की
कारावास कहानी

•

सुशीला नैयर

सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

3G
152MO
2032

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

बापू की कारावास-कहानी

आगाखां महल में इक्कीस मास

डॉ० सुशीला नैयर

•

भूमिका-लेखक
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

•

१९८०

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन
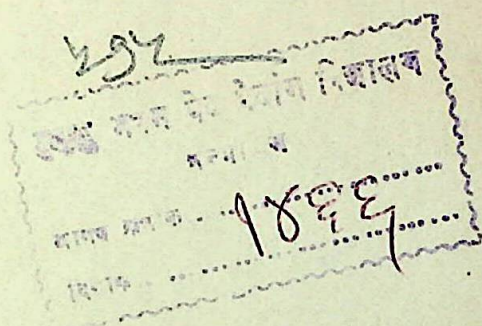
उन दो पुण्यात्माओं को

जिनका

कारावास में अंतिम बलिदान

अहिंसा के सैनिकों के लिए सदैव को

दीपस्तंभ बन गया

प्रकाशकीय

डॉ० सुशीला नैयर को वर्षों बापू के साथ रहने और उनका स्नेह व विश्वास पाने का दुर्लभ अवसर मिला था। आगाखां महल के बन्दी-काल में भी वे बापू के साथ थीं। महादेवभाई के देहावसान के बाद बापू ने सुशीलाबहन से कह कर प्रतिदिन की छोटी-बड़ी घटनाओं की डायरी रखवाई। उन्हीं की बदौलत आज यह पुस्तक पाठकों को सुलभ हो सकी है।

पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए हम देशरत्न डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के आभारी हैं। बापू ने लेखिका को वचन दिया था कि वे स्वयं भूमिका लिख देंगे, लेकिन ईश्वर को वह मंजूर न था।

पुस्तक को मण्डल द्वारा प्रकाशित कराने का श्रेय भाई श्यामलालजी (कस्तूरबा ट्रस्ट, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर) को है। अतः इस अवसर पर हम उनका तथा पुस्तक को आद्योपान्त ध्यानपूर्वक पढ़कर उसमें आवश्यक परिवर्तन-परिवर्द्धन कराने के लिए श्री प्यारेलालभाई का विशेष रूप से आभार स्वीकार करते हैं।

तीसरा संस्करण

पुस्तक का दूसरा संस्करण बहुत पहले समाप्त हो गया था, लेकिन हमें खेद है कि नया संस्करण होने में इतना विलम्ब हो गया।

हमें विश्वास है कि पहले दो संस्करणों की भाँति इसे भी पाठक चाव से पढ़ेंगे और हमें शीघ्र ही अगला संस्करण निकालने का अवसर प्राप्त होगा।

—मन्त्री

भूमिका

डॉक्टर सुशीला नैयर महात्मा गांधी के साथ कई वर्षों से बराबर रहा करती थीं। जब महात्माजी आगाखां महल में १९४२ से नजरबंद किये गए, तब से वहां बराबर रहीं। भारत के इतिहास में उन दिनों का बहुत बड़ा स्थान और महत्त्व है। किस तरह से वहां पर दिन विताये गए, किस तरह महादेवभाई देसाई और पूज्य बा का देहावसान हुआ और किस तरह जो घटनाएं हो रही थीं उनकी प्रतिक्रिया पूज्य बापू पर हो रही थी, यह सब कुछ बहुत विस्तारपूर्वक और सुंदर तरीके से डॉक्टर सुशीला ने इन पृष्ठों में लिखा है। यह महात्माजी से संबंध रखनेवाली उन पुस्तकों में से होगी जो मौलिक सामग्री दे सकेगी। इससे पाठक लाभ उठावेंगे और प्रेरणा पावेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

नई दिल्ली
११ जनवरी १९५०

राजेन्द्र प्रसाद

प्रस्तावना

यह डायरी मुझसे बापू ने लिखाई थी। १५ अगस्त की रात को महादेवभाई की मृत्यु के बाद एक मेज के खाने में से चंद कागज के पुर्जे मिले। उन पर महादेवभाई ने ९ अगस्त से लेकर रोज दिन की मुख्य घटनाएं अपनी याद ताज़ी करने के लिए दो-दो, चार-चार लाइनों में लिखी थीं। उसी कागज पर १४ तारीख के नीचे मैंने १५ अगस्त की, महादेवभाई के महाप्रयाण की घटना के बारे में मुख्य बातें नोट कर डालीं।

महादेवभाई के एकाएक चल देने के बाद सारी रात आंखों में कटी। पिछले चार साल की अनेक घटनाओं का विचार करती रही। पास में बापू की खाट थी। वे भी रात भर सो नहीं सके। १६ की सुबह की प्रार्थना के समय उन्होंने मुझ से कहा, "महादेव का जितना बोझ उठा सकती है, उठा ले। आज से तुझे नियमित डायरी रखना होगा। याद रख, एक दिन ये डायरियां छपनेवाली हैं।"

नियमित डायरियां रखने का मैंने प्रयत्न किया। जो भी लिखती थी वह बापू पढ़ जाते थे। जो सुधारने जैसा लगता सुधार डालते थे। कई बार मुझे बापू का इतना समय लेना खटकता था। मगर उनकी उदारता और प्रेम का पार न था। मुझे समझाते, "मैं तुझे इतनी मेहनत से सिखा रहा हूँ सो अन्य कारण से नहीं। मैं चाहता हूँ कि तू तैयार हो जाय और मेरा और प्यारेलाल का बोझ हल्का कर सके।" उन्होंने मेरे लिए अंग्रेजी मुहावरों की मेकमार्डी की किताब मंगाई, नेसफील्ड की ग्रामर, संस्कृत की डिक्शनरी और भंडारकर की पहली और दूसरी किताब और सिखाना शुरू किया। मगर सागर में अगाध जल होते हुए भी हरेक पात्र अपने माप के अनुसार ही ले पाता है। बापू के अगाध प्रेम और अपार मेहनत के बावजूद

मैं अपनी सब त्रुटियां निकाल न सकी। संस्कृत आज भी कच्ची है। अंग्रेजी भी बापू की परीक्षा में पूरी उतरे ऐसी नहीं। किसी पूर्व जन्म के पुण्य के कारण उस महापुरुष के चरणों की धूलि सिर चढ़ाने का अपूर्व अवसर मिला था। मगर उसी के साथ शायद पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण ही कई स्वभाव-दोष रहे और उस अपूर्व अवसर का पूरा उपयोग न कर पाई। बापू के पास मैं आई तो उनके आसपास के लोगों में सबसे छोटी थी। अपने घर में भी सब भाई-बहनों से छोटी होने के कारण लाड़ में पली थी। बापू ने भी बहुत लाड़ लड़ाया। मेरी लड़कपन की सीधी-सादी बातों का प्यार से जवाब देते। दलील करने में प्रोत्साहन देते और जितना वजन महादेवभाई की बात को देते, उतना ही मेरी बात को भी। कई बातें बापू से कहते-पूछते महादेवभाई या भाई को स्वयं संकोच होता तो मुझसे पुछवाते। परिणाम यह कि बापू के जीवनकाल में मैं समझ न पाई कि बापू जैसे महान आत्मा का मुझसी तुच्छ व्यक्ति पर इतना प्रेम करना और मेहनत लेना उनकी कितनी बड़ी उदारता थी। वे मेरे थे। मैंने पिता की तरह उन्हें माना, उनसे सीखने का, उनकी सेवा करने का प्रयत्न किया, उनसे फ़िज़ूल दलीलें भी कीं, उनका व्यर्थ समय लिया, उन्हें कष्ट दिया। एक दिन बापू नहीं होंगे, यह कभी खयाल ही नहीं आया। मगर बापू जानते थे, वे हमेशा नहीं रहनेवाले। सो वे मुझे सिखाने का प्रयत्न कर रहे थे कि अब मैं बड़ी हो गई हूं। कई बार किसी छोटी-मोटी घटना से मैं उद्विग्न हो जाती तो बापू कहते, "तेरी डाक्टरी की डिगरी छीन लेनी चाहिए। डाक्टर को स्थितप्रज्ञ होना चाहिए।"

दिल्ली में आखिरी दिनों में सुबह प्रार्थना के बाद वे अक्सर हम लोगों से चिट्ठियों का जवाब लिखवाते या लिखने को कहते। एक दिन मुझे कुछ पत्र दिये। एक पत्र था बापू के पुराने साथी के पुत्र का। उन्होंने पूछा था कि अब हिंद आज़ाद हो गया है। अब खादी पहनने की जगह विलायत से लाये कपड़े पहनने में क्या हर्ज, इत्यादि। वे विलायत से कुछ कपड़े लाये थे। नये खादी के कपड़े खरीदने की जगह विलायत से लाये कपड़े पहनें

तो कपड़े की वचत होगी। देश में कपड़े की कमी है, वगैरा-वगैरा। वापू कहने लगे, "इसे लिखो कि मुझसे पूछ-पूछकर कबतक चलोगे ? मैं तो कभी नहीं कहनेवाला कि खादी छोड़ो। सच्ची आजादी तो आई भी नहीं। मगर आजादी आ जाने पर खादी को छोड़ना जिस सीढ़ी से ऊपर चढ़े, उसे फेंक देने जैसा होगा। मगर मैं कहूं, वह मेरा धर्म, तुम्हारा नहीं। अपना पिता कहे. . .वह धर्म पुत्र भी स्वीकार करे, यह आवश्यक नहीं है। अपने-आपको सूझे वही व्यक्ति का धर्म है। हां, अपवाद एक है, गुरु। अगर गुरु कहे तो वह धर्म-पालन आवश्यक है।" मैंने कहा, "वापू, आप तो सबके लिए गुरु के स्थान पर हैं न, इसीलिए सब आपको पूछते हैं।" वापू वोले, "ऐसा हो तो गुरु के साथ दलील नहीं करनी पड़ती। उसका कहना अपने-आप हृदय में उतर जाता है।"

इतना कहकर वापू लेट गए। साढ़े तीन वजे उठकर प्रार्थना के वाद कुछ समय काम करके आधा-पौना घंटा फिर आराम लिया करते थे। मैंने उन्हें कंवल ओढ़ाया और पीठ और पांव दवाने लगी। उनकी आंखें वंद थीं। सिर पर सफेद खादी का रूमाल ओढ़े थे। मैं समझी सो गए हैं, मगर उनके मन में वही विचारधारा चल रही थी। क्षण भर वाद धीमे से बोले :

"तुझे एकलव्य की कथा याद है ?" इस वाक्य में वापू हम सबको जीवन भर का संदेश दे गए।

मगर डायरी की बात में यह दूसरी ही बात चल पड़ी। जेल से छूटने पर परिस्थिति ऐसी न थी कि जेल की डायरियां छपतीं। मगर १५ अगस्त १९४७ को परिस्थिति पलट गई। कुछ मित्रों ने डायरियां देखी थीं। उनका आग्रह था कि उन्हें अब छपाना चाहिए। सस्ता साहित्य मंडल के श्री मार्तंड उपाध्याय और हरिभाऊजी का खास आग्रह था। मैंने बापू से पूछा। उन्होंने 'हां' कहा। मैंने कहा, "मगर आपको प्रस्तावना लिखनी होगी।" बापू कहने लगे, "हां, वह तो है। मगर जल्दी तो नहीं है न !" मैंने कहा, "नहीं। दिसंबर के अंत तक लिख दें तो वस होगा।"

१३ जनवरी को मैं हवाई जहाज से अमरीका जानेवाली थी। उसी दिन बापू का दिल्लीवाला उपवास शुरू हुआ। मेरा हृदय प्रभु के प्रति कृतज्ञता से भरा था कि मेरा जाना लंबाया और मुझे रास्ते में से भागते-भागते लौटना नहीं पड़ा। जाना लंबाने के साथ दूसरा परिणाम यह निकला कि डायरियों का काम और लंबा गया। बापू प्रस्तावना भी न पढ़ पाये। मुझे पूरी पांडुलिपि सब फिर पढ़ जाना था, वह भी न हो सका।

३० जनवरी को वज्रपात हुआ। दुनिया कांप उठी। हम सब बिना खेवट की नौका के यात्री हो गए। जिस काम में जिसे बापू लगा गए थे, उसीमें उसने अपने दुःख को और अपने-आपको भूलने का प्रयत्न किया। डायरियों की तरफ देखने का भी समय न मिला।

मार्च में एक दिन सरदार पटेल से मिलने गई। उन्हें पटियाले का अपने काम का समाचार देना था। मैं पहुंची ही थी कि उन्हें हृदय का दौरा हुआ। ईश्वर को उनसे अभी और काम लेना था। खतरे में से बचाने का उसने मुझे निमित्त बनाया और उनकी थोड़ी-सी सेवा करने का मौका दिया। दौरा कम होने पर सरदार मुझसे कहने लगे, "मैं बापू के पास जा रहा था। वही शुक्रवार का दिन था। वही समय होनेवाला था। तूने मुझ क्यों रोक लिया।" मैंने कहा, "जी नहीं, मैं रोकनेवाली कौन? बापू ने ही आपके सामने दरवाजा बंद कर दिया है?" सरदार ने बापू की मृत्यु पर आंसू नहीं बहाये थे। अपना दुःख पी गए थे। आखिर वह फूट निकला। सरदार की सेवा में रहने के कारण डायरियों का काम फिर लंबाया। आखिर २५ जून को मैंने हिंदुस्तान छोड़ा। कुछ काम रास्ते में किया, कुछ वहां पहुंच कर और डायरियां पढ़कर डिप्लोमैटिक बैग में हिंदुस्तान भेजीं।

डायरियां बापू स्वयं पढ़ गये थे। मगर वे होते तो शायद कई विचार और अधिक स्पष्ट करते। पूंजीवाद और समाजवाद के बारे में उनके विचार खास महत्त्व रखते हैं। वे पूंजीवाद के शत्रु थे, पूंजीवादियों के नहीं। पूंजीपतियों के अनुभव का, ज्ञान का वे उपयोग करना चाहते थे।

मगर उनका कहना था कि पूंजीपति अपने-आप ट्रस्टी वन जावें और अपने ज्ञान और अनुभव का उपयोग अपने लिए या अपने कुटुंव के लिए नहीं, देश के लिए करें। जो लोग ट्रस्टीशिप को अच्छा न समझते हों या उनको इसकी सफलता के बारे में कुछ शंका हो उन्हें हिंदुस्तान की रियासतों का उदाहरण देखना चाहिए। एक जमाना था कि राजकोट जैसी छोटी-सी रियासत में लोकसत्ता कायम करने के लिए बापू को उपवास करना पड़ा था। मगर आज पांच सौ रियासतों के लोग अपने देश की खातिर अपनी सत्ता प्रजा के हाथों में दे चुके हैं। बापू का कहना था कि जव जनता एक चीज चाहती है, जनता में जाग्रति आ जाती है और वह दृढ़ता तथा शांति से अपनी मांग पेश करती है, तव सत्ताधारी राजा हो या पूंजीपति, विदेशी सरकार हो या देशी सरकार, उसे वह पूरी करनी ही पड़ती है। जो कानून प्रजा की मांग से वनते हैं उनका वोझ प्रजा पर नहीं पड़ता। जब कानून ऊपर से बनाये जाते हैं तव उनका वोझ प्रजा को कुचल सकता है। मगर प्रजा की मांग सच्ची होनी चाहिए। प्रजा को अपना धर्म समझना और उसका पालन करना चाहिए। वे मानते थे कि अपना धर्म पालन करनेवालों को ही हक मांगने का अधिकार है।

बापू की कल्पना के आदर्श सत्ताधीश कैसे होने चाहिए, यह विषय भी अत्यंत रोचक है। बापू की कल्पना में सत्ताधीश लगभग पूर्ण पुरुष होना चाहिए। उसे सर्वथा निःस्वार्थ, सत्यमय, अहिंसामय, सतत जाग्रत, संयमी, अपरिग्रही, आत्मत्यागी, सांसारिक लोभ और सत्ता-मोह से मुक्त, विनम्र और प्रजा का मुख्य चाकर बनकर रहनेवाला होना चाहिए। ऐसे सत्ताधीश को सत्ता खोजनी नहीं पड़ती, सत्ता अपने-आप उसे खोज लेती है।

दिल्ली में आखिरी दिनों में एक दिन सुवह घूमते समय बापू से मैंने पूछा, "बापू, आपने कहा है, आप दरअसल समाज-सुधारक हैं। विदेशी राज में आप अपना काम नहीं कर सकते थे, इसलिए आपको राजनीति में पड़ना

पड़ा। अब विदेशी राज चला गया है। क्या अब आप अपना समय रचनात्मक कार्य में लगावेंगे ? समाजसुधार में अपनी सारी शक्ति खर्च करेंगे ?" उन्होंने उत्तर दिया, "अगर मैं इस अग्नि-परीक्षा में से निकला तो मुझे पहले राजनीति को सुधारना होगा।" राजनीति सत्य और अहिंसा के आधार पर चल सकती है। धर्म से वह अलग या भिन्न नहीं, यह बापू की सबसे बड़ी शोध रही।

अगर जीवन का आधार सत्य और अहिंसा बनाना है तो बचपन से ही बच्चे की तालीम उसी तरह की होनी चाहिए। सो उन्होंने नई तालीम हमारे आगे रखी। जनसाधारण को आजाद होना है, लूट से, शोषण से बचाना है तो विकेंद्रीकरण का सिद्धांत स्वीकार करना होगा। छोटे-छोटे उद्योग-धंधों को बढ़ाना होगा। बड़ी-बड़ी फैक्टरियां बनाने से सत्ता थोड़े लोगों के हाथों में चली जाती है, वे सत्ताधारी भले ही सरकार हो या पूंजीपति। बापू को वह स्वीकार न था। सो उन्होंने हमारे सामने ग्राम्य जीवन, ग्राम्य उद्योग का आदर्श रखा, चर्खा रखा, सारा-का-सारा रचनात्मक कार्यक्रम रखा। अमरीका जैसे देश में, जहां लोग फैक्टरियों के पुजारी रहे हैं, विशाल उत्पादन पर चलते आए हैं, आखिर इस रास्ते का दोष देखने लगे हैं। रेडियो पर और दूसरे साधनों द्वारा फिर से देहात बसाने की बातें कर रहे हैं। एटम बम ने उनकी आंखें खोल दी हैं।

मुझे टेन्नेसी वैली अथॉरिटी प्रोजेक्ट (टी० वी० ए०) वालों ने उसकी नई तालीम (प्रोग्रेसिव एजूकेशन) की फिल्म बड़े उत्साह और गर्व से दिखाई। मैंने देखा कि बापू की बताई नई तालीम में इससे बहुत ज्यादा मसाला है। मगर अपने धन की कीमत समझेंगे, या न समझकर पश्चिम के रास्ते बह जायंगे, सो कौन कह सकता है ? एक छोटी-सी मिसाल लीजिए। हमारे देश में करीब-करीब सब माताएं अपने बच्चों को दूध पिलाती हैं। यहां पर वह छोड़ दिया गया था, अब उसके दुष्परिणाम देखकर फिर मां के दूध को वापिस लाने की भारी कोशिश हो रही है। यहां पर सब बच्चों को अस्पताल में मां से अलग नर्सरी में रखा जाता था, अब मां और बच्चे को

साथ रखने का प्रयत्न हो रहा है। हम अपने अस्पतालों में आज भी बच्चे को मां से अलग रखने के प्रयत्न में हैं। जिन चीज़ों को पश्चिम हानिकारक समझ कर छोड़ रहा है, उन्हें हम ग्रहण करने की कोशिश में हैं। बापू हमारे कान पकड़ कर आज रोक नहीं सकते। क्या हम उनके बताये मार्ग को भूल जायंगे ? क्या हम पश्चिमी धारा में बह जायंगे, या पश्चिम को और जगत को रास्ता बतानेवाले बनेंगे ? जगत हमारी तरफ देख रहा है और उसका कारण बापू हैं। बापू आज बुद्ध और ईसा की कोटि में गिने जाते हैं।

बापू की तपश्चर्या हमारी मार्गदर्शक बने ! ईश्वर हमें उस महापुरुष के देशवासी होने के लायक बनावे ! उनके बताये मार्ग पर चलने की शक्ति दे, यही प्रार्थना है !

बाल्टीमोर, मेरीलैंड,
अमरीका

—सुशीला नैयर

विषय-सूची

चित्र-सूची

लेखिका बापू के साथ

बापू
की
कारावास-कहानी

: १ :

प्रारंभिक

मुझे बापूजी के प्रथम दर्शन सन् १९२० के बाद हुए थे। असहयोग-आंदोलन शुरू हो चुका था और बापूजी दौरे पर गुजरात गये थे। मेरे पिताजी, मैं जब चंद महीने की थी, गुजर गए थे। बड़े भाई (प्यारेलालजी) एम० ए० में असहयोग करके बापू के पास साबरमती आश्रम में चले गए थे। मैं उस समय बहुत छोटी थी और अपनी माताजी तथा दूसरे भाई के साथ गुजरात के एक देहात में रहती थी। मुझे याद है कि एक दिन मैं रास्ते पर खेल रही थी कि वहां से कुछ लोगों को इकट्ठे जाते देखा। उनमें हमारी माता समान बड़ी, चचेरी बहन थीं, गांव की एक विधवा, जिन्हें सब लोग 'फूफी' कहते थे। मैंने उनसे पूछा, "आप कहां जाती हैं ?" वे कहने लगीं, "महात्मा गांधी के दर्शन करने।" महात्मा गांधी का अर्थ उस समय मेरे लिए था मेरे बड़े भाई। मैं भी उनके साथ चल दी। वे लोंग तांगे में जानेवाले थे, मगर तांगा नहीं मिला। सो मैं उनके साथ पांच मील पैदल चली। शायद कुछ समय के लिए किसी ने गोद में उठा लिया था।

गुजरात पहुंचे तो भीड़ का पार न था। किसी ने मुझे ऊंचा उठा कर बताया कि वह महात्मा गांधीजी हैं, मगर मैं उन्हें देख भी न पाई। उनके साथी एक जगह बैठे नाश्ता कर रहे थे। दूर से उनके दर्शन करके हम लोग वापिस आ गए। मेरे भाई उनमें नहीं थे। न भाई मिले, न महात्मा गांधी के दर्शन हुए। इससे निराशा होती, इतनी समझ अभी नहीं आई थी। खुशी-खुशी शाम को लौटे। उसके कुछ महीने या साल भर बाद हम लोग अपने चाचा के पास रोहतक गये हुए थे। वहां महात्माजी आये। भाई भी उनके साथ थे। महात्माजी स्त्रियों की सभा में भाषण करेंगे, यह सुनकर मेरी माताजी वहां गईं। उन दिनों हमारे घर में

पर्दा था। पुरुषों की सभा में स्त्रियां जायं, यह चाचाजी को पसंद न था। मगर स्त्रियों की सभा में उन्होंने जाने दिया। मां की उंगली पकड़े, भीड़ को चीरते हुए हम महात्माजी के पास पहुंचे। स्त्रियों की सभा में इतना शोर था कि महात्माजी भाषण नहीं कर सके थे। सो वे फंड इकट्ठा कर रहे थे। माताजी ने प्रणाम किया और कहा, "मैं प्यारेलाल की माता हूं। आपसे मिलना चाहती हूं।" उन्होंने उन्हें लाहौर में मिलने को कहा।

कुछ दिन बाद हम लोग उनसे मिलने लाहौर गये। स्व० चौधरी रामभज दत्त की कोठी पर बापू का डेरा था। माताजी गईं थीं बापूजी से अपना लड़का वापस मांगने; किंतु माताजी ने आकर बताया कि उनके सामने जाकर मुंह से कुछ और ही निकल गया और वे बोलीं, "आप मेरे लड़के को अधिक-से-अधिक पांच साल तक भले अपने पास रखिये, पीछे मेरे पास भेज दीजिए। मेरे पति के देहांत के बाद यही मेरे घर का दीया है।"

बापूजी ने क्या उत्तर दिया सो मुझे पता नहीं। मुझे माताजी बाहर छोड़ गईं थीं, इधर-उधर खेलकर थकने पर मैं चुपचाप बापूजी के कमरे में घुस गई। मेरे पांवों में जूते थे। भाई मुझे भगा देना चाहते थे मगर बापूजी ने रोका और जूते निकालकर आने की आज्ञा दी। आई तो उन्होंने मुझे अपनी गोद में बिठा लिया। वे मां से कह रहे थे कि तुम भी अपने लड़के के पास क्यों नहीं आ जातीं? मां ने कहा, "घर-बार छोड़कर कैसे आ सकती हूं?"

बापू ने हँसते-हँसते मगर करुण स्वर में उत्तर दिया, "मेरा भी घर था।" फिर मेरे सिर पर हाथ रखकर कहने लगे, "यह लड़की मुझे दे दो।" मां बोलीं, "यह तो मुझसे न हो सकेगा।" फिर बापू मेरे मिल के कपड़े की हँसी उड़ाने लगे। बोले, "देखो न, इस छोटी-सी लड़की को भी विदेशी कपड़ा पहनाया है! क्या बात है?" मां बचाव करने लगीं, "नहीं, स्वदेशी है।" उससे बापू को संतोष होने वाला नहीं था। मैं यह संवाद सुन रही थी। उस समय खद्दर की मीमांसा मेरी समझ से

बाहर थी, मगर न पहनने योग्य कपड़ा पहना है, यह समझकर मुझे अंदर-ही-अंदर बड़ी शरम-सी लग रही थी। मुझे उस समय यह स्वप्न में भी कल्पना न थी कि एक दिन बापू के निकटतम संपर्क में आने और सेवा करने का मुझे सौभाग्य मिलेगा।

जब मैं बारह साल की हुई तो मैट्रिक की पढ़ाई के लिए माताजी के साथ लाहौर चली आई। स्कूल में भर्ती हुए बिना मैट्रिक पास करके मैं कॉलेज में इंटर (साइंस) में दाखिल हो गई। भाई ने कई बार चाहा कि मुझे अपने साथ साबरमती आश्रम ले जायं; लेकिन माताजी राजी न होती थीं। उन्हें डर था कि लड़का तो गया, वह लड़की को भी अपने रास्ते लगाकर उसकी समझ उलटी कर देगा और अपनी तरह बेघरबार की बना देगा। वे कहती थीं, "लड़का तो भिखारी हुआ, किंतु लड़की भी भिखारिन बने, यह मुझसे सहन न होगा।"

किंतु प्रारब्ध के आगे किसी की नहीं चलती। १९२९ की गरमी की छुट्टियों में हम दिल्ली गये हुए थे। भाई वहां आये और फिर मुझे अपने साथ ले जाने की अपनी पुरानी बात चलाई। इस बार माताजी मान गईं। उस समय से लेकर मैं कभी-कभी गरमी की छुट्टियों में भाई के पास आश्रम में चली जाया करती थी।

लेडी हार्डिंग कॉलेज से डॉक्टरी का इम्तहान पास करके मैं शिशु-पालन और प्रसूति विषयक विशेष शिक्षा के लिए कलकत्ते चली गई। इत्तिफाक से बापूजी उस समय बंगाल के नजरबंदियों को छुड़ाने के लिए कलकत्ते आये। श्री शरत बोस के यहां वुडबर्न स्ट्रीट पर उनको ठहराया गया था। वहां कांग्रेस महासमिति (ए० आई० सी० सी०) की बैठक भी थी। बापू को रक्तचाप बढ़ने की शिकायत तो रहती ही थी, ए० आई० सी० सी० की बैठक में उन्हें बहुत थकान लगी। उसी रोज वर्धा वापस जा रहे थे। सामान वगैरा स्टेशन पर जा चुका था। बापूजी बैठक से बाहर आये। गद्दी पर बैठे फल के रस का गिलास हाथ में लिया, इतने में उन्हें चक्कर-सा आ गया। मैंने तुरंत डॉ० विधानचंद्र राय वगैरा को बुलाया। मैंने मां से सुना था कि लहू का दबाव बढ़ने पर भी मेरे पिताजी बाहर चले

गए थे। रास्ते में उनकी नस फूट गई थी और वे चल वसे थे। सो मैं समझी कि बापूजी इतने थके हैं, जरूर लहू का दबाव बढ़ा होगा। उन्हें आज सफर नहीं करना चाहिए। डॉ० विधानचंद्र राय ने देखा तो सचमुच लहू का दवाव बहुत बढ़ा था। सो उस दिन बापूजी का जाना रुक गया। कुछ दिनों वाद जाने का समय आया तव भी उन्हें अकेले सफर करने की इजाजत देने की उनकी हिम्मत न हुई। मैं वहां भाई और महादेवभाई से मिलने जाया करती थी। आखिर यह तय हुआ कि मैं उनके साथ देखभाल के लिए डॉक्टर की हैसियत से जाऊ और डॉ० विधान को सूचित करती रहूं। चुनांचे मैं एक महीने की छुट्टी लेकर उनके साथ सेवाग्राम गई। वहां से वापू को जुहू ले जाना पड़ा। मेरी छुट्टी खत्म हो गई थी। और मांगी। पीछे वापस जाने की वात छोड़कर वहीं रह गई।

वापू राजकोट-सत्याग्रह के समय राजकोट जाते समय मुझे निजी डॉक्टर की उपाधि देकर अपने साथ राजकोट ले गए। मैंने इसमें अपना परम सौभाग्य समझा। मगर साथ ही झेंप भी लगती थी—कॉलेज से अभी निकली एक लड़की और महात्मा गांधी की डॉक्टर! अखवार वाले खबर पूछने आते तो मझे उनसे वात करते नहीं बनता था, मगर डॉ० विधान राय, डॉ० गिल्डर और डॉ० जीवराज मेहता अपनी उदारता और व्यवहार से मेरी झेंप दूर कर देते थे। वाद में विचार करते हुए बापूजी को लगा कि उनका डॉक्टर तो केवल ईश्वर ही हो सकता है। डॉक्टरी सेवा का वे उपयोग कर लेते थे; किंतु अपना डॉक्टर बनाकर ही किसी को अपने साथ रखना वे अपने जीवन-सिद्धांत के विरुद्ध मानते थे। उन्होंने कहा, "मेरा डॉक्टर तो केवल भगवान ही है, तू तो मेरी लड़की है। लड़की के पास डाक्टरी ज्ञान है तो वह उसके द्वारा अपने बाप की सेवा भी करेगी, किंतु मैं तेरे डॉक्टरी ज्ञान का उपयोग गरीवों की सेवा के लिए ही करना चाहूंगा।" पर यह तो आध्यात्मिक वात थी। जहांतक वाह्य संबंध था, उसमें भी परिवर्तन न हुआ और जनता और जगत के लिए मैं उनकी निजी डॉक्टर ही रही। इसका एक वड़ा विचित्र परिणाम आगे जाकर आया।

मैं एम० डी० की परीक्षा के लिए फिर दिल्ली चली गई। अपने पुराने लेडी हार्डिंग कॉलेज में काम ले लिया और साथ-साथ कुछ अनुसंधान का कार्य किया और एम० डी० की परीक्षा पूरी की। मई मास (१९४२) में यह काम पूरा हुआ, लेकिन मेरी नौकरी की मुद्दत तो अगस्त के मध्य में पूरी होती थी। मेरा इरादा था कि मैं बंबई में होने वाली ए० आई० सी० सी० की बैठक पूरी होने के बाद सेवाग्राम जाऊंगी; किंतु ४ या ६ अगस्त को अकस्मात एक मित्र के साथ, जो सरकारी नौकरी में थे, मेरी मुलाकात हो गई। वे पूछने लगे, "क्या तुम ए० आई० सी० सी० की बैठक में जाने वाली हो?" मैंने कहा, "मैं तो बैठक पूरी होने के बाद सेवाग्राम जाऊंगी।" वे मुंह चढ़ाकर बोले, "तब वहां क्या होगा?" मुझे खटका लगा; किंतु बहुत पूछने पर भी उन्होंने और कुछ न बताया। बंबई की ए० आई० सी० सी० की बैठक में 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव आने वाला था। अफवाह गरम थी कि परिणाम में बापू और कांग्रेस के सब बड़े-बड़े नेता तुरंत गिरफ्तार कर लिये जायंगे। मैं सीधी अपने प्रिंसिपल के पास आई और बोली, "आप मुझे अभी गरमी की लंबी छुट्टी दे देंगी तो मुझे अच्छा लगेगा। कुछ गड़बड़ होने से पहले मैं बंबई पहुंच जाना चाहती हूं।"

मेडिकल कॉलेज में गरमी की छुट्टी बारी-बारी से मिलती है, कुछ को शुरू में और कुछ को आखिर में। उन्होंने सहानुभूति के साथ कहा, "हां, जरूर हो आओ।" फिर फौरन ही उन्होंने छुट्टी की अर्जी का फार्म मेरे पास भेज दिया और कहलवाया, "आज ही दरख्वास्त लिखकर भेज दो।"

यह हुई पांच अगस्त की बात। ७ अगस्त को मैं दिल्ली से बंबई को रवाना हो गई।

: २ :

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव

बिड़ला-हाउस, बंबई
८ अगस्त १९४२

८ अगस्त को शाम के करीब ५॥ बजे बांबे सेंट्रल पर गाड़ी से उतरी तो स्टेशन पर मुझे लिवाने के लिए कोई आया नहीं था। मैंने सोचा, बिड़ला-हाउस टेलीफोन करके किसी को बुला लूं। पब्लिक टेली-फोन का उपयोग करना मैं जानती नहीं थी, इसलिए पूछताछ दफ्तर के बाबू से पूछकर वहां के टेलीफोन का इस्तेमाल करने के लिए भीतर गई। नंबर देख रही थी कि इतने में पुलिस और मिलिट्री के कोई दस-बारह अफसर टेलीफोन करने आये। मुझे उन सबके चेहरे तने हुए लगे। मन में आशंका हुई, कहीं गिरफ्तारियां शुरू तो नहीं हो गईं!

टेलीफोन पर मुझे कोई जवाब नहीं मिला। मैं स्टेशन से बाहर आई। दो ही टैक्सी खड़ी थीं। टैक्सीवालों ने किराये पर तंग करना शुरू किया। आखिर एक शरीफ आदमी ने स्टेशन के बाहर जाकर मीटर के हिसाब से टैक्सी ला दी। मैंने उनसे पूछा, "बापू को पकड़ा तो नहीं है न?" उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, अभी तो शांति है।"

बिड़ला-हाउस पहुंची तो भाई (प्यारेलालजी), बापू, महादेवभाई, सब कांग्रेस महासमिति की बैठक में थे। अम्तुस्सलामबहन,[1] प्रभावतीबहन[2]

---

१. आश्रम की एक मुसलमान बहन, जो बरसों गांधीजी के साथ रहीं और उनकी मृत्यु के बाद हिंदू-मुस्लिम-एकता और खादी के कार्य में लगी हैं।

२. बिहार के चम्पारन-सत्याग्रह में गांधीजी के पुराने साथी और बिहार के सुप्रसिद्ध नेता श्री ब्रजकिशोर बाबू की लड़की और समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण की पत्नी, जिन्हें बाल्यावस्था से ही उनके पिता ने गांधीजी को सौंप दिया था और जो आश्रम में उनके साथ रहती थीं।

और वा घर पर थीं। वाद में लीलावती वहन[1] भी आ गईं। यहां मेरा तार नहीं पहुंचा था, इसलिए मुझे देखकर सवको आश्चर्य हुआ।

भाई को मैंने फोन पर वुलाया। वहुत मुश्किल से मिले। आये तो मेरी आवाज और नाम सुनकर कहने लगे, "मैं तो अभी-अभी महादेवभाई के साथ शर्त लगाकर आया हूं कि तुम आ नहीं सकतीं।" मैंने वैठक में जाने की इच्छा प्रकट की। झटपट स्नान किया। खाना परोसा ही गया था कि मोटर लेने को आ गई। दो केले हाथ में लेकर मोटर में जा बैठी। पंडाल में पहुंची तो 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पर मत लिये जा रहे थे। भाई मुझे मंच पर ले गये। मैंने बापू को दूर से देखा। महादेवभाई मुझे देखकर भाई से कहने लगे, "उससे कहो, तुम कैसे शर्त हारे!"

'वोटिंग' पूरा हुआ। वापू का भाषण शुरू हुआ। बापू पूरे २। घंटे एक सांस में बोले। अद्‌भुत भाषण था और वापू की वाणी में और दलील में अद्‌भुत शक्ति थी! भाषण पूरा हुआ। बापू उठे। मैंने प्रणाम किया। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई। वोले, "तो तू ठीक मौके पर पहुंची।" वल्लभभाई मिले। कहने लगे, "कल आती तो एक और काम का भाषण सुन सकती।" पिछले दिन वापू का जो भाषण हुआ था, उसी की ओर सरदार का यह इशारा रहा होगा।

बापू, वल्लभभाई, महादेवभाई और मणिवहन के साथ मैं मोटर में बैठी। भाई दूसरी मोटर में आये। बापू समय पूछने लगे। उस समय रात के सवा दस वजे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ। उनको कल्पना तक नहीं थी कि वे सवा दो घंटे वोले हैं। कहने लगे, "जव मैं वोलने को उठा था, मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कहने वाला हूं। अव मेरी समझ में आ रहा है कि कल रात मैं क्यों नहीं सो सका। मेरे मन पर वोझ था कि इतना कहना है, कैसे कह पाऊंगा। मगर मैंने सोचा, अगर ईश्वर को मुझसे कुछ कहलाना होगा तो वह मेरी जबान खोल देगा, वरना मैं तो इस वात के लिए भी तैयार

---

१. एक विधवा कन्या, जिसने गांधीजी और आश्रम को अपना लिया था।

था कि सिर्फ यह कहकर बैठ जाऊं कि 'मुझे कुछ सूझता नहीं, मैं आपसे क्या कहूं?' लेकिन ईश्वर ने मेरी जबान खोल दी। मैं मानता हूं कि ईश्वर ही मुझसे बुलवा रहा था। क्षणभर के लिए तो मुझे यह भी डर लगा कि कहीं आज मेरा खातमा तो नहीं हो जायगा! लेकिन फिर सोचा, ईश्वर को मुझसे काम करवाना है तो वह खुद शक्ति देगा और उसने दी भी। आज मैंने करीब-करीब सभी मतलब की बातें कह डाली हैं। अब कल की आम सभा में मेरे लिए कोई खास नई बात कहने को रह नहीं जाती। अब तो सिर्फ दोहराने की बात है। बाद में उन्हें याद आया कि 'इंडियन सिविल सर्विस' को जो दो शब्द आज कहने चाहिए थे, सो कहना भूल गए थे। बोले, "कोई हर्ज नहीं। कल सही। अभी तो यह सब सुनाने के बहुत मौके आने वाले हैं।"

बापू ने सोचा था कि आज सभा से लौटते वक्त श्री मथुरादास-भाई[१] को देखने जायंगे। लेकिन रात इतनी हो गई थी कि इरादा छोड़ना पड़ा। बोले, "कल समय निकाल सका तो जाऊंगा। मगर कल समय निकालना कठिन है।" इतना कहकर फिर सोचने लगे कि कल क्या-क्या करना है। सुबह कार्यकर्त्ताओं की सभा है, बाद में वर्किंग कमिटी की बैठक होगी, फिर यह और वह, और शाम को पब्लिक मीटिंग वगैरा-वगैरा।

घर लौटे तो प्रार्थना के लिए आये हुए कुछ लोग अभीतक बैठे थे। प्रार्थना हुई। एक गुजराती बहन ने भजन गाया—"मारूं माथुं नमाव प्रभु तारा चरणरजनी तले।"[२]

महादेवभाई ने इस बहन को गुरुदेव के कुछ गीतों का गुजराती अनुवाद करके दिया था। यह उन्हीं में से एक था। उन्होंने खुद ही इन गीतों

---

१. गांधीजी के भतीजे सहकर्मी, बाद में बंबई कारपोरेशन के मेयर हुए। गांधीजी के साथ उनके संस्मरणों के लिए देखिए "बापू की प्रसादी" (गुजराती संस्करण, नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद)।

२. हे प्रभो! अपने चरणों की रज के तले मेरा सिर झुका।

की राग वैठाई थी। वहुत मीठे स्वर में उस वहन ने यह भजन गाया था। महादेवभाई भी गा रहे थे।

जव वापू सोये, साढ़े ग्यारह वज रहे थे। मैं भाई के साथ टहलने लगी। भाई ने मुझे उस समय की स्थिति के वारे में कुछ वातें वताईं। फिर हम दोनों महादेवभाई के कमरे में गये। वे अभी जागते थे।

मैं वंवई कैसे आई यह सुनकर सव लोग मेरा मजाक उड़ाने लगे। वोले, "कैसी घवराकर भाग आई ? क्या सरकार इतनी मूर्ख होगी कि महासमिति की वैठक हो जाने दी, लोगों में उत्साह भरने दिया और अव पकड़ ले!"

डॉक्टर जीवराज मेहता का फोन आया। पूछ रहे थे कि कल हम किस वक्त वापू को देखने आयें ? मैंने वापू की डॉक्टरी परीक्षा की थी। आज के इतने परिश्रम के वाद भी वापू के खून का दवाव सिर्फ १८६ और ११६ था। हमेशा जितना वढ़ा करता है, उसके मुकावले आज का यह दवाव वहुत अच्छा कहा जा सकता है। फिर भी डॉक्टर मेहता और डॉक्टर गिल्डर को तो कल आना ही था। वापू से पूछकर उनको दोपहर दो वजे का वक्त दिया। वाद में जव डॉक्टर मेहता ने डॉक्टर गिल्डर को फोन किया तो वे हँसकर वोले, "कल दो वजे किसे देखने जाओगे ?" मगर किसी ने नहीं माना कि सचमुच वापू पकड़े जायंगे।

एक वजे मैं अपने विस्तर पर गई। भाई महादेवभाई के साथ कुछ देर वातें करते रहे। शहर में वहुत जोरों की अफवाह थी कि वापू को सुवह ही पकड़ लेंगे। फोन-पर-फोन आ रहे थे। भाई ने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, कल हम क्या करेंगे ?" महादेवभाई वोले, "फ़िक्र क्यों करते हो, हाथ-में-हाथ मिलाकर हम एक साथ वाहर निकल पड़ेंगे और भगवान हमको कुछ-न-कुछ करने की शक्ति दे ही देगा।"

: ३ :

गिरफ्तारियां

विड़ला-हाउस, बंबई
९ अगस्त '४२

सुबह चार बजे जब सब प्रार्थना में आये तो महादेवभाई ने कहा, "रात दो बजे तक फोन मुझे सताता रहा। दो बजे बाद मैं सोया। बस, यही चल रहा था कि गिरफ्तारी का सारा इंतजाम हो गया है। वे पकड़ने आ रहे हैं, वगैरा।" इस पर बापू कहने लगे, "नहीं, कल के मेरे भाषण के बाद तो मुझे गिरफ्तार कर ही नहीं सकते। मैं उनको इतना मूर्ख नहीं मानता।" फिर बोले, "अगर इसके बावजूद भी मुझे पकड़ें तो इसका मतलब यह होगा कि उनके दिन पूरे हुए हैं।"

प्रार्थना के बाद मैं आकर बिस्तर पर लेट गई। तीन रात से रात को दो-एक घंटे की नींद मिली थी। बापू शौच को गये। मैंने भाई से कहा, "जब बापू घूमने को तैयार हों, मुझे जगा दीजिए।" मैंने अभी चादर ओढ़ी ही थी कि महादेवभाई अंदर आये और बोले, "बापू, बापू, पकड़ने आ गए!" बापू को गुसलखाने में ही खबर दी गई। उन्होंने पुछवाया, "तैयारी के लिए कितना समय देंगे?" पुलिस कमिश्नर ने कहा, "आध घंटा।" बापू ने वारंट देखे। महादेवभाई, मीराबहन और बापू के नाम भारत-रक्षा कानून के मातहत नजरबंदी के नोटिस थे। भाई और बा के लिए लिखा था कि वे भी चाहें तो बापू के साथ उन्हीं शर्तों पर चल सकते हैं। बापू ने बा से पूछा, "तू न रह सकती हो तो चल। लेकिन मैं खुद तो यह चाहता हूं कि तू बाहर रह, सेवाग्राम जा, मेरा काम कर।" भाई से भी यही कहा। बोले, "मैं तो यह कहूंगा कि यों ही मत आओ। काम करते-करते पकड़ लें तो बात अलग है।" फिर एक आदेश दिया, हर एक सिपाही अपने कंधे पर 'करेंगे या मरेंगे'[1] का बिल्ला लगा ले ताकि

---

१. Do or die.

आजादी का एक-एक सिपाही जो अहिंसात्मक रूप से मरे, उस पर निशानी के तौर पर ये शब्द 'करेंगे या मरेंगे' मौजूद हों।"

बापू ने नाश्ता किया। बिड़लाजी वगैरा ने कुछ सवाल पूछे। बापू ने कहा, "इन सवालों का उत्तर कल शाम के भाषण में धनिकों के लिए मैंने जो कहा है, उसमें आ जाता है।" बाद में घनश्यामदासजी ने कहा, "बापू, उपवास की जल्दी न कीजियेगा।" बापू ने कहा, "नहीं, मैं जल्दी करना ही नहीं चाहता। जहां तक हो सकेगा, टालूंगा।"

फिर प्रार्थना हुई। महादेव भाई ने 'हरि ने भजतां हजी कोई नी लाज जती नथी जोई रे'[1] भजन गाया। फिर रामधुन हुई। अम्तुस्सलाम बहन ने कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं। बापू ने दो-चार किताबें गीताजी, भजनावली, अरबी प्राइमर वगैरा इकट्ठी कीं और धनुष-तकली, पूनी का बंडल आदि अपने साथ लिये। अम्तुस्सलाम बहन ने कुरानशरीफ दिया। महादेवभाई ने अपना सामान इकट्ठा किया। मीराबहन सबसे आखिर में तैयार हुईं। हम सबने बापू को प्रणाम किया। मैंने पूछा, "मुझे पकड़ें तो क्या मैं आपके पास आने की मांग कर सकती हूं?" बापू बोले, "हां, जरूर। तुम कह सकती हो, 'मैं उनकी मेडिकल एडवाइजर (डॉक्टरी सलाहकार) रही हूं। मुझे उनके पास भेजिये।" भाई को उदास देखकर महादेवभाई बोले, "उदास क्यों होते हो? फर्क इतना ही है न कि हम सवेरे वहां पहुंचेंगे और तुम शाम को। और हम तो बिना कुछ किये ही जा रहे हैं, तुम कुछ कर के आओगे।"

बापू ने कहा था कि शाम की आम-सभा जरूर होनी चाहिए। इसलिए अंदाज यह था कि भाई सभा में बोलेंगे और वहीं गिरफ्तार कर लिये जायंगे।

बापू अपनी लकड़ी लेकर चल पड़े। श्रीमती रामेश्वरदास बिड़ला ने उन्हें कुंकुम का तिलक लगाया। दो मोटरें तैयार थीं। अगली में बापू

---

१. हरि का भजन करते हुए किसी की लाज गई हो ऐसा नहीं देखा गया।

और मीराबहन बैठीं, पिछली में महादेवभाई। ऊपर से सब हँसते थे, मगर सबके मन भरे थे। सब जानते थे कि इस बार की लड़ाई भीषण होगी। कोई नहीं जानता था कि फिर कौन, किससे, कब और कहां मिल सकेगा या मिलना होगा कि नहीं।

रात सभा से लौटने के बाद बावला[1] और कनु महादेवभाई के साथ मजाक कर रहे थे। बावला ने कहा "काका, अब हम आजाद हैं। बापूजी ने कह दिया है, अब सब आजाद हैं। सो अब हम आपको भी नहीं मानेंगे।" महादेवभाई हँसकर बोले, "लेकिन तुझे मेरी माननी ही कब पड़ती है! तुझे तो अपनी मां की ही बात माननी पड़ती है।" मानो भगवान ही उनसे यह बुलवा रहा था। कौन जानता था कि एक हफ्ते के अन्दर बावला को केवल अपनी मां की ही मानने की आवश्यकता रह जायगी!

जब पुलिस कमिश्नर बापू को पकड़ने आया, पौने छः बजे थे। बापू ने तैयारी में आध-घंटे से दो-तीन मिनट ज्यादा लिये थे, उसके लिए माफी मांगते हुए वे बोले, "I am sorry, I have kept you waiting a couple of minutes longer."[2]

चलते समय बिड़लाजी ने कहा, "ये लोग बकरी का आध सेर दूध मांगते हैं।" बापू ने हँसकर जवाब दिया, "चार आने रखवालो और दे दो।"

जब पुलिस आई थी, सन्नाटा था। मगर कौन जाने कहां से बात-की-बात में वहां एक हुजूम इकट्ठा हो गया। जब मोटर चली तो बिड़ला-हाउस के रास्ते पर लोगों की खासी भीड़ मौजूद थी। टेलीफोन कटे पड़े थे। रात को दो बजे से ही काट दिये गए थे। इसीलिए महादेवभाई दो बजे के बाद सो सके थे। फिर भी बापू की गिरफ्तारी की खबर शहर में बिजली की तरह फैल गई। बिड़ला-हाउस पर दल-के-दल लोग इकट्ठा होने लगे। कार्यकर्त्ता, मित्रगण, अखबारों के संवाददाता वगैरा सब चले आ रहे थे।

---

१. महादेवभाई का लड़का नारायण देसाई।

२. "अफ़सोस है कि मैंने आपको दो-एक मिनट ज्यादा रोका।"

हम लोग किसी भी वक्त पकड़े जा सकते हैं, इस खयाल से हमने अपना सामान बांधना शुरू कर दिया। मैंने थोड़ा-सा जरूरी सामान अपने बिस्तरे में और अटैची केस में रख लिया। मेडिकल बैग (दवाओं की संदूकची) भी साथ में रख ली। मगर भाई को सामान बांधने की फुरसत कहां! एक के बाद एक मिलने वाले आ रहे थे। मुश्किल से शाम तक वे अपना सामान बांध सके।

निश्चय हुआ कि बा भी आम सभा में भाषण करें। बा ने एक संदेश[1] बहनों के नाम और एक भाइयों और बहनों के नाम मुझे लिखवाया। भाई ने भी अपना एक छोटा-सा भाषण लिख डाला। उसमें आज सवेरे की घटना का वर्णन था और जनता से यह प्रार्थना की गई थी कि अब बापू को जेल से वापस लाना उसके हाथ में है। इतना सब याद रखें कि बापू दो चीजें अपने जीते-जी बरदाश्त नहीं कर सकेंगे—एक यह कि हिन्दुस्तान के लोग नामर्द बन कर बैठ जायं और दूसरे यह कि वे पागल बनकर अंग्रेज मर्दों, औरतों और बच्चों को काटना शुरू कर दें।

कोई दस बजे टेलीफोन आया। वर्धा का 'ट्रंक कॉल' था। भाई फोन पर बात करने लगे। किशोरलालभाई के साथ बात हो रही थी। भाई ने शुरू किया, "आज सवेरे. . .।" बस, सेंसर ने लाइन काट दी। बाद में दोपहर को फिर फोन मिला। वर्धा में पुलिस भाई की राह देख रही थी। विनोबा गिरफ्तार किये जा चुके थे। दूसरे भी, जिन्होंने पिछले सत्याग्रह में कुछ भी भाग लिया था, पकड़ लिये गए थे। भाई के नाम वारंट तैयार था। हमारा इरादा था कि आज यहां न पकड़े गए तो

---

१. संदेश इस प्रकार था—"महात्माजी तो आपसे बहुत कुछ कह गये हैं। कल उन्होंने ढाई घंटे तक महासमिति की बैठक में अपने दिल की बातें कहीं। उससे ज्यादा और क्या कहा जाय? अब तो उनके आदेशों पर अमल ही करना है। बहनों को अपना तेज दिखाना है। सब कौमों की बहनें मिलकर इस लड़ाई को सफल बनावें। सत्य और अहिंसा का मार्ग न छोड़ें।"

कल शाम को वर्धा जायंगे। माताजी वहां हमारी राह देख रही थीं। इस खबर ने जरा सोच में डाला। मगर सोच करने के लिए भी ज्यादा वक्त नहीं मिला। शाम को सरकार ने हमारे लिए फैसला कर दिया।

चलते समय महादेवभाई कल शाम की सभा के बापूवाले भाषणों के नोट्स भाई को दे गये थे। कहा था, "इन्हें तुम ठीक करके आज ही अखबारों को दे देना।" भाई ने सोचा था कि स्नान के बाद कमरा बंद करके बैठ जायंगे और लिख डालेंगे। मगर वक्त कहां से मिलता! आखिर वह काम भाई ने किसी और को सौंपा। इतने में सादिकअली आए।[1] भाई ने उन्हें कुछ सूचनाएं दीं और एक सर्व-सामान्य सूचना-पत्र टाइप करने के लिए कहा। वे उसमें लग गये। मृदुला बहन[2] आईं और कुछ छपवाने को ले गईं। सुबह कार्यकर्त्ताओं की सभा के लिए लोग आये थे, बिड़ला जी को उनके घर पर मीटिंग करने में हिचकिचाहट थी, इसलिए कुछ लोगों को लगा कि बिड़लाजी पर इस सभा का बोझ अब नहीं डालना चाहिए। सभा दूसरी जगह रखी गई मगर आखिर में यह तय हुआ कि अभी किसी और जगह भी कार्यकर्त्ताओं को इकट्ठा करना ठीक न होगा ताकि कहीं सब एक साथ पकड़े न जायं। अच्छा यह होगा कि वे सब अपने-अपने मुकाम पर चले जायं और वहां काम करें। उनके पास लिखित सूचना पहुंचा दी जायगी। सो भाई कार्यकर्त्ताओं की टुकड़ियों में जाकर उनसे पांच-पांच सात-सात मिनट बातें करके उन्हें यह सब समझा विदा कर आए।

शहर से आने वाले लोग बता रहे थे कि सारे शहर में आग-सी फैली हुई है। समूची वर्किंग कमिटी को, बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी के खास-खास कार्यकर्त्ताओं को और स्वयंसेवक दल के मुखियाओं को सुबह ही पकड़ लिया गया था। सरकार ने हड़ताल के खिलाफ दो से तीन साल की कैद की सजा का ऐलान किया था। फिर भी शहर में करीब-करीब

---

१. कांग्रेस महासमिति के आफिस सेक्रेटरी।

२. अहमदाबाद के मिल-मालिक श्री अंबालाल साराभाई की पुत्री।

मुकम्मल हड़ताल थी। दूकानें बंद, ट्राम बंद, बस-र्सावस बंद! सुबह आठ बजे ग्वालिया टैंक पर झंडावंदन था। वहां तीन बार अश्रुगैस छोड़ी गई, लाठी-चार्ज किया गया, तब कहीं मुश्किल से लोगों को तितर-बितर किया जा सका। लेकिन थोड़ी देर बाद वे फिर जमा हो गए। मृदुला-बहन आईं। उनके हाथ पर लाठी के तीन निशान थे। और भी कई स्वयंसेवक व कार्यकर्त्ता लाठी खाकर आये। टिंक्चर आयोडिन की मेरी छोटी-सी शीशी खाली हो गई।

यह तय हुआ कि शाम को बा के साथ मैं, भाई और खुरशेदबहन[1] सभा में जायं। बा के पकड़े जाने पर भी मैं उनके नजदीक ही रहूं, ताकि उनकी संभाल रख सकूं। इसलिए मुझे उनके साथ रहने को कहा गया। बा की सेहत इतनी नाजुक थी कि एक डॉक्टर का उनके साथ रहना निहायत जरूरी समझा गया और चूंकि मैं बम्बई में किसी को जानती नहीं थी इसलिए यह तय पाया गया कि खुरशेदबहन भी हमारे साथ रहें।

सुबह चलते समय बापू फिर कह गये थे, "तू मथुरादास को जरूर देख आना।" वे तो कल ए० आई० सी० सी० से लौटते हुए ही उन्हें देखने जाना चाहते थे, पर बहुत देर हो गई। सो आज जाने का उनका विचार था; पर हो कुछ और ही गया। सो मैं खुरशेदबहन को साथ लेकर उनके घर गई। मथुरादासभाई बहुत खुश हुए। फिर आवेश में आकर बोले, "ये अंग्रेज तो राक्षस हैं, बहन। ये राक्षस बापू को जीता बाहर नहीं आने देंगे।" मैंने समझाया, "आप शांत हो जाइये, नहीं तो आवेश में आपकी तबीयत ज्यादा बिगड़ी तो मुझे आपके पास आने का पश्चात्ताप होगा।" उनकी पत्नी ने भी कहा, "आप बहुत ज्यादा बातें कर रहे हैं।" मगर उनको तो मथुराभाई ने डांटकर चुप कर दिया। बोले, "तू चुप रह। तुझे क्या पता! मैं कब किसीसे मिलता हूं? मगर मैंने तो डॉक्टरों से भी कह दिया था कि तुम्हारी तमाम दवाओं से ज्यादा फायदा तो मुझको बापू से मिलकर होगा।" फिर मुझसे बोले, "अपनी स्टेथॉस्कोप लाई हो या नहीं?"

---

१. स्व० दादाभाई नवरोजी की पौत्री।

मैंने कहा, "लाई तो हूं।" "तो फिर निकालती क्यों नहीं हो?" मैंने उनकी तसल्ली के लिए उनकी छाती की परीक्षा की। सब एक्सरे देखे। इतनी बड़ी 'कैविटी' (दरार) है! 'हेमोप्टाइसिस' (थूक में खून निकलना) सख्त होता है। इसमें कितनी आशा रखी जा सकती है? फिर भी मैंने उन्हें आश्वासन दिया और चलने को तैयार हुई। मैंने कहा, "अब बापू के साथ आपसे मिलने आऊंगी।" यह सुनकर वे फिर आवेश में आ गए। मेरा हाथ पकड़कर कहने लगे, "देखना, बहन, यह एक गंभीर और पवित्र वायदा है।[1] यह देखो, यह (पत्नी) साक्षी है। खुरशेदबहन साक्षी हैं। ये सब होंगे। यह तो (नर्स) नहीं रहेंगी। फिर भी इन्हें इनके घर से बुला लेंगे।"

मैं उनके पास पांच-दस मिनट के लिए गई थी, पौन घंटे के बाद मुश्किल से लौट सकी। बाहर आने पर उनकी पत्नी ने पूछा, "अच्छे तो हो जायंगे न?" मैंने कहा, "आप आशा रखिये, घबराइये नहीं।" मथुरादासभाई ने अपने सामने अंग्रेज़ चित्रकार वाट्स का 'होप' (आशा) नाम का चित्र लटका रखा था। कह रहे थे, "जब मैं सचमुच निराश हो जाऊंगा तो इस चित्र को निकालकर फेंक दूंगा।" मगर मुझे ऐसा लगा, मानो उनकी आशा भी आज तो आशा के इस चित्र की तरह एक कमजोर तंतु के आधार पर लटकी हुई है।

वापस बिड़ला-हाउस आई। देखा तो पुलिस मौजूद थी। सुना कि शहर में पोस्टर्स लग गए थे: "बापू जिस सभा में बोलने वाले थे, उसमें कस्तूरबा भाषण करेंगी।" "यह शान्त बलवा १८५७ के बलवे से भी ज्यादा सफल हो!!" वगैरा-वगैरा। सो पुलिस पूछने आई थी— "क्या बा सचमुच ही सभा में जायंगी? अगर हां, तो हम उन्हें गिरफ्तार करेंगे।" जब उन्हें मालूम हुआ कि बा अकेली नहीं होंगी, मैं भी उनके साथ रहूंगी और उनके बाद सभा में भाषण करूंगी तो उनका एक आदमी मेरे नाम का वारंट लाने गया और एक हमारे पास रहा। सभा का समय

---

१. उनके शब्द थे—"Solemn promise."

हो गया था। जब बा और मैं रवाना होने लगे, तो पुलिस अफसर नाटक-सा करने लगा। बोला, "माजी, आपको घर में बैठना चाहिए। बहन, आपको सभा में नहीं जाना चाहिए," वगैरा। ब्रजमोहन बिड़ला से न रहा गया। बोले, "क्या यह शिष्टाचार आवश्यक है?" इस पर वह हँसने लगा। बोला, "आप जाती ही हैं तो मैं आपको गिरफ्तार करता हूं।" बिड़लाजी की जो मोटर हमें सभा की जगह ले जाने वाली थी, उसी में जेल के लिए हमारा सामान रख दिया गया। श्रीमती बिड़ला ने फिर आरती संजोई और हम दोनों को टीका किया।

मोटर चलने ही वाली थी कि पुलिस अफसर ने हममें से किसी की बात को इधर-उधर से सुनकर अंदाज लगा लिया कि हमारे बाद भाई (प्यारेलालजी) सभा में जा रहे हैं। फिर क्या था! तुरन्त बोला, "तो आप भी आ जाइये।" भाई का सामान भी मोटर में रखा गया। चम्पाबहन ने उनको टीका किया और हम तीनों चले। घनश्यामदासजी भाई से कहने लगे, "अच्छा है, अब हमें तुम्हारे हाथ-पैर टूटने की फिकर नहीं रहेगी।" लेकिन हमारे मन में निराशा थी। तीनों में से एक भी सभा में पहुंच पाता तो अच्छा होता।

बाबला और कनु ने प्रणाम किया। बाबला भाई से सुबह ही कह रहा था, "प्यारेलाल काका, काका (महादेवभाई) अपना दुशाला भूल गये हैं। आप अपने साथ लेजाइये। उन्हें दे दीजियेगा।"

भाई से दोनों लड़कों ने पूछा कि वे क्या करें? भाई ने उनको सलाह दी कि वे जरूरी कागजात लेकर वर्धा चले जायं। कनु ने चलने से पहले मुझे और भाई को 'करेंगे या मरेंगे' का मंत्र लिखकर दिया। कहने लगा, "बस, मैं तो सैकड़ों-हजारों ऐसे कागज बांटूंगा। हनुमान की तरह लंका को सर करके पकड़ा जाऊंगा, यों ही नहीं।" बाबला भी उत्साह से भरा था। इस उत्साह से भरे वातावरण को लेकर वे दोनों हमारी गिरफ्तारी के बाद दूसरे दिन सेवाग्राम गये।

अम्तुस्सलाम बापू के कल वाले भाषण के पीछे पड़ी थीं। बापू ने उसमें मुसलमानों के लिए जो बातें कही थीं उनकी नकल करने में लगी थीं।

वह उसे पत्रिका के रूप में छपवा कर बंटवाना चाहती थीं। जिन्ना साहब के पास एक डेपुटेशन ले जाने की तैयारी करना चाहती थीं। उन्होंने मुझे अपना पता लिखकर दिया। बोलीं, "तुम मुझे रोज एक पत्र बापू के समाचार का लिखा करना।" मैंने कहा, "मुमकिन होगा तो लिखूंगी।"

लीलावतीबहन हैरान-परेशान इधर-उधर घूम रही थीं। कहने लगीं, "मैं क्या करूं? बापू ने मुझसे कहा है कि तू अपनी पढ़ाई न छोड़ना। लेकिन मैं पढ़ूं कैसे?"

भाई ने कहा, "तो मत पढ़ना। अपने साथ विद्यार्थियों को लेकर निकल पड़ना।" कनुभाई को मजाक सूझा। बोले, "अच्छा, तो यह लो।" और एक कागज के टुकड़े पर लिखकर दे दिया, "पढ़ेंगे या मरेंगे!"'

मोटर चली तो बा की आंखों में पानी था। सुवह भी जब बापू पकड़े गए, ऐसा ही हुआ था। उस समय भी मैंने बा को समझाकर आश्वस्त किया था। अब भी समझाया। बा को मैंने छुआ तो उनका शरीर गरम लगा। इस बीच मोटर आर्थर रोड जेल पर आ पहुची। हम उतरकर नीचे खड़े हुए। सड़क पर कुछ मजदूर जा रहे थे। उन्होंने यों ही झांककर देखा और अपनी राह चले गए। मैंने सोचा—क्या ये बा को नहीं पहचानते? क्या ये नहीं जानते कि आज क्या हो रहा है?

: ४ :

आर्थर रोड जेल

जेल का फाटक खुला। हम तीनों अन्दर गये। हमें ऑफिस में बैठाया गया। कुरसियां गंदी थीं। कड़ी, बेआराम, गंदी गद्दियाँ उनमें लगी थीं। सारा-का-सारा ऑफिस गंदा और बेकरीने का नजर आ रहा था। जेलर वगैरा सब एक मजा-सा ले रहे लगते थे, मानो एक बढ़िया नाटक देख रहे हों।

थोड़ी देर में हमारा कमरा तैयार हो गया। ममा नाम की एक पैंतीस-चालीस वरस की मराठी महिला हमें लिवाने आ पहुंची। हम दोनों उसके साथ चलीं। हमारे पीछे का फाटक वंद हो गया। भाई बाहर ही रह गये। उस क्षण तक मुझे यह खयाल ही नहीं आया था कि भाई हमसे अलग हो जायंगे। मैंने पीछे मुड़कर उन्हें देखा और जंगले की राह उनसे विदा ली। बाहर के कोलाहल की तुलना में यहां एक अजीव सन्नाटा-सा था। भीतर से एक और दरवाजा खुला और हम औरतों वाले विभाग में पहुंचीं। पीछे से फाटक वंद हो गया। यह एक ठोस दरवाजा था, जिसमें से कुछ भी दिखाई नहीं दे सकता था।

आर्थर रोड जेल का वह स्त्री-विभाग मुख्य जेल से अलग किया हुआ एक छोटा-सा अहाता था। चारों ओर आठ-नौ फुट ऊची दीवारें थीं। एक छोटा-सा वगीचा भी था। रहने की जगह एक कतार में चार कमरे वने थे। दरवाजों में लोहे की मोटी सलाखें लगी थीं। आखिरी कमरा हमारा था। पहले दो कमरों में सज़ायाफ्ता औरतें थीं। कोई तीस एक रही होंगी। दो-तीन की गोद में तो वच्चे भी थे। तीसरा कमरा दिन में उनके काम करने की जगह वन जाता था और रात को खाली रहता था। शाम को साढ़े पांच वजे सवको अन्दर वंद करके वाहर लोहे की सलाखों के दरवाजों में ताले डाल दिये जाते थे। सज़ायाफ्ता औरतों में एक सात वरस की सजा वाली थी। वह हमारी सेवा का प्रबंध करती थी। उसका नाम साकू था। उस वक्त तक मुझे पता नहीं था कि वार्डर कौन होते हैं। मगर वाद में पुरुष कैदियों के वार्डरों को देखा तो समझी कि वह सजा पाई हुई स्त्री कैदिनों की वार्डर थी; लेकिन उसके कपड़े दूसरी कैदिनों के जैसे ही थे हालांकि मर्दों में वार्डर पीली पगड़ी पहनते हैं।

हमारे कमरे में एक घंटी टंगी थी, ताकि रात को जरूरत पड़ने पर हम उसे वजाकर किसी को बुला सकें। घंटी साकू के कमरे में वजती थी। साकू हमारी अपेक्षा वाहर की दीवार से ज्यादा नजदीक थी, सो वह चिल्लाकर संतरी को बुलाती और संतरी ममा को, तव कहीं मदद आ सकती थी।

चारों कमरों के सामने एक तंग-सा बरामदा था, मगर ए० आर० पी०[1] के कारण उसमें बड़ी-बड़ी दीवारें चिन रखी थीं। इसी तरह कमरे की खिड़कियों को भी, जिनमें लोहे की मोटी सलाखें थीं, तीन-चौथाई ईंटों से चिन रखा था। कमरे में न हवा आ सकती थी, न धूप। फर्श में सीलन थी, पीछे की तरफ फ़्लश का पाखाना और एक छोटा-सा गुसलखाना था। दोनों खासे ंदे थे। कुछ गंदी नालियां चूती होंगी, इससे वहां बदबू भी थी। पहले दिन तो हम दोनों—मैं और बा—बहुत थकी थीं, सो गईं। मगर दूसरे रोज सुबह-ही-सुबह पता चला कि उस कमरे में बैठना सिर-दर्द मोल लेना है।

हमारे आते ही हमारे लिए लकड़ी के दो तख्त आ गए थे। उन पर नारियल के रेशे से भरी हुई गद्दियां लगी थीं। गद्दियों पर जेल की चादरें। मुझे वे गंदी लगीं। साफ-से-साफ दूसरी चादरें लाये, मगर मुझको वे भी गंदी लगीं। आगाखां महल में आने के बाद तो बापू ने हमसे वैसी ही चादरों का इस्तेमाल शुरू करवाया और फिर तो वे कुछ साफ लगने लगीं। मगर उस दिन तो उन चादरों पर मैंने अपना और बा का घर का बिस्तर लगवाया।

बा को ९९.६ बुखार था। उन्हें बिस्तर पर लिटाया। ममा खाने को पूछने आई। बा को कुछ नहीं चाहिए था। मगर मुझको काफी भूख थी। दोपहर में तो दौड़-धूप की वजह से नहीं-जैसा ही खाया था, उससे अगले दिन भी ट्रेन में खाने का ठिकाना न था। मगर जेल में हमें खाना नियम के मुताबिक दूसरे दिन ही मिल सकता था। मैंने सोचा, इस वक्त इन्हें रोटी बनाने में कष्ट होगा। चलो थोड़ा दूध पीकर ही सो जायंगे। मुझे क्या पता कि जेल में दूध कितना दुर्लभ होता है! सो मैंने एक प्याला दूध मांगा। कुछ देर बाद एक छोटी-सी कटोरी में पानी-सा पतला कोई तीन औंस ठंडा दूध आ गया। बेचारे जेलर ने अपने घर से भेजा था। मैं उसी को पीकर लेट गई। बा सो गई थीं। शाम के साढ़े छः बजे होंगे,

---

१. हवाई हमले से हिफाजत।

अंधेरा होने लगा था। मैंने सोचा, बा उठें तो प्रार्थना करें। किताब लेकर पढ़ने लगी और मैं भी सो गई। तीन रात से पूरी नींद नहीं मिली थी। रास्ते की थकान, तिस पर आज सुबह से वातावरण खूब उत्तेजित रहा था, उसकी भी थकान थी, लेटते ही नींद आ गई। रात में बा तीन-चार बार पाखाने गईं। दूसरी या तीसरी दफा जब वे पाखाने से आ रही थीं, उनकी आहट से मेरी नींद खुली। वे लड़खड़ाकर चल रही थीं। मैं झट से उठी। उन्हें सुलाकर पढ़ने की कोशिश की मगर ए० आर० पी० की वजह से बत्ती पर काला कागज चढ़ा था, जिससे खाट पर लेटे-लेटे पढ़ा ही नहीं जाता था और उठकर बैठने की इच्छा नहीं होती थी। सो मैं पड़ी रही। पहली रात ममा आई होगी। हमें सोता देखकर हमारे कमरे की बत्ती बुझा दी गई थी और ममा हमें ताले में बंद भी कर गई थी।

: ५ :

अनोखे अनुभव

आर्थर रोड जेल
१० अगस्त '४२

सवेरे सात-साढ़े सात बजे ममा ने दरवाजा खोला। उससे पहले मैंने और बा ने हाथ-मुंह धोकर प्रार्थना करली थी। बा को आज भी बुखार था। कमजोरी भी बहुत थी। पतले दस्त हो रहे थे।

हम लोगों ने कल ही बापू की गिरफ्तारी के बाद उपवास करने का विचार किया था। मगर फिर तय हुआ कि उपवास अगले दिन किया जाय; क्योंकि कल-ही-कल सबको खबर नहीं दी जा सकती थी। सो आज मैंने उपवास किया। बा को उनकी 'वेजिटेबल टी' (खास जड़ी-बूटियों की चाय) का काढ़ा बनाकर दिया। उनके स्नान के लिए गरम पानी मांगा तो उसे आने में दो घंटे लगे। स्नान वगैरा से निबटकर बैठी ही थीं कि जेलर आया। बोला, "अभी मैं आपको अखबार भेजूंगा। जरा खुद देख लूं,

ताकि कसम खाकर कह सकूं कि सेंसर करके दिये थे।" थोड़ी देर बाद जेलर और सुपरिंटेंडेंट दोनों आये। बा की कुछ चीजें बिड़ला-हाउस में रह गई थीं। मैंने सुपरिंटेंडेंट से कहा, "या तो आप हमें फोन करने दें, या खुद फोन पर कह दें कि यह सामान हमें भेज दें।" वह बोला, "यह नहीं हो सकता। आप लोग बाहर की दुनिया से कोई संपर्क नहीं रख सकतीं।" मैंने पूछा, "तो अखबार कैसे भेजेंगे?" बोला, "नहीं भेजेंगे। और जो कुछ आपको चाहिए, हम आपको बाजार से खरीद देंगे।" मैंने कहा, "मेरे पास रुपये नहीं हैं। आप या तो रुपये मंगाने दें या खुद चीजें मंगवाकर दे दें।" बोला, "ये दोनों बातें नहीं हो सकतीं।" इस पर मैंने तनिक चिढ़कर कहा, "तो मैं नहीं कह सकती कि हम कबतक आपके हुक्मों और कायदों का पालन कर सकेंगी।" बेचारा चुपचाप चला गया। कर ही क्या सकता था? और मेरा भी तो जेल का यह पहला ही अनुभव था।

थोड़ी देर बाद एक डॉक्टर आया और हमारी ऊंचाई, वजन और शनाख्त के तीन निशान नोट करके चला गया। कुछ देर बाद बड़ा डॉक्टर आया। मैंने बा को दिखाया। कहने लगा, "अभी दवा भेजता हूं।" मैंने कहा, "थकान है, मानसिक बोझ है, दवा की इतनी जरूरत नहीं, जितनी कि सही खुराक की है। आप मुझे बा के लिए सेब मंगा दें। मैं उन्हें सेब के रस के सिवा कुछ नहीं देना चाहती।" कहने लगा, "जेल में बहुत कम ऐसी चीजें मिलती हैं। आपको जो चाहिए बाजार से मंगा लें।" मैंने कहा, "मगर मेरे पास पैसा नहीं। आप खुद खरीद दें। कभी जिंदा बाहर निकले तो आपका रुपया लौटा दूंगी।" वह बोला, "मैं क्या कर सकता हूं। जेल में बीमारों को खास चीजें ही दी जा सकती हैं। बाकी की चीजें उन्हें खुद खरीदनी पड़ती हैं।" मैं फिर चिढ़ गई। बोली, "जिन अस्पतालों में मैंने काम किया है वहां बीमारों के लिए सब जरूरी चीजें मंगा देते थे। कुछ चीजें ऐसी हैं जिनका खर्च आमतौर पर बीमारों को देना पड़ता है। लेकिन अगर वे नहीं दे सकते तो मैं नीचे 'मुफ्त' लिखकर अपनी सही कर देती हूं, तो बीमार को चीज मुफ्त में मिल जाती है। और

मैंने तो कहा है कि मुझे रुपये मंगवा लेने दें या अपनी जेब से जरूरी चीजें मंगवा दें। किसी दिन आपका सब हिसाब चुका दूंगी।" वह जरा नरम पड़ा। पूछने लगा, "क्या आप डॉक्टर हैं? आप कहां काम करती थीं?" वगैरा। फिर यह कहकर कि "सेब आ जायगे" वह चला गया। मगर सेब शाम तक नहीं आ सके। बा को दिन में चाय ही दी। बुखार और दस्त की शिकायत बनी रही। कमजोरी बढ़ती गई।

कमरे की हवा इतनी बंद थी कि वहां बैठने से सिर में दर्द होने लगा। मैट्रन कहने लगीं, "मेरे बरामदे में आकर बैठिये।" दरी वगैरा बिछाकर मैं और बा वहां जा बैठीं। दोनों ने काता। मैट्रन से कुछ बातें कीं। वह गर्भवती थीं। कोई सात महीने का गर्भ था। मैंने हँसी में कहा, "आपकी डिलीवरी (प्रसूति) में मैं मदद कर दूंगी।" पहले वह स्कूल-टीचर थीं, मगर जेल की नौकरी में उन्हें घर की संभाल के लिए ज्यादा समय मिलता था, इसलिये दो-तीन साल से यही नौकरी कर रही थीं। पति मिल में नौकर थे। जेल की नौकरी में वेतन तो करीब ७५) मासिक या ऐसा ही कुछ था, लेकिन रहने को घर मिला हुआ था और काम हल्का था। इसलिए यह नौकरी उन्हें पसंद थी।

दोपहर बारह बजे मैट्रन अपने घर चली गईं। बा भीतर जाकर लेट गईं। मैं वहीं बरामदे में बैठ कर पढ़ती रही। कोई चार बजे दरवाजा खुला। मैट्रन थी। सिपाही किसी का बक्स और बिस्तरा ला रहा था। मैं उत्सुक होकर उठी। एक और बहन आई थीं, नाम था श्रीमती सीतलदास। मैंने साथ जाकर उनका सामान रखवाया। फिर हम दोनों बा के पास जा बैठीं। उनकी उम्र कोई तीस-पैंतीस साल की रही होगी। चार बच्चों की मां थीं। सबसे छोटा और एकमात्र लड़का दो बरस का था। वह बीमार-सा रहता था। किसी जमाने में यह बहन लेडी हार्डिंग में पढ़ने गई थीं। एफ० एस-सी० करके चली आईं। डॉक्टरी में नहीं गईं। जेल में पहली बार ही आई थीं। उनके पति को उनका यह काम पसंद नहीं था। खुद उनका इरादा भी जेल आने का नहीं था; क्योंकि बच्चे की तबीयत अच्छी नहीं थी। मगर आज सुबह उन्हें लगा कि जब सबको

पकड़ लिया है तो किसी को तो बाहर निकलना ही चाहिए। पति से विना पूछे सुबह झंडावंदन में शामिल हुईं। वहां से लौटकर विद्यार्थियों से मिलने निकलीं, तभी पुलिस ने पकड़ लिया। बेचारी घर सामान लेने गईं तो जल्दी में सिर्फ एक प्याली दूध पीकर चली आईं। सुवह से और कुछ खाया नहीं था। मैट्रन ने मुझे वताया कि दोपहर बाद जो कैदी आते हैं, उनको दूसरे दिन खाना मिलता है। इसीलिए कल रात जो थोड़ा-सा दूध मेरे लिए आया था, वह भी जेलर के घर से आया था। सो उन्हें खाना नहीं मिल सकेगा। शाम को चार बजे मेरा और बा का खाना आया। मैं और श्रीमती सीतलदास दोनों खाने बैठीं। बा ने कुछ नहीं लिया। मेरे लिए थोड़ा-सा उवला साग आया था। बा के लिए जेल की मोटी रोटी, दाल, चावल, दूध और डवल रोटी आई थी। मक्खन भी था। हम दोनों ने बहुत कोशिश की, मगर वह खाना गले से उतारना कठिन था। एक-दो निवाले से ज्यादा निगल नहीं सकीं। थोड़ा-सा दूध ले लिया। उपवास के बाद ऐसी खूराक से मुझे तो मतली होने लगी। खाने के बाद हम दोनों बाहर घूमने निकलीं। श्रीमती सीतलदास ने कहा, "मैंने जेलर से अपने बच्चों का जिक्र किया है। छोटे-छोटे बच्चे हैं और सबसे छोटा वीमार है। मैंने कहा है कि मेहरबानी करके मुझे फोन पर अपनी आया को वीमार बच्चे के बारे में हिदायतें देने का मौका दें।" मैंने सोचा, वेचारी कितनी भोली हैं! समझतीं नहीं कि यह जेलखाना है। उनके मन को तैयार करने के लिए मैंने आज सुबह का किस्सा वताया कि कैसे जेलर ने हमसे बाहर की दुनिया से कोई संपर्क न रखने देने की वात कही थी। मगर उस भोली वहन ने इतने पर भी यह माना कि शायद उसे तो फोन करने ही देंगे।

जेलर का घर सामने था। हमें घूमते देखकर जेलर की स्त्री और लड़कियां दूर खिड़की में से झांकने लगीं। फिर उन्होंने बा के समाचार पूछे। जेलर को तो अपने पेट के लिए सव कुछ करना था, लेकिन घर के स्त्री-बच्चों के दिल में वापू और बा के प्रति भक्तिभाव को वह कैसे मिटा सकता था?

बारिश होने लगी। इससे हमें भीतर आना पड़ा। कमरे में सोना कठिन था। हमने निश्चय किया, बरामदे में सोयेंगी। यहीं से जेल के नियमों को तोड़ना शुरू करेंगी।[1] श्रीमती सीतलदास को 'बी' क्लास में रखा गया था, हमें 'ए' में। फर्क यह था कि उन्हें सोने को लकड़ी का वह तख्त नहीं दिया गया था, जो हमें मिला था। मैंने मैट्रन के आने से पहले ही अपना और उनका बिस्तर बरामदे में जमीन पर लगवाया। बा का खाट पर। जब मैट्रन आईं, हमने कह दिया कि हम ताले में बंद होकर नहीं सोयेंगी। वह बेचारी घबराई। जेलर के पास गईं। उसने कहलवाया, "भले बरामदे में सोयें।"

श्रीमती सीतलदास ने कल की काफी खबरें सुनाईं। कल जिस सभा में हमें जाना था, वहां लोग रात के आठ बजे तक जमा रहे। मगर सभा न हो पाई। पुलिस ने कई बार अश्रुगैस छोड़ी और लाठियां चलाईं। जैसे ही पुलिस का हमला खत्म होता था, लोग फिर जमा हो जाते थे। वैसे ट्रैफिक तो आज भी काफी हद तक बंद था। हड़ताल भी थी। लोगों में काफी उत्साह था। श्रीमती सीतलदास को विद्यार्थियों से कुछ निराशा-सी हुई थी।

हम जाकर बरामदे में बैठ गईं। मेरी तबीयत ज्यादा खराब थी। मचली हो रही थी। मैं लेट गई। श्रीमती सीतलदास 'हरिजन' लाई थीं। उसे पढ़ते-पढ़ते मैं सो गईं। बा भी सो गई थीं। बेचारी श्रीमती सीतलदास को अपने बच्चों की फिक्र में नींद कहां? हमने सोचा था, सात बजे उठकर शाम की प्रार्थना कर लेंगी, लेकिन बा उस वक्त भी सो रही थीं। करीब पौने नौ बजे मैट्रन आईं। कहने लगीं, "मैं तो जल्दी आई थी कि सोने से पहले आपको खबर दे दूं, लेकिन आप तो सो ही गईं।"

---

१. गांधीजी ने कुछ ऐसा इशारा किया था कि इस बार के सत्याग्रह में, पिछले सत्याग्रहों के विपरीत, जेल में जाकर सरकारी कायदों का सविनय भंग जारी रखना; किन्तु जेल में जाने के बाद खुद उन्हें इसमें शंका उत्पन्न हो गई और उनके साथी भी स्वतंत्र रूप से इसी नतीजे पर पहुंचे।

खबर यह थी कि बा को और मुझको रात को कहीं ले जाने वाले हैं। हमसे कहा गया कि ग्यारह बजे तक हम अपना सामान तैयार रखें। मैंने उठकर अपना बिस्तर बांधा, दूसरा सामान ठीक किया। बा को नहीं जगाया। श्रीमती सीतलदास घबराने लगीं। बोलीं, "मैं तो सोचती थी, आप लोगों के साथ समय अच्छी तरह कट जायगा। मगर अब तो आप भी चलीं!" मुझे भी बुरा लगा। मैंने समझाया, "आपको भी जल्दी ही यहां से हटायेंगे। शायद यरवदा में हम फिर मिलें।"

आज सुबह मेरे पास सेब मंगवाने के लिये पैसे नहीं थे, यह सुनकर उन्होंने अपना बटुआ मेरे सामने कर दिया। उसमें तीस-चालीस रुपये थे। मैंने पांच रुपये का एक नोट ले लिया। जल्दी में वे साड़ियां कम लाई थीं, रंगीन कोई न थी। मैंने अपनी एक उन्हें दे दी। मन में सोचा, कहीं जेल में मर जाऊं तो इनका कर्ज तो सिर पर न रहेगा!

इतने में बा जागीं, मैंने उनका बिस्तर बांधा। फिर हमने बैठ कर प्रार्थना की। रामधुन चल रही थी कि पैरों की आवाज सुनाई पड़ी। प्रार्थना पूरी हुई। जेलर और मैट्रन हमें लेने आये थे। हम तैयार ही थीं। चल दीं। बाहर दफ्तर में एक आदमी बैठा था, जो हमारे साथ जाने वाला था। मैंने पूछा, "कहां ले जाओगे?" कहने लगा, "बापूजी के पास।" गाड़ी साढ़े बारह बजे जाती थी। अभी ग्यारह ही बजे थे। दफ्तर में जेल की सख्त कुर्सी पर बैठे रहने में बा को तकलीफ हो रही थी। बा की तबीयत भी अच्छी नहीं थी। दस्तों की वजह से वे बहुत कमजोर हो गई थीं। मैंने कहा, "आराम-कुर्सी मंगा दीजिये।" इस पर हमारे रखवाले ने कहा, "स्टेशन पर चलिए। वहां वेटिंग रूम में आप आराम से बैठ सकेंगी।" फिर कहने लगा, "बापूजी से हमारा प्रणाम कहिए। मैं सन् '३२ में उनके साथ था।" मैंने कहा, "तो कहिए, आप सब बापू के दल में कब आ रहे हैं?" हँसकर बोला, "आप लोगों की देखभाल के लिए भी तो कोई चाहिए न?" फिर कहने लगा, "राजनैतिक कैदी इतनी तकलीफ नहीं देते। उनके साथ थोड़ी समझ से पेश आने की जरूरत है; लेकिन दंगे के कैदी तो खतरनाक होते हैं। हिन्दू-मुस्लिम दंगों के वक्त मैंने बहुतों को संभाला है।"

हमारा सामान जेल की मोटर में रखा गया। हम भी उसी में बैठीं। कुछ ही देर में स्टेशन पर पहुंच गईं। कौन-सा स्टेशन था, कुछ पता नहीं चला। वहां वेटिंग रूम में बैठे-बैठे मुझे नींद-सी आने लगी। मगर बा को नींद कहां? बैठे-बैठे बोलीं, "देखो, सुशीला, लोग स्टेशन पर आते और जाते हैं। सरकार का सारा कारोबार इस तरह चल रहा है, मानो कुछ हुआ ही न हो। इस हालत में बापू कैसे जीत पायेंगे?" मैंने समझाया और भगवान पर भरोसा रखने को कहा। वे कुछ शांत हुईं। कोई बारह-सवा बारह बजे हम बाहर स्टेशन पर आईं। बा को एक कुर्सी पर बैठाकर गाड़ी पर ले गए। स्टेशन पर भीड़ काफी थी। लोगों को ख्याल तक न था कि क्या हो रहा है।

गाड़ी आई। पहले दर्जे के एक डिब्बे में मेरी और बा की जगह थी। बा नीचे सोईं, मैं ऊपर। गाड़ी चली। कॉलिज में पढ़ते समय मैंने व्रत लिया था कि जबतक हम आजाद न हो जायंगे, मैं तीसरे दर्जे में ही सफर करूंगी। मगर आज तो हम आजाद ही हैं। आजाद होकर पहले दर्जे में सफर कर रही हूं! यही कुछ मैं सोचती रही। बा के लिए जो दो सेब आये थे वे हमारे साथ ही थे। मुझे बहुत भूख लगी थी। एक सेब खाकर सो गई। दूसरा बापू के पास पहुंचा।

: ६ :

आगाखां महल

आगाखां महल, पूना
११ अगस्त '४२

सुबह आंख खुली तो दिन निकल आया था। हमारा साथी आया और यह कहकर चला गया कि अब एक ही स्टेशन और है। मैंने बिस्तर बांधा। जब उतरने का स्टेशन आया तो बा गुसलखाने में थीं। रात भर उन्हें दस्त आते रहे थे। गाड़ी को कोई पांच मिनट रुकना पड़ा। हम

उतरीं। एक हिन्दुस्तानी पुलिस अफसर हमें लिवाने आया था। मोटर तैयार थी। उसमें बैठकर वे दोनों हमें ले चले। रास्ते में बम्बई वाला साथी अपने दूसरे साथी से पूछने लगा, "यहां की हालत कैसी है?" पूना वाले ने कहा, "हालत खराब है। मुझे खुशी है कि मैं अबतक अपने को इस बला से दूर रख पाया हूं। यहां गोलियां चली हैं और लाठी चार्ज हुए हैं। मैंने अपने अफसर से कहा था कि विद्यार्थियों पर गोली न चलाई जाय। उनमें सात-सात, आठ-आठ बरस के बच्चे भी थे। बच्चों पर गोलियां चलाकर सरकार लोगों की हमदर्दी खो बैठेगी और हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, सभी को कांग्रेसपरस्त बना देगी। मैंने विद्यार्थियों के लिए बेंत मारने की हल्की सजा सुझाई थी। लेकिन किसी ने मेरी सुनी नहीं और गोलियों व लाठियों से काम लिया गया। नतीजा यह है कि हालत बदतर हो गई है।" इस पर बम्बई वाला साथी बोला, "हां, बेंत मारना आदर्श चीज होती है।" मुझे इस वाक्य पर हँसी आई। वह बोला, "डॉक्टर हमसे सहमत नहीं।" मैंने कहा, "आपका यह सुझाव कि छोटे बच्चों के लिए बेंत की सजा आदर्श चीज है, मुझको कुछ अनोखा-सा लगा; क्योंकि आज हर आदमी यह जानता है कि छोटे बच्चों को कभी शारीरिक सजा देनी ही नहीं चाहिए और अच्छे मदरसों में तो बेंत की सजा कतई मना है।" वे दोनों बोले, "हां, लेकिन आप तो सभ्य समाज की बात कर रही हैं और यहां हमें बर्बरता से काम है। यह न समझिये कि हमें बेंत मारना या दूसरा ऐसा कुछ करना पसंद है, लेकिन हमें जो हुक्म दिया जाता है, उसकी पाबंदी तो करनी ही पड़ती है।" इसके बाद बातचीत बंद हो गई। पहले वे दोनों आपस में कह रहे थे कि किसी को इस दमन-नीति में रस नहीं है। कोई नहीं चाहता कि वह गोली दागे, लाठी चार्ज या गिरफ्तारियां करे, वगैरा-वगैरा।

पंद्रह-बीस मिनट में मोटर एक सूनी-सी सड़क के किनारे एक बड़े फाटक पर आकर खड़ी हो गई। फाटक बंद था। मोटर दूसरे फाटक पर गई। सामने फौजी पहरा था। फाटक खुला। हम अंदर घुसे, पीछे फाटक बंद हो गया। थोड़े फासले पर कंटीले तार लगे थे। वहां भी फाटक था और फौजी पहरा। यह दूसरा फाटक खुला और हमारे

3G 152 MO

अंदर जाने पर फिर वंद हो गया। दूर से मैंने देखा, मीरावहन वगीचे में फव्वारे के पास वैठी कुछ घिस रही थीं। मगर उन्होंने हमें नहीं देखा। मोटर संगमरमर की सीढ़ियों के सामने जाकर खड़ी हो गई। बा और मैं दोनों उतरीं और ऊपर चलीं। वरामदा लंवा था। सामने के और वगीचे की तरफ के बरामदे का शुरू का आधा फर्श संगमरमर का था और आगे जाकर आधा मामूली पत्थर का था। एक कैदी झाड़ू लगा रहा था। उससे मैंने वापू का कमरा पूछा। वह बोला, आगे इसी लाइन में है। वापू का कमरा आया। उनका विछौना एक कोच पर था। वे उस पर वैठे एक कागज पर गौर कर रहे थे। महादेवभाई उसी कागज को हाथ में पकड़े पास खड़े थे और वापू से कुछ कह रहे थे। हमें देख सब चकित से रह गए। वापू के चेहरे पर एक तनाव की रेखा खिंच गई। वा से बोले, "तूने यहां आने की मांग की थी, या वे ही तुझे ले आये?" वा वेचारी चुप रह गईं। कुछ समझ ही नहीं सकीं कि क्या पूछ रहे हैं। वापू की भवें और तन गईं। मैंने उत्तर दिया, "पकड़ कर लाये हैं, वापू।" तव कहीं बापू की चिंता मिटी। मैंने प्रणाम किया। हँसने लगे। बोले, "तू आ पहुंची।" मैंने बताया, वा की तवीयत अच्छी नहीं है। तुरंत उनके लिए खाट मंगवाई गई। वापू और महादेवभाई उनकी संभाल में लग गए।

2033

वा की बीमारी अधिकतर मन के वोझ की वजह से ही थी। यहां आने पर बिना दवा के अपने-आप उन्हें अच्छा लगने लगा। सरोजिनी नायडू आकर मिलीं। वे खाने की देख-भाल करती थीं। सो खाने की वात पूछी। वोलीं, "तुम्हें कुछ खास चाहिए तो तुम पका सकती हो।" मैंने पूछा, "क्या हमें अपना खाना खुद पकाना होगा?" कहने लगीं, "और नहीं तो तुम यहां करोगी क्या? अपना वक्त यहां किस तरह काटोगी?" मैं चुप हो गई। मेरे लिए यह एक नई चीज थी कि खाना पकाने को वक्त काटने का जरिया बनाया जा सकता है। मुझे आज तक कभी इस सवाल का सामना ही नहीं करना पड़ा था कि वक्त कैसे काटा जाय। उल्टे वक्त हमेशा बहुत जल्दी खत्म हो जाया करता था। बी

❀ मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय ❀
वाराणसी।

को सुलाकर सरोजिनी नायडू और महादेवभाई मुझे खाने की मेज पर ले गए। टोस्ट, मक्खन और ताजी चाय की प्याली में उस दिन मैंने जो स्वाद पाया, वह कभी किसी बड़ी-से-बड़ी दावत में भी नहीं मिला!

: ७ :

महादेवभाई के साथ चार दिन

महादेवभाई ने कहा, "दो रोज हमने बापू की मालिश की। हम तो मालिश करना जानते नहीं। आज बापू मुझे सिखाने वाले थे। अब तुम आ पहुंची हो तो संभालो अपना काम।" मैंने बम्बई में यह तय किया था कि बापू की मालिश वगैरा का काम भाई किया करेंगे और बा की सेवा मैं किया करूंगी। लेकिन भाई तो यहां पहुंचे ही नहीं थे। इसलिए जब महादेवभाई ने ऐसा कहा तो मैं चुपचाप बापू की मालिश करने चली गई। यहां मक्खियां और मच्छर बहुत हैं। इतनी नई, साफ और शहर के बाहर की जगह में इस कदर मक्खियां क्यों हैं, कुछ समझ में नहीं आ रहा। बापू ने बताया कि पूना में सफाई का प्रबंध अच्छा नहीं है। पता नहीं, यह मकान कब से बंद पड़ा था! अभी-अभी खोला गया है। इस वजह से भी इतने जीव-जंतु यहां पर हो सकते हैं। मालिश में बापू सो जाते हैं। मक्खी-मच्छर परेशान करते थे सो मालिश के समय महादेवभाई को मक्खियां उड़ाने का काम करना पड़ा। मैंने देखा, वे बहुत खुशी से यह काम कर रहे थे। वे बापू की हर सेवा में खुश रहते थे।

बापू को दोपहर का खाना करीब बारह-साढ़े बारह बजे मिला। मीराबहन और महादेवभाई ने बताया कि जिस रोज वे लोग यहां आये थे, उस रोज तो यहां खाने का कोई इंतजाम था ही नहीं। बिड़ला-हाउस से जो आध सेर दूध आया था, वह बिगड़ गया था। इन लोगों ने आकर खुद खाने का सारा इंतजाम किया। बापू खाना खाते समय शाम के खाने की कुछ बात करने लगे। महादेवभाई और मीराबहन ने एक-दूसरे की ओर

देखा; क्योंकि शाम के पाँच तो वज ही रहे थे। वापू ने घड़ी देखी और हँसने लगे। शाम का और सुवह का खाना एक हो गया था। शायद सरकार ने सोचा होगा कि गांधीजी तो इस बार उपवास करने ही वाले हैं, फिर खाना पकाने के इंतजाम की मेहनत क्यों की जाय! या कैदियों के लिए खाना तैयार करने का उसका रिवाज ही नहीं रहा होगा।

आज हम लोगों ने तो खाना कोई एक बजे ही खाया होगा। खाना खाने के बाद महादेवभाई सब प्लेटें उठाकर उन्हें धोने चले गये। मैं भी उनके पीछे गई और थोड़ी मदद की। तीन बजे महादेवभाई नीचे रसोई-घर में पहुंचे। बापू के लिए सब्जी काटी और चढ़ाई। उसके वाद उनके लिए मौसम्बी का रस निकाला। नीचे गये, रसोईघर से सब्जी लाये। मीराबहन को दूध निकालने में देर हुई थी। इसलिए शाम का खाना आज भी वापू को देर से मिला।

मैंने देखा, यहां भी इन लोगों को अखबार वगैरा कुछ नहीं मिलते थे। महादेवभाई को यहां मैंने एक विलकुल नये रूप में देखा। खाना पकाने और बरतन धोने-जैसे कामों में उनकी दिलचस्पी देखने की चीज थी। शाम को प्रार्थना के बाद वे पालथी मारकर बरामदे में वैठ गये और रात को खाने के लिए सबके लिए टोस्ट बना डाले। खाना खाते समय ...की बातें करने लगे। और-और लोगों की चर्चा भी उन्होंने की। जबतक किसी की तारीफ की कोई बात न आती, महादेवभाई अनमने-से होकर सुनते रहते। लेकिन किसी अच्छी वात को सुनकर, जिससे वे सहमत हो सकें, वे उत्साह के साथ उसकी दाद देते थे।

दिन में वापू ने लार्ड लमली (बम्बई के गवर्नर) के नाम अपने ड्राफ्ट पत्र में काट-छांट करके उसे महादेवभाई के हवाले किया और बोले, "मुझे ऐसा लगता है कि यह तो आज जाना ही चाहिए।" इस पत्र में बापू ने एक घटना का उल्लेख किया था, जिसमें मेहता नाम के किसी कार्य-कर्त्ता को स्टेशन पर पशु की तरह घसीटकर लॉरी में डाला गया था। इसी पत्र में सरदार वल्लभभाई पटेल और मणिवहन को यहां भेजने की दरख्वास्त भी की गई थी। बापू ने लिखा था कि सरदार तो उनकी

(बापू की) चिकित्सा में थे, मणिबहन सरदार की नर्स थीं, सो दोनों को उनके पास भेज देना चाहिए। तीन-तीन मसविदों के बाद यह खत तैयार हुआ था। हम सब ऐसा मानते थे कि सरदार वल्लभभाई और मणिबहन जल्दी ही यहां आ जायंगे। उन्हें किस कमरे में रखेंगे यह चर्चा हुई। हम मानते थे कि वल्लभभाई और मणिबहन दोनों यरवदा में हैं। भाई को भी जल्दी बापू के पास ले आवेंगे, ऐसी हमारी मान्यता थी।

यहां अभी बरसात शुरू हुई है सो बरामदे में घूमना पड़ता है। मगर बरामदा बहुत लंबा है। मकान के चारों तरफ गया है। एक चक्कर में एक-तिहाई मील की घुमाई हो जाती है। मकान की निचली मंजिल में हमें रखा गया है, ऊपर हमारे जेलर मि० कटेली रहते हैं। नीचे वाला भाग भी सब नहीं खोल रखा है। एक बड़े कमरे में सरोजिनी नायडू हैं। वहीं दो संगमरमर की मेजें पड़ी हैं जहां सब खाना खाने बैठते हैं। एक कमरे में बापू हैं, एक में मीराबहन। एक छोटा कमरा बापू और सरोजिनी नायडू के कमरे के बीच है, वहीं महादेवभाई, मैं, बा वगैरा कभी-कभी बैठते थे। अधिकतर तो बापू के कमरे में ही काम करते रहते थे। गुसलखाने दो ही हैं मगर बड़े हैं। पाखाना फ्लश वाला है। बगीचा बहुत बड़ा है, पर कंटीले तार लगाकर हमें बहुत थोड़ा-सा टुकड़ा दिया गया है। पानी नहीं पड़ता तब वहीं थोड़ा घूम लेते हैं। फूल बहुत सुंदर हैं।

रात को मीराबहन ने बापू के पैरों की मालिश की, मैंने सिर की। यहां मच्छर इतने हैं कि मच्छरदानी लगाकर सोना पड़ता है। बा अंदर कमरे में सोईं। सरोजिनी नायडू अपने कमरे में। बाकी के चार—बापू, मीराबहन, महादेवभाई और मैं—बरामदे में सोए।

१२ अगस्त '४२

सवेरे उठते ही बापू ने पूछा, "महादेव, नींद कैसी आई?" महादेवभाई बोले, "कोई दो बजे आंख खुल ही जाती है। फिर साढ़े तीन बजे नींद आई होगी। जब आप और सुशीला प्रार्थना कर रहे थे, मैं आवाज़ तो सुन रहा था, पर उठकर आया नहीं।" इससे मुझे पता चला कि महादेवभाई अच्छी तरह सोते नहीं हैं। मीराबहन ने कहा, "सिर में

मालिश करवानी चाहिए।" मैंने उनसे पूछा, "अगर आपको पसंद हो तो रोज रात को आपके सिर की मालिश कर दिया करूं।" इस पर वे बोले, "हमारा क्या है। मालिश की जरूरत नहीं रहती।"

मैंने कहा, "रात में जरूरत हो तो आप मुझे सोते से जगा सकते हैं।"

कहने लगे, "देखेंगे।" उन्हें मालिश की जरूरत है, पर सेवा लेने में संकोच होता है।

नाश्ते के बाद मैं और महादेवभाई बापू के साथ बरामदे में घूमे। महादेवभाई और बापू अनेक विषयों पर बातें करते थे। मेरे लिए यह घूमना सामान्य शिक्षण की एक क्लास ही हो जाती है।

आज भी बापू को अपना खाना समय पर नहीं मिल सका। बापू ने कहा, "अब हम सब आपस में काम बांट लें।" महादेवभाई बोले, "बांटना क्या है? बंटा हुआ ही है। सुशीला आपकी सेवा में रहेगी। मीराबहन पहले सुबह का साग बनाया करती थीं और मैं शाम का। अब सुबह का भी मैं बना लूंगा।" बापू को महादेवभाई का बनाया साग ज्यादा पसंद आता था, क्योंकि सोडे की मात्रा ठीक होने से वह ज्यादा गला हुआ रहता था। सो महादेवभाई दोनों समय साग बनाने को तैयार हुए थे। मैंने कहा, "नहीं, शाम का साग मैं बना दिया करूंगी और आप लोगों की प्लेटें भी धो दूंगी।" मगर जब प्लेटें धोने का वक्त आया तो महादेवभाई मेरे पीछे-पीछे नल पर आ पहुंचे और सब प्लेटें साथ रह कर धुलवाईं। इसी तरह मैं सब्जी चढ़ाने गई तो वहां भी पीछे से आ पहुंचे। साग काटने और चढ़ाने में मदद की। मैंने कहा, "आप क्यों अपना समय ऐसे कामों में खोते हैं?" बोले, "यहां और काम ही क्या है? अबके मैं अपने साथ कोई सामान ही नहीं लाया, नहीं तो लिखने का काफी काम हो सकता था। लेकिन तीन-चार लेखों की सामग्री के सिवा मैं कुछ लाया ही नहीं।" मैंने कहा, "तो वे तीन-चार लेख तो लिख ही डालिए।" बोले, "लिख लूंगा। बात यह है कि इस समय मेरा तो मन ही नहीं होता कि कुछ करूं। जबतक बापू की उपवास की तलवार मेरे सिर पर लटक रही है, मैं कुछ कर ही नहीं सकता। सन् '३२ में बापू के छः दिन के उपवास में मैंने दस

पौण्ड वजन खोया था, हालांकि उन दिनों मैं बराबर भोजन करता था। तभी छः दिन में बापू वेहाल हो गए थे तो अब क्या होगा?"

बापू ने वाइसराय के नाम जो खत लिखना शुरू किया था, आज दिन में उसमें फिर सुधार किये गए और मुझे उसकी नकल कर देने का काम मिला। यहां मच्छरों और मक्खियों की वजह से दिन में भी कुछ काम करना हो तो मच्छरदानी में बैठकर ही करना पड़ता है। मैं अपनी खटिया पर जा बैठी, मच्छरदानी डाल दी। खत लंबा था, नकल करने में दो घंटे लगे होंगे। बापू ने महादेवभाई से कहा, "अब तुम इसे पढ़ जाओ, बुढ़िया (सरोजिनी नायडू) को भी पढ़ाओ और कुछ सुझाव देना हो तो दो।" इसके बाद बापू उर्दू के अभ्यास में लग गये। कहने लगे, "अगर सरकार मुझे फिर छः साल की सजा सुना दे तो मैं बहुत काम कर दिखाऊं।" यह सुनकर महादेवभाई के मन में फिर वही विचार आ गया, बापू छः साल तक हमारे साथ रहेंगे सही? सत्यमूर्ति का वाक्य याद आया, "गुलाम हिन्दुस्तान की अपेक्षा आजाद हिन्दुस्तान में आपकी ज्यादा जरूरत रहेगी।"[१]

रात बापू मुझसे कहने लगे, "तुझे लिखने-पढ़ने का काम करने की इच्छा थी न! देख, कैसा खत तेरे हाथ आया है!" इस पर महादेवभाई कहने लगे, "अबकी जब बाबला हमारे साथ बम्बई आया तो रास्ते में मैंने उसे 'टु अमेरिकन्स' (अमेरिकनों के प्रति) नामक बापू का लेख टाइप करने को दिया। वह तो नाचने लगा। बोला, 'काका, कितने दिनों के बाद आज मैं टाइप करने लगा हूं और पहली ही बार यह कितनी बढ़िया चीज मेरे हाथ लगी है!" महादेवभाई को अपने लड़के की बहुत याद आ रही थी। कल मुझसे पूछा, "दोनों लड़कों का क्या हुआ?" मैंने कहा, "भाई की सलाह से वर्धा जाना तय हुआ था।" कहने लगे, "मैं तो चाहता था कि दोनों बम्बई से ही पकड़े जाते। मगर ठीक है, मेरी गैर-हाजिरी में उन्हें भाई की ही आज्ञा का पालन करना था। उन्होंने सोच-समझ कर ही वर्धा जाने की सलाह दी होगी।"

---

१. "Free India needs you more than subject India."

आज प्रार्थना में महादेवभाई ने 'दीनानाथ दयाल नटवर' भजन गाया। मि० कटेली, सरोजिनी नायडू, मीरावहन वगैरा भी सभी प्रार्थना में आते हैं।

आज वापू ने अपने नीचे से कोच निकलवा डाला। जमीन पर जेल का गद्दा बिछवाकर दिन-भर उसी पर वैठे।

१३ अगस्त '४२

बा को आज फिर पतले दस्त हो गए। मैंने दवा का नुस्खा लिखकर मि० कटेली को दिया। उस पर लिखा था—कस्तूर बा गांधी के लिए। नीचे मेरे दस्तखत थे। महादेवभाई ने नुस्खा मि० कटेली को दिया कि या तो वाजार से या जेल के अस्पताल से दवा मंगा दें। मि० कटेली बाजार से मंगवाने को तैयार हो गए। मैंने महादेवभाई से कहा कि बाजार में लोग पढ़ेंगे कि दवा किसके लिए है और नुस्खा किसने लिखा है तो वहां थोड़ी खलवली नहीं मचेगी? इस पर महादेवभाई अपने माथे पर हाथ मारकर जेलर की मूर्खता पर हँसने लगे। वापू ने हमारी हँसी सुनी तो पूछा, "क्या बात है?" महादेवभाई ने सब बात वताई। बापू बोले, "नहीं, हमें उन्हें सुझा देना चाहिए। हम व्यर्थ ही उन्हें तकलीफ में नहीं डालना चाहते। वे सब कुछ समझकर भी कोई खतरा न मानें और नुस्खे को ज्यों-का-त्यों बाजार में भेजना चाहें तो बात अलग है।" उस वक्त मैं और महादेवभाई, दोनों थोड़ी शरारत की धुन में थे। जाने देते नुस्खा! थोड़ा-सा मजा आता। लेकिन बापू थोड़े ही ऐसा होने देने वाले थे! महादेवभाई ने मि० कटेली से कहा। वे बहुत खुश हुए। बोले, "मैं बापू का बहुत आभारी हूं।" नुस्खा उन्होंने अपने हाथ से नकल किया और वह उनके दस्तखत से बाजार गया। दवा आई। मगर बा को एक ही खराक दी जा सकी। इससे उन्हें कब्ज हो गया। इसलिए बन्द करनी पड़ी। बा की बीमारी तो बस वापू के पास पहुंचने से ही अच्छी हो गई लगती है।

बापू ने कल महादेवभाई से वाइसराय को लिखे खत की नकल पढ़ जाने और उसमें जो सुझाव हों, सो देने के लिए कहा था। महादेवभाई

दिन भर उसे पढ़ नहीं सके; लेकिन वे जानते थे कि बापू सवेरे ही पूछेंगे, "खत पढ़ा?" सो उस रात को वे दो बजे ही उठ बैठे। करीब डेढ़-दो घंटे तक बड़े गौर से खत पढ़ते रहे। फिर सो गये। अगले दिन उन्होंने उस खत के बारे में कई सुझाव दिये। बापू ने खत में सुधार किये और उसकी पक्की नकल करने के लिए खत महादेवभाई को दे दिया। उन्हें करीब दो घंटे नकल करने में लगे। पत्र लंबा था, मगर बहुत अच्छा था। बापू ने वाइसराय को लिखा था कि उनको (बापू को) इस तरह पकड़ने में सरकार की भूल हुई है। सरकार ने जो प्रस्ताव नेताओं की गिरफ्तारी को जायज साबित करने के लिए छपाया है, वह असत्य से भरा है। उसमें कांग्रेस पर जो हमले किये गए थे, उनमें से कुछ का जवाब बापू ने इस खत में दिया था और वाइसराय को सलाह दी थी कि वे अब भी अपनी भूल को सुधार लें तो अच्छा होगा।

पत्र वापस बापू के पास आया। उन्होंने हाथ में लेकर एक-आध मिनट महादेवभाई के मोती-जैसे अक्षरों को देखा, फिर उन्होंने उसमें एक-दो जगह अपने हाथ से छोटे-छोटे सुधार किये और दस्तखत कर दिये। रात को पत्र कटेली साहब को दिया गया। बापू पूछ रहे थे, "नकल करने में कितना वक्त लगा?" महादेवभाई ने कहा, "दो घंटे।" फिर बोले, "सुशीला ने सरकारी वक्तव्य में से अवतरण लेते समय एक जगह एक शब्द छोड़ दिया था। इसलिए मैंने सारा पत्र ध्यान से देखा। इस कारण भी वक्त कुछ ज्यादा लगा।" बापू मेरी तरफ देखकर बोले, "ऐसा क्यों हुआ? यह तो नहीं होना चाहिए।" मेरा मुंह फक हो गया। बापू के काम में तनिक-सी भी भूल हो जाय तो वह असह्य लगता है। बापू भी इन छोटी-छोटी भूलों को बहुत महत्त्व देते हैं। कहा करते हैं, "मुझे यह भरोसा होना चाहिए कि जो काम तुझे सौंपा वह संपूर्ण होगा। मुझे उसमें पूछने और फिर से देखने जैसा नहीं रहना चाहिए।" महादेवभाई बाद में मुझसे कहने लगे, "इस तरह की नकल करते समय ऐसा हो ही जाता है।" मैं समझ रही थी कि मुझे आश्वस्त करने के लिए ही वे ऐसा कह रहे हैं। उन्हें अफसोस हो रहा था कि बापू के सामने मेरी शिकायत क्यों की।

आजकल उनकी मनोवृत्ति कुछ ऐसी बन गई है कि किसी को या किसी के बारे में कोई अच्छी बात कह सकें तो कहें, वर्ना चुप रह जायं। कोमलता उनके स्वभाव में हमेशा से रही है। वे किसी का भी दिल दुखाना नहीं चाहते थे। इससे उन पर कभी-कभी यह इल्जाम आता था कि वे सबको सदा मीठी लगने वाली बात कह दिया करते हैं। इसलिए उनके कहे पर बहुत आधार नहीं रखा जा सकता। लेकिन इस बार की उनकी कोमलता तो पराकाष्ठा को पहुंच गई थी। उनके मन में एक ही विचार था : बापू के आदर्शों का—एकादश व्रतों का—जितना पालन हम कर सकेंगे, उतनी ही बापू के महान यज्ञ में हम उनकी सहायता कर सकेंगे।

सरोजिनी नायडू ने कल महादेवभाई से कढ़ी बनाने को कहा था। आज उन्होंने कढ़ी बनाई। बहुत अच्छी बनी थी। मैंने और महादेवभाई ने तीन बार ली। रोटी यहा कैदी बनाते हैं। चपातियां अच्छी नहीं बनतीं। महादेवभाई कहने लगे, "अगर दुर्गा यहां होती तो हमें ऐसी रोटी हरगिज न खानी पड़ती।" खाना पकाने के बारे में इधर-उधर की बातें होती रहीं। दोपहर खाने के बाद प्लेटें धोते समय महादेवभाई मुझसे बोले, "ये लोग खाने-पीने की बातें करते हैं! मैं इन्हें कैसे बताऊं कि मेरे मन में क्या चल रहा है? अगर मैं और तुम दो ही यहां होते तो बापू के लिए जो सब्जी बनती है, उसके सिवा मैं तो और कुछ भी न बनाता।"

खाने के बाद मैंने एक मौसम्बी उठाई। महादेवभाई ने लेने से इंकार किया। बोले, "तुम खाओ।" मैंने आग्रह किया। पूछा, "आप क्यों नहीं खाते हैं?" तो कहने लगे, "असल में यह बापू के लिए है। अपने हिस्से की जो खूराक हमें मिलती है, उससे ज्यादा मैं कुछ नहीं लेना चाहता। मैं बापू के साथ कई बार जेल में रहा हूं, मगर फलों को कभी छूता भी नहीं था; क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैं अकेला होता तो मुझे ये फल मिलने वाले नहीं थे।" हमारे लिए जेल से केले आया करते थे, सो केले वे कभी-कभी खा लिया करते थे।

शाम को हम लोग प्लेटें धो रहे थे। तब फिर महादेवभाई ने कहना शुरू किया, "मैं परेशान हूं। बापू कब क्या करेंगे, कुछ पता नहीं। खाना

खाते समय भी मुझे तो यही विचार सताता है कि कितने दिनों तक हम चैन से खा सकेंगे! मन पर यह एक भंयकर बोझ है।" महादेवभाई बहुत उदास नजर आते थे और ठंडी सांस ले रहे थे। मैंने पूछा, "चिंता बढ़ाने वाला कोई नया कारण पैदा हो गया है?" बोले, "जो पहले से है, वही क्या कम है और मुझे जो बाहर की खबरें मिल रही हैं, उन्हें बापू जानेंगे तो पता नहीं, उन पर क्या असर होगा?"

शाम को महादेवभाई बीच के कमरे में बैठे अकेले कात रहे थे। मैं पास जा बैठी। मैंने पूछा, "महादेवभाई, आप यहां अकेले क्यों कात रहे हैं?" वे अभी भी उदास ही थे। मुझसे बातें करने लगे। उन्हें बाबला की याद आ गई। बोले, "बावला होता तो टाइप वगैरा करने में काफी मदद देता।" फिर बड़े गर्व के साथ कहने लगे, "वह बापू के हिंदी-भाषणों की बहुत अच्छी रिपोर्ट लेने लगा है।" मैंने कहा, "हां, वह होशियार तो है ही, जल्दी ही आपके कामों में हाथ बंटाने लगेगा।" इस पर बोले, "नहीं, अंग्रेजी वह काफी नहीं जानता।" मैंने कहा, "काफी जानता है और आप और ज्यादा सिखा भी तो लेंगे!" इतने में बापू ने मुझे पुकारा।

शाम को आसमान साफ था। हम नीचे बगीचे में घूम रहे थे। घूमते समय महादेवभाई बापू से अहिंसा के बारे में चर्चा करने लगे। बोले, "व्यक्तिगत अहिंसा के बारे में तो किसी को कोई शंका है ही नहीं। सब मानते हैं कि व्यक्तिगत रूप में अहिंसा सब कठिनाइयों को हल कर सकती है; किंतु उसके सामाजिक प्रयोग के बारे में लोगों को अवश्य ही शंका है। सो आप उसका प्रयोग करके दिखा ही रहे हैं।" बाद में 'साहित्य में अहिंसा' की बात चल पड़ी। महादेवभाई ने बापू को रघुवंश में से राजा दिलीप की गो-सेवा-संबंधी कहानी सुनाई जिसमें दिलीप के गाय की सेवा करने का वर्णन है। उन्होंने सुनाया कि किस तरह बाद में शेर गाय को खाने आता है और राजा का उसके साथ क्या संवाद होता है, वगैरा। फिर कहने लगे, "मैं 'साहित्य में अहिंसा' विषय पर एक पुस्तक लिखना चाहता हूं। मेरे पास कई किताबों के नोट्स कहीं पड़े हैं। उनके आधार पर छोटे-छोटे अध्याय लिखकर तीस-चालीस अध्यायों में इस विषय के

बहुत प्रभावशाली नमूने इकट्ठा करूंगा।" बापू बोले, "इसी नाम की एक पुस्तक सेवाग्राम में हाल ही में हमारे पास आई थी।" महादेवभाई ने यह देखी नहीं थी। बोले, "तब तो हमें उसे देखना चाहिए।" फिर कहने लगे, "लेकिन हो सकता है कि इस संबंध की उस आदमी की धारणा मेरी धारणा से बिलकुल भिन्न हो।"

आज प्रार्थना में महादेवभाई ने मराठी का तुकाराम का अभंग गाया—'भक्त ऐसे जाणा जे देहीं उदास।' प्रार्थना के बाद मैंने उनसे इस भजन का अर्थ समझाने को कहा। उन्होंने समझाया। मेरे आने के बाद प्रार्थना में रामायण का गायन शुरू हुआ है। उत्तरकाण्ड का जो भाग जिस जगह से आश्रम में छूट गया था, वहीं से आगे शुरू किया गया है। ताल देने के लिए मंजीरा नहीं है, सो बापू ने मीराबहन से चम्मच और कटोरी का उपयोग कर लेने को कहा है। उन्होंने ऐसे कटोरी-चम्मच बजाकर भी दिखाया।

कल सुबह घूमते समय हम लोग बगीचे में मकान के सामने की तरफ चले गये थे। ऊपर सामने वाले बरामदे में लकड़ी की जाली लगाई गई है। उसे रंगकर यह दिखाने की कोशिश की गई है कि वह पुरानी चीज है, ताकि कोई मानें कि मुसलमानी घर में पर्दे के खयाल से लगाई गई होगी। मगर बापू को पूरा शक था कि यह नई चीज है। हमें कोई बाहर से देख न सके इस हेतु से लगाई गई है। कल उधर घूमने से यह शक सच्चा साबित हुआ। महादेवभाई को लकड़ी की जाली के कुछ ताजे छिल्के उधर पड़े मिल गए। यह जाली बरसों पहले जब मकान बना था तब लगी होती तो लकड़ी के ये ताजे छिल्के आज यहां कहां से आते! फिर आगे बढ़कर देखा। इस तरफ के प्रवेश को बंद करने के लिए इधर भी जाली का एक ऐसा ही दरवाजा लगाया गया था। उस पर बाहर की ओर से रोगन नहीं हुआ था। या तो करना भूल गए होंगे, या करना गैरजरूरी समझा होगा। लकड़ी साफ ताजी छिली हुई दिखाई देती थी। सरकार को डर रहा होगा कि इस बरामदे में खड़े होने पर बाहर वाले लोग तो बापू को देख सकेंगे, शायद भीतर बैठे-बैठे भी बापू लोगों को उकसा सकें!

चारों ओर कंटीले तारों का एक अहाता खींच दिया गया है जिसमें से हमें बगीचे का थोड़ा ही हिस्सा मिला है। बाहर की दीवार से कंटीले तारों का करीव ५० या ७५ गज का फासला रखा गया है, ताकि कहीं दरवाजे में से झांककर हम बाहर वालों के साथ संपर्क स्थापित न कर लें! मगर कंटीले तारों में जगह-जगह इतने बड़े-बड़े रिक्त स्थान हैं कि आदमी भागना चाहे तो आसानी से भाग सकता है। इन कंटीले तारों के अंदर छः सिपाही हमारी रखवाली के लिए रखे गए हैं। वे सेवा भी करते हैं। करीब एक दर्जन सजायाफ्ता कैदी सबेरे छः बजे से शाम के छः बजे तक यहां सफाई इत्यादि करते हैं। करीब पंद्रह या बीस कैदी बगीचे में काम करने आते हैं। कंटीले तारों के बाहर ७२ फौजियों का पहरा रहता है।

यहां आने वाले सब लोगों के लिए यह जगह खासी जेल है। हमारे जेलर मिस्टर कटेली यहां अकेले ही रहते हैं। अखबार तक नहीं पढ़ सकते। या तो उन्हें इजाजत नहीं है, या वह अपना फर्ज अदा करने में इतने मुस्तैद हैं कि जान-बूझकर अखबार नहीं पढ़ते। चूंकि हमें अखबार पढ़ने की इजाजत नहीं है, इसलिये अगर वह पढ़ें तो किसी समय भूलचूक से उनके मुंह से कोई बात ऐसी निकल सकती है, जिसकी खबर हमें नहीं लगनी चाहिए।

महादेवभाई तो हमेशा जिसके संपर्क में आते हैं, उसका मन हरण कर ही लेते हैं। मि० कटेली के साथ भी उनकी खूब बन गई है। जब पहला पत्र तैयार हुआ तो महादेवभाई उसे लेकर ऊपर मि० कटेली को देने चले गये। खत ले लेने के बाद बातों-ही-बातों में मि० कटेली ने कहा, "आप लोगों को ऊपर आने की इजाजत नहीं है। आपके यहां आने से पहले एक पुलिस अफसर आकर मुझसे कहने लगा कि इस जीने के सामने यह नोटिस लगा दो कि कोई ऊपर न आये।" मैंने इंकार किया। कहा, "उसमें कोई ऐसा है ही नहीं, जो खुद ऊपर आये। नोटिस लगाने की जरूरत नहीं।" इस पर महादेवभाई ने कहा, "बस, हमें पता चल गया, अब नहीं आयेंगे।" और उस दिन से उन्होंने ऊपर जाना बंद कर दिया। महादेवभाई विवेक की मूर्ति थे!

मि० कटेली भले आदमी हैं, दयानतदार हैं। सरकार के प्रति अपना फर्ज पूरी तरह अदा करते हैं। उनकी पत्नी मर गई हैं। घर पर बूढ़ी मां और बच्चे हैं। मां को बहुत याद किया करते हैं। बापू के प्रति भक्ति रखते हुए भी वे सरकार के प्रति अपना फर्ज अदा करने में कभी चूक नहीं सकते। बेचारों ने पहले तो बाहर से खाना मंगवाना शुरू किया था, लेकिन वह सब ठंडा हो जाता था। इसलिए सरोजिनी नायडू ने उन्हें अपने साथ खिलाना शुरू किया है। खाने के लिए चुपचाप आते और खाकर चुपचाप ही चले जाते हैं। सारा दिन उनसे कोई बात करने वाला तक नहीं। सिपाहियों के साथ बात भी क्या करें? कभी-कभी महादेवभाई उनसे जरूर बात कर लेते हैं। मगर हम तो सब कैदी ठहरे। कैदियों के साथ भी बेचारे कितनी बात कर सकते हैं? सरोजिनी नायडू कह रही थीं, "वह भी उतने ही कैदी हैं जितने कि हम। फर्क यह है कि उनको जेल जाने का श्रेय नहीं मिलता जो हमें मिलता है।"

सिपाही लोग भी अपने घर नहीं जा सकते। उनके जमादार का नाम रघुनाथ है। होशियार आदमी है। सन् '३२ में जब बापू पकड़े गए थे तब भी वह यरवदा में उनकी सेवा किया करता था। इसी तरह जब-जब सरोजिनी नायडू यरवदा जेल में रहीं वह हमेशा बाजार से उनके लिए सामान वगैरा लाने का काम करता था। खासा चलतापुर्जा है। सामान लेने बाजार जाता है तो तनिक अपने घर में भी झांक आता है। सिपाही की वर्दी पहनकर नहीं निकलता, क्योंकि आजकल बाजार में लड़के अकसर सिपाहियों की बुरी गत बनाते हैं। हाल ही में एक दिन वह जेल से हमारा 'राशन' ला रहा था। लोगों ने गाड़ी रोक ली। कहा कि आज हड़ताल है। तुम गाड़ी नहीं ले जा सकते। रघुनाथ चुपके से उन्हें कह आया, "नहीं जाने दोगे तो तुम्हारे ही लोग भूखों रहेंगे।" बस, सामान ले आया। उसके कुछ भाई-भतीजे वगैरा कांग्रेस में हैं। जेल भी गये हैं। अपने इस संबंध का भी वह फायदा उठा लिया करता है। महादेवभाई ने इसके साथ भी अच्छी दोस्ती गांठ ली है।

कैदियों में जो चार रसोईघर में काम करनेवाले हैं उनमें से दो काठिया-

वाड़ के गुजराती हैं। एक नकली रुपये बनाने के इल्जाम में पकड़ा गया था। दोनों भाइयों ने मिलकर कोई पंद्रह हजार रुपये बनाये थे। बाद में एक ने सारा दोष अपने सिर ले लिया। रुपयों से बहुत-सी जमीन खरीद ली। कोई हजार-एक रुपया किसी डॉक्टर को दिया। डॉक्टर ने उसे दिमागी दुर्बलता का सर्टीफिकट दे दिया, सो सजा कम हो गई। महादेव-भाई से कहने लगा, "क्या हुआ जो मेरे दो-तीन साल जेल में चले गए। अब आराम की जिंदगी बसर करेंगे।" फिर बोला, "साहब, आपके स्वराज में आप मुझे सिक्के ढालने के लिए बुला लेना।"

दूसरा एक बूढ़ा काठियावाड़ी कैदी था भूरा। उसे सब काका कहते थे। सिपाही तक उसे काका कहकर बुलाते थे। वह सब पर हुक्म चलाता था। वह हिंदू-मुस्लिम फसाद में पकड़ा गया था और बड़े गर्व से कहता था कि वह दूसरों की रक्षा करते-करते जेल आया है। बाद में पता चला कि वह कई बार जेल आ चुका है। हमेशा मार-पीट करके आता है। बड़ा बातूनी है। महादेवभाई जब नीचे सब्जी वगैरा काटने को जाते थे तो कैदियों के साथ काफी बातचीत कर आते थे। ये दोनों गुजराती बोलने-वाले कैदी तो उन्हें अपना भाई ही मानने लगे थे। कहते, "आखिर हम गुजराती जो हैं!" महादेवभाई उनके साथ बिलकुल बराबरी के आदमी की तरह बात करते थे। सो वे अक्सर कहा करते, "महादेवभाई, हम सूरत जिले में आपके घर आयेंगे।"

महादेवभाई कहते, "हां भाई, जरूर आना।"

कैदियों के साथ अपनी संपूर्ण एकता सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपने लिए जेल के कपड़े मंगाने और पहनने का इरादा भी कर लिया था। एक दिन भूरा कहने लगा, "मैं छूटनेवाला हूं, कोई चिट्ठी देना हो तो देना। मैं ले जाऊंगा।" मैंने कहा, "तुम्हारी तलाशी नहीं होगी?" उसने तुरंत एक अंडे की शक्ल की छोटी-सी डिब्बी निकाली, उसको खोला, अन्दर कागज का टुकड़ा रखकर बंद किया और झट से मुंह में डाल गया। कहने लगा, "ले लो तलाशी।" कुछ दिखता नहीं था। उसके गले में कोई पाकेट-सी बनी होगी, जहां डिब्बी छिपा रखता था। जब हमने हार मान

ली, उसने झट उबकाई-सी ली और डिब्बी निकाल कर खोलकर कागज हमारे हाथ में दे दिया। महादेवभाई कहने लगे, "अगर बापू का उपवास वगैरा कुछ हो गया और सरकार ने खबरें बाहर न जाने देने की नीति रखी तो इसके साथ मैं जरूर चिट्ठी भेजूंगा। तुम्हारे पास कुछ रुपये हैं?" मैंने कहा, "पांच रुपये हैं।" कहने लगे, "काफी हैं। बम्बई तक का किराया इसे दे सकूं तो काम निपटा। पीछे वहां से मित्र लोग सब इंतजाम कर लेंगे।"

यरवदा से आते-जाते दोनों वक्त इन सब कैदियों की तलाशी ली जाती है। यरवदा जेल में इन्हें बाहर की तरफ अलग एक बारक में रखा जाता है, ताकि वे दूसरे कैदियों से मिल न पावें और इधर-से-उधर कोई खबर न पहुंचा सकें। फिर भी वे रोज सुबह हमें इतनी खबर तो देते ही थे कि आज इतने नये कैदी आये हैं और आज इतने। जेल के फाटक पर नये कैदियों की संख्या रोज लिखी जाती है। दूसरे राजनैतिक कैदियों के लिए जगह करने के खयाल से आम कैदियों को काफी तादाद में छोड़ा भी जा रहा है। उन बेचारों को इतना फायदा तो हुआ! अच्छा है।

वाइसराय के नाम खत पूरा करने के बाद आज दोपहर बापू 'पैसिफिक अफेयर्स' पढ़ने लगे। उसमें एक वाक्य आया—"Teleological connection between bourgeois democracy, revolution and industrialism. अर्थात् एतिहासिक विकास में मध्यमवर्गीय लोकतंत्र, क्रांति और उद्योगवाद इन तीनों में क्रमिक संबंध। बापू टीलियोलोजी (Teleology)[1] का अर्थ पूछने लगे। महादेवभाई से पूछा। शब्दकोश देखा। काफी चर्चा हुई। आखिर बापू बोले, "इसे तो 'Argument in a circle' अर्थात् जो चीज साबित करनी है उसे बहस का आधार मानकर चलना कह सकते हैं। फिर चर्चा चली कि व्याकरण के अनुसार reek के साथ of आता है या with? बापू ने कहा, "बुढ़िया से पूछो

---

१. एक दार्शनिक सिद्धान्त, जिसका विकास निर्धारित दैवी उद्देश्य की सिद्धि के लिए हो रहा है।

न !" महादेवभाई बोले, "वे नहीं, बता सकेंगी। यह तो आपके और मेरे-जैसे स्कूल-मास्टरों का काम है कि व्याकरण देखें और विराम-चिह्नों का विचार करें।"

बापू मुझसे वेरीकोस (varicose)[१] का अर्थ पूछने लगे। मैंने बताया। कहने लगे, "नहीं, इसकी धातु क्या है? इसके क्या-क्या रूपान्तर हो सकते हैं? कहाँ-कहाँ यह शब्द इस्तेमाल हो सकता है, सो सब बताना चाहिए।" फिर कहने लगे कि तेरे लिए लैटिन सीख लेना जरूरी है। बोले, "मैं तुझे 'लर्नेड डॉक्टर' (विद्वान डॉक्टर) बनाना चाहता हूं।" मुझे शब्दकोश की भूमिका पढ़ जाने की सलाह दी, ताकि कोश को पूरी तरह समझकर देख सकूं।

शाम को महादेवभाई इधर-उधर पड़े लोहे के तारों को बटोर कर एक टोस्टर बनाकर लाये। बापू को दिखाया। बापू बहुत खुश हुए। बोले, "Necessity is the mother of invention." फिर बोले, "इसकी गुजराती क्या होगी?" महादेवभाई ने जरा सोचकर कहा, "गरज ए शोध नी जनेता छे।"[२]

महादेवभाई रोज कहा करते हैं, "सरदार आ जायंगे तो बापू को खूब हँसाया करेंगे। वे आ जायं और उनके आने तक प्यारेलाल न आयें तो फिर हम बड़े जोर के साथ प्यारेलाल को मांग सकते हैं।"

मीरा बहन आज फिर मुझसे कहने लगीं, "महादेवभाई को सिर की मालिश की जरूरत रहती है।" मैंने कहा, "मैंने पूछा था, पर उन्होंने करवाई नहीं।" वे कहने लगीं, "कल से तुम बापू का बिस्तर वगैरा लगा दिया करना। मैं उस वक्त महादेव के सिर की मालिश कर दिया करूंगी।" मेरा खयाल है कि महादेव मुझसे मालिश कर लिया करेंगे।" मैंने मंजूर किया। बाद में मैं आज फिर महादेवभाई के पास गई और पूछा, "क्या आप सिर की मालिश करवायेंगे?" बोले, "क्या जरूरत है?" लेकिन

---

१. स्थायी रूप से नाड़ी का बढ़ना या फैलना।

२. आवश्यकता खोज की जननी है।

आवाज से मुझे ऐसा लगा कि थके तो हैं और आधा मन कराने को भी है। मैंने कहा, "जरूरत तो आपको रहती ही है, घर पर भी तो आप मालिश करवाते ही हैं।"

बोले, "हां, बम्बई में लीलावती मल देती थी।" वे संकोच के कारण कहते नहीं थे और मुझे भी बहुत आग्रह करने में संकोच होता था। मैंने कहा, "जब मलवाना चाहें, आप मुझसे कह सकते हैं।" और मैं चली आई।

शाम को महादेवभाई कह रहे थे, "अगर बापू के उपवास की यह तलवार मेरे सिर पर लटकती न होती तो मैंने कुछ पौण्ड वजन कमा लिया होता और थोड़ा शक्ति-संचय कर लिया होता।"

१४ अगस्त '४२

आज वाइसराय को पत्र गया। विचार हुआ कि पत्र के साथ बापू के भाषणों का सार भी भेजना चाहिए। मगर वह तैयार नहीं था, इसलिए बापू ने पत्र तो भेज दिया और महादेवभाई से सार तैयार करने को कहा। नोट्स तो थे नहीं। सब कुछ जबानी तैयार करना था। शाम से पहले महादेवभाई ने वह बापू के सामने रख दिया।

बापू ने कर्नल भंडारी से सरदार और भाई की खबर पुछवाई। उत्तर मिला कि सरदार के बारे में कोई रिपोर्ट नहीं है, इसलिए तबीयत अच्छी ही होगी। भाई यहां हैं या नहीं, इसका उन्हें पता नहीं था।

महादेवभाई आज फिर कहने लगे, "अब की मैं अपने साथ कुछ सामान ही नहीं लाया। दिल होता है कि गीतांजलि भी होती तो उसके अनेक गीतों का गुजराती अनुवाद ही कर डालता।" मैंने कहा, "चलिये, काम नहीं लाये हैं तो मुझी को कुछ सिखा दिया कीजिये न!" बोले, "मैं तुम्हें क्या सिखाऊंगा। तुम्हीं मुझे थोड़ी-सी दवा-दारू सिखा दो।" मैंने कहा, "अच्छी बात है, आप दवा-दारू सीखिये और मुझे दूसरी चीजें सिखा दीजिये।"

मुझे कल से थोड़ा जुकाम था और आज तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब थी। बुखार-सा लग रहा था। शाम को महादेवभाई बापू के लिए

रस निकाल रहे थे। मुझसे कहने लगे, "तुम भी आज रस पीओ।" जब से महादेवभाई ने बताया था कि जेल में फल हमारे लिए नहीं आते हैं, मैंने फल नहीं लिये थे। महादेवभाई बहुत इसरार करने लगे। मैंने टालने की कोशिश की। कहा, "मुझे रस पीने की जरूरत नहीं मालूम होती।" मैं दूसरे कमरे में गई। लौटकर देखती हूं तो महादेवभाई ने रस का आधे से ज्यादा गिलास भरकर मेरे लिए तैयार रखा था। उसे गरम होने भी रख दिया था। कहने लगे, "नमक और नीबू के साथ गरम रस गले को बहुत फायदा पहुंचाता है।" मैं रस पीने बैठ गई। अंगीठी जल रही थी। महादेवभाई ने भी अपने लिए टोस्ट सेंक लिये और उसी समय बैठकर खा लिये। घूमते समय आज महादेवभाई बापू को साबरमती आश्रम की किताबों के संबंध में कुछ कहते रहे। बापू ने आश्रम की पुस्तकें महादेवभाई को सौंपी थीं और उन्होंने उनकी एक सुंदर लाइब्रेरी बना ली थी।

प्रार्थना में महादेवभाई ने आज तुकाराम का 'जे का रंजले गांजले, त्यांसी, म्हणे जो आपुले'—अभंग गाया और बाद में उसका अर्थ भी समझाया। उन्होंने बताया कि इसी अभंग के जरिये सबसे पहले उनका तुकाराम के साथ परिचय हुआ था। गोखले ने एक जगह लिखा है कि एक बार वे रानडे के साथ रेलगाड़ी की यात्रा कर रहे थे। सवेरे गाने की आवाज सुनकर जाग उठे। रानडे ध्यानावस्थित होकर 'जे का रंजले गांजले' अभंग गा रहे थे। प्रार्थना के बाद महादेवभाई ने 'रीडर्स डाइजेस्ट' में से 'द अमेजिंग मि० क्रिप्स' (हैरतअंगेज क्रिप्स) नामक एक लेख बापू को पढ़कर सुनाया।

सोने का समय हुआ। मीराबहन कहने लगीं, "तुम्हें सो जाना चाहिए। बापू के सिर की मालिश नहीं करनी चाहिए। तुम्हें आराम मिलेगा और बापू जुकाम की छूत के खतरे से बचेंगे।" मुझे तो आराम की इतनी जरूरत नहीं थी। मगर मैं बापू को अपना जुकाम दूं, यह कैसे हो सकता था? इसलिए मैंने महादेवभाई से कहा कि वे बापू के सिर की मालिश कर दें।

बापू पाखाने गये हुए थे। उस समय महादेवभाई सरोजिनी नायडू के साथ बात कर रहे थे। बाद में सरोजिनी नायडू ने मुझे बताया कि कैसे उस रात पहली ही बार महादेवभाई उनको बापू के पास अपने आने का किस्सा सुना रहे थे। किस तरह पहले बापू ने उन्हें वकालत छोड़ने से मना किया था और फिर कैसे एक दिन उन्हें बापू का एक पोस्टकार्ड मिला जिसमें बापू ने उन्हें बुलाया था। एक बार कलकत्ते में मुझे भी महादेव-भाई ने यह सारा किस्सा सुनाया था। उन्होंने कहा, "फिर मुझे बापू का एक पोस्टकार्ड मिला। उसमें एक ही वाक्य था, 'हुं तमने मारी सोड़मां इच्छुं छुं',[1] और बस मैं चला आया!" यह कहते समय उनकी आंखों में आंसू छलक आये थे।

मेरे जाने के बाद बात फिर बापू के उपवास पर आकर रुकी। आजकल महादेवभाई इसके सिवा दूसरी किसी चीज का ज्यादा देर तक विचार ही नहीं कर सकते। कहने लगे, "बापू के हरिजन-उपवास के दिनों में पंडित सातवलेकर ने एक पंचांग भेजा था, जिसमें करीब एक साल पहले से बापू के उपवास की निश्चित तारीख दी हुई थी। अब की फिर उन्होंने उनसे वह पंचांग मंगवाया। उनका उत्तर आया कि वह खुद पहले से इस पंचांग की तलाश में थे। १९४२ तक तो उसमें किसी उपवास का जिक्र नहीं था। उसके बाद वह पंचांग छपना ही बंद हो गया था।

इस पर सरोजिनी नायडू महादेवभाई को अपने एक मित्र की बात सुनाने लगीं। उनके पास एक विशिष्ट अन्तर्दृष्टि थी, जिससे उन्हें भविष्य में और दूसरी जगह होनेवाली बातों का पता चल जाता था। सरोजिनी नायडू ने उनके ऐसे कई किस्से सुनाये। एक बापू के हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य के लिए किये गए उपवास के बारे में था। दूसरा किसी के मरने के बारे में। इसी तरह जहाजों के डूबने आदि के किस्से थे। महादेवभाई बापू का सिर मलने आये तो इनमें से कुछ किस्से उन्हें सुनाने लगे। मैं अपनी खटिया पर पड़ी-पड़ी सुन रही थी। मैंने कहा, "मुझे तो भगवान अन्तर्दृष्टि की

---

१. मैं तुम्हें अपनी गोद में चाहता हूं।

यह विभूति दे तो भी मैं इसे लेने से इंकार कर दूं। पहले से ही आदमी दुःख आनेवाला है यह जानकर दुःखी क्यों हो?" भगवान हँस रहा होगा! अगर अगले दिन सुबह की घटनाओं को हम जानते होते तो उस रात कौन सोने वाला था?

: ८ :

महादेवभाई का अवसान

१५ अगस्त '४२

प्रार्थना में बापू और मैं, दो ही सुबह उठा करते हैं। महादेवभाई उठना चाहते हैं, मगर रात में नींद टूट जाती है तो फिर चार बजे नहीं उठ पाते। आज सुबह भी मैंने और बापू ने प्रार्थना की। प्रार्थना पूरी करके हम लोग वापस अपने बिस्तरों पर गये, इतने में महादेवभाई उठे। बा से प्रार्थना के बारे में पूछने लगे। बा ने उत्तर दिया, "हां, अभी-अभी खतम हुई।" आज महादेवभाई का विचार प्रार्थना में आने का था, मगर उन्हें कोई आध घंटे की देर हो गई। इससे वह न आ सके। छः बजे बापू उठकर आये तो महादेवभाई ने उनके लिए रस निकाल कर तैयार रखा था। बाद में जाकर टोस्ट सेंके, चाय बनाई। सरोजिनी नायडू स्नान करके निकलीं तो मेज पर चाय आदि सब चीजें सजी हुई थीं। टोस्ट को काट-सेंककर खूब सुंदर ढंग से लगा दिया था और खुद हजामत बनाकर वहां बैठे थे। एक दिन बापू मुझसे पूछ रहे थे, "तुम दोनों में कौन अच्छे टोस्ट बनाता है, तू या महादेव?" आज मैंने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, उस दिन बापू के पूछने पर मैं यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थी कि आप मुझसे ज्यादा अच्छे टोस्ट बनाते हैं। मगर आज मुझे यह स्वीकार करना ही होगा और आपके सामने हार माननी ही पड़ेगी। सेंक-साककर आपने तो आज इनको इतने सुंदर ढंग से सजा भी दिया है!" महादेवभाई कहने लगे, "मुझे समय मिले तो मैं सब कुछ कर सकता हूं; लेकिन रोज रात को

नींद अच्छी नहीं आती। सुबह देर से उठता हूं तो समय नहीं रह जाता। आज जल्दी उठा था, इसलिए इतना सब काम कर सका।"

इतने में सरोजिनी नायडू आईं। वह भी महादेवभाई को शावाशी देने लगीं। महादेवभाई हँसने लगे। बोले, "हां, अब मुझे आसानी से खानसामा की नौकरी मिल सकती है।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "हां, बापू की गृहस्थी में। इस गृहस्थी में तुम क्या नहीं हो?" महादेवभाई मेरे पास ही बैठे नाश्ता कर रहे थे। मैंने देखा कि उनकी प्लेट में एक टोस्ट पड़ा है, लेकिन उन्होंने बीच में जो प्लेट रखी थी, उसमें से एक टुकड़ा और उठा लिया। मैं समझी, वापू महादेवभाई को कवि कहते हैं। बातों में भूल गए होंगे कि उनकी अपनी प्लेट में भी टोस्ट पड़ा है। इसलिए वह टोस्ट मैंने उठा लिया। लेकिन महादेवभाई ने तो उसे खाने के इरादे से ही रखा था। मैं वापस रखने लगी तो मना किया। बोले, "नहीं, अब तुम्हीं खा जाओ।" कहावत मशहूर है कि दाने-दाने पर मोहर होती है। महादेव-भाई का हिसाब खत्म हो चुका था, सो उनकी प्लेट में सामने रखा हुआ टोस्ट भी उठ गया।

महादेवभाई की हजामत का जिक्र करते हुए सरोजिनी नायडू बोलीं, "आज जब मैं नहाने गई, मैंने महादेव को बड़े आईने के सामने बैठा देखा। वे हजामत बना रहे थे, अपनी मूंछों को छांट रहे थे और नाखून काट रहे थे। मैंने मन-ही-मन सोचा, "अरे, आज महादेव को यह हो क्या गया है? अचानक उनको आज इस प्रकार सजने की कहां से सूझी?" मगर वह तो कुदरत ही उनसे तैयारी करवा रही थी—

करले सिंगार चतुर अलबेली,
साजन के घर जाना होगा।

जब मैं बापू के साथ घूमने को निकली तो बगीचे के सामने के कोने से महादेवभाई निकल कर आये और कहने लगे, "लकड़ी की जाली का यह काम नया है, इसका दूसरा सबूत मुझे मिला है। यह देखिये, लकड़ी की चीपों का ढेर लगा पड़ा है। अब मैं इसका ठीक-ठीक उपयोग करा लूंगा।"

घूमते समय महादेवभाई वल्लभभाई की बातें सुनाने लगे। बताते थे कि वल्लभभाई कपड़ों के बारे में कितने शौकीन थे। वे बहुत सफल बैरिस्टर थे। महीने में आठ-दस दिन ही अदालत जाते थे। बाकी वक्त क्लब में बैठकर 'ब्रिज' खेला करते थे। तिस पर भी महीने में हजार-पंद्रह सौ रुपये कमा लेते थे। एक बार वे एक दोस्त के साथ बैठकर 'ब्रिज' खेल रहे थे। दोस्त के हाथ में पत्ते थे। एकाएक दोस्त ने पीछे हटकर अपना सिर कुर्सी की पीठ पर टिका दिया। पत्ते हाथ ही में रह गए और उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। तब से वल्लभभाई को ताश अच्छे नहीं लगते।" हम सब सुन रहे थे। कौन जानता था कि दो घंटे के अंदर ही महादेवभाई का भी यही हाल होनेवाला है!

आज महादेवभाई बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे। बापू ने नींद के बारे में पूछा तो खुश होकर कहने लगे, "आज पहले दिन ही गहरी नींद आई। इसलिए जल्दी उठ भी सका और अपना सब काम सबेरे ही कर लिया। मैं तो आज प्रार्थना में भी शामिल होनेवाला था, लेकिन जरा-सी देर हो गई। प्रार्थना समाप्त हुई कि मैं उठा।" वह बहुत उत्साह में थे। दिन अच्छा शुरू हुआ है, इससे खुश थे। बापू कहने लगे, "सो तो है ही। तुम्हारी नींद सुधर जाय तो सब ठीक हो जाय।" फिर इधर-उधर की बातें करते रहे। आज बगीचे की सफाई रोज से ज्यादा मुस्तैदी के साथ हो रही थी। महादेवभाई कहने लगे, "आज इन्स्पेक्टर जनरल आनेवाले हैं, इसीलिए यह सब सफाई हो रही है।" मैंने कहा, "इन्स्पेक्टर जनरल से मेरे लिए कुछ स्वास्थ्य-संबंधी अखबार मांग लीजियेगा।" बोले, "तुम खुद ही क्यों नहीं मांग लेतीं?" मैंने कहा, "शायद उस वक्त मैं मालिश में रहूं, इसलिए आपसे कहा है।" बातों-बातों में मैंने कहा, "महादेवभाई, एक तरह से यह जेल अच्छी है। बापू भी बहुत थक गए हैं आप भी थके हुए थे। यहां जबर्दस्ती का आराम मिल रहा है। बाहर जाने के समय तक आप और बापू बाहर के काम के लिए काफी शक्ति का संग्रह कर लेंगे।" इस पर वे बहुत गंभीर होकर मेरी ओर देखने लगे और बोले, "सो मैं नहीं जानता।"

घूमकर हम लोग ऊपर आये। मैं मालिश के लिए बापू के साथ चली गई। इतने में आवाज से पता चला कि इन्स्पेक्टर जनरल आ गए हैं। मैं कमरे में कोई चीज लेने गई। महादेवभाई सरोजिनी नायडू वाले गुसलखाने में से निकल रहे थे। बगल में 'आर्ट आव लिविंग' (जीवन-कला) नाम की किताब थी; लेकिन वे चुपचाप चले गए। यह कुछ असाधारण-सी बात थी। नहीं तो उनसे कहीं भी मिलें, कुछ तो वे कहते ही थे। उनका यह भी खयाल रहता था कि भाई यहां नहीं हैं, इसलिए मेरे लिए भाई की कमी को जितना पूरा कर सकें, करें। खाने के समय भी हमेशा मेरी राह देखा करते थे।

मेरे आने से पहले बापू के खाने के बरतन और उनके कपड़े कैदी धोते थे। महादेवभाई कभी अपने कपड़े खुद धोते, कभी-कभी धुलवा लेते थे। मीराबहन अक्सर अपने कपड़े खुद धोती थीं। मीराबहन ने बताया कि कैदी लोग बापू का काम करते खुश होते हैं तो उन्हें करने देना चाहिए। बापू की बातों से मैं समझी कि उन्हें कैदियों और सिपाहियों से सेवा लेना पसंद न था। कहते थे, "मैं नहीं चाहता कि वे लोग हमें अपना सरदार समझें। हम भी उन्हीं के जैसे कैदी हैं। मुझे तो अपना काम खुद कर लेना या अपने साथियों से करवा लेना ही प्रिय है।" इसलिए मैंने बापू के बरतन खुद साफ करने शुरू कर दिए। कपड़े तो अपने मैं धोती ही थी, बापू के भी धोने लगी। बापू स्नान करके निकल आते तब मैं कपड़े धोती और स्नान करती थी। महादेवभाई बापू को खाना लाकर देते और फिर मेरी राह देखते रहते।

दोनों गुसलखानों के बीच जो दीवार है, वह छत तक नहीं गई, इससे आवाज एक गुसलखाने से दूसरे में आसानी के साथ पहुंच सकती है। दाहिने हाथवाला गुसलखाना बापू इस्तेमाल करते हैं और दूसरे भी चाहें तो कर सकते हैं। इस गुसलखाने में कमोड के ऊपर बत्ती है। बापू हमेशा पाखाने के समय में पढ़ते हैं, इसलिए उन्होंने यह गुसलखाना पसंद किया है, वर्ना यहां एक आदमकद आईना भी है जो बापू के काम की चीज नहीं। दूसरे गुसलखाने का इस्तेमाल सरोजिनी नायडू करती हैं और प्रायः बा और

मीराबहन भी। करीब हर रोज ही मैं स्नान पूरा करने पर होती या कपड़े पहनती होती, तभी महादेवभाई सरोजिनी नायडू वाले गुसलखाने से निकल कर पुकारते, "ए सुशीला, कितनी देर है तुमको?" पहले ही रोज उन्हें बहुत भूख लग रही थी। बापू ने आग्रह करके मेरे निकलने से चार-पांच मिनट पहले उन्हें खाने के लिए भेज दिया। बाद में बापू ने मुझे पुकारा और कहने लगे, "तुम बहुत वक्त लेती हो। तुम जानती हो कि महादेव कब से तुम्हारी राह देख रहा है?" मैंने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, आप मेरी राह न देखा कीजिए। खाने के लिए समय पर चले जाइये। मैं आपके बाद ही आ जाऊंगी।" दूसरे दिन बापू के स्नान-घर से निकलने के समय मैंने खास तौर पर उनसे जाकर कहा, "आप खाना खाने जायं। मुझे देर लगेगी।" लेकिन मैं स्नान करके निकली तो देखा, महादेवभाई मेरी राह देखते बैठे थे! वे जानते थे कि मुझे अकेले भोजन करना अच्छा नहीं लगता। खाने की मेज सरोजिनी नायडू के कमरे में है और उनसे मेरा परिचय तो यहां आने से पहले नहीं के बराबर ही था। इसलिए महादेवभाई खाते समय मेरा साथ देते और दूसरे जिस काम में भी साथ दे सकें, देते थे।

महादेवभाई सरोजिनी नायडू के कमरे में जाकर इन्स्पेक्टर जनरल से बातें करने लगे। मैं बापू की मालिश कर रही थी। बातों के बीच-बीच में हँसी की आवाज आती रहती थी। मैंने एक पैर पूरा करके दूसरा पैर शुरू किया, इतने में सरोजिनी नायडू ने मुझे पुकारा, "सुशीला, यहां आओ।"

मैंने सोचा, "इन्स्पेक्टर जनरल सबको देखना चाहता होगा। दूसरा पैर जल्दी से खत्म कर लूं और पोंछकर ही जाऊं।" लेकिन इतने में तो दूसरी आवाज आई और साथ ही बा भागती-हांफती आकर बोलीं, "महादेव को कुछ हो गया है। उन्हें फिट आ गया है। मिरगी-सी दिखती है।" मैंने बापू का पांव छोड़ दिया। भागती हुई गई। सरोजिनी नायडू ने फिर पुकारा। मैं उनके कमरे में पहुंची। इसमें ज्यादा-से-ज्यादा एक मिनट लगा होगा। . . . .

जाकर देखती हूं तो महादेवभाई सरोजिनी नायडू के कमरे में पलंग पर

लेटे हुए थे, बेसुध। चेहरे पर ऐंठन हो रही थी। मेरे देखते-देखते सिर से पैर तक जोर का एक झटका-सा लगा। मैंने नाड़ी देखी। नहीं मिल रही थी। रक्त का दवाव देखने की कोशिश की, वहां भी कुछ नहीं, हृदय पर स्टेथॉस्कोप रखा——खामोशी! हृदय की धड़कन ही नहीं सुनाई पड़ रही थी। मैंने कहा, "वापू को बुलाओ। ये जा रहे हैं।" ओठों पर कुछ झाग-से थे। सांस कुछ रुक-रुक कर चल रही थी। मैं अपनी दवा की पेटी लाई; लेकिन वह खुलती ही नहीं थी। मैं उसे खोलने की कोशिश कर रही थी, साथ ही हिदायतें भी दे रही थी कि ब्राण्डी लाओ, हृदय के लिए दवा दो।

हाथ-पैर ठंडे होने लगे थे। दवा कोई मौजूद न थी। भंडारी लेने गये थे। सरोजिनी नायडू ने अ-द-कोलोन और शहद दिया और कहा, "यह ब्राण्डी का काम करता है।" मैंने तो ब्राण्डी मालिश के लिए मांगी थी। लेकिन जब सरोजिनी नायडू ने यह मिश्रण दिया तो उसे मैंने महादेव-भाई के मुंह में डाल दिया। निगलने की ताकत अभी उनमें कायम थी। निगल गये। मिस्टर कटेली ने दवा की पेटी का ताला तोड़कर उसे खोल दिया था। उसमें से कैल्शियम ग्लुकोनेट ही निकला। हृदय को बल पहुंचानेवाली कोई भी दवा न थी। मैं दिल्ली से इतनी जल्दी में निकली थी और बंबई में भी ऐसी भाग-दौड़ रही कि अपनी पेटी में वक्त-जरूरत की दवाओं का संग्रह कर ही नहीं पाई थी। मैंने महादेवभाई का हाथ उठाया, बिलकुल ढीला पड़ा था। नस में कैल्शियम ग्लुकोनेट का इंजेक्शन दे दिया। इतने में भंडारी ब्राण्डी की बोतल लेकर आये। मैंने कहा, "कार्डिएक स्टिम्युलण्ट्स' कहां है?" तो फिर नीचे भागे। इस बीच मैंने ब्राण्डी मुंह में डाली। लेकिन निगलने की ताकत बहुत मंद पड़ गई थी। काफी देर तक वह मुंह में ही पड़ी रही। बाद में बापू ने कहा, "मैं तो तेरा हाथ पकड़ लेना चाहता था, मगर फिर रहने दिया, तेरी जगह कोई और होता तो मैं ब्राण्डी हरगिज नहीं देने देता!"

महादेवभाई को उल्टी होने लगी। मगर उसे बाहर निकालने में मुश्किल पेश आई। मैंने जबड़े को सहारा दे रखा था। सिर एक तरफ कर दिया, ताकि हवा की नली में उल्टी का कोई हिस्सा न चला जाय। बापू

तो मेरे बुलवाने के बाद दो-तीन मिनट में ही आ गये थे। वे कभी महादेव-भाई का हाथ पकड़ते, कभी सिर पर हाथ रखते। वे उनकी आंख की तरफ टकटकी लगाकर खड़े थे। कहते थे, "मुझे विश्वास था कि एक बार भी महादेव मेरी ओर देख लेगा तो उठकर खड़ा हो जायगा।"

जब सरोजिनी नायडू ने मुझे पुकारा था तो बापू समझे थे कि भंडारी से मिलने के लिए बुला रही हैं। जब वे बुलाने आईं तब भी बापू ने यह नहीं सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है। वे कुछ पढ़ रहे थे। यही समझे कि भंडारी के कारण ही मुझे बुलाते हैं। फिर जब मेरे कहने पर उन्हें बुलाने गये तब भी वे यही समझे कि भंडारी से मिलने के लिए ही उन्हें भी बुलाया जा रहा है। बाद में जब यह सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है, तब भी वे यह नहीं समझे कि कोई गंभीर घटना हुई है। यही खयाल रहा कि जैसे पहले कभी-कभी चक्कर आ जाता था, वैसे ही अब भी आया होगा। जरा देर में अच्छा हो जायगा।

सरोजिनी नायडू ने बापू को बताया कि कमरे के बीच में महादेवभाई खड़े थे। भंडारी और सरोजिनी नायडू दोनों कुर्सियों पर बैठे थे। महादेवभाई कुछ बातें कर रहे थे। मजाक चल रहा था। सब-के-सब खूब हँस रहे थे। इसी हँसी की आवाज हमें बाहर सुनाई पड़ रही थी। कुछ देर बाद महादेवभाई ने भंडारी से मेरे लिए स्वास्थ्य-संबंधी अखबार मांगे और फिर एकाएक कहने लगे, "मुझे चक्कर आता है।" भंडारी ने कहा, "बदहजमी होगी, लेट जाइए।" महादेवभाई चलकर तीन-चार गज के फासले पर पड़े पलंग पर जाकर लेट गए। भंडारी ने नाड़ी देखी तो वह बहुत तेज और कमजोर थी। उन्होंने सरोजिनी नायडू से कहा कि वे मुझे बुलायें और खुद फोन करके सिविल सर्जन को बुलाने ऊपर गये। महादेव-भाई जब बात कर रहे थे, गरम वास्कट पहने हुए थे। खाट पर लेटते समय उन्होंने उसे निकाल डाला होगा। जब मैं पहुंची, वह आधी निकली हुई थी।

उल्टी होने के साथ ही वे कराहने भी लगे। भयानक कराह थी, मानों किसी गुफा में से निकल रही हो! कराहट न बापू से सही जाती थी

और न हममें से किसी से। स.स रुक-रुककर चलती थी। ऐंठन तो जोर की नहीं थी, मगर कपकंपी बीच-बीच में होती थी। एक बार तो चेहरा बिलकुल टेढ़ा हो गया, मानो एक हिस्से को लकवा मार गया हो। मेरे मन में आया---क्या इस फिट के कारण ये अपंग होकर रह जायगे ? किंतु महादेवभाई के समान सुकृत आत्मा अपंग क्यों होने लगा। एकाएक फिर एक जोर का झटका-सा लगा। जबड़ा इतने जोर से भिड़ गया कि मुझे लगा कि हड्डी टूट जायगी। उस वक्त मैं जबड़े को पकड़े हुए थी। फिर वह ढीला पड़ गया। कराहना कम हुआ। सांस और धीमी पड़ी। मैंने बापू से कहा, "बापू, जमनालालजी की तरह ये तो जा रहे हैं।" जब मैंने कहा, 'जा रहे हैं' तब कहीं बापू समझे कि सचमुच स्थिति गंभीर है और महादेवभाई जा रहे हैं। एक बार तो ऐसा आभास हुआ कि उन्होंने आंख खोली हैं और बोलने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने खुश होकर कहा, "ठीक है। वे संभल रहे हैं।" लेकिन वह निरा आभास ही था। फिर से आंख बन्द हो गईं। सांस तो रुक-रुककर चलती ही थी, और भी धीमी पड़ गई। शरीर काला पड़ने लगा।

बापू तो सारा समय टकटकी लगाकर उनकी आंख की तरफ ही देख रहे थे। अपनी सारी शक्ति एकाग्र करके इसी बात में लगा रहे थे कि एक बार महादेव की आंख उनकी आंख से मिल जाय तो महादेव उठ बैठें। उन्होंने बताया कि एक बार तो आंख जरा खुली भी थी, लेकिन पथराई हुई थी। उसमें देखने की शक्ति नहीं थी। बोलने की तो कोशिश भी वे कैसे करते ! सिर्फ कराह ही सुनाई देती थी।

लिखने में इतना समय लगा है, लेकिन यह सारा व्यापार तो विद्युत्-वेग से हुआ था। मुझे तो शुरू से अखीर तक एक ही क्षण-सा लगा। इधर मैंने ब्राण्डी का चमचा मुंह में डाला और उधर भंडारी दवा लेकर पहुंचे। मैं इंजेक्शन देने जा रही थी कि उन्होंने रोका। कहा, "एक नस में भी दो।" सो एक पुट्ठे पर दिया, एक नस में।

महादेवभाई अब पसीने से भीग रहे थे। शुरू से ही उनका चेहरा और हाथ संगमरमर की तरह सफेद पड़ गए थे। उस सफेद संगमरमर

पर अब पसीने के मोती छिटक आये। इंजेक्शन का जरा भी असर नहीं हुआ। नाड़ी तो बंद थी ही, श्वास भी बंद हो गया। सिविल सर्जन आये तब तक पंछी उड़ चुका था। सब खेल खत्म हो चुका था। पूछने लगे, "क्या 'हाइ ब्लडप्रेशर' था ?" मैंने कहा, "नहीं।" बोले, "तो कारोनरी थ्राम्बोसिस होगा ? क्या इन्हें कभी दर्द उठता था ?" मैंने कहा, "नहीं, लेकिन उन्हें चक्कर आया करते थे। इस हमले के वक्त भी कोरोनरी थ्रोम्बोसिस का मुख्य लक्षण दर्द मौजूद नहीं था।" "मुझे अफसोस है—" कहकर वे चले गए।

: ९ :

अग्नि-संस्कार

जब मैंने देखा कि सांस भी बंद हो गई है तो मैं दूसरे कमरे में चली गई कि कहीं कोई मेरी आंखों में पानी न देख ले। मगर बा पीछे-पीछे आईं और बोलीं, "महादेव का क्या हाल है ?" मैं क्या कहती ? चुप रह गई। बा अधीर हो उठीं। बड़ी हिचकिचाहट के बाद, मैंने बा के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "बा, वे तो गये !" बा चीख उठीं, "एं, महादेव गये ? कहां गये ? अरे महादेव, तुम कहां गये ?" वे फूट-फूटकर रोने लगीं। बा के पीछे-पीछे बापू भी आ पहुचे। उन्होंने बा को दिलासा दिया। हम सब महादेवभाई के पास (वे अब कहां थे ? उनके शव के पास) लौटे। महादेव-भाई का एक पैर सीधा था, दूसरा मुड़ा हुआ। मैंने उसे सीधा किया। आंखें अधखुली थीं, उन्हें बंद किया। क्या कभी स्वप्न में भी मुझे यह विचार आ सकता था कि महादेवभाई की आंखें मुझे बंद करनी पड़ेंगी ? उनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी, मानो कोई योगिराज समाधिस्थ होकर पड़े हों ! पास ही उनका अपना तौलिया पड़ा था। उससे मैंने उनका मुंह साफ किया था। बापू कहने लगे, "महादेव की जेबें खाली कर ले।" मेरे लिए यह कठिन काम था। उनकी जेब में हाथ डाला तो मुझे लगा कि हाथ

टूट जायगा! क्या महादेवभाई सचमुच चले गये? और मैं उनकी जेबें भी खाली कर रही हूं! कुर्ते की जेवें खाली थीं। वास्कट आधी उनके नीचे थी। बड़ी मुश्किल से मैंने उसे उनके नीचे से निकाला। एक जेव में से पेन निकला, दूसरी से गीताजी। वापू कहने लगे—'वैष्णव जन' गाओ, रामधुन चलाओ। मैं अपनी भजनावली निकाल कर लाई। सरहद से लौटते समय दिल्ली के स्टेशन पर जब मैं और भाई उनसे (महादेवभाई) से अलग हुए तव उन्होंने यह भजनावली मुझे दी थी। उसमें उन्होंने बीच-वीच में कोरे पन्ने लगवाये थे। देने से पहले, रात भर जागकर, उन्होंने उस भजनावली में अपने हाथ से वे भजन लिख दिये थे, जो मुझे प्रिय थे, पर भजनावली में नहीं थे। उनकी सूची भी तैयार कर दी थी। आज वे सब स्मृतियां ताजी हो उठीं। यह भजनावली मैंने महादेवभाई के सामने निकाली होती तो उन्हें अच्छा लगता। अव वे कभी यह जान भी न सकेंगे कि उनकी दी हुई भजनावली इस जेल में आ पहुची है! मगर अब यह सब सोचना तो व्यर्थ था। महादेवभाई की खाट के पास वैठकर प्रार्थना की। गीताजी के अठारहवें अध्याय का पाठ किया।

बापू ने कर्नल भंडारी से कहा, "वल्लभभाई और खेर वगैरा को यरवदा से मेरे पास भेज दीजिये। बाद में मैं विचार करूंगा कि मुझे शव किसके हवाले करना चाहिए।" भंडारी चले गए। उन्हें जाकर सरकार को खबर देनी थी और इजाजत लेनी थी कि आगे क्या करना चाहिए।

बापू कहने लगे, "अव मैं जाकर स्नान कर लूं। वल्लभभाई वगैरा के आने से पहले मैं तैयार हो जाना चाहता हूं।" वे स्नान करने गये, लेकिन फिर तुरंत वापस आ गए। बोले, "नहीं, मैं पहले महादेव को नहला दूं, फिर खुद स्नान करूंगा।"

मेजर अडवानी (जो कर्नल भंडारी के साथ आ गए थे और अभी तक बैठ थे), मि० कटेली और कुछ सिपाहियों ने मिलकर शव को उठाया और गुसलखाने में ले जाकर वापू ने उसे टव के पास रखवा लिया। दैवयोग से महादेवभाई का सिर उत्तर की तरफ था। बाद में मुझे पता चला कि हिंदू रिवाज के मुताबिक शव का सिर उसी तरफ रखा जाता है। बापू ने

उनके कपड़े उतारने को कहा। धोती तो आसानी से निकल गई, मगर कटेली और अडवानी कुर्ता नहीं निकाल सके। वे उसे इतने भद्दे ढंग से निकालने की कोशिश कर रहे थे कि मुझसे न रहा गया। मैं खुद जाकर मदद करने लगी और कुर्ता निकाला। शरीर इतना गरम और इतना कोमल था कि मेरा सिर घूमने लगा। बोली, "बापू, महादेवभाई कहीं जिंदा तो नहीं हैं ?" बापू बोले, "सो तो तू जान।" मैं फिर से स्टेथॉस्कोप उठाकर लाई। लेकिन यह सब मूर्खता थी। हृदय की धड़कन तो कभी की बंद हो चुकी थी। आईना लाकर महादेवभाई की नाक के सामने रखा। कुछ नहीं था। अडवानी से कहा, "आप भी जांच लें।" मगर वहां कुछ होता तब न ? डॉक्टर होते हुए भी मैं अपनी समता खो बैठी थी। बापू कहने लगे, "जिंदा है तो अभी गरम पानी डालने से उठ बैठेगा।" सिपाही तो चले ही गये थे। अडवानी और कटेली ने पूछा, "हम जायं ?" बापू ने कहा, "हां, जाइये।" मैंने पूछा, "मैं भी ?" बोले, "हां!" मैं आकर कमरे में खड़ी हो गई। मगर मैंने देखा कि पानी का डिब्बा उठाते हुए बापू के हाथ जोर-जोर से कांप रहे थे और सारा शरीर भी सिर से पांव तक कांप रहा था। मुझे लगा, कहीं बापू गिर पड़ें तो ? इसलिए उनकी मनाही होते हुए भी मैं फिर उनके पास लौट गई। उन्होंने मुझे रहने दिया। सचमुच ही उन्हें मदद की जरूरत थी। शायद पहले वे समझे होंगे कि मैं खुद जाना चाहती हू, इसीलिए जाने की पूछ रही हूं।

मैंने पानी डालना शुरू किया। बापू तौलिये से रगड़-रगड़कर महादेव-भाई का शरीर साफ करने लगे। मुंह पर पानी डाला तो मजबूती से भिड़े हुए ओंठों पर पानी पड़ने से ऐसा आभास होने लगा मानों वे खुद जोर से ओंठ बंद कर रहे हों—ठीक उसी तरह, जिस तरह स्नान करवाते समय बच्चे अपना मुंह और आंख जोर से मींच लेते हैं। पानी पड़ते वक्त चेहरे पर मुस्कराहट का भी आभास होता था। बापू ने एक-एक अंग साफ किया। मैंने पैर साफ किये। महादेवभाई अक्सर नंगे पांव घूमा करते थे, इसलिए तलवों में रंग-सा चढ़ गया था। बापू ने उसे देखा। बोले, "पांव बिलकुल साफ होने चाहिए।" कैसा करुण दृश्य था ! पिता के हृदय की

वेदना और प्रेम का वह सूचक था। मैंने तौलिये में साबुन लगाकर पैरों को अच्छी तरह घिसा। आखिर पैर साफ हुए। बापू कहने लगे, "अब तुम जरा इसे एक करवट पर लो तो मैं इसकी पीठ साफ कर दूं।" महादेव-भाई का शरीर वैसे भी भारी था। शव और भी भारी हो गया था। मैंने स्नान वाले टब का पिछली तरफ से सहारा लेकर बड़ी मुश्किल से उसे एक करवट पर किया। करवट बदलते समय मुझे सांस की-सी आवाज सुनाई दी। मैंने चौंककर कहा, "बापू, महादेवभाई ने सांस ली है।" बापू हँसे। बोले, "तू पगली है, सब तेरी कल्पना है।" मगर वह मेरी कल्पना नहीं थी। करवट पर आने से नीचे का फेफड़ा दब गया था और इस बोझ की वजह से उसके अंदर की हवा बाहर निकली थी।

स्नान समाप्त हुआ। कल महादेवभाई ने आज स्नान के बाद पहनने के लिए अपने कपड़े धोकर रखे थे—उनमें से एक धोती मैं उठा लाई। तौलिया तो उल्टी पोंछने के काम आ चुका था, इसलिए बदन सुखाने को बापूजी ने दूसरा तौलिया मांगा। मेरी भाभी ने अपने सूत का एक तौलिया मुझे भेजा था। मेरा विचार था कि वह बापू के काम आये। बुढ़िया सुनेगी तो बहुत खुश होगी। लेकिन उसका दूसरा उपयोग लिखा था। मैंने बापू को वह तौलिया लाकर दिया। उससे हमने महादेवभाई का शरीर पोंछा। अब शव को बाहर लाना था। मि० कटेली सिपाहियों को बुलाने लगे। मुझे लगा, भूरा और मगन कैदियों को बुलवाना चाहिए। उन्हें अच्छा लगेगा। भूरा और मगन आये। दोनों ने अकेले ही शव को उठा लिया। बापूजी के और श्रीमती नायडू के कमरों के बीच में एक छोटा कमरा है। इसी में बैठकर महादेवभाई आज सुबह हजामत बना रहे थे। परसों शाम को यहीं बैठकर कात रहे थे और बहुत लगन के साथ गा रहे थे:

"मारी नाड़ तमारे हाथे हरि संभालजो रे,
दिवस रह्या छे टांचा वेला वालजो रे।"

—हे हरि तुम सम्हालना, मेरी नाड़ी तुम्हारे ही हाथ में है। अब दिन थोड़े ही रह गए हैं।

इस कमरे की कुर्सियां वगैरा निकलवा कर महादेवभाई के शव को यहीं रखा गया। बापू ने जेल की एक चादर नीचे बिछवाई और एक ऊपर ओढ़वाई। बोले, "He is a prisoner and he must go as a prisoner."[1] उनका चेहरा शांत था, मगर बहुत ही गंभीर और विचारमग्न। आवाज धीमी थी, किंतु किसी के सामने उन्होंने अपनी आवाज में कंपन या आंखों में आंसू नहीं आने दिये।

लाहौर में गिरधारीभाई ने मुझे चंदन का एक टुकड़ा दिया था। उसे वह बारडोली से लाये थे और सबको बांटा था। तभी से वह मेरे 'हैंडबैग' में पड़ा था। मैंने उसे मीराबहन को दिया। उन्होंने घिसकर उसका लेप तैयार किया। बापू ने वह लेप महादेवभाई के माथे और छाती पर लगाया। बगीचे से फूल इकट्ठे किये गए। मीराबहन ने या किसी ने एक हार बनाया। बापू ने वह महादेवभाई को पहनाया। मीराबहन शव पर फूल सजाने लगीं। बापू स्नान करने गये। स्नान के बाद शव के पास आकर बैठ गए। मझसे कहने लगे, "अब तुम भी स्नान कर लो। महादेव के कपड़े तुम धोना। ये किसी और से नहीं धुलवायेंगे।" जिस तौलिये से उन्होंने महादेवभाई का शरीर साफ किया था, उसी से अपना किया और फिर वह मुझे दे दिया। बोले, "इसे धोकर महादेव के कपड़ों के साथ बाबला के लिए रख देना।"

मैं स्नान करके निकली तो मीराबहन फूल सजा चुकी थीं। उठाने पर ये फूल हिल जायंगे, इस खयाल से मगन और भूरा अर्थी पर डालने के लिए फूलों की जाली बना रहे थे। बापू शव के पास बैठे गीता-पाठ कर रहे थे। बारहवें अध्याय से शुरू किया था। मैं आई तो गीताजी मुझे दी। अठारहवें अध्याय तक का पाठ पूरा किया।

इतने में भंडारी आये। उनका चेहरा सूखा हुआ था। मुंह से आवाज़ नहीं निकलती थी। बापू ने पुछवाया, "वल्लभभाई आते हैं क्या?" वे कहने लगे, "वे यहां नहीं हैं।" बापू ने फिर पुछवाया, "खेर?" वह भी नहीं आ सकते थे। किसी ने कहा, "एक लॉरी आई है और एक ब्राह्मण।"

---

१. "वह कैदी है और उसे कैदी की तरह ही जाना चाहिए।"

वापू चौंके, "किस लिए?" किसी ने उत्तर दिया, "यहां कुछ पूजा-पाठ कराना हो तो उसके लिए।" वापू कहने लगे, "यहां का पूजा-पाठ हो चुका है।"

भंडारी वापू के पास आये। वे सरोजिनी नायडू को आगे-आगे धकेल रहे थे। वापू ने पूछा, "क्या खवर लाये हैं?" भंडारी हिचकिचाते हुए वोले, "मैंने सब इंतजाम कर लिया है।" वापू ने पूछा, "क्या इंतजाम किया है? क्या मैं शव को मित्रों के हवाले कर सकता हूं?" भंडारी फिर सरोजिनी नायडू को आगे धकेलने लगे। उन्हें खुद कहने की हिम्मत न होती थी। सरोजिनी नायडू ने वताया कि सरकार शव किसी को देना नहीं चाहती। भंडारी खुद जाकर घाट पर जला आवेंगे। बापू कहने लगे, "तो क्या हममें से कोई शव के साथ जा सकते हैं?" उत्तर मिला, "नहीं।" वापू ने पूछा, "तो क्या मैं यहां अपने सामने शव को जला सकता हूं?" फिर वोले, "मैं लाश को आपके सुपुर्द कैसे करूं? क्या कोई पिता अपने पुत्र की लाश अजनबी आदमियों के हाथ सौंप सकता है?"[१]

भंडारी फिर वंवई सरकार को फोन करने गये। बापू कह रहे थे, "श्रद्धानंदजी के कातिल की लाश फांसी के बाद जनता को दे दी गई थी। लोगों ने उसको शहीद वनाया। उसका जुलूस निकला। उसमें से हिंदू-मुस्लिम फसाद भी खड़ा हो सकता था, मगर सरकार ने परवाह नहीं की। आज वह महादेव का शव नहीं देने देगी। मैं सोच रहा हूं कि क्या मुझे इस प्रश्न पर लड़ लेना होगा, या कडुआ घूंट पीकर रह जाना होगा। मैं इसी बात पर अड़ सकता हूं कि 'नहीं, शव को मित्र ही जलावेंगे।' मगर वह महादेव की मृत्यु को राजनैतिक रंग देकर उससे फायदा उठाने-जैसी वात हो जायगी। पिता अपने लड़के की मृत्यु का ऐसा उपयोग कैसे कर सकता है?"

सब लोग सांस रोककर इंतजार कर रहे थे कि भंडारी क्या उत्तर

---

१. "No father can hand over the body of his son to strangers."

लाते हैं। बाहर कटेली और अडवानी बैठे थे। भंडारी ऊपर कटेली के कमरे से फोन कर रहे थे। मैंने कटेली और अडवानी को समझाने की कोशिश की कि भंडारी पर जोर डालना चाहिए कि शव को यहां जलाने दें। बापू ने बहुत छोटी चीज की मांग की है। इसका जवाब भी नकार में मिला तो उन पर क्या असर होगा, कौन जाने? कहीं उपवास वगैरा पर पहुंच गए तो हम सब मुश्किल में पड़ जायंगे। श्रद्धानंदजी के कातिल वाली बात भी कही। वे दोनों ऊपर चले गए। थोड़ी देर के बाद भंडारी आये। शव को यहां जलाने की इजाजत मिल गई थी। सरोजिनी नायडू ने और बाद में कटेली ने कहा, "भंडारी को मुश्किल से यह इजाजत मिली।"

दाह-क्रिया के लिए जगह ढूंढनी थी। सरोजिनी नायडू, भंडारी और अडवानी वगैरा जाकर जगह देख आये। तारों के बाहर नजदीक ही घास का एक खेत था। उसमें से घास निकलवाकर जगह साफ करवाई। पास में एक तरफ दो-तीन ऊंचे झाड़ थे। सामने पहाड़ियों का सुन्दर दृश्य दिखाई देता था। महादेवभाई को यह जगह बहुत पसंद आती। घास साफ करके ब्राह्मण ने यहां थोड़ा जल छिड़का, पूजा-पाठ किया। हमारी सीढ़ियों के पास नीचे बगीचे में दरख्तों की टहनियां तोड़कर उनकी अर्थी बनाई जा रही थी। बापू शव के पास बैठे-बैठे या तो खुद गीता का पाठ करते थे या मुझसे करवाते थे। बा बापू के पास बैठी थीं। मीराबहन ने एक कटोरी में धूप, चंदन वगैरा जलाकर सिर के पास रख दिया था और वहीं उसके पास बैठी-बैठी उसमें कपूर और चंदन डालती जाती थीं। महादेवभाई का शरीर तो विशाल था ही, लेकिन इधर कुछ अर्से से वे गरदन को एक तरफ थोड़ा टेढ़ा करके चलते थे। शव बिलकुल सीधा पड़ा था इसलिए और साथ ही शायद शरीर के स्नायुओं आदि के शिथिल हो जाने के कारण वह जीते-जी जितने लम्बे लगते थे उससे ज्यादा लम्बे इस वक्त लग रहे थे। चेहरे पर अपूर्व शांति थी, अपूर्व शोभा। बापू शव की बाईं ओर बैठे थे। मैंने देखा कि महादेवभाई की बाईं आंख आधी खुली थी। यह अकस्मात ही हुआ होगा। मैंने तो मृत्यु के बाद दोनों आंखें

वंद कर दी थीं। आंख फिर से कैसे खुल गई, मैं नहीं जानती। ऐसा प्रतीत होता था मानो अपनी मृत अवस्था में भी महादेवभाई बापू के दर्शन करना चाहते हों।

बापू ने बारहवें से अठारहवें अध्याय तक का पाठ पूरा होने पर फिर पहले अध्याय से शुरू करने को कहा। पहला अध्याय पूरा हुआ। दूसरा आधा हुआ था कि इतने में ब्राह्मण महाराज ने आकर कहा, "सब तैयार है।" गीता-पाठ वंद हुआ। मुख्य ब्राह्मण के सिवा चार और ब्राह्मण थे। सबने कुर्ते उतारे। जनेऊ दाहिनी तरफ किये और शव को मंत्र पढ़ते-पढ़ते उठाकर अर्थी पर रखा। बाद में वे शव को रस्सी से व.धने लगे। मैंने कभी देखा नहीं था कि शव को अर्थी पर कैसे रखा जाता है। रस्सी से वांधना मुझे चुभा। मैं रोकने ही वाली थी कि बापू ने टोक दिया। बोले, "शव को वांधना ही पड़ता है।" ब्राह्मण ने एक शाल शव पर डाला जो मिल का वना था। मैंने बापू से पूछा, "क्या मिल की चादर डालनी है?" कहने लगे, "बस चलने दो।" उन्होंने सोचा होगा कि कैदी की हैसियत से हमें इन बातों की नुकताचीनी करने का हक नहीं है।

अर्थी उठाकर सीढ़ी से नीचे लाये। अब उसे उठाकर कंधों पर रखने लगे। छः आदमियों ने मुश्किल से उसे कंधों पर उठाया। बाकी सब पीछे चले। बापू ने आग की हंडिया उठाई। वे बा को भी संभाल रहे थे। शव चिता पर रखा गया। बा के लिए दूर एक कुर्सी रखी गई। उनके लिए अग्निदान की क्रिया को देखना असहनीय था। वे दुःख से पागल-सी हो रही थीं। आंसू-भरी आंखों से दोनों हाथ जोड़कर आकाश की ओर देखती थीं और बार-बार कहती थीं, "भाई, तुं ज्यां जजे सुखी रहेजे। भाई, तुं सुखी रहेजे। तें बापूजी नी घणी सेवा करी छे। बधा ने सुख पहोंचाड्युं छे। तुं सुखी रहेजे।"[1] ब्राह्मण का पूजा-पाठ समाप्त हुआ। शव पर लकड़ियां रखी जाने लगीं। चेहरे पर लकड़ी रखने लगे

---

१. "भाई, तू जहां जाय सुखी रहना। भाई, तू सुखी रहना। तूने बापूजी की बड़ी सेवा की है। सबको सुख पहुंचाया है। तू सुखी रहना।"

तो मैं और बापू यंत्रवत अपने-आप दो कदम आगे बढ़ गये। ब्राह्मण ने हाथ रोक लिया। अंतिम बार महादेवभाई का दर्शन करके हम लोग पीछे हटे। लकड़िय चिन दी गईं। अंत में बापू ने उन्हें अग्नि दी। यों पहली आहुति पूरी हुई!

बापू करीब घंटा-डेढ़ घंटा तो खड़े ही रहे। फिर बहुत आग्रह करने पर कुर्सी पर बैठ गए। हमारी तरफ चिता चिनते हैं तो नीचे भारी लकड़ियां रखते हैं, बीच में पतली, ऊपर फिर भारी। यह इन लोगों ने नीचे भारी लकड़िय लगाईं, ऊपर सब पतली। ऊपर की लकड़ियां जल्दी से जलकर राख होने लगीं। मैंने दो-तीन बार कहा कि इतनी लकड़ी से शव पूरा नहीं जल सकता; मगर किसी ने ध्यान नहीं दिया। मैं चिता को देख रही थी। अग्नि की ज्वाला में नीचे एक पीला-सा बिंदु नजर आ रहा था। धीरे-धीरे वह बड़ा होने लगा। जब ऊपर की लकड़ियां जलकर खत्म होने लगीं, एकाएक उस पीले बिंदु की जगह पर अंतड़ियों का समूह बेचैनी के साथ उभड़कर इधर-उधर फैलता हुआ बाहर निकल आया। मैं बरबस बोल उठी, "बापू, अंतड़ियां!" दृश्य भयानक और बड़ा करुण था। दो-चार आदमी दौड़ते हुए गये और हमारी जलाने की लकड़ी में से लकड़िय: लाकर ऊपर डालीं। ज्वाला भड़क रही थी। सबके हृदय भरे थे। ऐसा लगता था, सब महादेवभाई के पीछे जाने वाले हैं। मैंने कटेली से कहा, "मान लीजिए कि हममें से कोई जिंदा बाहर न निकला तो आपको यह जगह महादेवभाई के लड़के को दिखानी होगी।" अडवानी भी सुन रहे थे। वे लोग स्वयं बहुत दुःखी थे। किसी की तैयारी नहीं थी आज की इस घटना का सामना करने की!

कोई तीन घंटे बाद बापू शेष चिता को जलती रखने का भार ब्राह्मणों को सौंपकर वापस आये। बा रो रही थीं। बापू उन्हें शांत कर रहे थे। घर सूना था। हम सब अभीतक अपने-आपको स्तब्ध-सा अनुभव कर रहे थे।

बापू आजकल बाइबिल पढ़ाया करते थे। जब वे बेसुध महादेवभाई के पास आये और जब महादेवभाई अनंत निद्रा में सो गये तब मैं अपने मन

में सोच रही थी कि ईसा अपने भक्तों को बचा लेते थे तो क्या बापू नहीं बचा लेंगे? अब वह आशा खत्म हुई। ऐसी आशा का अब कोई कारण नहीं रह गया था। डॉक्टर के नाते मन में इस तरह के विचार को स्थान देना भी शरम की बात थी। किंतु जब अपने प्रिय जनों पर आ बनती है—उनका विछोह होता है—तो आदमी समता खो बैठता है।

बापू कहा करते, "भावना तो महादेव की खुराक थी।"[1]

बापू के उपवास की चिंता तो उनके सिर पर हमेशा सवार ही रहती थी। उन्होंने मुझसे कई दफा कहा था, "मैं ईश्वर से एक ही प्रार्थना किया करता हूं कि मुझे बापू से पहले उठा ले! और साथ ही यह भी कह दूं कि ईश्वर ने मेरी प्रार्थना को कभी ठुकराया नहीं है। हमेशा पूरा किया है।"

भंडारी के साथ बात करते समय कौन जाने उनका कौन-सा मर्मस्थल छू गया होगा, क्या विचार मन में आया होगा कि जिससे एकाएक ऐसा हो गया हो। और इंजेक्शन बेचारा तो न नुकसान कर सकता था, न फायदा। जब खून का दौड़ना ही बंद हो गया था तब नस में दिये हुए इंजेक्शन का कोई मतलब ही नहीं था। वह हृदय तक पहुंचे कैसे? हृदय तक पहुंचने के लिए तो उसे सुई द्वारा सीधा हृदय की मांस-पेशी में दिया जाता तो वह[2] काम दे सकता था। फिर सिर पर भूत सवार हुआ। सीधा हृदय में इंजेक्शन दिया होता तो वे उठ बैठते। इस विचार ने मुझे बहुत अशांत कर दिया। मैंने बापू से भी कहा। बापू कहने लगे, "होता भी तो मैं तुझे देने नहीं देता। जितना करने दिया, उसका भी मुझे अफसोस है। महादेव ने जीने का मोह छोड़ दिया था और मैंने तो हमेशा कहा है कि जो आदमी जीने का मोह छोड़ देता है, उसकी देह अपने-आप छूट जाती है।"

पहले भंडारी वगैरा यहां दाहक्रिया करने का विरोध कर रहे थे।

---

१. "Mahadev lived on his emotions."

२. Intracardiac इंजेक्शन।

कहते थे, "कहीं पानी आ जायगा तो क्या करेंगे ?" आकाश में बादल थे जरूर, लेकिन अर्थी के उठाने तक ही थोड़ी बूंदें आती रहीं, मानो आकाश भी आंसू बहाता हो। चिता जलाने को गये, उसके बाद वारिश बिलकुल नहीं आई। जब चिता की जगह पहुंचे तो आकाश में अंधेरा-सा लगा। मैंने ऊपर उठाकर देखा तो ऐसा मालूम हुआ, मानो टिड्डीदल आया हो! लेकिन वह टिड्डी-दल नहीं था, जंगली मक्खियों का दल था। इससे पहले या इसके बाद यह कभी इतनी मक्खियां देखने में नहीं आई थीं।

शव जलाकर लौटे। बापू ने सबको हुक्म किया कि अब खाना चाहिए। पांच बज चुके थे। दो घंटे पहले जहां शव पड़ा था, जहां बैठकर आज सुबह महादेवभाई ने बापू के लिए रस निकाला था, वहीं बैठकर आज मैंने मौसम्वी का रस निकाला। बापू ने दूध और रस लिया। हम लोग सरोजिनी नायडू के कमरे में खाने को गये। टोस्ट, दूध, चाय वगैरा लिया, चायदानी पर नई 'टी कोज़ी' (Tea-cosy)—चायदानी का आवरण—पड़ी थी। महादेवभाई या कोई और सुबह चाय के लिए कभी-कभी जरा देर से पहुंचा करते थे। सरोजिनी नायडू ने मुझसे कहा कि एक 'टी कोज़ी' बना दो तो चाय ठंडी न हुआ करे। कल मैंने अपना एक पुराना रंगीन ब्लाउज़ फाड़कर 'टी कोज़ी' काटी। श्रीमती सीतलदास ने ऑर्थर रोड जेल से चलते समय थोड़ी रुई दे दी थी। वही रुई भरकर 'टी कोज़ी' तैयार की। शाम की चाय के समय तक वह मेज पर पहुंच गई थी। महादेवभाई उस 'टी कोज़ी' को देखकर इतने खुश हुए कि उठाकर सिर पर पहन ली। कहने लगे। "रंग इतना ताजा है, इतनी अच्छी बनी है, मानो अभी बाजार से आई हो।" मैंने उनके सिर से वह खींचकर उतार ली और कहा, "आप तो विदूषक बन रहे हैं!" अपनी मर्यादा में रहकर वह खुद खुश रहना और सबको खुश रखना चाहते थे।

शाम को घूमने निकले। मैं और बापू दो ही थे। किंतु आभास ऐसा होता था, मानो महादेवभाई हमारे साथ-ही-साथ चल रहे हैं। क्या सचमुच उनकी आत्मा आज यहां भ्रमण कर रही होगी, अथवा बहुत पहले पुण्य-लोक में पहुंच गई होगी ?—भगवान ही जाने!

मेरे सिर पर फिर वही सवाल सवार था। मैंने बापू से कहा, "हृदय में एड्रेनेलिन दी होती तो महादेवभाई आज इस तरह न जाते।" बापू कहने लगे, "नहीं, तेरे पास वह रहती भी तो मैं न देने देता।"

एड्रेनेलिन में तो जीव-हत्या होती है। मैंने सोचा कि यह दवा निरामिष योग की भी तो होती है! क्यों मैंने वह अपने साथ न रखी? फिर विचार आया, अगर मेरे पास एड्रेनेलिन होती तो जैसे ही मुझे सूझता कि वही एक बचाने वाली चीज़ है, मैं बापू से विना पूछे वह उन्हें दे देती, मगर बापू भी ठीक ही कहते थे। ऐसे संयोग तभी मिलते हैं, जब आयुष्य रहती है। भगवान को जो करना होता है, उसके साधन भी वह पैदा कर देता है—

"जैसी हो भवितव्यता, तैसी मिले सहाय।"

प्रार्थना हुई। महादेवभाई के बाद प्रार्थना कराने का काम मुझ पर पड़ा। गला खराब था, तिस पर इतनी थकावट। भजन गाना, रामधुन चलाना, रामायण का पाठ करना, सब कठिन था। रामधुन मीराबहन ने उठा ली। भजन और रामायण मेरे जिम्मे रहे। प्रार्थना के लिए जाने से पहले सिविल सर्जन आये—वही जो महादेवभाई के देहांत के बाद आये थे। जब चिता जलाकर लौटे तो मैंने भंडारी को कई तात्कालिक आवश्यकता की दवाइयों की एक फहरिस्त दी। बा को किसी भी समय कोरोनरी थ्राम्बोसिस (Coronary Thrombosis)[1] हो सकता है। और बापू को कार्डिएक एस्थमा (Cardiac Asthma)। आज की घटना की तरह फिर गफलत में पकड़े जाना मैं नहीं चाहती थी। साथ ही मुझे यह भी लगता है कि यहां की परीक्षा की घड़ी गई। अब फिर यहां ऐसी परीक्षा नहीं होगी। तो भी दवाइयां मंगवालीं।

मुझे लगा, आज शाम को सिविल सर्जन बापू को देख जायं तो अच्छा हो, क्योंकि आज मैं इतना आत्मविश्वास खो बैठी हूं कि अपने-आपको निकम्मा

---

१. हृदय की नाड़ियों में रुकावट के कारण हृदय की नसों में रक्त की कमी या रक्त न पहुंचने की बीमारी।

महसूस करने लगी हूं। मैंने भंडारी से यह कहा। उन्होंने सिविल सर्जन को भेजा। वे बेचारे आये। हाल-चाल पूछकर और नाड़ी देखकर चले गये।

आठ-साढ़े आठ वजे वापू बिस्तर पर पड़े। नौ वजे भंडारी का संदेश मिला। महादेवभाई की पत्नी का पता पूछते थे। शव को स्नान कराने के वाद दोपहर को भंडारी ने बापू से पूछा था कि क्या महादेवभाई के घर खबर भेजना चाहते हैं? वापू ने कहा कि सरकार भेजने दे तो तुरंत भेजना चाहते हैं, मगर उनका संदेश तुरंत सीधा और बगैर काट-छांट के जाना चाहिए। उन्होंने उसी समय तार का मजमून लिखा—चिमनलाल-भाई के नाम। शुरू किया—Sorry, Mahadev died suddenly. "शोक है कि महादेव की अकस्मात मृत्यु हो गई।" मगर फिर रुक गये। शोक क्यों? महादेवभाई अपने धर्म का पालन करते हुए गये हैं। इसलिए काटकर यह तार लिखा:

Mahadev died suddenly. Gave no indication. Slept well last night. Had breakfast. Walked with me. Sushila jail doctors did all they could, but God had willed otherwise. Sushila and I bathed body. Body lying peacefully covered with flowers incense burning. Sushila and I reciting Gita. Mahadev has died yogi's and patriot's death. Tell Durga, Babla and Sushila no sorrow allowed. Only joy over such noble death. Cremation taking place front of me. Shall keep ashes. Advise Durga remain Ashram but she may go to her people if she must. Hope Babla will be brave and prepare himself fill Mahadev's place worthily. Love—BAPU[1]

---

१. महादेव की अकस्मात मृत्यु हो गई। पहले जरा भी पता नहीं चला। रात अच्छी तरह सोये। नाश्ता किया। मेरे साथ टहले। सुशीला

तार भंडारी को दिया गया। बाद में बापू ने मुझको फिर भेजा और कहा, "उनसे दुबारा कहो कि तार ऐसा-का-ऐसा, तुरंत और सीधा न जा सकता हो तो मुझे वापस लौटा दें। 'एक्सप्रेस' जाना चाहिए।" मैंने रसोईघर के पास जाकर भंडारी को पकड़ा। वे एक अंग्रेज पुलिस अफसर को तार दे रहे थे। मैंने उन्हें बापू का संदेश सुनाया। कहने लगे, "लेकिन यह बात मेरे हाथ में नहीं है।" मैंने कहा, "तार वापस दे दीजिये।" भंडारी बोले, "यह तो अब सीधा ही जा रहा है। पुलिस अफसर को सौंप दिया है।" उन्होंने फिर पुलिस अफसर से कहा कि तार अभी जाना चाहिए। मैंने दुबारा कहा, "यह ज़रूरी तार के रूप में जाना चाहिए—बिना कटे-छंटे। वर्ना गांधीजी इसे भेजना नहीं चाहते।" वह तार लेकर चला गया। लेकिन जब रात को फिर पता मांगा गया तो हमें आश्चर्य हुआ। बापू ने समझाया, "वह तार तो हमारी तरफ से गया था न? सरकार को अपनी तरफ़ से भी खबर भेजनी चाहिए! इसलिए अब पता मंगवाया होगा।" हमने नाम-पता भेज दिया।

जब बिस्तर पर लेटी तो मेरी आंख के सामने महादेवभाई की मृत्यु का ही दृश्य था। महादेवभाई के कमरे में से होकर सरोजिनी नायडू के गुसलखाने में जाना पड़ता था। उन्होंने उस कमरे में दीपक

और जेल के डॉक्टरों ने जो कुछ कर सकते थे, किया; लेकिन ईश्वर की मर्जी कुछ और थी। सुशीला और मैंने शव को स्नान कराया। शरीर शांति से पड़ा, फूलों से ढका है, धूप जल रही है। सुशीला और मैं गीता-पाठ कर रहे हैं। महादेव की योगी और देशभक्त की भांति मृत्यु हुई है। दुर्गा, बाबला और सुशीला से कहो, शोक करने की मनाही है। ऐसी महान मृत्यु पर हर्ष ही होना चाहिए। अंत्येष्टि मेरे सामने हो रही है। भस्म रख लूंगा। दुर्गा को सलाह दो कि आश्रम में रहे; लेकिन अगर वह जाना ही चाहे तो घरवालों के पास जा सकती है। आशा है, बाबला बहादुरी से काम लेगा और महादेव का सुयोग्य उत्तराधिकारी बनने के लिए अपने को तैयार करेगा। सप्रेम—बापू

रखने को कहा। जहां शव रहता है, वहां दस दिन तक दीपक रखने की प्रथा है।

बापू अपने बिस्तर पर पड़े करवटें बदल रहे थे। बा रोज भीतर सोया करती थीं। आज बाहर सोईं। मैंने अपनी खाट बा को दी। महादेवभाई जिस खाट पर सोया करते थे, वह मुझे मिली। बापू कहने लगे, "तुझे डर लगता हो तो वह खाट मुझे दे दे और मेरी तू ले ले।" मगर मुझे महादेवभाई से डर क्यों लगने लगा? सोने से पहले मैंने महादेवभाई की मेज की दराज खोली और उसमें से एक कागज निकाला, जिस पर वे डायरी लिखते थे। छोटे-छोटे संक्षिप्त नोट लिखे थे। मैंने उसी कागज के नीचे १५ तारीख से डायरी लिखनी शुरू की। इस तरह १५ तारीख से डायरी नियमित शुरू हुई। उससे पहले की घटनाएं तो बाद में अपनी याद से और महादेवभाई के नोट्स की मदद से मैंने लिखी हैं। यहां १५ तारीख की घटनाएं भी असल डायरी पर से नकल की हैं। ब्यौरे की कुछ बातें उस रोज की थकान में मैंने नहीं लिखी थीं। बाद में भाई के कहने से लिख डाली हैं।

: १० :

विषाद की छाया

१६ अगस्त '४२

२॥ बजे बापू उठे। मैं तो जागती ही थी। बापू क्षणभर भी नहीं सोये थे। मैं भी नहीं। बापू ने उठकर दतौन की। गरम पानी पिया। हमने प्रार्थना की। आज रविवार था। आठवें अध्याय में पढ़ा कि जब सूर्य उत्तरायण होता है और शुक्ल-पक्ष होता है तब पुण्यात्मा देह छोड़ते हैं और फिर वे इस लोक में नहीं आते। आजकल शुक्ल पक्ष है और सूर्य भी उत्तरायण है!

प्रार्थना के बाद बापू आध घंटे तक मुझसे बातें करते रहे। वे हमें

शांत कर रहे थे और विपक्षियों का सामना करने की तैयारी करवा रहे थे। मृत्यु के बारे में ज्ञान-वार्त्ता कर रहे थे। शायद भाई भी जावें तो उसके लिए मेरी मानसिक तैयारी करवा रहे थे। मैंने कहा, "भले हम सब एक-एक करके चले जायं, पर आप अच्छे रहें और विजय-पताका फहराते हुए यहां से बाहर जायं, यही प्रार्थना आज तो हृदय से निकलती हैं।"

३॥। बजे बापू वापस बिस्तर पर गये। थोड़ी नींद ली। आज रात भर में उन्हें दो घंटे की भी नींद नहीं मिली। मैं भी प्रार्थना के बाद थोड़ी सो गई।

नाश्ते के बाद बापू चिता-स्थान पर गये। चिता अभी जल रही थी। अंगारे धधक रहे थे। यह है हमारे प्रियतमों का अंत!—मुट्ठीभर राख और अंगार! प्रभु! धन्य हो तुम और धन्य है तुम्हारी लीला! एक सप्ताह पहले आज ही के दिन बापू और महादेवभाई आजादी की लड़ाई शुरू होने से पहले ही बंबई में पकड़ लिये गए थे और आज महादेवभाई तो आजाद भी हो गये। कौन कैद कर सकता है अब उनको?

बापू के कहने से चिता-स्थान पर खड़े होकर बारहवें अध्याय का पाठ किया। 'तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनी' (निंदा और स्तुति को एक समान मानने-वाला, मौन रखनेवाला) पढ़ते समय आंख के सामने तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनी महादेवभाई का शव पड़ा था। उस शव के चेहरे की अपूर्व शांति और कांति सामने मौजूद थी।

पाठ करके हम लोग वापस आये। बापू के लिए सुबह का साग बनाने का काम मीराबहन ने ले लिया, शाम का मैंने। रस निकालने का काम मेरा था। दोपहर को शाम के लिए साग चढ़ाने नीचे रसोई-घर में गई तो भूरा और मगन मेरे पास आकर खड़े हो गये। बोले, "बहन, बड़ा गजब हो गया! हममें से कल किसीने खाया नहीं। जब कल फूल इकट्ठा करने को कहा गया, तो मैंने सोचा, माताजी बीमार थीं, वे गई होंगी। लेकिन जब मुझे ऊपर बुलाया तो सच्ची बात का पता चला। बड़ा जुल्म हुआ है, बहन! सभी कैदी और सिपाही कांपते हैं।"

सिविल सर्जन आज फिर आये। पूछ गये, क्या हाल है? मैंने बताया

कि बापू बहुत थके हुए हैं। कल की थकान और रात नींद न आना, इसके कारण हैं। बापू की नाड़ी अटक-अटककर चलती थी (cxtra systoles) सो भी मैंने उनसे कहा। बेचारे क्या कर सकते थे? कहने लगे, "मुझे आशा है कि दिन में कुछ नींद आयेगी और वे हल्कापन अनुभव करेंगे।" इतना कहकर वे चले गये।

हम सबको ऐसा लग रहा है कि महादेवभाई जिस 'लटकती तलवार' के डर से गये, वह तलवार उनके चले जाने के कारण हमारे सिर-से अभी तो उठ-सी गई है। महादेवभाई के बलिदान ने बापू के उपवास को टाला है। बापू ने ऐसा कुछ कहा भी था, "महादेव का बलिदान कोई छोटी चीज़ नहीं है। अकेला भी वह बहुत काम करेगा।"

सरोजिनी नायडू ने कहा, "अगर कभी किसी ने दूसरे के लिए अपना जीवन दिया है तो वह महादेव है। यीशु प्रभु की तरह वह इसलिए मरे कि बापू जीसकें। मनुष्य दूसरे मनुष्य की इससे बढ़कर और क्या सेवा कर सकता है कि वह उसके लिए अपने प्राण ही न्यौछावर कर दे?"

शाम को घूमते समय बापू फिर चिता-स्थल पर गये। मुझे एक डिब्बी या बोतल लाने को कहा था। वे उसमें थोड़ी राख भरकर लाना चाहते थे। यों तो कल ब्राह्मण अस्थि, राख आदि इकट्ठा करने आयेगा ही, लेकिन कहीं रात में बारिश आ गई तो राख का रंग बिगड़ जायगा। इस विचार से बापू आज ही थोड़ी राख उठा लेना चाहते थे। मैंने अपनी स्वान स्याही की शीशी के साथ की गत्ते की डिब्बी ले ली। चितास्थान पर उज्ज्वल, सफेद राख की छोटी-सी ढेरी पड़ी थी। बापू के कहने से मैंने सबसे सफेद राख जो वहां मिल सकती थी, अपनी उस डिब्बी में भर ली। राख को मुट्ठी में लिया तो पता चला कि अभी तक उसमें जलते अंगारे थे। एक चम्मच मंगवाकर बिना अंगारोंवाली राख निकाली। तो भी छोटे-छोटे अंगारे आ ही गए, जिससे डिब्बी थोड़ी-सी जल गई। इन अंगारों में से कुछ तो सचमुच अस्थियां थीं, जो अंगार-सी लगती थीं।

बापू ने डिब्बी अपने पास अपनी मेज़ पर रखी और उसमें से राख

लेकर अपने माथे पर टीका लगाया। काल की गति क्या-क्या रंग दिखाती है। तुलसीदासजी ने सच ही कहा है:

"जिन चरणन की चरणपादुका भरत रह्यो लव लाई।
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई॥
तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई॥"

शाम को प्रार्थना के समय फिर कल का-सा हाल हुआ। मैं प्रार्थना में या विस्तर पर आंख वंद कर ही नहीं सकती थी। करती हूं तो आंख के सामने मृत्यु-शय्या पर छटपटाते हुए महादेवभाई की तस्वीर ही सामने आ जाती है।

कटेली रात एक क्षण को भी नहीं सो सके। बेचारे को बहुत आघात पहुंचा है। किसी ने कल्पना तक न की थी कि महादेवभाई इस तरह बात-की-बात में हमें छोड़कर चले जावेंगे।

महादेवभाई के कपड़े इकट्ठे करके उनके बक्स में रखे। बापू ने बक्स का सामान उनके सामने रखने को कहा। 'बैटिल फॉर एशिया' नामक एक किताब थी। अगाथा हैरिसन द्वारा महादेवभाई को भेंट की गई बाइबिल निकाली। ९ अगस्त का 'ईवनिंग न्यूज़', 'पैसिफ़िक अफेयर्स' का एक अंक, गुरुदेव का 'मुक्तधारा' नामक नाटक, 'सिलवर स्ट्रीम', 'ए चाइनीज़ प्ले' और कुछ कपड़े, बस इतनी चीजें थीं।

बापू कहने लगे, "इसमें तो छः महीने के अभ्यास का सामान है।" बाइबिल पढ़ना शुरू किया। 'बैटिल फॉर एशिया' भी निकाली। 'मुक्त-धारा' भी पढ़ना प्रारंभ किया।

बापू मुझसे कहने लगे, "आज से, या जब से आई हो, तब से डायरी लिखना शुरू कर दो।" मैंने कहा कि कल से मैं लिखने लगी हूं। महादेवभाई की लिखी कुछ चीजें भी दिखाईं—नोट्स थे। बापू ने डायरी लेकर पढ़ी—एक-आध बात लिखना मैं भूल गई थी, उसकी ओर मेरा ध्यान दिलाया। जैसे, गीताजी का कितना पाठ किया था, वगैरा।

१७ अगस्त '४२

आज तीसरा रोज है। बापू अच्छी तरह सोये। मैं आज भी नहीं सो

सकी। मि० कटेली भी नहीं सोये। रात को ऊपर उनके टहलने की आवाज आ रही थी।

५ बजे बापू उठे। प्रार्थना की। नाश्ते के बाद चिता-स्थान पर गये। रात पानी की बूंदें आई थीं। राख का रंग काला पड़ गया था।

मृत्यु के एक-दो दिन पहले महादेवभाई बकरी का एक चितकबरा बच्चा उठाकर बापू के पास लाये थे। वे उसे बहुत प्यार कर रहे थे। उसका मुंह चूम रहे थे। बच्चा बहुत सुंदर है। वह कुछ तो समझता होगा। जब हम चिता की जगह जाने के लिए नीचे आते हैं, वह आकर पांवों में लिपटने लगता है। मैं उसे उठाकर चितास्थान पर ले गई। बारहवें अध्याय का पाठ करना था (यह रोज सुबह का नियम बन गया है)। बकरी का बच्चा भी जरा चिल्लाने लग गया था। मैं उसे छोड़ने लगी, मगर मीराबहन ने उसको मुझसे ले लिया। बाद में उन्होंने बताया कि पाठ शुरू होते ही वह इतना शांत हो गया था, मानो ध्यान लगाकर सुन रहा हो।

स्नान के बाद बापू ने फिर महादेवभाई की राख का टीका लगाया। कह रहे थे, "यह राख मैं दुर्गा के पास ले जाऊंगा। वह भले रोज इसका टीका लगाया करे।"

ब्राह्मण आया हुआ था। बापू से पूजा, पिण्ड-दान, तर्पण इत्यादि करवाया। शांति-पाठ किया। सरोजिनी नायडू ने बाद में मुझे बताया कि पूजा करते समय बापू का चेहरा इतना गंभीर और तना हुआ था कि देखा नहीं जाता था। मैं तो पूजा के समय पूजा की क्रिया को ही देख रही थी और शांति-पाठ को समझने की कोशिश कर रही थी। मैंने बापू की ओर ध्यान से नहीं देखा। २० मिनट में पूजा पूरी हुई। एक पिता के लिए अपने पुत्र की उत्तर-क्रिया करना बड़े-से-बड़े दुःख की बात होती है और बापू के निकट तो महादेवभाई पुत्र से भी अधिक थे। लेकिन बापू कौन साधारण पिता हैं? कल कह रहे थे, "ईश्वर मुझे कैसा कसौटी पर कस रहा है! अगर मैं इन चीजों से विचलित हो जाऊं तो मेरा काम कैसे चले।"

दोपहर को खाने के समय बम्बई के गवर्नर का उत्तर आया। बहुत खराब था। भाषा भी उद्धत थी। वल्लभभाई को नहीं भेजा जा सकता था। अखबार वगैरा देने का भी अभी सरकार का कोई इरादा नहीं। यह उसका सार था। मैंने डरते-डरते पत्र बापू के सामने रखा—कौन जाने, उसका उन पर क्या असर होगा? मगर इस उत्तर के लिए बापू की मानसिक तैयारी थी।

आज सोमवार था। मौन था। दोपहर को मीराबहन ने कुछ पूछा। उत्तर में बापू ने लिखा, "मैं उपवास के बारे में नहीं सोच रहा। न यह सोच रहा हूं कि बाहर क्या हो रहा है। मैं तो अपने यहां के काम और अभ्यास वगैरा का ही विचार कर रहा हूं।" इन शब्दों से सबको बहुत आश्चर्य हुआ और आश्वासन भी मिला। महादेवभाई को बापू के उपवास की चिंता ही खाये जाती थी। उनके रहते बापू ने ये शब्द कहे होते तो उन्हें कितना चैन मिलता! शायद बापू के आज के इन शब्दों का कारण महादेव-भाई की यह मृत्य ही हो।

मृत्यु की घटना पर सोचती हूं तो अनेक तरह के विचारों की आंधी-सी मन में आने लगती है। निदान के बारे में तो कोई शक नहीं रहा। था तो स्टोक्स एडम्स सिन्ड्रोम (Stokes Adams Syndrom),[1] लेकिन उसका कारण हम दावे के साथ नहीं बता सकते। फिर विचार आता है कि एड्रेनेलिन की सुई अगर सीधी हृदय में लगा दी होती तो! किंतु इस कोरे तर्क-वितर्क से फायदा क्या? जो शक्य था, सो किया। जैसा कि आज बापू समझा रहे थे, हमारी परिस्थिति में जितना कुछ हो सकता था, हमने किया। तो भी दिल से यह अरमान नहीं जाता कि ऐसे मरीज के लिए जितना होना चाहिए था, नहीं हुआ!

बापू ने मुझे 'मुक्तधारा' पढ़ने को कहा। बोले, "पिछले पन्नों पर मैंने निशान लगाये हैं, शुरू में नहीं लगाये। तुम मेरे निशान देखकर शुरू के पन्नों में भी उसी तरह निशान लगा देना।" मैं 'मुक्त-

---

१. हृदय-सम्बन्धी एक विशेष रोग।

धारा' पढ़ गई, बहुत दिलचस्प है। बापू की फिलॉस्फी उसमें भरी पड़ी है।

मालूम होता है, मि० कटेली ने मेरी यह बात याद रखी है कि हममें से कोई भी न रहे तो आपको यह चिता-स्थान बावला को दिखाना है। आज उन्होंने चिता-स्थान के चारों कोनों पर खूंटियां गड़वाकर डोरियां बंधवा दी थीं, ताकि निशान रहे कि कौनसी जगह थी।

आज मैंने मालिश के समय बापू से पूछा, "महादेवभाई शायद यहीं घूमते होंगे। मृत्यु के बाद भी वे आपसे दूर नहीं जा सकेंगे।" बापू कहने लगे, "तू महादेव को पुण्यात्मा मानती है या नहीं?" मैंने कहा, "हां।"

"तो उसकी आत्मा क्यों भटकेगी?"

मैंने कहा, "तो क्या आप मानते हैं कि वे कहीं नया जन्म लेने को भी चले गए? कई लोग कहते हैं कि जब एक शरीर छूटता है तो दूसरा तैयार ही रहता है।"

बापू कहने लगे, "नहीं, कहा यह जाता है कि स्थूल शरीर छूट जाने पर आत्मा लिंग शरीर लेकर इहलोक से अन्य लोकों में चला जाता है। बहुत अरसे तक वहां रहकर फिर समय आने पर जन्म लेता है।"

: ११ :

समाधि-यात्रा

१८ अगस्त '४२

सुबह-शाम बापू महादेवभाई की समाधि पर जाते हैं। बापू इसे तीर्थ-यात्रा मानते हैं। न जायं, तो बेचैन हो उठें। जब बारिश होती रहती है तब छाता लेकर भी जाते हैं। मैं थोड़े फूल ले जाती हूं। आखिरी दिन घूमते समय महादेवभाई बेलिया के पौधों को कलियों से लदा देखकर बोले थे, "अब फूल खूब आयेंगे।" ये फूल अब खिल रहे हैं। सो थोड़े ले जाते हैं। जीतेजी हम लोग इंसान की कदर नहीं करते। मृत्यु के बाद

सभी श्रद्धांजलि चढ़ाने को तैयार हो जाते हैं। महादेवभाई की कीमत तो हम सब उनके जीतेजी भी जानते थे, मगर उनके जाने के बाद अब पता चलता है कि शायद उनके जीवन-काल में हमने उनकी पूरी कीमत नहीं समझी थी।

शाम को सिविल सर्जन आये। बापू गुसलखाने में थे। इंतजार करते रहे। मैंने यहां के मेडीकल स्कूल के बारे में पूछा। कुछ बताते रहे। फिर बातों-ही-बातों में कह गए, "इस वक्त हमारा ध्यान पढ़ाई में नहीं है। पढ़ाने में कोई मजा नहीं आता।" हम समझ गये। जब विद्यार्थी ही न आयें, प्रोफेसर को लेक्चर में क्या रस आ सकता है! बापू आये। "आप कैसे हैं?" इतना पूछकर सिविल सर्जन चले गए।

हमारे पास कैलेण्डर नहीं था। मगर बापूजी ९ अगस्त को रविवार के दिन पकड़े गए थे। उस पर से उन्होंने मुझे कैलेण्डर बनाने को कहा था। आज दोपहर मैं बनाने बैठी। बापू ने भी मदद दी। मुझे तीन बार कैलेण्डर बनाना पड़ा। कहीं-न-कहीं कोई भूल रह ही जाती थी। आखिर प्रार्थना के बाद कैलेण्डर तैयार हुआ। कैलेण्डर की खास जरूरत तो बा को एकादशी वगैरा बताने के लिए थी।

१९ अगस्त '४२

महादेवभाई की समाधि पर मैं रोज फूल ले जाती थी। आज मि० कटेली ने सिपाही से कहकर फूलों की एक पत्तल सजवाकर तैयार रखी थी। मि० कटेली पर भी महादेवभाई के आकर्षक व्यक्तित्व ने खासा प्रभाव डाला था। अपने फर्ज को अदा करते हुए वह जितनी सहानुभूति हम लोगों से रख सकते हैं, रखते हैं। बापू कह रहे थे, "महादेव की मृत्यु के समाचारों से बहुतों के दिल टूट जायंगे।"

यह अक्षरशः सच था। जो उनके संपर्क में इतने कम आये थे, उनको उनके जाने से इतना सदमा पहुंचा है तो उनके निकट के मित्रवर्ग का और सगे-संबंधियों का क्या हाल हुआ होगा, कौन कह सकता है! बापू रोज स्नान करके महादेवभाई की राख का टीका लगाते हैं। बा कह रही थीं, "शंकर तो विभूति लगाते थे, लेकिन मनुष्य को ऐसा करते देखा नहीं था।" मगर बापू तो बापू ही हैं न!

हम सुबह समाधि पर बारहवें अध्याय का पाठ करते हैं। पाठ करते समय आंख के सामने निद्रा में चिता पर सोते हुए महादेवभाई खड़े हो जाते हैं। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है, मानो वे भी हमारे साथ खड़े पाठ कर रहे हैं! काम करते समय भी अक्सर उनकी मौजूदगी का आभास होने लगता है। अच्छा मालूम होता है। महादेवभाई की स्मृति हमारे सामने हमेशा ताजी रहे, ताकि हम उनके जीवन से सदा सबक सीखते रहें। उनकी अनन्य सेवा और भक्ति सदा सबके लिए पदार्थ पाठ रूप बने!

कई बार विचार आता है, "कौन जाने, भाई को अभी तक यह खबर भी मिली होगी या नहीं!"

शाम को घूमते समय बापू ने कहा, "महादेव के नाम पचास हजार रुपये जमा हैं। वे जनता के हैं। महादेव से मैंने उसका ट्रस्ट बना देने को कहा था, मगर वह कर नहीं पाया। मैंने हमेशा कहा है कि हमें जनता के पैसे को एक क्षण के लिए भी अपने पास नहीं रखना चाहिए। कौन जाने, कब मृत्यु आ दबाये! इसके मामले में ऐसा ही हुआ न? अब मुश्किल पैदा होगी। शायद महादेव अपने कागजों में इसके बारे में कुछ लिख गया हो। यहां उसके जितने कागज हैं सब देख लेना। शायद रामेश्वर-दास, बाबला और दुर्गा से भी इस बारे में कुछ पता चले। उनसे भी पूछना। आज मैं तुम्हें यह सब इसलिए कह रहा हूं कि कहीं बाद में इसे भूल न जाऊं। हममें से कोई भी बाहर न जा सके तो दूसरों की जानकारी के लिए इस संबंध का एक नोट हमें अभी तैयार करके रखना चाहिए।"

आज मथुरादासभाई का पत्र आया। महादेवभाई की मृत्यु से उन्हें बहुत सदमा पहुंचा है। लिखते हैं, "धन्य जीवन उनका! किंतु अत्यंत वेग से पार किया। आपके निजी संपर्क में उनका स्थान कौन लेगा? परम कारुणिक भगवान बुद्ध का एक ही शिष्य था, वैसे ही महादेव आपके रहे।" मथुरादासभाई के अक्षर अच्छे थे। बापू कहने लगे, "बीमार होने से पहले मथुरादास के अक्षर जितने अच्छे होते थे, उतने इस पत्र में हैं।" मैंने कहा, "हां, आदमी को जब कोई सख्त आघात पहुंचता है तो

क्षण भर के लिए उसके शरीर में विशेष शक्ति आ जाती है।" ईश्वर की लीला अपार है!

२० अगस्त '४२

आज सवेरे नहाने के बाद मैं और बापू फूल लेकर समाधि पर जाने को निकले। मीराबहन भी सवेरे तो आती ही हैं और मि० कटेली को तो दोनों समय कैदियों के साथ आना ही होता है। मि० कटेली थोड़ी हिच-किचाहट के साथ कहने लगे, "तीन दिन तक यहां आने की इजाजत भंडारी साहब ने दी थी। अब हर रोज यहां आने में दिक्कत पेश होगी।" इन शब्दों से बापू को बहुत आघात पहुंचा। मगर वे तो विशाल हृदय हैं, पी गये। बोले, "अच्छा, तो आज का यह आखिरी आना है!" मि० कटेली को भी बुरा लगा होगा। बोले, "मैं फूल वहां भिजवाता रहूंगा। आप कहेंगे तो खुद जाकर चढ़ा आया करूंगा। भंडारी ने आज मुझको अपने घर बुलाया था, क्योंकि फोन पर ऐसी बात हो नहीं सकती थी। कहने लगे, "इस तरह हर रोज तार के बाहर जाने देने में आपत्ति उठ सकती है। इस बार सरकार का रुख दूसरे ही ढंग का है।" बापू बोले, "हां, सो तो मैं जानता हूं। मैं आपको या भंडारी को मुश्किल में नहीं डालना चाहता। लेकिन अगर भंडारी को आपत्ति न हो तो मैं इस बात को अवश्य ही आगे बढ़ाना चाहूंगा। जरा उल्लेख तो रह जाय कि वे किस हद तक जाते हैं। आपने इस समाधि के चारों ओर पत्थर रखवाये हैं, लेकिन इतना मैं आपसे कह दूं कि इस पर भी आपत्ति की जा सकती है।"

मि० कटेली चुपचाप सुन रहे थे। बापू फिर कहने लगे, "मैं तो यह मानता हूं कि मैं जो कुछ कर रहा हूं, सो ईश्वर मुझसे कराता है। नहीं तो, मैं क्या हूं—एक दुर्बल आदमी! मेरी क्या शक्ति कि इतने बड़े साम्राज्य के विरुद्ध लड़ सकूं! और हिन्दुस्तान की प्रजा की क्या शक्ति, जिसके पास लाठी तक नहीं!"

मि० कटेली ने समाधि के चारों ओर पत्थरों की छोटी-छोटी दीवार खड़ी कर दी है। चिता की जगह पर पत्थर रख दिये हैं। बा उसे देखकर बोल उठीं, "यह तो कब्र का आकार हो गया।" सब हँस पड़े। बात ठीक

थी। आकार से कोई भी उसे कुछ समझ सकता था, लेकिन असल में तो उस जगह की निशानी रखने के लिए ही यह किया गया है।

२१ अगस्त '४२

आज वापू ने लिखकर बताया कि सोमवार छः बजे तक का मौन लिया है। सब मिलाकर ९१ घंटे का मौन होगा। बुरा लगा, मगर कुछ कहना फिजूल था। प्रार्थना के बाद वापू सो गये।

नाश्ते के वाद हम रोज की तरह फूल लेकर चले। तारों वाला दरवाजा खुला। मगर हम उसके बाहर नहीं गये। सिपाही फूलों का पत्ता ले गया। दरवाजे के इस पार खड़े होकर हमने गीताजी का पाठ किया। शाम को भी फूल लेकर गये। इस समय दरवाजा भी नहीं खुला। तार में से ही सिपाही फूल ले गया।

वापू के मौन से दम घुटने लगा है।

बा कह रही थीं, "देखो, महादेव गये। ब्राह्मण की मृत्यु हुई, अपशकुनी है न! इतनी बड़ी ताकत के खिलाफ बापू लड़ रहे हैं, कैसे जीतेंगे!" बापू ने सुना तो कहने लगे, "मैं इसे शुभ शकुन मानता हूं। शुद्धतम बलिदान हुआ है, इसका परिणाम अशुभ नहीं हो सकता।"

: १२ :

पुण्यस्मरण

२२ अगस्त '४२

आज महादेवभाई को गये हफ्ता पूरा हुआ। आज सरोजिनी नायडू भी तार तक आईं। उनकी तबीयत अच्छी नहीं रहती, इसलिए वे रोज नीचे नहीं उतरतीं। हफ्ते में एक बार उतरने का विचार किया है।

वापू का मौन था। मैंने आज २४ घंटे का उपवास किया। गीताजी का पारायण भी किया। गीताजी के पारायण का मंत्र मुझे महादेवभाई

से मिला था। विचार है हर शनिवार को उपवास और गीताजी का पारायण करूंगी।

अणे साहब का समवेदना का तार आया। बापू बोले, "हजारों तार और खत आये होंगे। उनमें से एक मथुरादास का खत और अणेजी का तार हमें दिया है, क्योंकि मथुरादास मेयर रह चुके हैं, बम्बई सरकार के सब लोगों को जानते हैं और अणेजी तो आज सरकार के ही हैं।"

बापू का मौन था। वातावरण बहुत ही दम घोटनेवाला-सा बन गया है।

'वीमन कॉल्ड वाइल्ड' (Women Called Wild) पढ़ रही थी। हालिदे हदीब का वर्णन बापू को पढ़कर सुनाया। अच्छा था।

२३ अगस्त '४२

आज बापू को यहां आये पूरे दो हफ्ते हुए। महादेवभाई ने तो यहां एक हफ्ता भी नहीं बिताया!

आज भी बापू का मौन है। अच्छा नहीं लगता। शाम को ८ बजे बापू का रक्तचाप लिया। ठीक था—१५६।९६, नाड़ी ६६।

आज सुबह कलेक्टर और प्रॉल नाम के नये सिविल सर्जन आये। दोनों मुंह कुप्पा किये हुए थे। यंत्रवत् पूछते फिरते थे—"आप कैसे हैं?" सरोजिनी नायडू ने उत्तर दिया, "मेरी सेहत हस्ब मामूल है।"

बस, उन्होंने वाक्य पकड़ लिया। हरएक को पूछने लगे, "क्या आपकी सेहत हस्ब मामूल है?" बापू से भी यही पूछा। सरोजिनी नायडू ने तो अपना कमरा सजाया था। नये फूल रखे थे। मगर वे लोग न एक मिनट के लिए कमरे में बैठे, न कोई बात की। सरोजिनी नायडू को बुरा लगा। वहां हरएक को उनका बरताव बड़ा बुरा लगा।

दिन भर एक ही विचार आता रहता है : भाई, दुर्गाबहन और बाबला के क्या हाल होंगे? भाई को कैसा लगता होगा? इस युद्ध का क्या नतीजा होगा? इसमें किस-किस की अंतिम आहुति पड़ेगी? सब कुछ होने के बाद भी आखिर बापू विजय हासिल करें, तो बस है।

२४ अगस्त '४२

आज दस दिन पूरे हुए। सुबह-शाम हम फूल लेकर तार के पास जाते और वहां खड़े रहते हैं। सिपाही फूल ले जाकर समाधि पर रख आता है। फूल हवा से उड़ जाया करते थे, इसलिए उन्होंने सिर और पैर दोनों ओर पत्थर खड़े करके वहां छोटी कंदरा-सी बना दी है। एक दृष्टि से देखें तो ऐसा मालूम होता है, मानो वह महादेव का मंदिर हो! दूसरी तरफ से देखने पर ऐसा लगता है कि वहां कोई शव पड़ा है, जिसका सिर और पैर उठे हुए हैं। तार और चिता-स्थान के बीच एक-दो झाड़ियां थीं, जिनके कारण नजर चिता तक पहुंच नहीं सकती थी। मि० कटेली ने उन्हें कटवा दिया है। अब तार के पास से समूचा दृश्य नजर आता है। भविष्य के किसी चित्रकार के लिए बापू का तारों के भीतर से महादेवभाई को पुष्पांजलि चढ़ाना चित्रकला का एक खासा अच्छा विषय होगा।

शाम को ६ बजे बापू का मौन छूटा। ९१ घंटों के बाद! बहुत अच्छा लगा।

मेरे मन में आज यह विचार आ रहा था कि दैव ने महादेवभाई को दस-पंद्रह वर्ष और दिये होते तो उसका क्या बिगड़ जाता! बापू के साथ घूमते समय यही उद्गार मेरे मुंह से सहज ही निकल गया। बाद में शाम को बापू ने कहा, "महादेव का काम पूरा हो चुका था। उसने ५० वर्ष में १०० वर्ष का काम पूरा कर लिया था। वह और क्यों ठहरता? भगवान उसे और क्यों ठहरने देता?"

मि० कटेली आज खबर लाये कि हम लाइब्रेरी से किताबें ले सकते हैं। पहले हमें कहा गया था कि नहीं ले सकते। बापू कहने लगे, "बाद में उन्हें शर्म लगी होगी कि वे किस हद तक जा रहे हैं!"

२५ अगस्त '४२

कुछ दिनों से बापू के लिए साग ऊपर पकाना शुरू कर दिया था। मगर कोयला कम है, इसलिए आज से फिर नीचे रसोईघर में पकाना शुरू किया है। महादेवभाई तो वहीं से पकाकर लाते थे। सवेरे मैं मालिश में होती हूं। सब्जी काटकर बरतन में भर देती हूं। बाद में कैदी रसोइया

उसे ले जाकर चढ़ा देता है। दो-चार दिन मैं सुवह आग वगैरा देखने गई थी। अव तो वापू की मालिश से निपटने के बाद, जव वे कमोड पर जाते हैं, मैं साग देख आती हूं। वापू जव स्नान करके निकलते हैं तब कैदी रसोइया सब्जी ऊपर ले आता है। मैं उस समय स्नान-घर में होती हूं। वा आज कह रही थीं, "देखो न, अव कैदी वापू का खाना लाते हैं। महादेव थे तो खुद लाते थे।"

घूमते समय अभी तक महादेवभाई की ही वातें हुआ करती हैं। आज वापू कहने लगे, "अव तुम्हें इस बारे में अधिक सोच-विचार नहीं करना चाहिए। न महादेव की, न हमारी इस लड़ाई की और न मेरी ही चिंता करनी चाहिए। मैं जान-वूझकर मरना नहीं चाहता। लेकिन ऐसी कोई परिस्थिति आ ही जाय तो कहा नहीं जा सकता कि क्या करूंगा। मैं चाहता हूं कि तुम विचार करो। लेकिन विचार को जव कार्यरूप में परिणत न किया जाय, वह निकम्मा है। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम कुछ लिखो। मैंने पहले भी तुम्हें एक वार कहा था कि एक दफा 'मा ने शिखामण' (मां को सीख) नाम की गुजराती की एक पुस्तक मेरे देखने में आई थी। अच्छी पुस्तक थी। उस तरह की कोई चीज तुम्हें लिखनी चाहिए, जिससे बहनों और लड़कियों को स्वास्थ्य का आवश्यक ज्ञान मिल जाय। मैं खुद भी लिखना शुरू करनेवाला हूं। नोटवुक मंगवा लेना।"

२६ अगस्त '४२

आज भंडारी आये। कहने लगे, "आप लोग जो कितावें मंगवाना चाहें, मुझ बतायें। मैं खरीद लूंगा। बाद में वे जेल-लाइब्रेरी के काम में आ जावेंगी।" साथ में बहुत-सी कितावें और कुछ स्वास्थ्य-संवंधी अखबार भी लाये थे।

शाम को वापू विस्तर पर लेटे कि तभी मि० कटेली वम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी का भेजा हुआ एक हुक्मनामा लाये। उसमें लिखा था कि वापू को अखबार मिल सकते हैं। वे फेहरिस्त भेजें, और हम लोग अपने घर के लोगों को घरेलू विषयों पर पत्र लिख सकते हैं।

बापू रात ठीक तरह से सो नहीं पाये। जिस शर्त पर पत्र लिखने की इजाजत आई थी, वह उन्हें मंजूर नहीं है।

बापू ने आज 'आरोग्य नी चावी' की प्रस्तावना लिखी। यह बापूजी की पुरानी किताब 'गाइड टु हेल्थ' (Guide to Health) की नई आवृत्ति होगी। मुझसे कहने लगे, "मैं जो लिखता हूं, सो तुम्हें पढ़ जाना है। कुछ सुझाव देना हो तो देना। मतलब यह कि जो काम महादेव करते थे, सो सब तुम्हें करना है। और यह तो तुम्हारा विषय भी है। इसे तुम महादेव से भी ज्यादा अच्छी तरह कर सकोगी।"

आज महादेवभाई होते तो अखबार मिलने की खबर से और इस बात से कि बापू एक किताब लिखने लगे हैं, कितने खुश होते।

बा की तबीयत खूब अच्छी है। बापू के साथ सुबह-शाम आधा-पौन घंटा तेजी से घूम लेती हैं, मगर दम फूलने लगता है। मैंने एक-दो बार कहा भी कि यह अच्छा नहीं। कम घूमें या धीमे घूमें, मगर बा या बापू कोई भी सुनने को तैयार नहीं।

२७ अगस्त '४२

आज बापू ने अखबारों की फेहरिस्त सरकार को दी। रोजाना, हफ्तावार और माहवार सब मिलाकर १६ अखबारों के नाम फेहरिस्त में थे। दोपहर को बम्बई सरकार के नाम पत्र लिखा कि वे बरसों पहले से गृहस्थ मिटाकर आश्रमवासी बन चुके थे। इसलिए सरकार की शर्त पर पत्र लिखने की इजाजत का वे कोई उपयोग नहीं कर सकते। पत्र में भाई का भी जिक्र किया था। लिखा था, "प्यारेलाल को आप मेरे पास भेजने को तैयार थे, मगर अभी तक उन्हें भेजा नहीं है और तिस पर मैं उन्हें पत्र भी न लिख सकूं तो पत्र लिखने की इजाजत मेरे किस काम की? दुर्गाबहन वगैरा को मैं पत्र न लिख सकूं, वल्लभभाई को, जो मेरे मरीज थे, उनकी सेहत के बारे में न पूछ सकूं तो और किसको लिखूं?"

रात वाइसराय का उत्तर आया। भाषा मीठी थी, मगर असल में जवाब कोरा इंकारी का था। मीराबहन भाषा को सराहने लगीं। बापूजी को भी मीठी भाषा अच्छी तो लगी, मगर हम जानते हैं कि ये लोग

जहां बिना कुछ खर्च किये मीठी भाषा का उपयोग कर सकते हैं, कर लेते हैं।

२८ अगस्त '४२

बापू ने अरबी की भी प्राइमर और उर्दू की दो किताबें जेल से मंगवाई हैं। रोज अरबी, उर्दू, कुरान-शरीफ और बाइबिल का नियमित अभ्यास करते हैं। कभी-कभी उर्दू पढ़ते समय मुझे भी अपने साथ बैठा लेते हैं। आज उन्हें थोड़ी इमला लिखवाई।

घूमते समय भी बापू किसी विचारधारा में ही मग्न रहें, यह अच्छा नहीं लगता; क्योंकि दिन में भी वे प्रायः चुपचाप ही बैठते हैं। मगर मैं बातें भी क्या करूं? महादेवभाई तो बहुत कुछ जानते थे। मेरा ज्ञान ही कितना है!

शाम को घूमते समय मि० कटेली साथ थे। बापू उन्हें चम्पारन की बातें सुनाते रहे। उन्होंने थोड़े में चम्पारन के सत्याग्रह का सारा इतिहास उन्हें सुना दिया। हिन्दुस्तान में वह उनकी पहली लड़ाई थी।

शाम को प्रार्थना के बाद रामायण का कहीं कोई अर्थ समझ में नहीं आता तो बापू से पूछ लेती हूं। वे बहुत रस के साथ बताते हैं। कह रहे थे, "रामायण तो हमारी खूराक है, उसकी भाषा इतनी मधुर है कि मैं उससे कभी थकता ही नहीं।"

आज सुबह नल का पानी बंद हो गया था। इसलिए बापू ने रात को सोने से पहले स्नान किया। इससे सोने में कुछ देर हो गई।

बा की छाती में कुछ दर्द है। आज घूमने नहीं गईं। कल मेरे रोकने पर भी वे बापू के साथ ५५ मिनट तक तेजी से घूमी थीं। शायद यह दर्द उसी का नतीजा हो।

२९ अगस्त '४२

बापू गुड़ खाया करते हैं। बाजार के गुड़ पर मक्खी वगैरा बैठती हैं, इसलिए उसे गरम करके शुद्ध करते हैं। उसमें मिट्टी, घास वगैरा के टुकड़े भी पाये जाते हैं। इसलिए पहले उसे पानी में घोलकर छान लेते

हैं, फिर पकाकर पानी सुखा देते हैं। साफ भी हो जाता है, शुद्ध भी। आज मैंने पानी की जगह दूध डाला, अच्छी खासी टॉफी[1] बन गई।

आज शनिवार है। महादेवभाई को गये दो हफ्ते पूरे हुए। मैं उपवास करना चाहती थी, मगर बापू ने रोक दिया। बोले, "ऐसा करके हम मृत व्यक्ति के साथ न्याय नहीं करते। एक तरह से हम उसे बांध लेते हैं।" बाद में महादेवभाई की मृत्य के क्या-क्या कारण हो सकते थे, इसकी चर्चा करते रहे। इसलिए आज गीताजी का पाठ नहीं हो सका। मुझे याद आया कि ऐसे ही एक दिन जमनालालजी बैठे थे। कहने लगे, "यह पुनर्जन्म की ही कोई बात होगी; नहीं तो कहां तुम, कहां हम और कहां बापू!" सच है। कैसे हम सब इकट्ठे हुए।

रात भर पानी बरसा था। सुबह भी थोड़ा बरसता था। फिर भी बापू महादेवभाई की समाधि पर पुष्पांजलि चढ़ाने गये ही। जाना तो कंटीले तारों की हद तक ही था। वहां छातों के नीचे खड़े-खड़े गीताजी का पाठ किया। फिर वापस आकर ऊपर बरामदे में घूमे।

आज रसोइया मगन और भूरा दोनों नहीं आये। उन्हें उनकी मुद्दत से पहले ही छोड़ दिया गया था। जेल में राजनैतिक कैदियों के लिए जगह की जरूरत थी।

: १३ :

महादेवभाई के बाद

३० अगस्त '४२

आज बापू को यहां आये तीन हफ्ते पूरे हुए।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "छः महीनों के अंदर हमें इस जेल से बाहर निकलना ही है। हमारी लड़ाई सफल हुई तो भी, और लोग

---

१. एक अंग्रेजी मिठाई।

हारकर वैठ गए तो भी। मैं नहीं जानता, लोग क्या करेंगे। लेकिन मैं यह जानता हूं कि लोग लड़ाई के लिए तैयार नहीं थे। हमने तैयारी की ही नहीं थी; लेकिन अहिंसा का काम करने का रास्ता दूसरा ही होता है। इसलिए हमें निराश होने का कोई कारण नहीं। हम नहीं जानते कि ईश्वर ने क्या सोच रखा है। जो भी हो, लेकिन जितने आज इस लड़ाई के लिए निकल पड़े हैं, उनकी मर मिटने की तैयारी होनी ही चाहिए। वे आजाद हुए बिना चैन नहीं लेंगे। अगर आजादी के लिए लड़ते-लड़ते वे खत्म भी हो गए तो खुद तो आजाद हो ही जायंगे।"

मैंने पूछा, "उस हालत में हम लोगों को सरकार का सामना किस तरह करना होगा, जिससे या तो उसे हिन्दुस्तान को आजाद कर देना पड़े या हमीं को खत्म कर डालना पड़े?"

वापू कहने लगे, "सत्याग्रह करने के अनेक रास्ते हो सकते हैं। अगर सचमुच हम मुट्ठी भर लोग ही सत्याग्रह करनेवाले रह गए तब तो वे लोग हमें चुन-चुनकर मार डालेंगे।"

मैंने कहा, "हां ठीक है, मगर यह सब तो छूटने के बाद की वातें हुईं न?"

बापू कहने लगे, "छूटे बगैर हम रह नहीं सकते। विना मुकदमा चलाये वे बरसों तक हमें जेल में बंद करके रख नहीं सकते। और अगर मुकदमा चलाते हैं तो किस बुनियाद पर चलायेंगे? तुम्हें किस बिना पर पकड़ा? बा को किस बिना पर पकड़ा? उनके पास मुकदमा चलाने के लिए तो कोई सामान ही नहीं। क्या यह कहेंगे कि तुम लोग सभा में जाकर भाषण करने का विचार कर रहे थे? इरादे को जबतक कार्यरूप में परिणत न किया जाय, गुनाह नहीं माना जा सकता।"

३१ अगस्त '४२

आज बापू का मौन था। मौन के दिन वातावरण बहुत उदास-सा बन जाता है। विषाद तो सचमुच महादेवभाई के जाने से ही छाया हुआ था। बापू के मौन के दिन वह और भी गहरा लगने लगता है।

शाम को मि० कटेली खबर लाये कि सरकार ने अखबारों की फेहरिस्त

मंजूर कर ली है। उन्होंने मुझसे उसकी एक और नकल मांगी, ताकि वे अखवारवालों को लिखकर उन्हें मंगा सकें। बापू ने आठ अगस्त से लेकर इधर के सब अखवार मंगाने को कहा।

१ सितम्बर '४२

आज से नया वक्त शुरू हो गया है। घड़ियां एक घंटा आगे कर दी गई हैं। कारण यह बताया जाता है कि लोग काम से जल्दी लौटा करें। 'ब्लैक आउट'[१] के दिनों में इससे लोगों को सुभीता रहेगा। यहां बैठे तो यह परिवर्तन निकम्मा-सा लगता है, इसलिए हमारी घड़ियां सब पुराने वक्त के अनुसार चल रही हैं।

दोपहर को आज का 'टाइम्स ऑव इण्डिया' और 'बॉम्बे क्रानिकल' आये। टाइम्स के पांच-छः पुराने अंक भी आज मिले, बाकी सब बाद में आयेंगे। अखबारों ने काफी वक्त ले लिया। मालूम होता है, जनता ने हिंसा तो की है मगर उसकी जिम्मेदारी सरकार की अपनी है। जब सब नेताओं को पकड़ लिया गया तो लोगों को काबू में कौन रखता?

मैंने पूछा, "बाहर निकलकर हम लोग क्या करेंगे?" बापू बोले, "तब की बात तब सोचेंगे।"

एक दिन मीराबहन ने कहा था, "यहां से बाहर निकलने पर क्या आप यह चाहेंगे कि मैं जैसे गिरफ्तारी से पहले दौरा कर रही थी फिर वैसे ही करूं?"

बापू ने उत्तर दिया, "मेरा खयाल है कि अब से छः महीने बाद हिन्दुस्तान एक बिलकुल बदला हुआ देश होगा। आज मैं नहीं कह सकता कि उस समय मैं तुमसे क्या कराना चाहूंगा।"

२ सितम्बर '४२

आज 'बॉम्बे क्रानिकल' के दो-चार पुराने अंक मिले। सरकार लोगों

---

१. लड़ाई के दिनों में हवाई जहाजों के डर से रात को बत्तियां बंद रखने का नियम।

पर खूब जुल्म कर रही है। डर है कि लोग इससे और ज्यादा हिंसक बनेंगे। बापू को लोगों की हिंसा से दुःख होता है। मगर वे यह भी मानते हैं कि सरकार ने उसे खुद मोल लिया है। इसलिए चुप बैठे हैं। दूसरी बात यह भी है कि अखबार आज सरकार के कब्जे में हैं। इनमें इकतरफा बयान ही ज्यादा आवेंगे। ऐसे अखबारों के बयानों पर कितना विश्वास किया जा सकता है, यह निश्चय करना भी कठिन है।

दोपहर को बापू कहने लगे, "तुम्हें अपने एक-एक मिनट का हिसाब रखना चाहिए। हिंसा के इस समुद्र में अहिंसा को अपना स्थान ढूंढ़ लेना है और यह हमारे जीवन को नियमित बनाने से ही हो सकता है।"

आज कृष्णाष्टमी है। बहुत दिन पहले बापू ने मीराबहन को हाथी-दांत की बनी हुई बालकृष्ण की एक मूर्त्ति दी थी। किसी ने वह बापू को भेंट की थी। मीराबहन पास में थीं। उन्होंने वह मीराबहन को दे दी। कई वर्षों से वह उनके बक्स में पड़ी थी। आज उन्होंने उसे निकाला और उसकी पूजा की। बा की बिन्दी के बारे में बात हुई। बापू को पता ही नहीं था कि बा भी बिन्दी लगाती हैं और बा दिन-रात बापू की आंख के सामने रहती हैं!

३ सितम्बर '४२

आज अखबार देर से आये। वर्षा के कारण लाइनें टूट गई हैं। इसलिए डाक देर से आई।

बापू ने वाइसराय के नाम एक तार लिखकर दिया। उसमें बताया कि अखबारों की खबरों का उनके मन पर क्या असर हुआ है।

४ सितम्बर '४२

बापू ने वाइसराय को तार के बदले पत्र लिखने का विचार किया। मि० कटेली कहते थे कि तार यहां से नहीं जा सकेगा। बम्बई की सरकार शायद अपने 'कोड' शब्दों में भेज सके। पहले बापू ने विचार किया कि भंडारी से कहें कि वे फोन पर बम्बई सरकार से पूछ लें। मगर बाद में विचार बदल गया। कहने लगे, "तार में सब विस्तारपूर्वक कह भी नहीं

सकूंगा। इससे पत्र भेजना ही ठीक होगा।" दोपहर को पत्र पूरा करके सोये। मुझसे कहा कि उनके उठने से पहले उसकी एक साफ नकल तैयार करके रखूं। मैंने नकल तैयार की। उठने के बाद उसे फिरसे पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते फिर विचार बदला और कुछ भी न भेजने का निश्चय किया। कहने लगे, "इस पत्र में मैं कोई नई चीज नहीं दे रहा। इससे उन लोगों को चिढ़ ही आ सकती है। वाइसराय अगर मित्र है तो उसे चिढ़ाना नहीं चाहिए। और मित्र नहीं है तो दुश्मन को लिखने से फायदा ही क्या? लोगों की हिंसा को देखकर यदि मैं आंदोलन बंद करने का निश्चय करता तो बात दूसरी थी। मगर आज तो मेरे सपने में भी यह चीज नहीं है। तो फिर लिखने से फायदा क्या?" इतने में सड़क पर से कुछ लोग जोरों के साथ 'महात्मा गांधी की जय' पुकारते हुए गुजरे। बापू बोल उठे, "इसके साथ मेरे पत्र का क्या मेल!"

बा की तबीयत अच्छी नहीं है। छाती में दर्द रहता ही है।

शाम को समाधि पर तार के इस पार खड़े होकर सिपाही को फूल देते समय मैंने कहा, "इस तरह यहां खड़े होने से खूब अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि हम कैदी हैं और कैद चुभने लगती है।"

मि० कटेली कहने लगे, "आप कभी जेल गई हैं?"

मैंने कहा, "यह मेरी पहली यात्रा है।"

वे बोले, "लेकिन यह जेल नहीं है, यह तो महल है।"

मैंने कहा, "बचपन में मैंने एक छोटी-सी कविता सीखी थी। उसका भावार्थ है, मेरे पास एक छोटा-सा कबूतर था। वह मर गया। क्यों मरा? मुझे लगता है, गम से मरा। मगर गम काहे का? उसके पांव में मैंने अपने हाथों से तैयार किया हुआ रेशमी धागा बांधा था। इस तरह यद्यपि धागा रेशमी था और प्यार-भरी उंगलियों ने उसे तैयार किया था, फिर भी वह बंधन था और उसने बेचारे कबूतर को खत्म कर डाला। इसी तरह यह महल कितना ही भव्य क्यों न हो, यह असल में जेल ही है। और जेलर कितना ही अच्छा क्यों न हो, आखिर तो वह जेलर ही है।" सब हँसने लगे।

५ सितंबर '४२

आज पारसियों का नया साल है। मि० कटेली सुवह ही वापू को दंडवत प्रणाम करने आये। मीरावहन ने मि० कटेली के लिए नाश्ते की मेज पर सुंदर फूल सजा दिए। वापू ने मुझे उनके लिए एक 'वटन-होल' (button-hole) तैयार करने को कहा। इसी तरह वापू सेवाग्राम में मुझसे लॉर्ड लोथियन (Lord Lothian) के लिए 'वटन-होल' तैयार करवाया करते थे। वहां फूल नहीं थे। घास से ही मैं वनाया करती थी और लॉर्ड लोथियन खुशी के साथ उसे अपने कोट में लगाया करते थे। बाद में जव उन्हें ऑर्डर ऑव दि थिसिल (Order of the Thistle)[1] मिला, वे नाइट बने, तो मुझे ऐसा लगा मानो वापू ने पहले से ही उन्हें थिसिल (Thistle) घास के वटन-होल पहनाकर उनको मिलनेवाली इस पदवी की भविष्यवाणी कर दी थी!

दोपहर को खवर आई कि हम कांटेदार वाड़ के वाहर महादेवभाई की समाधि पर जा सकेंगे। शाम को हम वहां गये।

: १४ :

बा अस्वस्थ

वा का छाती का दर्द हृदय की बीमारी के कारण है। उनके हृदय की पीड़ा के लक्षण इसके सूचक हैं। दर्द आज अधिक था। मैंने मि० कटेली से कहा, "मुझे बा के लिए डॉक्टरी सलाह की जरूरत है।" उन्होंने भंडारी को फोन किया। भंडारी रात को आये। वाद में डॉ० शाह आये। वह आगा खां के रिश्तेदार हैं। भले आदमी हैं। एमिल नाइट्राइट (Amyl Nitrite) की नलियां रखने को कह गये। नाइट्रो ग्लिसरीन (Nitro Glycerine) की टिकियां तो मेरे पास थीं ही। लिक्विड

---

१. स्कॉटलैंड की एक सम्मानसूचक उपाधि का नाम।

कोरामीन (Liquid Coramine) भी मंगवा ली थी, ताकि वक्त जरूरत सामान तैयार मिले।

६ सितंबर '४२

आज सिविल सर्जन और कलेक्टर फिर आये। भंडारी ने सिविल सर्जन से कहा था कि बीमारों को देखकर आइए, इसलिए उन्होंने बा को, बापू को और सरोजिनी नायडू को देखा। कहने लगे, "बा के फेफड़ों की झिल्ली का दर्द है।" मैंने कहा, "इस दर्द का न तो सांस के साथ संबंध है, न खांसी के साथ। दर्द का फैलाव (Distribution) हृदय से संबंधित है।" तब उन्होंने 'हिस्टरी टिकट' पर लिख दिया, "दर्द फेफड़े की झिल्ली का है। उसमें हृदय भी आंशिक कारण हो सकता है। हृदय में कोई विशेष विकार या दोष नहीं है।"[१]

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। बा के हृदय की स्थिति साधारण कहना कैसी अजीब बात है। बा को तो स्वांस की नली की सूजन और उसके कारण कफ इकट्ठा होने की पुरानी शिकायत है। इस वास्ते सांस लेने में कफ की घड़घड़ाहट होती है। उन्होंने कफ की आवाज को फेंफड़ों की झिल्ली की रगड़ की आवाज समझा होगा। भगवान ही जाने। दिल की मांस-पेशियों की कमजोरी है। हृदय का बायां किनारा अपनी जगह से बढ़ा हुआ है। दिल के परदे में सिकुड़न के समय स्पष्ट आवाज होती है। बात तो यह है कि जब वह मन में दिल की बीमारी की शंका रखते हैं तो उन्हें हृदय को जरा ज्यादा ध्यानपूर्वक देखना चाहिए था।

उन लोगों के जाने के बाद डॉ० शाह आये।

बा कल से बिस्तर पर हैं। डॉक्टरों के आने का इतना फायदा हुआ कि बा समझ गईं कि सचमुच बीमार हैं और उन्हें खाट पर पड़े रहना चाहिए, नहीं तो पूरी कोशिश करने के बाद भी मैं आज तक उनको बिस्तर पर नहीं रख सकी थी।

---

१. "Pain is pleuritic. There may be some coronary element as well. Heart, n. a. d."

७ सितंबर '४२

आज सवेरे कर्नल शाह और भंडारी आये। भंडारी कहने लगे, "अबसे ये ही यहां आया करेंगे, सिविल सर्जन नहीं। मुझे इन पर बहुत विश्वास है। इनके हाथ में शफा है।"

मैंने बा के दिल की धड़कन का ग्राफ—नक्शा—बनाने को कहा। दोपहर को डॉक्टर कोयाजी आये और उन्होंने वह नक्शा उतारा। सामान्यतया ऐसा चार जगह बिजली के तार लगाकर किया जाता है, उन्होंने सिर्फ पहले तीन स्थान से ही किया। मैंने चौथे स्थान से भी लेने को कहा, मगर उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया।

सड़क की ओर से 'महात्मा गांधी की जय' का नाद आ रहा था। आज कोई बड़ी सभा हुई होगी।

कैदियों से भरी तीन लॉरियां सड़क पर से गईं। मालूम होता है, सरकार खूब जुल्म कर रही है। मगर अभीतक तो लोग भी हिम्मत दिखा रहे हैं। कहीं-कहीं हिंसा भी होती दीखती है। यह बुरी बात है। मगर नामर्दी इससे भी बुरी है।

आज भंडारी कह रहे थे, "एक-दो दिन में आप अपने लिए मदद कीं उम्मीद रख सकती हैं।" शायद भाई आनेवाले होंगे। बापू से मैंने जिक्र किया तो कहने लगे, "मुझे तो अब उसके आने की आशा बहुत कम है। जब सामने आकर खड़ा हो जायगा तब मानूंगा कि आया।" उसके बाद बताने लगे कि उन्हें आज ही स्वप्न आया था कि भाई उनके सामने बैठे हैं। कहने लगे, "स्वप्न क्या, मैं तो आधे से ज्यादा जाग्रत था। देखता हूं प्यारेलाल सामने खड़ा है। उसके हाथ में एक कागज है। कहता था, 'मुझे तो आपके पास ये लोग (सरकार) रहने नहीं देंगे। सब बातें मैंने इस क़ागज पर लिख डाली हैं, ताकि मुझे सब कहने का समय न मिले तो आप यह पढ़ लें। पहले तो मुझे आभास हुआ कि महादेव बातें कर रहा है, मगर फिर देखता हूं तो प्यारेलाल है। उसने कागज मुझे देकर जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया। बाहर की सब खबरें दीं। कहा, लड़ाई अच्छी चल रही है। आर्य्यनायकम खूब काम करता है, श्रीमन्नारायण की कलम

में अद्‌भुत शक्ति आ गई है, वह भी बहुत काम कर रहा है। सरकार की तरफ से बहुत सख्ती होती है, इस चीज ने जनता के दिल में बड़ा घर कर लिया है। लोग सरकार के सामने जम गए हैं। आप पर भी खूब सख्ती करनेवाले हैं। मुझे आपके पास रहने नहीं देंगे, मगर सुशीला तो आप के पास है ही। उसके माता-पिता-भाई आज सब आप ही हैं। उस पर दया रखना मगर मैं तो जहां भी रहूंगा आप ही का काम करूंगा। मैं आपके ढंग से काम कर रहा हूं, करता रहूंगा। मेरे काम से आपको कभी सिर नीचा नहीं करना पड़ेगा, आपको विश्वास दिलाता हूं।' इतना कहकर वह गायब हो गया। मैं जाग उठा।"

दूसरे दिन 'सर्वोदय' और 'राष्ट्रभाषा समाचार' इत्यादि मासिक पत्र आये, उनमें देखा कि भाई ने स्वप्न में जो बाहर की लड़ाई इत्यादि की खबरें दी थीं, करीब-करीब सही थीं। कॉमर्स कॉलेज वर्धा को सरकार ने बंद कर दिया था। आर्य्यनायकमजी और श्रीमन्‌जी पकड़े गए थे। खूब सख्ती चल रही थी, लेकिन लोग यथाशक्ति लड़े जा रहे थे।

८ सितंबर '४२

आज बा की तबीयत थोड़ी अच्छी है। डॉ० शाह आये थे। डॉ० कोयाजी जो दवा बता गये थे, वह उनको नापसंद है। कहने लगे, "दवा न देना, हृदय जब यथाशक्ति काम कर रहा है तो चलते घोड़े को चाबुक क्या लगाना!"

दिन शांति से गुजरा। यहां तो इतनी शांति मिलती है कि उससे थक जाते हैं। बाहर जायंगे तब क्या होगा, सो तो भगवान जाने, मगर जायंगे तब न!

और कब जायंगे, कैसे जायंगे, इस सब पर भविष्य का आधार होगा। महादेवभाई अच्छे इन झंझटों से मुक्त हो गये। कई बार मन में शिकायत उठती है, उन्हें इस तरह दगा नहीं देना चाहिए था। मगर नहीं, वह अपना जीवन-कार्य पूरा कर गये, हमें अभी करना है।

९ सितंबर '४२

बा की तबीयत आज भी अच्छी है। डॉक्टर शाह और भंडारी

आये थे। पहले तीन नक्शे उतारे गए थे। उनमें दिल की कोई खराबी दिखाई नहीं दी। मगर मैंने कई बार देखा है कि पहले तीन नक्शों में कुछ नहीं मिलता, मगर चौथे नक्शे में खराबी पकड़ी जाती है। मैंने कर्नल भंडारी से कहा कि चौथा नक्शा भी लेना चाहिए। उस रोज डॉक्टर कोयाजी से भी कहा था, मगर न जाने क्यों, उन्होंने नहीं लिया। डॉक्टर शाह कहने लगे, "सच तो यह है कि मैं इन और इस तरह के दूसरे नये-नये आडंबरों में यकीन नहीं करता।"

जब सरोजिनी नायडू के गुर्दे की हालत की जांच कराने की बात हुई थी, तब भी उन्होंने आधुनिक विज्ञान की प्रगति वगैरा में अपनी अश्रद्धा प्रकट की थी और बात टाल दी थी।

१० सितंबर '४२

आज 'बॉम्बे क्रानिकल' के सब पुराने अंक आ गये। मालूम होता है, महादेवभाई की मृत्यु को देश ने चुपचाप सह लिया है। यह चीज बापू को काफी चुभी है। घूमते समय कहने लगे, "आखिर तो महादेव इनके जेल में मरा है न? महादेव का खून इनके सिर है। मैं उस दिन गवर्नर को लिखने वाला था, मगर फिर काट डाला। जिंदा रहा तो किसी दिन मैं जरूर उन्हें यह सुनाऊंगा कि महादेव की मृत्यु का कारण आप हैं। मैं मानता हूं कि वह जेल न आते तो कम-से-कम इस वक्त तो हर्गिज न मरते। बाहर वह कई तरह के कामों में उलझे रहते। यहां वह एक ही विचार में डूबे रहे, एक ही चिंता उनके सिर पर सवार रही। वह उन्हें खा गई। उन पर भावना का कुछ इतना जोर पड़ा कि वह खत्म हो गए। देश ने कुछ भी नहीं किया। वैकुण्ठ मेहता की श्रद्धांजलि तो आने ही वाली थी और बरेलवी की भी। मगर महादेव तो सारे देश के थे और देश के लिए वह गये हैं। भगतसिंह की मृत्यु के बाद जब मैं लॉर्ड अर्विन से समझौता करके करांची जा रहा था तो लोगों के झुंड-के-झुंड हर स्टेशन पर मेरे पास आते थे और चिल्लाते थे, 'लाओ भगतसिंह को!' इसी तरह अब की भी वे सरकार को कह सकते थे, 'लाओ महादेव को!' सरकार लाती तो कहां से? कह देती कि जो लोग इतने भावुक,

इतने विक्षुब्ध और इतने संवेदनशील हैं, वे जेल में आते ही क्यों हैं? न आयें—वगैरा।" फिर बापू कहने लगे, "मगर लोग शायद सोचते होंगे कि आज सरकार के साथ ऐसा घमासान युद्ध चल रहा है कि उसमें दूसरी किसी चीज का विचार करने का अवकाश ही कहां रह जाता है?" मैंने कहा, "और आपने भी तो तार में लिखा था न कि जो किया जा सकता था, किया गया! इसके कारण भी लोग शांत रह गए होंगे। समझे होंगे कि यह तो स्वाभाविक मृत्यु थी, जो कहीं भी हो सकती थी।" बापू ने कहा, "सो तो है, लेकिन मृत्यु हुई तो सरकार के जेल में न?"

वा अच्छी हो रही हैं। बापू को आज एक पतला दस्त हुआ। दो-तीन दिन से आलू और सकरकंद खाना शुरू किया था। शायद उसका असर होगा।

: १५ :

भाई आ पहुंचे

११ सितंबर '४२

आज दोपहर मैं खाना खाकर उठी तो किसी ने कहा, प्यारेलाल आ गये। मैंने ऊपर देखा तो वे सामने बरामदे में खड़े थे। बापू उनके आने की आशा छोड़ चुके थे। महादेवभाई को गये चार हफ्ते होने आये। ऐसा लगता था कि भाई को आना होता तो जल्दी ही आते। सो बापू कल ही कह रहे थे, "अब तो मेरे सामने आकर वह खड़ा रहेगा तभी मैं मानूंगा कि वह आया।"

महादेवभाई की मृत्यु से भाई को बड़ा धक्का लगा था। कहने लगे, "जाने की बात तो मैं किया करता था, और चले गए वह!"

भाई ने बताया कि जिस दिन महादेवभाई की मृत्यु हुई उसी दिन सवेरे करीब साढ़े आठ बजे उन्होंने पता नहीं क्यों उपवास करने का विचार किया था। (यहां आगा खां महल में करीब साढ़े आठ बजे महादेवभाई

की तवीयत विगड़ी होगी। भाई को तब कुछ पता न था कि यहां क्या हो गया है।)

फिर कहने लगे, "मैंने विचार किया था कि इस बार तुझे यहां गीताजी और बाइबिल—न्यू टेस्टामेंट—सिखाऊंगा।" और संयोग की वात कि यही दोनों चीजें यहां वापू मुझे सिखा रहे हैं! वापू ने जब यह सुना तो कहने लगे, "टेलीपेथी (Telepathy) कितना काम करती है।"

मि० कटेली को करीव महीने-भर के वाद कोई वात करने को मिला। वहुत खुश थे। खाने के वाद काफी देर बैठकर भाई के साथ वातें करते रहे।

चर्चिल के भाषण से बापू को और हम सवको वड़ा आघात लगा। मन पर यह भी असर हुआ कि ऐसा भाषण लोगों को और भड़कायेगा, और कड़ा वना देगा।

महादेवभाई की मृत्यु पर वापू ने जो तार भेजा था वह आज अखबार में आया, मगर सेंसर किया हुआ था। उसमें से दो-तीन वाक्य काट दिये गए थे। एक तो यह कि महादेवभाई देशभक्त और योगी की मृत्यु मरे हैं और दूसरा बापू का आशा प्रकट करना कि उनका लड़का उनके स्थान को सुशोभित करने के लिए अपने-आपको तैयार करेगा। वापू ने साफ कहा था कि अगर तार जैसा लिखा है वैसा ही न जा सके तो वह भेजना नहीं है। जब मैंने काटे हुए वाक्य उन्हें बताये तो वे बहुत चिढ़ गए। मीराबहन कहने लगीं, "शायद प्रेस ने काट दिये हों। यह से तो पूरा-का-पूरा गया होगा।" बापू कहने लगे, "बहुत करके यहीं—जेल वालों ने—सेंसर किया होगा।" मीराबहन कहने लगीं, "जव हम वाहर निकलेंगे तभी सचाई का पता चलेगा।" बापू कहने लगे, "Don't you see I get out only as a free man. Either India wins her freedom, or I go to lie by Mahadev's side."[1]

---

१. "तुम समझती नहीं हो कि मैं आजाद होकर ही बाहर निकलूंगा। या तो भारत आजादी प्राप्त करेगा या महादेव के पास मेरी भी समाधि बनेगी।"

आज बापू का खून का दवाव खूब बढ़ गया (१८८/११२-११६) था। कहने लगे, "बस कोई भी असत्य या वेईमानी की बात देखकर मेरा मिजाज बिगड़ जाता है।" यह इशारा चर्चिल के भाषण की तरफ था।

१२ सितंबर '४२

दिन में कुछ खास खबर नहीं थी। भाई इधर-उधर की बातें सुनाते रहे। बाहर की खबर संतोषजनक है। बापू का विश्वास है कि ईश्वर के हाथ के बिना ऐसा आंदोलन बिना लीडरों के चल नहीं सकता—खास करके जब सब लीडरों को सरकार एकदम उठा ले गई हो।

घूमते समय मैंने कहा, "बापू, कोई चमत्कार ही हो तो आज हमारी सफलता हो सकती है। मुसलमान तो ऐसे अकड़े पड़े हैं, सरकार भी उन्हें सिर चढ़ा रही है। ऐसी हालत में हमारी सफलता कठिन है।"

बापू बोले, "हां, सो तो है, मगर जहां सत्य रहता है वहां चमत्कार भी होते हैं। मैंने तो कहा ही है कि अहिंसा नये ही ढंग से काम करती है। लोग चुपचाप बैठ नहीं जायंगे तो सब अच्छा ही होगा।"

१३ सितंबर '४२

शाम को घूमते समय भाई बाहर की बातें सुना रहे थे। बापू कहने लगे, "अगर सरकार ने हमें पकड़ने की भूल न की होती तो आंदोलन यह रूप कभी लेनेवाला था नहीं। मैं अकेला भी बाहर रहता तो संभाल लेता। मगर अब तो मैं अकेला बाहर निकलना नहीं चाहता।" मैंने पूछा, "क्यों?" कहने लगे, "उस वक्त इच्छा थी, श्रद्धा थी, और शक्ति भी थी कि मैं संभाल लूंगा। मगर आज न इच्छा है, न श्रद्धा है, न शक्ति है।" मैंने कहा कि इसे जरा विस्तार से समझाइए। कहने लगे, "इच्छा होती है तो शक्ति भी आती है, श्रद्धा रहती है, मगर जब इच्छा ही नहीं तो शक्ति कहां से आ सकती है? मैंने तो अपनी इच्छा को भी ईश्वर के अधीन कर दिया है न! तो उसे जब जो मुझसे कराना होगा करायेगा। यों कहो कि आज ईश्वर मुझसे कोई इच्छा नहीं करा रहा। ठीक है, ईश्वर को लगा होगा कि आंदोलन ऐसे ही चल सकता है।"

१४ सितंबर '४२

आज बापू का मौन था। महादेवभाई की समाधि पर जो पत्थर रखे थे उनका आकार कब्र का था। बापू को वह खटका। हम सबको भी। इस कारण दो रोज हुए उसे चौरस करवा दिया है। रघुनाथ वगैरा ने गोबर से वहां लीप भी दिया है। उस पर छेद करके फूलों का ॐ बनाया। और जगह भी फूलों के लिए छेद किये। सजाने पर बहुत सुंदर लगता है। मैंने कहा, "बापू, महादेवभाई होते तो बहुत खुश होते।" और कहते, "बापू, कैसा सुंदर दीखता है ?"

आज अखबारों से पता चला कि बापू का तार दुर्गाबहन वगैरा को भेजा ही नहीं गया था। ४ सितंबर को वह दिल्ली से डाक के जरिये भेजा गया। हम सबको इससे बहुत आघात लगा। सरकार ने दुर्गाबहन वगैरा से तो माफी मांगी है, मगर वह मांगनी तो चाहिए बापू से।

बा अच्छी हैं, बापू की तबीयत भी ठीक है। वर्षा खत्म हो गई। दिन में खूब धूप होती है। रात को आकाश तारों से भरा होता है। बापू रात में कहने लगे, "मैं इन तारों के नीचे सो सकूं तो नाचने लगूं।" मैंने कहा, हमें भी आकाश-दर्शन करावें। कहने लगे, "हां, जितना याद है उतना तो करा ही सकता हूं। यरवदा में मैं बहुत आकाश देखा करता था।"

१५ सितंबर '४२

आज समाधि पर गीता ले जाना भूल गई। बारहवां अध्याय कंठ हो गया है। इस कारण मैंने सोचा उसके पाठ में कोई कठिनाई नहीं आवेगी, मगर पढ़ते-पढ़ते एकाध श्लोक आगे-पीछे हो गया। घूमते समय बापू इस पर कहते रहे, "पूरा बारहवां अध्याय तो तुम्हारे लिए एक श्लोक के जैसा हो जाना चाहिए, फिर उसमें भूल हो नहीं सकती। और फिर इस बात पर घमंड नहीं होना चाहिए कि तुमको सारा याद है। पादरियों को तो बचपन से ही बाइबिल का अभ्यास कराया जाता है। तो भी वे किताब सामने रखकर प्रार्थना-समाज में बाइबिल पढ़ते हैं, क्योंकि कहीं भूल हो जावे तो सारे समाज का तार टूटता है।"

इसके बाद बातों-बातों में बाहर जाकर क्या होगा, इस बारे में मेरे मुंह से कुछ निकल गया। पर तुरंत ही मैंने सुधार लिया, "मगर वह तो बाहर जावेंगे तब न! कौन जाने महादेवभाई के साथ ही सबको यहीं रह जाना हो।" बापू बोले, "वह तो है, और मुझे बहुत अच्छा लगेगा कि हम सब यहीं रह जायं।" मैंने कहा, "आप नहीं। आपको छोड़कर बाकी हम सब।" बापू इस वाक्य से कुछ चिढ़-से गये। बोले, "हमेशा ऐसा कहना ठीक नहीं है। ऐसा करके तुम लोग मेरे शुभ संकल्प को ठेस पहुंचाते हो। इसीमें महादेव गया और अब तुम भी वही कह रही हो।" मैंने कहा, "आप नाराज न हों तो मैं कहूं कि क्यों मेरे मुंह से ऐसा उद्गार निकला। कोई भी सेनापति—जनरल—ख़ुद मरने की जगह पर नहीं जाता, अपने सिपाहियों और अफसरों को भेजता है। ऐसे ही आपका है। आप हैं तो आजादी की लड़ाई चलाते रहेंगे। अहिंसा की लड़ाई आपके साथ है।" यह सुनकर बापू कहने लगे, "मगर तू तो जनरल की भी सुपर जनरल (Super-General)—बड़ी जनरल—बनती है। यही मैंने महादेव को कहा था। जनरल जानता है, उसे कहां किसे भेजना है और कहां खुद जाना है। तूने 'मुक्तधारा' पढ़ी है! वहां युवराज कैसे अपने भाई को रोक देता है। नहीं, मुझे ही इस काम में जाना चाहिए, तुमको नहीं।" फिर 'विलियम ऑव ऑरेंज' (William of Orange) का किस्सा कहा, "ऐसे ही मुझे लगे कि मुझे जाना चाहिए और तुम लोग मेरा विरोध करते रहो तो वह मेरी शक्ति क्षीण करने जैसा है। आज तो मैं कर्त्तव्यविमूढ़ बनता नहीं हूं। लेकिन मुझे भी लग सकता है कि देखो न, महादेव कहता था, सुशीला, बा, प्यारेलाल सब कहते हैं, तो शायद वे जो कहते हैं वही ठीक होगा। और धर्मग्रंथों में भी कहा है, जो सौ को खिलाता है वह रहे और पचास खानेवाले मर जावें तो हर्ज नहीं, मगर खिलानेवाला भी चला जावे तो सब भूखों मरेंगे। इसलिए मुझे तो जिंदा रहना चाहिए। मगर ऐसा है नहीं। जब खिलानेवाला कहता है कि मैं तो इस तरह जिन्दा रहूं तो भी खिला नहीं सकूंगा, मैं खुद भार-रूप बन जाऊंगा, तो उसे रोकने से क्या फायदा! सब खाने-

वाले उसके जाने से अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। मैं मरना चाहता हूं, ऐसा नहीं है। देखती नहीं कि मैं तो पंद्रह वर्ष के लड़के के उत्साह से उर्दू सीख रहा हूं और दूसरा अभ्यास भी करता हूं, तेरे साथ खेलता हूं। जो भी रस लेने लायक चीजें हैं उनका रस मैं खींच लेता हूं। मगर जब ऐसा मौका आ जाय कि मैं लाचार बन जाऊं तब मैं क्या कर सकता हूं!" मैंने कहा, "जी, कोई ऐसा मौका आ सकता है जब कि आदमी अपना स्वाभिमान रखकर जिंदा नहीं रह सकता। ऐसी हालत में जीने से क्या फायदा? मगर ऐसा मौका न आवे, ऐसी इच्छा रखने में तो कोई हर्ज नहीं है।" कहने लगे, "ऐसे तो महादेव भी मान गया था कि ऐसा मौका आ सकता है कि उपवास करना धर्म हो जाय। मगर यह बात उसके हृदय में बैठी नहीं थी। ऐसी इच्छा करने में दोष नहीं, मगर वह इच्छा तुम्हारे ही पास रहनी चाहिए।" मैंने कहा, "ठीक है। आपका मतलब है कि आपके सामने उसकी बात नहीं करनी चाहिए। मूक इच्छा रखना ठीक है।" बोले, "हां, मूक इच्छा ईश्वर के पास जाती है। अगर हम उसकी चर्चा करते हैं तो उसकी शक्ति कम होती है और मेरे रास्ते में वह रुकावट डाल सकती है। ईश्वर के पास अपनी इच्छा रखो। जो उसे करना होगा सो करेगा, जो मुझसे करवाना होगा वह करायेगा।"

घूमने का वक्त पूरा हो गया। भाई अब बापू की मालिश वगैरा करते हैं। मैं बा का काम कर देती हूं, सो खाने आदि का सब काम मिलाकर मेरा समय तो वैसा-का-वैसा ही भरा रहता है। दोपहर खाने के समय भाई के साथ बैठती हूं। वह बहुत धीरे-धीरे खाते हैं। मैं खाकर उतने समय में साग भी काट लेती हूं। आज भी ऐसा ही किया। इससे बापू के पैर मलने को जरा देर से पहुंची तो डांट पड़ गई। कहने लगे, "हमारे पास जब काम पड़ा हो तब हम खाना खाकर मेज पर बैठे नहीं रह सकते।"

शाम को घूमते समय बाहर जो चल रहा है उसकी बातें होती रहीं। बापू बाइबिल—ओल्ड टेस्टामेंट—की बात कर रहे थे, "उसमें रक्त-

पात जगह-जगह आता है। ईश्वर की शरण जो लोग जाते हैं, मामूली भूलें करने वाले लोग जब ईश्वर का आश्रय मांगते हैं तब ईश्वर उन्हें बचा लेता है। उनके दुश्मनों को मार डालता है, प्लेग भेज देता है इत्यादि। तो मैं तो उसमें से इतना ही सार निकाल लेता हूं कि ईश्वर पर श्रद्धा बड़ी चीज है और ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसे जो करना है वह किसी की भी मार्फत करवा लेता है। हिंदुस्तान में भी उसे जो करवाना होगा करा लेगा।"

१६ सितंबर '४२

आज घूमते समय फिर बाहर की बातें होने लगीं। भाई ने कहा, "जो फौज और पुलिस से आशा थी, वह तो कुछ फली नहीं। बाकी आम लोग आंदोलन चला रहे हैं।" बापू कहने लगे, "मैंने फौज और पुलिस पर कभी आशा रखी ही नहीं थी। रूस में बेशक फौज और पुलिस जनता से आ मिली; परंतु वहां तो हिंसक क्रांति थी, हमारी अहिंसक क्रांति है। उसमें फौज, जो कि हिंसा की प्रतिमा है, कैसे आ सकती है? वे लोग तब जनता के साथ आवेंगे जब सत्ता लोगों के हाथ में आ जावेगी; क्योंकि पीछे तो कोई चारा ही नहीं रह जाता। वे लोग तो जड़ हैं। पढ़े-लिखे सुशिक्षित लोग कमीशन लेकर बैठे हैं; परंतु किसी ने अपना कमीशन छोड़ा? यह जड़ता की निशानी है।"

आज रामेश्वरी नेहरू की दोबारा गिरफ्तारी तथा अंबालाल साराभाई की लड़कियों तथा और जगह दूसरी स्त्रियों की गिरफ्तारी की खबर पढ़कर बापू ने कहा, "इसका मैं यह नतीजा निकालता हूं कि कई जगह हिंसा की घटनाएं होते हुए भी सब मिलाकर आंदोलन अहिंसक है, वरना इस तरह इतनी स्त्रियां—और कुलीन स्त्रियां—इसमें हिस्सा नहीं ले सकती थीं।"

कातते समय बापू को बाइबिल—न्यू टेस्टामेंट—पढ़कर सुनाती हूं। ऐसा करने से मेरा भी बाइबिल का अभ्यास हो जाता है।

आज मैथ्यू की कथा पूरी हुई। बापू के मन पर उसका गहरा असर पड़ा। शाम को मीराबहन से बोले, " 'जब मैं अद्‌भुत सलीब की ओर

निहारता हूं' (When I servey the Wond'rous Cross)[1] गा सकोगी? आज मैथ्यू की कथा पूरी हुई सुनकर मेरा दिल भर आया है। मैं उससे भरा हुआ हूं।" मीराबहन कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहतीं, जिससे उनके ईसाई धर्म और यूरोपियन जन्म की झलक आसपास के लोग देख सकें। इसीलिए बापू ने उनसे पूछा कि यह ईसाई गीत गा सकेंगी या नहीं। मीराबहन ने कहा, "आपके सामने गाऊंगी। बाहर जाकर औरों के सामने नहीं; क्योंकि आपको तो कोई गलतफहमी नहीं होगी।" मीराबहन ने बहुत अच्छी तरह गाया। रात जब बापू पलंग पर सोने गये तब मीराबहन ने आकर पूछा, "बापू, फिर गाऊं?" बापू ने 'हां' कहा और उन्होंने दोबारा वही गीत बापू को सुनाया। उसकी ध्वनि को कान में रखकर बापू सो गए। उनके सोने के थोड़ी देर बाद बा ने गरम पानी मांगा। हममें से कोई पास न था, हम लोग अभी भीतर बैठे बातें और काम कर रहे थे। सो बापूजी ने खुद उठकर उन्हें पानी दिया। बा की आज की रात अच्छी नहीं कटी। खाने-पीने में कुछ बदपरहेजी हुई थी। सुबह उठने पर उन्हें उल्टी कराई। तब जाकर उनकी तबीयत कुछ ठीक हुई।

: १६ :

अहिंसा की कसौटी

१७ सितंबर '४२

सुबह घूमते समय बा की तबीयत की चर्चा करते-करते बापू अपने दक्षिण अफ्रीका के अनुभव की बातें सुनाने लगे। पोलक ने उन्हें रस्किन का 'अंटु दिस लास्ट'[2] (Unto this Last) पढ़ने को दिया था। पढ़कर बापू के मन पर उसका गहरा असर हुआ। दिमाग में वही विचार भरे थे।

---

१. अंग्रेजी के एक भजन की पहली कड़ी।

२. जिसका अनुवाद बापू ने 'सर्वोदय' के नाम से किया है।

उसी रोज किसी मित्र के यहां खाना खाने गये थे। वहां बहुत गरिष्ठ भोजन हुआ। पेट भारी होने के कारण रात में नींद नहीं आई—'अंटु दिस लास्ट' के ही विचार आते रहे। बस आखिर में निश्चय किया कि अब मुझे ऐसा खाना नहीं खाना है, सादा जीवन बनाना है, जंगल में जाकर रहना है। दूसरे ही दिन साथियों की सम्मति लेकर जमीन के लिए विज्ञापन दे दिया। हफ्ते भर के अंदर जमीन मिल गई। बस रात भर में ही जीवन पलट गया। फिनिक्स (Phoenix) आश्रम की वह जड़ है।"

शाम को घूमते समय बापू ने भाई को खाने के समय का पालन करने को कहा। आज उन्हें बहुत देर हो गई थी। सरोजिनी नायडू नाराज हो गई थीं। बापू ने कहा कि वे यहां कुटुंब की मां बनकर बैठी हैं। सबको मां की तरह प्यार से खिलाती हैं। उनको हमें शिकायत का मौका नहीं देना चाहिए।

'इंडियन मेडीकल गजेट' के संपादक का ४ अगस्त का लिखा पत्र आज मिला है। मेरे लेख के प्रूफों के बारे में था। लिफाफे पर मोहन-भाई के हाथ का पता लिखा था—C/o महात्मा गांधी, आगा खां महल, पूना। और हमें पत्रों पर हमारी नजरबंदी की जगह लिखना मना है। क्या मजाक है कि जिसे सब जानते हैं उसे छिपाने की कोशिश की जा रही है!

१८ सितंबर '४२

सुबह घूमते समय बापू मुझे कल की एक घटना पर शिक्षा देते रहे, "मैं कहता हूं कि वह मूर्खता थी। महादेव की मृत्यु से और कुछ नहीं तो इतना तो सीखते कि किसी चीज से परेशान होना ही नहीं चाहिए। बारहवां अध्याय रोज पढ़ने का क्या अर्थ है? स्थितप्रज्ञ के लक्षणों का पाठ करने का क्या अर्थ है।" मुझे बड़ी शर्म आई। पहले से ही झेंप रही थी मगर इससे और बुरा लगा। कितना सोचा था कि अपने-आपको सुधारा है। छुई-मुईपन निकाल डाला है। मगर पहली ही परीक्षा में फेल हो गई।

दोपहर बापू जो पुस्तक लिख रहे हैं, उसका कुछ तर्जुमा किया, फिर काता। आराम नहीं किया। इससे शाम को जल्दी नींद आने लगी।

बापू की राह देखते-देखते सो गई, आधा घंटा सो चुकी थी तब बापू आये। उन्हें उठने में देर हो गई थी। बोले, "तू वक्त पर उठाने क्यों नहीं आई? मुझे तो काम में वक्त का ध्यान न रहे, पर तुझे तो मुझे कहना चाहिए था कि उठने का वक्त हुआ।" मुझे अपने सो जाने का अफसोस हुआ।

बाबला और दुर्गाबहन का बापू के नाम पत्र आया था। दुर्गाबहन का एक ही वाक्य उनके हृदय की स्थिति बताता था—'पत्थर की बनी हूं। सह रही हूं।' बाबला का सुंदर पत्र था—'मेरे बारे में जो लिखा है वैसा करने का प्रयत्न तो करूंगा, पर मैं तो बिलकुल क्षुद्र हूं। वहां कैसे पहुंच सकूंगा!' मैंने मन में कहा, "भगवान तुम्हें पहुंचायेगा, तुम्हारे पिता की आत्मा तुम्हें पहुंचायेगी।"

शाम को घूमते समय बापू बताते रहे कि कैसे वे एक बार कुतुबमीनार देखने गये थे। दिखानेवाला इतिहास का बड़ा विद्वान था। वह बताने लगा कि कुतुब के बाहर के दरवाजे की सीढ़ी से लेकर एक-एक पत्थर मूर्ति का पत्थर है। मुझसे यह सहन नहीं हुआ। मैं आगे बढ़ ही नहीं सका और मुझे वापस ले चलने को उन्हें कहा। और मैं वापस आ गया। पीछे इस्लाम के बारे में बातें होती रहीं। बापू जानते हैं कि मुसलमानों ने कितने अत्याचार किये हैं, फिर भी मुसलमानों के प्रति वे इतनी उदारता और इतना प्रेम बरतते हैं। मुसलमान उन्हें गाली देते हैं तो भी उनकी खातिर वे हिंदुओं से लड़ते हैं। यह चकित कर देने वाली चीज है। उनकी अहिंसा की कसौटी है।

महादेवभाई ने मेरी भजनावली में कुछ भजन लिख दिये थे उनमें से एक था: "जावे कि हो दिन आमार, विफले चालिये।" आज वह मेरे कान में गूंज रहा था। मन में उठ रहा था, "क्या है हमारा जीवन!"

१९ सितंबर '४२

सुबह घूमते समय बापू फिर परसों वाली घटना की बात करने लगे। पोलक की बात बताने लगे, "वह बहुत जल्दी चिढ़ जाता था। वह और श्रीमती पोलक पहले मित्र थे। इथीकल सोसाइटी (Ethical Society) के सदस्य बने, वहां से मित्रता शुरू हुई, आखिर मैंने उनकी शादी कराई।

वे सोचते थे कि कुछ पैसे हो जायं तब शादी करें। मगर मैंने कहा, "यह निकम्मी बात है, और पैसे की जरूरत हो तो मैं भी तो तुम्हारे पास पड़ा हूं न!" इसी तरह बापू ने अपनी टाइपिस्ट, मिस डिक की, जो स्कॉच थी, शादी मि० मैक्डोनाल्ड से कराई थी। इसी प्रकार बापू ने मि० वेस्ट की भी शादी करवाई थी। बापू बताने लगे, "पोलक का यह प्रेम-संबंध था। मगर वह कई बार अपना संतुलन खो बैठता था। वैसे तो श्रीमती पोलक दो की चार सुनाने वाली थी, मगर जब पोलक गुस्से में होता था तो उससे बड़े प्रेम से पेश आती थी। कहती, "तुम्हें हुआ क्या है?" और हँस देती थी। मैं कहा करता था कि यह क्या बात है कि पहले तो तुम इतने मित्र थे, और अब शादी हो गई है तो क्या लड़ना ही चाहिए? जैसे मैंने तुम्हारी शादी कराई है वैसे ही तलाक भी करवाना होगा क्या? श्रीमती पोलक की कार्य-कुशलता का नतीजा यह है कि वे आज एक दूसरे को पूजते हैं और मुझे छोड़ दिया है। ऐसा कइयों का हुआ है। कैलेन बैक मुझे कहा करता था, तुम इतनी तेजी से आगे बढ़ रहे हो कि आखिर तुम्हें सब छोड़ देंगे, वे तुम्हारे साथ आगे बढ़ नहीं सकेंगे। मैंने कहा कि तुम भी छोड़ दोगे? तो कहने लगा, "मैं कैसे छोड़ सकता हूं। हम तो एक जान दो शरीर जैसे हैं, और मैंने तुमको अपनी गरज के लिए ढूंढ़ा है, तुमने मुझे नहीं ढूंढ़ा। मैं तो तुम्हें कभी नहीं छोड़ सकता।" मगर अब तो वह भी छूट गया है। उसके विचार भी मुझसे अलग पड़ गए हैं। यहूदियों के बारे में उसका इतना पक्षपात है कि क्या कहना! वह मानता है कि जर्मनी यहूदियों का दुश्मन है और जर्मनी से लड़ने वाले अंग्रेजों के साथ मैं लड़ रहा हूं। उसका वह समर्थन नहीं कर पाया। जब वह यहां आया था तब मैंने उसे बहुत समझाया था कि क्यों मैंने यहूदियों को हिंसा से भरे हुए कहा है। आज तो वे हिंसा को ही अपने हृदय में पोषण दे रहे हैं। मन में हिंसा रहे तो बाहर की अहिंसा का कोई अर्थ नहीं रहता। वह मेरी बात कुछ समझा भी सही। मैंने उसे इस आशय का एक खुला पत्र यहूदियों को लिखने को कहा था। उसने लिखा भी, मगर उसे ऐसा लगता था कि इस बारे में उसकी कौन सुनेगा। इसलिए अखबारों में भेजा नहीं। मैंने कहा, "भले न सुने, तुम

तुम अपना धर्म पूरा करो। भले ही फिलस्तीन में जाकर लड़ो और मर जाओ, यह मैं सहन करूंगा, मगर आज जैसे यहूदियों का चल रहा है वह असह्य है। हृदय में हिंसा है तो वाहर इससे उल्टा वताने में कोई अर्थ नहीं।"

मैंने कहा, "आप ठीक कहते हैं, ऐसी चीजों से परेशान नहीं होना चाहिए, यह मैं समझती हूं। मगर कई वातें हमारी वुद्धि स्वीकार करती है, तो भी कसौटी का मौका आता है तव फिसल जाते हैं।" वापू वोले, "वह तो अभ्यास से होता है। और 'अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि, मत्कर्मपरमोऽभव।"

मैंने कहा, "सो तो ठीक है मगर जव-जव फिसलते हैं तो निराशा तो होती ही है। और आपको भी होती ही होगी।" वे कहने लगे, "मुझे क्या निराशा होगी, मैं तो किसी चीज की आशा ही नहीं करता तो पीछे निराशा कैसे!" मैंने कहा, "वह और भी अधिक दुःख की बात है, मगर मैं अव ऐसी चीजों से परेशान नहीं होऊंगी, ऐसी आशा तो है।" कहने लगे, "हां, 'आशा तो है' इतना कहना पड़ता है। ठीक है, कहना कम करना अधिक, यही अच्छा है।"

दोपहर बापू बा से कह रहे थे, "तू मुझे अपनी मालिश करने दे। मैं सुशीला से अच्छी कर सकता हूं। इसका धंधा कहां मालिश करने का है! वह तो डॉक्टर है। हुक्म कर देती है कि इस मरीज को मालिश हो। इसको यह करो, उसको वह करो। यहां पर मालिश भी करे, सब्जी भी काटे, डॉक्टरी भी करे, कपड़ा भी धोये!" मैंने कहा, "इस लंवी-चौड़ी बात का अर्थ तो इतना ही है न कि आप मुझसे अच्छी मालिश जानते हैं। हम सब आपका यह दावा स्वीकार करते हैं।" बापू हँसने लगे। बोले, "मतलब यह है कि बा मुझे अपनी मालिश करने दे।" फिर दक्षिण अफ्रीका की बात वताते रहे कि कैसे १४ दिन के उपवास के वाद उन्हें स्मट्स ने बुलवाया था। चलकर गये और रास्ते में टांगों में इतना दर्द हुआ कि चिल्ला उठे। बा भी उनके साथ थीं। वे वीमार थीं, मगर तो भी पीछे रहने से ना करती थीं। कहने लगे, "तब मैं बा की सब सेवा किया करता था, मालिश भी करता था।"

शाम को महादेवभाई के समाधि-स्थल से लौट रहे थे तब बापू कहने लगे, "यहां आ जाना मेरे लिए बहुत शांतिदायक है और उससे जो प्रेरणा मुझे लेनी होती है मैं ले लेता हूं।" मैंने कहा, "अब आप महादेवभाई से प्रेरणा लेते हैं, कभी वे आपसे लेते थे!" कहने लगे, "क्यों नहीं, प्रेरणा तो एक बच्चे से भी ले सकते हैं, और बच्चा चला जाता है, तो भी क्या? उसका स्मरण तो २४ घंटे चलता ही है। जो राजाजी ने कहा है वह बिलकुल सही है। महादेव मेरा अतिरिक्त शरीर (Spare Body) था। कितनी दफा मैंने उसे मैक्सवेल के पास भेजा है, दूसरों के पास भेजा है। मान लेता था कि महादेव को काम सौंपा है तो वह कर लेगा।" पीछे कोटमैन (Mr. Coatman) के भाषण के विषय में बात करने लगे। कहने लगे, "पहले क्रिप्स बोला, फिर राइसमन और अब कोटमैन। एक-दो रोज में हैलीफैक्स भी ऐसी बात निकाले तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। ऐसा लगता है कि ये लोग मुझे बदनाम करने के लिए एक गंदा जाल रच रहे हैं। लुई फिशर अमेरिका में मेरे पक्ष की बात कर रहा होगा। उसको धो डालने के लिए भी यह सब प्रकार इन लोगों को करना चाहिए न? इन्हें झूठ से कहां परहेज है? इनका काम तो चलता है, धोखेबाजी, पशुबल, झूठ और चापलूसी (Fraud, Force, Falsehood and Flattery) से। कोई और ऐब हो तो वह भी लगा दो। मैं किस-किस को जवाब दूं? जो बातें मैंने खुली तरह से कही हैं उन्हें ऐसा रूप दिया जाता है, मानो मैंने कोई खुफिया साजिश रची हो। उसका मैं क्या करूं? मगर ईश्वर है न, वह तो सच्ची बात जानता ही है!" मेरे मुंह से निकल गया, "मगर अभी तो ईश्वर भी हमारे ही विरुद्ध गया न? देखिये, कैसे महादेवभाई को ले गया।" बापू बोले, "यह तेरी अश्रद्धा बुलवाती है। वह अपना काम पूरा कर गया। बुद्धिवाद से तू कह सकती है कि वह २५ वर्ष और जिंदा रहता तो ईश्वर का क्या जाने वाला था, हमें तो फायदा होता ही। मगर श्रद्धा से देखो तो हम कहां ईश्वर की सब कृतियों को समझते हैं! महादेव ने अपना डेस्क हमेशा साफ रखा, सो उसने अपना जीवन-कार्य पूरा किया। आगे चलकर वह क्या कर पाता या न कर पाता वह हम क्या जानें!" मैंने

पूछा, "वापू ! आपको इतनी चोट किसी और की मृत्यु से नहीं लगी होगी।" वोले, "नहीं, मगनलाल, जमनालाल, महादेव तीनों अपनी-अपनी जगह स्तंभ थे। अद्वितीय थे। लेकिन और किसीको मैं अपना दूसरा शरीर नहीं कह सकता, मगर उससे भी तो ज्यादा महत्त्व की चीजें दूसरी हो सकती हैं। जो मगनलाल कर सकता था और उसने किया, वह महादेव कभी नहीं कर सकता था। महादेव कितना उसकी मृत्यु पर रोया है। जो महादेव कर सकता था वह जमनालाल नहीं, मगनलाल नहीं। जो जमनालाल कर सकता था, महादेव या मगनलाल नहीं। तीनों के जाने से जो जगह खाली हुई वह भर नहीं पाई।"

वापू प्रार्थना से पहले और पीछे रामायण का अर्थ करते रहे, बा के लिए चुनी हुई चौपाइयों का गुजराती अनुवाद भाई से करवाते हैं। फिर उसे खुद सुधारते हैं। उसको दुरुस्त करने में आज वहुत समय गया।

दोपहर बंवई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी को वापू ने पत्र लिखा। उसमें पूछा कि महादेवभाई की मृत्यु के वारे में वापू का तार पत्र क्यों वनाया गया था ? इतनी देर से क्यों दिया गया, और इसके लिए खेद प्रकाश तक नहीं किया, यह कैसी बात ? जेल से पत्र लिखने के वारे में वापू ने सरकार को जो पत्र लिखा था, उसका सरकार ने उत्तर नहीं दिया। यह शिकायत भी इस पत्र में की।

रात बापू थके थे। खून का दवाव २००/११२/११६ था। चिंता हुई। रात वे सोये भी अच्छी तरह नहीं। विचार चल रहे थे।

आज महादेवभाई को गये पांच हफ्ते पूरे हुए। समाधि पर के सारे फूल वदले, नया ॐ बनाया (रोज मुरझाए हुए फूल ही वदलते थे), लाल देहलिया (Dahlia) के फूलों का स्वस्तिक वनाया। मन में आया, महादेव-भाई यह देख सकें तो कितने खुश हों ! मगर प्राणी कहां जाता है यह कौन जानता है !

सरोजिनी नायडू भी आज समाधि-स्थान पर आईं। शनिवार को वे आती हैं। बा भी आना चाहती थीं, मगर उन्हें चलने की इजाजत नहीं।

"अगले शनिवार को सही," इतना कहकर वैठ गईं। दोपहर बा कुछ निराश थीं। बाहर जायंगे तो क्या करेंगे, यह बात चलती थी। एकाएक बोलीं, "मेरा तो पता नहीं कि जाऊंगी या नहीं। मैं तो अव हूं और शाम को नहीं, ऐसा हो सकता है।"

बापू बोले, "ऐसा तो सबके लिए कहा जा सकता है। यह सुशीला अभी एम० डी० होकर आई है, तो भी हो सकता है कि अब है और शाम को नहीं। महादेव का ऐसे ही हुआ न! तू और मैं जो बीमार पड़े हैं, वैठे रहे। तुझे तो अच्छी होना ही है। जो चाहिए सो सेवा ले। चिंता न कर।"

२० सितंबर '४२

बापू का खून का दबाव सवेरे उतर गया, १६०/१०० था, दोपहर को १४६/९२ हो गया। घूमते वक्त बताते रहे कि रात उनके मन में क्या विचार चलते थे। बाद में सूरदास और तुलसीदास की बातें करते रहे।

रामायण के एक-एक शब्द के अर्थ पर बापू किसी समय दस मिनट लगा देते हैं। कह रहे थे, "मैं ऊपर-ऊपर से कोई काम कर ही नहीं सकता।" यह बापू की विशेषता है। प्रतिभाशाली व्यक्ति (Genius) की व्याख्या की बात होने पर एक दिन मैंने कहा, "मेरा चित्रकला का शिक्षक कहा करता था कि जीनियस (प्रतिभाशाली) वह है जो कभी एक ही गलती दोबारा नहीं करता।"[१] बापू कहने लगे, "नहीं, प्रतिभाशाली की सच्ची व्याख्या है बारीक-से-बारीक विगत में उतरने की अपार शक्ति।"[२]

शाम को घूमते समय फिर कल की बात निकली।...के भाषण से बापू को भारी आघात पहुंचा है। दोपहर सरकार को पत्र लिखना शुरू किया था कि उनके लिए बापू के तथा कांग्रेस के सामने इतना झूठ चलाना ठीक नहीं है। मगर पीछे...के भाषण की बात सुनी तो कहने लगे, "...ऐसा कह सकता है तो और किसीको मैं क्या कहूं? अंग्रेजों के दोष

---

१. "Genius is one who does not commit the same mistake twice."

२. "Infinite capacity to go into the minutest detail."

इससे धुल जाते हैं।...का और मेरा कितना संबंध रहा। वाइसराय को मैंने ही कहा था...को अपनी कौंसिल में बुलाओ, वह बुद्धिशाली है, मेहनती है, विश्वासपात्र है। आज मैं कहूं कि वह झूठ बोलता है तो वाइसराय कहेगा कि तेरे पक्ष की बात कहे तो वह भला, नहीं तो बुरा। मैं अपनों के बारे में कुछ कह ही नहीं सकता। मैंने कभी ऐसा किया ही नहीं है। अम्बेडकर साहब से तो दूसरी आशा ही नहीं थी। वह मेरा हमेशा विरोधी रहा है। वह मुझे मार भी डाले तो मुझे अफ़सोस न होगा। फीरोजखां नून तो गाली ही दे सकता है। ये सब मेरे विरुद्ध भले कुछ कहें। मगर...ऐसे कहे वह तो ऐसा हुआ कि राजाजी मेरे विरुद्ध इस तरह कहें तो उसे मैं क्या उत्तर दूं?...मेरा मित्र रहा। उसे एक बार सत्याग्रह में मैंने डिक्टेटर भी बनाया था, मगर सरकार के घर बैठकर लोग पुरानी बातें भूल जाते हैं। सो सरकार को अब कुछ लिखने के लिए मेरी कलम नहीं चलती।" अतः बापू ने वह पत्र लिखना छोड़ दिया।

शाम को बापू ने ७-३५ पर मौन लिया, खून का दबाव आज फिर बढ़ा—१९६/११२ था।

२१ सितंबर '४२

आज बापू का मौन था। दोपहर भारत-सरकार के गृह-मंत्री को उन्होंने पत्र लिखा। जो झूठ चल रहा है उसका प्रतिवाद किया था। उन्होंने यह भी लिखा कि देश में जितनी बर्बादी हुई है उस सबकी जिम्मेदार सरकार है। वह कांग्रेस के लीडरों को इस तरह न पकड़ती तो कुछ भी हानि होनेवाली नहीं थी। सरोजिनी नायडू की सूचना थी कि इस सब झूठ का विरोध करने की जरूरत नहीं, यह आपकी शान के खिलाफ है।

रात फिर बापू का खून का दबाव बहुत ज्यादा था—२०८/१२६। महादेवभाई का वाक्य याद आ रहा था, "बापू तो ज्वालामुखी हैं। कब वह भड़क उठेगा, कहा नहीं जा सकता।"

२२ सितंबर '४२

आज सवेरे गीता-पाठ करते-करते मैं कई जगह अटकी। बापू ने भाई को कल से गीता का क्रम चलाने को कहा।

प्रार्थना के बाद बा के सिर में दर्द था, बापू खुद दवाने लगे। पांच-सात मिनट तक दबाया। जिनको मैं पत्र लिखना चाहूं उन रिश्तेदारों की मि० कटेली ने सूची मुझसे मांगी थी। शाम को मुझे बापू ने बताया कि उन्हें क्या उत्तर देना चाहिए।

बापू का सरकार के नाम नया पत्र अभी गया नहीं। बापू ने खुद पत्र लिखने इत्यादि के बारे में जो पत्र बंबई सरकार को २७ अगस्त, १९४२ को लिखा था उसका उत्तर अभी तक नहीं आया। मि० कटेली ने उसके लिए फिर से याद दिलाया था। आज उत्तर आया कि सरकार बापू के पत्र का उत्तर नहीं देगी, ऐसी बात नहीं, मगर अभी समय लगेगा।

आज बापू का खून का दबाव कुछ कम रहा—१८०/१०६। रोटी-मक्खन आज बंद किया।

२३ सितंबर '४२

दोपहर भारत सरकार के मंत्री को बापू का पत्र गया। मैंने नकल की, उसमें थोड़ी गलती हो गई थी। बापू नकल भेजना चाहते थे। कहने लगे, "इससे तू सीखेगी और आगे के लिए होशियार हो जावेगी।" मगर मुझे वह ठीक न लगा। मेरे बहुत कहने पर दूसरी नकल करने दी।

मैंने 'इंडियन मेडीकल गजेट' के संपादक को पत्र लिखा। मि० कटेली को, अपने घरवालों को पत्र लिखने के बारे में जवाब दिया। बापू ने मसविदा बना दिया था। मैं उसकी नकल कर रही थी। इतने में मीराबहन आईं और कहने लगीं, "ऐसा करने का कोई अर्थ नहीं है। बापू का मामला अलग प्रकार का है। वे इस तरह किसी को भी पत्र लिखने से इंकार कर सकते हैं। मगर हम उस श्रेणी के नहीं हैं।" मैंने कहा, "बापू को मेरा यही जवाब देना ठीक लगता है।" शाम को बा कहने लगीं, "तुम माताजी को क्यों नहीं लिखती हो? बापूजी कहते हैं कि उन्होंने उन दोनों भाई-बहन को घर लिखने को कहा है।" मैंने समझाया कि बापू न लिखें तो हम कैसे लिखें! सरकार बापू को उनकी शर्त पर पत्र लिखने नहीं देती, उस पर हम अपनी नाराजगी केवल इसी तरह बता सकते हैं कि हम भी न लिखें। बापू को यही ठीक लगता है।

भाई ने भी कटेली को उत्तर दिया कि सरकार की शर्त पर वह पत्र नहीं लिख सकते। उनके लिए अपने घरवाले ही केवल कुटुंबजन नहीं हैं, इत्यादि।

हम लोगों ने जवाब लिखा। उसके बाद बापू के पत्र के उत्तर में सरकार का पत्र आया कि वे सेवाग्राम में किस-किस को लिखना चाहते हैं, उनकी सूची दें। मगर वे घरेलू मामलों के बारे में ही लिख सकते हैं। सरोजिनी नायडू, मीराबहन वगैरा को मैंने यह पत्र दिखाया तो सब उत्सुकता से पूछने लगीं, "अब क्या वे लिखेंगे ?" मैंने कहा, "नहीं, मुझे नहीं लगता कि वे इस शर्त पर लिखें।"

दोपहर घर से पत्र मिले। बहुत अच्छा लगा। यहां पर एक पत्र मिल जाय तो मानो बड़ी बात हो गई। माताजी का मिले तो बस खुशी का कहना क्या? उन्हें हमारे पत्र न मिलने से आघात पहुंचता होगा, इस विचार से मन में दुःख होता है। बा कहने लगीं, "एक बार तो लिखो, फिर न लिखना। बूढ़ी मां को लिखना ही चाहिए।" मैंने कहा, "बा, ऐसे नहीं लिखा जा सकता। मां को न लिखने की इच्छा का संयम आसान बात नहीं। मगर तय किया है कि नहीं लिखना तो नहीं ही लिखना।

२४ सितंबर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से पूछा, "मीराबहन वगैरा को मेरा घर पत्र न लिखना एक हास्यास्पद चीज लगती है। शायद ऐसा भी लगे कि मैंने अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए ऐसा किया है। बा भी रात को कहती थीं कि घर पर पत्र क्यों नहीं लिखतीं। मैंने तो ऐसी किसी भावना से न लिखने का सोचा नहीं। आपको मेरा न लिखना ही ठीक लगा, सो न लिखने का निर्णय किया। मगर बा के कहने से मैं ऐसा समझी कि आप चाहते हैं कि मैं लिखूं।" इस पर बापू ने कहा, "मैं नहीं चाहता कि मेरे कहने के कारण तुम न लिखो। मगर तुम मुझसे पूछो कि मुनासिब क्या है तो मैंने बताया कि तुम्हें नहीं लिखना चाहिए। तुम्हें यहां पर अकेले थोड़े रखनेवाले थे। यहां रखा तो मेरे कारण। तो तुमको लगना चाहिए कि जब मेरा स्थान ही बापू के कारण से है तो जो हक बापू नहीं लेते उसे

मैं कैसे ले सकती हूं। सरोजिनी नायडू पर वह चीज लागू नहीं होती। वह कोई आश्रमवासी तो है नहीं; बहुत चीजों में मेरा विरोध भी कर लेती है। मैं तो गुणों को ही देखता हूं। मैं खुद कहां दोषरहित हूं कि किसी के दोष देखूं! वह तो अपना स्वतंत्र स्थान रखती है। उसने अपना मार्ग निकाल लिया है। मीरावहन तो आश्रमवासी रही। घर-बार, माता-पिता का त्याग करके आई। उसको तो जो चीज प्यारेलाल को लागू होती है उससे भी ज्यादा लागू होती है। वह यद्यपि अपने को मेरी लड़की कहती है, मगर उसका भी तो अपना स्वतंत्र स्थान बन गया है। अपने आप उसको लगता कि उसे नहीं लिखना चाहिए तो अलग बात थी। तुमने मुझसे पूछा तो मैंने तुम्हें तुम्हारा धर्म बताया। पहले तो मैंने तुमसे यही कहा कि मेरे सरकार को लिखे पत्र का उत्तर आ जाने दो। बाद में यह सूत्र बताया कि बापू न लिख सके तो तुम भी नहीं लिख सकतीं। अगर तुम उसे समझ गई हो तो तुम्हें अपने आप ऐसा लगना चाहिए कि मैं नहीं लिख सकती। फिर किसी की हँसी की परवाह नहीं होनी चाहिए, नहीं तो बूढ़े, उसके लड़के और गधे की ईसप-वार्तावाला हाल होगा। तुम्हारे मन में इस बारे में अगर शंका है तो मैं कहता हूं कि लिखो। कटेली को कल जो लिखा है वह वापस लिया जा सकता है। मगर मेरा कहना दिल में बैठ गया हो कि बापू न लिखे तो मैं भी नहीं लिख सकती, तो फिर शंका का स्थान नहीं रहना चाहिए। जब मैंने यह पोशाक अख्तियार की तब मुझे तो हँसी का काफी डर था। खास करके मुसलमानों से, क्योंकि उनके धर्म में यह है कि शरीर टखनों तक ढका होना चाहिए। मैं मद्रास जा रहा था, रास्ते में मौलाना मुहम्मदअली को सरकार ने पकड़ लिया। बेगम मुहम्मद-अली मेरे साथ थीं और बुरका ओढ़े थीं। वह मद्रास तक मेरे साथ आईं। मुसलमानों को यह पसंद नहीं आया कि वह मेरे साथ इस तरह घूमें। सो मद्रास से वे अलग हुईं। वहां सभा में जो लोग आये सब विदेशी कपड़े पहने हुए थे। मुझे दुःख हुआ। मैं क्या करूं? लोगों ने कहा, खादी मिलती नहीं। सो मैंने सोचा कम-से-कम कपड़े से कैसे काम चला सकते हैं। यह मैं ही करके दिखाऊं। उमर सोबानी से सलाह की और नयी

पोशाक धारण करने के बारे में उन्हें विचार करने को कहा, खासकर मुसलमान के नुक्तेनिगाह से। उन्होंने मेरा विचार पसंद किया और खुद लुंगी पहननी शुरू की। मैंने एक बार जब नयी पोशाक पहनने का निश्चय किया तो फिर किसी की हँसी-मजाक की परवाह नहीं की। विचार किया, और उसे अमल में रखा। यानी न ी पोशाक धारण कर ली। उसमें तीनेक महीने लग गये होंगे। उससे पहले तो मैं काफी कपड़े पहनता था।"

मैंने कहा—जी हां, महादेवभाई बताया करते थे कि कैसे वे आपका खाना पकाते थे, आपको खिलाते थे और सब बड़े-बड़े कपड़े भी धोते थे। बापू हँसने लगे, "हां, तब कपड़े धोना सचमुच बड़ा काम था। अब तू जो धोती है वह तो खेल है। और इस सारे काम के साथ महादेव को लिखना-पढ़ना, 'यंग इंडिया' का काम करना, लोगों से मिलना वगैरा यह सब करना होता था। उसके पास एक मिनट की फुरसत नहीं रहती थी।" मैंने कहा, "तब आप साथियों के आराम के बारे में इतना आग्रह भी नहीं रखते थे। आज तो हम लोगों को समय पर सोना, आराम करना, खाना यह सब आपके ध्यान में रहता है और उस पर आपका जोर का आग्रह रहता है। आपकी अपनी शारीरिक शक्ति कम हो गई है। इसलिए दूसरों में भी आप कम शक्ति का अनुमान करते हैं।" बापू बोले, "यह ठीक है, इसीलिए मैंने कहा है कि अब मैं आश्रम चलाने के लायक नहीं रहा हूं। मैं तो अपने गज से ही सबका माप निकालूंगा न! मैं प्रार्थना सोते-सोते कर लेता हूं। सब ऐसा करने लगें तो कैसा दृश्य बन जाय? मगर लोग मुझे नहीं छोड़ते हैं तो चलाता हूं। जितना कर सकता हूं, करता हूं।"

सरोजिनी नायडू की बात करते-करते गोखले की बात बताने लगे। गोखले का उनके बारे में मत बताने लगे। कहने लगे, "मैं तुझसे बहुत-सी बातें कर लेता हूं जो किसीसे नहीं करता। करने की हैं भी नहीं। ऐसे ही गोखले मेरे साथ सब बातें कर लिया करते थे। उनके मित्र तो बहुत थे, मगर ऐसा कोई नहीं था कि जिसके सामने निःसंकोच अपने मन की सारी बातें वे कह सकें। मुझे उन्होंने विश्वासपात्र समझा और एकाएक आदमी का पृथक्करण करके बता दिया।"

कुछ देर बाद बोले, "आज तेरा गीता का पाठ नहीं हो सका, मगर यह भी तो गीता ही है न। मैं जो बातें कर लेता हूं, वे निकम्मी तो होती ही नहीं। उनमें से जो कुछ ले सकती हो ले लेना।"

मुझे बाइबिल का वाक्य याद आया—"कानोंवाले सुनें, आंखोंवाले देखें।"[१] बापू के पास तो ज्ञान का सागर पड़ा है। जितनी जिस इंसान की शक्ति है, उतना सीख सकता है। उस सागर में से हरेक अपना प्याला भर सकता है, किसीका प्याला छोटा हो, या टूटा हुआ हो तो उसमें बापू क्या करें!

२५ सितंबर '४२

आज बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर लिखा। इसलिए इमला नहीं लिख सके। सुबह कलेक्टर और डॉ० शाह आये। शाह पहले आये। बापू का खून का दबाव बढ़ा और यह सुनकर बापू से कहने लगे, "मि० गांधी, मैं समझता था कि आप तो बड़े तत्त्वज्ञानी हैं। जिन चीजों के बारे में आप कुछ कर नहीं सकते, उनकी चिंता क्यों?"[२]

कलेक्टर सबको पूछ जाता है, "कोई खास बात तो नहीं है?" जब वे लोग आये तब भाई वहां न थे। इनके मिलने के लिए भाई की खोज होने लगी मगर वे मिले ही नहीं। बापू ने बाद में कहा, "जब ये लोग आते हैं तब हम सबको एक जगह रहना चाहिए, ताकि उन्हें हमें खोजने को तकलीफ न उठानी पड़े। हमें भूलना नहीं चाहिए कि हम कैदी हैं।"

आज सुबह बापू छः बजे उठे। मैं तो चार बजे प्रार्थना के समय

---

१. "Those that have ears let them hear, those that have eyes let them see."

२. "Mr. Gandhi, I thought you were a great philosopher. You must not worry about things you can do nothing about?"

जाग उठी थी। मगर वक्त का पता नहीं था। सबको सोता देखकर पड़ी रही। पीछे सो गई। बापू जब उठे और सुना कि मैं प्रार्थना के समय जाग गई थी, मगर वक्त का पता न होने से पड़ी रही तो नाराज हो गए, "क्यों पड़ी रही थी? यह कोई बात है! नींद खुल जाय तो उठना ही चाहिए।" अपने आप पर भी वे बहुत नाराज होने लगे कि क्यों प्रार्थना के समय वे उठ नहीं सके। नाश्ते में दूध नहीं लिया। खाली फल का रस लिया।

बा को आज मैंने शहद में विटामिन की गोली दी। बापू ने कल कहा था कि शहद में मिलाकर देना। मैं समझी स्वाद खराब न लगे, इसलिए शहद में देने को कहा होगा। मगर बापू चाहते थे कि बा को पता ही न चले ऐसी तरह देना है। घूमते समय इसी बारे में बात करते रहे।

शाम को घूमते समय मैंने १६, १७, १८ अध्याय गीता के जबानी सुनाये। मैंने बापू से कहा, "महादेवभाई बताते थे कि एक बार जेल में वे आपसे अलग रखे गए थे। तब वे रोज घूमते-घूमते सारी गीता का पारायण किया करते थे। करीब डेढ़ घंटा लग जाता था। ऐसा करते-करते उन्हें गीता याद हो गई थी। उन्होंने तय किया था कि जबतक आप से अलग रहेंगे तबतक रोज गीता का पारायण करेंगे।" बापू ठंडी सांस लेकर बोले, "हां, उसने मुझे यह सब बताया था और अब हमेशा के लिए अलग हो गया।"

२६ सितंबर '४२

आज शनिवार था। महादेवभाई को गये छः हफ्तेपूरे हुए। उनकी समाधि पर सब गये, फूल सजाये। उसमें आधा घंटा लगा। घूमते समय गीता-पाठ किया। बापू थके-से लगते थे। गरमी काफी बढ़ गई है, यही कारण होगा। खून का दबाव ठीक था, मगर खून के दबाव के कम हो जाने से भी तो थकान होती है न।

आज सरोजिनी नायडू का जन्म-दिन है। उसके लिए उन्होंने शाम को आइसक्रीम बनवाई थी। दोपहर के खाने के समय बापू के लिए सलाद

अच्छी तरह सजाई। नास्टर्शम[1] के पत्ते और फूल, बीच में टमाटर मूली, खीरे के टुकड़े बहुत सुंदर दीखते थे। बापू को भी आइसक्रीम खिलाई। बकरी के दूध की बनाई गई थी। कल मुझसे गाजर का हलवा बनवाया था, रामनाथ (रसोइया) ने बालाई बनाई। वह हलवे पर लगाई गई। मटर का पुलाव बना; भाई ने जिंजर केक और कढ़ी बनाई। कटेली साहब ने सूरती मिठाई का पार्सल मंगवाया था। मीराबहन ने कमरे में नये फूल सजाये। बिजली के चूल्हे तक के चारों ओर फूल रखे गए। सरोजिनी नायडू खूब उत्साह में थीं। ठाटबाट से तैयारी की गई थी। इस कारण खाना आधा घंटा देरी से परोसा गया। वे बहुत खुश थीं। उनका एक गुण है कि जो भी लोग कुछ काम करें उनकी तारीफ करना, सबको रिझाकर काम करवाना। दोपहर को सब कैदियों को, जो वहां काम करने आया करते थे, और सिपाहियों को चिवड़ा और केले बांटे। उन्हें बहुत अच्छा लगा। बापू से बातें करते समय कहने लगीं, "सचमुच समझ में नहीं आता, माताएं ऐसी पगली क्यों होती हैं!"[2]

शाम को घूमते समय अंग्रेजी न जानने वालों की बातें चलीं। चर्चा मीराबहन ने चलाई थी। मैंने कहा, "जमनालालजी भी तो अंग्रेजी नहीं जानते थे, मगर वह अपना काम खासा चला लेते थे।" बापू कहने लगे, "मगर जमनालाल अंग्रेजी की बातें सब समझ लेता था। अंग्रेजी में प्रस्ताव वगैरा आते थे, उनमें वह एक भी चीज छोड़ता नहीं था। व्याकरण नहीं जानता था, मगर शब्दों का उपयोग ठीक जानता था। इसलिए अपने भाषणों वगैरा का तर्जुमा दुरुस्त किया करता था। उसके जैसा बारीकी से हरेक चीज को पकड़नेवाला आदमी भाग्य से ही कहीं मिलता है। जमनालाल किसी चीज को वर्किंग कमेटी में छोड़ता नहीं था। वह

---

१. एक प्रकार का पौधा जिसके फूल और पत्ते का स्वाद राई की तरह तीखा और चरपरा होता है।

२. "Really I don't know why mothers are so silly."

बुद्धिशाली था और व्यवहार-कुशल भी। वह अपनी जगह पर अद्वितीय था।"

रात को मैं और भाई महादेवभाई की बातें करते-करते ११ बजे तक बैठे रहे। जीवित के हम गुण और दोष देखते हैं। कई बार दोषों को देखकर गुणों को भूल भी जाते हैं। मगर मृत के दोष अपने आप लोप हो जाते हैं। गुण-ही-गुण स्मृति में रह जाते हैं। महादेवभाई का चित्र आज हमारे सामने तो एक आदर्श और संपूर्ण जीवन का चित्र है। उसमें कोई कमी दिखाई नहीं देती।

: १७ :

घूमते-फिरते सामान्य शिक्षण

२७ सितंबर '४२

घूमते समय मेरे हाथ में अक्सर कैंची रहती है। फूल काटने के लिए रखती हूं। बापू कहा करते हैं कि कैंची से ही फूल काटने चाहिए, मरोड़कर फूल तोड़ने में हिंसा और जंगलीपन है। घूमकर लौटने पर उसे अपने ठिकाने रख देती हूं। कई दफा हाथ के नाखून उससे काटने लगती हूं। आज बापू कहने लगे, "यह या तो व्यर्थ ही हरकतें हैं, या तुझे सचमुच ही नख काटने की जरूरत है?" मुझे कहना पड़ा कि जरूरत तो नहीं थी। बापू बोले, "तो इसको मैं सहन नहीं करूंगा।" मैंने नाखून काटना बंद कर दिया। एक-दो चक्कर लगाये कि फिर यंत्रवत मेरा नख काटना शुरू हो गया। तुरंत मुझे स्मरण हुआ कि बापू ने मना किया है। बंद किया, मगर बापू ने काटते देख लिया था। कहने लगे, "मेरी आंख बहुत-सी चीजें देख लेती है, मगर मैं हमेशा टोकता नहीं हूं। अगर ऐसा करूं तो तेरा और मेरा दोनों का खात्मा हो जाय।" मैंने कहा, "आपने जिस प्रकार आज कहा है, उस प्रकार कहें तब तो घबराहट नहीं होती, मगर जब आप चिढ़ जाते हैं तब मैं परेशान हो जाती हूं। मेरी ग्रहण-

शक्ति कुंठित हो जाती है। गुस्से में मैं कभी कुछ सीख ही नहीं सकी हूं। और हर किसीसे भी मैं नहीं सीख सकती।" बापू ने कहा, "यह तो बच्चों की-सी बात हुई। उन्हें रिझा करके सिखाना पड़ता है। तू कबतक बच्ची-सी रहेगी? कान पकड़कर तुझे क्यों नहीं बताया जा सकता? अगर तू इस चीज को अपना गुण मानती है तो यह भी तेरी भूल है। मैं चाहता हूं कि हरेक से सीखने की शक्ति रख। दत्तात्रय के २४ गुरु थे। उन्होंने पवन, पानी, वृक्ष आदि हरेक गुरु से कुछ-न-कुछ सीख लिया था।" मैंने कहा कि मैं सुधारने की कोशिश तो करती ही हूं। बापू बोले, "तभी तो मैं बताता हूं। जो बताना ही चाहिए उतना कहकर संतोष मान लेता हूं। काफी छोड़ भी देता हूं।" मैंने कहा, "आप छोड़ देते हैं, तो उससे मन में धोखा-सा पैदा होता है कि अब सीखने-जैसा कुछ रहा ही नहीं, हमने सब सुधार लिया है।" बापू बोले, "अगर ऐसा हो तो वह होने देना चाहिए। मैं अभी बाइबिल में जोब (Job) का वर्णन पढ़ रहा हूं। वह ईश्वर का परम भक्त था। ईश्वर ने शैतान को बुलाकर कहा कि तू उसकी परीक्षा कर सकता है; पर एक बात है, सब कुछ करना, मगर उसे मार न डालना। शैतान एक बार हारकर आता है। ईश्वर उसे दुबारा भेजता है। जोब को 'किस्मत से राम मिला जिसको' इस भजन में बताई तीनों जगह मिलती हैं। पीछे वह चिल्ला-चिल्लाकर ईश्वर की शिकायत करता है। लोग उसे समझाने जाते हैं तो चिढ़ता है, "मेरे पास एक वाचा रह गई है। मैं ईश्वर के पास चिल्लाकर शिकायत करता हूं तो उसमें तुम्हारा क्या जाता है?" जब जोब-जैसा भक्त भी कड़ी परीक्षा सहन नहीं कर सका तो साधारण लोगों की तो बात ही क्या है?" मैंने कहा, "मैं प्रयत्न तो करती ही रहती हूं कि मैं छुई-मुई न बनी रहूं। यद्यपि कई बार असफल हो जाती हूं, तो भी कुछ तो सुधार होगा ही। माताजी ने तो कुछ नहीं कहा, मगर कई और कहा करते हैं कि बापू के पास जाकर तुझे इतना तो फायदा हुआ है कि तेरा गुस्सा बहुत शांत हो गया है।"

बापू हँसने लगे, "तो उसका यश भी मुझे मिलता है तुझे नहीं।" फिर गंभीर हो गए और कहने लगे, "यह हम लोगों की विशेषता है।

अच्छा होता है तो यश मुझ देंगे, किंतु बुरा होता है तो दोष नहीं देंगे। अंग्रेजों का इससे उलटा है। वे अव मुझे सबसे अलग करके सारे तूफान की जड़ मुझे ही साबित करने को कोशिश कर रहे हैं। मुझे अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानते हैं।"

मैंने कहा, "वे भी एक दिन समझेंगे, इसमें शक नहीं है।"

बापू बोले, "यह तो है, मेरे जीतेजी नहीं समझे तो मेरे पीछे जोन आॅव आर्क (Joan of Arc) जैसा होनेवाला है। और मेरी मृत्यु से लोगों की शक्ति तो बढ़ने ही वाली है।"

मैंने कहा, "मानिये कि सरकार आपको मार डाले तो इससे जरूर एक शक्ति पैदा होगी, मगर आप खुद उपवास करके या स्वाभाविक मृत्यु से चले जायं तो उसमें इतनी शक्ति पैदा नहीं हो सकती।"

बापू बोले, "हां, यह मैं मानता हूं। इसीलिए तो बैठा हूं। भगवान को जो करना होगा करेगा। मेरा अध्ययन भी ऐसा बन गया है। बाइबिल है तो उसमें भी बस ईश्वर की ही महिमा भरी है। और उसमें भी मैं अब भजनों के हिस्से पर आ गया हूं। लुई फिशर की किताब[1] भी उसी तरह नियमित रूप से थोड़ी-थोड़ी रोज पढ़ता हूं और रामायण को तो मैं सर्वोपरि ग्रंथ मानता हूं।"

मैंने बीच में कहा, "आपके राम में और तुलसीदास के राम में बहुत साम्य है। राम के पास बंदर थे, आपके पास बिना हथियारवाले स्त्री-पुरुष और बालक। राम भी भक्त-वत्सल थे। जैसे वह सबके साथ मनुष्य होकर रहते थे, वैसे आप हमारे बीच रहते हैं।"

बापू बोले, "यह तो दूसरी बात हुई। रामायण की भाषा मुझे पकड़ लेती है। संगीत भी पकड़ लेता है। मैंने अपना अभ्यास ऐसी चीजों का ही रखा है। दूसरी चीजें जान-बूझकर छोड़ दी हैं, नहीं तो मैं साहित्य तो बहुत पढ़ सकता हूं। रस तो भरा ही पड़ा है। कोई रस सूखता नहीं है। मगर मैंने अपने काम की चीजें चुन ली हैं। मैं सरकार को भी आज

---

१. 'Men & Politics' by Louis Fisher.

पत्र लिखता हूं तो सिर्फ उसकी जानकारी के लिए; दलील करना मैंने छोड़ दिया है। भाषा का डंक निकल गया है। शुद्ध अहिंसा ही उसमें भरी है। मैं देखता हूं कि बाहर कुछ हिंसा भी होती है। मगर अधिकतर तो अहिंसा ही चल रही है। इसीलिए मैंने निश्चय किया है कि इस बार आंदोलन बंद नहीं करूंगा। यह आंदोलन अंग्रेजों के प्रति मेरे प्रेम का नतीजा है। मैं उसे बंद करू तो उनके प्रति और सबके प्रति अपना धर्म चूकूं।"

शाम को घूमते समय गीता का क्रम चला। ८-२० पर रात बापू ने मौन लिया।

२८ सितंबर '४२

सवेरे साढ़े तीन बजे बापू ने प्रार्थना के लिए उठाया। मैंने बापू को पीने के लिए गरम पानी दिया। फिर दतौन करने जा रही थी कि इतने में भाई अपना हजामत का सामान लेने आए और बस खड़े-के-खड़े ही रह गए। हृदय के पास जोर का दर्द हुआ। दर्द बाएं कंधे में जाता था। नब्ज धीमी थी। नागपुर जेल में भी ऐसा ही दर्द उन्हें हुआ था। मगर उसके वर्णन से मुझे ऐसा लगा कि दर्द हृदय से संबंध नहीं रखता, छाती की स्नायुओं से रखता है। मगर आज का दर्द एंजाइना पेक्टोरिस (Angina Pectoris)[1] जैसा लगा।

मैंने उन्हें लिटाया। कंबल ओढ़ाया। बा के लिए ऐसे दर्द के लिए जो दवा आई हुई थी उसका असर देखने के लिए मैंने वह उन्हें सुंघा दी। बाद में भी उन्हें छाती में कुछ खिचाव-सा लगता रहा। मगर दर्द चला गया। मैं काफी डर गई थी। मगर हृदय को मजबूत करके सब करती रही। सोचती थी, ईश्वर अब और क्या करनेवाला है।

प्रार्थना के बाद बापू फिर सो गये। सुबह घूमते समय गीता पढ़ी। भाई को बहुत कहा कि आज आराम कर लें, मगर वे नहीं माने। कहने लगे, "अब तो कुछ है ही नहीं। मैं तो भूल भी गया हूं कि कुछ हुआ था।"

---

१. हृदय का खतरनाक दर्द, जो प्रायः प्राण-घातक सिद्ध होता है।

डॉ० शाह आये। भाई से कहने लगे, "मैंने तुम्हें जवान-तंदुरुस्त आदमी समझ कर छोड़ दिया था। डॉक्टरी परीक्षा तक नहीं की थी। मगर अब तुम परेशान करने लगे हो!" उन्होंने अच्छी तरह परीक्षा की, मगर कुछ मिला नहीं।

शाम को समाधि-स्थल के लिए फूल इकट्ठे कर रही थी, इतने में बापू निकल गये। मैंने उन्हें जाते देखा नहीं। समाधि पर पहुंच कर थोड़ी देर उन्हें मेरी राह देखनी पड़ी। समाधि की दीवार सजाने के लिए भी फूल ले गई थी। मीराबहन नाराज हो गईं। बोलीं, "क्यों इतने फूल लाती हो? बापू का भी समय जाता है।" फूल सजाने की सारी खुशी मारी गई।

शाम को कुछ जकाम-सा लग रहा था। मीराबहन ने गले पर मालिश की। सोने को कुछ देर से गई। सरोजिनी नायडू से बातें हो रही थीं कि बापू के जन्म-दिन को क्या करना है।

गर्मी बहुत पड़ने लगी है। दोपहर को तो दम-सा घुटता है।

२९ सितंबर '४२

सुबह समाधिस्थान से लौट रहे थे तब धुंध थी। उसमें दूर के आधे छिपे वृक्ष देख कर भाई बोले—"यह चित्रकारी में कितना अच्छा दिखे। अब तुम फिर चित्रकारी शुरू कर दो। उससे पहले ड्राइंग अच्छी तरह सीख लेना।" मैंने कहा, "मेरे पास इतना समय कहां है?" इस पर कहने लगे कि हार मान बैठने की तेरी मनोवृत्ति बन गई है। हँसी की बात थी। इतने में हम बापू के पास पहुंच गये। मैंने उनसे कहा, "भाई कहते हैं, ड्राइंग सीखो, चित्रकला, संगीत व साइंस का गहरा ज्ञान हासिल करो, भाषाएं सीखो। मैं कहती हूं, यह सब नहीं हो सकता तो नाराज होते हैं। या तो मैं चुपचाप सुनती रहूं, उत्तर न दूं, यह समझ कर कि यह सुनने की बात है करने की नहीं, या साफ कह दूं कि आप जो कहते हैं वह मेरे-जैसा तो कर नहीं सकता, कोई विलक्षण शक्ति वाले लोग भले कर सकें।"

बापू कहने लगे, "वह जो कहना चाहता है, वह यह है कि सच्ची शिक्षा में बचपन से ही संगीत सिखाया जाना चाहिए। इससे कंठ का विकास होगा। चित्रकला, ड्राइंग इत्यादि ही से हाथ का विकास कराया जायगा,

इसका अर्थ यह नहीं कि हर कोई संगीत और चित्रकला के विशारद हो जावेंगे। मगर वे इन चीजों को समझ सकेंगे, थोड़ा-बहुत गा सकेंगे, थोड़ी-बहुत चित्रकारी कर सकेंगे। यही भाषाओं के बारे में है।" मैंने कहा, "छुटपन से सब किया हो तो अलग बात है। मगर आज मैं किस-किस चीज के पीछे भागूं?" बापू कहने लगे, "हां, आज तो तू एक ही चीज के पीछे पागल बन सकती है। वह है डॉक्टरी, जिसके पीछे इतने साल खर्च कर चुकी है।"

भाई बोले, "डॉक्टरी के बारे में भी मैं कहता हूं तो यह ऐसा ही जवाब देती है। अच्छा डॉक्टर बनने के लिए इसे रसायन-शास्त्र का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, रोग के कारण शारीरिक विकार को समझने के लिए रेडियोलॉजी (Radiology)[1] और पैथोलॉजी (Pathology)[2] का खास ज्ञान होना चाहिए। एक्सरे की मशीन में साधारण खराबी हो जाय तो उसे ठीक करना आना चाहिए या नहीं? डॉक्टर के पास समय नहीं रहता, इसलिए भले वह सब काम खुद न करे, किसी और से करवा ले, मगर उसका ज्ञान तो इतना होना ही चाहिए कि जरूरत पड़े तो सब कुछ खुद कर सके।"

मैंने कहा, "मैं तो मानती हूं कि इनमें से हर-एक चीज का पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए आजीवन मेहनत की आवश्यकता है। नहीं तो डॉक्टरी की इतनी शाखाएं बनती ही क्यों? एक आदमी सब कुछ करना चाहे तो रोगी को न्याय नहीं दे सकता। बायोकेमिस्ट्री, रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी इत्यादि की रिपोर्टों पर से निर्णय पर आने की कला तो डॉक्टर जरूर जाने, मगर हरएक शाखा का सूक्ष्म ज्ञान और उसकी कुशलता रखना मैं असंभव मानती हूं। डॉक्टर एक विषय का विशेषज्ञ हो और अन्य सब विषयों का एक सामान्य डॉक्टर के जितना ज्ञान रखे। विशेषज्ञ न हो तो काम चलाना ही पड़ता है। सेवाग्राम में मेरे पास सूक्ष्मदर्शी यंत्र है, मगर जो सब परीक्षाएं एक अच्छी खासी प्रयोगशाला में हो सकती हैं, सेवाग्राम

---

१. शरीर के भीतर के चित्र उतारने का शास्त्र।

२. रोग-निदान।

में आज नहीं हो सकतीं। अगर रोगी को न्याय देना हो, प्रत्येक वस्तु की सर्वोत्तम चिकित्सा करनी हो तो सब विशेषज्ञ मिलकर काम करें ताकि एक फीस में से मरीज को सबकी सेवाएं मिल सकें। मगर हरएक सब चीजों के विशेषज्ञ बनना चाहें तो वह कठिन काम है।"

बापू बोले, "यह सब तो हुआ, मगर मैं पूछता हूं कि क्या आज ये सब बातें अप्रस्तुत नहीं हैं? जब बाहर जायंगे तब देखा जायगा। हमारे सामने भगीरथ काम पड़ा है। हम पुरानी दुनिया में वापस नहीं जाना चाहते। या तो आजाद हिंदुस्तान में बाहर जायंगे या यहीं मर मिटेंगे, यह हमारा संकल्प है, यदि प्रभु ने उसे फलित किया तो।" मैंने कहा कि फलित क्यों नहीं करेगा? बापू बोले, "कैसे करेगा, क्यों करेगा, अगर हम जो इस भगीरथ काम के मुखिया हैं वही अपना समय फिजूल बातों में खो देते हैं। हमारा तो एक-एक क्षण, एक-एक सांस उसी काम की साधना में जाना चाहिए। हम एक-एक शब्द तौलकर बोलें, अनावश्यक बात बिलकुल न करें, तब कहीं हम अपने काम के निकट पहुंच सकते हैं। आज हमारे सामने जेल है। हम यहां अपने समय का उपयोग कैसे करें, यह सवाल है। मैं देखता हूं, यहां कितना ही समय नष्ट होता रहता है। मुझे यह चुभता है। मैंने खुद तो अपना कार्यक्रम बना लिया है। अपने-आप वह बन गया है। बाइबिल है, लुई फिशर की किताब है, उर्दू है, कुरानशरीफ है। इन सबका अभ्यास नियमित चलता है। सुशीला का भी कार्यक्रम बना है, उसे वह पूरा करे। सो आज तुरत हमारा क्या धर्म है, हमें उसीका विचार करना चाहिए।"

इसके बाद प्रसंग बदलते हुए बापू ने कहा, "मैं तेरे साथ मीराबहन की बात करना चाहता था। कल फूलों की बात पर तू इतनी घबराहट में क्यों पड़ी थी? यहां तक कहने लगी कि मैं अब फूल इकट्ठे नहीं करूंगी। ऐसा क्यों? जो हमारा धर्म है उससे क्यों चूकें? कोई भले ही कुछ कहे।" मैंने कहा, "इसमें धर्म की बात नहीं, फूल ले जाकर हम मृत की तो कोई सेवा नहीं करते; अपने संतोष के लिए ले जाते हैं। मीराबहन नाराज हुईं तो मैंने सोचा अब नहीं लाऊंगी।" बापू कहने लगे, "हां, किंतु यदि फूल

चढ़ाकर उसमें से हम कुछ प्रेरणा लेते हैं, हमारी निष्ठा को कुछ दृढ़ता मिलती है तो ठीक है। अगर ऐसा नहीं है तो यह फिजूल ही है। मगर मैं तो यह कहना चाहता हूं कि छोटी-छोटी बातों से उद्विग्न क्यों होना चाहिए और इतनी जिज्ञासा भी क्यों रखनी चाहिए कि हमारे बारे में किसी ने क्या कहा था ! हम उसी हद तक जानने की इच्छा रखें जहां तक वह हमारे आत्म-सुधार के लिए आवश्यक है, जिज्ञासा की खातिर नहीं।"

रात मेरे सिर में खूब दर्द था। मीराबहन ने प्यार से आकर सिर पर दर्द की दवा लगाई। विलायती मगनेशिया के जुलाव की एक मात्रा पिलाई, बिस्तर में सुलाकर दबाने लगीं। मैंने इंकार किया, मगर उन्होंने नहीं माना। मैंने कहा, "मीराबहन, बस कीजिए। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। इसमें मैं परेशानी महसूस करती हूं। मैंने इस किस्म की सेवा किसीसे नहीं ली।" वह बोलीं, "तब तो और भी जरूरी है कि तुम ऐसी सेवा लो।" बहुत प्यार से मुझे चादर ओढ़ाई। दो-चार मिनट छोटे बच्चों की तरह थपकी देकर कहने लगीं, "अच्छी, नन्हीं बकरी !"[१] सब हँस पड़े। मीराबहन बकरियों को इतना प्यार करती हैं कि अपनी कोमलतम भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्हें बकरियों का सहारा लेना पड़ा।

३० सितंबर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से मीराबहन की बकरीवाली बात कही। कहने लगे, "मीराबहन में एक बड़ा गुण है। उसके निकट मनुष्य, पशु, वृक्षों और फूलों में कोई फर्क नहीं है। उसे बकरियों से बातें करते तो तूने सुना होगा। फूल-पत्तों से भी वह बातें करती है। और कल रात उसने बिना किसीके कहे वह सब तेरे लिए किया।" मैंने कहा, "उसमें गुण तो भरे ही हैं, नहीं तो अपने राजा-समान पिता के घर को छोड़ कर वह यहां भागकर क्यों आतीं।" बापू बोले, "हां, यह बात तो है।"

---

१. "Nice Little goat !"

आज मैंने उपवास किया। खाली सूप पिया। शाम को अच्छा लगता था। मीराबहन पूछने आईं कि कोई सेवा या मदद चाहिए तो बताना। सरोजिनी नायडू कह रही थीं, "मीरा तुम्हारे लिए कल रात बहुत चिंतित थी। वह तुम्हें बहुत चाहती है और मुझे मालूम ही न था कि वह प्यारेलाल को भी इतना चाहती है।" मैंने उन्हें कल रात की बकरीवाली बात बताई। कहने लगीं, "बकरी के साथ उपमा देने से अधिक प्रशंसा वह किसी की और क्या करती?"

: १८ :

जेल में बापू का पहला जन्म-दिन

आज हम सबने काफी समय यह सलाह करने में खर्च किया कि बापू के जन्म-दिन को हमें क्या करना है। सरोजिनी नायडू ने बात शुरू की। पीछे सब अपने-अपने सुझाव देने लगे। रात को मैं आई तो आठ बजकर दस मिनट हो गये थे। बापू कुछ समझ गये होंगे। कहने लगे, "तुम लोग क्या हवाई महल बना रहे थे?" वे हँस रहे थे। मैंने हँसी में कहा, "बहुत अच्छी-अच्छी चीजों की बातें कर रहे थे। उनमें बाइबिल भी थी। सरोजिनी नायडू विचार कर रही हैं कि यहां जो लोग हैं उनके सामान्य ज्ञान की परीक्षा ली जाय, इसलिए पर्चा तैयार कर रही हैं। उसमें बाइबिल के उद्धरण भी आवेंगे!"

बा की रात अच्छी नहीं गई। बापू को शक था कि कुछ खाने में बदपरहेजी हुई होगी।

१ अक्तूबर '४२

कल बापू का जन्म-दिन है। बापू के घूमने जाने के बाद फूल लटकाने के लिए दीवारों में कीलें लगा दी गईं। बापू ने दोपहर को कहा, "देखो, सबसे कह दो, सजावट नहीं होनी चाहिए। सजावट हृदय के भीतर की हो।" मैंने हँस दिया। सरोजिनी नायडू ने मुझे बापू को यह संदेश देने

को कहा था कि वे कल दोपहर तीन बजे का समय खाली रखें। जब मैं यह संदेश दे रही थी तब बापू ने सजावट न करने की बात कही। फिर पूछने लगे, "तीन बजे क्या है?" भाई कहने लगे, वह तो अत्यंत गुप्त वस्तु है। सरोजिनी नायडू से मैंने बापू का सजावट न करने का संदेश कहा तो हँसने लगीं, बोलीं, "बापू हमको, खासकर मुझे, अपना दिल बहलाने से नहीं रोक सकते।"

मीराबहन ने यह सुना तो कहने लगीं, "बापू ऐसा कहते हैं तो फूल सजाने की बात छोड़ दें।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "नहीं, तुम सब दोष मुझ पर डाल देना। मुझे यह आदेश कहां दिया गया था कि जेल में भी गांधीजी के हुक्म का पालन करूं!"

बा दो-तीन दिन पहले कह रही थीं, "बापू के जन्म-दिन पर हम हमेशा गरीबों को खाना बांटते हैं। इस बार ऐसा नहीं कर सकेंगे।" मैंने कहा, "क्यों नहीं?" बा ने उत्तर दिया, "बापू कहते हैं, यह जेल है और सरकार का पैसा इस तरह खर्च नहीं किया जा सकता।" मैंने बा को बताया कि हम लोग अपने-अपने पैसों से सामान मंगवा रहे हैं, सरकार के पैसे से नहीं, और सबको बांटेंगे। बा खुश हुईं। मालिश के समय बापू की गादी के ऊपर कील ठोकने के निशान देखकर बोलीं, "यहां फूल नहीं लगाना। दरवाजे में तोरण भले बांधो। यहां यह सब ढोंग नहीं चाहिए।" सिपाही उस वक्त तो चला गया, मगर पीछे से कील लगा गया। लेडी ठाकरसी के यहां से सब्जी की टोकरी ले आया। पहले शहद आया था, फिर गुड़ भी। गुड़ की टॉफी मैंने कल ही बना ली थी। बापू से सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "बापू, कल आपको एक सभ्य मनुष्य की तरह भोजन मिलेगा।"

बापू हँस दिये। पूछा, "वह कैसे?"

श्रीमती नायडू ने उत्तर दिया, "विशेष प्रकार का सूप, फूल गोभी, रोटी, कच्ची सब्जी आदि सभी वस्तुएं बारी-बारी से और ठीक तरीके से परोसी जायंगी।" बापू हँस दिये। सरोजिनी नायडू को इंकार न कर सके।

हमारे जेल सुपरिंटेंडेंट बहुत-से फूल लाये। हम लोगों ने उनके हार बनाये। बापू के सोने के बाद बापू के दरवाजे में बैठने की जगह पर, दीवार पर, सामने अल्मारी पर, महादेवभाईवाले कमरे में और सरोजिनी नायडू के कमरे के दरवाजों पर मालाएं लटका दीं। सीढ़ियों पर मैंने और भाई ने "जीवेम शरदः शतम्" यह पूरा मंत्र सफेद रांगोली में लिखा। भाई ने पहले कोयले में लिखा। उनके अक्षर ज्यादा अच्छे हैं। मैंने उस पर रांगोली डाली। एक-एक सीढ़ी पर मन्त्र की एक-एक पंक्ति थी—

जीवेम शरदः शतम्,
पश्येम शरदः शतम्,
शृणुयाम शरदः शतम्,
प्रब्रवाम शरदः शतम्,
भूयश्च शरदः शतात्।

दूसरी तरफ सीढ़ी पर उसी तरह—'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतंगमय' यह मंत्र भाई ने लिखा। इसका आगे का मुख बाहर की ओर था और प्रथम मंत्र का भीतर की ओर। विचार था कि एक ओर से बापू को घूमने के लिए नीचे ले जावेंगे और दूसरी ओर से वापस लायेंगे ताकि एक मंत्र उतरते समय सीधा सामने हो, दूसरा चढ़ते समय। दोनों तरफ की सीढ़ियों की बीच की जगह पर रांगोली से चित्र बनाये गये थे। बरामदे में 'सुस्वागतम्' लिखा। यह सब लिखते-लिखाते मुझे रात के बारह बज गये। मुझे डर लगा और भाई भी डरे कि कहीं बापू उठ गए तो नाराज होंगे। कहने लगे, "अब जो रह गया है सो छोड़ दो, सुबह देखा जायगा।"

सुबह उठी तो देखा रांगोली खत्म हो गई थी। अतः जो रह गया था, रह ही गया। सरोजिनी नायडू ने रात को साढ़े ग्यारह बजे चाय बनाकर पिलाई। कहने लगीं, इससे ताजा हो जाओगी। जिस टोकरी में मैं महादेव-भाई की समाधि पर रोज फूल ले जाती थी, उसमें फल, बादाम, टॉफी

की वोतल आदि सामग्री रखी गई। उसे फूलों से मीरावहन ने सजाया। उनमें कला-वृत्ति स्वाभाविक रूप में है। सब जगह फूल सजाने का भार उन्होंने लिया था। सरोजिनी नायडू के जिम्मे सामान्य देखरेख थी। वे वैठी-वैठी कल के लिए रात के साढ़े वारह वजे तक मटर के दाने निकालती रहीं।

मीराबहन ने सवेरे खाने के समय वकरी के वच्चे को वापू से प्रणाम कराने को लाने का विचार किया था। भाई ने सुझाव दिया कि उनके गले में 'सहनाववतु'[1] वाला मंत्र लिखकर लटका दिया जाय। मीराबहन को यह विचार अच्छा नहीं लगा। पहले तो वे इधर-उधर के एतराज करती रहीं मगर सरोजिनी नायडू ने बताया कि उनके खयाल से जो विचार मूल में मीराबहन का था, उसमें दूसरे लोग दखल न दें तो अच्छा है। भाई ने उनकी अरुचि देखकर फौरन ही सुझाव वापस ले लिया। मुझे यह थोड़ा चुभा। मैंने भाई से कहा, "यह अफसोस की बात है कि मीराबहन ने आपका विचार नापसंद किया; उससे तो वापू खुश होते और बकरी के बच्चों से प्रणाम करवाना बहुत शोभायमान होता।" भाई ने उत्तर दिया, "हां, वकरी के वच्चों के साथ ऐक्य की वात से बापू बहुत खुश होते, मगर उसे छोड़ना ही ठीक था; आखिर आज के दिन की खासियत तो यही है न कि हम सबके साथ एकरस हों, परस्पर मिठास हो और जो चीज किसी और को पसन्द न हो उसे खुशी से छोड़ दें।"

पर रात को मेरे सो जाने के वाद वह मीराबहन अपने-आप भाई के पास आईं और बकरी के वच्चे के लिए 'सहनाववतु' वाला मंत्र लिखने का अनुरोध किया। वह सावुन का एक खाली डिब्बा लाईं। उसमें से

---

१. आश्रम में भोजन करते समय इससे आरंभ किया जाता था। वह मंत्र यह है:

सहनाववतु, सहनौभुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै॥

पान की शकल के गत्ते काटकर भाई ने उन पर 'सहनाववतु' मंत्र लिखा और नीचे लिखा 'मोटा भाई घणु जीवो' (वड़े भाई आपकी वड़ी उम्र हो)। ये गत्तें वकरी के बच्चे के गले में लटकाये जावेंगे। वापू वकरी का दूध पीते हैं, तो बकरी के बच्चों के वड़े भाई हुए न। मैं रात बारह-साढ़े वारह बजे विस्तर पर पड़ी थी, आंखें जलती थीं। भाई ने मिट्टी की पट्टी आंख के लिये वना दी थी, आंख पर रखकर सोई; पर नींद नहीं आई। एक वजे के वाद सो सकी। नींद ही उड़ गई थी। ३-२० पर वापू ने प्रार्थना के लिए उठाया। मिट्टी की पट्टी से आंख को वहुत आराम मिला था।

२ अक्तूबर '४२

सरोजिनी नायडू और मीरावहन, दोनों ने उन्हें प्रार्थना के लिए आज जगाने को कहा था। मैं गई तब सरोजिनी नायडू तो जग ही रही थीं। वह रात भर सो ही नहीं सकीं। मीराबहन को गहरी नींद से जगाना पड़ा।

प्रार्थना के समय दीवार पर फूल देखकर बापू ने बा से कहा, "तू नहीं रोक सकी न इनको?" बा ने कहा, "मैंने मना तो किया था मगर नहीं माने।" बापू ने सरोजिनी नायडू से कहा, "मुहब्बत भी किसी पर लादनी नहीं चाहिए।" सरोजिनी नायडू ने दीवार पर से फूल उतरवा दिये और सीढ़ी के पास रख दिये।

नाश्ते के लिये बापू आये तो फल की टोकरी सजी हुई सामने रखी हुई थी। सरोजिनी नायडू ने आकर फूल का हार पहनाया और मीरावहन ने सूत का। हमारे जेल सुपरिंटेंडेंट मि० कटेली ने भी फूल का हार पहनाया। साथ में ७४) रु० हरिजन काम के लिये भेंट किये और सादर प्रणाम किया।

बापू नाश्ता कर रहे थे, इतने में मीराबहन और भाई एक-एक बकरी के बच्चे को लिये हुए आ पहुंचे। दोनों बच्चों के गले में फूल-पत्तों के हार और 'सहनाववतु' मंत्रवाले गत्ते लटक रहे थे। मीराबहन ने उनकी ओर से एक छोटी-सी सुंदर स्तुति कही और बकरी के बच्चों से हाथ

जोड़कर प्रणाम कराया। फिर बापू के हाथ से उन्हें रोटी दिलवाई। मगर उससे पहले ही उन्होंने एक दूसरे के गले के फूलों और कोमल पत्तियों के पहनाये हुए हारों को ही खाना शुरू कर दिया था। बापू बहुत हँसे। मैंने उन्हें अपने और बा के सूत का हार पहनाया। बा ने कहा था कि उनके सूत का हार भी मैं ही पहना दूं। भाई ने अपना हार पहनाया। इसके बाद घूमने को निकले। रास्ते में बापू ने हमारी रांगोली और सीढ़ी पर लिखे मंत्र देखे। सारी फूल मालाएं और टोकरी के फूल महादेवभाई की समाधि पर ले गये। वहां दीवार पर सब सजा दिये। रोज की प्रार्थना की। प्रार्थना से पहले भाई ने महादेवभाई के सूत का हार बापू को पहनाया। बापू और भाई की आंखों में पानी आ गया। आज खास तौर से प्रार्थना के समय ऐसा आभास होता था मानो महादेवभाई हमारे साथ ही खड़े प्रार्थना बोल रहे हैं।

घूमते समय बापू ने पूछा, "तूने भर्तृहरि की कथा सुनी है?" मैंने कहा, "जी हां, सुनी तो है।" बापू बताने लगे, "योगी होने के बाद अंत में भर्तृहरि को अपनी पत्नी के पास भीख मांगने जाना था। जाता है तो अपने भाई का और उसके प्रति अपने वर्ताव का स्मरण करके कहता है, 'आ रे जखम जोगे नहीं जशे'।[1] यही बात महादेव के चले जाने के घाव पर भी लागू होती है।" यद्यपि बापू अपना दुःख व्यक्त नहीं करते, मगर महादेवभाई के जाने से उन्हें बहुत गहरा घाव लगा है।

साढ़े दस बजे कलेक्टर और डॉ० शाह आये। डॉ० शाह तो अच्छी तरह बातें करते रहे। कलेक्टर ने तो इतना ही कहा, "अपनी वर्षगांठ के दिन आप कैसे हैं?" बापू कुर्सी पर बैठे थे ताकि उसके आने पर खड़े होकर हाथ मिला सकें। नीचे गद्दी पर बैठकर उठना कठिन रहता है। कलेक्टर के आने पर खड़े हुए, हाथ मिलाया। मुझे यह अच्छा नहीं लगा, बापू क्यों कलेक्टर की खातिर खड़े हों? मगर बापू तो मर्यादा की मूर्ति हैं। जो करना चाहिए उसमें कभी नहीं चूकते। वे दूसरा कर नहीं सकते

---

१. 'योगी होने पर भी यह घाव मिट नहीं सकता।'

थे। कैदी की हैसियत से उन्हें कलेक्टर का मान रखना चाहिए था। नाश्ता करते हुए बापू ने कहा कि मैं जन्म-दिन पर उपवास किया करता हूं और दूसरों से भी उनके जन्म-दिन पर करवाता हूं? आज मुझे फल और सब्जी पर ही रहने दें। मैंने कहा, "नहीं, फल और दूध लीजिए।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "साग तो खाना ही होगा।" आखिर एक रोटी को छोड़कर बाकी सब कुछ लिया। खाने के बाद पैर के तलवों पर मालिश करवाकर बापू सो गये। बा भी आज उत्साह में थीं। उन्होंने कल आज की तैयारी में सिर धोया था। आज नया टीका लगाया, बालों में फूल लगाये। खाया भी अच्छी तरह। मैं और मीराबहन दोपहर काफी सोये, बा भी। सब थक गये थे।

सरोजिनी नायडू ने दोपहर को आराम नहीं किया। सिपाहियों और कैदियों के लिए दाल, सेव, पेड़े, जलेबी और केले मंगाये थे। सबका हिस्सा करके उन्होंने रखा। यह सब अपने, मीराबहन के और मेरे पैसे से मंगाये थे। तीन बजे सब कैदी आकर लाइन में बैठ गये। बापू ने आकर उन्हें दर्शन दिये--नमस्कार किया। बा ने सबको खाने का सामान बांटा। वह बहुत खुश थीं। बापू भी कैदियों को खाते देखकर बहुत खुश हुए। आज सुबह सब सिपाही बापू को प्रणाम करने आए थे। सबको बापू ने कुछ-न-कुछ फल दिये थे। घूमते समय बापू कह रहे थे, "सिपाहियों को तो फल दिये, मगर कैदियों को तो कुछ दिया ही नहीं।" मैंने कहा—देंगे। आप देखते रहिये। दोपहर को कैदियों को खाने की चीजें मिलती देखकर वे बहुत खुश हुए। जेल में कैदी लोग मामूली-मामूली चीजों के लिए भी तरस जाते हैं। कटेली साहब ने सबके लिए आइसक्रीम बनवाई। बापू के लिए तो बकरी के दूध की बनाई। और अपने हाथ से मशीन चलाई। आज बापू ने शाम को खाने के समय तीस वर्ष के बाद थोड़ी आइसक्रीम सरोजिनी नायडू के आग्रह के वश होकर खाई। हम सबने पेट भर कर खाई। सब सिपाहियों और कैदियों को भी दी। बापू खुश हुए। बोले, "इन लोगों को जेल में ऐसी चीजें देखने को भी नहीं मिलतीं।" शाम को महादेवभाई की समाधि पर नए फूल रखे।

शाम को प्रार्थना में 'वैष्णवजन' भजन गाया। प्रार्थना के बाद मैं बापू को बरामदे में ले गई। फव्वारे और रेलिंग पर दीपमाला थी। सुंदर दृश्य था। बा ने कहा, "शंकर (महादेवभाई) के वहां भी दीया रख आना।" मैं और भाई सिपाहियों के साथ वहां सात दिये रख आये।

बापू रात बिस्तर पर लेटे तब कहने लगे, "यह सब जो तुम लोगों ने किया है, उसके औचित्य में मुझे शक है।" उन्हें लगता था कि हम कैदी हैं और कैदियों को ऐसे उत्सव क्या मनाना था?

३ अक्तूबर '४२

सुबह प्रार्थना के बाद मैं फिर सो गई। रात की आइसक्रीम ने कुछ तबीयत बिगाड़ी थी। घूमते समय बापू ने सुबह न उठ सकने के बारे में कुछ पूछा तो कारण बताना पड़ा। बापू बोले, "मेरे कहने से तू न खाती तो इतना असर नहीं हो सकता था। मगर अब तकलीफ हुई। इसलिए शायद आगे ऐसी भूल न करेगी।" फिर बापू बताने लगे कि जिन लोगों ने ये सब खाने की चीजें निकाली हैं उन्होंने अपने-आप उनके लिए छोटे-छोटे बर्तन भी बना लिये हैं। आइसक्रीम कभी बड़े बर्तनों में नहीं खाई जाती है। अलग नहीं पी जाती। शेरी (दक्षिणी स्पेन की सफेद शराब) का गिलास अलग होता है, पोर्ट (दूसरी तरह की शराब) का अलग। व्हिस्की कभी अकेली नहीं पी जाती, सोडा मिलाकर पीते हैं। हम नकल करनेवाले यह सब तो जानते नहीं, प्याले भर-भरकर गटक जाते हैं और पीछे तकलीफ उठाते हैं।" फिर कहने लगे, "मैंने रात भी कहा था कि यह सब जो तुम लोगों ने किया है, करने जैसा नहीं था। सरोजिनी नायडू काम तो बहुत बढ़िया कर लेती है, मगर सच्ची संस्कृति की कीमत देकर। जो चीज मैं कहता हूं उसमें सच्ची संस्कृति है। जो सब तुम लोगों ने किया, उसका मजाक भी उड़ाया जा सकता है। किन्तु यदि हम जेल में सरकार का दूध-मक्खन तक न खायं, सूखी रोटी खायं तो उसका कौन मजाक उड़ा सकता है? मैंने यह सब सहन किया, अड़ जाता तो तुम लोग नहीं कर पाते। मगर मैंने देखा कि आखिर तो इसमें शुद्ध प्रेम ही भरा है, अतः होने दिया

और कैदियों को तो देना अच्छा ही लगता है, मगर यह सब हमारी मर्यादा से वाहर है।"

४ अक्तूबर '४२

वापू की सलाह से मैंने मि० कटेली से कहा था कि वह मेरे घरवालों को खवर दे दें कि उनके पत्र मिल गए हैं और मैंने न लिखने का निश्चय किया है। उन्होंने वम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी को लिखा; क्योंकि वह स्वयं सीधे नहीं लिख सकते थे।

५ अक्तूबर '४२

भारत सरकार के गृह-विभाग का आज उत्तर आया कि सरकार यह संदेश नहीं पहुंचा सकती, मैं खुद ही उन्हें इस वारे में लिख सकती हूं। वापू ने लिखने को कहा।

वा को दो रोज से अच्छी नींद नहीं आती। गर्मी काफी हैं, मच्छरदानी में दम घुटता है। आज वा कमरे में विना मच्छरदानी के सोईं। कमरे में हवा खूब आती है। भाई उनके पास सोये। वा को लगता है कि वापू रात को उठें, किसी चीज की जरूरत हो तो भाई शायद जल्दी न उठें, मैं तो उठ ही जाऊंगी; इसलिए मुझे वापू के पास से नहीं हटने देतीं। वा आज वहुत अच्छी तरह सोईं। आधी रात के समय वापू ने मुझे जगाकर पूछा कि क्या वा सो रही है? उसकी कुछ आवाज ही नहीं आती। मैंने कहा, "सोती नहीं तो आप क्या समझते हैं?" वापू ने कहा, "कौन क्या कह सकता है?" मैं देख आई। वा गहरी नींद में सो रही थीं। वापू के मन में खटका पैदा हो गया है कि कहीं वा को भी न यहां खोना पड़े।

६ अक्तूबर '४२

सरकार ने मि० कटेली को लिखा था कि वह खतों के बारे में मेरा संदेश मेरे घरवालों को नहीं पहुंचा सकती। मैं इस वारे में खुद लिखूं। मेरे पत्र का मसविदा भाई ने वनाया। वापू ने उसे नापसन्द किया। कहने लगे, "विलकुल सामान्य और संक्षिप्त होना चाहिए।"

आज माता जी आदि के पत्र मिले। वापू घूमते समय कहने लगे कि वम्बई सरकार के दफ्तर में तेरी साख जम गई मालूम होती है। मैं

समझी नहीं। पूछा—कैसे? कहने लगे, "इस वक्त खत जल्दी दे दिये हैं, कुछ काटा-छांटा भी नहीं। उन्हें लगता होगा कि यह तो ठीक चलती है, हमारा काम भी कर लेती है। तेरे बिना बा को वे लोग यहां रख नहीं सकते।" वा बीमार रहती हैं। डॉक्टर साथ है इसका सरकार को बहुत सहारा है।

७ अक्तूबर '४२

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्म-दिन था। सवेरे प्रार्थना में बा उठीं। बापू ने आज केवल अनपका खाना खाने का निश्चय किया था। नाश्ते में संतरे-मौसंवी का रस लिया। सवेरे प्रार्थना से पहले गरम पानी और शहद लिया, दोपहर को भी। ११ बजे टमाटर का रस, बादाम-काजू, गाजर-मूली पीसकर व किशमिश भिगोकर साफ करके सामने रखीं। सब चीजें संतरे के छिलके की कटोरियां बनाकर उनमें सजाकर रखी थीं। सुंदर लगती थीं। खाने की जगह पर राष्ट्रीय पताका और 'भारतमाता की जय' फूलों में लिखा बहुत सुंदर लगता था।

मीराबहन, बा, भाई और मैंने बापू को सूत के हार पहनाये। बा के कहने से मैंने बापू को टीका भी लगाया। दोपहर आधे घंटे तक कताई का दंगल हुआ। बापू, भाई, मीराबहन और मैं चार कातनेवाले थे। मेरा नंबर पहला आया।

भंडारी और शाह आये। हमने भंडारी से हमें एक हिरण देने को कहा। वह हमारी कंटीली बाड़ के बाहर अलग हाते में रहता है। हम घूमने निकलते हैं तो हमारी तरफ ही देखता रहता है। हमने सोचा हमारे पास आ जायगा तो उसे भी लाभ होगा, हमें भी। भंडारी 'हां' कह गये, मगर बाद में सरोजिनी नायडू नाराज हुईं। कहने लगीं—वह तो बगीचा उजाड़ देगा। उसका जिम्मेदार कौन होगा? सो भंडारी ने भी विचार बदल दिया।

शाम को बापू ने फल, काजू, बादाम और टमाटर का रस लिया। फलों की तश्तरी बहुत सुंदर सजाई थी। बा ने भी आज दूध और फल ही खाये।

शाम को प्रार्थना में मीराबहन ने 'प्रेमल ज्योति'[1] भजन गाया। सरोजिनी नायडू ने 'संध्याकालीन प्रार्थना का आह्वान'[2] नाम की अपनी कविता पढ़ी। मैंने और भाई ने कुछ श्लोक पढ़े। प्रार्थना के बाद भाई 'छांदोग्यउपनिषद' में से बापू को कुछ मंत्र बता रहे थे। जिनका भावार्थ था कि जिसकी सब क्रिया यज्ञमय हो गई है वह ११६ वर्ष तक जीता है।

बापू ने व्याकरण की परीक्षा के लिए मुझे १५ दिन का और समय दिया। श्लोकों के बारे में मजाक करने लगे, "कुछ समझी या भट्टजी के बैंगनोंवाली बात रही!" मैंने जानबूझ कर अज्ञता प्रकट की। मैंने कहा—नहीं समझी। बोले, "यह तो मंत्र है न, इसका जप करने से सिद्धि मिलती है। जैसे गायत्री मंत्र से, मगर समझकर कोई करे तो! तुझे ११६ वर्ष तक जीना है क्या?" मैंने कहा, "जी नहीं, वह आपके लिए है। हमारे जैसे ११६ वर्ष जीकर क्या करेंगे?" फिर मैंने पूछा, "मगर मंत्र के जप के बारे में क्या आप सचमुच ऐसा मानते हैं कि वह फलदायी है?"

बापू ने कहा, "मैं तो रामनाम के बारे में कह सकता हूं। वह मेरा नित्य का अनुभव है, रोज नया, आज भी हुआ। मैंने बहुत लड़के-लड़कियों से कहा कि रामनाम जपो। वे कहते हैं कि गंदे विचार आते हैं, तो मैं कहता हूं कि उनको निकालने का प्रयत्न न करो। उन्हें कहोगे कि 'जाओ-जाओ' तो यह भी उन विचारों की एक तरह से पूजा ही हुई। उसके बजाय दूसरे अच्छे विचार भरो, रामनाम जपो। गंदे विचार अपने-आप भाग जावेंगे। मैं आठ वर्ष का था, भूत-प्रेत से डरता था, तब मेरी धाय रंभा ने कहा, 'रामनाम जपो तो सब भूत भाग जावेंगे।' उस वक्त से यह चीज शुरू हुई। पीछे रामायण दाखिल हुई। इस प्रकार उन छुटपन के संस्कारों ने गहरी जड़ पकड़ी। उस वक्त भूत भागे कि नहीं, यह मुझे याद नहीं,

---

१. Lead kindly light.

२. Call to Evening Prayer.

मगर आज किसी भी अनावश्यक विचार को भगाने के लिए रामनाम का अद्‌भुत असर होता है। जो मुझे कहते हैं कि असर नहीं होता उन्हें मैं कहता हूं कि और जपो। असर हुए विना रहेगा नहीं।" फिर स्टीवेंसन इंजीनियर का किस्सा वताने लगे। उसे कहा गया कि यहां इतना पानी है कि इसे कोई भी भर नहीं सकता, पुल वांध नहीं सकता। उसने कहा कि कितना भी गहरा हो उसे आखिर भरना ही है। और उसने वहां पुल वनाकर ही छोड़ा।

: १९ :

ईद का त्यौहार

८ अक्तूबर '४२

बापू कहने लगे, "हम अपने लिए बचाव कभी न ढूंढ़ें। दूसरे के दृष्टि-बिंदु को देखने की कोशिश करें। ऐसा करने से एक तरह की सरलता आ जाती है। ग्रहण-शक्ति बढ़ती है। यह चीज आ जाय तो तेरे बहुत ऊंचा चढ़ने के रास्ते में से रुकावट निकल जाय।"

दोपहर को बापू के कमरे के कालीन वगैरा निकाल कर सफाई करवाई। बहुत धूल निकली। बापू सफाई से बहुत खुश हुए।

बा की तबीयत थोड़ी अच्छी है।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने बाहर के जगत के साथ कोई संबंध नहीं रखा। उसमें से मैं तो रस के घूंट ले रहा हूं।"

९ अक्तूबर '४२

चार-पांच रोज से सख्त गर्मी पड़ती है। आज शाम को खूब बादल आए। ऐसा लगा, जोरों से पानी बरसेगा। मगर दो-चार छींटे आने के बाद बादल चले गये।

भाई रामायण का अनुवाद कर रहे हैं। बापू ने उसमें मुझे चौपाइयां लिखने को कहा था। आज मैंने लिखना शुरू किया, मगर मेरी व्याकरण

की किताब अभी पूरी नहीं हुई। इसलिए बापू ने रामायण लिखना छोड़ने को कहा। मैंने कहा—पंद्रह मिनट की तो बात है। मुझे लिखना अच्छा भी लगता है। लिखने दीजिए। बापू बोल उठे, "क्या तेरे पास पंद्रह मिनट की कोई कीमत ही नहीं है? और तुझे बहुत चीजें अच्छी लगती हैं। इसका अर्थ क्या? रस तो मैं भी बहुत चीजों में रखता हूं। मगर मैं अपने मन को रोक लेता हूं। इसके विना आदमी कुछ भी कर नहीं पाता।"

१० अक्तूबर '४२

शाम को महादेवभाई की समाधि पर थोड़े फूल ले गये। स्वस्तिक बनाने को कम पड़े; मगर एक क्रॉस बन गया। बापू को वह बहुत अच्छा लगा। बापू ने ही बनाया था।

शाम को बापू 'तस्माद् परिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि' वाले श्लोक का मनन करने को कह रहे थे। अपने लोगों में जो दोष हैं उन्हें हमें विना समता खोये खूबसूरती से सहन करना है, ऐसा बता रहे थे।

११ अक्तूबर '४२

सरोजिनी नायडू ने बापू से कल ईद की सेवैयां खाने को कहा था। बापू ने कहा, "मुझे खजूर खाने दो। हजरत मुहम्मद की तो वही खूराक थी न!" वे मान गईं। बा को पता लगा तो पूछने लगीं, "आप कल फलाहार क्यों कर रहे हो?" बापू सोमवार का मौन ले चुके थे। लिखकर बताया, "ईद के कारण।" बा ने कहा, "मुसलमान तो कल सब कुछ खायेंगे, आप क्यों उपवास-सा करते हो?" बापू ने लिखा, "दक्षिण अफ्रीका में तो तुम जानती हो न, महीना-भर मैंने रोजा रखा था। इस समय तो एक भी रोजा नहीं रखा! तो कल ईद के रोज कुछ तो त्याग कर लूं। पैगम्बर की प्रिय खजूर और दूध लूंगा और मेरी प्रिय रोटी और साग छोड़ दूंगा।"

बा आज राजनीति की बहुत सारी बातें कर रही थीं। कहती थीं, "एमरी कहता है कि गांधी और जिन्ना एक-दूसरे से बात भी नहीं करते, मगर गांधी तो जिन्ना के घर गया था। महादेवभाई ने सब लिखकर

रखा है। मैं तो लिखित सबूत सबके आगे प्रकट करनेवाली हूं।" मैंने कहा, "वा, इसलिए तो सब एमरी को झूठा कहते हैं न?" कहने लगीं, "हां, ये लोग बड़े खराब हैं।"

शाम को ईद का चांद बापू ने सबसे पहले देखा। मौन थे। मुझे बुलाकर दिखाया। फिर मैंने सबको बताया। एक मुसलमान सिपाही है, मुहम्मद खां। उसे चांद बताकर बापू ने उसे मौसंबी दिलवाई। सब चांद को देखकर ऐसे खुश हो रहे थे मानो रमजान हमीं लोगों ने रखा था।

१२ अक्तूबर '४२

आज ईद थी। सवेरे बापू ३-१० पर प्रार्थना को आये। प्रार्थना के बाद सो गये। आज उन्होंने सिवा उबले दूध के बाकी सब बिन-पका खाना खाया। खजूर, टमाटर, संतरा, मूली, बादाम वगैरा। शाम की प्रार्थना पर भाई ने कुरान की आयतें पढ़ीं और सरोजिनी नायडू ने अपनी एक कविता। शाम की प्रार्थना के बाद बापू बा को पढ़ा रहे थे। आज फिर एक भजन का स्वर उन्हें सिखा रहे थे। सरोजिनी नायडू हँसने लगीं। बोलीं, "७४ वर्ष के बूढ़े नव विवाहित दंपति का स्वांग-सा रच आनंद ले रहे हैं।"

मैंने उन्हें ७ तारीख के 'टाइम्स ऑव इंडिया' अखबार में से ९१ वर्ष के पुरुष और ७६ वर्ष की स्त्री की शादी की खबर पढ़कर सुनाई। हँसने लगीं। बोलीं, "इसके सामने तो ७४ वर्ष की स्त्री बच्चों के समान है।" बहुत हँसी होती रही।

घूमते समय बापू फिर मेरे ऐसे समय बंबई पहुंचने और यहां आने की घटना पर आश्चर्य कर रहे थे। बोले, "अब इसे ईश्वर का चमत्कार न कहा जाय तो क्या कहा जाय? इसी तरह यह भी तो ईश्वर का चमत्कार ही है न कि इतनी बड़ी सल्तनत से मैं लड़ रहा हूं, वे इतना धमकाते भी हैं मगर मुझ पर कुछ असर ही नहीं होता। न डर है, न निराशा, न गुस्सा ही आता है, बद्दुआ कभी मेरे हृदय से उनके लिए नहीं निकलती।"

: २० :

सत्याग्रह में आत्महत्या ?

१३ अक्तूबर '४२

मकान के सामने एक फव्वारा है। वहां घूमते समय बापू हम सबके साथ मकड़ी के जाले देखते रहे। कैसे मकड़ी इतना पानी पार करके जाती होगी, इस प्रश्न पर गहराई से विचार होता रहा। बापू किस-किस चीज में रस ले सकते हैं, यह चकित करनेवाली चीज है।

बा खत लिखना चाहती थीं। बापू ने उनके लिए कनु के नाम एक पत्र का और धनुष तकली पर लगानेवाले राल का मसाला मंगवा देने के बारे के पत्र का मसविदा बनाकर दिया। मैंने उनकी साफ नकल करके बा के दस्तखत लिये और पत्र भेजे। बा बहुत खुश थीं कि अब उत्तर में और पत्र आवेंगे।

१४ अक्तूबर '४२

ऋतु एकदम बदल गई है। गर्मी बढ़ी है। फूल एकाएक मानो झुलस ही गए हैं, सैकड़ों एक साथ सूख रहे हैं।

बापू बा को आज दोपहर गीता सिखा रहे थे। रात को एक घंटा गुजराती लिखाते हैं, गाना भी। बा कह रह थीं कि पहले से मैंने इस तरह सीखा होता तो कितना सीख लेती। मगर बापू ने कभी इस तरह उन्हें समय दिया ही नहीं। अब भी देते रहें तो अच्छा है।

घूमते समय बापू अपने जीवन की बातें बता रहे थे। कहने लगे, "किसी पर ही ईश्वर का इतना अनुग्रह होता होगा, जितना मुझ पर हुआ है, नहीं तो वेश्या के घर जाकर कौन बच सकता है? मगर मुझे तो वहां मन में किसी तरह का उद्वेग, शरीर में किसी तरह का संचार तक नहीं हुआ।"

मि० कटेली ने बाहर की हरी बाड़ में से निकलकर सामने की तरफ जाकर घूमने का रास्ता बड़ा करवा दिया है। उधर छाया रहती है, सो सवेरे उधर घूमने जाते हैं। बापू को कटेली साहब का अपने आप उनके

आराम का इतना ध्यान रखना अच्छा लगा। सिपाही लोग वगीचे की पगडंडियां भी अच्छी वना रहे हैं।

रघुनाथ जमादार को आज कुनैन का दूसरा इंजेक्शन दिया। पहला परसों दिया था। उसे वहुत सख्त किस्म का मलेरिया है। अच्छा हो रहा है। यहां मेरी डॉक्टरी अपने साथियों, सिपाहियों और हमारा काम करने-वाले सजायाफ्ता कैदियों तक सीमित है। कोई बीमार सलाह लेने आता है तो अच्छा लगता है।

१५ अक्तूबर '४२

घूमते समय जेल में उपवास की नौवत आवे और जेल-अधिकारी जवर्दस्ती खाना खिलावें तो मनुष्य क्या करे, इस प्रश्न की चर्चा उठी। बापू वोले, "बाह्य उपायों को सोचना ही क्यों? जिसकी सचमुच जीने की इच्छा उठ गई है, उसका शरीर अपने-आप गिर जायगा। अलंकार में कहूं तो वह योगाग्नि पैदा करके उसमें भस्म हो जायगा। इतना प्रति-रोघ करेगा कि उसमें टूट जायगा।" भाई ने कहा, "सिद्धांत में यह ठीक है, मगर कहां तक यह मैं खुद कर पाऊंगा, इसमें मुझे शंका है। तब बाह्य उपाय भी सोच रखना चाहिए न?" बापू वोले, "जो बाह्य उपाय का ही विचार करता रहता है, वह अंदर की अग्नि पैदा कर ही नहीं पाता। मगर कोई बाह्य उपाय का आश्रय ले और ऐसी हालत में आत्महत्या भी करे तो मैं उसे दोष नहीं दूंगा।"

भाई ने बाह्य उपायों में अपने उस्तरे से खून की कोई बड़ी नाड़ी काट लेने की बात की। मैंने पूछा, "यदि कोई रात को चुपचाप अपनी एक बड़ी नाड़ी काट ले और खून निकल-निकलकर ही वह सुबह तक मर जाये तो क्या वह ठीक होगा? जेल में उपवास का हेतु मरना नहीं है। हेतु तो सत्ताधारियों का हृदय बदलना है। सामनेवाला देख भी नहीं पाता और हम चुपचाप आत्महत्या कर लेते हैं तो उसमें सामनेवाले का हृदय-परिवर्तन कैसे होगा?"

बापू बोले, "इस समय हृदय-परिवर्तन की वात नहीं हो रही है। आज प्रयोग वहादुर की अहिंसा का नहीं, कमजोर की अहिंसा का है।

यहां भी नेता के पास तो हृदय-परिवर्तन की बात रहती है। मगर सर्व-साधारण लोगों के लिए ऐसा मौका आ सकता है कि वे किसी अपमान को बरदाश्त न कर सकें और उससे बचने का उनके पास दूसरा साधन नहीं है तो वे मर जायें। तब उनका कार्य अहिंसक ही होगा, चाहे उस कार्य की आत्मा शायद अहिंसक न हो।" मैंने पूछा, "यह कैसे ?" बापू समझाने लगे, "एक आदमी को फांसी की सजा मिलती है। जो सिपाही उसका रखवाला है उसकी रक्षा करता है। उसे फांसी मिलने तक अपनी जान देकर भी उसकी रक्षा करता है। उसका कार्य तो अहिंसक है, मगर वह कहां जानता है कि उसमें अहिंसा है !

"तो इस दुर्बल की अहिंसा को मुझे आजमाना है। मैंने देखा है कि सारे देश को मैं बहादुर की अहिंसा आज नहीं सिखा सकूंगा। मगर यह दुर्बल की अहिंसा कुछ फल लावे तो दुर्बल प्रजा के हाथ में अपनी रक्षा के लिए एक साधन आ जाता है और उसमें से बलवान की अहिंसा भी निकल सकती है। अगर दुर्बल की अहिंसा फल ला सकती है तो सच्ची बहादुर की अहिंसा की ताकत का अंदाज लगाया जा सकता है।"

बा काफी अच्छी हैं। बापू के पास से सीखती हैं, मेरे साथ भी पढ़ती हैं, भाई के साथ भी। इससे उनका मन बहला रहता है।

१६ अक्तूबर '४२

राजाजी के भाषण की रिपोर्ट अखबारों में पढ़ी। मगर वह रिपोर्ट शायद दुरुस्त न भी हो। एक-दो दिन में पता लग जायगा।

बा की खांसी बढ़ी है। बेचारी का एक दर्द बैठता है और दूसरा खड़ा हो जाता है।

सरोजिनी नायडू अभी से फिक्र में हैं कि मीराबहन के जन्म-दिन को क्या-क्या किया जाये। मीराबहन जिस रोज बापू के पास आई थीं, उसे अपना जन्म-दिन मानती हैं। वह है सातवां नवंबर। इस वर्ष दिवाली भी उसी रोज पड़ती है। सरोजिनी नायडू कुछ खाने की चीज बनाने को कहती थीं। एक डलिया में साबुन-तेल वगैरा रखकर मीराबहन को देने का विचार है।

आज महादेवभाई की समाधि को लीपा था। शाम को नए फूल सजाए। गुलाबी एस्टर का ॐ और सफेद एस्टर का क्रॉस बनाया। बहुत सुंदर लगते थे। पांव के पास फूल सजा रहे थे। अचानक उनका आकार गुजराती 'जी' बन गया। बापू को बहुत अच्छा लगा। कहने लगे, "महादेव के पांव के पास यह अच्छा लगता। मेरे कानों में महादेव की 'जी' की ध्वनि गूंजने लगती है।"

१७ अक्तूबर '४२

कल से बा ने मेरे साथ बापू की आरोग्य-संबंधी किताबों[1] के सिवा गीता पढ़ना भी शुरू किया है। बापू के साथ भी खूब पढ़ती हैं। तबीयत अच्छी नहीं तो भी पढ़ने का शौक खूब रखती हैं। इसका एक उपयोग यह भी है कि बा को सिखाते समय बापू के लिए थोड़ा दिल-बहलाव हो जाता है।

: २१ :

बा की पहली सख्त बीमारी

१८ अक्तूबर '४२

आज बा को बुखार है। मलेरिया हो या शायद ब्रांको निमोनिया (Broncho-Pheumonia)। रात आठ बजे डॉ० शाह आये और तबीयत कैसी है, यह पूछकर चले गये। मुझसे कहने लगे, "मुझे लगा कि मुझे देखने आना चाहिए। मैं जानता हूं, मेरे लिए कुछ करने को रहता नहीं, मगर न आता तो मुझे चिंता लगी रहती। इसलिए आ गया।"

---

१. बापू ने जेल में आरोग्य-संबंधी अपनी पुरानी किताब को फिर से लिखना शुरू किया। मुझसे रोज जितना वे गुजराती में लिखें उसका हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद करने को कह रखा था। बा बापू का लिखा मेरे साथ पढ़ा करती थीं।

मैंने कहा, "आप आ गये यह अच्छा हुआ। बा इतनी कमज़ोर हैं कि उनके बारे में चिंता होती ही है।"

आज दशहरा है। सब कैदियों के लिए सब्जी बनाई। बाकी उन्हें कच्चा सामान दिया। उन्होंने अपना पकाकर खाया।

शाम की प्रार्थना में सरोजिनी नायडू ने कालीदेवी के बारे में अपनी लिखी एक कविता पढ़ी। अच्छी थी।

बा को सुबह १००.२ बुखार था तो भी बापू से पढ़ा। बाद में खाट पर जा लेटीं। उनके सिर में बहुत दर्द था। खांसी-जुकाम तो है ही।

दोपहर खाने-पीने में विधि-निषेध की बातें हो रही थीं। मैंने बापू से कहा, "आदमी कोशिश करे तो धीरे-धीरे काफी चीजें पचा सकता है, आदत पड़ने में थोड़ा समय जाता है सही। मिसाल के तौर पर अब मैं घर जाऊं या घर से आश्रम आऊं तो खाने के बारे में आदत बदलने में कुछ समय लगता है। दोनों जगह का खाना अलग किस्म का रहता है। मगर कुछ दिन पीछे उस खाने से कुछ तकलीफ नहीं होती।" बापू कहने लगे, "जल्दी से आदत बदल सकना गुण है। ऋतु बदलती है तो हमें अपने-आपको उसके अनुकूल करना पड़ता है। वह स्वाभाविक अनुकूलता हुई। मगर जिस तरह की तुम बात कर रही हो वह अस्वाभाविक है। इस तरह नये खाने के अनुकूल होने के लिए ताकत खर्च करना तो शक्ति को फिजूल खोना है। अनुचित भी है। इस तरह करने से आखिर शरीर क्षय होता है और बुद्धि का भी क्षय हो जाता है। शरीर का क्षय तो आखिर होने ही वाला है, मगर मैं मानता हूं कि बुद्धि का क्षय नहीं होना चाहिए। अब देखूंगा कि मेरे साथ आखिर क्या होता है। हो सकता है कि मेरी बुद्धि का अंत में क्षय हो। अगर ऐसा हुआ तो कहूंगा कि मुझे उससे बचने के लिए जो कुछ करना चाहिए था वह मैंने नहीं किया।"

१९ अक्तूबर '४२

बा की रात काफी बेचैनी में गई। डॉ० शाह सुबह फिर आए, बा सोती थीं। शाम को आने को कह गए। शाम को आये तो कहने लगे, "आप बा के शरीर को पहचानती हो। दवा वगैरा जो देनी हो तो देती

जाओ। मैं दखल नहीं दूंगा।" मैंने कहा, "ठीक है, मुझे मदद की जरूरत होगी तो आपको कह दूंगी।"

शाम को भाई से कहने लगीं, "मैंने आज तुम्हारी बहुत तारीफ कर डाली है। अपनी बहन से पूछो।" भाई कहने लगे, "अगर मेरी निंदा की होती तो पूछने में अर्थ भी रहता। तारीफ के बारे में जाकर क्या पूछूं?

बापू का मौन शाम को सवा सात बजे खुला। बा की तबीयत इस वक्त अच्छी लगती है।

२० अक्तूबर '४२

आज बा की तबीयत काफी अच्छी है, मगर रात नींद कम आई। साढ़े तीन बजे सबेरे भाई ने मुझे जगाया, "बा घबराती हैं। नाड़ी बहुत तेज है, गिनी नहीं जाती।" मैं घबरा उठी। देखा तो नाड़ी अच्छी थी, बहुत तेज भी नहीं थी, १०० के अंदर थी। बा कहने लगीं, "मुझे नींद की गोली दो।" नींद की गोली तो थी ही नहीं, मगर सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) की गोली थी। एक दिन इसी तरह बा को नींद नहीं आती थी तब नींद के नाम से मैंने वही गोली दे दी थी। विचार के असर से ही उस रोज वे सो गई थीं। आज भी मैंने वही गोली दी। शहद और गरम पानी पीने को दिया। बापू ने प्रार्थना बा के कमरे में करवाई। प्रार्थना के बाद बापू को सुलाकर मैं आई कि भाई को छुट्टी दिला सकूं। मगर देखा तो बा और भाई दोनों छोटे बेटे और मां की तरह साथ पड़े सो रहे थे।

घूमते समय बापू बा की बीमारी की बात कर रहे थे कि कैसे वह एक क्षण में जा सकती है।

२१ अक्तूबर '४२

रात बा को फिर नींद नहीं आती थी। ११-३० पर मैंने नींद की एक गोली दी। बस फिर तो रातभर सोईं और दिनभर भी। खाने के लिए भी जगाना पड़ता था।

आज मेरा व्याकरण पूरा करने का आखिरी दिन था। कल बापू परीक्षा लेंगे। जेल की नीरसता में ऐसी चीजों से ही वे दिल बहलाते हैं।

आज भंडारी और डॉक्टर शाह आए। बा का हाल पूछकर चले गये।

२२ अक्तूबर '४२

आज बापू घूमते और कातते समय मुझसे व्याकरण के प्रश्न पूछते रहे। बाद में कहने लगे, "आधा घंटा व्याकरण पढ़ने के लिये रोज रखना।" व्याकरण की दूसरी किताबें भी मंगवा रहे हैं। कहते हैं कि व्याकरण पर पूरा काबू पाना अच्छा है, जरूरी है। बापू को व्याकरण का बहुत शौक है।

दिन में आज भी गर्मी थी। रात को ठंड हो जाती है। चांदनी रातें हैं। रात को सोते हैं तो फव्वारे के पानी का नाद सुनाई देता है। आजादी में ऐसी जगह पर थोड़े दिन आराम मिले तो सबको कितना अच्छा लगे! मगर आज तो यह सब काटता है।

: २२ :

सच्ची वैज्ञानिक के प्रति भावना

२३ अक्तूबर '४२

आज बा बहुत उदास हैं।

बापू मैडम क्यूरी की किताब पढ़ रहे हैं। कह रहे थे, "वह तो सच्ची तपस्विनी थी। मेरे मन में होता है कि पैरिस जाकर उसका घर देख आऊं। हमारे किसी वैज्ञानिक ने इतना दुःख नहीं भोगा। नतीजा तो मैं यह निकालता हूं कि हम पर अंग्रेजी की मेहरबानी होने के कारण हमने अंग्रेजों के ढंग से ही काम करना सीखा। शोध-विभाग इत्यादि के सफेद हाथी खड़े कर लिये। इतना पैसा खर्च होता है। इतनी बड़ी प्रयोग शालाएं टाटा ने खड़ी कीं, सरकार ने भी कीं, पर काम वहां पर कितना होता है?"

शाम को बापू कहने लगे, "व्याकरण सीखनेवाला किसी चीज का सार समझकर संतोष नहीं मानता।" बात कवि वर्ड्स्वर्थ की 'ड्यूटी' (Wordsworth's 'Ode to Duty') नाम की कविता के अर्थ की चर्चा में से निकली थी। कहने लगे, "व्याकरण जाननेवाला एक-एक

शब्द के अर्थ को गहराई से समझता है। बारीकी से हरेक पहलू समझने की आदत डालता है। ऐसा करते-करते एक-एक शब्द के विचार में घंटों बीत सकते हैं।"

बा की बापू को काफी चिंता है, मगर करें क्या? सेहत के कारण बा छूट तो आज सकती हैं, मगर छूटकर वे और घबरायंगी। बापू के बिना उन्हें बाहर जरा भी अच्छा नहीं लगेगा। शायद बापू का वियोग सहन ही न कर सकें और चल भी दें। जिस रोज बापू पकड़े गये थे उसी रोज बा को दस्त आने लगे थे। दो दिन बाद यहां पहुंचते ही अपने-आप अच्छे हो गये। दो-एक रोज बा और यहां न आतीं तो शायद खत्म हो गई होतीं।

२४ अक्तूबर '४२

कल रात बापू बहुत कम सो पाये। बा उदास थीं। बापू उनकी चिंता से सो नहीं सके। आज अपने पलंग का रुख बदल दिया ताकि सारा समय वे बा के पलंग पर नजर रख सकें।

मैडम क्यूरी की किताब से तो बस बापू चिपक गये हैं। उसकी एक लड़की दिल्ली में बापू से मिलने आई थी—वह थी ईव क्यूरी, इस किताब की लेखिका। आज बापू बहुत अफसोस से कह रहे थे, "मुझे दुःख है कि मैंने उस लड़की के साथ अच्छी तरह जान-पहचान नहीं कर ली।" शाम को मुझसे बोले, "तुझे इस किताब का हिंदी में सुंदर अनुवाद करना है।" पीछे भाषा में गहरे उतरने का महत्त्व और उसकी आवश्यकता बताते रहे।

सरोजिनी नायडू आज कह रही थीं, "प्यारेलाल मुझे मेरे लड़के बाबा की याद दिलाता है और तुम लीलामणि की।" मैंने कहा, "यह तो अच्छी बात है। आपको अपने घर का-सा वातावरण मिल गया।" वे बेचारी काफी हदतक हम सबकी मां बनकर बैठी हैं। मां की तरह हम सबके खाने-पीने की देखभाल रखती हैं।

भाई ने बताया कि कल बापू बा के बारे में बहुत चिंतित थे। उनसे कहने लगे, "बा की मुझे बहुत चिंता रहती है। महादेव के जाने के बाद

मुझे कबूल करना पड़ता है कि मेरा मन कमजोर पड़ गया है। कई बार चिंता होने लगती है कि कहीं बा को भी न खोना पड़े। मन में तैयारी तो मैंने इसकी भी कर रखी है; लेकिन जहांतक मुझसे बन सकेगा, मैं अब और किसी को नहीं खोना चाहता।"

बा अखबार में एमरी, क्रिप्स वगैरा के भाषण देखती हैं तो बहुत चिढ़ जाती हैं। हमारे लोगों पर सरकारी सख्तियों की खबर पढ़ती हैं तो दुःखी होती हैं। आज कहने लगीं, "यह सरकार बहुत घमंड कर रही है। सारी हालत आज तो डांवाडोल है। कब और कैसे इसका अंत होगा?"

फिर कहने लगीं, "लेकिन पाप का घड़ा भरने पर ही फूटता है। इसलिए जितना झूठ ये बोलना चाहें, बोलने दो। आखिर भगवान तो है न!"

इन विचारों ने और इन सरकारी झूठे आरोपों के प्रति गुस्से ने उनके मन में इतना घर कर लिया है कि कहीं भी मौका हो तो वे इस विषय पर बात करने लगती हैं। एक रोज डॉ० शाह से कहने लगीं, "ये लोग इतना झूठ क्यों बोलते हैं? उन्हें मना कीजिए न?" बेचारे डॉ० शाह क्या कहते! बोले, "मां-मां, आपको गुस्सा नहीं करना चाहिए। वह आपकी तबीयत के लिए अच्छा नहीं है। झूठ बोलते हैं तो बोलने दो। जब कोई झूठ ही बोलने पर तुला हो तो क्या एक और क्या बीस! एक ही बात है।"

४ नवंबर '४२

आज दस दिन के बाद डायरी उठाती हूं। बा की मालिश वगैरा का काम छोड़कर सारा समय 'मैडम क्यूरी' को पढ़ने में लगाती हूं। बड़ी उत्साहवर्धक किताब है। बापू ने पूरी पढ़ी है। मुझसे फिर कह रहे थे कि तुम्हें इसका अनुवाद हिंदी में करना होगा। क्यूरी-दंपती ने इतने कम साधनों के साथ इतनी बड़ी शोध की, इसकी तुलना हमारे यहां आज जो शोध का काम होता है उसके साथ करते हुए बापू कहने लगे, "हमने तो अंग्रेजों से यह सब काम सीखा है न, सो उनकी तरह पैसा उड़ाना भी सीखा। उड़ाने के लिए पैसा हो या न हो, शोध हम क्या कर पाये हैं?

मैं एक भी शोधक हिंदुस्तान में ऐसा नहीं जानता, जिसने क्यूरियों की तरह तंगदस्ती भोगी हो। पश्चिम में तो ऐसे असंख्य लोग पड़े हैं। तभी तो वे विज्ञान को इतना दे सके हैं।"

मैंने सोचा था कि दो दिन की डायरी इकट्ठी लिख डालूंगी, मगर तीसरे दिन बुखार आ गया और ऐसे जोर का कि उसने मुझे निकम्मा बना दिया।

भाई ने हफ्ताभर दिन-रात काम किया। बापू का सारा काम और मेरी बीमारी से कुछ थोड़ा-बहुत बा का काम भी उनके सिर पर आ पड़ा। मेरी देखभाल तथा दूसरे अनेक कामों के कारण एक मिनट की भी उन्हें फुर्सत नहीं मिलती थी। जब यह निश्चय हो गया कि मुझे मलेरिया है, टाइफाइड नहीं, तब सबकी चिंता दूर हुई।

मेरी बीमारी में सरोजिनी नायडू बापू की काफी सेवा करने लगी हैं! भाई कह रहे थे, "ऐसा लगता है कि बापू की सेवा की छूत उन्हें भी लग गई है। उनमें सेवाभाव तो काफी है। हम लोग मेज पर खाने को बैठते हैं तो जूठे बर्तन तक उठाने लगती हैं। कोई चीज चाहिए तो सबसे पहले उठकर लाने को चल देती हैं। हम लोग संकोच में पड़ जाते हैं। हरएक की आवश्यकता को, इच्छा को, वे पहले से ताड़कर पूरा करने का प्रयत्न करती हैं। मि० कटेली की सेवा तो इस तरह कर रही हैं कि कोई मां क्या करेगी! अपराधी बंदियों, सिपाहियों, सबको खिलाती रहती हैं। एक कैदी को बुखार आ गया तो मेरे पास आईं और बोलीं, "मुझे इसके लिए कोई ताकत की दवा लिख दो।" एक सिपाही के घर लड़का हुआ। उसके बच्चे के कुरते के लिए उन्होंने रेशमी कपड़ा दे दिया। ये सब चीजें उनके स्वभाव का एक अंग हैं।

कल रात मीराबहन और सरोजिनी नायडू मेरे कमरे में आकर ऊंची आवाज से कविता पढ़ रही थीं। मीराबहन राबर्ट बर्न्स की कविताओं में से कुछ गाकर भी सुना रही थीं। मीराबहन का कविता पढ़ने का ढंग बहुत अच्छा और प्रभावकारी है।

: २३ :

मीराबहन की सालगिरह

५ नवंबर '४२

आज बापू ने लॉर्ड लिनलिथगो को लॉर्ड हेलीफैक्स के लड़के की मृत्यु पर शोक-समवेदना का पत्र भेजने के लिए लिखा। बापू अंग्रेजों की बहादुरी की स्तुति कर रहे थे, "कोई उमराव नहीं है जिसके अपने लड़के युद्ध में न गये हों, तभी तो जनता में भी त्याग-वृत्ति पैदा हो सकती है, उत्साह आ सकता है।" मैंने कहा, "मगर वहां तो जबरन सबको फौज में जाना पड़ता है न! वे अपने लड़कों को घर पर रख कैसे सकते हैं?" बापू कहने लगे, "वह अलग बात है, मगर वे रखना चाहें तो कई तरीके निकाले जा सकते हैं।"

डॉ० शाह आज फिर कुनीन का एक इंजेक्शन मुझे दे गये। उन्हें खुद मलेरिया आ रहा है। कहते थे, "मुझे भी आज इंजेक्शन लेना चाहिए था, मगर औरतें ज्यादा बहादुर होती हैं। मैं इंजेक्शन लेने का इरादा नहीं कर पाया।" फिर अहमदाबाद में जब वे जेल सुपरिंटेंडेंट थे, तब के अपने अनुभव सुनाते रहे और बताते रहे कि सरकारी दफ्तरों में कितनी ढील से काम लिया जाता है।

इतने दिन के बाद आज शाम को बापू मुझे महादेवभाई के स्थान पर ले गए। अच्छा लगा। वहां पर अब छोटे-छोटे शंखों का ॐ बनाया है। फूलों के ॐ जितना सुंदर वह नहीं लगता, मगर फूल तो सूख जाते हैं, रोज ताजे नहीं मिलते। मिलते हैं तो शंखों पर लगा देते हैं।

शाम को बापू के एक पत्र की नकल नहीं मिल रही थी। बापू भी चिंता में थे। इतने में वह मुझे मिल गई। बापू को बताया तो हँसी में कहने लगे, "यह शुभ चिह्न है। अभी जब मैं उसके पाने की आशा छोड़ने लगा था तो सोचा था कि याद से उसे फिर लिख डालूंगा। इतने में तू आ गई। देखने में चाहे आज निराशाजनक परिस्थिति हो तो भी छः महीने में हमारा बेड़ा पार होनेवाला है।"

रात को मीराबहन भाई के साथ चर्चा कर रही थीं। कहने लगीं, "साम्यवाद और गांधीवाद में एक समानता है। दोनों गरीब-से-गरीब की सेवा करना चाहते हैं। दोनों की समता की बातें लोगों के सामने रखी जावें तो वे बहुत प्रभावकारी हों।" भाई ने कहा, "ठीक है, पर यह समता साम्यवादियों के लिए बहुत महत्त्व नहीं रखती। वैसे तो साम्यवाद की सब या बहुत-सी अच्छी चीजें बापू के कार्यक्रम में आजाती हैं; परन्तु भेद साधनों में है। साम्यवाद आज एक खास पद्धति और जीवन-मीमांसा का नाम है।" मीराबहन कहने लगीं, "हां, मगर बापू पूंजीपतियों के पीछे काफी हाथ धोकर नहीं पड़े। पूंजीवाद को मिटना होगा। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत अमली रूप में चलनेवाला नहीं।" भाई समझाते रहे कि संपत्ति का अर्थ क्या है, 'पूंजीवाद को मिट जाना होगा'—इसका अर्थ क्या है और कहने लगे कि बापू के साधन अलग हैं। सत्य और अहिंसा के जरिये बापू को काम करना है, इसलिए उनका काम करने का ढंग भी अलग है और होना ही चाहिए। दूसरा रास्ता ही नहीं है।

मीराबहन साम्यवाद का सिद्धांत समझने के पीछे पड़ी हैं। मार्क्सवाद का खूब अभ्यास करती हैं।

दो रोज से रात को खासी सरदी पड़ने लगी है, मगर मौसम धोखेबाज है। शाम को कई बार खासी गर्मी लगने लगती है। अब तो दिवाली आनेवाली है। दिवाली तो हमारे यहां सर्दी की ऋतु का त्यौहार ही माना जाता है। दिवाली के नाम से घर की स्मृति ताजी हो जाती है। और कॉलेज की भी। बेचारी माताजी को हम लोगों की उस दिन बहुत याद आवेगी।

६ नवंबर '४२

परसों दिवाली है। कल मीराबहन बापू के पास आई। दिवाली के दिन उनकी अठारहवीं सालगिरह है। सरोजिनी नायडू ने विचार किया था कि मीराबहन का जन्मदिन और दिवाली का समारोह साथ कर दिया जाय। मीराबहन के लिए उन्होंने आन्ध्र की खादी की एक बारीक साड़ी निकाली और उसे मीराबहन को ओढ़नी बनाने के लिए भेंट करने का विचार किया। बिंदी और इलायची मंगाईं और अपनी 'बांसुरी

वजैया कृष्ण' पर लिखी हुई एक कविता, इन सबका अपनी तरफ से एक वंडल बनाया। मैंने बाजार से सीता और राम की एक-एक मूर्त्ति मंगाई और अगरवत्ती का एक पैकिट। वादाम वगैरा डालकर टॉफी बनाई और उसका एक पैकिट बनाया—यह सब मेरी और भाई की भेंट थी। मि० कटेली ने मीराबहन के लिए इकतारा वनवाया, फिर कपड़े धोने के साबुन, स्नान करने के साबुन, तेल, दंतमंजन वगैरा का एक वंडल बनाया। भाई ने एक खत टाइप किया। भारत सरकार के गृह-विभाग ने मीराबहन को लिखा था कि आपके नाम से एक पार्सल आया है। उस पर लिखा था, "देवत्व के पश्चात् दूसरा दर्जा स्वच्छता का ही है।[1] वह हम भेजते हैं।" यह सब रात को हमने छिपाकर रख दिया। मीराबहन को जरा भी शंका न हुई कि हम लोग कुछ कर रहे हैं।

वा को कल दोपहर बापू की राह देखते-देखते बहुत भूख लग आई थी। बापू आधा घंटा देरी से खाने को पहुंचे। बा उनकी बाट तो जोहती रहीं, मगर उनके देर से आने के लिए बहुत नाराज हुईं। बापू ने कारण बताने की कोशिश की, पर बा माननेवाली थोड़े ही थीं।

रघुनाथ जमादार को आज फिर बुखार आ गया। बापू कहने लगे, "कुनीन के इंजेक्शन के बाद भी बुखार आता है तो इंजेक्शन किस काम के? वह एक बार इंजेक्शन ले चुका है।" मैंने बताया कि जहां मलेरिया के मच्छर भरे पड़े हैं, वहां दुवारा मच्छर के काटने से दस दिन में नया मलेरिया आ सकता है। कुनीन हमेशा तो खून में बैठी नहीं रहती। रोग से लड़ने की हम अपनी ताकत बढ़ा लें, जिससे मच्छर के काटने से भी बुखार न आवे, तो दूसरी बात है। लेकिन इससे बापू की शंका मिटी नहीं।

महादेवभाई की समाधि पर दीमक इतनी बढ़ गई थी कि पार न था। गोबर की लिपाई बंद करने से सब दीमक चली गई। इस बार मिट्टी में थोड़ा चूना डालकर लीपा था। लिपाई के बाद समाधि बड़ी सुंदर दिखाई देती है। ऊंची सफेद शंखों की कतार के साथ जमीन भी सफेद हो गई है।

---

१. "Cleanliness is next to Godliness."

७ नवंबर '४२

आज सुबह नाश्ते के समय सरोजिनी नायडू ने मीराबहन से कहा, "तुम्हारे लिए एक चिट्ठी और पार्सल आया है। दूध पीकर जरा खोलो तो। कैसे मौके पर आया है।" नाश्ते के बाद मीराबहन ने पार्सल खोला। पहले तो वे मान गईं कि पत्र सरकारी लगता है, मगर बाद में समझ गईं। "हां, कल रात प्यारेलाल टाइप कर रहा था।" पार्सल खुल रहे थे तो बापू भी आ पहुंचे। घूमने जाने के लिए उठे थे। सब हँस रहे थे।

दोपहर को कैदियों को चाय तथा कुछ खाने-पीने की चीजें—केले आदि—दी गईं। बापू आकर उनसे पूछने लगे, "जानते हो, यह क्यों मिल रहा है? मीराबहन यहां आकर हम लोगों-जैसी बन गई है। उस दिन को आज सत्रह साल हुए हैं। दिवाली भी है। सरोजिनी नायडू ने सोचा कि तुम्हें यह सब दिया जावे।" एक कैदी आज पहले ही दिन आया था। बापू को उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह उठकर बापू के पांव छूने को आया। बस फिर तो तांता लग गया। लोग उठ-उठकर पांव छूने के लिए आने लगे।

बाद में सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "बापू को इन गरीब कैदियों को पार्टी देना अच्छा लगता है। उन्हें राजाओं की पार्टियों में रस नहीं आता, मगर इन लोगों की पार्टियों में आता है। हम इन लोगों का खयाल रखते हैं, इससे बापू को खुशी होती है।"

आज सुबह घूमते समय बापू गीता के बारहवें अध्याय की चर्चा कर रहे थे:

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागः त्यागस्त्यागाच्छांतिरन्तरम्॥

कहने लगे, "अभ्यास का अर्थ हठयोग, ज्ञान का श्रवणमननादि और ध्यान का अर्थ मैं करता हूं उपासना। बा जैसी स्त्री, जिससे पूछो कि तीन सौ से पहले क्या, तो दो सौ नहीं बता सकेगी, मगर हवेली (मंदिर) में जाकर उसे दिया जलाना हो या झाड़ू लगाना हो तो उस काम को वह बहुत प्रेम से करेगी। वह भक्ति हुई। ऐसे लोगों के लिए है ध्यान।

और चौथा तो कर्म-फल है ही। श्रेय का अर्थ मैं करता हूं आसान। ज्ञान से ध्यान आसान है और सबसे आसान है कर्मफल-त्याग। ध्यान का यह अर्थ मुझे विनोबा ने बताया था। जब मैंने 'अनासक्ति योग' लिखा तो उसे विनोबा को पढ़ने को दिया था। उसके कई स्थलों पर हमारी चर्चा हुई थी। उसमें यह श्लोक चर्चा का विषय था।"

८ नवंबर '४२

शाम को बा ने मुझसे कहा कि बापू के जन्मदिन पर जैसी रांगोली दरवाजे पर की थी वैसी करो और ॐ बनाओ। मैंने चूने का ॐ बना दिया, मगर बा को पसंद नहीं आया। सिपाहियों ने तुलसी के पास लाल रांगोली के चित्र बनाये थे। वे बा को अच्छे लगे। अपने दरवाजे के सामने लाल चित्र उन्हें पसंद आया।

शाम को प्रार्थना के बाद महादेवभाई की समाधि पर मैं, भाई और सरोजिनी नायडू गए। शंखों के बीच-बीच में अगरबत्तियों की कतार लगाई। अंधेरी रात में वह इतनी सुंदर लग रही थी कि क्या कहना ! सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "ओहो, यह तो एक खूबसूरत-सी कविता दीख पड़ती है।" आकर हमने बापू को बताया। कहा, "आपको दिखाने के लिए हमें एक दिन फिर ऐसी ही बत्तियां लगाकर जलानी होंगी।"

श्री कटेली बाहर गये हुए थे। कौन जाने कितने दिनों के बाद आज निकले होंगे। लौटे तो सरोजिनी नायडू ने उनसे भी कहा, "आज आपने एक सुंदर दृश्य खो दिया है।"

: २४ :

एक और उत्सव

९ नवंबर '४२

आज गुजराती का नया वर्ष शुरू होता है।

भंडारी और शाह साढ़े दस बजे आए। बापू ने उन्हें मीराबहन के लिए बनाई गई टॉफियों में से कुछ दीं।

सरोजिनी नायडू ने बा को एक साड़ी भेंट की।

कल से कातना शुरू किया है। बापू कह रहे थे, "अब तू इतनी अच्छी हो गई है कि कातना शुरू करना चाहिए।"

१० नवंबर '४२

सुबह घूमते समय बापू कहने लगे, "महादेव को मेरा वारिस होना था; पर मुझे उसका वारिस होना पड़ा है। इसकी समाधि पर मेरा जाना बिलकुल सहज बन गया है। मैं न जाऊं तो बेचैन हो जाऊं। वहां जाकर मैं कुछ करना नहीं चाहता, समय भी नहीं देना चाहता, मगर हो आता हूं इतना ही मेरे लिए बस है। अगर मैं जिंदा रहा तो यह जमीन आगा खां से मांग लूंगा। वह न दे, यह संभव हो सकता है। मगर किसी रोज तो हिंदुस्तान आजाद होगा। तब यह यात्रा का स्थान बनेगा। मैं वहां जाता हूं तो महादेव के गुणों का स्मरण करने के लिए, उन्हें ग्रहण करने के लिए। मैं उसकी स्मृति को खोना नहीं चाहता। और जिस तरह से वह यहां मरा, उससे उसके, उसकी स्त्री और लड़के के प्रति मेरी वफादारी भी मुझे बताती है कि मुझे वहां नियमित रूप से जाना चाहिए। हो सकता है कि मेरी जिंदगी में यह जगह मुझे न मिल सके और इस जगह को यात्रा-स्थल बनते मैं न देख सकूं, मगर किसी-न-किसी दिन वह जरूर बनेगा, इतना मैं जानता हूं। आज तो मैं सब काम उसका काम समझकर करता हूं। बाहर जाऊंगा तब भी उसीका काम करूंगा।"

११ नवंबर '४२

शाम को घूमते समय चर्चिल के आज के भाषण की बात आई। मैंने कहा, "थोड़ी-सी विजय हो गई तब तो ऐसा बोलने लगे हैं, आगे क्या होगा?" बापू कहने लगे, "अंग्रेज लड़ाई जीत लें, पीछे हमारी लड़ाई और तीव्र बनेगी। आज तो अखबारवाले भी कुछ खास नहीं कह सकते। बाद में वे काफी काम कर सकेंगे। अंग्रेज जितने आज बिगड़े हैं उससे ज्यादा और क्या बिगड़ेंगे? मगर पिछली लड़ाई में इनकी जीत हुई थी।

उसके बाद रौलट ऐक्ट आया था। अब भी ऐसा हो सकता है। मगर मैं मानता हूं, ऐसा कुछ वे करेंगे नहीं। करेंगे तो उनकी बड़ी बदनामी होगी। वे बदनामी की भी परवा न करें, ऐसा हो सकता है, मगर हम ही चिंता क्यों करें? हम तो आजाद हो गये। उस रात उन दो लड़कों ने महादेव से कहा था न कि हम आजाद हो गये। वह ठीक था। मैं उसे मानता हूं। जितना ज्यादा ये लोग जुल्म करेंगे, जितना बिगड़ेंगे, उतनी ही जल्दी हमारी आजादी आयेगी। मैं नहीं चाहता कि इस कारण वे पशु बनें। मगर मेरे कहने या न कहने से होता क्या है!"

आज अखबार में जयप्रकाश के जेल में से भाग जाने की खबर थी।

१२ नवंबर '४२

बापू ने जब अहिंसा इत्यादि एकादश व्रत आश्रम में प्रचलित कर दिये थे तब के अपने अनुभव और दूसरों द्वारा उनकी टीका की बातें आज बता रहे थे। फिर उनके प्रयोगों की बात करने लगे—आत्मवंचना बहुत आसान चीज है। आदमी का माप तो छोटी-छोटी चीजों में से ही निकल आता है।

१३ नवंबर '४२

सरोजिनी नायडू की लड़की पद्मजा का मंगल को जन्मदिन है। बापू कहने लगे, "हमें उसके लिए कुछ करना चाहिए।" आखिर निश्चय हुआ कि खादी के रूमाल बनाये जावें। बापू को यहां एक बहन ने दो जोड़े धोतियों के भेजे थ। बापू ने धोतियों में से थोड़े-थोड़े टुकड़े निकाल लिये थे। ओढ़ने का टुकड़ा वैसा-का-वैसा रखा था। धोती में से निकला हुआ एक टुकड़ा काम आया। उसमें से पांच रूमाल बनाए। उस पर कढ़ाई करने वगैरा का काम मेरे सिर आया। दो दिन उसमें लगे। कल विचार हुआ कि कुछ चॉकलेट बनाकर उनके साथ रूमाल भेजे जावें तो अच्छा रहेगा।

१४ नवंबर '४२

बापू ने वाइसराय को पत्र लिखा। वे उसे आज ही भेजना चाहते थे, मगर समय पर तैयार न हो सका। अच्छा ही हुआ। अब इसमें और

सुधार हो सकेंगे। रात को वह पत्र बापू ने भाई को दिया और उसके विचार तथा भाषा-संबंधी त्रुटियों को दूर करने को कहा।

शाम को घूमते समय जनरल स्मट्स की बातें चलीं। भाई कहने लगे कि यह सत्याग्रह की खूबी है न, कि आठ वर्ष की सख्त लड़ाई के बाद इस तरह मिठास और सुगंधि रहे। बापू कहने लगे, "वह तो है ही। आठ वर्ष में स्मट्स को मेरी ओर से कोई कटु अनुभव हुआ ही नहीं। उसके पास मैं जब भी जाता था हँसाकर आता था।" भाई डॉ० राधाकृष्णन्-वाली पुस्तक में बापू पर स्मट्सवाले लेख की बात करने लगे। किताब में लिखना तो आसान है, मगर गोलमेज कांफ्रेंस के अवसर पर भी उसने हिम्मत से अच्छा वक्तव्य निकाला था और आज फिर ऐसा ही किया है। आज वह बापू के परम मित्रों में से एक है। फिर लॉर्ड अर्विन की बात आई। बापू कहने लगे, "अर्विन ने खूब सख्ती करके अंत में थककर कहा था, 'क्या मैं सारे हिंदुस्तान को कब्र बना दूं?' आखिर उसने समझौता कर लेना ही उचित समझा। वेजवुड बेन ने भी तार द्वारा समझौता कर लेने का आग्रह किया। सो वह हुआ। सत्याग्रह में आखिरी शक्ति भगवान की रहती है। हम क्या जानते हैं कि इस समय उसने क्या ठानी है?"

रात को महादेवभाई की समाधि का नक्शा बनाने की बात बापू ने कही। बोले, "अगर हममें से कोई भी जिंदा बाहर न जावे तो यह नक्शा हमारे सामान में महादेव की पत्नी और लड़के को मिले।"

१५ नवंबर '४२

आज महादेवभाई को गए पूरे तीन महीने हो गए। हम यहां आए थे तब कल्पना भी नहीं की थी कि यहां महीने गुजारने पड़ेंगे। वाइसराय को १४ अगस्तवाला पत्र भेजकर महादेवभाई बहुत खुश थे। उन्होंने कहा था, "अब बापू इस पत्र के उत्तर की राह तो देखेंगे ही। उसमें दस-पंद्रह दिन लग जावेंगे और पंद्रह दिन में तो बहुत कुछ हो सकता है।" उनके सिर पर एक ही विचार भूत के समान सवार था—कौन जाने बापू कब उपवास की बात पर आ जावें?

बापू कल कह रहे थे, "मैं नहीं चाहता कि मैं इस जेल में मरूं, मगर ईश्वर को क्या स्वीकार है, यह कौन जानता है ?"

भाई रात को बारह बजे तक वाइसरायवाले पत्र पर लगे रहे। सुबह बापू ने उसे देखा। बाद में वाइसराय को जो पहला खत लिखा था उसकी और भारत सरकार के गृह-विभाग के मंत्री को भेजे गए पत्र की नकलें मांगीं। उन्हें मालिश में साथ ले गए। खाना खाते समय कहने लगे, "वाइसराय को पत्र नहीं जाएगा।" कल सरोजिनी नायडू ने कहा था, "बापू को पत्र नहीं लिखना चाहिए। बापू का पहला पत्र संपूर्ण था। अब बापू क्यों बार-बार लिखकर इन लोगों को मुंह लगाएं ? बापू इतने महान हैं कि उन्हें इन लोगों को बार-बार नहीं लिखना चाहिए। उन्हें चुपचाप बैठे रहना चाहिए। आखिर अंग्रेज मजबूर होकर बापू के पास आयेंगे।" उस समय तो बापू ने उनकी बात पर खास ध्यान नहीं दिया, मगर बाद में रात को उस पर और विचार किया। सुबह पुराने पत्र पढ़े तो उन्हें उनकी बात ठीक लगी। पत्र लिखने का विचार छोड़ दिया। सरोजिनी नायडू उधर से गुजर रही थीं, उन्हें बुलाकर कहने लगे, "अम्माजान, मुझे तुम्हारे सामने स्वीकार करना होगा कि कल जब तुमने वाइसराय को जानेवाले मेरे नए पत्र के बारे में राय जाहिर की तो मैंने उसे कोई महत्त्व न दिया। मैंने गर्व में सोचा कि अम्माजान तो बूढ़ी हो गई हैं। ये बातें ठीक तरह नहीं समझतीं। बाद में मैंने इस बारे में फिर सोचा। आज सुबह मैंने सुशीला से वाइसराय वगैरा के साथ का पुराना पत्र-व्यवहार लाने को कहा। मालिश में उसे साथ ले गया। मालिश के शुरू में १५ मिनट तक मैं काफी काम कर लेता हूं। वह पत्र-व्यवहार पढ़ने के बाद तुम्हारी दलील का वजन मैं समझा और मैंने अपने-आप सोचा कि अम्माजान तो जवान हो रही हैं—मैं बूढ़ा हो रहा हूं और सठिया रहा हूं। सो वह खत अब नहीं जाएगा।" बीच-बीच में हँसी भी खूब चलती थी। जब बापू ने कहा, "मैंने गर्व में सोचा" तो सरोजिनी नायडू ने मजाक में उत्तर दिया, "हां, जवानी के गर्व में सोचा।"

रात बापू उर्दू लिख रहे थे। मीराबहन आईं और कहने लगीं, "हां, बापू, यह ठीक है। आप अपनी उर्दू को न छोड़िए।"

१६ नवंबर '४२

आज बापू का मौन था। कल शाम को भाई के कहने से जल्दी मौन ले लिया था, सो आज प्रार्थना से पहले छूट गया। कल और आज बापू ने पद्मजा के लिए जो रूमाल बनाए थ उन पर चार भाषाओं—गुजराती, बंगाली, हिन्दी और तमिल—में 'प.' लिखा। पांचवां मैंने उर्दू में लिखकर उन्हें बताया। रूमाल और चॉकलेट पैक करके आज सरोजिनी नायडू को पार्सल दे आई। वह उसे पद्मजा के पास कल जन्म-दिन पर भेजेंगीं।

बा की तबीयत आज फिर कुछ बिगड़ी है।

१७ नवंबर '४२

आज पद्मजा का जन्म-दिन था। सुबह सरोजिनी नायडू स्नानघर में थीं तब मीराबहन ने उनका कमरा सजाया। पीछे उन्होंने 'खाखरे' बनाए। मैंने पुलाव और साग बनाया। कैदियों को आज खिचड़ी, आमटी, केले, मूली, साग, पापड़ इत्यादि खाने को दिये गए। सिपाहियों को भी खाना मिला। दिनभर धूमधाम में गुजरा। पकाने में इतनी देर लगी कि कैदी लोग दो बजे खाने को बैठे—सिपाही उससे भी आधा घंटा बाद। कैदियों का खाना सिपाहियों ने पकाया, सिपाहियों का सरोजिनी नायडू ने और उनका याने घर के लोगों का मैंने और मीराबहन ने।

१८ नवंबर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू कहने लगे कि अक्सर उन्हें खाने के कमरे से हम लोगों के हँसने की आवाज आया करती है। हम लोग भूल गए लगते हैं कि यहां हम किस हेतु से आए हैं। हँसना बुरा नहीं है; पर हँसने के योग्य वातावरण होना चाहिए। ऐसे व्यर्थ ही खाने की मेज पर बैठे इधर-उधर की बातों में पड़ने से क्या फायदा? यह थकान उतारने का सच्चा तरीका भी नहीं। यहां हमें गंभीर रहना चाहिए।

एक कैदी की आंख के पास फोड़ा था। आंख सूजकर बंद हो गई थी। दोपहर उसे चीरा लगाया। बापू बड़ी दिलचस्पी के साथ सारा समय

पास खड़े रहे और जो मदद दे सकते थे, देते रहे। अंत में पट्टी बांधी तो वह कुछ छोटी निकली। दूसरी उसके साथ जोड़ी तव काम पूरा हुआ। बापू कहने लगे, "मेरा ऑपरेशन करती तो तू कभी छोटी पट्टी लेकर शुरू न करती। पहले से पट्टी वड़ी रखनी चाहिए थी।"

कैदी ने ऑपरेशन बड़ी बहादुरी से कराया। भाई को डर था कि वह चीरे के नाम से ही डर जाएगा। शायद वेहोश भी हो जाए। इसीलिए सलाह दे रहे थे कि उसे लिटाकर चीरा लगाना चाहिए। मगर बापू कहने लगे, "नहीं, ये लोग तो बहादुर होते हैं। तुम्हें जैसे सुविधा हो वैसे करो।" मैंने उसे विठाकर ही चीरा लगाया। बाद में इस पर बापू कहने लगे, "सर्जन सोच समझकर ही निश्चय करता है; फिर उस पर पक्का रहता है। किसी के कहने से बदलता नहीं।"

१९ नवंबर '४२

बा को आज दिल की धड़कन का दौरा हुआ।

२० नवंबर '४२

कल डॉ० गिल्डर इत्यादि सबके पकड़े जाने के बारे में बापू बातें कर रहे थे, "सरकार की नीति इस समय लोगों को त्रस्त करने की है, जैसे भी बने भयभीत करना। यह उसके लिए वुरी बात है। इसमें उसका अपना अहित है।"

भाई पंद्रह मिनट घूमकर चले गए। बापू और मैं घूमते रहे। बापू दक्षिण अफ्रीका की बातें करने लगे—कैसे कैलेनवैक को उनके पास उनका एक साथी, खोजा मुसलमान, जो खुद बहुत व्यभिचारी था, लाया। उनके जीवन पर बापू कोई असर न डाल सके मगर कैलेनबैक का जीवन, जोकि उसी मुसलमान के जैसा गंदा था, बिलकुल पलट गया। फिर बापू बा के प्रति अपना भाव बताने लगे—कैसे बा ने हमेशा उनका साथ दिया, सब रिश्तेदारों ने भी बा को यही शिक्षा दी कि वे उनके पीछे चलें। बाद में कैलेनबैक वगैरा का स्त्रियों के बारे में क्या मत था, बापू का अपना क्या मत था, यह बताते रहे। कैसे बापू अपने ब्रह्मचर्य के प्रयोगों पर आए, उनका सिद्धांत, उनका प्रयोग, स्त्रियों के साथ उनका व्यवहार—

यह समझाया। उनकी राय में नवविध वाड़ के अंदर रहकर जो ब्रह्मचर्य रखा जा सके, वह उनकी दृष्टि से सच्चा ब्रह्मचर्य नहीं है।

बापू ने अकबर इलाहाबादी की कविता पढ़नी शुरू की है और बहुत रुचिपूर्वक पढ़ते हैं। अकबर की टक्कर का व्यंगमय कविता लिखनेवाला कवि हिंदी में शायद कोई नहीं हुआ है, इस बात की भी चर्चा बापू आज सुबह कर रहे थे।

२१ नवंबर '४२

कल रात मैं थोड़ी देर तक पढ़ने को बैठ गई। नींद नहीं आई थी। दिन में काफी सोई थी। बिस्तर पर पड़े इधर-उधर के विचार आ रहे थे। मुझे लगा कि समय का उपयोग क्यों न कर लूं। पढ़ने को बैठ गई इस पर बापू नाराज हुए। बोले, "सोने के समय सोना ही चाहिए।"

शाम को डॉ० शाह, नेत्र-चिकित्सा-विशेषज्ञ डॉ० पटवर्धन को लेकर आए। भाई की आंख दिखानी थी। ऊपर डार्क रूम बनाया था। सरकार ने भाई को अस्पताल में ले जाने की अनुमति नहीं दी। बापू ने पूछा कि क्या वे ऊपर आ सकते हैं? डॉक्टर ने इंकार कर दिया। मैंने समझा—मुझे तो आने ही देंगे। पूछा तो उसके लिए भी मना कर दिया। डॉ० शाह बार-बार कह रहे थे, "आशा है, आप लोग बुरा नहीं मानेंगे। यह मेरे हाथ की बात नहीं।"

बाद में बापू कहने लगे, "बात यह है कि सरकार नहीं चाहती कि डॉक्टर मुझसे मिले। मिलेगा तो वह मेरे असर के नीचे आ सकता है। और ऊपर न जाने देने का दूसरा कारण यह भी है कि कहीं कोई दूर से मुझे देख न ले।"

करीब एक घंटा आंखें देखने में लगा। देखकर बाहर से ही डॉक्टर चले गये।

बा की तबीयत अच्छी है। सरोजिनी नायडू की अच्छी नहीं मालूम होती, मगर वे तो हिम्मतवाली हैं। बीमारी की उपेक्षा करके उसे दबा देना चाहती हैं।

लॉर्ड हेलीफैक्स के लड़के की मृत्यु पर बापू के समवेदना के संदेश की पहुंच का समाचार आज वाइसराय की तरफ से मीठी भाषा में आया।

भाई ने बताया कि रात को प्रार्थना के बाद बापू अकबर की कविता— 'कहो करेगा हिफ़ाजत मेरी खुदा मेरा—' की नकल करते रहे। उन पर उसकी गहरी छाप पड़ी है। कह रहे थे कि गीता की तरह इसे घोलकर पी जाना चाहता हूं। कल रात सोते समय उसे जबानी याद करने की कोशिश कर रहे थे। एक पद याद नहीं आता था। भाई से पूछने लगे। उन्हें भी याद न था। पद बहुत सुंदर है। बापू के भाव की पूरी-पूरी प्रतिध्वनि उसमें से आती है।

: २५ :

सतयुग की कल्पना

२२ नवंबर '४२

घूमते समय बापू पहले तो उर्दू के कवियों की बातें कहने लगे। भाई उन्हें गालिब की कविता के बारे में बताते रहे। ऐसे ही इकबाल, जौक, अकबर वगैरा की बातें चलती रहीं। बाद में बात चली कि कैसे अब अंग्रेजी बोलनेवाले प्रदेश पूर्वी अफ्रीका की तिजारत को अपने काबू में रखने की योजना में लगे हैं। बापू कहने लगे, "इस योजना में इंग्लैंड ही अकेला नहीं, अमेरिका भी इसके साथ है। अमेरिका आज इतना पैसा लड़ाई में उड़ा रहा है कि जिसका हिसाब नहीं; क्योंकि न उड़ावे और जर्मनी जीत जावे तो अमेरिका को तो वह निगल ही जावेगा। अमेरिका जब इतना खर्च करता है तो उसे और पैसा चाहिए ही। अमेरिका के पास आबादी तो है; पर उसकी वास्तविक शक्ति उसके पैसे में है। मगर मैं मानता हूं कि अमेरिका पर हिंदुस्तान का असर इतना है कि अमेरिका हमें लूटने में नहीं शामिल होगा, और हो भी तो भले हो। योद्धा को जैसे सामना करनेवाले को देखकर ज्यादा जोश और उत्साह आता है,

वही मेरा हाल है। मैं चाहता हूं कि जर्मनी और जापान की जीत न हो। जिस शत्रु को हम जानते हैं उसके साथ निपटना ज्यादा आसान है। जर्मनी और जापान के पास नया कुछ भी नहीं है। पुराने ढंग की भी जो चीजें हैं वे भी सड़ी-गली हैं। उन्हीं को उन्होंने अपना आदर्श मान लिया है। दूसरी ओर अभी रूस है। उसके पास भली-बुरी, कैसी ही हो, कुछ नई चीज है। अगर रूस आज मिट जावे तो गरीबों के पास कौन-सी आशा रह जावेगी? रूस ने पाशविक बल का बहुत इस्तेमाल किया है, तो भी वह बल और सत्ता जनता के हाथ में है न। यह चीज आजकल के मेरे पढ़ने से मुझ पर और स्पष्ट हो रही है। किस बहादुरी से वे लोग आज लड़ रहे हैं। अगर अंग्रेज जीतेंगे तो रूस की बहादुरी के कारण। अब मैं जवाहरलाल की चिंता को समझ सकता हूं। वह मुझसे कहता है, 'गरीबों के लिए तो दो ही चीज हैं, या तो तुम्हारा रास्ता या रूस का। तुम्हारा प्रयोग तो जब सफल होगा तब देखेंगे, मगर रूस ने तो सफल कर दिखाया है।' रूस मटियामेट हो जावे, यह कैसे सहन हो सकता है? मैं भी इसे मानता हूं। हो सकता है कि मेरा तरीका सचमुच मेरी अपनी मूर्खता का ही चिह्न हो, हो सकता है कि मैं कल्पना के स्वर्ग को देख रहा हूं। अगर ऐसा हो तो भी मुझे फिकर नहीं। मैं इस बारे में बुद्धि चलाना ही नहीं चाहता। जो चीज बुद्धि से निकली नहीं, उसमें मैं बुद्धि को क्यों चलाऊं? क्यों बुद्धि के प्रपंच में पड़ूं? यह नहीं कि मैं बुद्धि चला नहीं सकता, मगर बुद्धि चलाकर मैं अपनी श्रद्धा को हिलाऊं क्यों? बस मुझे मेरी श्रद्धा का सेवन करते हुए कल्पना के स्वर्ग में रहना भी पसंद है।"

भाई कहने लगे, "इतिहास के विस्तार को देखें तो उसमें कोई नैतिक हेतु विकसित होता है, इस बारे में शंका होने लगती है। इतिहास की वैर्तकिक क्रिया नीति-अनीति के आधार पर निर्मित नहीं लगती।" बापू कहने लगे, "वह ठीक है, मगर इतिहास को नैतिक स्वरूप देने का प्रयत्न हो रहा है।"

पीछे भाई कहने लगे, "काकासाहब की ब्रह्मदेश की यात्रा का एक पैराग्राफ मुझे याद रह गया है—पर्वत की चोटी हमें बहुत लुभाती है।

ओ हो, वहां कैसा भव्य दृश्य होगा! एक पर से दूसरी पर चढ़ते हैं। आखिर ऊपर पहुंच कर देखते हैं तो बस कुछ खास नहीं मिलता। मुझे लगा करता है कि जीवन में सभी चीजों के बारे में क्या ऐसा ही नहीं होगा? अर्थात प्रयत्न में ही सब कुछ है। अंत क्या होगा, उसके विचार में कुछ नहीं।" बापू कहने लगे, "हमारी लड़ाई में ऐसी बात नहीं है। यहां तो हमें निश्चित और प्रत्यक्ष परिणाम अंत में मिलने ही वाले हैं।" भाई कहने लगे, "वह तो है; परंतु वैतर्किक द्वंद्व की क्रिया तो अनंत और अनादि है न। इसलिए सतयुग की स्थापना तो कल्पना जगत में ही रहेगी। उत्साह को बढ़ाने या कायम रखने के लिए वह भले ही उपयोगी हो; परंतु उसको सचमुच एक साध्य हेतु मानकर बैठ जाना क्या मात्र भोलेपन का चिह्न नहीं है? इसीलिए ब्रुल्सफोर्ड ने एक जगह कहा है न कि सतयुग (यूटोपियाज) की कल्पनाएं आनेवाली स्थिति की इतनी सूचक नहीं होतीं जितनी कि किसी युग में प्रजा किस दर्जे तक पहुंच चुकी है, उसकी सूचक हैं। मानव-समाज की प्रारंभिक अवस्था में प्रगति की ओर ले जाने के लिए ऐसी दंतकथाओं की आवश्यकता होती है; परंतु आज जब कि विज्ञान और इतिहास के अनुभव के कारण मानव-समाज तरुण अवस्था को पहुंच चुका है तब ये दंतकथाएं बहुत हद तक गैरजरूरी-सी हो गई हैं।" बापू कहने लगे, "इस किस्म के सतयुग को, चूंकि वे आदर्श जगत में ही संपूर्णतया मिलते हैं, इसलिए उन्हें हम एक मिथ्या दंतकथा का दर्जा नहीं दे सकते। यूक्लिड का रेखा-बिंदु तो सचमुच आदर्श जगत के बाहर नहीं मिलता; परंतु इसलिए वह कम सच्चा नहीं। एक आदर्श की हैसियत से तीनों काल में वह सत्य है। उसका आधार न हो तो भौतिक विज्ञान के तौर पर यूक्लिड का सिद्धांत आगे नहीं चल सकता। इसलिए यद्यपि इतिहास का वैतर्किक द्वंद्व अनंत और अनादि है तो भी सतयुग कोई भ्रमणा नहीं; परंतु सत्य पदार्थ है और इस सापेक्ष जगत में उसका उतना ही स्थान है जितना कि किसी भी सत्यता को।"

शाम को बादल थे। हवा में वर्षा-आगमन का आभास था। सामने पहाड़ सुंदर दीख रहे थे। बापू कहने लगे कि यह दृश्य चित्र उतारने

लायक है। भाई मीराबहन से कहने लगे कि उस दृश्य का रंगीन चित्र बनाओ।

: २६ :

भंसालीभाई का उपवास

चिमूर के फौजी अत्याचारों के बारे में जांच करने से सरकार ने इंकार किया है, इस कारण भंसालीभाई ने सेवाग्राम में निर्जल उपवास शुरू किया है, ऐसी खबर पत्रों से मिली। सबको इससे काफी चिंता हुई। बापू पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? ११ तारीख से उपवास शुरू है। अखबार में लिखा है कि पानी पीना भी छोड़ दिया है। कब तक निभेगा भगवान जाने! भंसालीभाई के लिए तो चिंता होती ही है। मगर इसकी बापू पर क्या प्रतिक्रिया होगी, उसकी सबको और भी चिंता हो रही है।

शाम को बापू जल्दी घूमकर लौटे। कह रहे थे कि प्यारेलाल के साथ कुछ बातें करनी हैं। पंद्रह मिनट बात की। सवा छः बजे कातने को बैठे। कातते समय रोज की तरह मैंने बाइबिल पढ़कर सुनाया।

२३ नवंबर '४२

आज बापू का मौन था। भंसालीभाई की कोई और खबर शायद मिले, इस आशा से सबने अखबार एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख डाले, मगर खबर कोई थी ही नहीं।

२४ नवंबर '४२

शाम को घूमते समय बापू बात करने लगे, "मैं शुद्ध आदमी हूं तो मेरे साथ घनिष्ठ संबंध में आनेवाले लोगों को दिन-प्रतिदिन उन्नति करना ही चाहिए। कोई चीज इस जगत में स्थिर नहीं रह सकती। उसे आगे बढ़ना है या पीछे हटना है। मेरे संपर्क से कोई पीछे हटे, यह कैसे सहन हो सकता है? मेरे संपर्क में आनेवालों का अनिष्ट हो तो मेरा इष्ट कैसे हो सकता है? किसी को झूठ सिखाकर मैं सत्य थोड़े ही सीख सकता

हूं इसलिए यह पक्की वात है कि मेरे संपर्क में आनेवाले उत्तरोत्तर ऊपर चढ़ें। तभी मेरा प्रयोग सफल हुआ कहा जा सकता है।"

बापू ने एक तार भंडारी को भेजा और भंसालीभाई के साथ तार से संपर्क करने की सरकार से इजाजत मांगी, ताकि हो सके तो उनका उपवास छुड़वा सकें। भंडारी ने तार को टेलीफोन द्वारा वम्वई सरकार को सूचित किया। आशा थी कि जवाव शायद आज ही आ जावे, मगर रात तक नहीं आया।

सुबह घूमते समय भंसालीभाई की ही बातें होती रहीं। बापू कहने लगे, "मैं उसे अपने से ऊंचा समझता हूं। वह तीनों काल निर्भय रहता है। यह साधु का लक्षण है। वह जो कर सकता है, मैं नहीं कर सकता।" मैंने पूछा, "भंसालीभाई को क्या लगता होगा?" बोले, "कुछ नहीं, वह तो महाभारत को भी घोंटकर पी गया है। महाराष्ट्रियों में धर्म-ग्रंथों में से अद्‌भुत नतीजे निकालने की विलक्षण क्षमता है।" मैंने कहा, "और महाराष्ट्र में से कितने संत निकल चुके हैं।" बापू कहने लगे, "इसीलिए मैंने महाराष्ट्र से अभी तक आशा नहीं छोड़ी। विनोवा को ही देखो।" मैंने कहा, "आपके पास से भी संत काफी निकले हैं। आश्चर्य नहीं अगर महादेवभाई भी भविष्य में संत की तरह पूजे जावें।"

बापू कहने लगे, "मैंने तो कहा ही है कि महादेव की समाधि तीर्थस्थल होनेवाली है।" मैंने कहा, "ऐसे ही ईश्वर न करे, भंसालीभाई जावें तो वे भी संत माने जानेवाले हैं ही, और विनोबा तो आज संत हो ही चुके हैं। उनके तो लेख भी महाराष्ट्र में फैल चुके हैं। 'गीताई' घर-घर में गाई जा रही है। तुकाराम की तरह विनोबा के काव्य महाराष्ट्र के बच्चे-बच्चे के मुंह पर चढ़नेवाले हैं।" बापू कहने लगे, "यही चीज मुझे आश्वासन दिलवाती है कि मेरा काम निष्फल नहीं जावेगा। मेरी श्रद्धा अंधश्रद्धा नहीं है। जो मैं कहता हूं, उसमें सचमुच कुछ सार है।"

भंसालीभाई पर प्रभाव डालनेवाला आज आश्रम में कोई नहीं है—किशोरलालभाई नहीं, काकासाहव नहीं, इसकी चर्चा हुई। बापू ने तो भंसालीभाई को तार करने का सोच ही लिया था, साथ ही मन में तटस्थता

भी थी। बापू ने कहा, "मेरी मानसिक तैयारी है कि अगर इजाजत न मिले तो इस वक्त एक भंसाली नहीं, हमें अनेक भंसाली खोने की तैयारी रखना है।" मगर ईश्वर न करे, भंसालीभाई सचमुच चले जावें! यह मानसिक तैयारी उन्हें जबर्दस्त आघात से बचानेवाली नहीं है।

२५ नवंबर '४२

आज सबेरे घूमते समय बापू व्यवस्थित तरीके से काम करने के महत्त्व की बातें सुनाते रहे। मैं आज सुबह प्रार्थना के पश्चात् सोई नहीं थी—डायरी लिखने लगी थी। उसमें उन्हें अव्यवस्थित वृत्ति लगी। हर रोज प्रार्थना के बाद आधा घंटा तो सोना ही चाहिए, ऐसा उनका मत था। उन्हें कुछ काम भी था और मैं दूसरे कमरे में बैठी थी, इससे सुबह कह नहीं सके। बोले कि तुम्हें ऐसी बातें खुद सोचनी चाहिए। भाई की बात कहने लगे, "उसके जैसा उदार आदमी मैंने देखा नहीं। जिसकी सेवा करना स्वीकार करेगा, पूरी तरह तन्मय होकर करेगा। मैं उसको पूरी तरह अनुकूल होना चाहता हूं ताकि उसमें जो सुवर्ण-जैसे गुण हैं, वे खिल सकें।"

दोपहर को आधा घंटा सो गई। अखबार में भंसालीभाई की आज भी कोई खबर नहीं थी, मगर होमीतारपुरवाला नाम के एक लड़के ने उसके बारे में एक छोटा-सा लेख 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में लिखा था। अच्छा था।

बापू ने भंडारी को एक पत्र लिखा था कि बंबई सरकार को टेलीफोन या तार से मेरी तरफ से कहो कि मेरे तार का शीघ्र उत्तर दे; क्योंकि ऐसे मामलों में समय बहुत कीमत रखता है।

२६ नवंबर '४२

आज सुबह भाई घूमने आए। बापू दक्षिण अफ्रीका के अपने कुछ अनुभवों की बातें करते रहे। फिर निजी बातें करते हुए बोले, "मैं चाहता हूं कि तुम हरएक चीज में नियमबद्ध रहने लगो। तब तुम जो करना चाहते हो, वह कर सकोगे।"

दोपहर अख़बार में भंसालीभाई की खबर थी। ११ नवंबर से उनका उपवास था। १९ को उपवास में पैदल चलकर दोबारा चिमूर गए, २२ को पहुंचे, ६८ घंटों में ८० मील की यात्रा की। उसमें सिर्फ

पंद्रह घंटे आराम किया। पुलिस फिर उन्हें पकड़कर वर्धा छोड़ गई है। वे अब फिर चिमूर जाने का विचार कर रहे हैं।

शाम को घूमने के बाद मीराबहन के साथ पक्षी देखने नीचे गई। वे बता रही थीं कि मानों घड़ी को देखकर कुछ पक्षी बारी-बारी से आकर नीचे तार पर बैठते हैं। उनमें दो उल्लू हैं। वे शाम के ९-१० पर आते हैं।

मीराबहन आज यह विचार कर रही हैं कि सारी दुनिया में कैसे क्रांति हो सकती है। उनकी मान्यता है कि पहले कुछ नेता रूस जावें, फिर हर गांव से कुछ किसान वहां भेजे जावें, वे आकर बाकी लोगों में प्रचार करें। मीराबहन का दिमाग आज रूस और मार्क्स से ही भरा हुआ है। बापू कह रहे थे, "यह एक छोटी-सी मिसाल है कि कैसे उनका मन एक बालक की भांति कल्पना के घोड़े पर सवार होकर कहां-से-कहां पहुंच जाता है, नहीं तो आज इस जेल में बैठे हुए रूस जाने का प्रश्न ही कैसे उठ सकता है? और फिर क्या हम इतने कंगाल हैं कि रूस जाने के सिवा और कुछ कर ही नहीं सकते?"

२७ नवंबर '४२

प्रातः घूमते समय बापू भाई के साथ फिर इतिहास और ऐतिहासिक प्रक्रिया की चर्चा करने लगे। चर्चा मार्क्स के शिक्षण पर आई। बापू कहने लगे, "मार्क्स का कहना है कि पांच इंद्रियों से जिसे पहचाना न जा सके उसको मानने की जरूरत नहीं, मगर मैं कहता हूं कि इंसान कितनी ही होशियारी से काम करे तो भी कुछ-न-कुछ छिद्र रह जानेवाला है। यह अज्ञात तथ्य मनुष्य के हिसाब को गलत सिद्ध कर सकता है। इसे ही गीता ने 'दैव' के नाम से पुकारा है—'दैवंचैवात्र पंचमम्'। मार्क्सवादी उत्तर देंगे कि आज हमने कुदरत पर पूरी तरह काबू नहीं पाया, मगर कभी नहीं पायेंगे, यह मानने का आपको अधिकार नहीं है। तो मैं कहता हूं कि जब पाओगे तब की बात तब, मगर आज आपको इस अज्ञात तथ्य को अपने सामने रखना ही होगा।"

फिर रूस की बात करने लगे, "रूस ने इतना किया है तो भी मैं कहता

हूं कि रूस का काम तब तक टिक नहीं सकता, जब तक कि उसके साधन शुद्ध नहीं होते। मेरे सामने तो एक ही चीज है—'सत्य', वह भी पूर्ण सत्य—भले ही वह पांचों इंद्रियों के द्वारा न अनुभव किया जा सके। तो भी वह है, जैसे कि यूक्लिड की लाइन भले ही कल्पना में रहे तो भी उसका अस्तित्व तो है ही। सो सत्य है और उसे हमें ढूंढ़ना है। उसे ढूंढ़ने का एक ही साधन है—अहिंसा। उसमें हमें चाहे हजारों वर्ष लग जायं; लेकिन हम उसे प्राप्त करेंगे तो हमारा काम पायदार होगा—टिकनेवाला होगा।" पीछे मार्क्सवाद की पुस्तक की बात चली। बापू कहने लगे, "उसने अच्छी किताब लिखी है, तो भी उसमें कई त्रुटियां हैं। वह पुस्तक आज अमर हो गई है; क्योंकि लेनिन ने उसमें बताए सिद्धांत पर अमल कर दिखाया। पूर्णतया तो वे भी नहीं कर पाए, तो भी उन्होंने काफी कर लिया है। इसी तरह हमें भी अब करके दिखाना है।"

भाई पूछने लगे, "प्रकृति के नियम स्वतंत्र, सनातन और शाश्वत हैं। उनका स्रोत मनुष्य का मस्तिष्क नहीं। इसी तरह आज पूंजीवाद का कानून जो मार्क्स बताता है, वह भी सत्य माना जाता है, क्या वह उपरोक्त अर्थ में ठीक है? या यह कहा जाय कि ऐसे कानूनों की उत्पत्ति मनुष्य की कल्पना में से होती है और उसका समर्थन करनेवाली ऐतिहासिक युक्ति इंसान बाद में ढूंढ़ लेता है? अर्थात ये सब कानून मनुष्य के बनाए हुए हैं और मनुष्य से अलग इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है?" बापू कहने लगे, "कुदरत के कानूनों का तो स्वतंत्र अस्तित्व है। मनुष्य हो या न हो, सूर्य की गति कायम रहेगी। गुरुत्वाकर्षण शक्ति काम करती रहेगी, मगर पूंजीवाद के कानून का तो आधार ही मनुष्य है। मनुष्य के अनुभव, मनुष्य के मन पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसमें से वह कानून निकाला गया है। इसलिये उसकी मैं कुदरत के कानून से तुलना नहीं करता हूं। उसको इस तरह तीनों काल में सच्चा नहीं मानता हूं।"

२८ नवंबर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू से भाई ने कहा, "लोग पूछते हैं कि अहिंसा के द्वारा तुम लोग धनवानों के फंदे में से धनहीनों को कैसे छुड़वा

सकते हो?" बापू कहने लगे, "मैं तो उसके उत्तर में यह कहूंगा कि अगर धनहीन को अपनी शक्ति का ज्ञान हो जावे तो फंदे में फंसा नहीं रह सकता। मैं तो खुद धनहीनों में से हूं। मुझसे कोई भी जैसे चाहे, काम नहीं करवा सकता। माना कि पहले तो मैं नौकरी करके रोटी कमाता था, फिर मुझे ज्ञान हुआ कि नौकरी क्यों? मेरे पास चर्खा है। मैं कातूंगा और उसकी कमाई से गुजारा करूंगा। किसी के सामने लाचार नहीं बनूंगा। जो मैं कर सकता हूं, वह सब कर सकते हैं। इस विचार-श्रेणी पर ही मैंने समाज-क्रांति की अपनी कल्पना की नींव रखी है।"

भाई ने बताया कि कुछ लोगों ने उनसे चर्चा करते हुए पूछा था, "युवक वर्ग तो उत्साह और आवेश पर ही चलता है। उनके सामने हम अपनी कल्पना की एक पूरी तस्वीर रख सकें तो अच्छा हो।" इसका भाई ने क्या उत्तर दिया था, यह भी बताया तो बापू ने कहा, "तो यह चीज तुम लिख डालो। उसमें अपूर्णता रह जायगी तो उसे देख लेंगे।" भाई ने चर्चा करनेवालों से कहा था कि हम बाद में इस काम के लिए शासन-तंत्र की मदद भी लेंगे, इत्यादि। बापू ने कहा, "इस उत्तर में विचार-दोष हैं। आज हमारे पास सत्ता नहीं है। सत्ता इस्तेमाल करने की बात क्यों करना? वे लोग तुम्हें जवाब देंगे कि ऐसे तरीके से तुम्हें सत्ता मिल नहीं सकती। कांग्रेसी मिनिस्ट्री (मंत्रिमंडल) आ गई। वह तो एक संयोग की बात थी—ऐसा समझो। वाइसराय भी इस बात पर तुले थे कि समझौता करना है। वह खुद १९३५ के कानून के निर्माता हैं। उन्हें लगा कि यह चल जावे तो अच्छा है। ऊपर से भी उन पर दबाव था कि कुछ करो। सो मिनिस्ट्री आई। मगर बाद में वे लोग उसके गर्भित अर्थ को समझे। ऊपर से तो गवर्नर तारीफ करते थे, मगर खुफिया-रिपोर्ट में जाता होगा कि ये लोग खरीदे नहीं जा सकते। इसके साथ हमारा काम नहीं चल सकता। सब मंत्रिमंडल केंद्रीय कांग्रेस पार्लमेंटरी बोर्ड के द्वारा चलाए जाते थे। सो वह बहुत दिन चलनेवाली चीज नहीं थी। आज तो युद्ध के कारण हम मिनिस्ट्री में से निकले, वरना कौन जाने, कैसी परिस्थिति में निकलना पड़ता। सत्ता हाथ में आ जावे फिर तो ऐसे सुधार

करने में कुछ कठिनाई नहीं आती और फिर इन चीजों के बारे में शंका करनेवाले भी नहीं रहेंगे। राजकोट एक छोटी-सी जगह थी। वहां जब हमें सफलता मिली थी, उसके बाद गड़बड़ नहीं हो गई होती तो काठियावाड़ का तो रूप ही बदल जाता और सारे हिंदुस्तान पर उसका असर पड़ता। मगर आज सत्ता हमारे पास है नहीं।"

आज महादेवभाई को गये पंद्रह हफ्ते हो गये। समाधि पर एक हफ्ते से ॐ नहीं बनाया। लिपाई वगैरा हो रही है। पत्थर लगाए हैं, सो हम फूल रखकर ही चले आते हैं।

श्रीमती नायडू और मि० कटेली के लिए आज पूरियां बनाईं, मीराबहन और बा के लिए मेथी के परांठे। शाम को मीराबहन की तबीयत बिगड़ी। पेट खराब था। सिर में दर्द और ९९.६ बुखार, ऊपर से मचली होती थी। सुबह ही वे कह रही थीं कि जी आज अच्छा नहीं है। बाद में खाना वगैरा खाया तो उससे जी और बिगड़ गया।

२९ नवंबर '४२

शाम को घूमते समय भाई के साथ कलवाले प्रश्न पर आगे चर्चा करते हुए बापू बोले, "मैं मानता हूं कि अहिंसा के द्वारा सब प्रश्न हल हो सकते हैं। यह भी मानता हूं कि अगर कोई देश तैयार हो सकता है तो हिंदुस्तान ही इस तरह से प्रश्न हल करने को तैयार हो सकता है।

"मनुष्य-स्वभाव ऊर्ध्वगामी है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरी दलील को काटने का काफी सामान मनुष्य-समाज की आज की परिस्थिति में पड़ा है। सब-के-सब त्यागी नहीं बनने वाले। जापान के चिथड़े अगर आज उन्हें मुफ्त मिलें तो सब लेंगे। उनमें अनेक त्रुटियां हैं। मार्क्स पूंजीवाद की चर्चा करता है और कहता है कि आखिर ये लोग जावेंगे कहां? ऐसे ही मैं कहता हूं कि आज का मनुष्य-स्वभाव हमें ले जायेगा कहां? अगर अहिंसा को न अपनावें तो लड़ाई-पर-लड़ाई होती ही रहेगी। सुधरा हुआ मनुष्य-समाज इस चीज को कैसे सहन कर सकता है? और धनवानों के वर्ग में से मार्क्स-पद्धतिवालों ने बड़े-बड़ों को मार डाला। छोटे-छोटे धनवान तो उन्हें भी रखने पड़े; क्योंकि उन्हें भी

मारने जाते तो उनकी अपनी पार्टी में बहुमत और अल्पमत के बीच झगड़ा उठ खड़ा होता। सो जैसे हमारे यहां पाटीदार पड़े हैं, ऐसे उनके यहां कूलाक पड़े हैं। सत्ता तो उनके हाथ में है ही नहीं। अहिंसा-पद्धति के द्वारा हम बड़े धनवानों को भी मार नहीं डालते, अगर उनकी सत्ता धन-हीन वर्ग पर से उठ जाती है।"

भाई कहने लगे, "आप इसे एक दर्शन का रूप देकर इस पर एक पुस्तक लिख डालिए।" बापू कहने लगे, "मुश्किल यह है कि यहां पर मार्क्स भी मैं हूं और लेखक भी मैं हूं। पुस्तक तो मेरे मस्तिष्क में पड़ी है। जब मौका आता है तब मैं उसमें से मतलब की बात निकाल लेता हूं।" भाई कहने लगे, "आप तो परिस्थिति देखकर क्या करना है इसका निश्चय कर लेते हैं। आपके मस्तिष्क में वह सब है, मगर आप के बाद लोगों का मार्ग-दर्शन कौन करेगा? आज तो मौका आने पर आपकी ज्ञानेंद्रिय जाग्रत हो जाती है और आप काम कर लेते हैं। मौका न हो तो बरसों तक चुप ही बैठे रहते हैं।" बापू कहने लगे, "हां, वह ठीक है। मौका आने पर मेरी छठी ज्ञानेंद्रिय जग उठती है और बाद में फिर सो जाती है। मगर तुम जो कुछ कह रहे हो वह मैं कर नहीं सकता। वह मेरी शक्ति से बाहर है। काका ने भी यही कहा था। मैंने कहा, 'काका, मैं स्मृतिकार नहीं हूं।' कुछ प्रेरणा हुई तो कह दिया। जब तक परिस्थिति मेरे सामने आकर खड़ी न हो जावे, मैं निश्चय नहीं कर सकता कि क्या करूंगा। तो मैं स्मृति कैसे लिखूं। अभी इस लड़ाई में ही मैंने पहली लड़ाइयों से उलटा किया है। पहले यह था कि कैदियों की तरह का बर्ताव अमलदारों के साथ करना है, उनका हुक्म मानना है। वह अहिंसा में से निकला था। आज उसी अहिंसा में से उससे उलटा निकला है; मगर इन दोनों का विरोध मात्र ऊपर का विरोध है, सच्चा विरोध नहीं। सो यह अहिंसा की कार्य-पद्धति तो धीरे-धीरे विकसित हो रही है और होती रहेगी। मेरी इच्छा होते हुए भी मैं स्मृति नहीं लिख सकूंगा।"

पीछे मिल के कपड़ों की बातें होने लगीं। बापू ने कहा, "सब जानते हैं कि मैं तो मिलों का खात्मा चाहता हूं, मगर आज मैं उसके लिए वायु-

मंडल तैयार कर रहा हूं। जो खादी नहीं पहनते, वे भी जानते हैं कि असल चीज तो खादी ही है। मगर वे अपना शौक नहीं छोड़ सकते या कुटुंब में महंगी खादी खरीदने की शक्ति नहीं रखते; पर उनमें से अधिक-तर का मन खादी के लिए तैयार है। इस तरह वातावरण तैयार हो रहा है। समय आने पर बाकी काम कानून से हो जायगा।"

शाम को ७-२५ पर बापू ने मौन लिया।

३० नवंबर '४२

आज बापू का मौन था। सो घूमते समय भाई ने कल की बात के सिलसिले में ही कुछ प्रश्न बापू के विचारार्थ उनके सामने रखे। उनमें से दो तो ये थे: (१) सत्याग्रही जड़वत क्यों लगते हैं? (२) चर्खा और दूसरे ग्रामउद्योग हिंदुस्तान की गरीबी को दूर करने के लिए काफी हैं, भले ही वे दुर्भिक्ष से लोगों को बचाने में समर्थ न हों? ग्रेग ने जो उत्तर दिया है, वह संतोषजनक नहीं है।

श्री कटेली ने कुछ सब्जियां बोई हैं। शाम को हम उनका साग-भाजी का बगीचा देखने गए। गोभी बोई है, मगर उसके तैयार होने में अभी दो महीने और लगेंगे। तब तक छः महीने के हिसाब से तो हमारे यहां से जाने के दिन आ जावेंगे। मन में आता है कि चार महीने के करीब तो गुजर गए, अब दो महीने में क्या एकाएक कोई चमत्कार हो उठेगा कि परिस्थिति बदल जायगी? मगर बापू की श्रद्धा है कि कुछ होगा और हम दो महीने में जेल से निकल जाएंगे। कहते हैं, विश्वास से पर्वत भी हिल जाते हैं।

मंसालीभाई की कोई खबर नहीं। बापू का तार और पत्र वगैरा सब सरकार हजम कर गई लगता है।

बापू रात को १२ बजे तक सो नहीं सके। बहुत थके-से थे। विचार भी चलते थे।

सर्दी काफी पड़ने लगी है। रात को और सुबह ठंड हो जाती है। बाद में दिन भर सर्दी भाग जाती है। बादल दो-एक रोज आए और बिना बरसे चले गए। आज आकाश बिलकुल खुला है।

: २७ :

ट्रस्टीशिप का सिद्धांत

१ दिसंबर '४२

शाम को घूमते समय बापू ने भाई के इन प्रश्नों का उत्तर दिया—"राजनैतिक प्रश्नों में तो हमें वैधानिक अंकुश चाहिए तो फिर आर्थिक क्षेत्र में हम संरक्षकों की दया पर क्यों रहें? क्यों न इन पूंजीपतियों पर भी कानून का बंधन हो और सबको कानून से ट्रस्टी बनना पड़े?"

उत्तर में बापू ने कहा, "मैंने ऐसा नहीं कहा कि आगे जाकर वैधानिक अंकुश नहीं होगा। आखिर कानून से उनका भी कमीशन—वेतन बंधेगा। सिर्फ इतना ही है कि मैं उनका हनन नहीं करना चाहता। उनकी शक्ति का उपयोग कर लेना चाहता हूं, जैसे कि जमनालालजी थे। उनकी संपत्ति का उपयोग समाज के लिए हो तो भले ही वह संपत्ति जमनालालजी की कहलाए। रूस में पूंजीपतियों का सर्वनाश किया गया और उनसे कहा गया, 'आपको यहां रहना है तो किसान बन जाओ।' मगर मैं कहता हूं कि तुम्हें किसान बनने की जरूरत नहीं। तुम्हारे हृदय का परिवर्तन हो जाय तो मेरे लिए बस है।" भाई कहने लगे, "सच्ची ट्रस्टीशिप की स्थिति न आए तबतक इस बीच के समय में क्या हम सिद्धांत में ढील नहीं दे देते?" बापू कहने लगे, "अहिंसा में समझौते को हमेशा स्थान रहा है। समझौता अहिंसा का शरीर है—ऐसा कहा जा सकता है। मगर इस चीज में समझौते की बात नहीं आती। ट्रस्टीशिप कोई आरजी चीज नहीं है। वह तो स्वयं एक आदर्श है। पूंजीपतियों के लिए ट्रस्टीशिप की यह मेरी बनाई अंतिम स्थिति है। इससे आगे जाने की गुंजायश नहीं। हमारी (कांग्रेस की) संस्था स्वतंत्र इच्छा से संघटित लोगों से बनी है। हम पूंजीपतियों से स्वतः अपने हकों का त्याग करने को कहते हैं। हम आज उनके सामने यह नहीं रख सकते कि तुम पांच सैकड़ा कमीशन लो या दो सैकड़ा। जितना त्याग वे स्वयं करें उससे मुझे संतोष हो जायगा मगर कोई ऐसा निकले कि वह दो सैकड़ा लेना चाहे तो मैं उससे यह थोड़ा कहूंगा कि

नहीं, तुम दस सैकड़ा लो। इस तरह अच्छा वातावरण पैदा हो जाएगा। मानो कि एक पूंजीपति टेढ़ा निकला। कहने लगा कि जाओ, मैं कुछ नहीं छोड़ता। तो मैं कहूंगा कि तुम्हें छोड़ना पड़ेगा—कानून से मजबूर होकर छोड़ना पड़ेगा। आखिर पूंजीपति अल्पमत में हैं। उन्हें बहुमत के सामने झुकना ही है। मुझे उनसे बहुत-सी चीजें छीननी होंगी, जैसे कि खिताब है, वर्ग-भाव है। मगर मैं उनकी पूंजी छीनना नहीं चाहता। उसका समाज के लिए उपयोग चाहता हूं।"

२ दिसंबर '४२

आज सुबह घूमते समय भाई ने बापू से कहा, "हमें यह हिसाब निकालना चाहिए कि सामान्य मनुष्य की आवश्यकताएं क्या-क्या हैं, उन्हें पूरी करने के लिए मेहनत की कितनी इकाइयों (Man-hours of labour) की आवश्यकता है? हाथ से काम करके वह पूरी हो सकती है या मशीन का आश्रय लेना पड़ेगा? लेना पड़ेगा तो किस हद तक?" बापू कहने लगे, "इस बारे में काफी विचार हो चुका है। पूरा काम नहीं हो पाया, इतना मैं मान लेता हूं, मगर मैंने विनोबा, कुमारप्पा और नारायणदास आदि से हिसाब करवाया है। वह हिसाब 'हरिजन' में समय-समय पर छप भी चुका है। एक बात के बारे में मैंने पूरा विचार नहीं किया। वह है जमीन। जमीन के बिना अकेले चर्खे और अन्य ग्राम-उद्योगों से लोगों की गरीबी दूर नहीं की जा सकती। जमीन का प्रश्न कैसे हल होगा, यह मैं पूरी तरह से आज जानता नहीं हूं।"

भाई कहने लगे, "मार्क्स के सिद्धांत का बहुत-सा हिस्सा ज्यों-का-त्यों स्वीकार किया जा सकता है। हां, जहां वे हिंसक बल के उपयोग की बात बताते हैं, वहां हम अहिंसा बल रख दें। लोग क्यों मान लेते हैं कि अहिंसक बल उतना काम नहीं दे सकता? आज का अनुभव हमें इससे उलटा सिखाता है। मरने की तैयारी तो दोनों में चाहिए ही। इतना हो तो अहिंसक का आत्म-बलिदान सामने के पक्ष को हिंसा की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावित कर सकता है।"

बापू बोले, "मरने की तैयारी तो आवश्यक है ही, मगर आज तुम

देखोगे कि मरने की तैयारी भी उन लोगों की अहिंसावादियों से ज्यादा है। और केवल मरने की तैयारी से काम नहीं चलता। जापान के 'हाराकिरी' (आत्मघात) करनेवालों को देखो। वे लोग मरने को कोई चीज नहीं समझते; साथ ही उन्होंने हिंसा को धर्म बना रखा है। जब दोनों के मरने की तैयारी एक-सी हो जायगी तब हम प्रत्यक्ष रूप में देख सकेंगे कि अहिंसक बल हिंसक से बहुत आगे बढ़ जाता है। आज तो कबूल करना होगा कि हिंसकों में मरने की तैयारी और शक्ति बहुत अधिक है।"

भाई कहने लगे, "हिंसा से वे लोग जो परिणाम लाना चाहते हैं, वे उनके साधनों के आंतरिक दोष के कारण स्थायी नहीं हो सकते, पूर्ण नहीं हो सकते और अंत में समय भी ज्यादा लेते हैं। रूस को लीजिए। उसकी मान्यता है कि शासन-तंत्र (State) को आखिर अनावश्यक होकर निकल जाना है, मगर वास्तविक परिस्थिति उससे उल्टी है। वहां शासन-तंत्र तो दिन-प्रतिदिन ज्यादा मजबूत होता जा रहा है। स्टालिन इसका कारणभूत नहीं माना जा सकता। एक भी साम्यवादी के मुंह से यह उत्तर नहीं निकल सकता; क्योंकि इन लोगों की फिलॉसफी में व्यक्ति को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। जो हो रहा है, जो हुआ है, वह उनके साधनों के दोष के कारण हुआ है। ये दोष उनके साधनों के गर्भ में रहे हैं।"

बापू ने कहा, "किसी कच्चे मार्क्सवादी पर ऐसी बातों का प्रभाव पड़ सकता है, मगर पक्के जयप्रकाश-जैसों पर नहीं, जो आज सत्ता को बलपूर्वक छीनने की तैयारी कर रहे हैं।"

भाई कहने लगे, "आप ठीक कहते हैं। इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम उनका हृदय पलट नहीं सकते। हमें उनके साथ मिलकर काम करना होगा और उनकी विचारधारा में अहिंसा को जिस हद तक दाखिल किया जा सकता है, करना होगा। क्या इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि जो आदर्श वे हमारे सामने रखते हैं, वही सच्चे हैं?"

बापू बोले, "मैं यह नहीं कहना चाहता। कारण साफ है। वे लोग अपने अनुभव से कहते हैं कि अहिंसा चलनेवाली चीज नहीं। वे हमारी

अहिंसा को भी आखिरी हिंसा की तैयारी के रूप में ही देख सकते हैं। मगर मैं कहता हूं कि मुझे आप लोगों की मान्यता से कुछ लेना-देना नहीं है। मेरे सामने एक चीज आ गई है। उसकी कितनी शक्ति है, वह क्या-क्या कर सकती है, यह बतौर एक वैज्ञानिक के मुझे देखना है। क्यूरी ने जब रेडियम की शोध की थी तो पहले उनके पास रेडियम प्रत्यक्ष नहीं आ गया था। उनके प्रयोगों से उन्हें पता चला था कि रेडियम-जैसी कोई चीज है सही, मगर जगत कहता था, 'जब तक तुम रेडियम हमारे हाथ की हथेली पर रख नहीं देतीं, उसके लक्षण और गुणों का ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर सकतीं, तब तक हम नहीं मानेंगे।' सो वह काम करती गईं। आखिर थोड़ा-सा रेडियम उन्होंने तैयार किया, उसके गुणों की भी शोध की। तब जगत माना। पीछे दुनिया को उसी चीज का गुणाकार करके आवश्यकतानुसार रेडियम तैयार कर लेना पड़ा। वही बात अहिंसा के साथ भी लागू होती है। जगत के सामने जब तक एक संपूर्ण प्रयोग नहीं आ जाता तब तक उसे वह शंका की दृष्टि से देखेगा। शंका रखने का जगत को हक है। मैं इस प्रयोग को पूरा करने का प्रयत्न कर रहा हूं। परिणाम क्या होगा, यह मैं नहीं जानता।"

दोपहर को भंसालीभाई की खबर गुजराती अखबार से मिली। बीस रोज उपवास को हो चुके हैं। श्री मुंशी उनसे चिमूर के रास्ते पर जाकर मिले थे। बापू कह रहे थे, "यह कैसी दुःख की बात है कि अंग्रेजी अखबारों में दम ही नहीं है; नहीं तो भंसालीभाई की खबर छापे बिना वे कैसे रह सकते हैं? आज अखबारों में जो चल रहा है, वह लोकमत को ठीक रास्ते पर चलाने के लिए नहीं, सरकार का मुंह रखने के लिए ही हो रहा है।"

शाम को घूमते समय कुछ दिन पहले के इस प्रश्न के उत्तर में कि सत्याग्रही जड़वत-से क्यों लगते हैं, बापू ने कहा, "सत्याग्रही जड़वत लगते हैं यह मैं स्वीकार कर लेता हूं। इसके कारण को ढूंढ़ो तो पहली याद रखने वाली बात यह है कि किस वर्ग में से मेरे पास सत्याग्रही आए। लेनिन के पास काम करनेवाले धनहीन थे; क्योंकि वह उनके लिए काम कर

रहा था। कुछ भी हो, लेनिन को उनसे संतोष मानना था। इसी तरह मेरे पास जो कार्यकर्ता हैं उनसे मुझे भी संतोष मानना है। दूसरी बात यह है कि जब तक वे लोग मेरे अंकुश के नीचे रहकर काम करते हैं, उन्हें जड़वत लगना ही है। कारण यह कि सत्याग्रह का संचालक मैं रहा। मुझसे आगे उनमें से कोई कैसे जा सकता है? वे लोग अपनी बुद्धि चलाने लगें तो उनका राजाजी-जैसा हाल होगा। मैंने राजाजी से कहा था कि जब तक मैं हूं, तुम मुझे समझाने का प्रयत्न करो। न समझा सको तो अंत में तुम्हें मेरी बात मानकर चलना चाहिए। वे कहने लगे, 'कभी नहीं।' तो मैंने कहा, अच्छी बात है। ऐसे ही कह तो जवाहरलाल भी देता है कि 'कभी नहीं' मगर पीछे करता वही है जो मैं कहता हूं। ये सत्याग्रही भी दूसरे विषयों में तो जड़-से नहीं हैं। एक सत्याग्रह के विषय में हैं। मोतीलालजी-जैसे भी जब तक मेरे साथ काम करते थे, अपनी नहीं चला सकते थे। के० टी० शाह को देखो, मेरे साथ था, तो हर बात मुझसे पूछकर लिखता था। उसका तेज ढंका रहता था। मेरा विरोधी बना तो एकदम लोगों को वह एक महान अर्थशास्त्री और तेजस्वी आदमी लगने लगा। ऐसे ही कुमारप्पा है। आज वह मेरे साथ जड़वत लगेगा, अलग हो जावे तो चमकने लगेगा। आर्य्यनायकम क्या कर सकता है? गुरुदेव के पास वह बड़ा विद्वान था, मगर मेरे पास आकर वर्धा शिक्षण-प्रणाली में पड़ा। वहां उसे मुझसे पूछ-पूछकर काम करना है; क्योंकि वर्धा शिक्षण-प्रणाली की उत्पत्ति मेरे मस्तिष्क में से हुई।" इस प्रकार की दो-चार मिसालें बापू ने और दीं, जहां बापू को छोड़ देने के बाद लोग एकदम ऊपर चढ़ गये-से लगते थे। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि सत्याग्रहियों की जड़ता देखने में जड़ता-सी लगती है; पर यह वास्तविक जड़ता नहीं है।

आज सरोजिनी नायडू के विवाह को ४४ वर्ष हुए। वे आइसक्रीम बनाना चाहती थीं, मगर मैं और भाई नहीं खानेवाले थे, इसलिए उन्होंने भाई से सबके लिए फलों के रस का एक पेय तैयार करवाया। सबने बड़ी प्रसन्नता से पिया।

३ दिसंबर '४२

दस दिन के बाद भंसालीभाई के विषय में बापू के तार का सरकार ने उत्तर दिया, "आपको प्रो० भंसाली के साथ तार या पत्र-व्यवहार करने की इजाजत नहीं दी जा सकती, मगर मानवता की दृष्टि से आप उनका उपवास छुड़वाना चाहें तो आपकी सलाह उन्हें सरकार की तरफ से पहुंचा दी जावेगी।" बापू की तो ऐसा उत्तर पाने के लिए तैयारी थी ही। तो भी अच्छा तो किसीको नहीं लगा।

'हिंदू' अखबार में प्रो० भंसाली के उपवास की छोटी-सी खबर थी। उसमें से नई बात यह मिली कि उपवास के शुरू होते ही श्रीमती जानकीदेवी बजाज ने बापू को उनके उपवास के बारे में पत्र लिखा था। वह पत्र सी० पी० सरकार की मार्फत दिल्ली सरकार के पास गया। उसने उसे बापू के पास भेजने से इंकार किया। खबर सुनकर बापू कहने लगे, "इस वक्त सरकार चाहे जो करे, मेरे मन में निराशा तो आती ही नहीं है। जो जहां पड़ा है, अपना-अपना काम अपनी शक्ति के अनुसार पूरी तरह मन से कर रहा है। मुझे इससे बहुत संतोष होता है।"

आज सुबह घूमते समय फिर ट्रस्टीशिप पर चर्चा छिड़ी। भाई कहने लगे, "आप कहते हैं कि पूंजीपतियों के हृदय का परिवर्तन होगा और उससे आज की सारी अर्थव्यवस्था बदल सकेगी, मगर समाजवादी कहते हैं कि पूंजीवाद और निजी मिल्कियत की प्रथा मिटेगी तथा वातावरण तभी एक वर्गविशेष के रूप में पूंजीपतियों का हृदय भी बतौर एक वर्ग के बदलेगा। जब आप भी कई बार कहते हैं कि दलील से ये लोग नहीं समझेंगे, परिस्थिति इन्हें अपने-आप समझा देगी तो आप मार्क्सवाद के उस सिद्धांत का समर्थन नहीं करते कि भौतिक वातावरण मूल वस्तु है। विचारप्रणाली और आदर्शवाद उसका फल है, उसकी प्रजा है।"

बापू कहने लगे, "मैं इसे स्वीकार नहीं करता कि पंच महाभूत-जगत से परे कोई तत्त्व ही नहीं है; परन्तु इतनी बात है कि उस पर तत्त्व का अस्तित्व पांच इंद्रियों द्वारा सिद्ध नहीं हो सकता। वह स्वयं प्रमाण है। मनुष्य के आंतरिक अनुभव द्वारा उसका साक्षात्कार किया जा सकता है।

जब तक हम यह चीज मानते हैं तब तक हम यह बात स्वीकार नहीं कर सकते कि मनुष्य का आचरण और स्वभाव उसके बाह्य वातावरण पर ही निर्भर है।"

मैंने पूछा, "ट्रस्टी बनने पर भी उन लोगों के मन में घमंड तो रह जावेगा न कि हम धनपति हैं, हमने इतना त्याग किया है, और धनहीन उनकी दया और उनका धन दान-रूप से स्वीकार करें तो क्या अपने स्वमान की हानि न करेंगे?"

बापू बोले, "दान का सवाल ही नहीं उठता। ट्रस्ट के ट्रस्टी थोड़े ही ऐसा समझते हैं कि उन्होंने दान किया! मैंने दक्षिण अफ्रीका में अपनी सब जायदाद का ट्रस्ट किया था, मगर न मेरे और न किसी के मन में भी कभी आता था कि मैंने दान किया है।"

मैंने कहा, "मगर आज हमारे पास ट्रस्टीशिप का कोई नमूना है तो जमनालालजी का है। जमनालालजी की बहुत चीजें सेवा के काम में इस्तेमाल होती थीं। कितनी ही जायदाद उन्होंने दे भी डाली। तो भी उनके मन में यह तो था ही कि वे देते हैं—दान करते हैं।"

बापू कहने लगे, "जमनालालजी ने महा प्रयत्न किया, मगर वह पूरी तरह से ट्रस्टी बन नहीं सके। वह उनकी अपूर्णता का नतीजा था।"

भाई बोले, "एक व्यक्ति जिसके पास इतने साधन रहे, सत्संग रहा, अच्छा अनुकूल वातावरण रहा, उसके लिए अपने-आपको बदलना इतना कठिन सिद्ध हुआ तो सारे-के-सारे पूंजीपति वर्ग का बदलना कितना कठिन होगा?"

बापू कहने लगे, "नहीं, शुरू से रास्ता निकालनेवालों को मुश्किल आती है, मगर बाद में उसका अनुकरण करनेवालों के लिए वही चीज सरल बन जाती है। मैं मानता हूं कि मनुष्य-स्वभाव ऊर्ध्वगामी है। मैं डार्विन के सिद्धांत को नहीं मानता कि मनुष्य बंदर में से निकला है।"

भाई ने कहा, "तो क्या आप यह मानते हैं कि सब जीव अलग-अलग (Separate Creation) बने?"

बापू ने उत्तर दिया, "मैं नहीं कह सकता कि मैं क्या मानता हूं, मगर बंदर से मनुष्य का विकास हुआ है, यह नहीं मानता।"

मैंने कहा, "तो अगर डार्विन का सिद्धांत सही है तो आपके उसको न मानने से हानि हो सकती है; क्योंकि गलत जगह से शुरू करने से हमारे नतीजे भी गलत होंगे।"

बापू कहने लगे, "वह हो सकता है।"

इस पर भाई इसका उभय पक्ष सामने रखकर बोले, "वह तो तब न, जब हम मानें कि इंसान ने जो कहा है वह अंतिम वचन है। आज तो साइंस का आधार ही बदल रहा है। हम क्या जानते हैं कि अंत में क्या रह जावेगा, क्या नहीं?"

बापू ने कहा, "इसका अर्थ यह होता है कि जबतक हमारी मान्यता गलत सिद्ध नहीं होती, इस श्रद्धा से चलें।"

: २८ :

गोलमेज परिषद के कुछ संस्मरण

दोपहर और शाम को बापू से भाई गोलमेज परिषद के बारे में कुछ बातें पूछते रहे। हिंदू-मुस्लिम ऐक्य के लिए क्या-क्या कोशिशें हुईं, कैसे हिंदू-मुस्लिम को एक-दूसरे से समझौता करने को कहकर दूसरी तरफ से सरकार चुपके से सांप्रदायिक निर्णय तैयार कर रही थी। एक रोज बापू को मुसलमानों ने अपनी सभा में बुलाया। वहां पर सब बापू की चापलूसी करने लगे, "आपके लिए क्या मुश्किल है साहब, आप श्री जिन्ना की १४ मांगें पूरी कर दें।" आगा खां ने शुरू किया, "आप बड़े महात्मा हैं। आपके लिए इतना कर देना एक खेल है. . ." वगैरा-वगैरा। बापू ने कहा, "आपको इस तरह मेरी हँसी उड़ाना शोभा नहीं देता। मैं कौन हूं? आपके तो इतने अनुयायी हैं। मेरे पीछे कौन है? मुझे कांग्रेस ने एक काम के लिए भेजा है। दूसरा काम करने का मुझे कांग्रेस ने

अधिकार नहीं दिया। इसके लिए डॉ० अंसारी की मदद की मुझे जरूरत है।"

शौकतअली भी कहने लगे, "सरकार, आप इतना कर दें। आपके लिए यह कौन-सी बात है?" बापू कहने लगे, "शौकतअली, तुम्हारे लिए यह मुनासिब नहीं है। तुम आज कहां मेरे पीछे चलते हो? फिर मैं तुम्हारा 'सरकार' कैसे रहा?" वह कहने लगे, "नहीं सरकार, आप इतना कर दें, फिर हम आपके पीछे ही हैं।"

बापू ने आगे बात चलाते हुए कहा, "श्री जिन्ना तो पूरे राजनैतिक तरीके से पेश आए। एक बार उन्होंने मुझे अपने निवासस्थान पर बुलाया था। अंगीठी के सामने मेरे साथ जमीन पर बैठ गए। कहने लगे, "आप बड़े महात्मा हैं। ये तो मामूली चीजें हैं। आप इनको मंजूर कर लें।" मैंने कहा, "मैं यह सब तब तक नहीं कर सकता जब तक डॉ० अंसारी से पूछ न लूं। हिंदू-मुसलमान के मामले में वही मेरा रहनुमा है। उसके बिना मैं एक कदम नहीं उठा सकता।" उन्हें वह मंजूर न था। फिर मजलिस में आए। बेगम शाहनवाज भी वहां थीं और वे भी उसी रंग में रंगी हुई थीं। उसी तरह मुझसे कहने लगीं, "आप महात्मा हैं। इतना कर देने में क्या मुश्किल है?" तब मैं रो पड़ा। मैंने कहा, "और सब तो इस रंग में पूरी तरह रंगे जा चुके हैं, मगर औरत होकर तुम भी इसमें हिस्सा लेती हो—यह मुझसे सहन नहीं होता।" हिंदू-मुसलमानों के समझौते की बातचीत टूटी और दूसरे रोज सुबह ही सरकार का सांप्रदायिक निर्णय हमारे हाथों में आ गया। वह रातोंरात थोड़े ही तैयार हुआ था। वह तो तैयार पड़ा ही था। ऊपर से मुंह-दिखावे के लिए हम से कहा जाता था कि आपस में फैसला करो, और ऐसा किया जाता था कि आपस में फैसला हो ही न सके। विलायत से आने से पहले मैं लॉयड जॉर्ज बाल्डविन आदि से मिला था।"

लॉयड जॉर्ज से मिलने बापू जब गये थे तब का एक मनोरंजक किस्सा उन्होंने कुछ दिन पहले सुनाया था। बापू वहां रात के १२-१ पर गए। एक पालतू बिल्ली, जिसके गले में एक पट्टा था, आकर बापू की गोद में

बैठ गई। बापू वहां करीब दो घंटे बैठे। सारा समय बापू उसकी पीठ पर हाथ फिराते रहे और वह बैठी गुर्राती रही। लॉयड जॉर्ज ने कहा, "दो रोज पहले यह बिल्ली एकाएक यहां आ पहुंची। मैंने सब मित्रों से पूछा कि किसकी है? लेकिन पता नहीं चला।" दूसरे रोज लॉयड जॉर्ज के यहां से आदमी पूछने आया, "क्या वह बिल्ली आपके साथ आई है?" बापू ने कहा, "नहीं।" बिल्ली बापू के आने के बाद एकाएक गायब हो गई थी। बड़ा प्रयत्न किया गया; परन्तु कुछ पता नहीं चला कि वह कहां चली गई।

बापू कहने लगे, "लॉयड जॉर्ज ने सब बातें धीरज से सुनीं, पूरी सहानुभूति दिखलाई। कहने लगे, "आपका केस तो संपूर्ण है। जब आयरलैंड का सवाल चलता था तब सत्ता मेरे हाथ में थी। आयरलैंड की मांग का विरोध किया, मगर बाद में मैंने देखा कि अब उनके साथ समझौता होना ही चाहिए और वैसा ही किया। यहां भी एक-दो हफ्ते में फैसला होना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। मगर आज मेरे पास सत्ता नहीं। मैं किसी का नुमाइंदा नहीं हूं। मेरी आवाज अरण्यरोदन के समान है। मैं किसी चीज में दखल नहीं देता।"

बापू ने आगे कहा, "बाल्डविन तो मुझसे मिलना ही नहीं चाहता था। सर सैमुएल होर ने उनसे मिलने का प्रबंध कर दिया। वह भी लॉर्ड लिनलिथगो की तरह बाह्य शिष्टाचार खूब बरतता था। बाल्डविन के पास तो मैं पंद्रह मिनट भी नहीं बैठा। मैंने अपना केस रखने की कोशिश की। बताया कि हम तो ऐसा मानते हैं कि अंग्रेजी राज्य में हिंद का हमेशा अहित ही रहा है। आप लोगों से हमने कुछ सीखा है, मगर वह आप लोगों के संपर्क में आने के कारण। आप राजा न होते और हम आपके संपर्क में आते तब भी सीखते—तब शायद ज्यादा सीखते। आपके पास सुंदर भाषा है। उसमें इतना काम किया गया है, इतना साहित्य लिखा गया है। उसकी हमें कदर है। हम हिंदुस्तान में सीमित होकर नहीं रहना चाहते। सारे जगत के साथ संबंध रखना चाहते हैं, मगर आजाद होकर। हमें स्वतंत्रता चाहिए। अंग्रेजी भाषा में 'इंडिपेंडेंस' शब्द का

जो अर्थ है, वह स्वतंत्रता हमें चाहिए, किसी खास तरह की नहीं; क्योंकि हम मानते हैं कि हिंदुस्तान में अंग्रेजी राज बुरी चीज है। वह कहने लगा, "इसमें हमारा मतभेद है। मुझे तो अपनी कौम का और भारत में अपने शासन का गर्व है।" मैंने कहा, "ऐसा है तो मुझे आपसे और कुछ नहीं कहना।"

"वेजवुड वेन उसी समय हिंद-मंत्री के पद से हटा था। उससे मैंने पूछा, "वह अल्पमतवालों के प्रतिनिधि आपने किस तरह चुने हैं? मुसलमानों में डॉ० अंसारी को कैसे छोड़ा जा सकता था? यह हुआ कैसे? मैं समझता था कि हिंद सरकार ने अंसारी के रास्ते में रुकावट डाली होगी; क्योंकि विलिंगडन से जब मैंने कहा कि अंसारी को जाना चाहिए तो उसने कहा था कि मैं उन्हें नहीं जाने दे सकता। मगर वेजवुड वेन ने कहा, "इस बारे में मुझे कबूल करना चाहिए कि भूल मेरी हुई। मुसलमानों ने कहा कि अंसारी को नहीं बुलाना चाहिए। वह आवेगा तो हम नहीं बैठेंगे। मैंने उनकी बात मान ली, मगर अब मैं देखता हूं कि वह मेरी भूल थी। लेकिन अब हो क्या सकता है?" वेजवुड वेन ने भी स्वीकार किया कि मेरा केस सही था। उन्होंने मेरे साथ खुलकर बातचीत की।

"सर सेमुएल होर से तो बहुत बार मिलता था। इतना मुझे कहना चाहिए कि वह मेरे साथ साफ दिल से बात करता था। यह नहीं था कि मेरे साथ एक बात और दूसरे के साथ दूसरी बात। सबके साथ उसने एक ही बात की। वह साफ कहता था, "सत्ता तो हमारे हाथों में है। तुम लोग मुझे सलाह दे सकते हो। उस पर अमल करना न करना हमारे हाथ की बात है। वह तुम्हें हम पर ही छोड़ना होगा।" मैंने कहा, "आजादी तो जब आवेगी तब, मगर आज इतना तो हो कि उस आनेवाली आजादी की कुछ झलक आपके कामों में दिखाई दे। कानून चाहे कुछ भी हो; लेकिन प्रथा तो ऐसी बने कि हमारे कामों में हमारी सलाह से आप चलें। अभी घनश्यामदास और पुरुषोत्तमदास हमारे अर्थशास्त्री हैं। अर्थशास्त्र में वे हमारे नुमाइंदे हैं। हिंद के अर्थशास्त्र के मामले में आप उनकी सलाह से चलें।" मगर वह कहने लगा, "यह तो हो नहीं सकता।"

"सेंकी तो बिलकुल अवसरवादी आदमी था। जयकर-सप्रू वगैरा उसकी तारीफ करते थे। मुझे इससे आश्चर्य होता था।"

भाई कहने लगे, "कई लोग आज तक टीका करते हैं कि क्यों अकेले आप गोलमेज परिषद में गए। वे नहीं समझते कि वहां का काम कितना कठिन था। अगर आप अकेले नहीं होते तो सब बिगड़ने ही वाला था।"

बापू बोले, "इसमें तो शक ही नहीं। इतना कठिन काम था कि अगर मैं अकेला न गया होता तो हमारी धज्जियां उड़ गई होतीं। ऐसे मौकों पर अकेला आदमी ही काम कर सकता है।"

भाई कहने लगे, "अल्पसंख्यकों के बारे में जब समझौते की बातचीत टूटी तब जेम्स मिल्ज तो करीब रोने-जैसा हो गया था। कहने लगा, "ये लोग कहते हैं कि अब हमने गांधी का खात्मा कर दिया है।" मगर जब आपने सांप्रदायिक निर्णय पर भाषण दिया तब वह खुश हो गया, नाचने लगा और कहने लगा, "अमेरिका से तार आते हैं कि हम अब समझे।" और श्वेब ने तो यहां तक कहा था कि इस्लाम कबूल करने के सिवा बापू ने जो कुछ उनकी ताकत में था, वह सब उन लोगों को संतोष देने के लिए किया। मगर कुछ फायदा न हुआ। और सच्ची बात तो यह है कि अगर बापू मुसलमान होने को तैयार हो जाते तो भी मुझे यकीन नहीं कि वे लोग उन्हें स्वीकार कर लेते।"

: २९ :

चर्खा और ग्रामोद्योग

४ दिसंबर '४२

सरकार के पत्र का बापू ने उत्तर दिया कि उन्हें पहले भंसालीभाई के उपवास का सच्चा कारण जानना चाहिए। जब तक उन्हें यकीन न हो जाय कि भंसालीभाई का उपवास गलत है, वे उन्हें उपवास छोड़ने की सलाह नहीं दे सकते। अखबारों की रिपोर्ट सही मानी जावे तो उनके

उपवास का खास कारण है। इतने महत्त्व के तार का जवाव सरकार ने दस दिन बाद दिया। इस पर वापू ने अफसोस जाहिर किया।

सुवह घूमते समय चर्खे और ग्रामोद्योग के बारे में चर्चा चल पड़ी। वापू कहने लगे, "अकेले चर्खे और ग्राम-उद्योगों से शायद हम यह नहीं कर सकेंगे। साथ में जमीन का सवाल भी हल करना होगा। जमीन के वारे में मेरा ज्ञान अपूर्ण है। सिर्फ पशु और मनुष्यों की मेहनत से ही हम जमीन में से कितना धन पैदा कर सकते हैं, यह हिसाव हम आज तक नहीं निकाल सके। मगनलाल होता तो वहुत कुछ हो गया होता। खेती के साथ-ही-साथ गोरक्षा का भी सवाल पड़ा है। मेरे पास रायवहादुर गंगाराम के खत आया करते थे। वह वड़ा इंजीनियर था। उसने मुझसे कहा, "मुझे मशीन दाखिल करने दो। देखोगे कि कितनी जल्दी मैं सावरमती को नफा देनेवाली संस्था बना देता हूं। मैं आपका विशेषज्ञ वनूंगा। पीछे मैं आपकी शक्ति का उपयोग कर लूंगा। मैंने ना की; क्योंकि मैं जानता हूं कि पशु और आदमी की मजदूरी से यह काम हो सकता है, मगर उसे सिद्ध करने के लिए वह करके वताना चाहिए। सरकार ने वारडोली में मशीन एक हद तक दाखिल की है। मैं अपने प्रयोग सब उनसे नहीं करवाना चाहता, मगर मुझे तो यह खुद करके देखना ही है।"

भाई कहने लगे, "यही तो मैं आपसे अगले रोज भी कह रहा था कि हमें अपनी आवश्यकताओं का माप निकालना चाहिए और फिर हिसाब लगाना चाहिए कि क्या अकेले मनुष्य और जानवर की मेहनत से वे पूरी हो सकेंगी या हमें मशीन की मदद लेनी होगी। मशीनें लेनी ही होंगी तो हम उन छोटी-छोटी मशीनों को पैदा करेंगे जो मजदूरों की जगह न लें, वल्कि उनकी मजदूरी की शक्ति वढ़ाएं।"

वापू वोले, "हिसाव एक हद तक मैंने लगाया है। सवको पूरा अन्न चाहिए, आधा सेर दूध और फल, साग-भाजी, घी, तेल, खांड़—सवको मिलनी चाहिए। कपड़ा तो चाहिए ही, साथ ही घर भी अच्छे होने चाहिए। सो इतनी कम-से-कम जरूरतों की मैंने हद वांधी है। यह पूरी होनी चाहिए। अमेरिका की तरह मैं हरेक के लिए मोटर पैदा

करने का ध्येय नहीं रखता; सबके पास खाली समय भी चाहिए ताकि वे अभ्यास करके अपनी वुद्धि का विकास कर सकें।"

मैंने कहा, "यह तो आपकी कम-से-कम मर्यादा है। अगर वाद में इतनी मजदूरी और समय हमारे पास रहे कि हम मोटर बना सकें तो क्यों न बनावें?"

भाई कहने लगे, "हमें कोई मर्यादा तो रखनी ही पड़ेगी। हम वड़ी मशीनें दाखिल करेंगे, तो वे पीछे हाथ की मेहनत, छोटे उद्योगों और छोटी मशीनों को खा जाएंगी।"

मैंने कहा, "मैं तो यह समझी हूं कि जीवन के लिए जो चीजें आवश्यक हैं, जैसे रोटी, कपड़ा, उनके लिए हमें हाथ की मेहनत का ही आश्रय लेना है। वाद में दूसरी चीजें रह जावेंगी। उनके लिए मशीन इस्तेमाल करने में कोई हर्ज नहीं। इतना ही नहीं, बल्कि उसकी आवश्यकता है, जैसे कि डॉक्टरी सामान की बात लें, सूक्ष्मदर्शक यंत्र है, शीशे का नाजुक सामान है, यह सव हम हाथ से ही थोड़े वना सकते हैं। उन सबको छोड़ना अथवा विज्ञान की प्रगति का त्याग करना शक्य नहीं, योग्य भी नहीं।"

वापू कहने लगे, "यह ठीक है।" भाई कहने लगे, "नहीं, हमें इनमें से कई चीजों का त्याग करना ही पड़ेगा। विज्ञान के विकास से प्रगति ही हुई है, ऐसा भी हम कैसे निश्चय कर सकते हैं? डॉक्टरी ने लोगों का स्वास्थ्य सुधारा नहीं है।"

मैंने कहा, "जहां डॉक्टरी ने सच्ची प्रगति की है, वहां उसने कई वीमारियां जड़ से उखाड़ दीं। लोगों की आयुष्य वढ़ी है; मृत्यु-संख्या कम हुई है।"

भाई कहने लगे, "विज्ञान से जितनी वीमारियों का इलाज हुआ है, अस्वाभाविक जीवन के कारण उनसे अधिक वीमारियां पैदा हो गई हैं।"

शाम को घूमते समय फिर ट्रस्टीशिप पर चर्चा चली। भाई कहने लगे, "धनवान अपने-आप अपने धन का त्याग कर दें और समाज के सेवक वन जावें तो अच्छा है, मगर वह तो बिल्ली के गले में घंटी बांधने-जैसी

वात हुई। विल्ली के गले में घंटी हो तो चूहे अपने-आप वच जावें, मगर सवाल यह कि वांधे कौन ?"

वापू कहने लगे, "ऐसा कुछ है ही नहीं ? हमें धनिक वर्ग मिटाना है। उसके लिए धनवानों को मार डालने की आवश्यकता नहीं। उनके धन, उनकी कला और शक्ति का उपयोग हम लोगों के लिए कर लेते हैं। यह आसान-से-आसान और सस्ते-से-सस्ते रास्ते हैं।"

भाई वोले, "इसका अर्थ यह हुआ कि आखिर कारवार चलाने के लिए शासनतंत्र को कोई-न-कोई एजेंट चाहिए ही। दूसरों को ढूंढ़ने के वदले हम उन्हीं धनवानों को ले लेते हैं। उनसे कहते हैं कि आजतक तुमने अपने लिए पैसा इकट्ठा किया, उसे संभाला। अब वही काम तुम शासनतंत्र के लिए करो। फर्क इतना होगा कि अब पैसा तुम्हारे नाम नहीं जमा होगा, वल्कि शासनतंत्र के नाम होगा। तुम्हारे नाम भी हो तो ट्रस्टी की हैसियत से। तुमको आत्म-रक्षा के साथ-साथ नई समाज-रचना से हिस्सा लेने का अनमोल अवसर मिलता है। इससे तुम्हें संतोष होना चाहिए, नहीं तो तुम्हें मिटना होगा।"

वापू कहने लगे, "यह वात तो ठीक है, लेकिन अहिंसा के वारे से जिनकी अश्रद्धा है, वे इन दलीलों को स्वीकार नहीं कर सकते। है भी ठीक, उनकी जगह मैं भी ऐसा ही करता।"

भाई ने कहा, "यह ठीक है, आज पक्के साम्यवादियों का तो एक छोटा-सा गिरोह है, मगर एक बड़ा गिरोह ऐसे लोगों का है जो समाजवादियों के और हमारे वीच में हैं। उन्हें अहिंसा में अश्रद्धा नहीं, मगर उनके सामने हम शुरू से अंत तक एक पूरी तस्वीर नहीं रख सके कि हम किस प्रकार की समाज-रचना करना चाहते हैं, वह कैसे वनेगी और कैसे उसे सफल वनाने की आशा रखते हैं। इसलिए वे लोग डांवाडोल हैं। यह सवाल-जवाव उनकी मदद के लिए हैं, जो काम तो करते हैं, मगर कच्ची वुद्धि से।" वापू ने इस दलील के साथ अपनी सहमति वताई।

५ दिसंबर '४२

आज महादेवभाई को गए १६ हफ्ते पूरे हो गए हैं। जब वक्त जाने

लगता है तो बस भागने लगता है। इस जेल में बैठे हुए भी पता नहीं लगता कि कब हफ्ता खत्म हो जाता है। शाम को महादेवभाई की समाधि पर शंखों का ॐ बनाया। करीब सारा समय उसी में गया। घूमने को दस हीं मिनट मिले। मैंने बापू से कहा, "आज सवा छः बजे तक घूमिए।" मगर वे नहीं माने। ऐसा करने से उनका सारा कार्यक्रम बिगड़ता था। वे यंत्रवत समय पर चलते हैं। कल ही सुबह कह रहे थे, "मैं अपने-आपको पूरी तरह नियम से रखता हूं। यहां पर नियम की कोई आवश्यकता नहीं, मगर तो भी मेरा सारा कार्यक्रम घड़ी की तरह चलता है। अहिंसक व्यक्ति के लिए व्यवस्थित चित्त और व्यवस्थित कार्यक्रम अत्यावश्यक है। इसके सिवा अहिंसा काम नहीं कर सकती।"

आज सुबह घूमते समय भाई ने पूछा, "कांग्रेस मिनिस्ट्री के पास तो सत्ता नाममात्र की ही थी। तो भी जितनी थी, उससे हम पूंजीपतियों को तो छू भी नहीं सके। पूरी सत्ता मिल जावेगी तब भी अहिंसक मर्यादा में रह कर हम क्या कर पायेंगे? यह समझ में नहीं आता; क्योंकि देश में और स्वयं कांग्रेस में धनवानों का स्वार्थ इतना फैला है कि उन्हें उखाड़ फेंकना बहुत कठिन काम है।"

बापू ने उत्तर दिया, "अहिंसा के द्वारा यह चीज निकाली जा सकती है, ऐसी मेरी मान्यता है। शुरू-शुरू में जब सत्याग्रह की लड़ाई यहां छिड़ी, सारे देश में एकदम कैसी जागृति की लहर फैल गई थी। मोतीलालजी-जैसों को भी लगा कि बस सच्ची साहबी त्याग में ही है। उन्हें लगता था कि अब आजादी आ रही है, मगर जब नहीं आई और मैं अंकुश रखता ही गया तब वे लोग कुछ पीछे भी गए। दूसरा आनंद भवन बना और पहले से भी ज्यादा शानदार बना। उसमें जवाहरलाल भी शामिल हुआ। खादी तो रही, मगर खादी की आत्मा चली गई।

"पीछे कांग्रेस के चुनाव के समय लोगों में इतना उत्साह भर आया था कि कांग्रेस का चुनाव में ऐसा कहना चाहिए कि कुछ खर्च ही नहीं हुआ। कई लोगों ने मन में शंका की थी कि कांग्रेस इन चीजों में सफल नहीं होगी। कांग्रेस के पास चुनाव लड़ने के लिए पैसा कहां है, मगर जब लड़े तो सब

हैरान रह गए। सब जगह जबर्दस्त बहुमत से कांग्रेस जीती, और उड़ीसा-जैसी जगह में, जहां हमारा काम सुव्यवस्थित नहीं था, जोरदार जीत हुई। तो तात्पर्य यह कि हरेक इंकलाब के साथ एक खास जागृति और उत्साह की लहर आती है, जो बहुत काम कर लेती है। इसके असर के नीचे लोग अपने-आप खुशी से त्याग कर सकते हैं। आम जनता की जागृति को देखकर उसके दबाव और प्रवाह के सामने पूंजीपति खड़े नहीं रह सकेंगे। साथ ही पूंजीपतियों का बल आज कांग्रेस सरकार की बंदूक पर निर्भर है। जब वह बंदूक नहीं रह जावेगी तो उन्हें जनता की मांग पूरी करनी ही पड़ेगी। वे समझ जावेंगे कि अब इसके सिवा और चारा ही नहीं।

"वे अपने-आप त्याग न करें तो दूसरा तरीका गृह-युद्ध का है। मुझे बहुत बार ऐसा लगता है कि जब सच्ची आजादी आवेगी तब हिंदुस्तान को गृह-युद्ध की मंजिल में से गुजरना पड़ेगा, मगर गृह-युद्ध के डर से थोड़े ही हम समाज-सुधार के कार्यों को रोक सकते हैं। गृह-युद्ध की नौबत आई और लोगों में अहिंसा है जैसा कि मैं मानता हूं, तो अराजकता आई तो भी वह नाममात्र को होगी। दस-पंद्रह दिन में फिर से देश में अमन-चैन हो जावेगा। मगर हममें अहिंसा नहीं है तो लंबे गृह-युद्ध का संकट आ सकता है। प्रलय के बाद अगर मेरा कोई प्रतिनिधि जिंदा रहा तो वह फिर से अहिंसा का राज्य खड़ा करने का प्रयत्न करेगा।"

भाई कहने लगे, "अगर सत्ता हमारे हाथ में आ जावे तब तो क्रांति का जोश काम कर सकता है। मगर क्रांति हमेशा रहनेवाली चीज नहीं है। लोगों का उत्साह हमेशा रहनेवाली चीज नहीं है। लोग फिर से सो जाते हैं। इसलिए सत्ता अगर एकदम से हमारे हाथ में आवे तब बहुत कुछ काम क्रांति का जोश कर लेगा। बाकी का लोकमत कानून द्वारा करवा लेगा; लेकिन अगर सत्ता धीमे-धीमे आवे तो यह चीज काम नहीं दे सकती। पूंजीपति नए वातावरण में अपने पांव धीमे-धीमे जमा लेंगे और फिर उन्हें हिलाना कठिन होगा।"

बापू ने कहा, "यह ठीक है। सत्ता धीमे-धीमे आवे तब तो गृह-युद्ध भी आने ही वाला है, ऐसा समझो।"

भाई बोले, "अंग्रेज जावें तो एक तो यह हो सकता है कि सत्ता प्रजा के हाथों में आ जावे। दूसरे यह हो सकता है कि निजाम का-सा कोई भी राजा, जिसने हवाई जहाजों और टैंकों के बनाने की फैक्टरियां खोल रखी हैं, टीपू सुल्तान की तरह दक्षिण में तो कम-से-कम अपनी सत्ता कायम करने की कोशिश करे ही।"

बापू कहने लगे, "यह सब हो सकता है। मुझसे पूछो तो मुझे लगता है कि यद्यपि यह संभव है, मगर ऐसा बनेगा नहीं। अंग्रेजों के पास आज कुछ नहीं है। मात्र अपने नाम से वे काम चला रहे हैं। निजाम के अलावा दूसरे राजाओं के पास 'नाम' तो कुछ नहीं, मगर कांग्रेस के पास है। पचास वर्ष से कांग्रेस देश की सेवा कर रही है। जब कांग्रेस वैधानिक नीति पर चलती थी तब भी उसकी नीति खुली थी। पिछले बीस वर्षों से तो कांग्रेस ने अहिंसा की ही नीति अख्तियार की है और जनता को अहिंसा की तालीम दी है। दूसरी ऐसी कोई संस्था नहीं जिसने इतने समय से जनता की ऐसी अनन्य सेवा की हो। सो कांग्रेस के पास नाम है। यह ठीक है कि राजा लोग गुंडों को इकट्ठा करके रखते हैं। उनके द्वारा अपना काम करवाते हैं, मगर समय आने पर गुंडे भी कांग्रेस के साथ खड़े होने वाले हैं।"

६ दिसंबर '४२

आज सुबह और शाम को घूमते समय फिर वही चर्खे और ग्राम-उद्योग का पुराना सवाल उठा। बापू कहने लगे, "जैसे-जैसे गहरा विचार करता हूं, कठिनाइयां सामने आती हैं। अगर आदमी को मात्र कपड़ा ही पैदा करना हो तो वह खुद कातकर जरूर कर सकता है, मगर हिसाब लगाने पर पता चला है कि कपड़ा मनुष्य की आवश्यकताओं का बहुत छोटा हिस्सा है। चर्खे पर दिन भर मेहनत करके मजदूर को उसकी आवश्यकता के लिए काफी पैसे नहीं मिलते। हम मजदूरों का मेहनताना बढ़ाना चाहते हैं, मगर सब जगह बढ़ा नहीं सकते। इस पर से विनोबा तो इस

नतीजे पर आया है कि सब अपने हाथ से कातें, तकली पर कातें और अपना कपड़ा तैयार करें। आज जो हम दूसरों से कतवाते हैं, वह ठीक नहीं है। उससे आगे बढ़कर अब वह तुनाई पर आया है। विनोबा का प्रोग्राम कब पूरा होगा, यह मैं नहीं जानता। सब लोग तुनाई करके तकली द्वारा अपना कपड़ा तैयार करने लगेंगे, इसमें मुझे शक है; लेकिन विनोबा ने अपनी कल्पना के समाज में तकली व तुनाई से वस्त्र-स्वावलंबन के प्रश्न को हल किया है।

"पहले हम इस नतीजे पर पहुंचे कि अकेले चर्खे से तो काम नहीं हो सकता। तब ग्राम-उद्योगों को साथ लिया, मगर उनको साथ लेने पर भी अनेक कठिनाइयां हैं। अब मैंने सोचा है कि जमीन को साथ रख सकें तो काम निपटेगा। जमीन में से कितनी उपज मनुष्य और पशु की मेहनत से निकल सकती है, इसका हिसाब लगाने को रहा। आज सत्ता हमारे हाथ में नहीं है। जमीन को कैसे हाथ में लेना और वांटना होगा। इन प्रश्नों के बारे में हम कुछ नहीं जानते। इसीलिए मैं तो आज जानता नहीं हूं कि अंत में मैं कहां जाकर खड़ा हूंगा।"

भाई बोले, "यह दुःख की बात है कि हिंदुस्तान में इतने बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों के होते हुए भी उनमें से एक भी अच्छी तरह चर्खे और ग्राम-उद्योग के अर्थशास्त्र में गहरा नहीं उतरा।"

बापू कहने लगे, "उसका कारण है। के० टी० शाह को लो। जब वे आए तो ऐसा लगता था कि वे हमें काफी दे सकेंगे। वे ग्राम-उद्योग की भावना से उस वक्त भरे थे। एक हद तक तो आगे बढ़े, मगर पीछे रुक गये। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की योजना के समय जवाहरलाल मुझे उसमें खींचना चाहते थे। मगर मैं नहीं खिचा। मैंने देख लिया कि इसमें मेरा स्थान नहीं है। हमारी चीज का उस योजना के साथ कोई मेल नहीं था। कुमारप्पा भी अपने-आप भांप गया कि इसमें से कुछ फायदा नहीं निकलेगा और अलग रहा, मगर सतीश बाबू उसमें गए। सतीश बाबू ने मेहनत की, मगर जो रिपोर्ट लिखी वह मुझे फड़वानी पड़ी। फिर से लिखवाई। मामला वहीं पर रुक गया। बाकी के अर्थशास्त्रियों में से एक ही था,

जिसने हमारी चीज को समझने और समझाने की कोशिश की, मगर वह भी बहुत आगे नहीं बढ़ सका। बात यह है कि वे लोग अपने ढांचे को नहीं छोड़ सकते। अपने ढांचे में इस नई चीज को ढालना चाहते हैं। सो प्रगति अपने-आप रुक जाती है। यह चीज मुझे सोच में डालती है। क्या मेरी कल्पना में ही कोई आंतरिक दोष है? क्या चर्खे और ग्राम-उद्योग से सारे देश का काम चलाने, मशीन की जगह हाथ की मेहनत से काम निकालने की कल्पना ही मूर्खता से भरी है? अगर ऐसा सिद्ध हो तो मैं अपनी भूल स्वीकार कर लूंगा। आज तो मैं श्रद्धा से चल रहा हूं। हाथ से हम कितनी हद तक अपना काम पूरा कर सकते हैं, यह देख तो लूं। पीछे जो होना होगा, वह होगा। यह सब मैं बता रहा हूं यह समझाने के लिए कि मैं कितना जाग्रत हूं और मेरा मन नए विचारों के प्रति कितना खुला है। मगर मैं इन विचारों से अपनी श्रद्धा को डगमगाने नहीं देता। मैं तो इसी श्रद्धा से चल रहा हूं कि हाथ की और पशुओं की मेहनत से हम अपना सब आवश्यक काम निकाल सकते हैं। अगर मैं इस श्रद्धा से न चलूं तो मैं जिन संस्थाओं को चला रहा हूं वे भी उखड़ जावें। मशीनों की मैं चिंता नहीं करता। इनकी चिंता करनेवाले दूसरे पड़े हैं। मैंने कहा है कि रेल का नाश हो जावे तो मेरी आंख से एक आंसू नहीं निकलनेवाला, बैलगाड़ी से काम चलावेंगे। मगर आज मैं हिंदुस्तान को यह समझा सकूं कि रेल का त्याग करो, इसमें मुझे शक है। सो मैं अपना काम किये जाता हूं। परिणाम जो आना होगा वह आवेगा।"

भाई ने कहा, "ग्राम-उद्योगों को सफल बनाने के लिए एक खास तरह का आर्थिक ढांचा चाहिए। एक खास तरह की समाज-रचना चाहिए। उसमें हमें कितनी ही चीजों का त्याग करना होगा। अपनी जरूरतों की मर्यादा बांधनी होगी। आपको जो ग्राम-उद्योग के सफल होने में शंका है वह आज के प्रतिकूल वातावरण में है कि अनुकूल वातावरण में भी यह चीज सफल नहीं हो सकती?"

बापू कहने लगे, "मेरे सामने यह सवाल ही नहीं उठता। मेरे सामने

तो प्रतिकूल वातावरण पड़ा है। इसमें से मुझे रास्ता काटना है। वह मैं श्रद्धापूर्वक कर रहा हूं।"

भाई वोले, "हम जरा समझ लें कि हम कहां तक जा सकते हैं, तो हमारा रास्ता साफ हो जावेगा। रेल को हम निकालना चाहते हैं तो इसलिये कि वह माल को खींचकर हमारा शोषण करती है। शीघ्र सफर करने के साधन हम रेल को निकाल कर भी रख सकते हैं, जैसे मोटर, हवाई जहाज। वे सार्वजनिक नहीं हैं। माल ढोने के लिए नहीं है—इसीलिए उनसे हानि कम-से-कम होगी।"

वापू कहने लगे, "मोटर और हवाई जहाज रखोगे तो अपनी योजना की अपने-आप जड़ काटोगे मगर जैसे तुम कहते हो ऐसा कुछ हो भी तो आज तो मेरे सामने वह चीज नहीं आती।"

भाई ने कहा, "समुद्र-किनारे हम पवन-चक्की का उपयोग कर सकते हैं। पर्वतों के इलाकों में पन-चक्की का, गरम प्रदेशों में सूर्य-चक्की का उपयोग कर सकते हैं। ये सब हमारी योजना में आ सकते हैं न?"

वापू कहने लगे, "हां और नहीं। एक तरफ तो मैं पवन-चक्की से वहुत आगे वढ़ गया हूं। मैंने कहा, आवश्यकता हो तो अवसर आने पर हम गांव-गांव में बिजली लावेंगे। वल्लभभाई वारडोली आश्रम में विजली लाए। मुझसे कहा था कि मैं सावरमती में विजली दाखिल करने-वाला हूं। मैंने कहा, करो, तुम्हें छुट्टी है। मैं खुद नहीं करूंगा। मुझे मेरे रास्ते जाने दो? मुझे १९०८ के साल से दो चीजें विरासत में मिली हैं। हाथ की मेहनत और पशुओं की मेहनत। मैं अपनी श्रद्धा और अपनी चलाई हुई संस्थाओं की श्रद्धा को अटल रखकर उन्हीं पर मेहनत करना चाहता हूं और कर रहा हूं। दिमाग में कई खयाल भरे हैं, मगर मैं उन्हें ऊपर नहीं आने देता। जिन विचारों का आज उपयोग नहीं, उन्हें वाहर निकालकर क्यों अपने-आप को तकलीफ दूं और दूसरों की बुद्धि को चक्कर में डालूं।"

भाई वोले, "आपके दिमाग में तो विचार हैं, मगर दूसरों के दिमाग

में नहीं हैं। वे समझते हैं कि आप तो चर्खे से आगे बढ़ना ही नहीं चाहते और इससे आगे विचार किया ही नहीं जा सकता।"

बापू कहने लगे, "भले ऐसा सोचें, मगर काम तो करते हैं न, वह काफी है।"

भाई ने कहा, "काम करनेवाले तो काम करते हैं, मगर दूसरे कितने ही ऐसे भी हैं कि जो हमारी विचार-प्रणाली में दाखिल होना चाहते हैं, इसे स्वीकार करना चाहते हैं। अगर उन्हें पता लगे कि आप किस हद तक मौका आने पर आगे जा सकते हैं तो वे उत्साह से आगे बढ़ें और आपके साथ चलें। आज वह निरुत्साह होकर पीछे हट जाते हैं।"

बापू कहने लगे, "उसमें भी कोई हर्ज नहीं। हम कुछ कर सकते हैं, यह सिद्ध होगा तो उनकी निराशा अपने-आप दूर हो जावेगी। आज तो मैं हाथ की मेहनत और जानवर की मेहनत इन दोनों से क्या शक्य है, इसी में उतरना चाहता हूं। इससे आगे विचार करने की इच्छा ही नहीं होती।"

रात को ७-२५ पर बापू ने मौन लिया।

७ दिसंबर '४२

आज बापू का मौन था। घूमने के समय बातें नहीं हुईं। दोपहर के समय बापू के सोने के लिए विस्तरा धूप में लगाया। लकड़ी की जाली के कारण पूरी धूप तो आती नहीं, तो भी काम चल गया।

महादेवभाई की समाधि पर परसों सफेद शंखों का ॐ वनाया था। मगर किसी बकरी या गाय को लगा होगा कि सफेद मूली का खेत है। कल आकर सब तोड़ गई। आज शाम को फिर नए सिरे से वनाया। घूमने को दस ही मिनट बचे।

८ दिसंबर '४२

आज सुबह घूमते समय फिर ग्राम-उद्योग और चर्खेवाले सवाल की चर्चा आगे चली। देश की जरूरतों का माप निकालने के सिलसिले में बापू कहने लगे, "तुम्हीं यह हिसाब क्यों न करो? माना कि मुश्किलें हैं, मगर जो आदमी ठीक दृष्टि-बिंदु से काम करता है, वह उन्हें हल कर लेता

है। मार्क्स के सिवा पश्चिम में और वहुत-से अर्थशास्त्री हो गए हैं। मगर मार्क्स ने सारे प्रश्न को नए ढंग से देखा। उसने सारे मनुष्य-समाज को एक कुटुंव के रूप में देखा; इसीलिए वह कुछ नई चीज जगत को दे सका।"

भाई वोले, "नहीं, इस काम के लिए तो अर्थशास्त्रियों की टोली चाहिए। सारे हिंदुस्तान की साधन-संपत्ति का हिसाव लगाना आसान वात नहीं। आप खादी का हिसाव करते-कराते हैं। उसी में कितनी उलझनें पैदा होती हैं। तव इस इतनी वड़ी चीज का तो कहना ही क्या!"

बापू कहने लगे, "उलझनें आती हैं तो भी मुझे ऐसा नहीं लगता कि कोई दूसरा यह काम मुझसे अच्छा कर लेगा। हिंदुस्तान की पूरी साधन-संपत्ति का हिसाब तो एक नहीं, सौ अर्थशास्त्री भी नहीं लगा सकते। कौन कह सकता है कि हिमालय में से ही कितनी शक्ति हमें मिल सकती है?"

वापू ने बात आगे चलाई, "मैं क्यों किसी के पास जाऊं? फिर यह काम भी मेरा नहीं। मेरा काम तो हाथ और पशुओं की मेहनत से होने वाले काम का हिसाब निकालना है। जव इसमें असफल हो जाऊंगा तव ज्ञात हो जाएगा कि हिंदुस्तान की जरूरतें इस प्रकार पूरी करने की आशा रखना मेरी मूर्खता थी। तव दूसरी चीज का विचार करने का समय आवेगा।"

भाई कहने लगे, "चीन में तो खेती में जानवर भी इस्तेमाल नहीं किये जाते।"

वापू वोले, "हां, दक्षिण अफ्रीका में मैंने भी हाथ से ही खेती करवाई थी। काफी काम हुआ था, मगर मुझे लगता है कि पशु का और आदमी का इतना निकट का संवंध है कि पशु की मदद हमें लेनी चाहिए। इससे पशुओं की रक्षा भी होती है। गो-रक्षा का सवाल तो खेती और ग्राम-उद्योगों के साथ जुड़ा हुआ है ही। मुझे विश्वास है कि पशु और आदमी की मेहनत हिंदुस्तान की जरूरतें पूरी कर

सकती है। मैंने अनेक जन्म लिये हैं और लूंगा; पर इससे मेरे विश्वास पर आंच नहीं आ सकती। ऐसे ही ग्राम-उद्योगों और चर्खे के वारे में भी मेरा दृढ़ विश्वास है।"

भाई कहने लगे, "आप मानते हैं कि पहले मनुष्य की जिंदगी सादी थी, वीच में उसने अनेक रंग देखे, मगर उन सबसे थककर उसने फिर सादी जिंदगी अख्तियार कर ली। मगर अंतिम स्थिति पहली स्थिति की पुनरावृत्ति नहीं है। उससे ऊपर की मंजिल है। पहली सादगी अज्ञान की थी, दूसरी ज्ञान की।"

वापू ने कहा, "यह ठीक है।"

: ३० :

भावी समाज-रचना का आधार

९ दिसंबर '४२

आज वापू को यहां आए चार महीने पूरे हो गए। बापू कहा करते हैं कि यहां हम छः महीने से अधिक नहीं रहनेवाले हैं। मगर दो महीने में छूट जाने की कोई सूरत नजर नहीं आती। रात को बा कह रही थीं कि अभी छः महीने नहीं, बल्कि एक वर्ष लगेगा।

आज सुबह घूमते समय युद्ध और युद्ध के बाद क्या होगा इसकी बातें चल रही थीं। भाई कह रहे थे, "आप मानते हैं कि इस युद्ध का परिणाम अच्छा ही आवेगा, मगर मुझे इसमें शंका है। सामान्य नियम यह है कि जिन देशों की जीत हो वहां क्रांति फासिज्म की दिशा में और पराजित देशों में क्रांति साम्यवाद की ओर होती है।" वापू कहने लगे, "मुझे तो शंका होती ही नहीं है कि परिणाम अच्छा आवेगा।" इसके वाद यह चर्चा छिड़ी कि राजा लोग हर तरह के आदमियों को खरीद लेते हैं। वापू ने कहा, "इन लोगों ने तो अभ्यास ही इस चीज का किया है कि मनुष्य-स्वभाव कहां तक नीचे जा सकता है। कहां तक ऊपर जा सकता है,

इसका अभ्यास करने में उनका क्या प्रयोजन था, यह अभ्यास मैं कर रहा हूं।"

शाम को घूमते समय भाई कहने लगे, "आप इस चीज को नहीं मानते कि भौतिक वातावरण के असर से मनुष्य के विचार बदलते हैं। आप मानते हैं कि मनुष्य के विचारों का वातावरण पर असर पड़ता है और वह बदलता है। ऐसे ही आप कहते हैं कि पांचवीं शक्ति दैव को हम बाहर नहीं कर सकते। मार्क्सवादी कहते हैं कि व्यक्ति भले बदलें, मगर वर्ग की चाल नहीं बदलती। यह इतिहास हमें सिखाता है और ऐतिहासिक प्रक्रिया में दैव भी आ जाता है।"

बापू बोले, "नहीं, मान लो कि हिटलर आज बीमारी से मर जावे तो वह दैवयोग ही होगा न, मगर उसका असर इतिहास पर पड़ेगा। ऐसे ही मानो कि सब पूंजीपति खत्म हो जावें या भूचाल आवे और उसमें दफन हो जावें तो बड़े शहर ही न होंगे। तब वर्ग-विग्रह का प्रश्न दूसरा रूप धारण करेगा या नहीं।"

इसके बाद 'मन पहले कि प्रकृति' इस पर चर्चा हुई। बापू ने कहा, "प्रकृति और पुरुष—दोनों अनादि हैं। इसलिए कौन पहले था, यह नहीं कहा जा सकता। प्रकृति पुरुष के विचारों को बनाती है, यह मैं नहीं मानता।"

१० दिसंबर '४२

कल भंसालीभाई के बारे में मुंशी का लेख था। उसमें उन्होंने भंसाली-भाई की साधुता का वर्णन किया था। साथ ही बताया था कि कैसे एक समय वे नीम के पत्ते खाते थे, एक समय अपना मुंह सी लिया था और एक नली से पेट में खुराक पहुंचाते थे। मुझे लगा कि यह सब कहना आज अनावश्यक था। इससे भंसालीभाई को कोई फायदा नहीं पहुंच सकता था। उलटा लोगों को लग सकता था कि यह तो कोई पागल है। उनके उपवास की कीमत उससे कम हो सकती है। भाई कहते थे कि वह कहना आवश्यक है। बापू से हमने पूछा। वे बोले, "आवश्यक भी हो सकता है और अनावश्यक भी।" मैं यह नहीं समझ सकी। मैंने पूछा, "आप लिखें तो क्या करें?"

वे कहने लगे, "मैं एक काल्पनिक चीज के बारे में कुछ नहीं कह सकता। मुझे भंसाली के साथ पत्र-व्यवहार करना चाहिए। उसकी मनोवृत्ति जानकर ही मैं लिख सकता हूं।" मैंने कहा, "अखबारों की बात को सही मानकर आप क्या लिखेंगे?" बापू ने कहा, "मैं इस तरह विचार ही नहीं कर सकता।"

शाम को घूमते समय भाई बापू से चर्खे के बारे में फिर पूछते रहे। कहने लगे, "क्या आपने अपने पुराने मत में फेरफार किया है?" बापू कहने लगे, "मेरा मत आज भी वही है जो बीस वर्ष पहले था। मगर मेरी कल्पना और प्रयोग आज जगत को विश्वास दिला सकें, इस हद तक वे सिद्ध नहीं हुए। जितना हम कर पाए हैं, उससे मुझे तो पूरी तस्वीर की झांकी मिल ही जाती है। मेरी श्रद्धा उससे पक्की होती है। चर्खे और ग्राम-उद्योग का उलटा उद्योगीकरण है। उससे तो लोगों का कल्याण हो ही नहीं सकता, यह बात सिद्ध है; मगर चर्खे के द्वारा कल्याण हो सकता है, यह जगत के सामने रख सकूं, इस हद तक सिद्ध नहीं कर पाया। एक ओर पूंजीपति पद्धति का उद्योगीकरण, दूसरी ओर साम्यवादी पद्धति के उद्योगीकरण का प्रयोग। वह प्रयोग भी आज अधूरा है। उसमें से क्या निकलेगा, यह देखना है। मुझे लगता है कि अंत में वह भी निष्फल होगा, मगर मैं खुले मन से उसको देख रहा हूं और पूरी श्रद्धा से अपना प्रयोग आगे चला रहा हूं। कौन सफल होता है, यह समय आने पर सिद्ध हो जावेगा।"

११ दिसंबर '४२

आज सुबह घूमते समय भाई बापू से कहने लगे, "दैव पांचवां है तो सही, मगर दैव तो सदा था। वर्गों का स्वभाव भी दैव में आ जाना चाहिए। इतिहास हमें सिखाता है कि व्यक्ति का हृदय भले ही पलट जावे, मगर जब तक समाज की आर्थिक रचना न बदलेगी तब तक एक वर्ग की हैसियत से पूंजीपति अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकेंगे।" बापू बोले, "व्यक्ति और वर्ग में भेद करना भूल है। जो एक व्यक्ति कर सकता है, वह सारा समाज कर सकता है।"

भाई ने कहा, "मगर यह तो आपने भी कहा है न कि व्यक्ति की मनोगति (Psychology of the Individual) और समाज की मनोगति (Mass Psychology) में फर्क होता है।" बापू कहने लगे, "वह ठीक है, मगर व्यक्ति समाज की विचार-प्रणाली को बदल सकता है। अहिंसक इंसान इस चीज को समझ लेगा कि सामाजिक रूप में अहिंसा की क्या शक्ल होगी और अपना काम करने में इस चीज का उपयोग करेगा।"

भाई कहने लगे, "मार्क्सवादी मानते हैं कि भौतिक वातावरण को बदल देने से, उदाहरणार्थ निजी जायदाद रखने की प्रथा को मिटा देने से, पूंजीपति वर्ग के विचार अपने-आप बदल जावेंगे। मैं समझता हूं कि इसमें काफी सत्य भरा है। आपकी वर्धा-शिक्षण-योजना भी क्या ज्ञान के प्रकृतिमूल होने के सिद्धांत (Materialistic theory of knowledge) का समर्थन नहीं करती?"

बापू बोले, "वर्धा-योजना हाथ की मार्फत दिमाग को विकसित करना चाहती है। यह तो अलग बात हुई, मगर मार्क्स के अनुयायी और मार्क्स खुद भी हाथ को शिष्ट-समाज के जीवन में कोई स्थान ही नहीं देते। उनके पास तो मशीन हाथ का स्थान लेती है। उनके मत से मशीन के बिना मनुष्य-समाज सुखी हो ही नहीं सकता। हाथ पर आधार रखकर तो उसे गुलामी में ही रहना है, यह मार्क्स की मान्यता है। मेरी मान्यता उससे बिलकुल उल्टी है और इसी शोध में मैं लगा हुआ हूं कि देखूं तो सही कि हाथ से क्या-क्या हो सकता है।"

भाई कहने लगे, "मार्क्स की शोधें बड़े महत्त्व की हैं। मार्क्स ने समाज की व्याधि का जो निदान किया है, वह सचोट है; मगर उसका जो इलाज बताया है, वह ठीक नहीं। उसके सामने हिंसक बल ही था। अहिंसक बल का उसे पता ही नहीं था। आपने गीताजी को अहिंसा के समर्थन की पुस्तक बताया है, यद्यपि सामान्यतया इससे उलटा माना जाता है। इसी तरह हम मार्क्स की शोधों का उपयोग अहिंसक समाज-रचना के लिए नहीं कर सकते? आखिर तो उसने गरीब का पक्ष लिया है। वह तो अहिंसक काम ही है न?"

बापू ने कहा, "आज जो दलील हम करते हैं वह मार्क्सवादियों की बुद्धि पर असर डालने के लिए है; क्योंकि मैं देखता हूं कि उनमें वहुत अच्छे-अच्छे आदमी भरे हैं। जैसे जवाहरलाल हैं, आचार्य नरेंद्रदेव हैं, जयप्रकाश हैं। हम क्यों इन लोगों को खोएं? अगर हम उन्हें खींच सकते हैं तो खीचें। इसके सिवा इन चर्चाओं का कोई अर्थ ही नहीं है, और मैं कहता हूं, उन लोगों पर तुम मार्क्स के साथ अहिंसा के समन्वय का प्रयत्न करके कोई असर नहीं डाल सकोगे। गीताजी की जो टीका मैंने लिखी है, वह गीताजी में से हिंसा का पाठ लेनेवालों के लिए नहीं है। जो अहिंसा का पाठ लेते हैं उनके लिए भी इतनी नहीं, मगर दोनों के वीच के वर्ग के लिए वह लिखी गई है।"

भाई बोले, "दूसरे मार्क्सवादियों की बात छोड़ दें। मैं कहता हूं कि मैं भी पक्का मार्क्सवादी हूं। जो मार्क्सवादी कहलाते हैं, उनसे अधिक मैं मार्क्स को मानता हूं। मगर मैं देखता हूं कि मार्क्सवाद को हम पूरा-पूरा सफल वना सकें तो भी मुझे उससे संतोष नहीं होगा। मैं तो देखना चाहता हूं कि मार्क्स ने जो वताया है, उसे हम कहां तक अपने ढांचे में डालकर उसका उपयोग कर सकते हैं।"

बापू कहने लगे, "मैं मार्क्स को इस तरह नहीं देखता। मैं यह भी नहीं मानता कि उसने विलकुल कुछ नया दिया है। उसके पहले रस्किन ने भी वही काम किया। मार्क्स और रस्किन की विशेषता यह है कि उन्होंने सारी मानव-जाति को अपने सामने रखा। वे वर्ग की कैद से निकल गए और गरीबों का पक्ष लिया। इसलिए मार्क्स का समाज-व्यथा का पृथक्करण पुराने अर्थशास्त्रियों के मुकावले में इतना तेजस्वी वना, मगर तुम मुझे वताओ तो सही कि मार्क्स की कौन-सी बात तुम्हें इतना मुग्ध करती है?"

भाई बोले, "मार्क्स ने समाज की व्याधि के जो निदान किये हैं उनमें और मार्क्स से पहले जो निदान किये गए थे, उनमें उतना ही फर्क है जितना कि जरगरी (Alchemy) और रसायनशास्त्र (Chemistry) में। उसने स्पष्ट रूप से बताया है कि आर्थिक वातावरण हमारे जीवन के हर

पहलू—कला, साहित्य, कानून, नीति, यहां तक कि धर्म, को भी किस प्रकार ढालता है और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism) की क्रिया द्वारा कैसे समाज का विकास होता है। एक तरह से रस्किन ने भी यही काम किया है—उसने भी गरीबों का पक्ष लिया। मैं मार्क्स को रस्किन का पूरक मानता हूं। युद्ध की क्रिया को ही लीजिए। उसके लिए अनेक जादू-टोने के-से उपचार बताए जाते थे। मगर युद्धों की जड़ में जो आर्थिक कारण प्रविष्ट है, उसे कोई नहीं देखता था। 'संपत्ति या शांति'[1] (Property or Peace) का हमें आगे स्पष्ट ज्ञान ही नहीं था। हम इनमें अब परस्पर स्पष्टतः वैर देखते हैं। साम्राज्यवाद पूंजीवाद का अनिवार्य फल है, यह मार्क्स ने हमें दिखाया है।"

बापू कहने लगे, "मैं इस तरह आर्थिक उलझनों को सब पापों का मूल नहीं मानता और युद्ध का कारण आर्थिक उलझनें हैं, यह कहना भी ठीक नहीं है। गत युद्ध का क्या कारण था? निकम्मे कारण थे? इस दफा जब युद्ध छिड़ा तो चैंबरलेन प्रधान मंत्री था। वह युद्ध को टालने का प्रयत्न कर रहा था। एक रात में वह क्यों बदल गया? उसे डर लगा होगा कि अब युद्ध को टालने से अपनी पार्टी का साथ खोना पड़गा। मैं मानता हूं कि उसकी जगह कोई अच्छा राजनीतिज्ञ होता तो युद्ध टल जाता। मैंने तो अंग्रेजों को कहा ही है कि उन्हें क्या करना चाहिए और हैलन क्या ट्राय के युद्ध का कारण नहीं थी? दूर क्यों जावें। राजपूत-युद्ध तो आधुनिक इतिहास में आ जाते हैं। उनका कारण आर्थिक कदापि नहीं था।"

भाई बोले, "किसी एक युद्ध का कारण आर्थिक भले न हो मगर पूंजीवादी समाज में जो लाक्षणिक युद्ध होते हैं उनको लें तो उनकी जड़ में आर्थिक कारण मिलेगा। कुछ भी हो, हम मार्क्स के निदान से लाभ उठाकर उसकी दवा छोड़कर उन्हीं रोगों की दवा अहिंसक उपायों से करने की पद्धति क्यों नहीं अख्तियार कर सकते? मार्क्स के सामने अहिंसक बल रहता तो शायद वह भी यही करता।"

---

१. अंग्रेजी लेखक ब्रेल्सफोर्ड की एक पुस्तक का शीर्षक।

बापू ने कहा, "ये तो तुम्हारे मार्क्स के बारे में मौलिक विचार हुए। तुम जो कुछ मानते या समझते हो उसे लिख डालो।"

वापस लौटते समय भाई कहने लगे, "आपने तो भरी सभा में १२४ वर्ष तक जिंदा रहने का वचन दिया है न! उस पर आपको कायम रहना होगा। अगर आप ऐसा करें तो ट्रस्टीशिप की आपकी बात सच सिद्ध होगी, नहीं तो हवा में उड़ जायगी।"

शाम को घूमते समय भाई कौशिक आख्यान की बात करने लगे कि कैसे एक कसाई केवल माता-पिता की सेवा के लिए ही कसाई का धंधा करता था। दरअसल वह ज्ञानी था। तब मैंने दोस्तोवस्की के 'क्राइम ऐंड पनिशमेंट' (अपराध और दंड) को लेकर कहा कि कैसे सोनिया नाम की एक लड़की अपनी सौतेली मां के बच्चों और शराबी पिता के भरण-पोषण के लिए वेश्या का धंधा करती है। मगर उसकी आत्मा अलिप्त रहती है। बापू इस पर कहने लगे, "उपन्यासों को छोड़ो। जापान में आज यह सब हो रहा है।" भाई तब फादर सर्जीयस की टॉल्स्टॉय-कथा पर आए और बताया कि कैसे वर्षों की तपस्या के बाद उसे अपनी तपश्चर्या और पवित्रता का घमंड होता है और उसका पतन होता है। फिर उसे प्रेरणा होती है कि एक औरत के पास जाओ और नम्रता सीखो। वह दिन-रात अपने बच्चों की और शराबी पति की सेवा करती है, मगर उसे खयाल तक नहीं आता कि वह त्याग कर रही है।

इससे ताईस (Thais)[1] की बात निकली कि कैसे आध्यात्मिक अभिमान वहां भी पतन का मूल बनता है। बापू कहने लगे, "यह तो है ही। घमंड आया और सारी मेहनत बेकार गई।" भाई बोले, "मैंने कहीं पर आपका वाक्य देखा है। वह कभी नहीं भूलता। 'हजारों वर्ष की अखंड साधना तथा लाखों वर्षों की अखंड तपश्चर्या को एक क्षण का आध्यात्मिक अभिमान नष्ट कर देता है'।"

चीर-फाड़ की बातें होती रहीं। भाई कहने लगे—डॉ० शाह कहते

---

१. अनातोले फ्रांस का उपन्यास।

थे कि पता नहीं, लोग हिरन का शिकार कैसे करते हैं। उसकी आंखों में तो इतनी करुणा होती है कि देखा तक नहीं जाता। इसी तरह घायल पक्षी की बात है।

बापू कहने लगे कि छुटपन में वे डॉक्टर होना चाहते थे, मगर पिताजी का विरोध था और मां का भी। पिता तो मर गए, मगर मां के कारण उन्होंने डॉक्टरी छोड़कर बैरिस्टरी ली। बाद में जब बैरिस्टर होने के बाद १९०६ में विलायत गए तब उन्होंने फिर डॉक्टरी सीखने का विचार किया। पता चला कि चीर-फाड़ के बिना वह हो नहीं सकता। सो छोड़ दिया।

रात को सोने के समय बापू का रक्त-चाप बढ़ जाता है। आज से विचार किया कि प्रार्थना के बाद वे मौन लें और इसका असर देखा जावे। आज तो मौन ठीक नहीं चल पाया। आशा है कि कल से ठीक चलेगा।

१२ दिसंबर '४२

क्रॉसवर्ड प्रतियोगिता (Crossword Puzzle) के बारे में बापू कहने लगे, "यह एक तरह का जुआ है। बिना मेहनत पैसे बटोरने के लिए ही यह आडंबर है। इसमें से खूब लोग पैसे कमाते हैं।"

इस पर बीमा और जुए की बाबत भाई ने कहा, "बीमा और जुए में फर्क यह है कि बीमा अनिश्चित को निश्चित और जुआ निश्चित को अनिश्चित बनाता है।" बापू से उन्होंने पूछा, "आप क्या समझते हैं कि राष्ट्रीय सरकार अगर राष्ट्रीय बीमा को सर्वव्यापी और अनिवार्य कर दे तो आप उसका समर्थन करेंगे? वृद्धावस्था का बीमा, प्रसूतिकाल और रुग्णावस्था के संबंध में सहायता (Maternity and sickness benefits) इस प्रकार के कार्य अच्छे हैं?"

बापू कहने लगे, "अनिवार्य बीमा करने की बजाय सरकार इसके लिए मुफ्त में ही व्यवस्था करे तो मुझे उज्र नहीं होगा। आज काम करने-वालों को तो पता भी नहीं चलता कि सरकार अपने-आप उनकी तनखाह में से कुछ काटकर उन्हें प्रॉविडेंट फंड का लाभ देती है। वह करने जैसी चीज हो सकती है; लेकिन सोचने की है।" भाई बोले, "रूस के बारे में

और चाहे जो कहा जाय, पर इतना तो अवश्य है कि कितनी ही चीजें रूस ने ऐसी कर दिखाईं, जिनकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि कब हम गरीबों को दे सकेंगे। सब के लिए खाना-पहनना, डॉक्टरी सहायता, वृद्धावस्था में पेंशन, प्रसूतिकाल में सरकारी सहायता तथा अन्य कितने ही सुधार रूसियों ने तेजी से कर दिखाए हैं।"

बापू कहने लगे, "हां, वह तो ठीक है, मगर मैं तो देख रहा हूं कि यह चलेगा कितने दिन? सामान्य नियम है कि जो चीज तेजी से आती है वह तेजी से चली भी जाती है।"

भाई ने पूछा, "आप जिस तरह की समाज-रचना करना चाहते हैं, वह बाकी जगह दूसरे ढंग से चले तब भी टिकी रह सकती है या कि आप यह मानते हैं कि जगत को हम उस प्रकार का न बना लेंगे तो जगत हमें हजम कर जावेगा?"

बापू कहने लगे, "दोनों बातें संभव हैं। हम इस प्रयोग में सफल होने पर उसे अपने यहां चला सकेंगे। रूस को देखो। उसने विरोधी जगत में नए समाज की रचना कर दिखाई है न।"

भाई ने कहा, "रूस का प्रयोग अधूरा है। उसका कहना है कि शेष जगत के साम्यवादी न बनने के कारण उसका प्रयोग अधूरा है। वह संपूर्ण जगत को साम्यवादी बनाने का ध्येय रखता है।"

बापू बोले, "जो हो, रूस का भी युद्ध के बाद क्या बचता है, यह देखना है। परंतु मैं तो आज यह देखता हूं कि जगत में जो सभ्यता कायम हुई है, उसका नाश हो रहा है। वह चल नहीं सकती। मेरा प्रयोग उस प्रपंच में से निकलने का एक रास्ता दिखाता है; मगर इस प्रयोग को भी हम पूरी तरह आजमा नहीं सके। दूसरे देशों में भी मेरी जो कीमत है वह इसी कारण कि वे देखते हैं कि मेरे पास कुछ नई चीज है। वे हमारी ओर आंख लगाकर बैठे हैं। अगर हम अपना प्रयोग सफल कर दिखाएं तो वे अपने-आप इसे अपनावेंगे।"

भाई कहने लगे, "रूस ने उद्योगीकरण के आधार पर अपना नया समाज खड़ा किया है। उसे देखकर दूसरों के मुंह में पानी आया। मगर

हम सादी जिंदगी के आधार पर अपना नया समाज खड़ा करें तो भी हमारे प्राकृतिक धन पर दूसरे क्या नहीं ललचाएंगे ? वे भी कह सकते हैं कि तुम्हें जिस चीज की जरूरत नहीं, जिसका तुम उद्योगीकरण द्वारा उपयोग नहीं करते हो, उसको हमें इस्तेमाल करने दो और इस प्रकार अंत में वे हमें हजम कर सकते हैं। इस भय से बचने का आपकी सम्मति में क्या उपाय है ?"

बापू ने कहा, "जब ऐसी परिस्थिति पैदा होगी तब इसके बारे में हम विचार कर सकेंगे। आज से कल्पना के आधार पर वह नहीं किया जा सकता।"

रात को बापू ने प्रार्थना के बाद मौन लेकर कुछ काम किया। भाई का लिखा हुआ सुधारने की दृष्टि से पढ़ा। पढ़ने के बाद रक्तचाप बढ़ गया, सोने के समय उतर गया। हर रोज काम के बाद रक्तचाप रहता था। बाद में बापू बातें किया करते थे। सोने के समय रक्तचाप बढ़ जाता था। इसका अर्थ यह निकलता है कि प्रार्थना के बाद बापू को बहुत मगज-पच्ची के काम में अथवा किसी चर्चा में नहीं पड़ना चाहिए।

: ३१ :

सत्ता और अहिंसा

१३ दिसंबर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू से भाई ने पूछा, "आप कहते हैं कि सत्ता लोगों के हाथ में आ जावेगी तो ट्रस्टीशिप को हम कानूनन दाखिल कर देंगे। हमें यह काम लोकमत और प्रजातंत्र के द्वारा करना होगा। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि ट्रस्टीशिप का सिद्धांत हम उसी दर्जे तक अमल में ला सकेंगे जहां तक हम पूंजीपतियों को इसके लिए तैयार कर सकेंगे ? क्या इसका मतलब यह है कि आर्थिक सुधार किश्तों के रूप में आवेंगे ? इसके द्वारा हम जनता को उस तरह उत्साहित न कर सकेंगे जिस तरह

रूसियों ने निजी मिल्कियत की प्रथा को एकदम मिटाकर किया है। इसीलिए तो एकसत्तावाद (Dictatorship) की आवश्यकता मानी गई। सुधारक जनतंत्रवादी नहीं हो सकता। सवाल यह है कि हम निजी मिल्कियत की पद्धति को रखकर सामाजिक अन्याय को जिंदा रहने देंगे या एकसत्तावाद का कड़ुवा घूंट भरकर उसकी जड़ निकाल देंगे?

"अगर अहिंसा द्वारा, जैसा कि आपने कहा था, हम प्राण की आहुति भी मांग सकते हैं तो पूंजीपतियों से निजी मिल्कियत के अधिकार को ही क्यों नहीं एकदम उड़वा देते? हम उन्हें नए तंत्र में सम्मानित स्थान दें; परंतु पूंजीपतियों की हैसियत में नहीं, प्रतिभासंपन्न समाज-सेवी की हैसियत में। क्या अहिंसा की शक्ति की कोई मर्यादा है?

"आप मानते हैं कि सत्ता हमारे हाथ में किश्तों में आवे तो क्रांति-मूलक जोश मर जावेगा। परिणाम-स्वरूप हम बड़ा भारी परिवर्तन आसानी से नहीं कर पावेंगे। यही बात क्या आर्थिक क्षेत्र में भी लागू नहीं होती?"

बापू कहने लगे, "रूस में पूंजीपतियों के जाने से जनता की आमदनी बढ़ी। इससे उनका उत्साह बढ़ा। हमारे यहां भी आर्थिक सुधार के नीचे मजदूरों की आमदनी तो बढ़ेगी ही। रूस में तो जनता को पूंजीवादी वर्ग की संपत्ति पर ही अधिकार मिला; पर यहां तो संपत्ति के साथ उनकी बुद्धि, अनुभव और कार्य-कुशलता, सब उनको मिला। यह तो उससे भी बड़ी क्रांति की बात हुई। पूंजीपतियों ने वर्षों से धन-उपार्जन की कला सीखी है। वह कला जब जनता की सेवा में लगाई जावेगी तो जनता की आर्थिक स्थिति तेजी से सुधरेगी। जब तक हमारे पास सत्ता नहीं तब तक तो हम जितना पूंजीपति वर्ग को समझा सकें उतना ही उनसे करवा सकते हैं, मगर जब सत्ता हमारे हाथ में आ जाती है तब भी जितने के लिए लोग तैयार हों उतना ही सुधार हम कानून की मार्फत भी कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर आज सफाई के कानूनों पर कौन अमल करता है? जनता तो उन कानूनों के लिए तैयार नहीं है।"

मैंने पूछा, "तो तैयारी पूंजीपतियों की होनी चाहिए या जनता की?

जनता तो तैयार है ही। रहे पूंजीपति, सो वे अपनी पूंजी छोड़ने को क्यों तैयार होंगे ?"

बापू कहने लगे, "दोनों की तैयारी होनी चाहिए। पूंजीपति भी स्वयं ही समझदारी के साथ त्याग के लिए तैयार हो सकते हैं और नहीं तो उन्हें लोकमत के सामने झुकना पड़ेगा। आज लोकमत यहां तक संगठित नहीं हुआ है।"

भाई ने कहा, "सत्ता लोगों के हाथ में आवे, इसका अर्थ क्या ? सत्ता का अर्थ क्या ?"

बापू बोले, "वोटिंग की ताकत। इतना व्यापक वोट लोगों के पास होगा कि वे बहुमत में होकर जो चाहेंगे करवा लेंगे। मिसाल के तौर पर वे चाहेंगे तो कानून भी बनवा सकेंगे।"

भाई कहने लगे, "वह सत्ता लोगों के हाथ में आवे किस तरह ? मार्क्स के अनुयायी कहते हैं कि आजकल का पार्लमेंटरी तरीका इस चीज के लिए निकम्मा है।"

बापू बोले, "इसकी तालीम लोगों को बीस वर्ष से मिल रही है। हमारा शस्त्र है अहिंसक असहयोग। यह शस्त्र बीस वर्ष से घड़ा जा रहा है।"

भाई कहने लगे, "पूरी सत्ता हमारे हाथ में यानी जनता के हाथ में आवे तब तो यह सब शक्य है। मगर आज की परिस्थिति में तो ऐसा लगता है कि पूरी सत्ता कांग्रेस के हाथ में शायद न भी आवे। कांग्रेसी मिनिस्ट्रियों को ब्रिटिश सरकार के साथ काम करना पड़ता था। शायद हमें मुस्लिम लीग के साथ सत्ता बांटनी पड़े। यह भी हो सकता है कि हमारे हाथ में सत्ता आवे ही नहीं।"

बापू ने कहा, "हम इस सवाल में आज न उतरें कि सत्ता लोगों के हाथ में आ सकती है या नहीं। मैं मानता हूं कि हमारे यहां ऐसा प्रजातंत्र पैदा होगा जिसमें पूरी सत्ता लोगों के हाथ में ही होगी, मगर वह मेरी भूल हो सकती है। आज हम दलील की खातिर यह मान लें कि ऐसा राजतंत्र पैदा होगा। इसके बाद वह किस तरह काम करेगा—इसका हमें विचार करना है।"

भाई कहने लगे, "साम्यवादी कहते हैं कि हम आपकी सब बातें समझते हैं, मगर जब सत्ता छीनने का विचार करते हैं तब समझ में नहीं आता कि अहिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा कैसे जमाया जा सकता है? फिर आपने तो एक बार कहा भी था न कि हो सकता है कि अहिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा न लिया जा सके।"

बापू ने कहा, "हां, परंतु शासन-तंत्र से बाहर रहकर अहिंसावादी लोग सत्ता पर असर डाला करें। वह काफी है। मानो कि सत्ता विरोधियों के हाथ में है तो भी अहिंसावादी उनसे काम ले सकते हैं। कांग्रेस में ही अपने से मतभेद रखनेवालों के हाथ में सत्ता है तो भी वही परिणाम लाया जा सकता है। यही तो अहिंसा की विशेषता है।"

बापू ने आगे कहा, "और सत्ताधारी को हिंसा का उपयोग करना ही पड़ता है, यह मैं नहीं मानता।"

भाई कहने लगे, "आखिर राज्य के मूल में ही दंड-सत्ता (Coersive Power) का भाव निहित है।"

बापू बोले, "मगर किस तरह की दंड-सत्ता? मानो कि एक परिवार में पिता को सत्ता दी जाती है। वह बच्चों को थोड़ी चुभेगी? सत्ता भी फूल की-सी हो सकती है, जिसका दबाव किसी पर पड़े ही नहीं।

"कांग्रेस की सत्ता लोगों ने खुशी से स्वीकार की। बाद में नरीमैन और खरे-जैसे व्यक्ति भी निकले। और बिहार को लो। वहां के लोगों को समझाने में मुश्किल आती ही नहीं। कांग्रेस की सत्ता किसी को चुभनेवाली थोड़े ही है। लोग अपनी खुशी से मुझे सत्ता देते हैं, मेरी मानते हैं। आज न मानना चाहें तो मैं अलग हो जाऊंगा। आज मैं बिहार चला जाऊं तो लोग अपने-आप मेरे पीछे चले आवेंगे। उन लोगों में एक तरह की भक्ति और श्रद्धा रही है। यह आम जनता का भाव रहा है। इसीलिए धनिक वर्ग भी उसी तरह से चलता है। खिलाफत के जमाने में कांग्रेस की अथवा मेरी सत्ता किसको चुभती थी? अली-भाइयों को क्या इसका तनिक भी बोझ लगता था? इसी से तो मैं उनका 'सरकार' बना न? ऐसी ही राजतंत्र की सत्ता भी हो सकती है।"

भाई कहने लगे, "उसके लिए बड़ी उग्र तपश्चर्या चाहिए। भागवत के एकादश स्कंध में समाज का जिसे कानून बनानेवाला बनना है उसके लिए तैयारी का वर्णन है। उसे सारे कौटुंबिक संबंध तोड़कर वानप्रस्थी बनना है, भयंकर कष्ट उठाकर शरीर को शून्यवत बनाना है, फिर संन्यास लेकर राग-द्वेष-रहित बनना है। मान, अपमान, स्तुति और निंदा में समभाव रखकर अनिकेत और मौनी बनना है। यदि शरीर इतना कष्ट न सहन कर सके तो उसे अग्नि में जला देने का व्रत लेना है। तब ऐसा संन्यासी सत्ता का अधिकारी होगा। स्वार्थ जैसी चीज वह जानता ही नहीं है। उसका कहा कोई टाल ही नहीं सकता। मतलब यह कि सत्ता का सच्चा अधिकारी पैदा होना चाहिए। पीछे सत्ता अपने-आप आवेगी और वह किसी को चुभेगी भी नहीं। किसी को तपश्चर्या का चित्र डरावना लगे तो मैं कहूंगा कि हिंसा-पथ पर क्या कम कुर्बानी की आवश्यकता है? रूस को देखिए। बर्फ जमने की सर्दी से भी ४० डिगरी नीचे की सर्दी में वे लोग आज लड़ रहे हैं। खाना-पीना और सोना सब का त्याग कर रहे हैं। अहिंसा-पथ पर तो शायद इससे कम ही कुर्बानी करनी पड़े।"

बापू बोले, "यह हो सकता है, मगर तैयारी उससे ज्यादा कुर्बानी की होनी चाहिए। इस मामले में कोई छोटा रास्ता है ही नहीं, होना चाहिए भी नहीं। यह वर्णन ठीक है। समाज में जागृति आनी चाहिए, मगर सारी जनता को इतना त्याग करने की आवश्यकता नहीं रहती। यदि एक आदमी की भी साधना पूरी होती है तो काम निपट जाता है। मुहम्मद या ईसा रोज-रोज थोड़े पैदा होते हैं। एक दफा आए और काम शुरू हो गया। पीछे लोग अपनी शक्ति के अनुसार उनकी मदद करते रहते हैं और काम चलता रहता है।"

मैंने पूछा, "तब तो ऐसे आदर्शमय राजतंत्र को ईसा या मुहम्मद जैसा महान व्यक्ति ही चला सकता है। वह कहां से मिले?"

बापू ने कहा, "तुम विचार करो तो ऐसे सवाल अपने-आप हल हो जावेंगे। ईसा ने अपने बारह शिष्य तैयार किये थे। उसके पीछे काम

अपने-आप चलने लगा। आदर्शमय प्रजातंत्र को चलाने के लिए हमेशा महान व्यक्ति की आवश्यकता नहीं। लोगों को अपनी ताकत का आभास होना चाहिए। जैसा कि मैंने कहा है, क्यों मानते हो कि सोना-चांदी ही पूंजी है? मजदूरी भी पूंजी है। सोना-चांदी से भी वढ़िया पूंजी है। यह ज्ञान मजदूर वर्ग को हो जावे तो काम निवट जाता है। वह हो सकेगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। यही वात अहिंसक प्रजातंत्र पर लागू होती है।"

भाई कहने लगे, "ठीक है, युग-कर्त्ता तो कभी-कभी ही आता है। वह सिलसिला चला देता है। पीछे युग अपने-आप चला करता है। यह भी वात है कि युग का भी अंत होता है। आलसी और स्वार्थी पैदा हो जावें तो वे सत्ता को संभाल नहीं सकेंगे, खो बैठेंगे; मगर वही चीज हिंसा के आधार पर खड़ी हुई सत्ता पर भी लागू होती है।"

शाम को घूमते समय भाई ने बापू से पूछा, "शासनतंत्र की संज्ञा क्या है?"

बापू कहने लगे, "किसी विशेष शासनतंत्र संज्ञा को पूछो तो मैं बता सकता हूं। सामान्य अर्थ तो शासनतंत्र का यह है कि वह कानून बनाने-वालों और उन पर अमल करानेवालों का समूह ही होता है।"

भाई अराजकवादियों की वात करने लगे, "वे लोग राज्य को नहीं मानते, मगर समाज-व्यवस्था को मानते हैं। देखा जाय तो शासनतंत्र दरअसल है दंड का साधन ही।"

वापू बोले, "मार्क्स का तो यह कहना है ही कि जव साम्यवाद पूरी तरह सफल हो जावेगा तो शासनतंत्र का कुछ काम नहीं रह जावेगा। वह अपने-आप सूख जावेगा। अराजकवादी का तो अर्थ ही यह है कि हरेक आदमी जो चाहे कर सकता है।"

मैंने पूछा, "क्या आप भी मानते हैं कि आदर्श समाज में शासनतंत्र की जरूरत नहीं रहेगी?"

बापू कहने लगे, "मैं मानता हूं कि शासनतंत्र तो रहेगा ही; मगर वह शासनतंत्र यही कहो न कि ऋषियों की हकूमत होगी। प्राचीन काल

में तो लोग ऋषियों को मानते ही थे न। आधुनिक काल में ऋषि का अर्थ उस व्यक्ति से है जो सबसे अधिक सुशिक्षित, सेवाभावी, सेवा की योग्यता रखनेवाला हो। ऐसा पुरुष अपने-आप सत्ता लेकर नहीं बैठ जावेगा, मगर लोग स्वयं समझ लेंगे कि उसके विना काम नहीं चलेगा। वे स्वयं उसे चुनकर सत्ता उसके हाथ में सौंप देंगे।"

आज दोपहर भंसालीभाई की अखवारों में खबर थी। डॉ० मनु त्रिवेदी की उनके वारे में रिपोर्ट थी। अणे साहब ने उन्हें उपवास छोड़ने का तार दिया था और कहा था कि वे अपनी जगह से चिमूर के संवंध में जांच-पड़ताल कराने की कोशिश कर रहे हैं। भंसालीभाई ने उत्तर दिया था, "आप सफल हों, मगर मैं इस तरह उपवास नहीं छोड़ सकता। आप आवें और हम चिमूर जाकर लोगों को आश्वासन दें।" अणे साहव ने फिर तार दिया, "इसका कोई फायदा न होगा, मगर आप उपवास छोड़ें तो मैं आऊं।" भंसालीभाई ने उत्तर दिया, "आप आवें, हम साथ जाकर चिमूर के लोगों की फरियाद सुनेंगे। मैं उपवास छोड़ूंगा।"

परिणाम क्या होगा, यह तो ईश्वर ही जानता है। भंसालीभाई बच जावें तो बड़ी वात होगी। डॉ० मनुभाई लिखते हैं, "तवीयत कमजोर बहुत है। उठकर बैठ भी नहीं सकते। जल्दी ही हालत ऐसी हो जावेगी कि उपवास छोड़ने पर भी वे न बच पाएंगे।"

१४ दिसंबर '४२

आज सोमवार था। बापू का मौन। उन्होंने भाई के एक-दो प्रश्नों का उत्तर लिखा।

शाम को वापू का रक्तचाप ठीक था; परंतु सोने के समय कुछ बढ़ गया।

सुबह भंडारी आए थे। बापू स्नानघर में थे। उन्हें नहीं मिल सके। कलकत्ते से सर्पगंधा का ऐलकोहॉलिक एक्स्ट्रैक्ट दो औंस आया है। वह भी भंडारी साथ लाए थे। मैंने आठ औंस मंगाया था।

सुबह बड़ी ठंड थी। बापू की मालिश अंगीठी पास रखकर की गई।

भंसालीभाई की खबर थी कि श्री मुंशी बंबई से वर्धा गए हैं। उन्होंने भी अणे साहब को तार दिया था, "आप आवें, भंसालीभाई का उपवास छुड़ाने में मेरी मदद की आवश्यकता होगी तो मैं भी आ जाऊंगा। आशा है, हम सफल होंगे।" बंबई से कुछ बहनें भंसालीजी के दर्शनार्थ वर्धा गई हैं।

१५ दिसंबर '४२

बापू ने दो-तीन दिन से उर्दू का अभ्यास कम कर दिया है। 'आरोग्य की चाबी' लिखने में ज्यादा समय देने लगे हैं। इस महीने में उसे पूरा करना चाहते हैं। रविवार के 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में "जोड ईश्वर की ओर लौट आते हैं" शीर्षक लेख था। उस पर से मीराबहन को विचार आया कि उन्हें पत्र जोड साहब को लिखना चाहिए। सो एक पत्र में उन्होंने लिखा—"मैं आप-जैसी विद्वान तो नहीं हूं, मगर आपके साथ मेरी सहानुभूति है। मैं भी आपकी-सी मानसिक दशा में से गुजर चुकी हूं। मुझे हिंदू दर्शनशास्त्र से शांति मिली है। आप भी अनुकूल वातावरण होने पर हिंदुस्तान आवें। यहां की नदियां, हिमालय-जैसे पहाड़ और अन्य प्राकृतिक साधन आपको नया संदेश सुनाएंगे। यहां आकर मेरा बाहरी और भीतरी जीवन बदल गया है।"

बापू का रक्तचाप आज बहुत अच्छा था। १४०/९०। शाम को प्रार्थना के बाद एक घंटा काम किया। बाद में शौचादि से निवृत्त होने गए; पर रक्तचाप वैसा ही रहा। कारण का विचार करने लगे। कहने लगे, "आज बहुत दिनों बाद मूली खाई थी। वह कारण हो सकता है, मगर उससे अधिक संभव यह है कि आज तेरी डायरी पढ़ते समय मैंने देखा कि मुझे काफी अनावश्यक विचार आया करते हैं तो मैंने मन को समझाया कि अनावश्यक विचार आने ही न पाएं। इसका असर रक्त-चाप पर पड़ा होगा।"

: ३२ :

विविध चर्चाएं

१६ दिसंबर '४२

आज बापू ने बताया कि डायरी के बारे में उन्होंने कल जो नोट लिखा था उसका अर्थ क्या था। कहने लगे, "मैंने तुमसे कहा था कि मैं भंसाली के बारे में लिख नहीं सकता; क्योंकि मेरे पास पूरी सामग्री नहीं है। वही चीज राजाजी के बारे में लागू होती है। मैं क्या जानूं कि राजाजी के मन में क्या है। वे मेरे परम मित्र हैं। उनकी बुद्धि के लिए मेरे दिल में बहुत मान है। वे इस चीज को इतनी दृढ़ता से कर रहे हैं तो इसमें अवश्य ही कुछ होगा, ऐसा मुझे मानना ही चाहिए। उनकी बात मेरी समझ में नहीं आती तो उनसे पूछूं, उनके साथ लड़ूं; झगड़ूं मगर इस तरह यहां बैठे अखबारों की रिपोर्टें पढ़-पढ़कर मुझे कोई राय नहीं कायम करनी चाहिए। मेरे मन में भी इस बारे में कोई विचार न आवे तो अच्छा। मगर यहां तो अक्सर बोलते-बोलते विचार-मंथन (Loud thinking) होता है। तुम लोगों के सामने कह दूं तो कम-से-कम वह लिखा नहीं जाना चाहिए। यह डायरी या तो मेरी जिंदगी में अथवा मेरे बाद किसी रोज प्रकट होने वाली है। इसमें काट-छांट होगी; मगर तो भी यह महत्त्व की चीज है। यहां हम आ गए, इतने दिन रहे। हमने यहां कैसे समय बिताया, यह जानने की सबको उत्सुकता हो सकती है। तो हम उसमें कच्चे और अधूरे विचार न रखें।

"राजाजी सोचते हैं कि इस तरह से वे मुसलमानों से पाकिस्तान की मांग ही छुड़वा देंगे। मुझे उन्होंने कहा कि हम दोनों एक ही चीज चाहते हैं कि हिंदुस्तान के टुकड़े न हों। मैं कहता हूं कि उनका तरीका गलत है। वह अहिंसक नहीं है। हम यदि पाकिस्तान को बुरी चीज मानते हैं तो हमें साफ-साफ ऐसा कहना चाहिए। आखिर मुसलमान भी हमारे भाई हैं। उनमें कोई बुरी बात पैदा हो जावे तो हमें उसे छुड़वाना है। उन्हें भी हमें सुधारना है। कल के अखबार में एक मुस्लिम भाई

ने लिखा है न कि और चाहे जो हो, अगर पाकिस्तान आया तो मुसलमानों का नाश है। जगत के किसी भी हिस्से में मुसलमान इतने कट्टर नहीं हैं जितने कि यहां। उनके सामने और कहीं भी हिंदू धर्म की-सी सहिष्णुता नहीं थी; मगर उस सहिष्णुता का यह अर्थ आवे कि वे हिंदुओं का देश छीनना चाहें तो हिंदू कह सकते हैं कि इनके प्रति अब सहिष्णुता नहीं रहनी चाहिए। दूसरे देशों ने जो किया वही हम भी करेंगे। वे कहेंगे, आखिर हिंदुस्तान हिंदुओं का है और मुसलमान बाहर से आए, तो कितने? यहीं से ही तो ये लोग मुसलमान हुए। किसी का लड़का मुसलमान हो जावे और भाइयों से झगड़े कि पैतृक संपत्ति में हिस्सा दो तो वह बेशर्मी की हद हुई। या कोई आदमी मुसलमान हो जावे और अपनी औरत से भी कहे कि मेरे साथ तू भी मुसलमान हो जा, नहीं तो तुझे मार डालूंगा, वह भी बेशर्मी है। . . .को ही लो। वह मुसलमान हुआ था तो इतना ही कर सकता था कि अपने-आप ही को लेकर निकल जावे। मगर सच तो यह है कि मुसलमानों में भी वर्ग-विभाग तो हैं ही। जिन्हें मुसलमान बनाते हैं, उन्हें अपने बराबर का नहीं समझते। . . . के साथ भी कई इकरार तो किये, मगर उन्हें पूरा नहीं किया। तो वह भागा और आर्यसमाजी बना। वहां हिंदू का हिंदू रहा और मांस-शराब लेने की छूट मिली। बस, और क्या चाहिए था! आर्यसमाजी रहकर ही वह मरेगा।"

दिन में बापू ने 'आरोग्य की चाबी' का काफी हिस्सा लिखा।

बा की तबीयत खासी अच्छी है। शाम को बगीचे के एक-दो चक्कर मीराबहन के साथ लगा ही आती हैं। कौन जाने उन्हें दिल का दौरा कब हो जावे। मेरे पास इसकी दवा इस समय नहीं है। कई दफा मंगाई है, मगर डॉ० शाह कहते हैं कि मिलती ही नहीं।

बापू का रक्तचाप आज कल का-सा तो नहीं था; मगर खासा अच्छा था।

मैंने चर्खा कातने का समय प्रार्थना के बाद से हटाकर दोपहर को रख लिया ताकि रात को बापू के लिखे का अनुवाद कर सकूं। बापू का बिस्तर

लगाना, बा को दवा वगैरा देना—यह सब पंद्रह मिनट ले लेता है। पौन घंटा बच जाता है। बा को पहले प्रार्थना के बाद ही दवा का ले आना अच्छा नहीं लगा। पीछे बापू ने समझा दिया तो समझ गईं।

१७ दिसंबर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू और भाई इतिहास की किताबों की बातें करते रहे। बापू बताने लगे कि जब बैरिस्टरी पास करके वे विलायत से लौटने लगे तब बहुत निराश थे कि वापस जाकर करेंगे क्या! जबान तो खुली ही नहीं थी। हिंदुस्तानी कानून के बारे में वे कुछ जानते नहीं थे। इसलिए बहुत घबराहट में थे। उन्होंने बताया, "वापस आने से पहले मैं श्री एम० पिकट के पास चला गया। वे मद्रास के सिविल सर्विस के आदमी थे। कंजरवेटिव पार्टी के थे, मगर भले थे। मैंने उन्हें अपनी उलझन बताई। वे कहने लगे, 'तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं। वकील का धंधा कठिन नहीं है। कानून का खयाल न करो। अपनी सामान्य बुद्धि को इस्तेमाल करो तो तुम्हारा काम चल जावेगा। मनुष्य-स्वभाव पहचानने की योग्यता भी कुछ होनी चाहिए।' इस दृष्टि से उन्होंने मुझे श्रीमती सेमल पेनिक और लवाल का मुखमुद्राशास्त्र पढ़ने की सलाह दी। लवाल की पुस्तक मिल गई। पहली नहीं मिली। उन्होंने के और मेलेसन की 'सिपाही विद्रोह का इतिहास' भी पढ़ने की सलाह दी। यह इतिहास बहुत रसपूर्ण था।"

बापू फिर बताने लगे, "जब विलायत गया तब मैट्रिक कर चुका था। पोरबंदर के शासन-प्रबंधक के पास मैं छात्रवृत्ति मांगने गया। उन्होंने कहा, 'बी० ए० पास करके जाओ तब कुछ समझने लायक होगे। तब तुम्हें छात्रवृत्ति भी दूंगा।' मैंने कहा—मैं इतने वर्ष कैसे खोऊं? सो छात्रवृत्ति के बगैर ही गया। १९०६ में जब मैं दक्षिण अफ्रीका से शिष्ट मंडल लेकर विलायत गया तब वहां जितने प्रसिद्ध आंग्ल-भारतीय थे, जो हिंदुस्तान में आकर काम कर गए थे, सबके पास गया। सबने मदद की। उस समय मैं कांग्रेस के रंग में रंगा नहीं था। इसलिए उन लोगों को मेरा कोई डर नहीं था। दक्षिण अफ्रीका के विषय में उन्हें

कुछ विरोध करने जैसा नहीं था। ईश्वर ने उस समय काफी लोगों की मदद मुझे दिलाई।"

भाई कहने लगे, "इसके सिवा ब्रिटिश उपनिवेशों में रहनेवालों के प्रति सिविल सर्विसवालों का एक तरह का मुरब्बीपन का भाव होता है कि यह हमारी प्रजा है, जैसे कि जेल में कोई पुराना कर्मचारी मिल जाए तो जो पुराना कैदी पहले उसके साथ रह चुका हो, वह उसका कैदी कहा जाता है, उसे कोई कुछ नहीं कह सकता।"

दोपहर में एक दुःखद घटना हो गई। बापू के पैर की मालिश पूरी की तो बापू कहने लगे कि वे सोकर उठेंगे तो मुझे नहीं जगावेंगे; क्योंकि क्या पता, मैं कब सोऊं। मैंने कहा कि अभी सो जाऊंगी तो मान गए। मैं भीतर हाथ धोने आई तो भाई के साथ बातों में लग गई। मुझे लगा कि बापू एक घंटा सोते हैं। मैं पांच मिनट में जाकर सो जाऊंगी तो काफी है। मगर आज पंद्रह मिनट में ही उठ गए। उसी वक्त मैं सोने गई। इससे उन्हें कुछ आघात लगा। कहने लगे, "अगर कोई कहकर न करे तो मेरा पारा चढ़ जाता है। यह चीज मुझसे सहन नहीं होती।"

मैंने कहा, "मगर यह चीज तो इतनी छोटी थी कि मैंने उसको 'वचन' का महत्त्व ही नहीं दिया था, वरना बातों में न लगती।"

बापू कहने लगे, "तो बड़ी चीज कौन-सी होती है ? हमारा स्वभाव ही ऐसा बन जाना चाहिए कि मुंह से जो बात निकले, उसे करना ही है; नहीं तो वह बात मुंह से निकले ही न।"

१८ दिसंबर '४२

आज सवेरे भाई बापू से पार्क्स (Parks) की पुस्तक 'मार्क्सवाद—एक पोस्टमार्टम' की बातें करते रहे। बापू कहने लगे, "पार्क्स मार्क्स की टीका भले करें, मगर मार्क्स ने बड़ा काम किया है, इसमें शक नहीं। उसका समाज-व्यथा का निदान ठीक हो या न हो; इतना अवश्य है कि उसने कुचले जानेवाले गरीब वर्ग के लिए कुछ करने की सोची। मार्क्स के अर्थशास्त्र को मैं नहीं मानता। मैं नहीं मानता कि समाज की सभी कठिनाइयों का हल अर्थशास्त्र में है; लेकिन इतना मैं मानता हूं कि गरीब

कुचले जा रहे हैं। उनके लिए कुछ करना चाहिए। यह बात मैंने बचपन से देखी है। इसे समझने में मुझे कठिनाई आई ही नहीं। मेरे लिए वह स्वयंसिद्ध-सी चीज रही है। छुटपन में ही मैं अपनी मां से दलील करता था—भंगी को छूने से हम क्यों अपवित्र हो जाते हैं? उस दिन से मैं भंगियों का बना। मार्क्स ने जो देखा उस पर उसने विचार किया। वह प्रतिभाशाली आदमी था, विद्वान था। सो प्रतिभाशाली भाषा में अपने विचार लिख सका है।"

भाई बोले, "वह विद्वान था, साथ ही दार्शनिक और अर्थशास्त्री भी था। इसी कारण वह सफल हो सका।"

भाई जल्दी वापस चले गए। बाद में बापू कल शाम की एक घटना की चर्चा मेरे साथ करते रहे। कहने लगे, "अगर हम अपनी घरेलू समस्याओं का हल अहिंसा द्वारा नहीं निकाल सकते तो जगत में कुछ भी नहीं कर पायेंगे।"

शाम को घूमते समय फिर भाई ने खादी के बारे में सवाल उठाए, "हमारा अर्थशास्त्र, हमारी समाज-रचना कैसी हो कि जिससे हम खादी को सफल बना सकें?"

बापू के मन में अभी तक कल शाम की घटना का विचार चल रहा था। कहने लगे, "मुझे अर्थशास्त्र से कुछ नहीं पड़ी है। मैं मानता हूं कि कार्यकर्त्ता यदि योग्य होंगे तो प्रतिकूल वातावरण में भी अपना रास्ता निकाल लेंगे और वह तभी हो सकता है जब हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में अहिंसा का इस्तेमाल हो और हमारा जीवन सुव्यवस्थित हो चले। मैं चाहता हूं कि हम सब बाकी समय इस चीज की साधना में लगायें। अगर हम अपनी समस्या हल कर सकते हैं तो जगत की समस्याओं का हल भी निकाल सकते हैं। उसके सिवा अहिंसा द्वारा हम समाज पर कोई असर नहीं डाल सकते। अगर मैं इस काम में असफल होता हूं तो समझूंगा कि मैंने अपना दिवाला निकाल दिया है।"

शाम को महादेवभाई की समाधि पर नया ॐ बनाया। बा आज कह रही थीं, "मैं रोज अखबार पढ़ती हूं। लोग भूखों मर रहे हैं। हम

क्यों ज्यादा चीजें मंगाते हैं ? यहां तो सरकारी आदमी हैं। हुक्म चलाया कि इतना लाओ और उतना ही आ गया, भले दूसरे भूखों मरें। जेल से यदि सामान आये तो वहां कैदी भूखों मरते हैं।" मुझे विचार आया कि यदि सब लोग इस चीज का ध्यान रखें तो खुराक-संबंधी आधी उलझन तो एक दिन में सुलझ जावे।

१९ दिसंबर '४२

बा ने एक तुलसी का गमला बरामदे में मंगवा रखा है। उस पर रोज दिया जलाती हैं और उसकी पूजा करती हैं। दशहरे और दिवाली के समय उसकी मंगनी-ब्याह भी किया था। पौधा अब सूखने लगा है। मीराबहन कहने लगीं, "एक दूसरा पौधा भी है। मैं वह ले आऊंगी।" बापू बोले, "नहीं, यह ९ फरवरी तक चलेगा। ९ फरवरी हमारी यहां की आखिरी तारीख है। उसके बाद हम यहां रहेंगे तो एक दूसरी ही हालत में रहेंगे।" क्या नई परिस्थिति पैदा होगी, यह तो भगवान जानें; मगर ऐसी बातों से काफी चिंता हो जाती है।

बापू की 'आरोग्य की चाबी' आज पूरी हो गई। अब उसे फिर से पढ़ना और उपसंहार लिखना बाकी है। इस समय पुस्तक बहुत छोटी है। बापू कह रहे थे, "इस समय मैं अपने अनुभव से बाहर गया ही नहीं हूं।"

: ३३ :

झूठे आरोप

२० दिसंबर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने तुम्हारी डायरी के बारे में प्यारेलाल के साथ बात की थी। क्या उसने तुम्हें बताया ? तुम्हारी डायरी पढ़ते-पढ़ते मेरे मन में आया कि इसमें बहुत-सी चीजें ऐसी हैं जो नहीं होनी चाहिए। इस डायरी को किसी दिन प्रकट होना है।

उस समय कई चीजों का दुरुपयोग हो सकता है, जैसे कि व्यक्तियों की टीका। वह टीका करने का मुझे अधिकार नहीं है। मॉन्टेग्यू ने अपनी डायरी में उन सभी लोगों की टीका की है जिनसे वह मिला था और जिन पर उसकी छाप पड़ी थी। यह टीका क्या थी, उन सब की हँसी थी, उपहास था। मेरी दृष्टि में यह भद्दी चीज है। ऐसा नहीं होना चाहिए।

"अपनी लड़ाई की चर्चा जो कुछ भी मैं करूं, वह भी नहीं लिखना चाहिए; क्योंकि मेरे विचार तो बन रहे हैं। मैं खुद बन रहा हूं। तब ऐसे अधूरे विचार लिखने से क्या लाभ?

"तीसरी चीज है प्यारेलाल के प्रश्न और मेरे उत्तर। वे भी नहीं लिखे जाने चाहिए। मेरे विचार वहां भी कई बार पक्के नहीं होते।

"फिर डायरी पढ़कर जब मैं उस पर अपने दस्तखत देता हूं तो वह भी पक्की बन जाती है। मुझे यह ठीक नहीं लगता।"

मैंने कहा, "डायरी पढ़ने के लिए आप ही ने मांगी थी। आप जैसा कहें, मैं करने को तैयार हूं। कहें तो लिखना बंद कर दूं। जो कुछ आपने छोड़ने को कहा है, उसे छोड़कर यहां लिखने को रहा क्या? ऋतु का वर्णन, पक्षियों का बयान भी अच्छा हो सकता है; मगर मुझे इसमें रस नहीं। डायरी मैंने आप ही के कहने पर आरंभ की थी। भाई के आने तक संक्षिप्त थी। उन्होंने विस्तार में लिखने को कहा तो मैंने वैसा किया। आपके विचार भले अधूरे हों, मगर किस तरह उनका विकास हुआ, इसका लेखा रहे तो अच्छा है। छापने की दृष्टि से नहीं, मगर आपके लिए, हमारे लिए। अगर आप यह उचित समझें तो न छापने लायक सामग्री को एक लकीर से और अनावश्यक या गलत सामग्री को अच्छी तरह काट सकते हैं।"

बापू कहने लगे, "तुम दोनों विचार करके मुझे बताना कि क्या करना ठीक होगा। मैंने अपने विचार तुम्हारे सामने रख दिये हैं। उनका प्रभाव तुम दोनों पर क्या हुआ है, यह जानकर ही जो करना होगा, करूंगा।"

अखबारों में बापू के प्रति झूठा प्रचार तो चलता ही है। अंग्रेज इतना झूठ कैसे बोल सकते हैं, यह समझ में नहीं आता।

शाम को बादल आये। पहाड़ी पर वर्षा हुई होगी, क्योंकि हवा में नमी थी; मगर यहां पानी नहीं बरसा। रात को इतनी गर्मी थी कि मोटी सूती चादर भी ओढ़ना कठिन था।

भाई बापू से कहने लगे, "आरोग्य की किताब पूरी हो गई है तो आप आश्रम का इतिहास हाथ में ले लें। आपने बहुत पहले ही कहा था कि आश्रम का इतिहास लिखेंगे और जैन धर्म के बारे में भी कुछ-न-कुछ लिखेंगे।"

बापू बोले, "जैन धर्म के बारे में तो रायचंदभाई के सहयोग से कुछ लिखने का विचार किया था; मगर वह बात बहुत वर्षों से मेरे मन से निकल गई है। मुझे लगता है कि मैं उसका अधिकारी नहीं हूं। मुझे जैन धर्म के विषय में ज्ञान ही क्या है? उसके लिए खूब अभ्यास करना चाहिए, जैन शास्त्र पढ़ने चाहिए, दूसरों की टीकाएं भी देखनी चाहिए। यह सब देखकर ही मैं उसे उठा सकता हूं। आज वह मेरे बस की बात नहीं। आश्रम का इतिहास लिख सकता हूं, मगर वह भी ९ फरवरी के बाद। आज मेरा मन घोड़े की रफ्तार से चल रहा है। नवीं फरवरी यहां की आखिरी तारीख है। तबतक मैं अपना काम पूरा कर लेना चाहता हूं। इसलिए मैं अपनी सब प्रवृत्तियों को समेट रहा हूं। 'आरोग्य की चाबी' पूरी हुई, अब इतने दिन इसके दोहराने के लिए मिलेंगे, यह मुझे अच्छा लगता है। नया शुरू करना तो अगर नवीं फरवरी के बाद ही यहां रहने का हो और मेरी संपूर्ण मनोवृत्ति बदल जाय, तभी हो सकता है।"

मैंने हँसी में कहा, "फरवरी तक कुछ होनेवाला नहीं है। यहीं आराम से पड़े होंगे।" बापू कहने लगे, "यहां पड़े-पड़े यदि हमारा एक-एक विचार, एक-एक काम, खाना-पीना तक स्वराज्य के निमित्त हो तो खैर है, भले ही यहां पड़े रहें।"

मैंने कहा, "आप फरवरी तक का प्रोग्राम बनाते हैं तो हमें भी वही करना चाहिए।"

बापू कहने लगे, "आज तो मैं ३१ दिसंबर तक का ही प्रोग्राम बना

रहा हूं। ९ फरवरी तक भी मेरा मन नहीं जाता। तुम्हें भी वही करना चाहिए।"

२१ दिसंबर '४२

दोपहर में खूब बादल थे। शाम को पानी बरसने लगा। बापू दिन में अपनी आरोग्य वाली पुस्तक दोहराते रहे। शाम को वे बरामदे में घूमे।

मीराबहन ने वाइसराय को पत्र लिखा है। इसमें सरकार के झूठे आरोपों का, जैसे कि 'गांधी जापानियों के साथ मिला हुआ है' या 'मीरा-बहन गांधी और जापान के बीच सलाहकार हैं', उत्तर था। पत्र के साथ उन्होंने उस पत्र की नकल भी भेजी जो उन्होंने उड़ीसा से बापू को लिखा था। उस पत्र-व्यवहार में उन्होंने जापानी हमले के मौके पर जो प्रश्न उठ सकते हैं, बापू से पूछे थे। उन्होंने उसका उत्तर दिया था। यह पत्र दैवयोग से मीराबहन के पास यहां था। आज काम आया।

रात को सोने के समय भाई वाइसराय के भाषण के बारे में बात कर रहे थे। बापू को वह बहुत खराब लगा था। बापू कहने लगे, "वे मानते हैं कि अब तो हम जीतने ही वाले हैं। उनके अपने धन-उपार्जन के साधन मर्यादित हैं और हमारे अमर्यादित हैं। उन्हें हिंदुस्तान पर कब्जा रखना ही है, पहले से भी ज्यादा पक्की तरह। अगर हिंदुस्तान एक हो तब उन्हें फायदा हो सकता है; इसलिए अब वे भौगोलिक ऐक्य की बात करते हैं और ऐसा कहने में उन्होंने अपने बारे में कई-एक छिद्र रख लिये हैं।"

भाई कहने लगे, "आप ठीक कहते हैं, मगर हमें क्या पता कि ईश्वर किन-किन साधनों का उपयोग करके हमारा काम कर रहा है। अखंड हिंदुस्तान की बात भले ही किसी हेतु से करें, मगर हिंदुस्तान के दो टुकड़े न हों, यह हम भी चाहते हैं।"

बापू ने कहा, "वह तो है ही। सत्य, अहिंसा और ईश्वर में दिन-प्रतिदिन मेरी श्रद्धा बढ़ती ही जाती है।"

२२ दिसंबर '४२

आज दिन भर वर्षा रही। सुबह घूमने के समय पानी बंद हो गया

था। भाई देर से सोकर उठे। इसलिए महादेवभाई की समाधि पर से ही वापस चले गए, घूमे नहीं। उन्हें तैयार होना था। बापू बा की बातें करते रहे। पीछे बरसात में निकर पहनने की सलाह देते रहे। कीचड़ में मेरी सलवार के पांयचे भर गए थे।

दोपहर को भाई मेरी डायरी देखते रहे। उस वारे में मुझे कुछ हिदायतें दीं। शाम को घूमते समय वापू के साथ डायरी की वात हुई। मैंने कहा, "आप देखते जावें। मुझे जो लिखना होगा, वह लिखती रहूंगी। आपको जो अनावश्यक लगे, आप काट दें।"

भाई कहने लगे, "आप इसे भाषा और रिपोर्टिंग की दृष्टि से देखें।"

बापू मीराबहन के वाइसरायवाले पत्र को सुधारते रहे। मीरावहन यह नहीं कहना चाहती थीं कि उन्हें एक अंग्रेज की हैसियत से यह सब झूठ देखकर दर्द होता है; क्योंकि वे अपने-आपको अंग्रेज मानती ही नहीं हैं। वापू ने समझाया कि अंग्रेज की हैसियत से नहीं लिखना चाहतीं तो उनके पास वाइसराय को लिखने का कोई हक ही नहीं है। अंत में मीराबहन ने लिखा, "अंग्रेज माता-पिता के घर जन्म लेने के कारण मुझे यह देखकर दुःख होता है कि अंग्रेज सरकार इतना झूठ बोल रही है।"

२३ दिसंवर '४२

सुबह खूव धुंध थी। दिन भर बादल आते-जाते रहे, मगर पानी नहीं बरसा। रात को आकाश खुल गया।

सुबह समाधि से लौटते समय वापू महादेवभाईवाली गीताजी के पन्ने उलट रहे थे। आखिरी पन्ने पर 'आउज विल्ला'वाली आयत लिखी हुई थी। पूछने लगे, "ये किसके अक्षर हैं? महादेव के या प्यारेलाल के?" मैंने बताया कि १ अगस्त को वंबई से चलते समय महादेवभाई ने भाई को वह आयत लिख देने को कहा था, सो भाई के अक्षर हैं। बापू कहने लगे, "बस छः दिन उसने यह आयत कही।" फिर थोड़ा ठहरकर वोले, "लगता ही नहीं है कि महादेव सदा के लिए गया। कल रात को स्वप्न में वह लड़की. . .कहती है, 'महादेवभाई कहां हैं?' मैं उत्तर देता हूं, 'बहन, मैं तो उसे श्मशान में छोड़ आया हूं।' पीछे वह पागल-सी

हो जाती है। कहती है, 'लाओ महादेवभाई को! उसे वहां क्यों छोड़ आए?"

कल और आज बापू ने विजली के गरम किरण-यंत्र से मालिश करवाई; क्योंकि सूर्य का प्रकाश नहीं था। वरामदे में बैठा नहीं जा सकता, इसलिए भीतर ही बैठते हैं। बादल होते हैं तो बूंदें भीतर तक आने लगती हैं।

आज मीराबहन के पत्र को बापू ने फिर देखा। एक-दो वाक्य वे वदलना चाहती थीं। एक था—'मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं।' इसके वदले में वे चाहती थीं—'मैं ऐसा कहने की स्थिति में हूं।' बापू ने समझाया कि दूसरा पहले से कम वजनदार है। वे उससे उलटा मानती थीं। आखिर समझ गईं।

२४ दिसंबर '४२

मीराबहन का वाइसराय के नाम पत्र आ गया। उसमें कांग्रेस वर्किंग कमेटी पर लगाये गए आरोपों का जवाब भी था। सरोजिनी नायडू ने आपत्ति की कि कमेटी को मीरा का या किसी का सर्टिफिकेट नहीं चाहिए। बापू ने समझाया, "मीराबहन दूसरा नहीं लिख सकती है। उसने पत्र में यह लिखा है कि 'मेरे और कांग्रेस के विषय में जो झूठ चल रहा है, उसका मुझे दुःख हुआ है।' बाद में कांग्रेस का नाम ही न ले तो उसका अर्थ हो जाता है कि मैं ही एक भला आदमी हूं।" इस बारे में सरोजिनी नायडू की भाई के साथ भी कुछ चर्चा हुई।

शाम को खाने के समय भंसालीभाई की बात चली। मीराबहन के पास आशादेवी का पत्र आया था। उन्होंने लिखा था, "बच्चों के शिक्षक का शरीर कमजोर है, मगर मन प्रफुल्लित है। उनके पास जाकर मन खुश हो जाता है, शांति मिलती है।" बच्चों के शिक्षक यानी भंसालीभाई। बाकी सबके समाचार थे। बापू खुश हुए। आज सुबह ही घूमते समय वे बात कर रहे थे, "भंसाली की मृत्यु की खबर आवेगी तो मेरा हृदय कांप भले ही उठे, मगर खुशी से नाचेगा भी। ऐसी संपूर्ण अहिंसक मृत्यु आज-तक हुई ही नहीं है। भंसाली को मैं जानता हूं। उसके हृदय में वैरभाव

का लेश भी नहीं है। हमारे लोगों में इतना मैल भरा है कि उसे निकालने के लिए कइयों को तो जल मरना होगा।"

२५ दिसंबर '४२

आज क्रिस्मस का दिन है। कल शाम को बापू मीराबहन से कह रहे थे, "कोई क्रिस्मस का भजन आता हो तो गाओ।" उन्हें कोई याद न था। रघुनाथ आज स्तोत्र संग्रह (Hymn Book) ढूंढ़ने गया। आखिर, यरवदा जेल की बड़ी नर्स से 'मुक्ति फौज स्तोत्र संग्रह' (Salvation Army Hymn) नामक पुस्तक मिली। शाम की प्रार्थना में मीराबहन ने उसमें से एक भजन गाकर सुनाया जिसकी पहली पंक्ति थी—"जब गड़रिये रात को भेड़ों के झुंड की रखवाली करते हैं।..." (When shephards watch their flock by night)

खाने के बाद शाम को सोने के समय मीराबहन ने 'जब मैं अद्‌भुत सलीब को देखता हूं' (When I survey the Wond'rous Cross) गाकर सुनाया। बापू को यह गीत बहुत प्रिय है। मुझसे कहा था कि मैं मीराबहन से उसे सीख लूं। मैंने उनसे तीन-चार बार कहा है, मगर वे आज तक सिखा नहीं पाईं।

२६ दिसंबर '४२

आज बापू मीराबहन से कह रहे थे, "नया वर्ष तो ईसा के जन्म के साथ संबंध रखता है। ईसवी साल कहलाता है। तो वह ईसा के जन्म-दिन 'क्रिस्मस डे' से क्यों नहीं शुरू होता ?" वे नहीं जानती थीं। कहने लगीं, "हां, नये वर्ष और क्रिस्मस डे के बीच में इतने दिन क्यों रखे गए, सो समझ में नहीं आता। और आश्चर्य है कि आज तक यह प्रश्न हम लोगों के मन में नहीं उठा!"

पीछे बापू 'बॉक्सिंग डे' का अर्थ पूछने लगे। मीराबहन ने बताया कि 'बाक्स' का अर्थ 'बॉक्स' नहीं, बल्कि 'रुपए-पैसे की भेंट' है जो नौकरों को देते हैं। दूर के रिश्तेदार जो क्रिस्मस की भेंट नहीं देते, 'बाक्स' देते हैं।

भंसालीभाई की कोई खबर नहीं, मगर 'वंदेमातरम्' में 'हे देवी

एनी रक्षा करो' नामक प्रार्थना थी। आगे भी दो-चार बार निकली है। स्पष्ट है कि वह भंसालीभाई के लिए है। इसका अर्थ है कि वे अभी तक हैं।

: ३४ :

उपवास के बादल

२७ दिसंबर '४२

आज इतवार है। इतवार को फिकर लग जाती कि शाम को बापू का मौन शुरू होगा। वाहर भी मौन चुभता तो है ही, मगर यहां तो बहुत ही वुरा लगने लगता है।

बापू स्नानघर से निकले तो भंडारी आए। वेलगांव जेल में कितने ही लोग पेट के दर्द से मर गए हैं। अखबार में था कि ग्यारह मरे हैं, भगर दरअसल ज्यादा मरे हैं। भंडारी से पूछा तो कहने लगे कि उनके पास रिपोर्ट नहीं आई।

आज सवेरे सूर्योदय का दृश्य वहुत सुंदर था। मैं चित्र वनाने जा वैठी, मगर चंद मिनटों में दृश्य बदल गया। दिन में भी अधिकांश समय चित्र में ही लग गया। शाम को उसे पूरा किया। महादेवभाई की समाधि का और आस-पास का दृश्य था। उसमें एक छोटी-सी चिता जलती हुई दिखाई थी। आग वगैरा दिखाने के लिए मीरावहन की मदद ली। सुवह भी आकर वे सलाह दे रही थीं। चित्र सबको अच्छा लगा, मगर बापू इसे देखकर बहुत विचार में पड़ गए। घूमने का समय भी हो गया था। मैंने अभी तक कुछ भी खाया न था। बापू इस पर नाराज थे कि मैं कार्यक्रम के अनुसार नहीं चली। समाधि पर पहुंचे तो कहने लगे, "खाकर नहीं आई न?" मैंने कहा, "जाकर खाऊंगी।" बोले, "ठीक है, मैं कितने दिन का मेहमान हूं तुम लोगों को टोकने के लिए!" मैं उल्टे पांव वापस खाना खाने आ गई। विचार आने लगे, "बापू के इतना गंभीर हो जाने का

कारण क्या मेरा समय पर खाना न खाना ही था अथवा उनके मन में और कुछ चल रहा है ?"

आजकल रात को मच्छर बहुत होते हैं। बापू पौने आठ बजे ही उठकर सोने की तैयारी करने लगे। मच्छरों के कारण कुछ काम करना कठिन था, मगर बापू उस समय बड़े विचार में पड़े दीख पड़ते थे। मैंने शाम को पूछा, "क्या आज आप बहुत विचार में हैं ?" कहने लगे, "विचार तो हमेशा आते हैं। आज कुछ और ज्यादा होंगे।"

रात में बा की तबीयत ठीक नहीं रही। छाती में दर्द हो आया, नींद अच्छी नहीं आई।

बापू ने रात को पौने आठ बजे ही मौन ले लिया।

२८ दिसंबर '४२

आज बापू का मौन था। मुझसे सरकार के साथ पत्र-व्यवहार मांगा। पीछे वाइसराय के नाम एक पत्र लिखते रहे। रात को पौने आठ बजे मैंने और मीराबहन ने पत्र मांगा। बापू ने टालते हुए कहा, "अब कल सुबह पढ़ना।"

भाई से कहने लगे, "इसमें सबसे ज्यादा बोझ तुम पर पड़नेवाला है।" मैं तो कुछ समझी नहीं, मगर भाई कुछ भांप गए-से लगते थे। बापू सो गए। पीछे भाई मुझसे पूछने लगे, "तुम्हारे अंदाज से बापू कितने दिन का उपवास सहन कर सकते हैं ?" मैंने पूछा, "क्यों ? क्या पत्र में ऐसा कुछ है ? मीराबहन तो कहती थीं कि जितना उन्होंने पढ़ा है, उसमें तो कोई ऐसी बात नहीं थी।" कहने लगे, "नहीं, यों ही पूछ रहा हूं।" मैंने कहा, "राजकोट में तो पांचवें रोज तबीयत बिगड़ गई थी। उसे देखते हुए तो लगता है कि बहुत नहीं चला सकेंगे।" भाई पीछे बंबई कांग्रेस महासमिति का और इससे पहले कार्यसमिति का प्रस्ताव लेकर ध्यान-पूर्वक पढ़ रहे थे। सारा-का-सारा वातावरण कुछ भारी-सा लग रहा है। बात-बात में बापू कहने लगे, "पहली तारीख से मैं ईश्वर में लीन होना चाहता हूं।" मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मगर बापू ईश्वर में लीन होना चाहते हैं तो भले हों, मेरी दृष्टि में तो वे

हमेशा ईश्वर में ही लीन रहते हैं—और लीन होना चाहते हैं तो अच्छा है।

शाम को मीराबहन ने मुझे वह भजन अच्छी तरह सिखाना आरंभ किया है। इसमें समय तो लगेगा मगर अच्छा लगेगा।

२९ दिसंबर '४२

सुबह पौने छः बजे उठी। बापू ने जो पत्र रात को लिखा था, वह पढ़ने के लिए लेने को आई, मगर भाई पढ़ रहे थे। स्नानादि के बाद आकर पत्र लिया। इतने में बापू उठ गए थे। उनके लिए फल का रस निकाला। पीछे पत्र पढ़ा। उसमें उपवास की बात आ ही गई थी।

जब मैं उठकर आई तब भाई बापू के पत्र के बारे में अपनी टीका लिख रहे थे। घूमते समय बापू ने उनकी एक-एक बात को लेकर उसका उत्तर दिया।

सुबह साढ़े दस बजे बापू ने भाई से कहा कि सरोजिनी नायडू को भी पत्र पढ़ा देना चाहिए। भाई ने उन्हें यह पढ़ सुनाया। सुनते-सुनते उनकी आंखों में पानी भर आया। कहने लगीं, "पत्र बहुत ही अच्छा है। उसमें बड़ी करुणा भरी है, दुःखी हृदय की पुकार है; मगर पत्र गलत है। बापू के उच्चतम बलिदान का समय अभी नहीं आया।"

दोपहर को बापू ने फिर अपने पत्र के बारे में कई प्रश्नों का उत्तर दिया। मीराबहन ने, मैंने और भाई ने कुछ प्रश्न किये। २१ दिन की अवधि के बारे में भी कुछ चर्चा हुई।

बा कहने लगीं, "वाइसराय को पत्र लिखें; परंतु उसमें उपवास की बात न लिखें।"

बापू कहने लगे, "उपवास के बारे में ही तो लिखना चाहता हूं, वह कैसे छूट सकता है? जानती हो न कि इससे पहले एक पत्र ऐसा ही लिखकर मैंने उसे फाड़ डाला था।" फिर कुछ रुककर कहने लगे, "मेरा तो दिन-प्रतिदिन यह विश्वास बढ़ता ही जाता है कि हम सब ईश्वर के हाथों में खिलौने हैं।"

सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "उपवास की बात करना ठीक नहीं

है। आपको चाहिए कि अपने-आपको ईश्वर में खो देने का प्रयत्न करें, जिससे आप अपने स्वयं से कह सकें: "हमारा काल उसके हाथ में है जो कहता है कि इस सारी योजना का मैं स्रष्टा हूं।"[1]

रात को प्रार्थना के बाद रक्तचाप लिया तो २००/११२ था। बापू बा को रामायण समझाकर सोने चल दिए। रात को साढ़े दस बजे से एक बजे तक लगातार जागते रहे। विचारधारा चल रही थी।

रात को बापू के सो जाने के बाद मीराबहन मुझसे और भाई से आकर कहने लगीं, "हम सबका धर्म है कि हम अपने शरीर को अच्छा रखें। अपने स्वास्थ्य को हमें पहला स्थान देना चाहिए। उपवास आये या न आये, कुछ-न-कुछ अवश्य आनेवाला है और हम सब बापू की जो भी थोड़ी बहुत मदद करने लायक हैं, वह तभी कर सकेंगे जब हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। निराशा भरे भावों को मन से निकाल देना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि उपवास यदि आया भी तो उसका परिणाम अच्छा ही होगा। मृत्यु की आशंका को तो हमें कदापि स्थान न देना चाहिए।" यह सब वे भाई को देखकर कह रही थीं। भाई कल से चिंता के कारण बिलकुल थके-मांदे से लगते हैं। चिंता सब को है; मगर भाई की तो मारे चिंता के नींद ही उड़ जाती है। इससे उन पर चिंता का असर ज्यादा देखने में आता है।

३० दिसंबर '४२

बापू ने अपने पत्र में काफी फेरफार किये। मुझसे कहने लगे, "सुबह उठकर तू हमारे साथ घूम लेना, तब पत्र की नकल तैयार करना।"

३१ दिसंबर '४२

आज इस वर्ष का अंतिम दिन है। बापू ने सुबह साढ़े पांच बजे ही

---

१. "You should try to be lost in God, so that you are able to say to yourself—

'Our times are in His hands
Who saith a whole I planned'."

उठकर वाइसराय के नाम लिखा गया अपना पत्र, जिसमें फेरफार किये गए थे, पढ़ना आरंभ किया। पढ़कर कहने लगे, "अब तो नया पत्र लिखने-जैसी बात हो गई है। जल्दी नहीं की जा सकती।" प्रातः चार बजे भाई से कहने लगे, "कितना अच्छा हुआ कि तुमने वह वाक्य पकड़ा। मुझे आश्चर्य है कि सरोजिनी नायडू को वह क्यों नहीं सूझा!" राजाजी को बापू के साथ मुलाकात करने की इजाजत देने से इंकार करते समय जो बयान सरकार ने निकाला था, वह भाई से मांगा। भाई ने निकाल कर दिया। फिर एमरी के कॉमंस सभावाले भाषण की कतरन मांगी।

घूमने के समय बापू की मीराबहन से निजी बातचीत हो रही थी। मैं और भाई वापस आ गए। अच्छा हुआ कि मैंने पत्र के बहाने सुबह घूम लिया था। आकर मैं अनुवाद करने लगी। भाई अखबार की फाइल में से वह कतरन निकालने में लग गए।

दोपहर सोने के बाद बापू ने पत्र लिखा। छोटा-सा था; मगर बहुत ही अच्छा था। सबको बहुत पसंद आया। वह बहुत व्यक्तिगत था, इसलिए बापू ने उसे अपने हाथ से नकल करके भेजा। भाई बोलते गए और बापू लिखते गए। साढ़े चार बजे तैयार हो गया और डाक में गया। आज नये साल के शुरू होने से पहले इतना अच्छा पत्र गया, इससे सब को खुशी हुई। सब कहते थे कि यह पत्र बापू के अपने निजी ढंग का है।

मीराबहन से बापू ने पुराना साल खत्म होने के साथ पुरानी बातें भूलकर नये साल में नया युग शुरू करने को कहा और कहा कि सबके साथ एक परिवार के रूप में रहें।

आज बा की साड़ी की किनारी बनाना खत्म किया, 'आरोग्य की चाबी' का हिंदी अनुवाद पूरा किया और मेकमार्डी की पुस्तक में से बाइबिल में से उतारे हुए अंशों को पूरा पढ़ लिया।

कल से बापू ज्यादा ध्यानावस्थित होना चाहते हैं। यथासंभव बातें नहीं करेंगे। मन को दुनिया से खींचकर एकाग्र कर लेंगे। कहते थे, "मुझे

अग्निपरीक्षा की तैयारी करना है। मैं समझूं तो सही कि ईश्वर मुझसे क्या चाहता है?"

शाम को सरोजिनी नायडू के साथ बा बातें कर रही थीं। सरोजिनी नायडू ने कहा, "आप चिंता न करें। ईश्वर बापू से उपवास करने को नहीं कहेगा और बिना ईश्वर के आदेश के वे उपवास करेंगे नहीं।" बा कहने लगीं, "यह तो मैं जानती हूं कि ईश्वर नहीं कहेगा; मगर बापू मान लेंगे कि ईश्वर ने कहा है तो फिर क्या होगा?" सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

बापू का रक्त-चाप आज रात को बहुत अच्छा था—१६०/१००। कहने लगे, "यह न समझना कि मन का बोझ हल्का हुआ है, इसलिए रक्त-चाप कम है। मैंने खुराक में फेरफार करके इसे कम किया है।" बापू ने दूध कम करके नाश्ते में दूध की जगह गरम पानी पिया था।

१ जनवरी '४३

आज नया साल शुरू होता है। बापू ने कल अपने पत्र में लिखा था, 'नया साल हम सबको शांति देनेवाला हो' यही ध्वनि सब के मन से निकलती है; मगर क्या आनेवाला है, यह तो भगवान ही जाने!

घूमते समय बापू कह रहे थे, "हमें घूमते समय या तो गीताजी-जैसी चीज का अभ्यास करना चाहिए या मौन रखना चाहिए।"

बापू दिन भर अपने अभ्यास में लीन रहे। श्लोकमवाली पुस्तक पढ़ रहे थे; कुछ उर्दू पढ़ी। मौन नहीं था; मगर पहले कहते थे कि अनावश्यक बात नहीं करना चाहते।

मीराबहन ने एक गत्ते पर नया कलेंडर लगाकर उसके एक तरफ हिमालय का और एक तरफ गंगाजी का दृश्य बना दिया। सुंदर लगता था। ऊपर लिखा था ॐ और उसके नीचे 'हे राम'। गत्ते के किनारे पर भी पेस्टल से हल्का-सा काम कर दिया था। सब सुंदर लगता था। बापू के बैठने की जगह के सामने वह टांग दिया।

---

१. "May the New Year bring peace to us all!"

सरोजिनी नायडू ने मेरी पहली तस्वीर आज टांग ली है। अच्छी दीखती है।

वा की तवीयत अच्छी है। आज सब लोगों का दिन अच्छा गया। सोने के समय मीरावहन ने वापू को वही प्रिय भजन गाकर सुनाया।

२ जनवरी '४३

वापू को स्लोकम की पुस्तक वहुत पसंद आई है।

अखवार में चिमूर के विषय में आज सरकार का वयान निकला है। वहुत खराब है। कहते हैं कि वहां पर जांच-पड़ताल की आवश्यकता नहीं। वहां तों सारी जनता ने सामूहिक रूप से झूठी सौगंध खाकर गवाही दी है, लोगों की साजिश है। सवको वहुत वुरा लगा। भाई का तो खून खौल रहा था।

दोपहर का, वापू ने कल की तरह, सारा समय अखवार देखने में और स्लोकम की किताव पढ़ने में लगाया। थोड़ी देर तक अनुवाद भी देखा। मीरावहन को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि वापू अखवार आदि पढ़ते हैं। वे अपने मौन के दिनों में न अखवार पढ़ती थीं, न किसी से वात करती थीं। केवल वेदादि ही पढ़ती थीं। वे समझती थीं कि वापू भी वैसा ही करेंगे। वापू से मैंने पूछा तो कहने लगे, "मैं मीरावहन की तरह नहीं करना चाहता। मगर सामयिक (Topical) वातों की चर्चा भी नहीं करना चाहता; क्योंकि इससे मन में उद्वेग उठता है। मन दौड़ रहा है, अंधा बन जाऊं, आंखें वंद कर लूं, मौन ले लूं, तो पढ़ना भी छूट जावेगा। मन को शून्य में स्थिर कर सकूं तो बड़ी बात है।"

३ जनवरी '४३

आज सुवह महादेवभाई की समाधि से लौटकर वापू कहने लगे, "गीताजी के पाठ में ठीक जगह पर वजन नहीं आता। इससे पाठ उतना मधुर नहीं हो पाता जितना कि होना चाहिए।" मैंने कहा, "या तो हम आपके सामने जव पढ़ें तव आप वतावें अथवा स्वयं वतावें।" कहने लगे, "वतायेंगे। और फिर तुम मुझसे आगे बढ़ जाओगी। ऐसा हो चुका है। जिन्हें मैंने सिखाया है, वे मुझसे आगे बढ़ गए हैं।" फिर वताने लगे

कि कैसे उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में कैलेनवैक को जूते वनाना सीखने भेजा। कैलेनवैक ने वापू को सिखाया। बापू ने दूसरे सव लोगों को सिखाया और वे सव वापू से अच्छे जूते वनाने लगे।

मैंने कहा, "मगर आपके प्रमुख विषय 'वौद्धिक क्षेत्र' में तो कोई भी आपसे आगे नहीं बढ़ सका।" वापू ने कहा, "वढ़ा है, महादेव को ले लो। वह गुजराती अनुवाद मुझसे अच्छा कर लेता था।" भाई कहने लगे, "आपकी गुजराती वहुत अच्छी होती है—भावपूर्ण और संक्षिप्त।" बापू कहने लगे, "हां, वह है। कारण, मैं भाषा का प्रेमी हूं। मैं अपने आपको साक्षर (विद्वान) नहीं मानता; मगर भाषा का प्रेम मेरे मन में हमेशा रहा है। इसलिए भाषा का सहज संगीत अपने-आप आ गया है, जो कि गुजराती के लिए ही नहीं, बल्कि सव भाषाओं के लिए है। अंग्रेजी के लिए भी मेरे मन में उतना ही प्रेम है। यह चीज ग्रहण करने के लायक है। पोलक तो अंग्रेज था, मगर उसने अंग्रेजी मुझसे ली है। मुझसे यह नहीं होता कि भाषा को बिगाड़ा जाय। महादेव तो जव आया तव अपने क्षेत्र में संपूर्ण था, मगर मैं मानता हूं कि और कहीं उसकी भाषा नहीं खिलनेवाली थी।"

इतनी वात करने के वाद कहने लगे, "प्रसंगवश इतनी वात आज हो गई। आगे से इतनी चर्चा भी नहीं करने दूंगा।"

दोपहर में सोने के बाद बापू ने मौन लिया। शाम को खाने के समय छोड़ा। रोज ऐसा करने का विचार कर रहे हैं।

आज मीराबहन ने थोड़े समय तक फिर वही 'अद्भुत सलीब' (Wond'rous Cross) गीत सिखाया।

४ जनवरी '४३

सुबह ही मीराबहन ने कहा, "आज बादल हैं।" मैंने उन्हें बादलवाले दिन एक चित्र वनाकर देने को कहा था। सो रंग उठाकर चल पड़ी। सुवह घूमने का पौन घंटा चित्र में लगाया। पीछे दोपहर में कुछ समय दिया। आज दूसरा कुछ काम न हो सका।

बापू का मौन साढ़े सात बजे खुला। बा को रामायण समझाकर वे सोने को चले गए।

कई अखबारों ने नये वर्ष की 'उपाधिवितरण-सूची' नहीं छापी। इस पर मद्रास सरकार ने चिढ़कर मद्रास के कुछ अखबारों से कहा है कि उन्हें सरकारी विज्ञप्ति आदि लेने जाने की जरूरत नहीं।

मुंशी का बड़ा अच्छा बयान निकला। सरकार द्वारा चिमूर के विषय में निकाले गए बयान का उत्तर है। सरकार ने चिमूर की खबरों को अखबारों में छापने की मनाही कर दी है। लेने वहां कोई जा भी नहीं सकता।

५ जनवरी '४३

रोज की तरह सारा दिन निकल गया। बापू दोपहर में मौन लेते हैं। वातावरण में एक तरह की अनिश्चितता है, भारीपन है। जितना समय निकल जाय उतना ही अच्छा है।

रात को बापू मुझे महाभारत की दो कथाएं सुनाने लगे। दोपहर में बा को भी सुनाई थीं। कहने लगे, "पक्षी की आंख पर अर्जुन की एकाग्रता और युधिष्ठिर का क्रोध करना—इन पाठों को याद रखना। दोनों का अर्थ गूढ़ है। अभी से ये अर्थ तेरी समझ में आजायं तो जीवन की बहुत-सी समस्याएं हल हो जायं।"

सुबह घूमते समय बापू भाई से पूछने लगे, "'ऐंशिएंट मैरिनर' का संदेश क्या है?" उन्होंने बताया। फिर कवियों की बातें होती रहीं—कॉलरिज, वर्ड्सवर्थ इत्यादि की कविता, उनकी शैली, उनका जीवन—इसकी चर्चा हुई।

६ जनवरी '४३

सुबह घूमते समय बापू भाई को महाभारत की वही दो कथाएं सुनाने लगे, फिर स्लोकम की किताब की बात करने लगे। कहने लगे, "उसमें जो ज्ञान है वह ग्रहण करने योग्य है, मगर भाषा की दृष्टि से किताबें पढ़ते रहने से मनुष्य भाषा का गुलाम बन जाता है। भाषा तो मनुष्य की दासी है। एक बार इतना पता होना चाहिए कि हम कहना क्या चाहते हैं, पीछे भाषा तो अपने-आप आ जाती है।"

दिन फिर रोज की तरह गया। 'हिंदुस्तान टाइम्स' का पहली

तारीख का अंक आज पाया। उसमें भंसालीभाई की काफी खबरें थीं। बापू के प्रति उनका संदेश बहुत हृदय-स्पर्शी था—"बापू से जब कह सको तब कहना कि उन्होंने मुझे जीवन में भी उबार लिया है, मृत्यु में भी उबार लेंगे।"

७ जनवरी '४३

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "'ऐंशिएंट मैरिनर' को रहस्य-वादी कविताओं में गिन सकते हैं क्या ?" भाई ने उत्तर दिया, "हां।" तब रहस्यवाद की व्याख्या पर बात चली। पीछे चर्चा उठी कि हमारे कवियों में रहस्यवादी कौन-कौन थे। भाई कहने लगे, "मीरा तो रहस्य-वादी थी ही। उसमें और सेंट थरेसा में क्या फर्क था !" बापू ने कहा, "तब तो हमारे लगभग सभी कवि रहस्यवादी कहे जा सकते हैं।" बाद में दूसरे अंग्रेज कवियों की बातें होने लगीं। भाई ने एक वाक्य बोला, जिसमें अधिकांश अंग्रेजी के शब्द थे और बाकी गुजराती के थे। बापू कहने लगे, "आज से इस बात का नियम बना लेना चाहिए कि अंग्रेजी शब्द कभी भी इस्तेमाल नहीं करेंगे। यह भद्दी बात है।"

मीराबहन ने आज से मुझे 'लीड काइंडली लाइट' गीत सिखाना आरंभ किया।

कल रात से सर्दी फिर आरंभ हो गई है। कुछ दिन तक रह जाय तो बड़ा अच्छा हो।

कटेली साहब प्रार्थना से पहले आये। उन्होंने बापू को बताया कि नया चांद निकला है। सब देखने को चले।

८ जनवरी '४३

आज भी खूब सर्दी है। बापू बाहर धूप में बैठने को निकले हैं।

मीराबहन ने कल शाम के चंद्रोदय के दृश्य का एक काल्पनिक चित्र बनाया है। अच्छा है।

९ जनवरी '४३

आज यहां आए पूरे पांच महीने हो गए। बापू को वाइसराय को पत्र लिखे दस दिन हो गए हैं। बापू ने कटेली साहब को पत्र लिखा कि उस पत्र

की आज तक पहुंच भी नहीं आई। जरा पता लगाएं कि वंबई से पत्र कब आगे गया।

: ३५ :

निश्चय और तैयारी

१० जनवरी '४३

भाई ने बताया कि कल रात मीराबहन बापू से आकर कहने लगीं कि अगर सचमुच उपवास आना हो, तो क्या यह उचित न होगा कि वे अमुक-अमुक तैयारियां कर लें? जवाब में बापू ने कहा कि उन्हें जो तैयारियां करनी हों, कर लें।

आज सुबह घूमते समय बापू भाई से कहने लगे, "मैं देखता हूं कि उपवास तो आ ही रहा है। मैं इतने दिनों से भले ही ऊपर से सब कामों में भाग लेता रहा होऊं; मगर दरअसल भीतर अपने ध्यान में ही लगा रहा हूं। मुझे अभी तक अंतरात्मा की स्पष्ट आवाज नहीं सुनाई दी कि कब उपवास करूं। लेकिन अंतरात्मा इतना तो कहती है कि तुम इसमें से निकल नहीं सकते। सब तरह से इस बारे में विचार करके इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जब शुरू में सेवाग्राम में उपवास की बात निकली थी तब वह अंतरात्मा का ही नाद था। मैंने काफी चर्चा की, काफी समय दिया, काफी ढील की; मगर देखता हूं कि उपवास तो नसीब में है ही। तुमसे यह सब इसलिए कह रहा हूं कि तुम अपनी मानसिक तैयारी कर लो। पहले सोचा था कि जबतक समय नहीं आता, किसी से बात न करूं; मगर फिर विचार किया कि अगर तुम स्वस्थ बन सको और मौका आने पर काम करने के लिए तैयार हो सको तो अच्छा है। सेवा और देखरेख की तो मुझे उपवास के समय आवश्यकता पड़ेगी ही। भंसाली की तरह मैं नहीं रह सकता। भंसाली की तपश्चर्या भी मेरे पास कहां है? इसलिए अगर तुम लोग स्वस्थ हो सको तो अच्छा है, नहीं तो मेरा काम अधिक कठिन

बन जावेगा। मुझे डर है कि इस समय बा हिम्मत नहीं रख सकेगी, वैसे तो बा बहादुर है। समय आने पर धीरता से काम ले सकती है। मीरा कहती है कि सरोजिनी नायडू मेरे कारण अभी से बीमार-सी हो गई हैं। इस तरह अगर तुम सब हार जाओगे तो भी समय आने पर मुझे तो उपवास करना है ही। आज जो कुछ भी बाहर हो रहा है, उसकी हमें कुछ खबर नहीं मिलती। इसके अर्थ दो हो सकते हैं। एक तो यह कि हिंसा के फैलते रहने पर भी आम जनता अहिंसक है और उसी ढंग से काम कर रही है; मगर उसका उलटा मानने के लिए भी काफी सबूत देखने में आता है। हो सकता है कि जो मानसिक स्थिति आज बा की है, वह बाकी देश की भी हो। संभव है कि हिंसावाले ही अपने ढंग से अपना काम कर रहे हैं और उसमें कुशलता का परिचय भी दे रहे हैं। इसके विपरीत अहिंसक लोग अपंग होकर बैठ गए हैं। इसका प्रतिकार भी मैं उपवास द्वारा ही कर सकता हूं। मन में यह भी उठता है कि क्या मेरा जीवन-कार्य समाप्त हो गया है? मैं देश की प्रगति को रोक तो नहीं रहा? मेरे पास जो कुछ था, वह दे चुका। अब पुरानी चीज ही दोहरा सकता हूं। भंसाली जायगा तो मेरी दृष्टि में सत्याग्रह की संपूर्ण मिसाल छोड़कर जायगा। सोचता हूं कि मेरे संदेश की पूर्णाहुति में उपवास की आवश्यकता क्या नहीं है? क्या मुझे अब सत्याग्रह की एक संपूर्ण मिसाल देश के सामने रखकर अपना जीवन-कार्य पूरा कर लेना चाहिए?"

भाई बोले, "आपको इस तरह नहीं सोचना चाहिए। इससे तो मस्तिष्क में उलझनें पैदा हो जाती हैं। शुद्ध अंतर्नाद के सुनने में भी कठिनाई आती है। जीवन-कार्य पूर्ण हो जायगा तब प्रभु अपने-आप उठा लेगा।"

बापू कहने लगे, "यह ठीक है। मैं विचार करता भी नहीं। यह बुद्धि का विषय नहीं; हृदय का विषय है। यह तो मैंने यों ही तुम्हारे सामने विचार रख दिया है। मैं अंतर्नाद को सुनने का प्रयत्न कर रहा हूं।"

भाई ने बताया कि पूर्णाहुति के बारे में बापू के साथ उनकी कुछ और भी दलील हुई थी। भाई ने उनसे कहा था, "आपको इस तरह विचार ही

नहीं करना चाहिए। इस तरह पूर्णाहुति की बात को पकड़ लें तो जीवन में पुरुषार्थ को स्थान नहीं रह जाता। पूर्णाहुति का विचार मन में आना स्वाभाविक है; मगर मैं देखता हूं कि आपने जो छः महीने की अवधि की बात की थी, वह आपके विचारों पर प्रभाव डाल रही है। यह चीज मुझे अशांत बनाती है। अगर आपको ईश्वर का स्पष्ट आदेश होता कि उपवास करो तो मुझे आपसे कुछ भी नहीं कहना था; मगर आज ऐसा नहीं है। आज आप उपवास करें तो ईश्वर आपसे पूछ सकता है कि 'अपनी निश्चित की हुई अवधि में मेरे आदेश को स्थान दिया है क्या? जब आवश्यकता थी, मैंने तुझे जगाकर चेतावनी दी थी। तब तूने आज क्यों कानून अपने हाथ में ले लिया है? मैंने जो विष का प्याला भेजा था, उसे अमृतवत पीकर संतोष क्यों नहीं माना? उससे आगे क्यों बढ़ा? आत्मा का प्रतिदिन सूली पर लटकना क्या आहुति नहीं?' मुझे काफी बातें कहनी हैं, मगर फिर कहूंगा।"

इस सबका बापू का उत्तर था, "मैंने जो कुछ करने का निश्चय किया है, उसे तुमने छुआ तक नहीं है, इसीलिए इस तरह की दलीलें करते हो। वरना, ऐसी बातें करते ही नहीं।"

११ जनवरी '४३

आज बापू का मौन था। कल शाम को मौन शुरू होने के बाद मीरा-बहन बापू से आकर कहने लगीं, "आप उपवास का विचार करने से पहले एकांत में कुछ दिन इस विषय पर विचार करें तो अच्छा न होगा? आध्यात्मिक बातों पर भला मैं आपको क्या सलाह दे सकती हूं; परन्तु एकांतवास का कुछ अनुभव अवश्य लिया है। उस अवस्था में मुझे कुछ शांति मिली थी और चाहती हूं कि आप भी उसका कुछ अनुभव लें तो अच्छा है। मुझे डर-सा लगता है कि आप अपने-आप में अतिशय आत्मविश्वास का आभास तो नहीं पाते? इसके कारण किसी गलत निर्णय पर तो नहीं पहुंच जायंगे।"

बापू ने लिखकर उत्तर दिया, "मैं जो कुछ कर रहा हूं या करूंगा, वह हद से ज्यादा आत्मविश्वास का परिणाम नहीं होगा। अंतरात्मा

की धीमी-सी आवाज ही मेरा पथ-प्रदर्शन कर रही है। अव रही एकांत और शांति की वात। जितनी शांति और एकांत पिछले दिनों में मुझे मिला, वह मेरे लिए काफी था। मगर मुझे एकांत या मौन का डर नहीं है। मैंने तो लंवे अर्से तक मौन लिया है और वह अच्छा भी लगता है। रही एकांतवास की वात। दक्षिण अफ्रीका के जेलों में मैंने उसका अनुभव किया है और मुझे वह भी अच्छा लगता था। मैं अव दोनों को आजमाने की तैयारी में फिर रहा हूं। तुम सवसे बातचीत कर लो और वे मान जावें तो तुम प्रवंध कर लो।"

मीरावहन खुश हो गईं। मुझसे और भाई से वातें करने लगीं, "वापू कहें तो उनके लिए वगीचे में आम के पेड़ के नीचे एक झोपड़ी बना दें।"

जिस कमरे में मीरावहन पहले रहती थीं, उसमें वापू की वैठक का प्रवंध करने का विचार किया। वापू का कमरा गुसलखाने के करीव होने के कारण मीरावहन को लगता था कि वापू को एकांत नहीं मिलता। बा को परिवर्तन पसंद न था। सरोजिनी नायडू भी इसके विरुद्ध थीं। मुझे भी अच्छा नहीं लगता था; पर भला मैं इन बातों को क्या समझती? मैंने सोचा कि वापू को इसमें फायदा हो तो क्यों न ऐसा करें।

दिन भर वापू का मौन था। शाम को साढ़े सात के करीव मौन पूरा हो जाने के वाद वापू ने वा से वातें कीं। उन्होंने सारी योजना को रद्द किया, मगर वापू कहने लगे, "इसमें से जितना पचा सकूंगा उतना अमल में लाऊंगा। मीराबहन की सूचना को मैं फेंक देना नहीं चाहता।"

सरोजिनी नायडू बहुत खुश हुईं। कहने लगीं, "मीरा समझती नहीं है कि एकांत मन का होता है। बापू को बाहरी दिखावे की जरूरत नहीं है। वे तो भीड़-भड़क्के में रहकर भी एकांत-सेवन कर सकते हैं।"

१२ जनवरी '४३

आज सुवह डिब्वे में नई टॉफी भर रही थी। यह ताड़ के गुड़ की वनाई गई थी। वापू मजाक करने लगे, "यह तो तू भी खा सकती है।" मैंने कहा, "जिस दिन आप कहेंगे कि उपवास टल गया, उसी दिन खूब अच्छी

टॉफी बनाकर हम जलसा करेंगे।" वापू गंभीर होकर कहने लगे, "उपवास तो आया ही समझो।"

सुवह घूमते समय फिर वही बात चली। वोले, "कल रात मैं बारह वजे तक नहीं सोया।" भाई कहने लगे, "क्यों?" वापू ने उत्तर दिया, "मुझे जागना ही था, मगर मैं देख रहा था कि तुम कव सोने आते हो। टाइप करने की आवाज आती थी। और मुझे गुस्सा आता था कि इस वक्त क्यों टाइप कराया जाता है। वह तो चार वजे उठ जानेवाला है। तुम भले कहो कि शरीर ने आज तक काम दिया है तो आशा रखें कि आगे भी काम देगा। ऐसी आशा वही मनुष्य रख सकता है जिसने स्वास्थ्य के नियमों का सतत पालन किया है। तुम्हारी तरह सदा उल्लंघन करने पर भी ऐसी आशा का पल्ला पकड़ना तो घमंड की बात हुई। यह एक विचार था, मगर मैं तो अपना ही विचार कर रहा था। देखता हूं कि उपवास का विचार मन में उठता ही रहता है कि मैं इससे वच नहीं सकता। वाइसराय का उत्तर क्या आता है, यह देखना है। यह तो नहीं कह सकता कि वह निराशाजनक होगा। मगर इस उपवास को टालने का एक ही उपाय है। वह यह कि वाइसराय का वहुत ही अनुकूल उत्तर आ जावे। मगर मेरी मानसिक तैयारी इससे उलटे की होनी चाहिए।"

भाई ने कहा, "आपके उपवास के क्या कारण हैं और उनका निवारण कैसे होगा—यह मैं समझना चाहता हूं।"

वापू कहने लगे, "लोग भूखों मर रहे हैं, यह क्या कम कारण है? मेरे जैसा आदमी ऐसी परिस्थिति में आराम से वैठकर कैसे खा सकता है? मानो कि आज एक लाख आदमी इसीलिए उपवास करने लगें कि लाखों-करोड़ों का भूखों मरना उनसे सहन नहीं होता तो मैं कहता हूं कि परिस्थिति एकदम बदल सकती है और साथ ही भुखमरी भी वहुत कुछ कम हो जावेगी। मगर मैं जानता हूं कि ऐसा नहीं हो सकता। मेरी तरफ देखकर कोई मेरा अनुकरण करे तो मूर्खता होगी; मगर तुम सबको मुझसे अलग रहकर यह जान पड़ने लगे कि नहीं, हम यह नहीं देख सकते, तो दूसरे भी उपवास कर सकते हैं। परंतु आज वह शक्य नहीं। तव, मुझे क्या करना

चाहिए ? मैं तो अपना धर्म-पालन करूं। बाद में जो होना होगा सो होगा। जीवित रहने का संकल्प करके मैं यह करना चाहता हूं। आमरण उपवास जैसी चीज भी मेरे पास है; मगर यह उपवास वैसा नहीं है।"

मैंने पूछा, "आपने वाइसराय को जो पत्र लिखा था, उसमें आपने लोगों के भूखों मरने की बात तो लिखी थी; मगर वह बात पत्र में मुख्य नहीं थी। मुख्य तो था आपका अपने जीवन के प्रत्येक पहलू में सत्य और अहिंसा को आत्मसात कर लेना। इसका पालन कैसे हो, यह भी पत्र में था। अगर उसको अमल में लाने का दूसरा कोई साधन न हो तो जेल में बैठे-बैठे आपके पास उपवास के सिवा चारा नहीं था। आपको लगता था कि उपवास द्वारा ही अपने मिशन को आगे बढ़ा सकते हैं। मगर अभी आप उस बड़ी चीज के लिए नहीं, बल्कि भुखमरी के लिए उपवास करने की बात करते हैं। दोनों में कुछ विरोधाभास नहीं होता क्या ?"

बापू कहने लगे, "नहीं, भुखमरी को अहिंसक कैसे सहे ? बड़ी समस्या तो है ही; मगर इसी बीच एक नयी चीज पैदा हो गई है। जनता के पास खाने के लिए कुछ है ही नहीं ? गेहूं, नहीं, ज्वार नहीं, चावल नहीं, बाजरा नहीं। लोग खायें क्या ? करें क्या ? और मेरे जैसा आदमी भी क्या करे ? चुपचाप बैठ कर क्या देखा करे ? इस परिस्थिति में अहिंसा मूर्त्त रूप में खड़ी हो गई है। अहिंसा इसी तरह अपना काम करती है। अव्यक्त अहिंसा की पूजा अव्यक्त ब्रह्म की पूजा की तरह कठिन है। मगर अहिंसक एक-एक परिस्थिति का उपयोग करता जाता है तो दूसरा कदम अपने-आप उसके सामने आ जाता है। दक्षिण अफ्रीका में जब मैंने सत्याग्रह शुरू किया तो एक छोटी-सी चीज को लेकर किया था। ट्रांसवाल के रजिस्ट्रेशन ऐक्ट के सामने वह था। मित्रों ने कहा भी कि इतनी छोटी-सी बात के लिए क्या लड़ना था ! मगर मैंने कहा कि जो बुराई देखता हूं, उसके विरुद्ध मझे लड़ना ही चाहिए। वह चीज धीरे-धीरे अपने-आप विस्तृत होती गई और अंत में सारे दक्षिण अफ्रीका में फैली।"

भाई ने कहा, "इसका अर्थ यह हुआ कि अनाज की लूट या देश से अनाज बाहर भेजना फौरन बंद हो जावे तो आपका उपवास टल सकता है।"

बापू कहने लगे, "वह एक चीज है।" भाई ने पूछा, "और कौन-सी चीजें हैं? उपवास के और क्या-क्या गुह्य अर्थ हैं? निवारण के क्या-क्या साधन हैं? यह सब मैं अपना मस्तिष्क साफ़ करने के लिए समझना चाहता हूं।"

बापू बोले, "यह मैं अभी नहीं बताऊंगा। मैं अपनी शक्ति का संचय करना चाहता हूं। मेरा पत्र तैयार होगा तो सभी देखेंगे। तुम्हारे लिए इतना ही काफ़ी होना चाहिए कि भुखमरी अकेली ही उपवास करने के लिए सबल कारण है।"

सरोजिनी नायडू ने बापू से दो-तीन दिन से कहा था कि वे उ:से बात करना चाहती हैं। आज दो बजे बापू ने उन्हें बुलाया। उन्होंने शुरू किया, "बापू, आप गुस्ताखी क्षमा करना, मगर मैं आज आपसे साफ़-साफ़ बातें करना चाहती हूं। मैं समझती हूं कि आपका उपवास करना ग़लती है। १९२४ के हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य के लिए किये गए आपके उपवास की मेरे दिल में पूरी कदर है। मगर राजकोटवाला उपवास मेरी समझ में नहीं आया। यह भी नहीं आता और याद रखना चाहिए कि आपके कहने से हजारों जेलों में बैठे हैं। आप आंखें बंद कर लेंगे तो उनका क्या होगा? आपके साथी जेल में हैं। उन्होंने आपको सारी सत्ता सौंप दी है। कई लोग आज लड़ाई करने के पक्ष में न थे तो भी वे आपके पीछे चले। उनकी पीठ पीछे क्या आपका उपवास करना उचित है? आप आज स्वतंत्र नहीं। बाहर निकलकर आप सब जिम्मेदारियों से मुक्ति लेकर उपवास कर सकते हैं, मगर यहां नहीं। मैं जानती हूं कि किसी रोज आपकी मृत्यु उपवास में होगी, मगर अभी अंतिम बलिदान का समय नहीं आया। जिम्मेदारियों से मुक्त होकर आप उपवास करने का निश्चय करना चाहेंगे तो मैं आपको दोष नहीं दूंगी। उस समय यदि आप मृत्यु का भी आवाहन करेंगे तो मैं आपका साथ दूंगी।"

बापू हँसने लगे, "उपवास में भी साथ दोगी ?" सरोजिनी नायडू ने उत्तर दिया, "हां, उपवास में भी, यद्यपि मुझे उपवास में विश्वास नहीं।"

बापू मजाक करते बोले, "हां, और दो दिन बाद खाना मांगने लगोगी !"

वे बोलीं, "नहीं, मैं मरूंगी, मगर खाना नहीं मांगूंगी। मैं मानती हूं कि ईश्वर इतना निर्दय नहीं कि आपसे उपवास कराके लोगों को मंझधार में छोड़ देने की प्रेरणा करे। इस दृष्टि से आपको सत्य और अहिंसा को सामने रखकर उपवास का विचार करना चाहिए। इस समय उपवास करना जनता के प्रति हिंसा होगी। बाहर जाकर यदि आप किसी और को अपना चार्ज सौंपकर उपवास करेंगे तो आपकी मृत्यु सम्भवतः देश को तारनेवाली बने।" इतना कहकर सरोजिनी नायडू बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये ही चली गईं।

शाम को मैंने थोड़ी देर चित्र बनाया, फिर घूमने चली गई। बापू ने सूचना दी कि बा को छोड़कर वे और सबके साथ मौन बरतेंगे। गीताजी सीखना हो तो पंद्रह मिनट घूमते समय उसके लिए मौन छोड़ेंगे।

रात को प्रार्थना के बाद मीराबहन के साथ भी यही बातें होती रहीं। बापू कहने लगे, "कल से मैं तबतक पूर्ण मौन धारण करूंगा जबतक कि मुझे वाइसराय का उत्तर नहीं मिलता अथवा उन्हें भेजने के लिए मेरा दूसरा पत्र नहीं तैयार हो जाता। जहां तक मेरा संबंध है, उपवास जरूरी हो गया है। इसके निवारण का केवल यही उपाय है कि मैं वाइसराय का अनकूल उत्तर पाऊं। लेकिन उनसे ऐसे उत्तर की संभावना बहुत कम है। मैं जानता हूं कि उपवास करने की शक्ति मुझमें नहीं है और न मुझे उपवास करने की बड़ी इच्छा ही है। मैं अमर शहीद बनने का स्वप्न नहीं देखता और न इसका यश ही मुझे प्राप्त है; पर यदि इसकी आवश्यकता मुझे जान पड़ी तो मैं इससे कैसे हट सकूंगा। इससे अधिक स्पष्ट आत्मा की आवाज और क्या हो सकती है ? इतना ही मेरे लिए काफी है। मेरे मन में इसके बारे में भांति-भांति के विचार उठते हैं। कल रात को मैं १२ बजे तक जागता रहा। यही विचार मुझे बार-बार सजग करता रहा कि मैं

उपवास से नहीं बच सकता। इसलिए मुझे इसके लिए तैयारी रखनी चाहिए।"

मीराबहन कहने लगीं, "आप दूसरा पत्र यह मानकर लिखेंगे कि वाइसराय ने पहले पत्र का उत्तर नहीं दिया है, क्योंकि यदि उत्तर प्रतिकूल आता है तो पत्र फिर लगभग ज्यों-का-त्यों होगा।"

बापू बोले, "हां, मुझे तैयार रहना चाहिए। उत्तर यदि प्रतिकूल आता है और मैं उसका उत्तर देने में दो-तीन दिन पत्र तैयार करने में लगाऊंगा तो मुझे इससे बड़ी उलझन होगी। हो सकता है कि ईश्वर मेरी सबसे कड़ी परीक्षा ले रहा हो और अंत में मुझसे उपवास न करवाये।"

मीराबहन कहने लगीं, "हां बापू, ईश्वर आपको अब्राहम के बलिदान की अवस्था तक ले जा सकता है, या आपसे एक-दो दिन का उपवास करा सकता है। उपवास इससे आगे नहीं जाने का।"

बापू ने कहा था कि पानी न ले सकने पर फल के रस में पानी मिलाकर उपवास के समय उन्हें दिया जायगा। इस विषय में मीराबहन पूछने लगीं, "क्या आप फल के रस से उपवास शुरू करेंगे?" बापू ने उत्तर दिया, "नहीं, पानी से; मगर बरसों से मैंने खाली पानी पिया ही नहीं। दक्षिण अफ्रीका में बरसों तक केवल फल ही खाये। पानी की गुंजायश ही न रह जाती थी। इस कारण पानी के प्रति अरुचि हो गई है। आज मैंने दवा के तौर पर थोड़ा पानी पिया। सो शुरू तो पानी से करूंगा, मगर पानी जब न पी सकूं, जब मिचली होने लगे, तब पानी में थोड़ा रस डालूंगा। पानी इतना नहीं लूंगा कि जिससे शरीर का पूरा पोषण हो सके। मान लो कि दिन भर में सौ संतरे खाऊं तो उस अवस्था में तो उपवास महीनों के लिए बढ़ाया जा सकता है।" बापू बताने लगे कि साबरमती आश्रम में कैसे एक लड़के ने इसलिए प्रायश्चित्त करने की बात सोची थी कि उन्होंने दूध न पीने का व्रत लेकर भी बकरी का दूध पीना आरंभ कर दिया था। वे तो जेल में थे। वह लड़का छः महीने तक फलों के रस पर वहां रहा, अंत में मर गया। ऐसे ही एक दूसरे भाई श्री हनुमंतराव ने लाल-पीली, रंगबिरंगी बोतलों का पानी पीने का प्रयोग किया था। वे

मानते थे कि विज्ञान की प्रगति इसी प्रकार हो सकती है कि उसके प्रयोग करते-करते लोग मरने तक के लिए तैयार हों। सो वे भी अंत में मरे। ये दोनों मृत्युएं उनकी दृष्टि से अलौकिक थीं।

बाद में बापू ने कटेली साहब को अपने निश्चय की सूचना दे दी कि कल से उनका मौन-व्रत आरंभ होगा। कलेक्टर आवेंगे तो उनके साथ बापू मौन नहीं रखेंगे। रात सोने में थोड़ी देर हो गई।

१३ जनवरी '४३

बापू ने सुबह से ही मौन शुरू कर दिया। उठने के वाद वोले ही नहीं। खाने के वाद बा को महाभारत पढ़कर सुनाया, उन्हें भूगोल सिखाया, फिर मौन ले लिया। सोकर उठे तो कटेली साहब अखबार लाये। उसमें मंसालीभाई के उपवास छोड़ने की बात थी। सब बहुत खुश हुए। मैं भाई को बताने गई। मैंने उनसे पूछा, "आप क्या खबर सुनना चाहते हैं?" कहने लगे, "मंसालीभाई के बारे से कुछ अच्छी खबर।" मैंने बताया। भाई खुश होकर बोले, "मगर सरकार का बयान साथ नहीं छपा, इससे चिंता होती है।" सरोजिनी नायडू तो खबर सुनकर कहने लगीं, "अब बापू को विश्वास और धीरज से ही काम लेना चाहिए?" मैंने कहा, "मंसालीभाई के उपवास छोड़ देने की खुशी हम कैसे मनानेवाले हैं?"

सरोजिनी नायडू ने मुझे मिठाई बनाने की आज्ञा दे दी। कल मकर-संक्रांति भी है। तिल, बादाम, पिस्ता, काजू आदि डालकर बेसन के साथ गुड़ और खांड की मिठाई तैयार की। सब सिपाहियों और कैदियों को कल दी जावेगी।

मैंने बापू से कहा, "आप जब बा को रामायण समझाने के लिए मौन छोड़ेंगे, तब यह अवश्य बतायें कि आज की खबर का आपके मन पर क्या असर हुआ।" भाई कहने लगे, "मैं तो अभी से बता सकता हूं कि बापू क्या कहेंगे।" बापू ने इशारे से कहा, "बताओ।" भाई ने एक कागज पर लिखकर दे दिया। बापू ने बिना पढ़े रख लिया। रामायण के बाद कहने लगे, "मंसाली की खबर पढ़कर मुझे लगा कि इस जगत में ईश्वर है।

उसका यह प्रत्यक्ष सबूत है।" भाई का कागज निकाला। उस पर लिखा था—"तू मन में शंका को स्थान ही क्यों देता है। यह ईश्वर की सत्ता की निशानी नहीं है तो क्या है?"

शाम को जब मैं मिठाई बना रही थी तब देखा कि बापू आंखें बंद करके ध्यानावस्थित होकर बैठे थे। भाई कहने लगे, "यह 'या निशा सर्वभूतानां' का प्रत्यक्ष चित्र है। सब तो सोचते हैं कि भंसालीभाई और बापू के सिद्धांत की जीत हुई और प्रसन्न होते हैं; मगर बापू भविष्य की बात सोच रहे हैं। आगे क्या? अगला कदम क्या?"

: ३६ :

वाइसराय को पत्र

१४ जनवरी '४३

आज एक नया कलेंडर आया। उस पर हिंदुस्तान का नक्शा है और बापू का चित्र है। बापू बा को भूगोल सिखाने के समय नक्शे का उपयोग कर सकते हैं। बापू का चित्र अच्छा नहीं। उस पर मीराबहन ने कागज लगा दिया। बा अब नक्शे की सहायता से भूगोल सीखने लगी हैं। आज बापू ने बा को पूरा बाल महाभारत सुनाने का काम पूरा किया।

बापू कल से वाइसराय को पत्र लिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि जबतक पूरा न हो जाय तबतक उसे कोई न पढ़े।

आज भंसालीभाई द्वारा उपवास छोड़ देने के विषय में सरकारी बयान और डॉ० खरे ने इस संबंध में जो हिस्सा लिया था आदि सब देखा। सार्वजनिक जांच-पड़ताल की मांग छोड़ देनी पड़ी। इसका मुझे दुःख हुआ; मगर भाई कहने लगे, "इस विषय में हमें कोई निर्णय करने का अधिकार नहीं है। वहां के लोगों को संतोष हुआ, इतना ही काफी समझना चाहिए।"

बापू से मैंने पूछा तो उन्होंने भी कहा, "हमें यहां बैठे-बैठे इस बारे में कुछ भी फैसला करने का अधिकार नहीं है।"

१५ जनवरी '४३

शाम को बैठी स्केच बना रही थी कि इतने में भाई बापू का पत्र लेकर पहुंचे। वही उपवास की बात थी। जो पहली फरवरी से इक्कीस फरवरी तक चलनेवाला था। बापू ने कहा है कि हम सब इस पत्र को पढ़कर अपना-अपना स्वतंत्र मत लिखकर उन्हें दे दें।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने कहा था कि वाइसराय को दूसरा पत्र भेजने के समय या पहले पत्र का उत्तर आने पर मैं मौन छोड़ूंगा। सो आज पत्र लिखना पूरा होने पर मौन छोड़ा।"

डॉ० लाजरसवाले पत्र की बात करते-करते बापू वाइसरायवाले पत्र की चर्चा करने लगे, "सभ्य लोगों का एक तरीका यह भी है कि ऐसे पत्र का उत्तर न देना चाहिए। उनके काम से जो हमें समझ लेना हो, समझ लें।" मैंने कुछ कहने की इजाजत लेकर कहा, "वाइसराय को पत्र मिले मुश्किल से दस दिन हुए होंगे। आपके पहले ही पत्र का उन्हें रूखा-सा उत्तर देना था सो भी उन्होंने पंद्रह दिन लिये थे। इस समय अगर वे कुछ करने का विचार कर रहे होंगे तो आपका यह दूसरा पत्र पाकर चिढ़ न जावेंगे? क्या आपको उन्हें और समय न देना चाहिए?"

बापू कहने लगे, "मान लो दस ही दिन हुए। तब भी कम-से-कम पहुंच तो आनी चाहिए थी। इन लोगों का यह तरीका है कि लिखते हैं, यह तो पहुंच है, बाकी उत्तर फिर देंगे और फिर इस पत्र से चिढ़ना क्या था? उपवास की बात तो पहले पत्र में ही थी। यह तो उसी सिलसिले में लिखा जा रहा है।"

मैंने कहा, "तो भी इससे नुकसान हो सकता है। इसके अतिरिक्त दूसरे पत्रों की भांति यह हृदयस्पर्शी नहीं है।"

बापू कहने लगे, "इसे हृदयस्पर्शी बनाने की आवश्यकता नहीं है। यह तो ठंडे कलेजे से पहले पत्र के अनुसंधान में लिखा हुआ पत्र है।"

बापू घूमकर आये तो सरोजिनी नायडू उनके पास आईं। हाथ में दर्द होने के कारण वे पत्र पर अपना मत जबानी सुना गईं। उनका कहना था, "वाइसराय को और समय देना चाहिए। भंसालीभाई के उपवास

छोड़ने की घटना से भी पता चलता है कि सरकार कुछ हिली तो है। उन्हें अपने रास्ते चलने देना चाहिए। दूसरे, इस पत्र की भाषा आपकी हमेशा की भाषा नहीं। यह कुछ रुक-रुककर लिखा गया है और अपूर्ण लगता है। लगता है कि आपने शांत चित्त से पत्र नहीं लिखा। आप यह क्यों लिखते हैं कि आप नमक और पानी लेंगे। आप उपवास करनेवाले हैं, जो ठीक लगे सो लें। किसी से कहने की क्या जरूरत है ? इसके अतिरिक्त यह क्या लिखना था कि वे आप पर दया न करें ? दया करके जो कुछ किया जाता है, कई बार गलत होता है। आपकी भाषा मेरी ही समझ में नहीं आती तो वाइसराय कैसे समझेगा ?"

बापू कहने लगे, "तुम्हारी समझ में अच्छी तरह आती है। दया न करने की बात लिखने की जरूरत इसलिए है कि मेरी इस बारे में हरिजन उपवास के समय टीका हो चुकी है। अंबेडकर ने कहा है कि उसने वह फार्मूला मेरी जान बचाने की खातिर स्वीकार किया था।"

सरोजिनी नायडू बोलीं, "हां, मगर वाइसराय यह सब क्या समझेंगे ? मैं कहती हूं कि उपवास ही करना है तो महादेव की समाधि पर जाना बंद कर दीजिए। वहां जाने से क्या फायदा ? मैं जानती हूं कि उन्होंने आपकी खातिर प्राण-त्याग किया। इसे मैं अदालत में साबित तो नहीं कर सकती; मगर बात सही है। अगर आप अब उपवास करते हैं तो महादेव का बलिदान बेकार गया। अगर आप उपवास करनेवाले हैं तो उस समाधि पर रोज क्रॉस बनाने का क्या अर्थ है ? मैं फिर कहती हूं कि आप स्वतंत्र नहीं हैं। आपको उपवास करने का हक नहीं है।"

बापू ने कहा था कि हो सके तो पत्र कल जाना चाहिए। भाई कहने लगे, "आप कहते हैं कि पत्र अंतर से निकला है। ऐसा होते हुए भी आपको उसे लिखने में चार दिन लगे। हमें आप कुछ घंटों में राय देने को कहते हैं ! यह कैसे हो ?"

बापू बोले, "करीब २४ घंटे हैं।" भाई ने कहा, "तो हम रात भर जागें !" बापू बोले, "वह तो तुम करने ही वाले हो।"

मगर कल शनिवार है। पत्र ग्यारह बजे जाना चाहिए। तबतक

शायद तैयार न हो सके और जा न सके। मीराबहन बापू को अपना मत लिखकर दे गईं। उन्होंने सुबह पढ़ने को तकिये के नीचे रख लिया। भाई तो दो बजे तक या उससे भी देर से सोए।

बापू ने फिर मौन ले लिया। जबतक इस पत्र का फैसला न हो जाय तब तक मौन रखेंगे।

१६ जनवरी '४३

मीराबहन की टीका सुबह बापू ने पढ़ी। उन्होंने लिखा था कि वाइसराय को पहले पत्र का उत्तर जल्दी भेजने के लिए लिखिये। अभी उपवास की बात न लिखिये। बापू ने लिखकर उत्तर दिया कि अब जो पत्र जावेगा, उसमें उपवास की बात तो आनी ही चाहिए। पत्र दो-चार दिन रोककर भेजा जावे, यह मैं समझ सकता हूं; मगर बीच में दूसरी तरह का पत्र नहीं जा सकता।

पीछे भाई ने अपना अभिप्राय लाकर दिया। उन्होंने बापू के पत्र का एक मसविदा भी बनाया था। लिखा था कि पत्र भेजना ही हो तो इस तरह का भेजिये। इस मसविदे का भाव भी वही था जो मीराबहन का था, मगर एक नये ढंग में लिखा गया था। साथ ही उसमें यह भी स्पष्ट किया गया था कि उपवास बंगाल की भुखमरी की खातिर नहीं है। उस भुखमरी की जड़ में जो है, उसकी खातिर कर रहे हैं।

घूमते समय बापू से भाई इसी बारे में बातें करते रहे। बापू मौन थे, सुनते रहे। बाद में भाई कहने लगे, "सब कुछ चिकने घड़े पर पानी डालने-जैसा था।"

बापू ने अपने पत्र को फिर से पढ़ा। 'कोई मुझ पर दया न करे' आदि वाक्य काट डाले। 'क्यों उपवास करते हैं', यह बतानेवाला भाग निकाल दिया। भाई को लगता था कि यह स्पष्टीकरण तो रहना ही चाहिए। तब बापू ने कहा कि तो फिर रहने दो। भाई के मसविदे में से बापू ने दो वाक्य ले लिये। वे वाक्य इस चीज को स्पष्ट करते थे कि भुखमरी तो परिस्थिति को और अधिक असह्य बनाती है, वह उपवास का मूल कारण नहीं।

मैंने बापू से पूछा था, "आप भुखमरी को इतना महत्व क्यों दे रहे हैं? सरकार कह सकती है कि 'भुखमरी मिटाने के काम में आपकी मदद सहर्ष स्वीकार की जाती है; मगर छूटने के बाद 'भारत छोड़ो' की हलचल न मचाना।' तब आप क्या करेंगे?"

बापू ने उत्तर दिया, "हम ऐसे मदद नहीं कर सकते। मदद करने का या भुखमरी मिटाने का एक ही उपाय है कि सरकार सत्ता लोगों के हाथ में रख दे।"

बापू ने भाई का मसविदा लौटाया। उसके नीचे लिखा था, "मैं तो ऊपर लिखा हुआ हजम कर गया हूं। फाड़ने के बदले तुम्हें वापस दे रहा हूं।"

भाई ने पूछा था कि वाइसराय का उत्तर न आने का अर्थ 'उसकी कुछ न करने की नीयत का सूचक' मानकर आप उनके साथ अन्याय तो नहीं करते? इसका इससे उदार अर्थ करना क्या शक्य नहीं? उपवास की चर्चा किये बिना आप उत्तर के लिए फिर क्यों न लिखें? जवाब में बापू ने एक नोट लिखकर भाई को दे दिया। उसमें लिखा था—"मैं ऐसे समझा हूं कि वाइसराय के मौन का मैंने जो अर्थ किया है, उसे तुम जानना चाहते हो। अंग्रेज अमलदारों की यह नीति है कि जब किसी को सख्त जवाब न देना हो तो मौन रहते हैं ताकि उनके काम में से उसका जवाब समझ पड़े। यह नीति बहुत बार तो सभ्यता का रूप धारण करती है। याद करने पर ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं। इस अनुभव का अवलंबन करके मैंने यह वाक्य लिखा है। मानो कि उन्होंने जवाब देने का विचार किया ही है तो मेरा ऊपरवाला वाक्य मुझे बचा लेगा और वाइसराय को भी। अगर वह सचमुच संतोष देना चाहे तो मेरे उस वाक्य के आधार पर मुझे मेरा पत्र वापस लेने को कह सकता है और मुझे वह वापस लेना पड़ेगा। अगर उसका विचार मुझे संतोष देने का न हो तो मेरा यह वाक्य उसे विकट परिस्थिति में से बचा लेगा।"

दोपहर खाने के बाद मीराबहन बापू से कहने लगीं, "आप अभी पत्र न भेजें। २६ जनवरी को स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर भेजें और उपवास की तारीख हमारे यहां ६ महीने पूरे हो जाने पर ९ फरवरी को रखें।"

बापू मान गए। बा से कहने लगे कि अब तो सबका आशीर्वाद मिल गया है। मैंने कहा, "हरगिज नहीं; मगर और कुछ नहीं कर सकते तो थोड़ा समय और मिल सके तो अच्छा है, इस विचार से मीराबहन ने बात की है।" इतने में सरोजिनी नायडू आ गईं। कहने लगीं, "किसी ने आपके उपवास में सम्मति नहीं दी। उपवास करना गलती है। आपको यह नहीं करना चाहिए।"

बापू हँसने लगे।

सरोजिनी नायडू मुझसे कह रही थीं, "मेरी आत्मा कहती है कि बापू को उपवास नहीं करना पड़ेगा। मैंने कहा था न कि भंसाली मरेगा नहीं, वही हुआ।" मैंने कहा, "इस समय भी आपकी अंतरात्मा की यही आवाज निकले, यही प्रार्थना है।"

रात को मीराबहन ने सोने से पहले 'लीड काइंडली लाइट' गाया।

१७ जनवरी '४३

बापू आज गीताजी सिखा रहे थे। बाद में कहने लगे, "तू चित्रों में इतना समय क्यों देती है? तुझे दूसरे कामों से छुट्टी इसीलिए दी थी कि तू प्यारेलाल की मदद करे। तेरे पास दो मुख्य काम हैं: एक तो डॉक्टरी में परिश्रम करना। मैं तुझसे अलौकिक काम चाहता हूं। बा की खांसी क्यों न जावे? 'पुरानी छाती—खांसी की जड़ नहीं जाती'—यह सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता। मालवीयजी, शिवप्रसादजी और कई दूसरों को डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। मगर वैदिक इलाज से वे अच्छे हुए। मुझे वैदिक पर मोह नहीं। मैं उसकी त्रुटियां जानता हूं। मगर तुझे समझना चाहिए कि इस तरह किसी बीमारी को असाध्य मान लेना ठीक नहीं है। बा है, सरोजिनी नायडू हैं—इन्हें तुझे अच्छा करना ही चाहिए और इतनी शक्ति होनी चाहिए कि रोगी को अपना कहा मनवाले और उसे अपनी ओर आकर्षित कर ले। दूसरा काम भाषा का है। भाषा की भी आवश्यकता डॉक्टरी के लिए तो है ही, मगर उससे भी अधिक मेरे काम के लिए है। मैंने तुझे कहा है कि महादेव का काम तुझे करना है। मैं नहीं जानता कि तू कहां तक कर सकेगी। प्यारेलाल तो है;

मगर अकेले के लिए वह काम शायद बहुत हो जावे। तुझे तैयार होना चाहिए। इसीलिए मैंने तुझसे व्याकरण पर पूरा अधिकार पाने को कहा है।"

बा बहुत उदास हैं; उपवास की तलवार सिर पर लटक रही है। शाम को अकेली बगीचे में जा बैठती हैं। मीराबहन समझा रही थीं कि सरकार बापू को अधिक दिन तक उपवास नहीं करने देगी। मगर इस आशा पर हम क्या भरोसा कर सकते हैं।

सुबह भंडारी आये थे। उनसे बापू के लिए थोड़ी किताबें मंगा देने को कहा। उनमें से एक 'ले मिजेराब्ल' है। शाम को आ गई। बापू ने पढ़ना भी शुरू कर दिया।

१८ जनवरी '४३

बापू का आज सोमवार का मौन था।

बापू अपना पत्र और भाई के सुधारोंवाला मसविदा लेकर कुछ समय तक विचार करते रहे। सोमवार के कारण बा को भी आज सिखाना नहीं था, इसलिए दोपहर को जल्दी सो गए। उठे तो कटेली साहब वाइसराय का उत्तर लेकर आये। पत्र अच्छा था। मित्र-भाव का था। पत्र-व्यवहार का रास्ता खोलता था। शायद इस तरह कोई रास्ता निकल सके। सरोजिनी नायडू को बहुत अच्छा लगा। मीराबहन को कुछ कम और मुझे उनसे भी कम। बापू तटस्थ थे। उनका भाव था कि पत्र में शायद कुछ निकले या न निकले।

बापू ने उत्तर लिखना शुरू किया। साढ़े तीन बजे वे आधे घंटे तक रोज ध्यान में बैठते हैं। उत्तर उससे पहले तैयार करके दे दिया। सबने अपनी-अपनी राय दी। रात को बापू उसे फिर से थोड़ी देर तक देखते रहे। कहते थे कि कल उत्तर जाना चाहिए। सुबह पूरा करेंगे।

सोने से पहले मीराबहन ने दो अंग्रेजी भजन गाये—'ओ गॉड अवर हेल्प इन एजेज पास्ट' और 'व्हेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रॉस'। बापू कहने लगे, "बस मुझे तो दूसरे भजन के बराबर और कोई अंग्रेजी भजन लगता ही नहीं है।"

रक्तचाप बहुत बढ़ा था। पौने आठ या साढ़े सात बजे देखा तो २०४/११६ था।

१९ जनवरी '४३

बापू रात अच्छी तरह सो नहीं पाए। सुबह प्रार्थना के बाद भी नहीं सोये। उठकर पत्र तैयार करने लगे। मुझे लिखवाते रहे। सात बजे पत्र पूरा करके नाश्ता किया। घूमने गये। मालिश, स्नानादि के बाद खाना खाकर जल्दी से पत्र की नकल अपने हाथ से तैयार करने लगे। मैं खाना खाकर आई तो एक वाक्य लिख चुके थे। बाकी मैंने लिखवाया।

बापू का मौन अब छूट गया था। मगर दोपहर को आधा घंटा ध्यान में अब भी बैठते हैं। दोपहर को दो-तीन घंटे मौन भी रखना चाहते हैं।

बापू का रक्तचाप सुबह खूब बढ़ा था। शाम तक कम हो गया। कहते थे कि मन शांत है। न तो आशा ही मन में लगाए बैठे हैं, न निराशा की भावना उनके मन में है। भगवान को जो करना होगा, वह होगा—यह उनका भाव है।

२० जनवरी '४३

सुबह की प्रार्थना के समय मैंने बापू से पूछा, "यहां अभी कितने दिन तक प्रार्थना करनी होगी?" कहने लगे, "बहुत दिन तक। मैं तो जितना ही विचार करता हूं, वाइसराय का पत्र उतना ही मुझे खराब लगता है। मेरे आज के पत्र का वह शायद सख्त उत्तर देगा।"

दिन में बापू 'ले मिजेराब्ल' पढ़ते रहे। दोपहर में बा को भूगोल सिखाया और कथा पढ़कर सुनाई। शाम को उन्हें रामायण भी रोज की तरह समझाई। घूमते समय मुझे गीताजी सिखाई, रात को भाई के साथ बातें कीं।

दिन में कलेक्टर और डॉ० शाह आये थे।

२१ जनवरी '४३

दिन में कुछ खास घटना नहीं हुई। बापू ने भाई से कुछ बातें की और कहा कि मुझे डॉक्टरी के अभ्यास पर अधिक समय लगाना चाहिए और

व्याकरण का खूब अभ्यास करना चाहिए। पहला मेरी ख़ातिर और दूसरा बापू के काम की खातिर। भाई मुझे आकर कहने लगे, "ये दोनों चीजें अच्छी तरह सीख लो। लिखने का भी खूब अभ्यास करो। बाहर जाकर यह अभ्यास करने का मौका नहीं मिलनेवाला।"

सर्दी काफी थी। दोपहर को बापू बाहर धूप में बैठने गये।

२२ जनवरी '४३

आज भी खूब सर्दी थी। दोपहर में सब लोग धूप में सोये।

दोपहर को थोड़ी देर तक व्याकरण का अभ्यास किया। बा को थोड़ा-सा अनुवाद पढ़कर सुनाया। साढ़े चार बज गए।

आज बैडमिंटन और पिंग-पौंग की जाली लगवाने की बात चल रही थी। सरोजिनी नायडू ने मुझ से पूछा तो मैंने कहा, "विचार तो अच्छा है, मगर खेलनेवाले कितने हैं?" वे कहने लगीं, "तुम, प्यारेलाल, मीरा, बापू और बा। बापू अब उपन्यास पढ़ते हैं, तो खेलेंगे क्यों नहीं!" सब हँसने लगे।

२३ जनवरी '४३

घूमते समय बापू पूछने लगे, "उपन्यास का साहित्य में क्या स्थान है?" भाई कहने लगे, "साहित्य के तीन विभाग हैं: कविता, नाटक और काल्पनिक उपन्यास-कथा। सो उपन्यास का बड़ा स्थान है।" बापू कहने लगे, "कैसी विचित्र बात है! काल्पनिक चीजों को तो बड़ा स्थान दिया है और जीवन की असली चीजों को स्थान ही नहीं दिया!" भाई बचाव करने लगे, "उपन्यासों में आदर्श व्यक्त किये जाते हैं। उनका आधार अनुभव पर होता है। स्टो के 'टामकाका की कुटिया' नामक उपन्यास ने क्रांति कराई और परिणामस्वरुप गुलामी खत्म हुई। अप्टन सिंक्लेयर के 'जंगल' उपन्यास के कारण नया कानून बना। उपन्यासों के बहुत उपयोग हैं।"

बापू बोले, "सदुपयोग किस चीज का नहीं हो सकता? मगर देखना तो यह चाहिए कि सर्वांश में कोई चीज फायदा करती है या नुकसान। मेरी समझ में तो उपन्यासों ने बहुत नुकसान किया है।"

भाई ने कहा, "मगर तुलसीकृत रामायण-जैसा धर्मग्रंथ भी तो काल्पनिक

ही है न ?" बापू कहने लगे, "इस तरह की दलील में मैं नहीं पड़ना चाहता। यह तो वितंडावाद हुआ। तुलसीदास को कोई उपन्यास के तौर पर नहीं पढ़ता। मैं तो सामान्य उपन्यासों का स्थान समझने के लिए बात कर रहा था।"

बीच में 'टामकाका की कुटिया की बात होते समय लिंचिंग'[१] की प्रथा पर चर्चा छिड़ी। बापू ने समझाया और कहने लगे, "मुझे अफ्रीका में लिंच ही करने लगे थे न! ईश्वर ने बचा लिया। आखिर में चेंबरलेन ने तार दिया कि मुझ पर हमला करनेवालों को सजा मिलनी ही चाहिए। मुझे बुलाकर वजीर ने पूछा तो मैंने कहा कि मुझे कोई शिकायत नहीं है। उस दिन से उसके मन में और सारे दक्षिण अफ्रीका में मेरी कीमत बढ़ी।"

भाई ने बताया कि मालिश के समय अपने उपवास के सिलसिले में बापू ने रॉबर्ट ब्राउनिंग की कविता 'रेबी बेन एज्रा' की इस कड़ी 'Heaven's success found or earth's failure'[२] को दोहराते हुए अपने उपवास की भावना को व्यक्त किया; "जगत जिसे सफलता कहता है, उसकी मैंने जीवन में कभी लालसा नहीं रखी। जगत की निंदा के डर से मैंने कभी अपने ध्येय को नहीं छोड़ा।"

२४ जनवरी '४३

सुबह घूमते समय बापू ने सलाह दी कि गीता-उच्चारण की जगह अब गीताजी के दो-चार श्लोकों का रोज व्याकरण-सहित अर्थ करना ज्यादा अच्छा होगा। बीस मिनट में चार श्लोक हुए। भाई ने पूछा, "'प्रसादमधिगच्छति' में 'प्रसाद' का क्या अर्थ करते हैं?" मैंने उत्तर

---

१. जनसमुदाय का आवेश में आकर बगैर कानूनी कार्रवाई के किसी व्यक्ति को जंगली सजा देने की अमेरिका आदि प्रदेशों में प्रचलित प्रथा। 'लिंच' नामक न्यायाधीश के नाम पर यह शब्द निकला। उसके बारे में कहा जाता है कि वह फांसी पर अभियुक्त को चढ़ाने के बाद फैसला सुनाया करता था।

२. चाहिए या तो वह सफलता जो ईश्वर की कसौटी पर खरी उतरे, नहीं तो सांसारिक हार।

दिया, "ईश्वर का प्रसाद।" बापू बोले, "हां, ठीक है।" भाई कहने लगे, "इन श्लोकों में तो पातंजल सूत्र को दोहराया गया है। इसलिए प्रसाद का जो अर्थ पतंजलि ने किया है, वही लेना होगा। 'प्रसाद' अर्थात् मन की प्रशांति (Serenity, limpidity)।"

भाई को लगा कि सांख्य का हवाला देने में गलती हुई है, मगर बापू ने वात आगे चलाई। बोले, "पतंजलि का सांख्य के साथ संबंध नहीं है। फिर गीता के दूसरे अध्याय को सांख्य योग कहा तो है; लेकिन गीताकार ने सबका समन्वय किया है। तिलक महाराज ने तो इस बारे में वहुत लिखा हैं। 'योग' शब्द पर ही एक वड़ा अध्याय लिखा है। ईश्वर-कृपा से मन की प्रसन्नता प्राप्त होती है। प्रसन्नता से दुःख का नाश होता है। अन्यथा हो नहीं सकता। ईश्वर का स्थान न हो तो अंतिम श्लोक में 'ब्राह्मी स्थिति' का उल्लेख क्यों हो? ब्रह्म से निकली 'ब्राह्मी स्थिति', और ब्रह्म ईश्वर नहीं तो क्या है?"

शाम को घूमते समय भी गीताजी के चार श्लोकों का बापूजी के साथ अध्ययन किया।

२५ जनवरी '४३

कल स्वतंत्रता-दिन है। उसके लिए 'वंदेमातरम्', 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' और 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा'—ये गीत तैयार करने थे। 'वंदेमातरम्' का बाकी पाठ तो याद था; मगर 'सुखदां वरदां..' पर आकर स्वर बिगड़ जाता था। इसे सुधारने में मुझे करीव एक घंटा लगा। 'हिंदोस्तां हमारा' के दो-तीन स्वर हैं, मगर बापू को एक प्रिय है। उसे याद करने में समय लगा। उसका भी आधा तो मुझे आता था; परंतु दूसरे आधे को ठीक करने में काफी मेहनत करनी पड़ी। 'वंदेमातरम्' के लिए मीराबहन, भाई और मैं—तीनों साथ वैठे। पीछे मैं अकेली अभ्यास करती रही। रात में प्रार्थना के वाद वापू का मौन छूटने पर उनको तीनों गान सुनाए। उन्होंने दोषों को सुधार दिया। इतने में सवा आठ वज गए। बापू का काम करके थोड़ी देर भाई के साथ वैठकर पढ़ती रही। करीब पौने दस या दस बजे सो गई।

: ३७ :

जेल में पहला स्वतंत्रता-दिवस

२६ जनवरी '४३

आज स्वतंत्रता-दिवस मनाने के लिए सरोजिनी नायडू ने परसों बापू को 'स्वाधीनता की प्रतिज्ञा' लिखने को कहा था। कल उन्होंने मौन में वह लिखी। बहुत सुंदर छोटी-सी प्रतिज्ञा तैयार हुई। सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "यह संपूर्ण है। इस प्रतिज्ञा को मैं अंतर्प्रेरणा का परिणाम मानती हूं। यह सीधी हृदय से निकली है।"

बापू कल रात उसका अनुवाद करने बैठ रहे थे। मैंने कहा, "आप सो जावें। मैं सुबह ही आपको अनुवाद दे दूंगी। आप उसे दुरुस्त कर लीजिए।" मगर सुबह तो घूमने के बाद इतने कामों में घिरती गई कि उसे भूल गई।

बापू का उपवास था। उन्होंने दो बार—सुबह और दोपहर—गुड़, गरम पानी और मौसंमी का रस लिया। मैंने चाय ली। भाई ने पूरा उपवास किया—केवल पानी लिया। सरोजिनी नायडू और कटेली साहब के लिए मटर का पुलाव, शलजम का साग और बेसन की मिठाई बनाई। सब बनाकर आई, बापू के पांव मले तब उन्होंने अनुवाद मांगा। मैंने कहा, "पांच मिनट में लिखकर देती हूं।" बापू पांच मिनट में ही सोकर उठ गए। मैंने अनुवाद तैयार कर लिया था। उसे देखने लगे। जहां सुधार की आवश्यकता थी, सुधारा। मैंने अंग्रेजी पाठ सामने रखकर अनुवाद नहीं किया, इसीलिए कहीं-कहीं शब्द छूट गए थे। अंग्रेजी प्रतिज्ञा का अनुवाद इस प्रकार है:

"हिंदुस्तान हर माने में सत्य और अहिंसा के जरिये पूरी तौर पर आजाद हो, यह मेरा तात्कालिक उद्देश्य है और बरसों से रहा है। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए मैं आज स्वतंत्रता-दिन की इस तेरहवीं बरसी के दिन फिर से प्रण करता हूं कि जबतक हिंदुस्तान अपने उद्देश्य को न पा ले तबतक न मैं खुद चैन लूंगा, न जिन पर मेरा कुछ भी असर है,

उन्हें चैन लेने दूंगा। मेरी यह प्रतिज्ञा सफल हो, इसके लिए मैं उस महान अदृश्य दिव्य शक्ति से, जिसे हम गॉड, अल्लाह या परमात्मा रूपी परिचित नामों से पुकारते हैं, सहायता की प्रार्थना करता हूं।

२६ जनवरी, १९४३।"

झंडा बनाने के लिए हल्दी और सोडा डालकर नारंगी रंग तैयार किया। हरा पेस्टल लगाकर बनाया। सफेद टुकड़े पर पेंसिल से मीराबहन ने चर्खा बनाया। बगीचे में आम के पेड़ के नीचे छोटा-सा स्तंभ गाड़ा। उस पर ठीक तरह से मीराबहन ने झंडा बांधा। झंडा भी उन्होंने ही तैयार किया था।

सभा की अध्यक्षता बापू ने सरोजिनी नायडू को सौंपी। वे कहने लगीं, "आपके रहते यह स्थान कौन ले सकता है?" मगर अंत में मान गईं।

छः बजे बापू घूमकर लौटे। सरोजिनी नायडू ने उनसे झंडाभिवादन करवाया। पहले हमने 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' गाया, फिर बापू ने झंडा फहराया। झंडा-वंदन गीत गाया गया। स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा दोहराई गई और फिर 'वंदेमातरम्' का गायन हुआ। खासा अच्छा दृश्य बन गया। सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "लाखों आदमी होते तो भी करना तो यही था न!" भाई बोले, "जरा इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगते!" वे कहने लगीं, "जबतक बापू हैं तबतक इंकलाब तो जिंदाबाद है ही।"

प्रार्थना में 'वंदौं श्री हरि-पद सुखदाई' गाया। आज रात को मैं जल्दी सो गई।

रात में बापू कहने लगे, "मैंने आज विचार किया था कि सब मिलकर कातें; मगर सब काम में थे, इसलिए कहा नहीं।" मैंने कहा, "विचार तो मुझे भी आया था, मगर मैं चुप रही।" मीराबहन कहने लगीं, "अभी कातेंगे।" मगर आठ बज चुके थे। बापू को सोने को बहुत देर हो जाती, इसलिए कल मिलकर कातने का निश्चय किया। बापू को यह ठीक लगा। कल ढाई से तीन बजे तक कातने का प्रोग्राम बना। बापू बोले, "मैंने तो

कहा है न कि सूत के धागे से स्वराज्य बंधा है; लेकिन उसे माननेवाले बहुत कम हैं। पर हम तो कातें।"

: ३८ :

उपवास के निश्चय से चिंता

२७ जनवरी '४३

कलेक्टर के पूछने से पहले ही बापू ने कह दिया, "हमेशा की तरह आज भी कोई शिकायत नहीं है।"

ढाई से तीन तक सबने मिलकर काता। कातते समय मैं सोचती थी कि रोज कातें तो कितना अच्छा हो। कातना पूरा होने पर बापू ने भी ऐसा ही विचार प्रकट किया, "हम लोग सिवा प्रार्थना के कुछ भी मिलकर नहीं करते। स्वराज्य एक के श्रम से नहीं; सबके श्रम से आनेवाला है। रोज मौन रूप होकर इसी प्रकार कातना अच्छा होगा।"

२८ जनवरी '४३

दोपहर में खाने के बाद बापू बा को 'बलिदान'[1] पढ़कर सुना रहे थे। उसमें राजमहल में जनसभा भरने का वर्णन सुनाते समय कहने लगे, "सत्ता पाने के लिए हमें बहुत कष्ट सहने होंगे, कुर्बानियां करनी होंगी। तुम सब लोग आराम की जिंदगी बसर करना चाहो तो सत्ता कैसे अपने हाथ आ सकती है? उपवास तो एक छोटी चीज है। हजारों-लाखों आदमी इस तरह कष्ट सहन करें तो कुछ हो सकता है।" बा ने बहुत शंका-भरे ढंग से सिर हिला दिया।

सोकर उठे। पानी पी रहे थे कि इतने में भाई वाइसराय का पत्र लेकर आये। चिकनी-चुपड़ी बातें थीं, कठोर न थीं। बापू इसके लिए

---

१. विक्टर ह्यूगो के 'नाइंटी थ्री' का हिंदी अनुवाद। अनुवादक श्री गणेशशंकर विद्यार्थी।

पहले से ही तैयार थे। बा को बताया कि ऐसा उत्तर आया है। वे काफी घबरा गईं। "अब क्या होगा?"—बार-बार यही कहने लगीं।

ढाई से तीन बजे तक सबने (सरोजिनी नायडू को छोड़कर) मिलकर काता।

शाम को बापू वाइसराय को उत्तर लिखने लगे। आठ बजे तैयार करके सबको पढ़ सुनाया और कहा कि जिसे जो कहना हो, लिखकर सुबह ही दे दे। कल पत्र जाना चाहिए।

उन लोगों ने उसी समय नकल पूरी की थी। करीब एक घंटा लिया था। मीराबहन अपनी नकल लेकर अलग जा बैठीं। मैंने बापूवाली पहली नकल ले ली। भाई अपनी की हुई नकल लेकर बैठ गए। मुझे जो कुछ सूझा, वह भाई को बता कर मैं तो ग्यारह बजे से पहले सोने चली गई। बारह बजे बापू की पेशाब की बोतल साफ करने उठी तो मीराबहन और भाई बैठे थे। मैंने भाई से पूछा तो कहने लगे, "दो बजे तक सोऊंगा।" मगर बाद में पता लगा कि दो बजे सरोजिनी नायडू गुसलखाने गई थीं, उस समय तक भाई लिख रहे थे। वे उनसे कुछ बातें करती रहीं, फिर दो ताजे अंजीर उनके पास रख आईं और पूछने लगीं, "कुछ गरम चीज पीने को चाहिए?" उन्हें नहीं चाहिए थी। करीब तीन बजे वे सोये। मीराबहन बारह-साढ़े बारह तक सो गई थीं।

बापू अच्छी तरह सोये। मानो उन्हें कोई चिंता ही न हो।

२९ जनवरी '४३

प्रार्थना के लिए आज पांच बजे उठे। प्रार्थना के बाद बापू भाई और मीराबहन के मतों को लेकर अपने पत्र सहित बैठे। साढ़े दस-पौने ग्यारह बजे तक उन्होंने पूरा कर दिया।

खाने को जाने से पहले भाई उसे उठाकर देखने लगे। बापू कहने लगे, "यह पत्र मेरा नहीं, तुम्हारा है। तुम्हारे पत्र के सब फेरफार मैंने ले लिये हैं। भाषा मेरी है, तर्ज मेरा है। इस भूमिका के साथ अब यह पत्र पढ़ो और कहो कि क्या तुम इसमें अपना पत्र पाते हो?" पढ़ कर भाई कहने लगे, "पाता हूं; मगर मुझे अभी और फेरफार चाहिए।"

भाई और मीराबहन आदि खाना खाकर आये और पत्र देखने लगे। बापू ने लिखवाया। दोनों ने एक-एक नकल कर ली। मैं तीसरी नकल खादी कागज (हाथ बने कागज) पर करती गई। उन लोगों को लगता था कि अपने हाथ की नकल हो तो वे अधिक विचार कर सकते हैं। कोई खास परिवर्तन करना तो था नहीं। छोटी-मोटी तब्दीलियां की गईं। आज बापू ने पत्र लिखा, उसमें एक आवश्यक चीज लिखना भूल गए थे। वह यह थी कि, "कांग्रेस की तैयारी है कि भले सरकार जिन्ना साहब को वजारत कायम करने को कहे।" यह बात कल के पत्र में थी—आज छूट गई। भाई ने उसकी तरफ उनका ध्यान खींचा। मेरे हाथ की खादी कागजवाली नकल बापू भेज रहे थे, तो उसी पर उन्होंने नीचे 'पुनश्च' करके छूटे हुए वाक्य को लिख दिया। छोटे-मोटे सुधारों के कारण और जल्दी में लिखे जाने के कारण इस नकल में कुछ काटे हुए शब्द थे; मगर नकल बापू ने भेजी। दूसरी नकल तैयार करने का समय न था। बापू आज की डाक खोना नहीं चाहते थे। कहने लगे, "यह नकल पुनश्च और सुधारों के साथ जाय। वे लोग तो जानते ही हैं कि मैं टॉल्स्टॉय का अनुयायी हूं। टॉल्स्टॉय तो सुधारों समेत ही अपने लेख भेज दिया करते थे।"

पत्र जाने के बाद बापू बात करने लगे कि अगर जिन्ना साहब की वजारत वाली बात रह जाती तो उन्हें बड़ा अफसोस होता। भाई ने याद दिलाया कि इसी प्रकार १९३० में दांडी मार्च के अल्टीमेटम वाले पत्र में नमक का कर रद्द करनेवाला पैरा टाइप करने में रह गया था। अंगद (रेजिनल्ड रेनाल्ड्स) वह मुहरबंद लिफाफा लेकर जा रहा था, मगर दिल्ली की गाड़ी चूक गई सो स्टेशन से वापिस आया। वैसे-का-वैसा मुहरबंद लिफाफा भाई के हाथ में दे दिया। रात को जाने कैसे भाई को अंतर्प्रेरणा हुई और मुहर को तोड़ डाला। अंदर से पत्र देखा तो नमक-करवाली कलम न थी। दूसरे दिन नई नकल तैयार करके भेजी। इस सारी घटना में ईश्वर का हाथ था। परिणाम भी शुभ ही आया।

३० जनवरी '४३

आज शनिवार है, महादेवभाई की समाधि पर सरोजिनी नायडू

और मीराबहन गईं। फूल बहुत थे। कल रात वाले भी अभी सूखे नहीं थे। इसलिए जिन फूलों का क्रॉस बनाते हैं, उन्हें क्रॉस के सिर पर ज्योतिर्बिम्ब (Halo) के रूप में सजा दिया।

सरोजिनी नायडू की तबीयत आज अच्छी है। बा की भी अच्छी है। बा के पास आज कनु का पत्र आया है इसलिए बहुत खुश हैं। बा का रक्तचाप भी आज बहुत दिनों के बाद शाम को १६२/१०० आया।

आज मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा है। विविध विचार उठा करते हैं। विचार आते रहे कि कैसे लोग जेल में घबराते हैं और पागल से भी बन जाते हैं।

३१ जनवरी '४३

सरोजिनी नायडू का वजन बराबर कम हो रहा है। कमजोर होती जा रही हैं। ६-७ दस्त रोज हो ही जाते हैं। आंतों की पुरानी पेचिश (Chronic amoebic dysentery) है और उसके साथ उनका दिल भी कमजोर है। इसलिए आमतौर पर इस रोग में जो दवा दी जाती है, उसे देते हुए डर लगता है। थोड़ा घूमें तो शाम को पांव में सूजन आ जाती है। जिगर दबाने से दुखता है।

मैंने निश्चय किया कि मुझे कह देना चाहिए कि इन्हें अभी छोड़ दो। यहां और बोझ आनेवाला है। ऐसा न हो कि उसमें ये और अधिक बीमार पड़ जायं। कमजोरी की हालत में बीमार पड़ जायंगी तो भारी खतरा उठाना पड़ेगा। सो मैंने कटेली साहब से कहा। बाद में भंडारी और डॉ० शाह आये, उनसे भी कहा। डॉ० शाह भी कहने लगे कि उनका स्वतंत्र मत तो सरोजिनी नायडू को बिना इलाज के छोड़ देना था; क्योंकि उनका इलाज आसान न था। सरोजिनी नायडू भंडारी और डॉ० शाह पर बहुत नाराज हुईं। कहने लगीं, "मैं तो अच्छी हूं। तुम लोगों को आज की परिस्थिति में मुझे छोड़ने की बात नहीं करनी चाहिए।" मगर जब दवा की बात आई तो कहने लगीं, "मैं दवा नहीं खाऊंगी, बिस्तर पर नहीं पड़ूंगी और न खास खुराक ही खाऊंगी।"

भंडारी बापू से कहने लगे कि उन्हें कटेली साहब ने उपवास की

बात बताई थी। उन्हें बहुत चिंता हो रही थी। बापू कहने लगे, "यह तो कटेली साहब ने आपको घरेलू तौर से खबर दी है। मगर जो हो आप चिंता क्यों करते हैं? आपको तो सब आदेश ऊपर से ही मिलेंगे। मेरे जैसा आदमी इन लोगों के झूठे इल्जामों का और क्या जवाब दे सकता है? मैंने उनसे कहा है कि वे इन इल्जामों के लिए सबूत दें। मैं जो कहता हूं, सब साबित करने को तैयार हूं। मगर वे लोग सबूत नहीं दे सकते। तब मैं लाचार हो जाता हूं—देश भर का दुःख, भुखमरी आदि मैं चुपचाप कहां तक देख सकता हूं?"

१ फरवरी '४३

बापू का आज मौन था। मैंने महादेवभाई की बाहर बिखरी हुई चीजों को एकत्रित करके बंद कर दिया। भाई की सलाह थी कि उनके कपड़े उनके बिस्तर में डालकर उनका बक्स मैं इस्तेमाल कर लूं। बापू को भी वही पसंद था। सो उनके कपड़े उनके बिस्तर में बांध दिए। बक्स की चीजें ठीक कर रही थी कि इतने में सरोजिनी नायडू आईं और कहने लगीं, "तुम्हें ठीक तरह खाना चाहिए और तंदुरुस्त रहना चाहिए; क्योंकि उपवास में बापू की संभाल की जिम्मेदारी तुम्हारी होगी। हम सब मदद करेंगे; मगर तुम डॉक्टर हो। सब लोग तुम्हें ही पूछेंगे।"

मैंने कहा, "आप मेरी इतनी चिंता करती हैं, उसके लिए मैं आपकी आभारी हूं।" ढाई से तीन बजे तक मिलकर काता। दोपहर को उन आवश्यक चीजों की सूची बनाती रही जो उपवास में काम आवेंगी।

दिन में सर्दी कुछ कम थी; मगर रात को फिर बढ़ गई थी। बा की तबीयत कल शाम को भी और आज भी अच्छी न थी। बुखार-सा लगता था; मगर मापने पर बुखार न निकला। कल तो हृदय का दर्द उठा था। बापू से भी ज्यादा चिंता बा के लिए होती है। वे बापू का उपवास कैसे सहन करेंगी?

शाम को भाई की करीब तीस किताबें आईं। चार महीने पहले मंगाई थीं और आज ऐसे मौके पर आई हैं। भाई मजाक कर रहे थे, "मेरा

सामान तभी बढ़ने लगता है जब मैं छूटने पर आ जाता हूं। यह शुभ चिह्न है।"

२ फरवरी '४३

आज सवा दो से पौने तीन बजे तक दोपहर में कातना रखा। तीन बजे सरोजिनी नायडू को बापू से बातें करनी थीं। उसके लिए उन्होंने एक घंटा मांगा था। बापू ने ध्यान में बैठकर माला भी सवा दो से पहले ही फेर ली थी।

घूमने के बाद कटेली साहब ने बापू से हमारे नये बैडमिंटन कोर्ट का उद्घाटन कराया। सरोजिनी नायडू और बापू के हाथ में रैकेट और चिड़िया दी। बापू ने तो दो-चार बार कोशिश करके चिड़िया जाली के पार भेज दी; पर सरोजिनी नायडू ने ऐसे ही छोड़ दी। बाद में मीराबहन, भाई और कटेली साहब कुछ समय तक खेलते रहे। कटेली साहब के घुटने में मोच आ गई। रात को खूब दर्द बढ़ा।

३ फरवरी '४३

दिन में कलेक्टर के साथ डॉ० शाह आये। उपवासवाली आवश्यक चीजों की सूची उन्हें दी ताकि वे देख लें कि वे चीजें कहां से मंगाई जा सकती हैं।

बापू ने आज 'ले मिजेराब्ल' समाप्त की। उन्हें किताब अच्छी लगी है। उनको सबसे हृदयस्पर्शी स्थल वह लगा जहां यां वालयां (Jean Valjean) ने जेवर्ट (Javert) को छोड़ा है।

४ फरवरी '४३

आज सर्दी कुछ कम हुई। वाइसराय का उत्तर यदि जल्दी-से-जल्दी आना था तो आज आ जाना चाहिए था; मगर नहीं आया। मीरा-बहन कह रही थीं, "यह अच्छी निशानी है। वे लोग विचारते होंगे कि क्या करना चाहिए।" बा ने कहा, "नहीं, वाइसराय दिल्ली में था ही नहीं—ऐसा मैंने अखबार में पढ़ा था।" ज्यों-ज्यों उपवास की तलवार निकट आती जाती है, वातावरण में उदासी भरती जाती है। ऐसे वातावरण में भला कोई छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान दे सकता

है, यह समझ में नहीं आता। मगर बापू सबसे ऐसी आशा करते हैं।

बा ने दो दिन से मेरे साथ गीताजी पढ़ना फिर शुरू किया है। उनकी तबीयत अच्छी नहीं है। चिंता के बोझ के कारण वे एकदम कमजोर हो गई हैं। बगीचे में जाकर बैठने की भी उनमें हिम्मत नहीं। बापू मानते हैं कि समय आने पर वे बहादुरी दिखावेंगी, मगर भगवान जाने क्या होगा! मुझे तो बापू से भी अधिक बा के बारे में चिंता हो रही है।

घूमते समय बापू भाई से कहने लगे, "मैं जो कुछ कहूं, वह यदि सचमुच वजनदार लगे तो नोट करने के बजाय उसे पचाकर अपने जीवन में उतार लेना चाहिए।"

५ फरवरी '४३

घूमते समय मीराबहन पक्षियों की बातें करने लगीं। उन्हें पक्षियों और पौधों का बड़ा शौक है। उनको खूब ध्यान से देखती रहती हैं और अनेक बातें जो हम लोग नहीं परख पाते हैं, वे जान लेती हैं। बापू एक दिन कह रहे थे, "मीराबहन तो सचमुच प्रकृति की पुजारिन है। पक्षियों, पौधों और जानवरों के बारे में जो पूछना हो उससे पूछो। इन चीजों का वे अभ्यास करती हैं और उसमें से रस के घूंट लेती हैं।"

दोपहर में ढाई से तीन बजेतक काता। बापू पहले की तरह फिर रामायण में काट-छांट करने लगे हैं। कल काट-छांट द्वारा निकाला हुआ भाग ही पढ़ा। तुलसीदास के रामजी की बरात के लंबे-लंबे वर्णन सुनते-सुनते बा थक गई थीं। इसीलिए बापू ने उनमें में बहुत-से अंश छोड़ दिये हैं।

शाम को घूमते समय मैंने बापू से पूछा, "आप उपवास से क्या आशा रखते हैं?" बापू कहने लगे, "जो काम शुद्ध भाव से किया जाता है, उसका परिणाम अशुभ नहीं हो सकता है। जो होगा, अच्छा ही होगा। बात इतनी है कि मैं राजकोट की तरह कोई गलती न कर बैठूं। वहां मैंने वाइसराय को अपने और ठाकुर के बीच चलती हुई लड़ाई में ईश्वर का स्थान दे दिया था। वह भारी भूल थी। इसीलिए मैंने वहां सब मिली हुई चीजें फेंक दीं। वह भूल न करता तो राजकोट के उपवास का अद्‌भुत
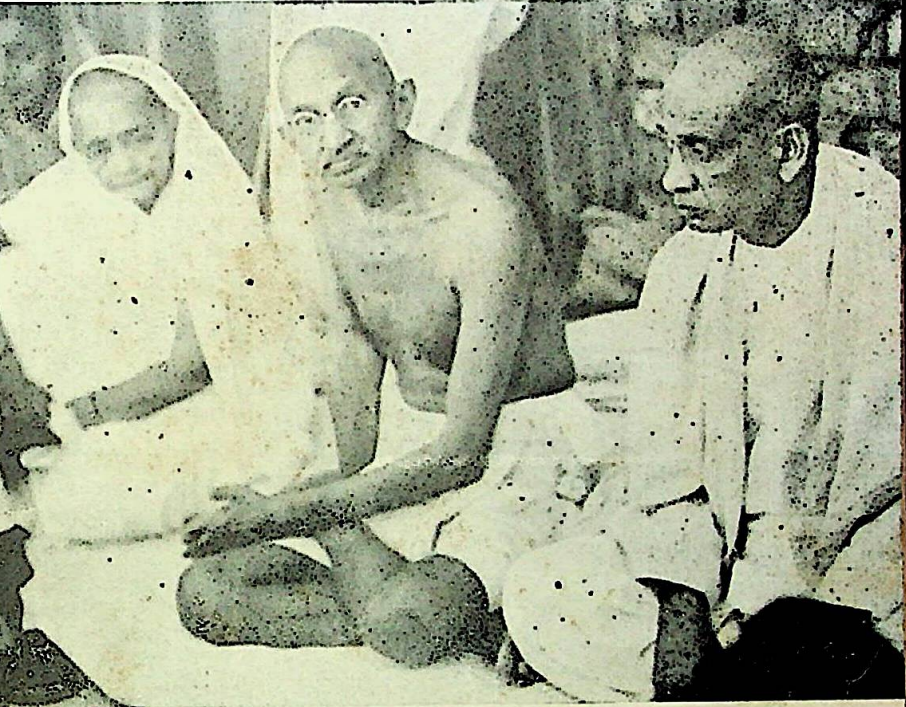
ारत छोड़ो' आंदोलन के
मूल मंत्रदाता
ाएं-दांए : बा और सरदार)

कांग्रेस महासमिति के
८ अगस्त १९४२ के
ऐतिहासिक अधिवेशन में :
महादेवभाई बापू के साथ
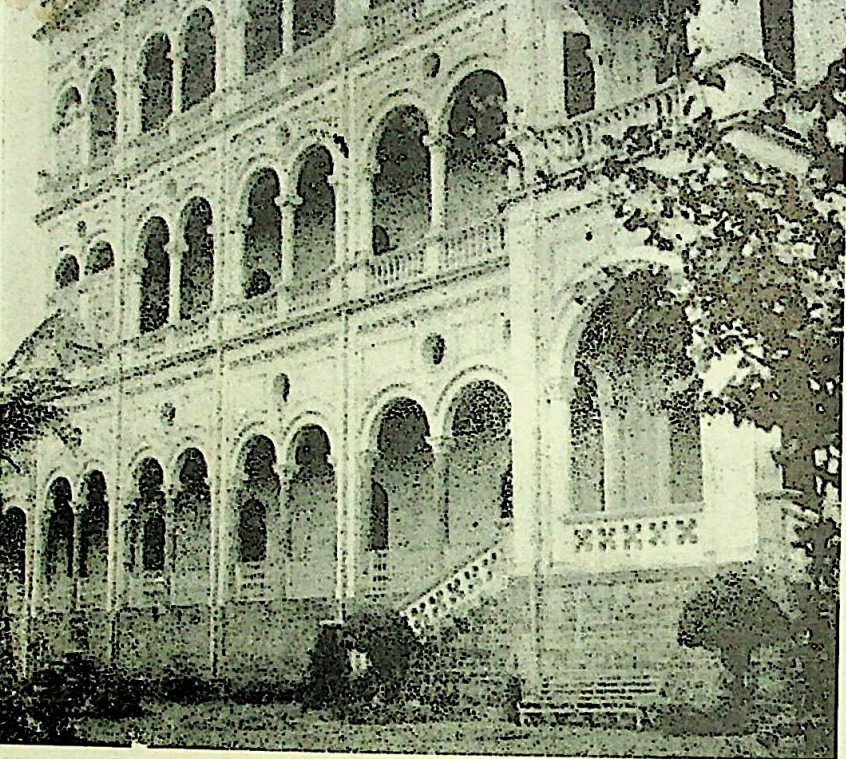
आगाखां महल बंदी-गृह बना
(दांई ओर से चौथे कमरे में बापू २१ मास नजरबंद रहे)
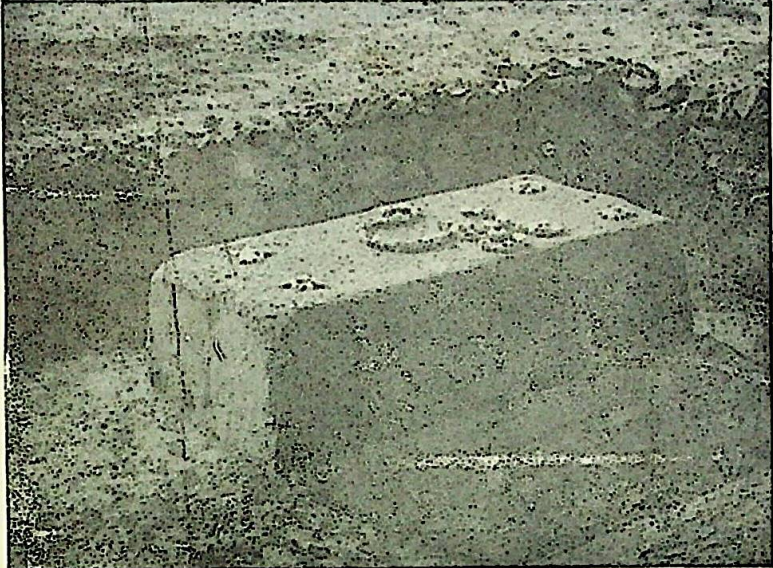
जेल में
पहली
आहुति
महादेवभा
की समा

प्यारेलाल भाई ने
काम संभाला

अग्नि परीक्षा
बापू का इक्कीस दिन का उपवास

उपवास की समाप्ति

दूसरी आहुति

बा भी गईं
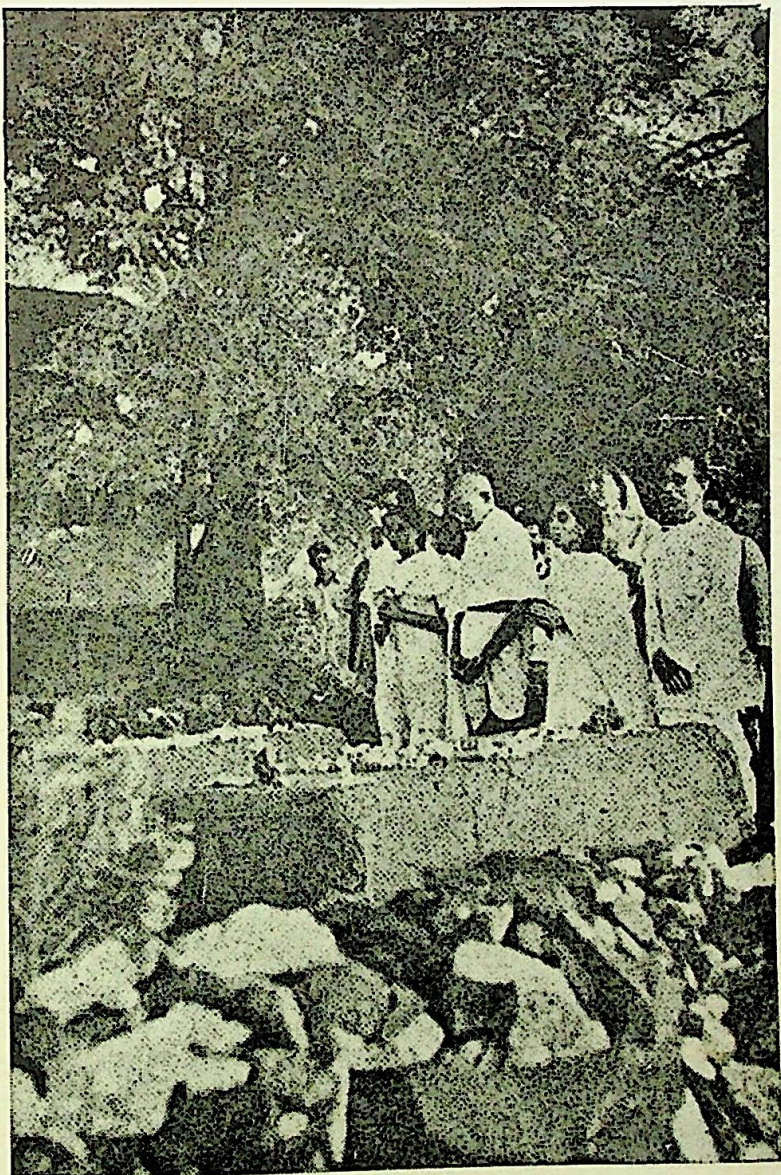
बंदीवास में अंतिम प्रार्थना

आखिर आगाखां महल का फाटक खुलकर ही रहा

असर होने वाला था। उपवास में मनुष्य का मस्तिष्क कहां तक साफ रहता है, कहा नहीं जा सकता। पता नहीं कि ईश्वर ने क्या सोचा है? मैं लोप भी हो जाऊं तो वह अशुभ परिणाम नहीं कहा जा सकता। इसका अर्थ यह है कि भगवान दूसरी तरह से काम करना चाहता है। हमें ईश्वर के कामों की आलोचना करने का अधिकार नहीं।"

६ फरवरी '४३

आज शनिवार है। सुवह सरोजिनी नायडू समाधि पर आईं। वापू कह रहे थे कि उनकी नियमितता अद्भुत है। कुछ भी हो। वे शनिवार को नहीं चूकती हैं।

वापू ने वाइविल के 'न्यू टेस्टामेंट' का मफेटवाला अनुवाद मंगाया है। मझसे कह रहे थे, "शाम को 'न्यू टेस्टामेंट' पढ़ना। तू वाइविल लेकर वैठेगी, मैं अनुवाद हाथ में रखूंगा। 'ओल्ड टेस्टामेंट' अव अपने-आप पढ़ना।" मगर शाम को पहले तो उन्होंने मुझे खेलने भेज दिया। पीछे रामायण की काट-छांट दिखाकर मुझसे दूसरी दो रामायणों में निशान लगाने को कहा। उसमें सारा समय चला गया।

वाइसराय का उत्तर आज भी नहीं आया। शाम को घूमते समय वापू कहने लगे, "शायद उत्तर भेजें ही न। उत्तर की जगह उन्हें जो कुछ करना होगा, उसकी सूचना सीधी भंडारी इत्यादि के पास भेज देंगे।" भाई से कहने लगे, "मान लो, इस उपवास के कारण मैं लोप हो जाऊं तो तुम लोगों से मैं क्या आशा रखूंगा, यह समझ लो। महादेव की मैं भाट की तरह स्तुति करता हूं, मगर मेरा मन उसकी शिकायत भी करता है। उसकी मिसाल संपूर्ण या आदर्श नहीं मानना चाहिए। वह इस विचार का जप करते-करते चला गया कि 'मैं बापू के वाद क्या कर सकता हूं? वापू से पहले चला जाऊं तो अच्छा है'। मगर उसे तो कहना चाहिए था कि 'नहीं, मुझे तो जिंदा रहना है और वापू का काम करना है'। यह दृढ़ संकल्प उसे मरने से रोक भी लेता। मैं अगर इस उपवास में लोप हो जाऊं तो मैं अपना संदेश अधूरा छोड़ जाऊंगा। सत्याग्रह के विज्ञान को मैं पूरी तरह देश के सामने अभी नहीं रख सका। मेरे बाद मेरा संदेश

जनता तक कौन पहुंचावेगा ? जो लोग मेरे साथ रहे ही नहीं, मुझे जानते ही नहीं, वे लोग यह काम करेंगे या तुम लोग ? मैं मानता हूं कि वह तुम्हारा काम है। यह कहना कि हम क्या कर सकते हैं, उचित नहीं। ईश्वर पर श्रद्धा रखोगे तो वह तुम्हें शक्ति देगा कि तुम मेरे संदेश को कैसे पूरा करो। मेरा कहना है कि जैसे मैंने किया है, जो सिद्धांत मैंने सबके सामने रखे हैं, जिन पर मैं आचरण करता हूं, उन सबको तुम लोग अपने जीवन में धारण करो। तुम्हारा मार्ग अपने-आप तुम्हारे सामने खुलता जावेगा। तुमने एक बार पूछा था कि सत्याग्रही जड़वत क्यों लगते हैं। मैंने उस दिन जो उत्तर दिया था, उसे स्मरण रखो। मेरे बाद वे जड़वत नहीं रहेंगे। जबतक कोई रास्ता बतानेवाला होता है तो सभी उसकी ओर देखते हैं और जब वह नहीं होता तो वे अपने-आप अपने पैरों पर खड़े होते हैं। सो सब हमारे लोग अपने-आप अपने पांव पर खड़े होंगे तो भगवान उन्हें अगला कदम सुझा देगा। आज से उसका विचार भी नहीं करना चाहिए।"

: ३९ :

वाइसराय का उत्तर

७ फरवरी '४३

आज दस बजे डॉ० शाह आये। मैं उनसे बात करने को निकली तो सामने से कटेली साहब आ रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा, "आपको नीचे उतरने की इजाजत किसने दी ?" हँसकर पूछने लगे, "बापू कहां हैं ?" बापू मालिश करवा रहे थे। वहां जाकर मि० कटेली ने उन्हें एक बड़ा और एक छोटा लिफाफा दिया। बताया कि कल रात दस बजे एक एलची बम्बई से आया था । वह यह पत्र लाया था और आज सुबह ११ बजे उन्हें देने को कहा था। कटेली साहब ११ बजे के करीब बापू को पत्र दे गए। मैंने वह पढ़ कर बापू को सुनाया। वाइसराय

का उत्तर वहुत खराव था, गुस्से से भरा था। छोटे लिफाफे में लेथवेट का पत्र था। उसने पत्र-व्यवहार छापने के वारे में लिखा था। कटेली साहव ने कहा था कि उत्तर भेजना हो तो खास एलची के द्वारा भेजने का हुक्म है। गाड़ी दोपहर दो वजे और रात को आठ वजे जाती थी। बापू ने दो वजे वाली गाड़ी से जाने के लिए एलची को तैयार रखने को कहा। खाना खाकर भाई को उत्तर लिखवाया। सव पूरा हो जाने पर केवल आधा घंटा वाकी रहा। इतने समय में साफ नकल नहीं हो सकती थी। एलची को आठ वाली गाड़ी से भेजने का निश्चय हुआ।

वापू आराम करने को लेटे, मगर कोई-न-कोई वात करने को आ जाता था, इसलिए वे सो न सके। भाई को लेथवेट के पत्र का उत्तर लिखवाया। माला फेरी, चर्खा काता। कातते समय भाई और मीरावहन ने कुछ सूचनाएं कीं। सवा तीन वजे सब काम करके उठे। पहले भाई से कहा था कि वे मुझे पत्र लिखवा दें, मगर फिर विचार वदला। भाई ने लेथवेट वाला पत्र टाइप किया। मैंने फल का रस निकाला। साढ़े चार वजे वापू खाने वैठे तब मुझे लिखवाने लगे। बोलते-वोलते कई सुधार भी किये। एक घंटे में सब काम पूरा हुआ। घूमते-घूमते बापू ने उस पत्र को फिर से पढ़ा। वापस आकर मैंने और मीरावहन ने अपनी नकल पत्र के साथ मिलाई। पौने सात बजे तैयार करके कटेली साहव को दिया और प्रार्थना में वैठे। बापू का उत्तर वहुत अच्छा था। अपने-आप हृदय से निकला था। एक सांस में वापू ने उसे लिखवा डाला था।

सरोजिनी नायड वड़ी सहयोग की भावना में थीं। मुझसे कहने लगीं, "सुशीला, तुम मुझे हुक्म देने में हिचकिचाहट न करना। मैं तुमसे आदेश लेकर काम करनेवाली हूं। जिम्मेदारी तुम्हारी है। वताओ, क्या-क्या चाहिए?" मैंने वताया।

८ फरवरी '४३

सुवह भंडारी और डॉ० शाह आये। मैंने उन्हें आवश्यक चीजों की एक सूची दी। सलाह दी कि उपवास से पहले वापू के खून की परीक्षा और हृदय का चित्र वगैरा हो जाये। डॉ० शाह नाराज होकर बोले, "इससे

क्या फायदा होगा?" मेरा तो इन चीजों में विश्वास ही नहीं। मैं पुरानी फैशन का हूं। मैं लेवोरेटरी के वजाय अपने हाथ-पांव और आंखों वगैरा पर अधिक भरोसा करता हूं।"

मैंने कहा, "आप वड़े हैं। मेरी जो वात आप चाहें, रद्द कर सकते हैं। मैंने तो सलाह दी है कि यह करवाना चाहिए।"

डॉ० शाह कहने लगे, "नहीं-नहीं, मैं प्रयत्न करूंगा कि तुम्हें सव कुछ मिल जावे। मगर समय लगेगा। मुझे हुक्म है कि किसी से उपवास का जिक्र न करूं, इसलिए मेरी परिस्थिति जरा कठिन है।"

भंडारी भी कह रहे थे, "यह सव क्यों करवाना चाहती हो? क्या पहले उपवासों में यह सव करवाया था?"

भाई कहने लगे, "हां।"

दोनों वहुत घवराए हुए थे।

आज वापू का मौन था। सवने समय पर काता, दिन में अपना-अपना काम करते रहे। कल उपवास शुरू होगा, इससे सवके दिल वैठे हुए थे। शाम को मैं खाना ला रही थी तो मन में आया, "फिर कव इस तरह वापू के सामने खाना रखेंगे?"

भाई टाइप करने में लगे रहे। शाम को वापू को खाना देकर साढ़े चार वजे हम लोग खाना खाने बैठे। इतने में पौने पांच वजे। कर्नल भंडारी और अरविन सरकार का उत्तर लाये थे। उत्तर पढ़कर वापू ने मौन न छोड़ते हुए अरविन को लिखा—"इसमें मेरे साथियों का उल्लेख है, इसलिए मुझे अपने साथियों से वात करनी होगी। अगर आप वगैर तकलीफ के ९ वजे आ सकें तो अच्छा होगा।" अरविन ९ वजे आने को कहकर चले गए। ९ वजे आये और वापू ने अपना उत्तर उन्हें दिया। उसे पढ़कर अरविन ने कहा, "आपने लिखा है कि यदि जरूरत हो तो आप अपना उपवास एक दिन के लिए स्थगित कर देंगे। आप जरूर ऐसा करें, इससे हमें वहुत मदद मिलेगी।"

वापू ने यह स्वीकार कर लिया।

: ४० :

उपवास : अग्निपरीक्षा

पहला सप्ताह

१० फरवरी '४३

सरकार को दिये गए नोटिस के अनुसार बापू ने आज सुबह के नाश्ते के बाद उपवास शुरू किया। उपवास शुरू होते समय हमेशा प्रार्थना की जाती है। आज भी बापू के नाश्ते के बाद हम सबने छोटी-सी प्रार्थना की। बापू का दिन का कार्यक्रम रोज की तरह चला। सुबह-शाम घूमना, समाधि पर फूल चढ़ाना, दिन में पढ़ना-लिखना, कातना—सब रोज के निश्चित समय पर बापू ने किया।

मुझे बुलाकर कहने लगे, "उपवास में मेरी सेवा की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी तुझ पर आने वाली है। इसलिए तू लिखना-पढ़ना और डायरी लिखना इस वक्त भूल जा।" भाई को बुलाकर बोले, "इन दिनों की डायरी तुम्हें रखनी हो तो रखो। सुशीला से उसकी आशा न रखना। इन दिनों में डॉक्टरी का काम इसका सारा समय ले लेगा। मैं नहीं चाहता कि वह नींद वगैरा से समय निकालकर लिखने का काम करे।" मुझसे कहने लगे, "तू अगर लिखने का काम करेगी तो मैं तेरी सेवा नहीं लूंगा।" इसी वजह से उपवास की यह डायरी भाई के नोटों और डॉक्टरी कांफ्रेंसों वाले अपने नोटों के आधार पर तैयार की है।

सरकार ने बापू को कहलाया था कि वे अपने लिए कोई डॉक्टर चुन सकते हैं। बापू ने कहा, "सुशीला मेरे पास है। मेरे लिए वह बस है। अगर उसे मदद लेनी होगी तो वह मांग लेगी।" मैं विचारने लगी कि क्या बापू के उपवास की देखभाल की जिम्मेदारी अकेले मुझे ही उठानी चाहिए? स्थिति बिगड़े तो क्या एक लड़की की बुलेटिन को सरकार वजन देगी? उपवास में दवा तो देनी नहीं होती, कोई खास इलाज तो करना नहीं होता, तो भी छोटी-छोटी बातों में डॉक्टरों की मदद ली जा

सकती है। सबसे बड़ी सेवा तो यह होती है कि देश और सरकार को बापू की स्थिति से ठीक-ठीक वाकिफ ,रखा जाय। मैंने अपने विचार और उलझनें बापू के सामने रखीं। वे बोले, "हां, तेरा बोझ हल्का करने के लिए दूसरों को बुला लेना अच्छा होगा।"

सो मैंने सरकार को लिखा है कि वह डॉ० गिल्डर, डॉ० बिधान राय और डॉ० जीवराज मेहता को भेजें। पहले के उपवासों में भी वे बापू की देखभाल कर चुके थे। मालिश इत्यादि के लिए प्राकृतिक चिकित्सा-गृह के डॉ० दीनशा मेहता को बुलाने का विचार किया।

११ फरवरी '४३

आज सुबह बापू चलकर महादेवभाई की समाधि पर आये। बाद में मालिश इत्यादि का कार्यक्रम चला।

डॉ० गिल्डर को आज सुबह यरवदा जेल से आगा खां महल में लाया गया। डॉ० साहब ने जेल में आकर दाढ़ी बढ़ा ली थी। उसे देखकर हम सब खूब हँसे।

बापू ने दिन भर पानी पिया। अभी तक पानी पीने में बहुत ज्यादा तकलीफ नहीं होती। मतली अभी शुरू नहीं हुई, मगर कमजोरी लगने लगी है।

कर्नल भंडारी ने उपवास के दरम्यान मुलाकातों आदि के बारे में बापू को निम्नलिखित सरकारी फैसला सुनाया:

(१) किससे मिलना है, यह फैसला गांधीजी को करना होगा। वे जिसे चाहें, बुला सकते हैं।

(२) जिस विषय पर वे चाहें, बात कर सकते हैं। इस बारे में कोई बंधन नहीं होगा।

(३) मुलाकात के समय एक सरकारी अफसर हाजिर रहेगा।

(४) बातचीत की रिपोर्ट अखबारों में नहीं छप सकेगी।

इसके जवाब में बापू ने सरकार को लिखा कि मुलाकात मांगने का बोझ उन पर न डाला जाय। जो उनसे मिलना चाहें, सरकार उनसे बिना पूछे उन्हें इजाजत दे दे। जो आश्रमवासी सेवाकार्य में लगे थे, जिन्होंने

पहले उपवासों में उनकी सेवा की थी, उन सभी को इस उपवास में उनकी सेवा की इजाजत दी जाय। इसके अलावा श्री मथुरादासभाई की तवीयत के वारे में भी खवर पुछवाई। अखवार में खवर थी कि भंसाली-भाई भी वापू के साथ उपवास कर रहे हैं। वापू ने सरकार से प्रार्थना की कि वह उनका एक संदेसा टेलीफोन से भंसालीभाई को उपवास छुड़ाने के वारे में भेज दे।

१२ फरवरी '४३

वापू की कमजोरी बढ़ रही है। वजन करीव दो पौण्ड रोज के हिसाव से घट रहा है, मगर पानी पी सकते हैं। किसी-किसी वक्त मतली तो होती है, मगर उल्टी नहीं हुई। समाधि तक चलकर फूल चढ़ाने के लिए आज उनमें शक्ति नहीं थी। हम लोग फूल चढ़ाकर समाधि पर प्रार्थना कर आए।

'हिंदुस्तान टाइम्स' को आज सरकारी नोटिस मिला कि उपवास की खवर वड़े-वड़े शीर्षकों में न छापे। कोई शीर्षक दो कालम की चौड़ाई से अधिक न हो और सरकारी खवरों के अलावा उपवास के वारे में और कोई भी खवर विना सरकार द्वारा सेंसर कराये न छापी जाय।

दिल्ली में असेंबली के बजट-सेशन के लिए कई नेता आये हुए थे। सव लोग श्री हृदयनाथ कुंजरू के मकान पर मिले और फैसला किया कि नेताओं की एक कांफ्रेंस जितनी जल्दी हो सके, वुलाई जाय। इस वारे में राजाजी व सर तेजवहादुर सप्रू को तार दिये गए। अखबारों से पता चलता है कि सारा देश वापू के उपवास की खवर से दहल गया है।

गर्मी एकाएक वढ़ गई। वापू की खाट वरामदे में रखी थी। आज दोपहर को उसे भीतर लाना पड़ा।

अम्माजान (सरोजिनी नायडू) हम सवकी सम्हाल वहुत प्यार से कर रही हैं। अपनी बीमारी भूल गई हैं। कमर कसकर वापू की सेवा करने को तैयार हैं। सारा समय वापू के पास बैठती हैं। हमारे जेल सुपरिंटेंडेंट श्री कटेली साहव घुटने के दर्द के वावजूद भी दिन भर ऊपर-नीचे चक्कर काटा करते हैं। कर्नल शाह और कर्नल भंडारी भी

आते हैं और वापू की तवीयत का हाल पूछकर चले जाते हैं। इन सरकारी अफसरों पर दोनों ओर से वोझ पड़ रहा है। वापू के प्रति हर हिंदुस्तानी के दिल में मुहब्बत और इज्जत होना स्वाभाविक है, मगर साथ ही इन सरकारी नौकरों को सरकार को भी खुश रखना है। अपनी रोटी का सवाल है।

१३ फरवरी '४३

कल शाम से वापू की मतली वढ़ गई है। इसी कारण रात उन्हें अच्छी नींद भी नहीं आई।

अखबारों से पता चला कि दुर्गाबहन, नारायण और कनु कल रात पर्णकुटीर आ गए हैं। शाम को कटेली साहव ने कहा, "उन लोगों ने यहां आने को अर्जी दी है। वापू वुलावें तो उनका आना आसान हो जायेगा।" वा वापू से कहने लगीं, "वुलाइये न। वेचारी दुर्गा को आश्वासन मिलेगा।" वापू बोले, "मैं किसी को वुलाऊंगा नहीं, यह सरकार को लिख चुका हूं। उसे जिसे आने देना हो, आने दे।" वा जरा निराश हुईं और थोड़ी नाराज-सी हो गईं। कटेली साहव से कहने लगीं, "सरकार से कहो कि श्रीमती गांधी दुर्गा, नारायण व कनु को वुलाती हैं। गांधीजी की सेवा के लिए इनकी जरूरत है।" वापू से बोलीं, "आप चाहें तो न बुलायें। मुझे भी तो कुछ हक है।" वापू हँसने लगे। वोले, "सरकार तेरा हक माने तो भला।"

खबर मिली कि आजशाम को डॉ० विधान राय अपने एक सहायक के साथ कलकत्ते से रवाना हो गए हैं।

कर्नल भंडारी तीन बार आये। मुलाकातों के वारे में चर्चा चल रही थी।

१४ फरवरी '४३

मतली और उल्टी के कारण बेचैनी अधिक हो गई। पानी पीने में भी कठिनाई आने लगी है। पानी में कुछ नीवू के रस की बूंदें और नमक या सोडा डालकर पीने का प्रयत्न करते हैं। बेचैनी और कमजोरी के कारण पढ़ना वगैरा भी कम हो गया है।

खबर मिली कि भंसालीभाई ने उपवास छोड़ दिया है।

वंबई के सर्जन-जनरल कैंडी आज पूना आये हैं। वापू के कान में दर्द है। फुंसी-सी लगती है।

कई मित्र और रिश्तेदार पूना आकर बैठे हुए हैं और मुलाकात करने के विषय में सरकार की इजाजत की राह देख रहे हैं।

१५ फरवरी '४३

मतली, उल्टी और वेचैनी सता रही है। नीवू और नमक के साथ भी पानी पीने में कठिनाई आ रही है।

सुवह जरनल कैंडी, भंडारी, शाह और मजिस्ट्रेट साहव वापू को देखने आये। रात को डॉ० विधान राय आये। उनसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। वाहर की ताजा हवा मिली।

आज दुर्गावहन, नारायण और कनु को भी आगा खां महल में आकर रहने की इजाजत मिल गई है। उनके आने से वहुत अच्छा लगा। उनको महादेवभाई की समाधि पर ले जाते समय सबके दिल भरे थे, आंखें भीगी थीं। दुर्गावहन के लिए वापू के पास आना इस समय दवा-रूप है। वे लोग उपवास पूरा होने तक यहीं रहेंगे।

प्रार्थना में लीन हो जाने पर वापू की तकलीफ अपने-आप कुछ कम हो जाती है। प्रार्थना तो हमेशा सुवह-शाम होती ही है। इस उपवास में गीता-पारायण नहीं करवाते।

दिन भर वापू का मौन रहा।

१६ फरवरी '४३

सुवह डॉ० गज्जर वापू के रक्त व गुर्दे के काम आदि की परीक्षा के लिए आये। वापू की हालत और विगड़ी है। अशक्ति इतनी है कि पानी का गिलास पकड़ना भी कठिन हो रहा है। उन्हें पहियेदार खाट पर सुला रखा है। यह खाट पेट का ऑपरेशन होने के वाद रोगी के काम आती है। उठाने-बिठाने के समय चावी घुमाने से खाट अपने-आप उठ जाती है।

वापू की अशक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आवाज वहुत कमजोर हो गई है, मगर डॉक्टर इत्यादि आते हैं तो सबसे हँसकर वात करते हैं।

शांतिकुमारभाई मिलने आये थे। उनसे बापू ने कहा, "कोई ऐसा न माने कि आज जो बाहर चल रहा है, उसमें मेरी सम्मति है। बम फेंकने में तो मेरी इजाजत हो ही नहीं सकती। रेल, तार टेलीफोन आदि तोड़ने-फोड़ने के बारे में सत्याग्रह हो सकता है, मगर मेरी कल्पना आम कल्पना से बिलकुल जुदा किस्म की है, यह अगर मैं बाहर होता तो बताता। उसमें छिपी नीति की गुंजाइश है ही नहीं। वह केवल मौत का निशाना बन जाने का साधन-रूप है। जो लोग ऐसा सत्याग्रह करना चाहें, वे खुले तौर पर ऐलान कर दें कि अमुक समय पर हम तार काटने आवेंगे। आप अपनी पुलिस और फौज को बुला लें। एक-एक, दो-दो, आदमी वहां जायं और गोली खाकर प्राण दे दें। हजारों-लाखों को जहां तैयार करना हो, वहां छिपी नीति का स्थान नहीं।

"जो लोग छिपकर काम कर ' हे हैं, उनसे मैं कहूंगा कि वे अपने-आपको सरकार के हवाले न करें; क्योंकि हो सकता है कि उन्हें बरसों तक जेल में रहना पड़े। उन्हें अपने-आप भीतर से लगे कि यह बात ठीक है, छिपी नीति से देश को नुकसान होता है तो वे खुले तौर पर अपने-आपको सरकार के हवाले कर दें।"

शांतिकुमारभाई ने पूछा, "छिपकर अहिंसा का काम किया जा सके तो क्या वह भी नहीं करना चाहिए।"

बापू बोले, "मेरी तो मान्यता यह है कि गुप्त नीति की जड़ में ही हिंसा है। इसलिए छिपाकर बुलेटिन निकालना भी हिंसा है। अपने मित्रों को मेरा यह संदेश पहुंचा देना।"

अखबारवालों ने डॉ० बिधान राय से पूछा, "क्या गांधीजी बच जायंगे?"

डॉ० राय का उत्तर था, "गांधीजी कभी-कभी डॉक्टरों को चक्कर में डाल देते हैं, सो निश्चित रूप से मैं कुछ नहीं कह सकता।" आज बुलेटिन लिखते समय हम ६ डॉक्टर मौजूद थे—जरनल कैंडी, डॉ० बिधान राय, डॉ० गिल्डर, कर्नल भंडारी, कर्नल शाह और मैं। हमारी बुलेटिन सरकार के पास चली जाती है। पहले डॉ० गिल्डर और मेरे

दस्तखतों से ही जाती थी। अब सबके दस्तखतों से जाती है। सरकार को जो ठीक लगता है सो छापती है।

वापू का आज का दिन कल से अच्छा रहा, मगर स्थिति तो चिंताजनक है ही।

शांतिकुमारभाई के साथ बातचीत करते हुए वापू ने कहा, "हमारी शोभा अहिंसक मार्ग पर चलने में ही है। हमारे सामने चार आदमियों की बात नहीं, चार सौ की नहीं, चार हजार की नहीं, बल्कि चालीस करोड़ की है। मैंने तो सीधा रास्ता बताया है। कुछ भी न कर सको तो अपना कपड़ा खुद पैदा करो। विदेशी माल बिलकुल इस्तेमाल न करो। इतना समझ लो कि अंग्रेजी माल और विदेशी माल में कोई फर्क नहीं है। तुम्हारे पिता वुर्श विदेश से मंगवाते हैं। मैंने कारण पूछा तो कहने लगे, 'वहां अहिंसक मिलता है—यहां अहिंसक नहीं मिलता।' मैंने कहा—तो फिर वुर्श छोड़कर दातुन इस्तेमाल कीजिये, मगर मेरे घर में ही वुर्श इस्तेमाल होता है। सुशीला और प्यारेलाल के पास वुर्श है और भूल नहीं करता तो महादेव का भी विना वुर्श काम नहीं चलता था। इन लोगों के बक्स में शायद और विदेशी चीजें भी मिल जायंगी, जैसे कि पेन है, घड़ी है, इत्यादि। तुम्हारे वक्स में भी होंगी। सो मेरा अपना ही घर फूटा है।

"मैंने जो अहिंसा का मार्ग वताया है, उस पर लोग न चल सकें तो अपने रास्ते पर चलें। पर मेरा नाम न इस्तेमाल करें। मैं जबतक वाहर न निकलूं, तबतक कुछ कह नहीं सकता। मैं तो जो था, वही हूं, सरकार भले वह न पहचाने। मगर सरकार पहचाने या न पहचाने, ईश्वर तो पहचानता है। मेरा मंत्र 'श्री राम' नहीं, 'हे राम' है। वह मेरा साक्षी है। मैं जानता हूं कि वह मुझे पहचानेगा।

"इतना समझ लो कि मेरा उपवास किसी के सामने (विरुद्ध) नहीं है। मैं न्याय मांगता हूं। सरकार किसी निष्पक्ष आदमी को सबूत के साथ मेरे पास भेजे। वह मुझे समझा सके या मैं उसे समझा सकूं तो मुझे उपवास नहीं करना। वाहर जाकर मुझे यदि लगे कि इतने सालों में कुछ भी काम नहीं हुआ और न होगा तो मुझे उपवास करके मरना पड़ेगा। वह अलग वात रही।

"आज हजारों लोग भूखों मर रहे हैं। मैं बाहर जाऊं तो बहुत कुछ कहूं और करूं भी; मगर इस बार सरकार की नीति अलग ही किस्म की है। उसे क्या पड़ी है। लोग मरें चाहे जियें। वाइसराय भला है, एमरी भी भला है। ये दोनों और चर्चिल एक गुट्ट ही हैं। एक ही स्कूल में रहे हैं। इसीलिए तो वाइसराय की मद्दत इतनी बढ़ाई गई है। इन तीनों ने निश्चय किया है कि कांग्रेस को झुकाना है।

"लोगों को तोड़-फोड़ करना हो तो वह भी खुले तौर पर करना चाहिए। हिंसा करनी हो तो वह भी खुले तरीके से। मारना है तो मारो। मगर याद रखो, इस रास्ते से हिंद कभी आजाद नहीं होगा। कभी स्वराज नहीं मिलेगा। जर्मनी-जापान हिंसा का रास्ता ले सकते हैं। वे छोटे-छोटे रास्ते हैं, मगर हमारे देश हिंद के चालीस कोटि लोग हिंसा-मार्ग ग्रहण करें तो दुनिया का नाश है। हम सीधे रास्ते पर चलें तो जगत को भी वही रास्ता बता सकते हैं।

"मैंने सीधे-से-सीधा रास्ता बताया है। और सब छोड़ दो। घर में जो चीज बन सकती है, वह बनाओ और इस्तेमाल करो। सूत कातो और बुनो। एक-एक देहात को स्वतंत्र, स्वावलंबी बनाओ, पीछे कोई सरकार तुम्हें दबा नहीं सकती। और आज तो सरकार को भी वह अनुकूल होगा।

"कोई ऐसा न माने कि बाहर जो चल रहा है, वह सब मुझे पसंद है। मैं यह भी नहीं कह सकता कि वह अहिंसा की ढाल में आता है।"

प्रश्न—"तो जो लोग छिपकर काम कर रहे हैं, वे अपने-आपको सरकार के हवाले कर दें?"

बापू ने कहा, "छिपकर काम करना मेरी इच्छा के विरुद्ध है। मुझे तो यह अच्छा लग ही नहीं सकता। मैंने हमेशा छिपी नीति की निंदा की है। मगर मेरे कहने से कोई अपने-आपको सरकार के हवाले न करें। मेरे विचारों को हजम कर लें तो ऐसा करें। इसका यह भी परिणाम हो सकता है कि उन्हें कई सालों तक अंदर रहना पड़े।

"जब हम पकड़े गए तब जवाहरलाल ने मुझसे गाड़ी में पूछा, 'अहिंसा

में गुप्त नीति को स्थान है ? मैंने कहा, 'नहीं।' मैंने पकड़े जाने पर कहा था, 'पकड़े जाने पर मेरी सरदारी पूरी हुई। अब जिसे जो ठीक लगे सो करे। इतना जरूर है कि अहिंसा की चहारदीवारी में रहकर जो हो सके, वही करना।' जो लोग बाहर हैं, वे अपनी मति के अनुसार चलते रहें। अहिंसा को चला सकें तो चलावें। यह लड़ाई यदि अहिंसक तरीके से चल सकेगी तो हम बहुत आगे बढ़ सकेंगे। मैं समझता हूं कि तोड़-फोड़ का तरीका हमारे लिए नहीं है। अहिंसा के नाम पर यह सब चले तो ठीक नहीं।"

दूसरा सप्ताह

१७ फरवरी '४३

आज मतली थोड़ी कम हो गई है, पर कमजोरी और पानी पीने में तकलीफ बढ़ती जा रही है। बापू कभी सादा पानी पीते ही नहीं। कहते थे—सादा पानी पीने की आदत ही छूट गई है। हम लोगों को पानी का गिलास एक सांस में पीते देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ करता है। उपवास के पहले भी सामान्यतः सादा पानी पीने से उन्हें मतली-सी लगती थी। सो फल का रस या पानी में नीबू और शहद डालकर लेते थे। पर उपवास में शहद नहीं लिया जा सकता। फल का रस भी नहीं पी सकते। इसलिए उपवास का निश्चय करते समय उन्होंने ऐलान किया था कि पानी न पी सके तो उसमें थोड़ा-सा नीबू या फल का रस डाल लेंगे; क्योंकि पानी के बिना आदमी २१ दिन नहीं जी सकता। बा और दूसरे लोग बापू से कह चुके हैं कि अब तो वे फल का रस पानी में डालकर लिया करें, मगर वे मानते नहीं। कहते हैं कि अभी समय नहीं आया। इधर पानी कम जाने से पेशाब कम आ रहा है। शरीर में जहर इकट्ठा हो रहा है। सबकी चिंता बढ़ रही है।

आज बापू के हृदय की गति का चित्र (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम) लिया गया। खून इत्यादि की रिपोर्ट अभी नहीं आई। शरीर में पानी इकट्ठा

न हो, इसलिए नमक और खाने का सोडा बंद किया है। उसकी जगह पोटेशियम के नमक मंगाये हैं।

सुनते हैं, वाइसराय की कौंसिल के तीन मेंबरों—श्री एच० पी० मोदी, श्री एन० आर० सरकार और श्री अणे—ने इस्तीफा दे दिया है। इस्तीफे का कारण है बापू के उपवास के विषय में सरकार की नीति के साथ उनका मतभेद। इस्तीफा मंजूर भी हो गया है। श्री एन० आर० सरकार ने एक छोटे-से वक्तव्य में कहा है, "हिंदुस्तान के सबसे बड़े आदमी के बारे में सरकार की नीति से मतभेद होने के कारण मैंने इस्तीफा देने का निश्चय किया है। वह सबसे बड़ा आदमी हमारे स्वराज्य के ध्येय की जागती मूर्त्ति है। वह सामाजिक और जीवन के ऊंचे-से-ऊंचे आदर्शों को सामने रखनेवालों में सबसे आगे हैं। उनका जीवन हिंदुस्तान में अलग-अलग कौमों की मित्रता के लिए और हिंदुस्तान व ब्रिटेन की मित्रता के लिए अत्यावश्यक है। हमारी क्षुद्र शक्ति उनका जीवन बचाने के लिए कुछ काम न कर सकी, मगर मुझे विश्वास है कि जहां हम निष्फल हुए हैं, वहां सर्वशक्तिमान ईश्वर स्वयं उनकी रक्षा करेगा और हमारे लिए उन्हें बचा लेगा। मेरी यही प्रार्थना है कि देश की सेवा के लिए वे बहुत वर्ष जियें।"

आज ठक्कर बापा, अमतुलबहन और श्रीमती ठाकरसी बापू से मिलने आये। डॉक्टर गिल्डर और मैं दिन-रात बापू के पास ही हैं। रात की ड्यूटी मेरी रहती है और दिन की डॉक्टर साहब की। मुलाकातियों से ज्यादा बातें न करने देने का काम डॉक्टर साहब के सिर डाला गया है। जैसे-जैसे बापू की शक्ति कम होती जाती है, कोशिश की जा रही है कि वे बोलचाल कम करें जिससे शक्ति कम खर्च हो। उद्विग्न करनेवाली बातें नहीं होने देते; मगर काम कठिन है। इतने पुराने-पुराने साथी—मित्र मिलना चाहते हैं। सब जानते हैं कि उपवास के बाद बापू से नहीं मिल सकेंगे। उन्हें रोकना या जल्दी चले जाने को कहना कठिन है; मगर क्या किया जाय। डॉक्टरों को तो यह कठिन काम करना ही पड़ता है।

बापू के पास जाने से पहले और पीछे बा और सरोजिनी नायडू लोगों

के साथ बातें करती हैं, भाई भी करते हैं। इससे मिलने आनेवालों को कुछ अच्छा लगता है। वे भी समझते हैं कि बापू को शक्ति-संग्रह करना चाहिए।

ठक्कर बापा से बातें करते हुए बापू ने कहा, "किसी हुकूमत ने एसा नहीं किया जैसे कि इस हुकूमत ने किया है। इसने मर्यादा छोड़ दी है। झूठ की तो पहले से ही भरमार है। वाइसराय ने भी हद ही कर दी है।

"मैं कहता हूं कि मुझ पर मुकदमा चलाइये, मेरे गुनाह का सबूत दीजिये। अगर मेरी भूल मुझे मालूम पड़ेगी तो मैं माफी मांगूंगा। ये लोग मुझ पर कितनी तोहमतें लगाते हैं। मैं कहता हूं कि मैं गुनहगार नहीं हूं। रूस में भी मुकदमा चलता है। मगर मुझे उसका भी मौका नहीं दिया जाता। मुझे न्याय चाहिए।"

ठक्कर बापा बोले, "और वाइसराय कहता है कि अपने गुनाह के परिणाम से बचने के लिए आप उपवास करते हैं।"

बापू ने कहा, "बस, ऐसे है! नीचता की हद नहीं रही।"

१८ फरवरी '४३

कल रात को नींद अच्छी आई, बेचैनी कम हो रही है, मगर डॉक्टर लोग इससे खुश नहीं हैं। सुबह की परीक्षा में डॉ० विधान राय, डॉ० गिल्डर मेजर जनरल कैंडी, लेफ्टिनेंट कर्नल भंडारी, लेफ्टिनेंट कर्नल शाह और मैं थे। हम सबके दस्तखतों से सरकार को यह बुलेटिन भेजी गई—

"नौ घंटे की नींद लेने के बावजूद भी गांधीजी ताजगी महसूस नहीं करते। उनका मन और दिमाग हमेशा की तरह चौकन्ना नहीं है। हृदय बहुत दुर्बल है। स्थिति ज्यादा चिंताजनक है।"

रक्त-परीक्षा इत्यादि की रिपोर्ट आई। शरीर में पानी और जहर इकट्ठे हो रहे हैं। खबर मिली कि बंबई सरकार के सलाहकार ब्रिस्टो और देवदासभाई पूना आने के लिए चल पड़े हैं। बाद में किसी ने बतलाया कि यह तय करने के लिए ब्रिस्टो पूना आये थे कि अगर गांधीजी की मृत्यु हो जाय तो उनके शव को किस रास्ते से श्मशान ले जाना होगा। अर्थात, सरकार की तैयारी है कि बापू को उपवास में मरने ही देना है।

किसी ने कहा, "गांधीजी ने तो कहा है कि अपनी शक्ति के अनुसार उपवास करेंगे। अव उनकी शक्ति समाप्त हो गई है, इसलिए उपवास क्यों नहीं छोड़ देते ?" वापू ने समझाया कि "शक्ति के अनुसार उपवास करने का यह अर्थ नहीं कि खतरा आने पर उपवास छोड़ देना। उसका अर्थ इतना ही है कि यह उपवास आमरण नहीं।" उन्होंने उपवास से पहले अंदाज लगाया था कि २१ दिन का उपवास करने की उनकी शक्ति है, सो २१ दिन तो पूरे करने ही हैं। ईश्वर को रखना होगा तो रखेगा। ले जाना होगा तो ले जायगा। अगर उनका अपनी शक्ति का अंदाज गलत सिद्ध होगा तो उन्हें परिणाम भुगतना होगा।

भाई ने आज टॉटेनहम को जानेवाला खत तैयार करने के लिए और सब कामों से छुट्टी ली। दोपहर में वह खत तीन वजे गया। ठक्कर वापा मिलने आये। वापू उनसे वातें करते हुए कहने लगे, "प्यारेलाल ने एक खत तैयार किया है। उसमें मेरे शब्दों का हवाला देकर बताया है कि जो हिंसा चली है, उसमें मेरा बिलकुल हाथ नहीं।"

फिर बातचीत में कहने लगे, "वाहर जो चल रहा है, वह मुझे बिलकुल पसंद नहीं; मगर तो भी यहां वैठा तो उसकी खुली टीका या निंदा करने को तैयार नहीं; क्योंकि उनके बारे में मुझे जो कुछ कहना है, उससे कहीं ज्यादा मुझे सरकार की नीति की टीका करनी है। सरकार लोगों को इतना उकसाये, उनसे हिंसा करवाने पर ही तुली हो तो वह इसमें सफल हो सकती है। आम जनता कोई फरिश्ता नहीं है। अहिंसा का मार्ग बतानेवाला कोई हो नहीं तो वह सहज ही हिंसा के प्रवाह में बह सकती है। मगर सरकार की हिंसा जनता की हिंसा से कहीं ज्यादा है। ऐसी हालत में केवल लोगों का यहां बैठकर टीका या निंदा करना ठीक नहीं।

"अहिंसा के बारे में मेरे विचारों में जरा भी फर्क नहीं आया। अगर है तो इतना कि अहिंसा में मेरी श्रद्धा दृढ़ हुई है। हां, एक बात में फर्क कहा जा सकता है। अब मैं यह नहीं कहता कि देश भर में अहिंसा का वातावरण हो, तभी अहिंसा चल सकती है। मैंने सोचा कि अगर देश में

कहीं भी हिंसा होने पर—सरकार तो किसी भी एक आदमी से हिंसा करा सकती है—मुझे अहिंसा का प्रयोग बंद करना पड़े तो मैं अहिंसा की शक्ति को कभी सिद्ध ही नहीं कर पाऊंगा और हिंसा का जवाब तो मैं अहिंसा के प्रयोग को सिद्ध करके ही दे सकता हूं।"

दिन बढ़ने के साथ यूरीमिया का जहर भरने के चिह्न भी बढ़ते जा रहे हैं। रात को बापू कहने लगे, "कुछ अच्छा नहीं लगता। पेट में तकलीफ है, सिर में भी।" 'हे राम' वाला चित्र सामने टंगा था। उसकी बातें करते हुए बोले, "बस, यही एक आधार है। ईश्वर, तू जो करता है, जो करेगा, वही ठीक है। मैं तेरी इच्छा के अधीन हूं, न कि तू मेरी इच्छा के। यही नाद अंदर से निकलता है।"

रात को गरम मिट्टी की पुल्टिस गुर्दों पर लगाई।

१९ फरवरी '४३

रात को बार-बार मुंह में लार आने से थूकना पड़ता था। इसलिए अच्छी तरह सो नहीं सके, किंतु सुबह तबीयत के बारे में पूछा तो कहने लगे, "बहुत अच्छा लगता है।" आसपास की बातों में आज बहुत रस ले रहे थे। मगर कमजोरी बढ़ रही है। पानी का गिलास हाथ में लेते हैं तो हाथ इतना कांपता है कि गिलास मानो गिर जायगा। मगर अपने हाथ से पानी पीने का आग्रह आज भी रखा।

डॉ० बिधान राय, डॉ० गिल्डर और मेरे नाम पर सब मुलाकातियों से प्रार्थना की गई कि मुलाकात करने आकर वे बापू की शक्ति का व्यय न करें। पहले मुलाकातियों को २० मिनट देते थे। कमजोरी बढ़ने पर डॉ० गिल्डर ने समय आधा कर दिया। कल तो तीन-तीन मिनट की मुलाकात ही दी। आज इतनी भी शक्ति नहीं लगती।

शाम को तबीयत फिर ज्यादा बिगड़ी। कान का दर्द भी बढ़ गया। बात-बात में कहने लगे, ? "किसी तरह चैन नहीं पड़ता। पानी पीता हूं तो भी शांति नहीं होती। गले तक खट्टा-खट्टा भरा है।"

रामदासभाई सपरिवार बापू से मिलने आये।

भाई को बुलाकर बापू ने कहा, "महादेव के काम को पूरा न्याय देना

हो तो मेरी शरीर-सेवा का लोभ छोड़ना होगा। वह तो जब चाहो कर सकते हो। लोगों से मिलो, बातचीत करो।"

श्री वैकुंठ मेहता आये। उनसे दो-तीन मिनट बात करके बापू कहने लगे, "और जो कुछ कहना हो, प्यारेलाल से कहो।" बातचीत खादी-कार्य के बारे में थी। बापू ने उसके बारे में कहा, "अगर आज भी मेरे बताये मार्ग पर चलने को तैयार हो तो हफ्ते-दो-हफ्ते के अंदर हम आजादी ले सकते हैं। अगर उसके लिए आज जनता तैयार नहीं है तो फिर बहुत धीरज रखना होगा।"

दिल्ली में आज तीन रोज से हड़ताल चल रही है।

नेताओं की कांफ्रेंस आज दिल्ली में शुरू हुई। श्री एन० आर० सरकार, मोदी और अणे ने वक्तव्य निकाले, "गांधीजी के उपवास के बारे में क्या करना, इस महत्त्व के प्रश्न पर हमारा सरकार से मतभेद हुआ। इस पर हमें लगा कि हम सब सरकारी पद पर नहीं रह सकते।"

लंदन में इंडिया लीग ने सभा कराई। लॉर्ड स्ट्रैबोल्गी ने कहा, "ब्रिटिश सरकार को चाहिए कि वह समझौते का रास्ता ढूंढ़ने का फिर से प्रयत्न करे।" सभा ने प्रस्ताव पास किया कि गांधीजी को बिना शर्त तुरंत रिहा कर देना चाहिए।

रात को बापू की स्थिति और भी चिंताजनक हो गई। पानी नहीं पी सकते थे। पानी अंदर जाय तो गुर्दे काम करने लगें, पेशाब के साथ शरीर से जहर भी निकलने लगे। कार्बोनेटेड पानी पिलाने का प्रयत्न किया; मगर वह भी बहुत कम पी सकते थे।

२० फरवरी '४३

बापू की स्थिति और बिगड़ी है। सुबह जब जनरल कैंडी आये तब बापू सो रहे थे। सरोजिनी नायडू से कहने लगे, "अगर यह आदमी दो साल और जिये तो हिंदुस्तान के लिए कितना फर्क पड़ जायगा। यह कैसे दुःख की बात है कि ऐसे आदमी की जान खतरे में पड़े और इस कारण से कि जनता पर उसका इतना जबर्दस्त सच्चा प्रभाव है और वह प्रभाव डालने की उसमें योग्यता है।"

कुछ चर्चा हुई कि क्या नस में पानी और ग्लूकोज नहीं चढ़ाया जा सकता? क्या ऐनीमा के पानी में ग्लूकोज नहीं डाल सकते? मैंने कहा, "गांधीजी वैसा करना कभी स्वीकार नहीं कर सकते।" सरकारी डॉक्टर ५० सी० सी० की एक वड़ी पिचकारी ले आये। उनका रुख मुझे कुछ ऐसा लगा कि वापू की इजाजत न हो तो भी नस में या ऐनीमा में ग्लूकोज दे देना है। आखिर डॉक्टर का धर्म तो मरीज को किसी प्रकार वचाने का ही है न! पर मुझे यह रुख भयानक लगा। मैंने डॉक्टर गिल्डर से चुपके से कहा, "इन्हें समझा दीजिए कि वापू के साथ ऐसा करना वहुत खतरनाक होगा। इससे उनकी मृत्यु भी हो सकती है।" डॉ० गिल्डर ने फौरन वात उठा ली और इस तरह जवर्दस्ती ग्लूकोज इत्यादि देने का जोरों में विरोध किया। डॉ० विधान राय आ गए। वे भी हमारे विचार से सहमत थे कि वापू के साथ धोखा नहीं किया जा सकता। जवर्दस्ती भी नहीं हो सकती। हमने तय किया कि अगर सरकारी डॉक्टर ऐसा कुछ करेंगे तो हम तीनों अपना लिखित विरोध सरकार के पास भेजेंगे। सरकारी डॉक्टरों ने वह पिचकारी कटेली साहव से अपने पास रखने को कहा।

वापू के उठने पर हम सबने उनकी डॉक्टरी परीक्षा की। परीक्षा के बाद जनरल कैंडी ने वापू से एक मिनट वात करने की इच्छा प्रकट की। मैं उन्हें फिर भीतर ले गई। भाई और कनु वापू के पास थे। जनरल कैंडी मुझे कुछ घवराहट में लगे। मैंने पूछा, "क्या आप अकेले वापू से वात करना चाहते हैं?" उन्होंने सिर हिलाकर 'हां' कहा। हम सव वाहर चले गए।

थोड़ी देर में जनरल कैंडी पिछले दरवाजे से वाहर निकलकर पिछले वरामदे की तरफ चल दिए। हम लोग उनका इंतजार कर रहे थे। डॉक्टर गिल्डर को क्षण भर लगा कि वह रास्ता भूल गए हैं। उन्होंने दो बार पुकारा, "जनरल, इस तरफ।" मैंने रोका, जनरल कैंडी जान वूझकर उधर गये हैं। उनकी आँखों में आंसू भरे हैं। डॉ० विधान राय शरारत करके उनके पीछे देखने गए। आवाज देने लगे, "जनरल, जनरल, रास्ता इधर है।" कैंडी रुक गए। डॉ० विधान ने पूछा, "उन्होंने क्या कहा?" आंखें पोंछते हुए जनरल कैंडी ने कहा, "कुछ नहीं।" और आगे चल दिए।

बापू ने हमें बाद में बताया कि हमारे जाने के बाद जनरल कैंडी कमरे में घूमने लगे। वे इतने उद्विग्न थे कि बोल नहीं सकते थे। थोड़ी देर बाद आकर बापू के पास कुर्सी पर बैठ गए, मगर बोल नहीं सके। फिर उठकर कमरे में चक्कर लगाने लगे। आखिर हिम्मत करके आए और कहने लगे, "मि० गांधी, एक डॉक्टर की हैसियत से मुझे आपसे कहना चाहिए कि आपकी उपवास करने की शक्ति की मर्यादा खत्म हो गई है।" बापू चुप-चाप सुनते रहे। मगर कैंडी आगे नहीं बोल सके—रो पड़े। बापू ने उन्हें आश्वासन दिया, "क्यों घबराते हो? मैं ईश्वर के अधीन हूं। मैंने अपने-आपको उसके हाथों में रख दिया है। उसे ले जाना होगा तो ले जायगा। मैं जाने को तैयार हूं। काम लेना होगा तो रख लेगा।"

हम लोग जनरल कैंडी को पिछले बरामदे में छोड़कर बड़े कमरे की एक मेज के पास जा बैठे। यहीं पर रोज बुलेटिन लिखी जाती है। कर्नल भंडारी और शाह कहने लगे, "आज की बुलेटिन बहुत जोरदार शब्दों में लिखनी होगी।" हम लोगों ने एक मसविदा तैयार करना शुरू किया। करीब दस मिनट में जनरल कैंडी शांत होकर वापस आये। हमेशा की तरह हमने उन्हीं के हाथ में बुलेटिन लिखने के लिए कागज और कलम दी। उन्हें कुछ दिक्कत हो रही थी। करीब आधा मसविदा तैयार हुआ था। वह उनके सामने रख दिया। उन्होंने उसमें से वाक्य ले लिये। हमारे मसविदे के वाक्य "ऐसे चिह्न प्रकट हो रहे हैं कि शायद कुछ अवयवों को स्थायी नुकसान हो जाय" के स्थान पर उन्होंने लिखा—"खतरे के चिह्न प्रकट हो चुके हैं।" बाद में हमें पता चला कि सरकार ने कैंडी को गांधीजी को यह बता देने को कहा था कि उनकी जान खतरे में है, ताकि अगर मृत्यु हो जाय तो सरकार अपनी सफाई पेश कर सके। सरकार का अपना रवैया बदलने का इरादा बिलकुल नहीं था। सो बेचारे कैंडी के सिर यह आपद्-धर्म आ पड़ा। इससे वे बड़े संकट में पड़े।

देवदासभाई सपरिवार आये। ब्रेल्वी भी आये। शांतिकुमार और ठक्कर बापा से जो बातें हुई थीं, उसी ढंग की ब्रेल्वी के साथ हुईं। ब्रेल्वी ने पूछा, "अगर आप बाहर होते तो जनता की हिंसा के बारे में क्या कहते?"

बापू बोले, "जनता के बारे में जो कुछ भी कहता, उससे अधिक मुझे सरकार के लिए कहना पड़ता। मगर वह मैं आजादी में ही कर सकता हूं, जेल से नहीं। यह भी समझ लो कि किसी भी चीज के बारे में पूरी जांच-पड़ताल किये बिना मैं कोई राय दे ही नहीं सकता। यह चर्चा करना कि कोई खास काम अहिंसा में गिना जा सकता है या नहीं, उससे स्वराज मिलने में मदद मिल सकती है या नहीं, यह एक बात है, और खले तौर पर किसी चीज की टीका या निंदा करना दूसरी बात है। ऐसा करने से पहले हर पहलू से उसकी पूरी जांच-पड़ताल करनी चाहिए। अगर मैं आजाद होता तो जो कई बातें हुई कही जाती हैं, उनकी टीका और निंदा करता। इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें होने ही नहीं देता। उनकी जगह मैं ज्यादा असरकारी रास्ता जनता के सामने रखता। वह ज्यादा असरकारी होता; क्योंकि वह शुद्ध अहिंसा का मार्ग होता। मेरी लड़ाई की कल्पना आज बाहर जो हो रहा है, उससे अलग किस्म की थी। मगर जो लोग बरसों से अहिंसक मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं, उन्हें भयानक हिंसा के द्वारा कुचला जाय, यह क्या बात है ? सरकार गुस्से से पागल बनकर बेहथियार कमजोर स्त्री-पुरुषों पर कभी नहीं हुए ऐसे जुल्म करे और परिणाम में वे लोग निराश होकर पागल बन जायं और बिना सोचे-समझे कुछ उलटा-सीधा कर बैठें तो इतिहास उनकी हिंसा को सरकार की हिंसा के मुकाबले में अहिंसा ही कहेगा, जैसे कि मैंने 'हरिजन' में लिखा था न, कि पोलैंड के लोगों की जर्मनी के हमले के सामने हिंसक लड़ाई लगभग अहिंसक ही कही जा सकती है।"

ग्रेल्वी पूछने लगे, "अगर आप पकड़े न जाते तो क्या आपने कौमी एकता के बारे में भी कुछ करने की सोची थी ?" बापू बोले, "करने को तो बहुत-कुछ सोचा था और आशा थी कि कुछ कर भी पाऊंगा, मगर विधाता ने कुछ और ही सोच रखा था। जिन्ना साहब के साथ मुलाकात तय होनेवाली थी। मैं शायद खास मुलाकात तय किये बिना ही उनसे मिलता और पता चलता कि हमारे मतभेद किस-किस चीज पर थे और उन्हें दूर करने का कोई रास्ता है या नहीं, मगर वह सब होने का नहीं था।"

देवदासभाई ने बापू को बताया कि तोड़-फोड़ में लगे रहकर भी हमारे

लोगों ने इस बात का ध्यान रखा था कि किसी की प्राण-हानि न होने पाते। उन्होंने यह भी बताया कि इसके लिए क्या-क्या कोशिशें की गई थीं।

बापू ने उत्तर दिया, "कुछ भी हो, अगर मैं बाहर रहता तो ऐसी चीजें भी न होने देता। जो चीज छिपी रीति से ही चल सकती है, उसकी जड़ में विफलता भरी है। गुप्त नीति सत्य की विरोधिनी है, इसलिए अहिंसा की विरोधिनी भी है। इसीलिए मेरी योजना में उसके लिए स्थान नहीं हो सकता। कई बार मुझे ऐसा लगता है कि तोड़-फोड़ के कार्यक्रम की तात्त्विक चर्चा भी मुझे नहीं चलने देनी चाहिए थी। संभव था कि आज जो हो रहा है, वह न होने पाता।"

नेताओं की दिल्ली कांफ्रेंस में डॉ० जयकर ने प्रस्ताव पेश किया कि हिंदुस्तान के हित की और दोनों देशों की परस्पर मित्रता की खातिर गांधीजी को तुरंत छोड़ देना चाहिए। प्रस्ताव पास हो गया।

बापू को वाइसराय का उत्तर मिला। उसमें लिखा था कि १० फरवरी को सरकार ने जो वक्तव्य निकाला था, उसमें अपनी नीति स्पष्ट कर दी थी। उसके बाद कोई नई घटना नहीं हुई। उपवास की जिम्मेदारी गांधीजी की थी। उसे छोड़ने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है, हुकूमत की नहीं।

२१ फरवरी '४३

कमजोरी इस कदर बढ़ गई है कि बापू लेटे-लेटे ही नली से पानी पीने का प्रयत्न करते हैं। नली से चूसने के लिए भी शक्ति चाहिए। सो कभी-कभी चमचे से भी पानी मुंह में डालना पड़ता है। मगर इस तरह बहुत कम पानी पिया जाता है। कल दिन भर में केवल चालीस औंस पानी पी सके। इसमें भी दो औंस खट्टे नीबू का रस था।

रात में नींद बहुत कम आई। करीब साढ़े चार घंटे ही सोये होंगे। दिन में किसी चीज में रस लेने की इच्छा नहीं थी; यूरीमिया का नशा-सा लगता था। सांस में ऐसीटोन की बू तो थी ही, यूरीमिया की बू भी कल शाम से लगती है। हृदय और नाड़ी बहुत कमजोर हो गई है। इस कमजोरी में वजन लेने के लिए उठना कठिन है। परसों १९ तारीख तक

वजन १४ पौंड कम हो चुका था। आज की बुलेटिन में था—"यूरीमिया बढ़ रहा है। अगर अब उपवास छूटने में देर हुई तो जान बचाना कठिन हो जायगा।"

सुबह डॉ० शाह आये तो कहने लगे, "मैं और कैंडी कल रात को बैठे सोच रहे थे कि यहां क्या हो रहा होगा और तुम लोगों का किसी समय भी टेलीफोन आ सकता है! हमने यहां आने की भी सोची, मगर फिर सोचा कि इससे तुम लोगों को कष्ट होगा। आखिर दस बजे पलंग पर जा पड़े। डर था कि रात को न जाने कब उठकर भागना पड़े!"

मैंने कहा, "जी हां, पासवालों को तो चिंता रहती ही है, मगर दूर-वालों को तो और भी फिक्र रहती है।"

मेजर शाह बोले, "बेचारा कैंडी तो बड़ी ही फिक्र में है। मुझसे कहता है कि कांग्रेस को छोड़ो, मगर यह आदमी तो कांग्रेस से ऊपर है। कांग्रेस भले खत्म हो जाय, यह आदमी नहीं खत्म हो सकता। उसे खत्म होने देना भी नहीं चाहिए। उसे बचाना ही चाहिए।"

दिन में अनुसूयाबहन, रामेश्वरदास बिड़ला, शंकरलाल बैंकर इत्यादि मिलने आये। आज सबको दर्शन के लिए ही लाया जा रहा था। बापू में बात करने की शक्ति ही नहीं थी। दिन भर अधिकतर चुपचाप ही पड़े रहे।

शाम को करीब चार बजे बापू की हालत एकाएक बिगड़ी। उस समय उनके कमरे में मैं अकेली ही थी। उन्होंने पानी पीने का प्रयत्न किया। नली से खींचकर पीने में बहुत थक गए। मश्किल से एक-दो घूंट ही पी सके। थककर लेट गए। एकदम जोरों की मतली आई। छट-पटाने लगे, बेचैनी से हाथ-पैर पटकने लगे। आंखें करीब आधी बंद थीं। मुझे ऐसा लगा, मानो बेसुध हो रहे हैं। नाड़ी पर हाथ रखा तो इतनी कमजोर थी कि मुश्किल से हाथ आती थी। मेरा हृदय धड़कने लगा। अभी जाने क्या-क्या होनेवाला है! महादेवभाई की भांति क्या बापू भी आंखों के सामने चले जायंगे? मैं जानती थी कि अगर पानी पी सकें तो बच सकते हैं। सो हिम्मत करके पूछा, "बापू, वह समय नहीं

आ गया है कि जब पानी में मौसंबी का रस डालकर आपको दिया जाय?" कुछ देर तक उन्होंने उत्तर नहीं दिया। आखिर धीरे-से सिर हिलाकर 'हां' कहा। मैंने डॉ० गिल्डर को बुलवाया था। वे आ गए। बापू को जो हुआ था वह समझाकर मैंने दो औंस मौसंबी का रस निकाला और दो औंस पानी में मिलाकर औंस वाले गिलास से धीरे-धीरे बापू के मुंह में डाला। इसका असर जलते कोयलों पर पानी पड़ने-जैसा हुआ। बेचैनी कम होने लगी। बापू ने आंखें खोलीं। इतने में बा कमरे में आईं। मुझे लगा कि शायद बा की प्रार्थना सुनकर ही ईश्वर ने बापू को बचा लिया। बा जब बापू के कमरे में नहीं होती थीं तो अक्सर बालकृष्ण या तुलसी माता के सामने बैठी प्रार्थना किया करती थीं। जब बापू की स्थिति बिगड़ रही थी, बा यह सब कुछ न जानते हुए प्रार्थना में बैठी थीं।

थोड़ी देर के बाद फिर बापू को मौसंबी का रस और पानी दिया। रात तक करीब १५-१६ औंस रस और उससे तिगुना पानी भीतर जाने से बापू की नाड़ी काफी सुधर गई। रात को उन्होंने करीब साढ़े पांच घंटे नींद ली।

बा जिस हिम्मत से मानसिक और शारीरिक श्रम बरदाश्त कर रही हैं, वह सचमुच आश्चर्यजनक है।

२२ फरवरी '४३

आज बापू का मौन था। कई मित्र लोग प्रणाम कर गए। उनमें श्री मथुरादासभाई, अमतुलबहन, श्री अंबालाल साराभाई और स्वामी आनंद थे। आश्चर्य की बात है कि जो बापू पूंजीवाद के कट्टर दुश्मन हैं, उनको पूंजीपति अपना पिता मानते हैं। और बापू भी उनके प्रति उतना ही प्रेम दिखाते हैं, जितना कि स्वामी आनंद के प्रति, जिन्होंने अपना सर्वस्व बापू के अर्पण किया है। मथुरादासभाई उनके भानजे हैं और अमतुलबहन एक मुसलमान कुटुंब की लड़की, लेकिन बापू दोनों को समान प्यार करते हैं। बापू के पास जो आता है, वह यही अनुभव करता है कि बापू मुझे बहुत प्यार करते हैं, वे मेरे मित्र हैं, हितेच्छु हैं, उनके सामने मैं अपना हृदय खोल सकता हूं।

आज भी बापू पानी में मौसंबी का रस मिलाकर लेते रहे। कमजोरी बहुत है, मगर हम लोगों की चिंता कम-से-कम है। डॉक्टरी दृष्टि से ज्यादा पानी भीतर जाने से खतरा कम हो गया है, मगर कुछ कहा नहीं जा सकता। मौसंबी के रस की मात्रा वे कम-से-कम करना चाहते हैं।

देश तो कल की बुलेटिन से चिंता में पड़ा ही हुआ है। सरकार ने गांधीजी को छोड़ देने के बारे में नेताओं की अपील अस्वीकार कर दी थी। सो सर तेज ने देश से अपील करते हुए वक्तव्य निकाला कि वह बुरे समाचार के लिए तैयार रहे और यदि बापू चले जावें तो उनकी मृत्यु की चोट को स्वाभिमान, गंभीरता और हिम्मत के साथ बर्दाश्त करे।

सावरकर इत्यादि कुछ दूसरे लोगों ने गांधीजी से प्रार्थना की कि सरकार तो नहीं मानती, आप ही देश की खातिर अपना उपवास छोड़ दें। मगर ये लोग बापू को समझते नहीं। बापू ने ईश्वर के नाम से उपवास शुरू किया है। मृत्यु को सामने देखकर उसे छोड़ेंगे नहीं। उनका एक ही मंत्र है, 'ईश्वर को मुझसे काम लेना होगा तो मुझे बचा लेगा।

२३ फरवरी '४३

रात में बापू को अच्छी नींद नहीं आई। दिन में थोड़ा-थोड़ा करके कई बार सोये। जबान मैली, नाड़ी कमजोर, अशक्ति बहुत है। डॉक्टरों की मीटिंग में अब अक्सर मीठी चर्चा हुआ करती है। बेचारे कैंडी साहब नहीं समझ पाते कि बापू मौसंबी का रस इतना कम क्यों लेते हैं। ज्यादा लें तो शरीर को पोषण भी मिले, मगर बापू को शरीर को पोषण देना ही नहीं है। उन्हें तो इतना ही रस लेना है कि जिससे पानी पी सकें।

आज सुबह जनरल कैंडी पूछने लगे, "आज कैसे हैं?" डॉ० गिल्डर बोले, "थोड़े अच्छे हैं। प्रफुल्लित लगते हैं।" कैंडी भीतर गए। नाड़ी वगैरा देखकर बाहर आये। कहने लगे, "उनकी मुस्कान तो हमारा स्वागत करने के लिए है, उनकी अहिंसा का चिह्न है। शारीरिक स्थिति में तो मुझे कोई सुधार नहीं दिखाई पड़ता। नाड़ी ज्यादा कमजोर लगती है।" कर्नल शाह बोले, "हां, मेरा भी यही खयाल है।" जनरल कैंडी मुझसे कहने लगा, "पानी में मौसंबी का रस ज्यादा क्यों नहीं डाल देती

हो?" मैंने कहा, "वह हो नहीं सकता। बापू हमेशा पूछते हैं कि कितना रस लिया और कितना पानी। वे कम-से-कम रस लेना चाहते हैं ताकि उपवास, यानी शरीर को खुराक न देना, चलता रहे। खुराक का उपवास है, पानी का नहीं। चूंकि सादा पानी पी नहीं सकते, इसलिए उसमें रस की कम-से-कम मात्रा डालने देते हैं।"

कर्नल शाह बोले, "फल क्यों नहीं खाते?" शाह बेचारे बहुत भोले हैं। मैंने कहा, "जब फल का रस ही कम-से-कम लेते हैं तो फल कैसे खा सकते हैं? वह लेने लगें तो उपवास टूटता है।"

कैंडी बोले, "मैं फल खा सकता हूं, मगर रस लेने से तो मुझे मतली-सी होती है।" शाह ने कहा, "फल लेने से जीभ भी साफ हो जायगी।" मैंने कहा, "डॉ० राय ने नीबू के टुकड़े से जीभ साफ करने की सलाह दी थी, मगर बापू ने इंकार किया। उपवास की सब व्यथा सहने की उनकी तैयारी है। फल के रस के उपयोग की छूट पानी पी सकने के लिए ही है।"

वे लोग चुप हो गए, मगर व्यथा बरदाश्त करने की बात उनकी समझ में नहीं आई। वे क्या जानें कि उपवास की सारी कल्पना ही इस आधार पर है कि आप व्यथा बर्दाश्त करके सामनेवाले की आत्मा को जाग्रत किया जाय। उसको उसकी गलती दिखाने के लिए अपनी जान खतरे में डाल दी जाय।

बापू का दिमाग साफ है। सिर का चक्कर और दर्द आज नहीं है। आवाज बहुत कमजोर है। वे अधिकतर चुपचाप पड़े रहे। कई मुलाकाती आये। उनमें होरेस अलेक्जैंडर भी थे। वे अनेक अंग्रेज मित्रों की तरफ से शुभेच्छा और प्रेम का संदेश देने आये थे। बापू ने उनसे थोड़ी बातें कीं।

तीसरा सप्ताह

२४ फरवरी '४३

आज बापू की स्थिति और थोड़ी सुधरी है। सुबह डॉक्टरी परीक्षा के बाद कैंडी कहने लगे, "आज तो हम बुलेटिन में अच्छी खबर दे सकते

हैं। कल की उनकी मुस्कराहट झूठी थी, ऐसा तो मैं नहीं कह सकता, मगर वे कल मेहनत करके मुस्कराते थे। आज सचमुच अधिक प्रफुल्लित लगते हैं।" शाह बोले, "तो भी हमें चौकन्ना रहना होगा, खतरा गायब नहीं हो गया है।" कैंडी ने कहा, "हां, वह तो ठीक है। यह सुधार क्षणिक हो सकता है। दीपक का आखिरी टिमटिमाना भी हो सकता है।" फिर सरोजिनी नायडू से कहने लगे, "हमने तो माना था कि गांधीजी जा रहे हैं, मगर उनकी हालत सुधर रही है। वे आश्चर्यजनक व्यक्ति हैं, चक्कर में डाल रहे हैं। आम गज से उनका माप नहीं लिया जा सकता।"

होरेस अलेक्जेंडर बंबई के गवर्नर सर जॉन काल्विल से मिले थे। सर जॉन काल्विल को बापू की बड़ी चिंता थी। होरेस ने उनके साथ बैठकर एक फार्मूला तैयार किया। यदि बापू पसंद करें तो वे उसे दिल्ली सरकार के पास ले जायंगे। फार्मूला का सार यह था कि सरकार अपने किसी नुमाइंदे को बापू और कांग्रेस पर लगाये गए आरोपों व सबूत के साथ बापू के पास भेजे। अगर बापू को संतोष हो गया तो वे अपनी भूल स्वीकार करेंगे। देवदासभाई आज यह फार्मूला बापू के पास लाए। बापू ने उसे गौर से देखा, फिर कहने लगे, "इसमें एक कमी है। इतना और डालना चाहिए कि सरकार, अगर मुझे सरकारी सबूतों से संतोष न हुआ तो एक न्याय की जांच कमेटी नियुक्त करेगी और वह सब पहलुओं की जांच-पड़ताल करके अपना फैसला सुनाएगी।" यह नया फार्मूला हमारे जेल सुपरिंटेंडेंट श्री कटेली को बताकर होरेस के पास भेजा गया। बापू की बड़ी बहन गोकीबहन आज उनसे मिलने आईं। मुलाकात का दृश्य बड़ा करुण था।

२५ फरवरी '४३

बापू ने कल से मुसंबी के रस की मात्रा और भी कम कर दी है। आज सुबह अपने-आप कहने लगे, "आज कमजोरी ज्यादा लगती है।"

कैंडी आए तो उन्हें बहुत निराशा हुई। कहने लगे, "फल का रस कम

क्यों कर दिया है? आज तो सुधार देखने में नहीं आता। यह बहुत निराशाजनक है।"

मैंने कहा, "सुधार तो हुआ ही नहीं, कमजोरी भी बढ़ी है।" कैंडी बोले, "इतवार के दिन वे मौत के मुंह में थे। क्या फिर वैसी हालत चाहते हैं? मृत्यु के साथ खेलना अच्छा नहीं।"

डॉ० राय बोले, "हां, वे खुद कह रहे थे कि इतवार को उन्हें लगता था कि जा रहे हैं। मौसंबी का रस डालकर पानी पीना और जिंदा रहना या मृत्यु, दो चीजें उनके सामने थीं। उन्होंने पहली बात पसंद की। उन्होंने कहा कि वे मरना नहीं चाहते। मगर इसका अर्थ तो यह नहीं होना चाहिए कि सारे समय काल के गढ़े के किनारे खड़े होकर ही उसमें झांकते रहें।"

मैंने उन्हें बापू का दृष्टिबिंदु समझाने की कोशिश की, "उनका हेतु मृत्यु से खेलना या मृत्यु की खाई के किनारे मंडराना नहीं है। उन्होंने शुरू से कहा है कि पानी न पी सके तो उसे पीने लायक बनाने के लिए वे कम-से-कम मात्रा में मौसंबी के रस का उपयोग करेंगे। जब इतवार को मैंने देखा कि वे किसी तरह पानी नहीं पी सकते तो मैंने पानी में मौसंबी का रस डालने की इजाजत मांगी, सो उन्होंने दे दी। अब वे उसकी मात्रा कम कर रहे हैं।"

डॉ० राय बोले, "हां, यह ठीक है। उन्हें खुद आश्चर्य हो रहा था कि इतने थोड़े रस का उन पर इतना बड़ा असर कैसे हुआ!" आज सुबह बापू हँसकर कैंडी से कह रहे थे, "अब मैं कहां उपवास कर रहा हूं?" मैंने कहा, "डॉक्टरी दृष्टि से आप उपवास ही कर रहे हैं। आप अपने शरीर को जलाकर शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। मौसंबी का रस ही आपके शरीर से जहर निकालने में मदद देता है। उसके सहारे आप पानी पी सकते हैं। पानी शरीर से जहर निकालता है।"

कैंडी ने कहा, "उपवास तो है ही। मौसंबी के रस में रक्खा क्या है? जहां तक मुझे याद है, उसमें ९८ प्रतिशत पानी होता है, थोड़ा-सा रंग और जरा-सा ग्लूकोज।"

मैं बोली, "यह ठीक है, लेकिन इस जरा-से ग्लूकोज की भी वे कम-से-कम मात्रा लेना चाहते हैं।" कैंडी कहने लगे, "यह भूल है। पिछले दिन संकट का समय आ गया था। रस का असर होने में २४ घंटे लगे। अगर फिर ऐसा मौका आवे, उसी तरह हालत बिगड़े तो शायद उसमें से निकल ही न सकें या पूरी तरह न निकल सकें।" डॉ० राय से कहने लगे, "इतवार को जो हालत हुई थी, उसके बारे में आपकी क्या राय है? डॉक्टरी भाषा में, उस दिन जो हालत बिगड़ी, वह क्या चीज थी?" डॉ० राय बोले, "डॉ० गिल्डर मौजूद थे। वे कह सकेंगे।" कैंडी कहने लगे, "हां, मगर उस दिन के चिह्न का विचार कीजिये। सख्त मतली, बेचैनी, नाड़ी की कमजोरी, मुझे याद आ रहा था कि हृदय को खून पहुंचाने वाली नाड़ी तो कहीं बंद नहीं हो गई।" डॉ० राय बोले, "हो सकता है, चिह्न तो ठीक बैठते हैं।" कैंडी कहने लगे, "मुझे तो डर लगता है। दूसरा हमला ज्यादा खतरनाक हो सकता है।" मुझसे बोले, "क्या आप उन्हें जबर्दस्ती ज्यादा रस नहीं दे सकतीं?" मैंने उत्तर दिया, "उनके साथ जबर्दस्ती कौन कर सकता है?" कैंडी पूछने लगे, "क्या वे खुद नियम या कानून बनाते हैं?" मैंने उत्तर दिया, "जी हां।"

वे बोले, "उनसे कहना कि वे बड़े खराब मरीज हैं। हम लोगों को मरीजों के बनाये कानून पालने की आदत नहीं।" सभी हँसने लगे।

शाह पूछने लगे, "उन्हें धोखा नहीं दे सकती हो? चुपचाप ज्यादा रस डाल दिया करो।" मैंने कहा, "उन्होंने हम सबको हमारे ईमान पर रखा है। उनके साथ धोखा नहीं हो सकता।" कैंडी कहने लगे, "मगर डॉक्टर मरीज की जान बचाने के लिए झूठ बोले तो उसमें कौन-सी बात है! अच्छा, यह बताओ कि रस नापती कैसे हो?" मैंने कहा, "औंस वाले गिलास से।" वे बोले, "कल मैं नया औंस का गिलास लाऊंगा। पुराना गिरकर टूट गया है। समझीं?" मैंने कहा, "फायदा क्या होगा? उसी नये गिलास से पानी भी नापा जायगा। एक मात्रा रस और तीन या चार मात्रा पानी।"

शाह बोले, "डॉ० राय हमें बता रहे थे कि महाभारत में कहा गया है

कि पांच तरह के मौके आ सकते हैं जब कि झूठ बोलने में दोष नहीं है। उनमें से एक है जान बचाने की खातिर।"

कैंडी कहने लगे, "कोई और मरीज होता तो सौ झूठ बोलने में हिचकिचाहट न होती, मगर...। अच्छा, अब बुलेटिन में क्या कहना है? यही कि 'डॉक्टरी दबाव के नीचे उन्होंने मौसंबी का रस लिया और हालत सुधरी'।"

मैंने कहा, "बापू नहीं मानेंगे कि डॉक्टरी दबाव के नीचे उन्होंने रस लिया।" शाह बोले, "तो कहें कि डॉक्टरी सलाह से लिया?" डॉ० गिल्डर कहने लगे, "सलाह तो हमने कब से दी थी।"

सब चुप हो गए। मैंने कहा, "एक ही बात पर उन्होंने जोर दिया है, पानी पी सकें। जब पानी नहीं पी सकें, तब पानी में रस मिला लें, जैसा कि उन्होंने उपवास करने से पहले ही कहा था। बस इतनी-सी बात है।"

भूलाभाई, मुंशी और राजाजी आज बापू से मिलने आये। भूलाभाई ने बताया, "सरकार तो अकड़कर बैठी है। कोई दलील सुनने को तैयार ही नहीं। कुछ भी समझौते की बात करने से पहले वह कई तरह की शर्तें और गारंटी मांगने की बात करेगी। एक ओर आपकी आवाज जेल की दीवारों में बंद है, दूसरी ओर देश की हालत बिगड़ती ही जायगी।"

मुंशी ने भी भूलाभाई का समर्थन किया। कहने लगे, "उनकी तैयारी तो आपको मरने देने की है। अगर परिणाम में जनता कुछ गड़बड़ करे तो उनकी तैयारी उसे भी गोली से उड़ा देने की है। कई तरह के लोग आज बाहर काम कर रहे हैं। उनमें कइयों के नाम भी बापू नहीं जानते। मगर उन सबके कारनामों की जिम्मेदारी कांग्रेस पर डाली जाती है। इसका कुछ उपाय करना चाहिए। मगर मुझे इतना कहना होगा कि जहां तक मैं जानता हूं, किसी कांग्रेसवाले ने जान-माल का नुकसान करने में हिस्सा नहीं लिया, मगर आपकी सीख के खिलाफ लोगों ने कई जगह काम किया है। अधिकतर वह अज्ञान और विचारों की गड़बड़ का परिणाम था।"

बापू ने उनकी बातें चुपचाप सुन लीं और राजाजी से बातें करने के

लिए अपनी शक्ति का संचय किये रखा। राजाजी ने वाइसराय के साथ के अपने अनुभव सुनाये और वताया कि लॉर्ड लिनलिथगो ने तीन बार उनसे झूठ वोला था। वे कहने लगे, "आखिरी बार जव मैं उनसे मिला तो वे पूछने लगे, "क्या गांधीजी उपवास करेंगे?" उस समय आपका खत उन्हें उपवास के वारे में मिल चुका था। इसी प्रकार एक वार कौमी मसले पर मेरे विचारों को 'वुद्धिमानी' कहकर बाद में उन्होंने उससे उलटा वक्तव्य निकाला था। तीसरा असत्य तो इन दोनों असत्यों से भी वुरा है।"

राजाजी ने वताया कि लिनलिथगो को वापू के नाम से ही चिढ़ है। एक साहव उनसे वातें करने गए। वापू के नाम का जिक्र आते ही लिन-लिथगो गुस्से में भरकर कमरे में चक्कर काटने लगे। किसी ने उनसे पूछा कि उनकी कार्यकारिणी सभा से तीन मेंवरों ने इस्तीफा दे दिया है, इसलिए क्या वे इस वजह से गांधीजी के प्रति अपनी नीति वदलेंगे? लिनलिथगो ने उत्तर दिया, "जितनों ने इस्तीफा दिया है, उनसे दुगने नाम जगहें भरने के लिए जेव में पड़े हैं।"

इसके बाद राजाजी ने सरकार की तरफ से वापू पर लगाई गई तोहमतों की वात की। कहने लगे, "आपके लेखों को तोड़-मरोड़कर झूठी तोहमतों की मनमानी खिचड़ी तैयार की गई है।"

कांग्रेस ने वापू से देश की लड़ाई की योजना बनाने को कहा था। वापू ने पकड़े जाने से पहले कोई सूचनाएं नहीं निकाली थीं। लड़ाई की रूपरेखा नहीं वनाई थी। जो वाहर रह गए, उनमें से किसी को कांग्रेस के नाम पर हिंसक या अहिंसक लड़ाई चलाने का अधिकार न था। कांग्रेस ने कहा था कि हर एक अपना सरदार है, सो हरएक स्त्री-पुरुष अपने कृत्यों के लिए जिम्मेदार था। कांग्रेस स्वयं किसी के किये की जिम्मेदार न थी। राजाजी का कहना था कि उसूलन वापू या कांग्रेस किसी के किये के लिए जिम्मेदार नहीं, मगर मौका आने पर यह स्पष्ट करना होगा कि हिंसक प्रवृत्तियां कांग्रेस और आपकी नीति के विरुद्ध हैं। वापू से कहने लगे, "मैं जानता हूं कि जेल में वैठकर वाहर की प्रवृत्तियों के विरुद्ध निदान देना

आपकी जीवन भर की नीति के विरुद्ध होगा। मगर क्या आप हमसे यह नहीं कह सकते कि यह सब आपको पसंद नहीं? जो लोग लड़ाई चला रहे हैं, वे अगर इतना स्पष्ट कर दें कि वे कांग्रेस के नाम पर नहीं, बल्कि अपनी जिम्मेदारी पर अपनी प्रवृत्ति चला रहे हैं तो वे कांग्रेस की भी सेवा करेंगे और अपनी भी। मैं जानता हूं कि आप यहां बैठकर उनकी निंदा नहीं करेंगे, टीका नहीं करेंगे, मगर इसमें शक नहीं कि आज जो कुछ बाहर हो रहा है, वह बंद होना चाहिए। जिम्मेदारी किसी की भी हो, मगर ऐसी प्रवृत्तियों से देश का भला नहीं हो रहा है।

"तीसरा है कौमी मसला। वह हल हो सकता है।" उन्होंने बापू को एक फार्मूला बताया। सर तेज बहादुर सप्रू, राजा महेश्वरीदयाल और अन्य मित्रों के साथ राजाजी ने इस प्रस्ताव की चर्चा की थी। उन लोगों को वह पसंद आया था। बापू से फिर कहने लगे, "इन लोगों में से किसीको आप इस मसले को हाथ में लेने की सत्ता नहीं दे सकते?"

जब राजाजी सब कह चुके तब बापू ने उत्तर देना शुरू किया। उनकी आवाज बहुत कमजोर थी। बिलकुल पास कान रखने पर ही सुन सकते थे। बापू कहने लगे, "आज मेरी तबीयत अच्छी है। मेरे मन में जो है सो सुना देता हूं। इन छः महीनों में मैंने अहिंसा का ही मनन किया है। मैंने देखा कि मेरी अहिंसा में एक दोष है और इस युद्ध के समय अगर अहिंसा को अपना चमत्कार दिखाना है तो वह दोष दूर करना होगा। वह दोष यह था, मैं कहा करता था कि अगर अहिंसा को अपना काम करना है तो तो देश में कहीं भी हिंसा नहीं होनी चाहिए। अगर कहीं हिंसा फूट निकली तो मैं अहिंसक लड़ाई बंद कर दूंगा। मगर मैं देखता हूं कि आज मेरे चारों ओर हिंसा है। हिंसा की आग सारे जगत में फैली हुई है। तब क्या मेरी अहिंसा बेबस होकर चुपचाप यह सब देखा करे?

"मुझे कहना होगा—नहीं, आज अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर काम करना है। इतना मैं कह सकता हूं कि अगर मैं बाहर होता तो हमारे यहां हिंसा इस तरह न फूट निकलती। मैं उसे रोक लेता या रोकने की कोशिश में खत्म हो जाता। मैंने अपने आखिरी भाषण में जनता से

कह दिया था कि अगर उसने एक भी अंग्रेज मारा तो वे मुझे जीता नहीं पायेंगे और मेरा खून उसके सिर पर होगा। आज देश में जो हिंसक कार्य हो रहा है, उसके लिए मेरे हृदय के किसी भी कोने में सहानुभूति नहीं है। रही उनकी कड़ी निंदा की बात, सो जबतक मैं वैसे ही कड़े शब्दों में सरकार की निंदा न कर सकूं, तबतक जनता की निंदा भी नहीं करना चाहता। आजकल की हमारी सरकार व्यवस्थित हिंसा का मानो एक दूसरा नाम है और हम उसे स्वीकार करते हैं, उसकी सत्ता के नीचे रहते हैं। मेरा मत है कि हमें इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। कई साल पहले मैंने बिहार में इस बात का इशारा किया था। वहां पर पुरुषों ने पुलिस को स्त्रियों का अपमान करने दिया, उनका सामना करने की जगह वे भाग गए। कहने लगे कि मैंने उन्हें हिंसा करने से मना किया था, इसलिए उन्होंने पुलिस का सामना नहीं किया। मैंने कहा कि मैंने उन्हें बुजदिल बनने को कभी नहीं कहा था। उनका तो धर्म था कि स्त्रियों की रक्षा में अहिंसक या हिंसक तरीके से अपनी जान लड़ा देते। इस किस्म के अन्याय के सामने कभी न झुकते। अगर बिल्ली चूहे पर हमला करे और कोई बहादुर चूहा सामने से अपने दांतों द्वारा अपनी रक्षा के लिए बिल्ली का सामना करे तो चूहे ने हिंसा की, ऐसा आप कहेंगे क्या? उस समय मैंने इस किस्म की दलील की थी; मगर इस विचार का पूरा महत्त्व और उसका पूरा अर्थ उस समय आज की तरह मेरे सामने स्पष्ट नहीं हुआ था। अब मैं कहता हूं कि अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर अपना काम करना है। इसलिए मेरी यह मांग है कि कानून में अहिंसक विरोध को स्थान होना चाहिए। अगर अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर काम करना है तो यह आवश्यक है। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि कानून तोड़नेवाले को सजा न हो। उसे आप चाहे जेल भेजें या फांसी पर लटका दें। अहिंसक सिपाही समझता है कि कानून तोड़ने की सजा उसे भुगतनी होगी और वह खुशी से सजा लेने जाता है। मगर उसकी पत्नी को, कुटुंब को या देहात को सजा नहीं हो सकती। आज ऐसा होता है। यह न्याय नहीं। हमें इस संगठित रूप से चलनेवाली सरकारी हिंसा के सामने झुकना नहीं चाहिए। हमें मृत्यु का भय छोड़ना होगा। इस

बार हमें जापानियों से पाठ लेना चाहिए। जहांतक मैं जानता हूं, जापानी बहुत ही बहादुर कौम है; मगर उनकी महत्त्वाकांक्षा उन्हें अंधा कर रही है। उन्हें साम्राज्य चाहिए। वे सारे जगत को हजम कर जाना चाहते हैं। मेरी उनके साथ नहीं पट सकती, जैसे कि हिटलर के साथ नहीं पट सकती। हमारे विचारों में आकाश-पाताल का अंतर है। मैं तो यहां तक जाता हूं कि इस हिंसा के सामने झुकने के बदले अगर लोग अपने-आप पर गोली चलाकर आत्महत्या कर लें तो उनका कृत्य अहिंसक होगा। मुझसे कहा गया है कि लोग थक गए हैं। सरकार ने अपनी फौजी मशीन के बल पर देश पर काबू पा लिया है। मेरा कहना है कि उन्होंने काबू खोया ही कब था? इन बातों का मुझ पर असर नहीं होता। मेरे मन में निराशा नहीं है। कोई कुछ भी कहे, मैं फिर से दोहराना चाहता हूं कि मैंने छूटने की खातिर उपवास नहीं किया। मुझे छूटने की इच्छा नहीं। तो भी अगर छूट जाता तो उसका उपयोग कर लेता और मैं यह महसूस करता हूं कि परिस्थिति को संभाल लेता।

"आप कह सकते हैं कि यदि उपवास के बाद आपको पहले की तरह फिर जिंदा दफन कर दिया गया तब क्या? अगर आपको इस देश से ही ले जावें ताकि भारत की भूमि पर होने के नाते जितना आपका यहां से संबंध है, वह भी न रहे, तब क्या? मेरा कहना है, मेरी आत्मा का संबंध तो रहेगा ही और वह और भी ज्यादा असरकारी होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि बाहर कुछ भी हो; मगर मैं अकेला भी सच्चा रहा तो हिंदुस्तान जरूर आजादी पायेगा। अहिंसा में विश्वास रखनेवाले मुट्ठी भर ही हैं तो क्या हुआ? अगर अकेला मैं ही अहिंसा की संपूर्ण मिसाल छोड़ जाऊं तो वही काफी होगा, कुछ काल के लिए, हमेशा के लिए नहीं। मगर इस काल में कोई बहुत बड़ी आत्मा आ पहुंचेगी और सारे देश को जगा देगी। इसलिए देश के भाग्य का फैसला करने की, जो सत्ता देने की बात आप कर रहे हैं, वह मैं नहीं दे सकता।"

यहां पर डॉक्टरों को बातचीत बंद करानी पड़ी। इतने श्रम से बापू की नाड़ी कमजोर हो गई थी। जब वे कुछ आराम ले चुके थे तब

राजाजी ने बताया कि देश के भाग्य का राजनैतिक फैसला करने की सत्ता वे नहीं मांग रहे थे, वे तो कौमी मसले के फैसले की सत्ता मांग रहे थे।

बापू कहने लगे, "उसके लिए सत्ता मांगने की आवश्यकता ही नहीं और आप जानते हैं कि हमारा कितना ही मतभेद हो, एक-दूसरे के प्रति अविश्वास नहीं है।"

२६ फरवरी '४३

कैंडी आज फिर कहने लगे, "मौसंवी का रस बढ़ाने में उन्हें क्यों उज्र है, यह मेरी समझ में नहीं आता।" मैंने समझाया, "बापू ने कहा है कि पानी को पीने लायक बना लें, बस इतना ही कम-से-कम रस लेना चाहते हैं। अपनी इस प्रतिज्ञा का आत्मा और वचन से पालन करना चाहते हैं।"

कैंडी बोले, "यह तो पानी और हवा खाने पर भी अंकुश लगाने जैसी बात हुई।" शाह कहने लगे, "वे तपश्चर्या कर रहे हैं।" मैंने कहा, "उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा था कि उपवास करके वे अपने को सूली पर चढ़ायेंगे। आज वही कर रहे हैं।"

२७ फरवरी '४३

दो रोज से बापू के पेशाब की मात्रा कुछ कम है। जनरल कैंडी को इससे चिंता हो रही थी। डॉ० विधान कहने लगे, "पिछले इतवार को तबीयत इस कदर बिगड़ी थी। उस वक्त भी दो-एक रोज तक पेशाब कम हो रहा था।" बापू उन्हें कुछ ज्यादा कमजोर दिखाई दिए और कैंडी ज्यादा चिंतित लगे। बुलेटिन क्या निकलनी चाहिए थी, इस पर चर्चा चली। मैंने 'चिंतित' शब्द निकलवा डाला। कल की बातों में बापू ने स्पष्ट किया था कि उन्हें किसी बात की चिंता न थी। वे चिंतामुक्त होकर भगवान के भरोसे चल रहे थे।

अणे साहब बापू से मिलने आये। वे लेडी लिनलिथगो का संदेश लाये थे कि अगर बापू अपने उसूलों को छोड़े बिना उपवास छोड़ सकें तो जरूर छोड़ दें। अनेक दूसरे मित्र भी उपवास छोड़ने को कह चुके थे और लिख चुके थे। सर मॉरिस ग्वायर का पत्र आया। उन्होंने भी उपवास छोड़ने की प्रार्थना की थी।

राजाजी फिर बापू से मिले। गुरुदेव के पुत्र रथीबाबू भी प्रणाम कर गए।

आज बापू ने हजामत कराई। सबको बहुत अच्छा लगा। सूखा चेहरा भी हजामत के बाद चमक उठता है।

२८ फरवरी '४३

जनरल कैंडी ने दो-एक रोज पहले बापू को हजामत कराने की सलाह दी थी। आज यह जानकर कि बापू ने कल हजामत कराई थी, वे बहुत खुश हुए। मैंने कहा, "बापू कहते थे कि यह आपके सम्मान में है।" कैंडी हँसकर कहने लगे, "मगर मैंने तो मौसंबी का रस बढ़ाने को भी कहा था।"

हम सब बापू को देखने के लिए उनके कमरे में गये। कैंडी उनसे बोले, "आज आप सुंदर युवक दिखते हैं।" बापू ने कहा, "आपका हुक्म बजाया है।" मैंने कहा, "बापू, जनरल कैंडी कहते हैं कि उन्होंने तो मौसंबी का रस बढ़ाने को भी कहा था!" कैंडी बोले, "हां, पूरी सलाह क्यों न मानी जाय?" बापू कहने लगे, "ईश्वर की इच्छा हुई तो बुध को मानेंगे।"

बापू के कमरे से आकर बुलेटिन तैयार की। कैंडी ने अपनी २५ तारीख की रिपोर्ट में सरकार को लिखा था, "राजाजी से बातें करके गांधीजी बहुत थक गए थे।" सो इसका एक नया ही परिणाम हुआ। कर्नल भंडारी को सरकारी टेलीफोन आया कि गांधीजी और राजाजी की बातचीत की पूरी रिपोर्ट भेजो। कटेली साहब को हुक्म मिला कि गांधीजी की सभी मुलाकातों की रिपोर्ट भेजो। बेचारे कटेली साहब भाई के पास आये। मुलाकातों में वे हाजिर रहते थे, मगर बापू की आवाज क्षीण होने के कारण वे उनकी बातें बहुत कम सुन पाते थे, सो भाई से कह गए कि सब मुलाकातों की रिपोर्ट वे उन्हें दे दें। बापू की सत्य और अहिंसा की नीति का यह प्रताप है कि जेलर कैदियों का इस तरह विश्वास करे। भाई ने उन्हें सब मुलाकातों की रिपोर्ट तैयार कर दी।

बापू से राजाजी की मुलाकात फिर हुई। उन्होंने कौमी मसले के बारे से अपने फार्मूले की चर्चा फिर की। जाते समय उसकी नकल देने

लगे। मगर कटेली साहब ने कहा कि उसके लिए इजाजत लेनी पड़ेगी। इस पर नकल रखने का विचार छोड़ दिया गया। बापू ने हमसे कहा कि फार्मूले को ध्यान से पढ़ लो और फिर स्मरण करके उसकी नकल खुद बना लेना। इस पर भाई ने उसे एक बार फिर पढ़कर सबको सुनाया। राजाजी के जाने के बाद उन्होंने नकल तैयार की। डॉ० गिल्डर ने बापू की खाट के नीचे हाथ करके शार्टहैंड में कुछ नोट ले लिये थे। बाद में भाई की नकल उससे मिलाई। कुछ फर्क न था।

आज बहुत से मुलाकाती आये। उपवास पूरा होने पर जेल के दरवाजे फिर बंद हो जायंगे, इसलिए मित्र लोग दर्शन का लाभ ले लेना चाहते हैं।

बापू की तबीयत अच्छी रही।

१ मार्च '४३

कल राजाजी के जाने के बाद भाई बापू से कहने लगे, "आपने कौमी मामले पर राजाजी को कोरा चेक दे दिया है। क्या यह ठीक है? आप जानते हैं कि पाकिस्तान के मसले के बारे में आपके विचारों से उनके विचार भिन्न हैं?"

बापू बोले, "यह ठीक है। मगर मैंने विश्वास रखा है कि राजाजी मुझे किसी ऐसी परिस्थिति में न डालेंगे जो मेरी अंतरात्मा की आवाज के विरुद्ध हो। और अगर कुछ ऐसी ही बातें बन गईं तो मैं आमरण उपवास करके अपनी भूल का प्रायश्चित्त करूंगा।"

सो आज राजाजी के आने पर बापू ने यह सब उनके सामने साफ किया। राजाजी कहने लगे, "मैं यह सब समझता हूं। आप चिंता न करें। मैं आपको ऐसी परिस्थिति में न डालूंगा कि आपको अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध कुछ करना पड़े।"

बापू काफी पानी पी लेते हैं। खुराक न जाने से कमजोरी होनी तो जरूरी है, मगर गुर्दे सब जहर निकाल रहे हैं। सो चेहरे पर ताजगी और प्रसन्नता पाई जाती है, तेज दिखाई देता है।

२ मार्च '४३

आज आखिरी बार मुलाकातियों के लिए आगाखां महल के दरवाजे खुले। लक्ष्मीबहन खरे और अन्य बहनों से विदा लेते समय बा की आंखों में पानी आ गया। कहने लगीं, "अच्छा बहन, यह आखिरी राम-राम है!" मैंने कहा, बा, आप ऐसा क्यों कहती हैं? हम सब छूटकर जायंगे और सबसे फिर मिलेंगे।"

बा बोलीं, "हां, तुम सब जाओगी!" उनकी आवाज में करुणा थी, निराशा थी।

कर्नल भंडारी से बातें करते समय बापू को पता चला कि कल उपवास छूटने के समय रामदासभाई और देवदासभाई के सिवा और कोई नहीं आ सकेगा। इस पर बापू ने सरकार को पत्र लिखवाया कि उनके लिए रिश्तेदार, मित्र और पुत्र, सब समान हैं। अगर उपवास छूटने के समय उनके विशाल कुटुंब के लोग उपस्थित नहीं रह सकते तो पुत्रों को अलग कोटि में रखना उन्हें पसंद न था। सो कल उपवास छूटने के समय उनके जेल के साथी और अफसर ही मौजूद रहेंगे। जेल के साथियों में दुर्गाबहन, नारायण और कनु भी शामिल थे। वे बापू की सेवा के लिए आगाखां महल में ही रहते थे।

गर्मी काफी बढ़ गई है। बापू की खाट हम बरामदे में ले आए थे। मुलाकातियों और दर्शनाभिलाषियों की कतारें प्रणाम करके उनके सामने से गुजरती रहीं। सबका हृदय भरा था। बापू सौम्य, प्रसन्न-मुख से हाथ जोड़कर सबका अभिनंदन करते थे।

राजाजी और अणे साहब ने आधा-पौन घंटा फिर बापू से बातें कीं।

उपवास की समाप्ति

३ मार्च '४३

कल रात से हम सबका हृदय ईश्वर के प्रति धन्यवाद का गीत गा रहा है। इक्कीस दिन पहले ९ तारीख की रात को हममें से अधिकतर लोग बहुत कम सो पाए थे। चिंता थी, मन पर बोझ था कि इक्कीस दिन कैसे

कटेंगे? अकेले बापू रात भर गहरी नींद सोये थे। कल रात फिर सब बहुत कम सोये। बापू की अग्नि-परीक्षा पूरी होती जान पड़ रही थी। डॉक्टरी मत के अनुसार बापू के लिए इक्कीस दिन का उपवास पूरा कर सकना एक असंभव-सी बात थी। पहले दो हफ्तों में बापू की हालत को देखकर हम लोग सचमुच कांपते थे और पिछले रविवार (२१ फरवरी) के रोज़ तो ऐसा लगता था कि बापू अब चले; मगर उसके बाद बापू ने पानी में थोड़ा-सा मोसंबी का रस डालकर लेना शुरू किया। इससे वे पानी पी सके। इतना ही फर्क पड़ा। आठ-नौ औंस रस से शरीर को क्या पोषण मिल सकता है? मगर इतने थोड़े-से रस का भी अद्भुत असर हुआ। बापू की तबीयत सुधरी और खून में पेशाब मिल जाने की बीमारी, यूरीमिया, के चिह्न एक-एक करके दूर हो गए। २४ फरवरी से वजन का कम होना भी रुक गया और शक्ति बढ़ी। बापू को तो अपनी तबीयत इतनी अच्छी लगने लगी कि हँसी में एक रोज कहने लगे, "मैं तो आराम से चालीस रोज तक इस उपवास को चला सकता हूं।" मगर हम डॉक्टरों को निश्चितता नहीं थी; क्योंकि हृदय दुर्बल था और पेशाब की परीक्षा बताती थी कि गुर्दे को अपना काम करने में कठिनाई हो रही है। किस समय फिर से परिस्थिति गंभीर रूप धारण कर ले, यह कहना कठिन था, इसलिए कल रात को जब मंजिल पूरी होती देख पड़ी तो हम सब हर्ष के कारण सो न पाए। बापू भी बहुत कम सोये। वे कल दिन से डा० बिधान राय से कह रहे थे, 'जितना विचार करता हूं, उतना स्पष्ट नज़र आता है कि इस उपवास को पूरा करने की शक्ति मुझे भगवान से ही मिली है।" सो वे पड़े-पड़े भगवान का दर्शन उसकी कृति में कर रहे थे।

सुबह चार बजे बापू प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद वे सामान्यतः सो जाते हैं; मगर आज नहीं सो सके। कल मैंने पूछा था कि उपवास छोड़ने से पहले गीताजी का पारायण करना है क्या? बापू कहने लगे कि करना अच्छा तो लगेगा; मगर कल सब डॉक्टर आवेंगे, इसलिए छोटी-सी ही प्रार्थना करनी चाहिए। मगर आज सुबह प्रार्थना के बाद जब वे सो नहीं सके तब कहा कि एक-एक करके तैयार होकर आते जाओ और गीताजी

का पाठ शुरू कर दो। भाई तो उस समय तक लगभग तैयार थे। उन्होंने पांच वजे[1] यानी नये हिसाव से छः वजे पाठ शुरू किया। कुछ अध्यायों के पश्चात् कनु आ गया। मैं दसवां अध्याय शुरू होने के समय पहुंची। सवा सात वजे पाठ पूरा हो गया। हम सब को बहुत अच्छा लगा।

जब पूरा होने को था तव डा० दीनशा मेहता अपनी पत्नी के साथ आये। बापू ने विचार किया था कि आज मालिश इत्यादि जल्दी पूरी कर लेंगे, मगर श्री कटेली को कर्नल भंडारी की आज्ञा चाहिए थी, इसलिए डा० दीनशा की पत्नी को वापस भेजना पड़ा।

हम सब स्नानादि कर चुके थे। नाश्ता किया और फूल चढ़ाने नीचे महादेवभाई की समाधि पर गये। कल फूलों के बहुत से हार आये थे। सब वहां पहुंचाये। सुंदर दृश्य था।

सवेरे सवा सात बजे स्वामी आनंद महादेवभाई की भस्म यहां से ले गए थे। जिस समय वहां ९ बजे बापू के उपवास छोड़ने की प्रार्थना चलती थी, उस समय उधर भस्म को नदी में प्रवाहित करने की विधि चलती थी। विचित्र संयोग था कि बापू के उपवास छोड़ने के समय ही यह क्रिया हो रही थी।

यह कोई सोच-विचारकर वनाया हुआ कार्यक्रम न था। कई दिन से दुर्गावहन की अनुमति से सरकार की इजाजत लेकर यह निश्चय किया गया था कि भस्म का अधिकांश भाग यहीं नदी में प्रवाहित कर दिया जावेगा। अस्थियां गंगाजी में प्रवाहित करने के लिए रख ली थीं, मगर आज तक उसे नदी पर भेजने का प्रवंध नहीं हुआ।

एक आकस्मिक घटना और घटी। आज जमनालालजी का श्राद्ध था। संयोगवश वापू को अपना उपवास १ फरवरी के बदले १० फरवरी को शुरू करना पड़ा। ऐसा न होता तो उपवास का छूटना और जमनालालजी का श्राद्ध होना, एक ही रोज न पड़ सकते थे।

---

१. जब हम जेल में थे तब सरकारी घड़ियां एक घंटा आगे कर दी गई थीं।

प्रार्थना में बापू ने यह क्रम रखवाया था: पहले ईशावास्यमिदं... वाला श्लोक, फिर एकादश व्रत, फिर 'मैं भरोसे अपने राम के, वाला भजन, फिर रामधुन, 'अउज बिल्ला' और अंत में 'व्हेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रास।' मगर कल रात मीराबहन ने अंग्रेजी भजन नहीं गाया, इसलिए बापू ने उसे मुझसे पूरा कराया। रात को मीराबहन के साथ वह भजन पांच मिनट तक गाया। एक बार सुबह गाया। डर था कि कहीं गाने में भूल न हो जाय।

कमरा ठीक करके बापू को भीतर लाये। एक तरफ डाक्टरी इलाज के लिए कुर्सियां रखीं और दूसरी तरफ लोगों के लिए जमीन पर बैठने की जगह की। डा० विधान राय आये और कहने लगे, "मैं तो जमीन पर बैठूंगा।" बापू बोले, "तो आपको फिर प्रार्थना में भी कुछ भाग लेना होगा।" बेचारे इधर-उधर कुछ ढूंढ़ने लगे। गीतांजलि हाथ आ गई। उसमें से दो सुंदर अंश उन्होंने चुने।

बापू ने विचार किया था कि ८ बज कर ५० मिनट पर प्रार्थना शुरू की जावे ताकि वह ९ बजे उपवास छोड़ सकें, मगर फिर विचार बदला। सरोजिनी नायडू कहने लगीं कि जनरल कैंडी इत्यादि प्रार्थना में आ सकें तो अच्छा हो। उनके आने से पहले कनु और नारायण ने 'आनंद लोके, मंगला लोके' गाया। सरोजिनी नायडू ने 'वैष्णव जन तो... गाने को कहा। वह भी गाया। इतने में जनरल कैंडी इन्त्यादि आ पहुंचे। प्रार्थना शुरू हुई।

गीतांजलि में से डा० विधान राय ने 'व्हेन दि मांइड इज़ विदाउट फ़ियर' और 'दिस इज़ माई प्रेयर टु दी, माई लार्ड', पढ़ कर सुनाये। अच्छे लगे। इसके बाद बापू ने प्रार्थना का जो क्रम रखा, वह एक के बाद एक चला। अंत में 'व्हेन आई सर्वे दि वण्डरस क्रास' गाया गया। भजन पूरा करके मैं उठी कि रस लाऊं, मगर वहीं-की वहीं खड़ी रह गई। बापू आंखें बंद किये पड़े थे। उनके होंठ हिल रहे थे। आंखें भीगी थीं। यह भजन बापू को हमेशा द्रवित किया करता है। आज और ज्यादा असर हुआ। विचार आया—दूसरा सलीब (क्रास) ढूंढ़ने की क्या आवश्यकता है?

वह तो हमारी आंख के सामने है। सारी-की-सारी प्रार्थना बहुत असरकारी बन गई थी। वातावरण गंभीर, सौम्य और करुण था।

बापू कुछ शांत हुए। मैंने प्याले में रस डाला। बापू ने छः औंस रस में एक औंस पानी डालने को कहा था। वह मिलाकर मैंने बा के हाथ में दिया। बापू की खाट का पिछला भाग उठाया। बापू उसके सहारे बैठ गए और धीमे स्वर में बोले, "मैं डॉक्टरों को धन्यवाद देना चाहता...।"[१] उनका गला रुंध गया। दो-एक मिनट तक सब सन्नाटे में रहे। बापू ने सम्हलकर फिर कहना शुरू किया, "जो बड़ी सावधानी और प्रेम से मेरी देख-रेख करते रहे हैं...।"[२] गला फिर रुंध गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपना वाक्य पूरा किया, "सफलता उन्हीं की बदौलत मिली है, लेकिन इच्छा प्रभु की थी कि मैं इस अग्निपरीक्षा में से जीवित पार हो जाऊं। प्रभु ही मुझे अगला कदम सुझायेगा। मेरी कमजोरी के लिए आप लोग क्षमा करें।"[३]

नाड़ी बहुत कमजोर और उसकी गति तेज थी। डा० गिल्डर ने बापू को लिटाने की कोशिश की, मगर बापू ने इंकार किया। जो कहना था, वह कहकर बा से रस का गिलास हाथ में लिया।

भाई ने भंडारी, कैंडी और शाह को अंगूरों का गरम-गरम रस पीने को दिया और हँसकर बोले, "यह तुम्हारी शैंपेन[४] है।" कल श्री कैंडी मजाक कर रहे थे, "क्या शैंपेन मिलेगी?" हम लोगों ने 'सहनाववतु' का मंत्र पढ़ा और बापू ने रस लिया। डॉक्टरों ने अपना पेय। श्री कैंडी

---

1. "I wish to thank the doctors..."

2. "who have surrounded me with so much care and affection..."

3. "The triumph is theirs; but the will was God's that I shculd survive the ordeal. He will show me the next step. You must forgive me for this breakdown."

४. एक प्रकार की शराब।

ने बापू की नाड़ी देखी और 'चलो' कहकर बाहर निकले। श्री भंडारी बंबई सरकार को टेलीफोन करने गए कि उपवास टूट गया है।

बाहर आकर छ: जनों की सही से बुलेटिन लिखी गई। श्री कैंडी खड़े बातें कर रहे थे। मैंने उनको धन्यवाद देते हुए कहा, "जनरल कैंडी, विदा। आपकी सहायता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद !" वे कहने लगे, "नहीं-नहीं, मेरी समझ में नहीं आता कि आपके बिना हम लोग क्या कर सकते थे !"

इतने में डा० गिल्डर आ गए और डा० विधान राय की प्रेस-प्रतिनिधि-भेंट का हाल सुनाने लगे। तभी डा० विधान राय भी पहुंचे। वे आज जा रहे हैं। बापू के साथ कुछ बातें करके जा रहे थे। उनको उपवास के संबंध में एक चार्ट-सा बनाकर दिया था। हाथ में लेकर कहने लगे, "विज्ञान आपको श्रद्धा के क्षेत्र में नहीं ले जा सकता। उपवास-संबंधी हरएक बात को आप विज्ञान से सिद्ध नहीं कर सकते।" बात सच्ची थी। कल-परसों मैं और डा० गिल्डर चकित हो रहे थे कि आठ-नौ औंस संतरे का रस लेने से वजन कम होना कैसे रुक सकता है ! डा० दीनशा मेहता भी कह रहे थे कि उपवास में संतरे लेने पर भी वजन तो एक-आध पौंड प्रतिदिन गिरता ही है। बापू का निदान तो निश्चित था—"ईश्वर ने ही मुझे शक्ति दी है। इसमें शंका को स्थान नहीं है।"

डा० विधान राय चले गए। बापू की मालिश इत्यादि पूरी करके डा० दीनशा और उनकी पत्नी भी चले गए। महल सुनसान-सा लगने लगा।

बापू ने दिन में दो-तीन बार रस, शहद और पानी लिया और आराम करते समय 'टेल आव दि टू सिटीज़' और 'हाउंड आव हैविन' पढ़ते रहे।

शाम को खाना खाने के बाद महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाकर हम लोग बेडमिंटन खेलने लगे। इतने में देवदासभाई आये। रोज इतने लोग आते थे, मगर आज फाटक बंद हो गए हैं। अब देवदासभाई व

रामदासभाई को ही आने की इजाजत है। रात को रामदासभाई देवदासभाई को लेने आये। माताजी और बापू की बहन (फई बा) बाहर मोटर में थे, मगर हम उनको देख तक नहीं सकते थे।

रात को बापू अच्छी तरह सोये। उपवास पूरा होते ही सरकार का रुख बदल गया है। फिर वही कड़ी निगरानी और बात-बात पर हुज्जत! ऐसा लगता है, सरकार को इस बात का अफसोस हो रहा है कि उपवास क्यों पूर्ण रूप से सफल हुआ!

: ४१ :

परिचारकों की बिदाई

४ मार्च '४३

प्रातः पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद भाई बापू के पांव दबाने लगे। बापू उपवास की बात करते हुए बोले, "मैंने ईश्वर का दर्शन जितना स्पष्ट इस उपवास में किया है, दूसरे किसी में नहीं किया। यों तो हरेक उपवास ईश्वरदत्त था और उसमें मैंने भगवान का दर्शन ही किया; मगर वह उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। मेरी शक्ति क्या थी? ईश्वर ने शक्ति दी। मेरा दृढ़ विश्वास था, श्रद्धा थी कि मुझे इस उपवास में अधिक तकलीफ नहीं होगी और हुई भी नहीं।" मैंने कहा, "पहले दो हफ्तों को छोड़ दें तो।" बापू कहने लगे, "हां, वह तो है।"

आज भी डा० दीनशा मेहता अपनी पत्नी के साथ बापू की मालिश आदि करने आये। भंडारी और शाह भी आये। बापू सोते थे। जब जागे तब उन्हें देखकर बुलेटिन लिखी—जनता के लिए अलग और सरकार के लिए अलग—और उसके पास भेज दी।

खुराक में आज भी बापू ने फल और ग्लूकोज ही लिया। कैलरी वैल्यू ७५० हो गई।

दोपहर को रामदासभाई आये। बापू उन्हें अहिंसक और हिंसक लश्कर का भेद समझाते रहे।

शाम को मीराबहन काफी समय बापू के साथ कविता इत्यादि की चर्चा करती रहीं।

घूमकर हम लौटे। देवदासभाई ने प्रार्थना में भजन गाया। प्रार्थना के बाद थोड़ा समय बापू के साथ बातें करके वे उठे और भाई के पास जा खड़े हुए। वे बाज शाम को बंबई से आये थे। मैंने उनसे कुछ खाने को कहा। उपवास के समय तो भाई किसीको पूछते ही नहीं थे; क्योंकि आने-जानेवाले बहुत थे। मगर अब तो केवल देवदासभाई ही आते हैं। सो मुझे लगा कि पूछ सकते हैं और उन्हें भी लगा कि वह निमंत्रण स्वीकार कर सकते हैं। दो-तीन मिनट में वे खाकर उठने ही वाले थे कि बापू ने कहलाया कि देवदास जल्दी जाय। वे उठे और चल दिए। मैं दरवाजे तक पहुंचा आई। मगर बापू इस घटना से बहुत चिढ़ गए। उन्हें लगा कि इस तरह रुकने में खतरा है। देवदासभाई आज देर से आये थे, सात के बदले आठ बजे। इसलिए जाने में भी रोज से थोड़ी देर हुई। बापू को वह ठीक न लगा। मुझे बहुत दुःख हुआ। बापू क्यों इतनी छोटी-सी बात के लिए नाराज हुए? खाने में पांच मिनट भी न लगे होंगे। इस उधेड़बुन में एक बजे तक नहीं सो सकी। बापू भी एक बजे सोये। वह बहुत थक गए थे।

५ मार्च '४३

आज बापू ने थोड़ा-सा दूध लिया। सरोजिनी नायडू मजाक कर रही थीं, "नवजात शिशु तो चार औंस दूध ही ले सकता है न!"

बाबला और कनु को अंग्रेजी सिखाना शुरू किया है। डा० दीनशा मेहता जब मालिश आदि शुरू करते हैं तब हम तीनों अभ्यास के लिए बैठ जाते हैं।

डा० दीनशा बापू के लिए कुछ फल लाये। उनमें पपीता भी था। बापू ने खाया, मगर दक्षिण अफ्रीका के फलों के बाद यहां के सामान्य फल उन्हें फीके ही लगते हैं।

भंडारी और शाह ने आकर बुलेटिन भेज दी। दिन भर घर सुनसान था। शाम को देवदासभाई के आने से काफी परिवर्तन हो जाता है। अच्छा लगता है।

उन्हें आज भी बंबई में कुछ काम था। प्रार्थना के बाद बापू से थोड़ी बात करके वे चले गए।

बापू को शाम के वक्त बेचैनी-सी लगती थी। पेट और सिर पर मिट्टी रखकर सो गए। अच्छी नींद आई।

६ मार्च '४३

यहां सुबह का कार्यक्रम रोज की तरह चला। भंडारी और शाह आये। भंडारी कहने लगे, "अब कल से बुलेटिन की क्या आवश्यकता है?" हम लोग भी मान गए। आज की बुलेटिन में लिख दिया कि बिना विशेष आवश्यकता के अब आगे बुलेटिन न निकाली जायगी। भंडारी कहने लगे कि कल से वे नहीं आवेंगे। डॉ० शाह आया करेंगे और सरकार को खबर भेजा करेंगे।

डा० दीनशा मेहता और उनकी पत्नी मालिश करके चले गए।

बापू को खाना खिलाकर मैंने स्नान किया। जब खाना खाकर लौटी तो एक बज चुका था। इतने में श्री कटेली आये और कहने लगे, "अखबार में आया है कि देवदास कुछ घंटों तक बापू के पास रहे थे। परिणामस्वरूप कल से उन्हें यहां आने की इजाजत नहीं मिलेगी। आज आखिरी दिन है।" बहुत बुरा लगा। कौन जाने आज वे आ भी सकेंगे या नहीं। बापू से कहा गया था कि देवदास की मुलाकात बंद करने से पहले उन्हें नोटिस दिया जावेगा; मगर आज एकाएक सब बदल गया। बापू सोते थे। उठने पर मैंने उन्हें बताया। क्षण भर उन्हें लगा कि परसों यहां देर हुई थी, वही कारण होगा; मगर मैंने याद दिलाया कि अखबार में तो पहले ही आया था कि चार दिन तक उन्हें आने देंगे। आज चौथा दिन है। परसों देवदासभाई मुश्किल से दो घंटे ठहरे थे। इतने की तो उन्हें इजाजत थी ही। बापू कहने लगे, "तू ठीक कहती है, मगर मेरा स्वभाव है कि अपनी तरफ से कोई भी कारण मिल सके तो उसे पकड़ लेना चाहिए।"

वाद में वापू ने दुर्गावहन और वावला को वुलाकर कहा, "देवदास के लिए इस तरह एकाएक हुक्म आ गया है तो तुम लोगों को भी एकाएक यहां से जाने के लिए सरकार कह सकती है, इसलिए तुम लोगों से आज ही थोड़ी वातें कर लेना चाहता हूं।" फिर वावला को क्या करना चाहिए, कहां रहना है, इस वारे में वातें करते रहे।

देवदासभाई मिरज नहीं गये थे। वे शाम को आये। रामदासभाई भी वंवई से आ पहुंचे।

प्रार्थना के वाद रामदासभाई वापू से वोले, "अव दूसरे उपवास के लिए हम पर दया रखना। हम तो पामर प्राणी हैं, इसका आपको विचार रखना चाहिए।" वापू कहने लगे, "यह तो तू ईश्वर से मांग, मैं कौन हूं? मुझसे जो मेरा मालिक करावेगा, वह मुझे करना पड़ेगा। यह उपवास भी मैंने कहां किया है? मैं तो जीना चाहता हूं। आगे ईश्वर की मर्जी!" दोनों भाई चले गए। श्री कटेली सारा समय साथ थे। अंत में उन्हें पहुंचाने के लिए हम लोग कमरे से निकले। श्री कटेली ने हमें वरसाती से आगे जाने की मनाही की, इसलिए हम वहीं रुक गए।

वापू की मालिश हो रही थी कि इतने में श्री कटेली आकर कहने लगे, "भंडारी का टेलीफोन था कि श्रीमती देसाई और उनके लड़के को सोमवार तक चला जाना चाहिए।" यह दूसरा धक्का था, मगर इसके लिए पहले की अपेक्षा हम लोग ज्यादा तैयार थे। मैंने उन्हें खबर दी। नारायण को दुर्गावहन से अधिक वुरा लगा। उसे यहां वहुत अच्छा लगता था। पहले तो वह कहता था कि उसे जल्दी जाना है; क्योंकि यहां जितना रहे, उतनी ही अधिक संभावना उसके लिए यहां से निकलने पर तुरंत पकड़े जाने की है। महादेवभाई की अस्थियां भी गंगाजी पहुंचाने को रखी थीं। उस कारण भी वे दोनों जल्दी जाना चाहते थे, इसीलिए वापू ने भंडारी से कहा था कि नर्सों में कनु ही रहेगा, मगर वाद में नारायण का मन वदला। वह भी कनु के साथ रहना चाहता था। मगर अव क्या हो सकता था!

७ मार्च '४३

बापू ने भंडारी से बा के लिए एक नर्स का इंतजाम करने को और मनु गांधी या मणिबहन पटेल को भेजने को कहा।

दोपहर को बापू ने दुर्गाबहन और नारायण के साथ थोड़ी बातें कीं। बाद में दुर्गाबहन मेरे साथ काफी समय तक बातें करती रहीं। वे पुराने दिनों को याद कर रहीं थीं और बात-बात पर उनकी आंखों में पानी आ जाता था।

रात को मौन लेने से पहले बापू ने मां-बेटे को फिर बुलाकर पूछा, "क्या कुछ कहना है?" दुर्गाबहन बोलीं, "और तो क्या कहूं, आप जल्दी आवें और हम लोगों पर दया रखकर फिर उपवास की बात न करें।" बापू ने उत्तर दिया, "यह उपवास भी मैंने नहीं किया। मैं तो राम के अधीन हूं। अगर मैं कर्त्तव्य-पालन की एक संपूर्ण मिसाल जगत् के सामने रख जाऊं तो मेरे लिए वह बस है।"

८ मार्च '४३

सुबह महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाकर लौटे तो दुःख हुआ था। आज नारायण की यह आखिरी पुष्पभेंट है। फिर वह यहां पर कब आ सकेगा, यह भगवान ही जानता है। नारायण के मन में था कि संभव है, किसी कारणवश उसका जाना टल जावे। कल भंडारी के साथ नर्स की बात हो रही थी तब बापू ने उससे कहा था कि अभी तक दुर्गा बा की मदद करती थी। अब वह जावेगी तो बा को दूसरे की आवश्यकता होगी। बापू ने जो नाम सुझाये, उनके अलावा किसी को बाहर से लाने की भी बात चली। दुर्गाबहन का नाम आया। भंडारी कहने लगे, "क्या वे ठहरेगी?" बापूने कहा, "ठहर तो जावेंगी।" मैंने कहा, "नारायण को उनसे अलग नहीं किया जा सकता। भंडारी कहने लगे, "उस बेचारे को अनिश्चित समय के लिए कैसे रोका जा सकता है? उसके लिए वह सजा हो जायगी।" नारायण ने बाद में सुना तो कहने लगा, "उनसे कहो कि मेरे लिए यहां रहना कोई सज़ा नहीं। मुझे यहां बहुत अच्छा लगता है। सेवाग्राम की तरह मेरा अभ्यास भी यहां अच्छा हो सकता है।" मगर

भंडारी से कुछ कहना फिजूल था। दोपहर को मां-बेटे को लेने के लिए दिलीपकुमार मोटर लाये।

दुर्गाबहन के जाने से पहले बापू ने उनको बुलाया। दुर्गाबहन ने फिर कहा, "जल्दी आना।" बा कहने लगीं, "पापी छोड़ें तब तो! वे किसीकी नहीं सुनते।" बापू का मौन था। उन्होंने लिखा, "सरकार भले न सुने; मगर सरकार के ऊपर भी एक बड़ा सरकार है। वह सबकी सुनता है। वह निर्बल का बल है।" साढ़े तीन बजे की गाड़ी पकड़ने के लिए वे लोग यहां से ढाई-पौने-तीन बजे निकले।

९ मार्च '४३

आज केवल डॉ० शाह आयें और सरकार को खबर भेजने के लिए कुछ बातें पूछ गए।

आज बापू का वजन लिया। ९९ पौंड निकला।

कल से बकरी के दूध का मक्खन निकालना शुरू किया है; क्योंकि बापू की खुराक की केलोरी वैल्यू[1] बढ़ाने के लिए मक्खन की आवश्यकता है। कल तो १/३ औंस निकला था, आज पौन औंस निकला।

१० मार्च '४३

आज से बापू ने भाई को भी अपनी सेवा में हिस्सा दिया, इसलिए मेरे पास दोपहर को दो-एक घंटे खाली बचे, जिनमें अखबार और कार्डियोलोजी की किताब देखती रही।

गर्मी बहुत पड़ने लगी है।

बापू का रक्तचाप सुबह नहीं देखा था। शाम को प्रार्थना से पहले देखा तो १२६/८२ निकला।

शाम को बापू के लिए गुड़ बनाया। दूध नहीं डाला। था ही नहीं।

११ मार्च '४३

आज भंडारी आये। कहने लगे, "कनु को यहां से जल्दी जाना होगा।' किसी दूसरे को सेवा के लिए दे सकेंगे।" मैंने कहा, "मगर बा की तरह

---

१. उष्णताजनक शक्ति।

नहीं होना चाहिए कि दुर्गाबहन चली गईं और कोई आया भी नहीं।" वे कहने लगे, "तुम अपना मत लिख सकती हो।" इसलिए दोपहर को मैंने और डॉ० गिल्डर ने लिखा कि हमारी समझ में बा को रोज के लिए और बापू को एक महीने के लिए नर्स की आवश्यकता है। कनु रह सके तो सबसे अच्छा होगा; क्योंकि वह बापू की आवश्यकताएं समझता है।

बापू ने आज शाम को सब्जी नहीं ली, मगर रात को उन्हें कब्ज-सा महसूस हुआ, इसलिए कल से दोनों वक्त सब्जी लेंगे।

बापू का रक्तचाप आज सोते समय देखा। १५६/९८ निकला।

कल वाले गुड़ में नीबू डालकर उसे आज फिर गरम किया। अच्छा बन गया है। अब बापू काफी गुड़ खा सकेंगे।

१२ मार्च '४३

आज भंडारी नहीं आये। दोपहर को उन्होंने कहलाया कि प्रेमाबहन यहां हैं और उन्हें बा के लिए बुला सकते हैं। चार लड़कों के भी नाम आये। उनमें से एक बालजीभाई का लड़का है। कनु की जगह कोई दूसरा आये, सरोजिनी नायडू को यह पसंद न था। हम सबको भी। जितने दिन में नया आदमी काम समझेगा, उतने दिन में उसके जाने का समय आ जावेगा। फिर वह सबके साथ कैसे हिल-मिल सकेगा, यह भी पता नहीं। मुझे तो एक ही चिंता है कि कोई भी आवे या जावे, बा को और बापू को संतोष हो तो ठीक है।

१३ मार्च '४३

भंडारी आज फिर आये और बापू से कहने लगे कि वे उन चारों में से किसीको चुन लें। कनु को तो भेजना ही होगा। दूसरे कुछ नाम उनके पास और आनेवाले थे। प्रेमाबहन के सिवा किसी बहन का नाम नहीं दिया था; मगर वे कहने लगे, "कनु के बारे में लिखा है। उत्तर जल्दी आ जावेगा।" बापू की इच्छा कनु के बदले में किसीको लेने की नहीं है; मगर भंडारी आग्रह करने लगे, "प्यारेलाल और सुशीला पर बहुत दबाव पड़ेगा। आप किसीको चुन लें।" शायद सरकार को शर्म आती होगी कि इस स्थिति में भी बापू के पास कोई मदद के लिए न हो, यह ठीक नहीं। उनके

जाने के बाद बापू ने मुझसे पूछा, "तुम लोगों को तय कर लेना चाहिए कि किसीको बुलाना है या नहीं।" मैंने कहा, "आप अगर किसीको नहीं बुलाना चाहते तो हमारी खातिर किसीको बुलाने को आवश्यकता नहीं हैं।" बापू को यह अच्छा लगा। खाने के समय भंडारी को एक पत्र लिखवाया कि सरकार का इस तरह का वर्ताव उन्हें अच्छा नहीं लगा। उन्हें कनु की जगह किसीको लेना पसंद नहीं; क्योंकि उसमें उनकी मानहानि है। पत्र श्री कटेली को दिया और उसे उन्होंने अधिकारियों के पास भेज दिया। हमें ऐसा लगने लगा कि शायद कनु को आज ही जाना पड़े।

डॉ० गिल्डर कहने लगे, "तुम, प्यारेलाल और मैं आठ-आठ घंटे ड्यूटी कर लिया करेंगे।" मुझे यह अच्छा लगा। जहां तक बनेगा, हम डॉ० साहब को कष्ट न देंगे। उनकी इतनी सहानुभति दिखाना ही काफी है।

१४ मार्च '४३

आज भंडारी फिर आये। आज वे डॉ० दीनशा मेहता के जाने की बात करने लगे। उनके पास एक ही रोज कनु और डॉ० दीनशा के बारे में आर्डर आया था, मगर वे हम लोगों को धीरे-धीरे खबर दे रहे थे। मैंने और डॉ० गिल्डर ने दोपहर को उन्हें एक पत्र लिखा कि डॉ० दीनशा को कम-से-कम इस महीने के अंत तक आने देना चाहिए। शुरू में इस बारे में बात भी हो गई थी। उस वक्त ऐसा कहा गया था कि कनु और डॉ० दीनशा के बारे में कोई मुश्किल नहीं आनेवाली है।

कल बापू कह रहे थे, "मेरे मन में अब धीरज है। जबतक रहना पड़ेगा, रहेंगे।" यह धीरज कायम रहे तो हमारे लिए बस है।

१५ मार्च '४३

आज भंडारी नहीं आये। कनु के बारे में भी कोई आर्डर नहीं आया। कल जो पत्र लिखा था, आज उसीमें कुछ सुधारकर फिर उसे भेजा।

मीरावहन को डॉ० मेहता के न आने की वात सुनकर सबसे अधिक दुःख हुआ। कहने लगीं, "मेरा इलाज अधूरा रह जायगा।" बात सच है। डॉ० मेहता नहीं आवेंगे तो इच्छा होने पर भी हममें से कोई मीरावहन की मालिश नहीं कर सकेंगे।

शामको खूब खेले। दिन में कोई खास घटना नहीं घटी।

बापू की चलने की शक्ति धीरे-धीरे बढ़ रही है।

१६ मार्च '४३

आज सुवह डॉ० शाह आयें। बापू का वजन लिया। १०२ पौंड निकला। तीन पौंड पिछले हफ्तों में बढ़ा है। बापू खाना खा रहे थे तब कटेली साहब आये। उन्हें भंडारी ने टेलीफोन किया था कि डॉ० मेहता दूसरा आर्डर आने तक आ सकते हैं। हमारे पत्र का कुछ असर हुआ दीखता है।

१७ मार्च '४३

कनु ने करीब एक हफ्ते के वाद आज फिर मुझसे व्याकरण पढ़ना शुरू किया।

शाम बा को दिल की धड़कन का दौरा हुआ। करीब दो घंटे चला। फिर अपने-आप ठीक हो गया। गले के पीछे की एक नस को दवाने से हमेशा उनका दौरा वंद हो जाता है, पर आज नहीं वंद हुआ। उनके लिए 'क्विनिडीन सल्फेट' दवा मंगा भेजी, मगर दूकान वाले ने 'क्विनीन सल्फेट' भेज दिया। कैसा दुकानदार है! अगर कहीं किसी नुस्खे में डाला होता तो भूल का हमें पता भी न चलता।

रात को मीरावहन, कनु और मैंने एक साथ 'व्हेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रास' गाया। अच्छा लगा। पीछे भाई के साथ थोड़ी देर पढ़ती रही।

वा रात को अच्छी तरह सो गईं। गर्मी सख्त थी।

१८ मार्च '४३

आज सुवह भंडारी आये। कहने लगे कि मेहता और कनु २६-२७ मार्च तक चले जावें तो उचित होगा। मैंने कहा कि लगभग ठीक है।

बोले कि अब लगभग की बात न करो। फिर कहने लगे कि बहुत करके डॉ० गिल्डर अब यहीं रहेंगे। मनु आ जावेगी, मगर मनोज्ञाभाभी और मनु गांधी दोनों में से किसको बुलाते हैं, यह उन्हें पता नहीं चलता था, इसलिए पूछ गए।

बा आज बिलकुल अच्छी थीं। सुबह आराम करने को कहा तो मुझसे चिढ़ गईं। जब उनकी तबीयत ठीक रहती है तब उन्हें बिठा रखना कठिन होता है।

: ४२ :

सरोजिनी नायडू की बीमारी और रिहाई

१९ मार्च '४३

आज सरोजिनी नायडू की तबीयत अच्छी नहीं है। सिर में चक्कर आते हैं। पतले दस्त हो गए हैं। नाड़ी तेज है और कमजोरी लगती है। रात में उनके पास कनु को सुलाया। मैंने उनके पास सोने को कहा तो उन्होंने मनाही की। कहने लगीं, "तुम्हारी बापू के पास आवश्यकता होगी।"

सुबह डॉ० शाह आये। सरोजिनी नायडू की तबीयत उस समय अच्छी थी, मगर तो भी वे बहुत दिनों से बीमार-सी हैं। डॉ० शाह कह रहे थे, "अगर वे चली जायें तो तुम लोगों की देखभाल कौन करेगा ?" मगर हमारी देखभाल के लिए उन्हें रोका थोड़े ही जा सकता है। उनकी तबीयत को देखते हुए उन्हें छोड़ना ही चाहिए।

२० मार्च '४३

आज भी सरोजिनी नायडू बीमार हैं। थोड़ा बुखार भी है। चक्कर तो आते ही रहते हैं। सुबह भंडारी और शाह आये। उन्होंने रिपोर्ट भेजी है कि सरोजिनी नायडू को बहुत बीमार समझना चाहिए। शाम को फिर आये। उन्हें अस्पताल जाने को कहने लगे। सरोजिनी नायडू ने

इंकार किया। उन लोगों ने काफी जोर लगाया, मगर वे न मानीं। तव वे बापू को बुलाकर ले गए। वे बोलीं, "अस्पताल के बजाय मैं घर जाना पसंद करूंगी।" मगर घर जाना तो सरकार के हाथ में रहा। आखिर इतना मानीं कि गुसलखाने उठकर नहीं जावेंगी।

मनु भी शाम को आ गई। नागपुर जेल की बातें बताती रही।

भंडारी ने आज कहा कि डॉ० दीनशा का आना सोमवार से बंद करने का विचार है। प्यारेलालजी उनकी जगह मालिश कर सकते हैं। भाई ने उन्हें दोपहर को पत्र लिखकर बताया कि वे दीनशा की जगह क्यों नहीं ले सकते।

२१ मार्च '४३

कल रात मैं सरोजिनी नायडू के पास सोयी। वे काफी सोती रहीं। बीच-बीच में उठकर बैठ जाती थीं। बुखार तो था ही। सुवह छः बजे मापा तो १०१ निकला, दिन में फिर बढ़ा और दोपहर को १०५ तक गया। डॉ० शाह आये। भंडारी बंबई गये थे। बापू ने डॉ० शाह से सरोजिनी नायडू के लिए एक नर्स लाने को कहा। डॉ० शाह कहने लगे कि साढ़े दस बजे भंडारी बंबई पहुंचेंगे। ग्यारह-बारह बजे उन्हें टेलीफोन करके वे पूछेंगे। मगर दोपहर को भंडारी का टेलीफोन आया कि सरकार ने सरोजिनी नायडू को छोड़ डिया है। वे कहां जाना चाहती हैं, यह पूछ लें। सरोजिनी नायडू ने पर्णकुटीर जाना पसंद किया।

सुबह श्रीमती दीनशा मेहता आकर सरोजिनी नायडू की देखरेख करने लगीं। उनका बुखार तेज था। मैं और मीराबहन भी दूसरे कामों से समय निकालकर आते-जाते रहते थे। आज सुबह हमने सरोजिनी नायडू के कमरे से खाने की मेजें निकाली थीं ताकि उनको आराम मिल सके। सामान की अल्मारी निकालने की तैयारी में थे कि दोपहर को उनके छूटने की खबर आ गई। उनका सामान बांधा। मैंने जो तस्वीरें बनाकर उन्हें दी थीं, उन पर कोई चीज रखी जाने से धब्बे पड़ गए थे, इसलिए उन्हें ठीक किया। श्रीमती सरोजिनी नायडू को तैयार किया। पांच बजे डॉ० शाह आये और एंबुलैंस कार मंगवाई। करीब साढ़े पांच बजे

सरोजिनी नायडू रवाना हुईं। उनका बुखार १०२ पर आ गया था; मगर उल्टियां खूब हो रही थीं। डॉ० दीनशा मेहता, उनकी पत्नी और डॉ० शाह उनके साथ गये। वे पर्णकुटीर जा रही थीं। उनके जाने के बाद घर सूना हो गया।

डॉ० दीनशा ने आज सरकार को एक खत लिखा है, जिसमें उपवास के बारे में अपने अनभव की चर्चा की है और कहा है कि उन्हें गांधीजी की सेवा में और लंबे अर्से तक रहने की आवश्यकता है।

: ४३ :

अहिंसा का प्रयोजन

२२ मार्च '४३

सरोजिनी नायडू के जाने से घर बहुत सूना हो गया है।

आज बापू की मालिश मैंने और भाई ने मिलकर की। डॉ० गिल्डर भी पास खड़े थे। बोले, "बापू को कहीं यह न लगने पाए कि दीनशा गये तो अब उनके लिए कुछ होता ही नहीं है। इससे तबीयत का सुधार रुक सकता है।"

२३ मार्च '४३

भाई का हाथ कट गया था, इसलिए मैं मालिश कर रही थी। इतने में डॉ० गिल्डर ने आकर दूसरी तरफ की मालिश शुरू कर दी। भाई आये और हंसते-हंसते कहने लगे, "जरा मैं भी तो देखूं कि दो एम० डी० कैसे मालिश करते हैं!" बापू से पूछा, "कैसा लगा?" वे भी हंसने लगे। बोले, "चलेगा। मैं जल्दी प्रमाणपत्र देनेवाला नहीं हूं।"

२४ मार्च '४३

बापू को आज करीब आधे फर्लांग तक चलाया। धीरे-धीरे चलना बढ़ा रहे हैं। मालिश आज भी डॉ० गिल्डर ने और मैंने की।

मनु ने बा का सेवा-कार्य अच्छी तरह संभाल लिया है। बा अब घर के काम में भी रस लेती हैं। उनकी तबीयत भी अच्छी जान पड़ती है।

गर्मी बढ़ती ही जाती है। दोपहर को बापू के कमरे में करीब एक हफ्ते से पंखा चलता है।

२५ मार्च '४३

आज शाम को जब मैं कनु को व्याकरण सिखा रही थी तब देखा कि बा लेटी हैं। उठकर पूछने गई तो पता चला कि वही दिल की धड़कन का दौरा हो गया है।

आज पौने चार घंटे तक यह दौरा चला। रक्तचाप शुरू में १४०/९० था, बाद में ९६/६६ पर जा पहुंचा। थोड़ी देर शंका हुई कि संभवतः मस्तिष्क में खून की गांठ (कोरोनरी थोम्बोसिस) होगी, मगर उसके जैसी बेचैनी न थी। बा का सामान्य रक्त-चाप ११०/७० था। उस हिसाब से तो रक्तचाप बहुत नहीं गिरा था। मगर तो भी चिंता काफी हो गई। डॉ० शाह को खबर दी। वे आये। दिल की धड़कन का चित्र लेने के लिए कोयाजी को फोन किया। उनकी मोटर उन्हें उस समय नहीं मिल सकती थी, इसलिए डॉ० शाह उन्हें लेने गये। उनकी मोटर छोटी थी। सो घर जाकर अपनी बड़ी मोटर लाये। फिर कोयाजी के यहां थोड़ा रुकना पड़ा। नतीजा यह हुआ कि डॉ० शाह धड़कन का चित्र लेने की मशीन लेकर आये। उससे दो-चार मिनट पहले दौरा बंद हो चुका था। ई० सी० जी० नार्मल निकला। अफसोस हुआ कि मशीन वक्त पर नहीं पहुंची।

रात में बा को नींद अच्छी आई, मगर डरती थीं कि कहीं फिर से कुछ न हो जाय।

२६ मार्च '४३

टॉटेनहम का उत्तर भाई को मिला। 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' वाली किताब के बारे में भाई ने उनसे पूछा था कि क्या वे उसे गांधीजी को भेजेंगे? उन्होंने लिखा कि गांधीजी चाहते हैं तो भेजेंगे।

बापू आज उपवास के बाद पहली बार शाम को महादेवभाई की समाधि पर गये। कनु चाहता था कि उसके जाने से पहले वे वहां हो आवें।

२७ मार्च '४३

आज कनु को जाना था। दिन का काफी समय उसके साथ बातचीत में गया। भाई की अपनी घड़ी ठीक हो कर आ गई थी। उन्होंने वह मुझे कनु को देने के लिए दी। जाते समय घड़ी का रक्षाबंधन मैंने उसे बांध दिया। उसका जाना अखर रहा था, क्योंकि वह बहुत हंसाता रहता था और काम भी खूब करता था। उसके जाने से बहुत सूना लगने लगेगा। सोचा था कि जाने से पहले मुझे कुछ भजन भी सिखा देगा। मगर वह न कर सका। शाम को प्रार्थना के बाद गाड़ी उसे ले गई।

रात में काफी समय तक डॉ० गिल्डर, भाई, कटेली साहब और मैं साथ ही बैठे रहे। डॉ० गिल्डर अपने पुराने अनुभव सुनाते रहे।

सरोजिनी नायडू की खबर अच्छी है। बा अभी तक काफी अशक्त हैं।

आज शाम को भी बापू महादेवभाई की समाधि पर गये।

२८ मार्च '४३

आज मालिश के समय श्री कटेली खबर लाये कि रामदासभाई को एक मुलाकात की इजाजत मिली है। बापू ने चार बजे उन्हें बुलवाया था, लेकिन वे पांच बजे आये। बा को बहुत अच्छा लगा। हम हँस रहे थे। हफ्ते में एक बार एक पुत्र उन्हें मिल जावे तो उनकी तबीयत अच्छी रहे। मैंने डॉ० गिल्डर से हँसी में कहा, "आप नुस्खा लिखिए।"

रामदासभाई के जाने के बाद हम लोग खाने बैठे। इतने में बापू नीचे समाधि पर फूल चढ़ाकर आये। पीछे हम लोग उनके साथ घूमे। आज बापू आधा घंटा घूमे।

दोपहर को भाई के साथ बातें होने लगीं। भाई बोले, "अहिंसा के असर से हिंसा की वृद्धि हो तो वह आश्चर्यजनक बात ही कही जा सकती है न! अपनी और मुस्लिम लीग की मिसाल लीजिए। जितनी आपकी अहिंसा बढ़ती है, उतना ही उन लोगों का जहर बढ़ता है। यह क्यों?"

वापू कहने लगे, "ऐसा ही होना चाहिए और यह मैं नई चीज नहीं कह रहा हूं। दक्षिण अफ्रीका में भी वही हुआ था। वहां एक वर्ग ऐसा पैदा हो गया था, जो मेरे खिलाफ जहर उगलता रहता था और मुझे मारने तक को भी तैयार था और वह ऐसी जगह में, जहां मैं बच्चे-बच्चे को पहचानता था। अहिंसा का काम ही है सव मैल ऊपर ले आना। दूसरे शब्दों में अहिंसा का काम भंगी की तरह सफाई करने का है।

"डोक जब मेरे बारे में अपनी किताव लिखकर लाया था तब मुझसे उसे नाम क्या देना, यह पूछने लगा। मैंने कहा—मैं नहीं वता सकूंगा। उसने नाम पसंद किया था: 'ए स्कैवेन्जर' (एक मेहतर); मगर उस नाम का एक उपन्यास भी था, इसलिए उसे वह नाम पसंद न था। मुझे तो पसंद था; मगर पोलक ने उसे रद्द किया। आखिर डोक की क़िताव को 'एन इंडियन पेट्रियॉट इन साउथ अफ्रीका' (दक्षिण अफ्रीका में एक भारतीय देश-प्रेमी), यह नीरस-सा नाम मिला।" फिर डोक कैसे उनके पास आया, यह वताते रहे।

: ४४ :

गुप्त नीति का विरोध

२९ मार्च '४३

आज बापू का मौन था। श्री कटेली को वुखार आ गया। गला खराव है। वा का ठीक चलता है, लेकिन वह कुछ कमजोर हैं।

भाई ने बताया रात में सोते समय उन्होंने वापू से पूछा, "जनता में विचारों के समन्वय के द्वारा संगठन हो सके तो सर्वोत्तम है, किंतु आज की परिस्थिति में अगर अहिंसा के मार्ग पर जनता को लाने के लिए गुप्त नीति अनिवार्य हो तो भी उसे आप क्या त्याज्य मानेंगे?"

वापू ने उत्तर दिया, "हां।"

वापू का मत है कि यह दलील भूल से भरी है। कहने लगे, "आज चाहे

गुप्त नीति व्यवहार की दृष्टि से लाभदायक लगे, मगर अंत में यह देखने में आवेगा कि उससे फायदे की जगह हानि अधिक होती है। इस रास्ते से हम सामुदायिक अहिंसक क्रांति के ध्येय को नहीं पहुंच सकते। उलटे इस ध्येय के रास्ते में उससे रुकावट आ सकती है। मुझे इसमें शंका नहीं। इस चीज के गर्भ में ही उसकी निष्फलता के बीज पड़े हैं।"

३० मार्च '४३

आज अखबार में खबर थी कि डॉ० विधान राय को यहां आने की इजाजत नहीं मिली।

बापू को शाम को कुछ जल्दी घुमाने ले गई। थोड़ी देर घूमकर वे महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाने को गये। मीराबहन नाराज हो गई कि इतनी जल्दी बापू को घुमाने नहीं ले जाना चाहिए था।

३१ मार्च '४३

शाम को बापू मीराबहन के साथ बातें करने लगे। मीराबहन ने पूछा, "आपका विचार है कि जो लोग गुप्त नीति से आंदोलन चला रहे हैं, वे अपने को सरकार के हवाले कर दें। मैं जानती हूं कि सतयुग की आदर्श स्थिति में ऐसा होना चाहिए, लेकिन हमें तो आज जैसी दुनिया है, उसी के साथ चलना है। बिना नेताओं के आंदोलन कैसे आगे बढ़े ?"

बापू बोले, "मेरा तो यही कहना है कि अपने को सरकार के हवाले कर देने के फलस्वरूप आंदोलन खूब आगे बढ़ेगा। हमारे साधन जितने पवित्र होंगे, उतना ही देश के लोगों के लिए अच्छा होगा। अगर मेरे बताये रास्ते पर चले होते तो दो में से एक बात होकर रहती। या तो सिर्फ वे लोग, जो सत्य और अहिंसा में पक्का विश्वास रखते हैं, आंदोलन में हिस्सा लेते, जिससे कि आंदोलन ठंडा न पड़ने पाता जैसा कि वह पड़ गया है; या कोई भी उसमें हिस्सा न लेता। इन दोनों रास्तों से हमें गुप्त नीति जैसे गलत तरीकों से छुटकारा मिल जाता। तोड़-फोड़ के आंदोलन को हमारे सिर मढ़कर खूब प्रचार किया गया है। बेशक तोड़-फोड़वालों ने साहस और

कुशलता तो बहुत दिखाई है, लेकिन इस सबका मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मैं जानता था कि तरीका गलत है और आंदोलन को जल्दी-से-जल्दी बंद हो जाना चाहिए। जब सरकार ने कहा कि उसने परिस्थिति पर काबू पा लिया है तो मैंने उसकी बात पर विश्वास कर लिया, लेकिन सरकार में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह देशव्यापी आंदोलन पर काबू पा सके। आंदोलन तो हमेशा नया बल पाकर चलता रहेगा।"

मीराबहन बोलीं, "दुबारा जब आंदोलन होगा तो या तो पूर्ण अहिंसात्मक होगा या पूर्ण हिंसात्मक।"

मैंने पूछा, "आपने तो कहा था कि इस वक्त हमारा लड़ाई का तरीका जेलें भरना नहीं है, फिर सरकार के हवाले अपने को कर देने की यह सलाह क्या उसके विरुद्ध नहीं है?"

बापू कहने लगे, "नहीं, मैंने कहा था कि हम गिरफ्तारी का आवाहन न करके मृत्यु का करें। अगर हमारे काम के दौरान में हम पकड़े जाते हैं तो कोई बात नहीं है। मान लो, जयप्रकाश अपने को सरकार के हवाले कर दे तो इसमें शक नहीं कि उसे कड़ी सजा मिलेगी, लेकिन उससे हमारा पक्ष मजबूत बनेगा। सरकार के हवाले अपने को करने से लोग अपने गलत कदम को वापस ले लेते हैं। उससे हमें कोई नुकसान नहीं हो सकता।"

मीराबहन कहने लगीं, "आपका यह विश्वास कि लोगों के प्रकट होने और परिणाम भुगतने से परिस्थिति सुधर जायगी, तर्क के आधार पर नहीं लगता, आपकी अंतर्प्रेरणा के आधार पर ही समझना चाहिए।"

बापू बोले, "वह तो है ही। सत्य और अहिंसा से किसीको हानि नहीं हो सकती।"

१ अप्रैल '४३

शाम को बापू मीराबहन के साथ एमरी के भाषण की बातें करते रहे। बापू हँसकर कहने लगे, "या तो मैं इन बातों पर त्यौरी चढ़ाऊं या कटु बन जाऊं अथवा हँस दूं। हँस देना बहुत अच्छा है।"

पीछे बापू मनु की चौथी रीडर लेकर मीराबहन को उसमें से कुछ

समझाते रहे और उनसे व मुझसे किताब पढ़ने को कहा। मनु को उन्होंने इतिहास और व्याकरण भी पढ़ाया।

दोपहर को सख्त गर्मी रही। दिल्ली के जून महीने का-सा मौसम है। शाम को ठंडी हवा चली।

प्रार्थना का समय सवा आठ हो गया है।

२ अप्रैल '४३

आज बापू को सुबह घूमते समय कमजोरी मालूम हो रही थी, कारण रात में नींद का कम आना और कल सुबह नाश्ता न करना हो सकता है। उपवास के समय पहले तीन-चार दिन तक बापू को कमजोरी महसूस नहीं होती थी। अब एक समय का नाश्ता छूटने का भी असर होता जान पड़ता है।

दोपहर को आज भी नहीं सोयी, पढ़ती रही। सुबह भी प्रार्थना के बाद नहीं सोयी थी।

वाइसराय का राजाजी आदि को जो उत्तर मिला है, वह गजब का है। समझ में नहीं आता कि कोई ठीक दिमाग वाला आदमी कैसे इस तरह की बातें कर सकता है। नीरो के या जार के जमाने में चाहे ऐसा होता रहा हो, मगर आजकल के जमाने में दुर्योधन की तरह सुई की नोक जितनी जमीन भी देने से इंकार करना मनुष्य को चकित कर देता है।

३ अप्रैल '४३

बा को कल से पेशाब में जलन की शिकायत है। आज और बढ़ी है। बुखार भी आ गया। पेशाब पानी-सा साफ नहीं है। स्याहीचूस से छानने पर भी साफ नहीं हुआ। उसमें थोड़ी-सी चर्बी और पीप है। पहले बी-कोलाई × हो चुका है। वही फिर उभरा होगा। प्रार्थना के बाद बा कहने लगीं, "मेरे पास बैठी रहो।" मैं बैठी रही। उन्हें नींद आई तब मच्छर-दानी लगाकर चली आई।

डॉ॰ गिल्डर बंबई के मेयर चुने गए हैं।

४ अप्रैल '४३

बा की तबीयत काफी अच्छी है। कमजोरी है, लेकिन बुखार और जलन नहीं है।

बापू सुबह-शाम अब महादेवभाई की समाधि पर जाते हैं और आधा घंटा घूमते हैं।

गर्मी कल से कुछ कम है। बापू के कमरे में तो तीन-चार दिन से खस की टट्टी लगी है, इसलिए वहां खासी ठंडक रहती है।

५ अप्रैल '४३

बा की तबीयत कुछ अच्छी है। कमजोरी काफी है। बापू का मौन है। अच्छा नहीं लगता।

: ४५ :

राष्ट्रीय सप्ताह

६ अप्रैल '४३

आज वजन लेने का दिन है। बापू चार पौंड बढ़े। हँसकर कहने लगे, "ऐसा ही बढ़ता गया तो मुझे वजन कम करने के लिए उपवास करना पड़ेगा।"

शाम को घूमते समय मनु पूछने लगी, "हमारे लोगों ने जो आंदोलन चलाया था, वह अगर अच्छी तरह चलता रहता तो अंग्रेजों को झुकना पड़ता या नहीं ?" बापू बोले, "मगर यह तोड़-फोड़ की लड़ाई अहिंसक लड़ाई न होती।"

मनु कहने लगी, "न सही। अहिंसा को ये लोग समझते कहां हैं ?" बापू बोले, "तो भी अगर हिंदुस्तान का इतिहास देखो तो पता चलेगा कि हिंसा के मार्ग पर चलकर हिंद ने हमेशा मार ही खाई है।"

बापू सदा से कहते आए हैं कि हिंदुस्तान के अंग-अंग में अहिंसा भरी है। अहिंसा हिंद के लिए स्वाभाविक है, हिंसा अस्वाभाविक।

७ अप्रैल '४३

आज याद आया कि कल से राष्ट्रीय सप्ताह शुरू हुआ है। हम लोग उसे भूल ही गए थे। छः और तेरह तारीख को सामान्यतः हम लोग उपवास करते हैं। निश्चय किया कि अब तेरह को करेंगे। बापू को याद न आया

तो हम उन्हें बारह को याद दिलावेंगे। मगर बापू थोड़े ही भूलने वाले थे। समाचारपत्रों में भी राष्ट्रीय सप्ताह का उल्लेख है, इसीलिए बापू ने कल उपवास करने का विचार किया। कातते तो हम सब हैं ही। इस हफ्ते में कुछ अधिक कातेंगे। मीराबहन के सिवा कल सबका उपवास होगा।

८ अप्रैल '४३

बापू ने आज दो बार आधा-आधा घंटा करके काता। डॉ० गिल्डर भी मुझसे पूनी लेने आये और तीन पूनी ले गए। वे तकली पर कातते हैं। सुना है, सूत बारीक निकालते हैं, लेकिन गति बहुत धीमी है। बापू ने टॉटेनहम के सेक्रेटरी के पत्र का उत्तर तैयार किया।

बापू ने वाल्मीकि-रामायण का गुजराती अनुवाद पढ़ना पूरा किया। कल से संस्कृत शुरू करेंगे।

९ अप्रैल '४३

हमें जेल में आये आज आठ महीने पूरे हुए। भगवान जाने अभी और कितने पूरे करने होंगे!

मैंने बापू के साथ बीस श्लोक वाल्मीकि-रामायण के पढ़े। भाषा सरल है।

१० अप्रैल '४३

आज गर्मी कम पड़ी है, इसलिए बापू ने अपने कमरे में खस की टट्टी लगाने से मना किया।

मीराबहन थोड़े दिनों से रोज शाम को खेलने आती हैं। बहुत रस लेती हैं। रात को कैरम भी खेलती हैं।

बापू 'हाफुस' (Alfonso) आम खाने से इंकार करते हैं। गरीबों को ये नहीं मिल सकते, इसलिए बापू भी नहीं खाना चाहते।

११ अप्रैल '४३

डॉ० शाह और भंडारी आये। डॉ० गिल्डर से बापू की रक्त-परीक्षा की रिपोर्ट वगैरा के बारे में मत पूछा। बाद में लिख भेजने को कहकर चले गए।

१२ अप्रैल '४३

आज बापू का मौन है, इसलिए उनके साथ रामायण और बाइबिल नहीं पढ़ी। दूसरी पढ़ाई भी बहुत कम हुई। कल कैदियों को कुछ खाना देने का विचार किया है। उसका प्रबंध करने में कुछ समय गया। पिछली दफा उपवास के दिन बापू ने कहा था कि कैदियों को दूध क्यों नहीं दिया, इसलिए मैंने निश्चय किया था कि तेरह तारीख को उपवास होगा, तब ऐसा ही करूंगी।

१३ अप्रैल '४३

आज राष्ट्रीय सप्ताह का आखिरी दिन है। घर में सबका उपवास है। सब-का-सब दूध इकट्ठा करके कैदियों को चाय दी, साथ में हलुआ और थोड़े-थोड़े दाल-सेव। यह तो नाश्ता हुआ। दोपहर को खिचड़ी, सब्जी और केले सबको बांट दिये। बापू ने उन्हें राष्ट्रीय सप्ताह क्या है और इसका जन्म कैसे हुआ, यह सब समझाया।

: ४६ :

सरकारी आरोप पत्र और उसका उत्तर (१)

१४ अप्रैल '४३

सरकार की पुस्तिका 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' आ गई है। बापू उसे पढ़ते रहे। पुस्तिका में लाल स्याही से कई जगह सुधार किये गए हैं। बा बहुत कमजोर हैं। मानसिक स्थिति शारीरिक स्थिति को और बिगाड़ती है।

१५ अप्रैल '४३

आज भी बापू टॉटेनहम की पुस्तिका पढ़ते रहे। अब उसका जवाब लिखना शुरू करेंगे। सुबह वे डॉ० गिल्डर को अपने कुछ पुराने अनभव बता रहे थे और दादाभाई नौरोजी व गोखले इत्यादि का भी उल्लेख किया। सार यह था कि बुद्धिमान लोग भला काम करने के बाद किसी को उसका पता नहीं लगने देते।

१६ अप्रैल '४३

बापू ने टॉटेनहम को उत्तर लिखना शुरू किया।

बा थोड़ी अच्छी दिखती हैं।

१७ अप्रैल '४३

शाम को खेलते समय भाई के पैर के अंगूठे में चोट आई। शायद हड्डी टूट गई हो। बहुत दर्द था।

डॉ० गिल्डर ने कमर और टांग के दर्द (साइटिका) के लिए रात में सोने से पहले आधा घंटा उनकी मालिश की।

१९ अप्रैल '४३

कल रात कुछ आम आये थे। उनमें से अधिकांश कैदियों को बांट दिए बाकी घर में काम आ गए।

बापू आज भी रात में दस बजे तक लिखते रहे। मैं बैठकर 'हरिजन' में से सरकार की पुस्तिका में उद्धृत किये गए अंशों को निकाल रही थी। उनके उत्तर भी उन्हीं लेखों में भरे पड़े हैं! मगर सरकार ने अपने काम के वाक्य चुन लिये थे। डॉ० गिल्डर भी बैठे थे। बारह बजे सोये।

बापू का मौन था, इसलिए रामायण और बाइबिल नहीं पढ़ सकी।

२० अप्रल '४३

आज वजन का दिन है। बापू का वजन एक पौंड कम हुआ। मेरा भी एक पौंड कम हुआ है। और सबका बढ़ा है।

डॉ० शाह सुबह आये। कल बा के रक्त की परीक्षा करावेंगे। आज उनके पेशाब में फिर मवाद था।

२१-२७ अप्रैल '४३

सरकारी पुस्तिका के उत्तर में बापू की सहायता करने में चार दिन लगे। उसके बाद तीन रोज उसी विषय में भाई की मदद की। बापू के उत्तर में उन्होंने जो सुधार किये थे, उन्हें अलग उतारा। एक शाम उसमें गई। डॉ० गिल्डर, मीराबहन और मैंने, सबने साथ बैठकर वह काम किया।

मनु घूमते समय बापू से कहानी सुना करती है।

हां, हमारा हिरण चला गया है। बापू ने कहा था कि इसे बंद देखा

नहीं जाता। बेचारा अकेला कैद में पड़ा है। इसे दूसरे हिरणों के साथ कहीं रखो या छोड़ दो। अगर छोड़ें तो उसे जंगली जानवर खा जावेंगे। सो आठ आदमी आकर उसे पकड़ ले गए।

२८ अप्रैल '४३

आज रामदासभाई मुलाकात के लिए आये। उन्होंने सरकार से बहुत कहा; मगर उत्तर मिला कि मुलाकात नहीं हो सकती। सब आशा छोड़ देने के बाद कल रात श्री कटेली का उन्हें टेलीफोन गया कि मुलाकात की इजाजत मिल गई है और कल चार बजे आइये।

बापू आजकल हँसकर कहा करते हैं कि हमें यहां सात वर्ष तक रहना है। रामदासभाई बताने लगे कि अम्तुस्सलाम बहुत चिंता करती हैं कि बापू फिर उपवास करेंगे तो क्या होगा! बापू बोले, "हमारी तो सात वर्ष यहां रहने की तैयारी है।" रामदासभाई ने कहा, "तो आप धैर्य पूर्वक सात वर्ष तक यहां रहना चाहते हैं, इसका मैं अम्तुस्सलाम को आश्वासन दे दूं?"

बापू ने कहा, "अरे, सात वर्ष तो क्या, मुझमें तो जिंदगी भर यहीं रहने का धीरज है।"

२९ अप्रैल '४३

कल शाम को खेलते समय हाथ में चोट लगने के कारण आज बापू की मालिश नहीं कर सकी। शाम को पांच मिनट बाएं हाथ से खेली। बापू नाराज हुए, "क्या दूसरा हाथ भी बिगाड़ने का शौक है?"

सुबह मालिश के समय गड़बड़ हो गई। मैंने मान लिया कि डॉ० गिल्डर और भाई समय पर पहुंच जावेंगे। भाई ने सुबह कहा था कि वे मालिश करेंगे। मैं स्नान करने को चली गई। आकर देखा तो बापू मेज़ पर पड़े थे। मालिश करनेवाला कोई नहीं था। डॉ० गिल्डर के पास गई। उनकी आंख का कल आपरेशन हुआ था। पट्टी बंधी थी। इसलिए वे मालिश करने नहीं आ रहे थे। भाई को बुलाने गई। वे स्नान करने गये हुए थे। उन्हें बुलाकर लाई। साढ़े नौ बजे मालिश शुरू हुई। बापू कहने लगे, "मुझे देखना चाहिए था कि मालिश समय पर शुरू होती है कि नहीं।"

३० अप्रैल '४३

डॉ० गिल्डर के घर से आमों का पार्सल आया। आज उनके विवाह की २९ वीं सालगिरह है। बा ने सुना तो बापू से पूछने लगीं कि उनके विवाह को कितने साल हुए हैं...?" बापू मजाक करने लगे, "बा भी अपने विवाह का दिन मनाना चाहती हैं?" हम लोग खूब हँसे।

१ मई '४३

आज कलेक्टर आनेवाला था। बापू ने जल्दी मालिश शुरू करवाई। तैयार भी जल्दी होगए। आज भाई, डॉ० गिल्डर और मैं, तीनों जन मालिश में रहे।

बाद में मैंने डॉ० गिल्डर इत्यादि के लिए मिठाई बनाई। दोपहर के बाद निश्चित कार्यक्रम चला। कुछ समय भाई के साथ बैठी। शाम को बापू साढ़े सात की जगह सात बजे घूमने निकल पड़े। आधा घंटा शाम को और एक घंटा रात को लॉर्ड सैमुएल के लिए मुझे पत्र लिखाते रहे।

२ मई '४३

बापू ने काफी समय तक लिखवाया, इसलिए भाई को नाममात्र का ही समय दे सकी। मगर रामायण और बाइबिल की पढ़ाई बापू के साथ हुई। लॉर्ड सैमुएल वाला खत पूरा हुआ। रात को बापू ने उसे दुबारा पढ़कर कुछ और बढ़ाया।

शाम को खूब आंधी आई। हवा-पानी का इतना वेग रहा कि आदमी उड़ जावे। भाई के कुछ कागज उड़े। उन्हें लेने नीचे गई। हवा के वेग से सीढ़ी पर से गिरती-गिरती बची।

३ मई '४३

आज बापू का मौन था। लगभग सारा समय भाई के साथ बैठी। शाम को फिर आंधी आई, पीछे जोर की वर्षा। बाहर तो खेल नहीं सकते थे। बरसाती में खड़े होकर थोड़ी देर तक हम लोग रिंग खेलते रहे। इतने में बापू घूमने को निकले। ऊपर बरामदे में ही घूमे।

बापू ने जिन्ना साहब को पत्र लिखा।

४ मई '४३

बापू ने जिन्ना साहब को जो पत्र लिखा था, वह आज की डाक में गया। डॉ० गिल्डर ने टाइप किया था।

५ मई '४३

भाई सुबह पांच बजे उठकर काम करने बैठे, लेकिन उन्होंने उन्हीं कागजों को लेकर काम किया जिन्हें मैं ठीक-ठिकाने रख चुकी थी। नये कागजों को संभालकर रखने का काम बाकी था। मैंने बापू से कहा था कि शाम को चार बजे मैं आपके पास पहुंचूंगी, लेकिन चार बजे काम पूरा नहीं हुआ। बापू दो-तीन बार कह चुके थे कि तू वह काम पूरा कर, पीछे मेरे पास आना। इसलिए मैं चार बजे नहीं आई। पांच बजे बापू का खाना तैयार करने आई तो बापू कहने लगे, "तूने अपना वचन तोड़ा है।" मैंने अपनी गलती मान ली। मेरी नासमझी थी। खाना तैयार करके उनके पास ही बैठ गई। जो काम मुझसे करवाना था, वह उन्होंने मुझे समझाया। रात के ग्यारह बजे सब कागज बापू ने ले लिये। कहने लगे, "अब मुझे मदद लेनी होगी तो मैं बुला लूंगा।" वे कागजों को तकिए के नीचे रखकर करीब बारह बजे सोये। तीन बजे के करीब उठ बैठे। तैयार होकर प्रार्थना करने को आये तो साढ़े तीन बजे थे। मुझे जगाने का प्रयत्न किया, मगर मैं उठी नहीं। भाई ने और बापू ने चुपचाप प्रार्थना की और बापू सैमुएल वाले पत्र का काम करने लगे।

६ मई '४३

मैं पौने छः बजे बापू के नाक साफ करने की आवाज़ सुनकर उठी। पूछा कि क्या प्रार्थना का समय हुआ? बापू ने बताया कि प्रार्थना तो हो चुकी। अब कुछ काम करके सोने को जाते थे। मैंने तैयार होकर वह पत्र लिया। इतने में बापू ने भाई को उसी पत्र के सिलसिले में कुछ लिखवाना शुरू कर दिया। सोये नहीं। बापू ने आज मुझे मालिश से छुट्टी दे दी और मैं घूमने के बाद स्नान करके उस पत्र की साफ नकल करने बैठी।

खाने के बाद बापू ने वह पत्र फिर पढ़ा। प्रार्थना करने के बाद उन्होंने

उसे पूरा किया और कुछ सुधार भी किये। फिर वही पत्र डॉ० गिल्डर को टाइप करने और ध्यान से पढ़ जाने को कहा।

१० मई '४३

आज बापू का मौन है। मैक्सवेल का भाषण पढ़ गए, फिर 'डॉन' पढ़ते रहे। रात में मैक्सवेल का भाषण पढ़ना पूरा किया।

: ४७ :

मैक्सवेल को पत्र

११ मई '४३

आज बापू ने मैक्सवेल के नाम पत्र लिखवाया। दिन भर उसी में गया।

१२ मई '४३

डॉ० गिल्डर बाद का पत्र टाइप करने के लिए ले गए। पीछे बापू मैक्सवेल वाले पत्र पर जुटे। आज काता, मेरे साथ रामायण पढ़ी, मनु को भी सिखाया। बाइबिल नहीं पढ़ी। मनु को सिखाते समय मैंने सैमुएल वाले पत्र में बापू को एक सुधार बताया। सुधार पहले बापू समझे नहीं। मैं छोड़ने को तैयार हो गई। मुझे लगा कि दलील करके उन्हें क्यों थकाऊं, मगर उन्होंने आग्रह किया, "बता तो सही, क्या कहना चाहती है?" तब मैंने बताया तो उन्होंने सुधार स्वीकार किया। बाद में समझाने लगे, "मैं धीरज रखकर तुझसे न समझ लेता तो तू यह छोड़ ही देने वाली थी न? ऐसा नहीं होना चाहिए। तुझे धीरज से अपनी बात समझानी चाहिए और अपने में समझा सकने की शक्ति लानी चाहिए।"

१३ मई '४३

आज बापू ने मैक्सवेल वाले पत्र का काम किया। घूमते समय आधी कहानी में बापू ने डाउन्स के साथ का अपना अनुभव सुनाया। समय की कीमत आंकने की बात करते समय यह चर्चा चली कि डरबन में उनके

मित्र डाउन्स को गिरजाघर में प्रवचन देना था। समय रखा था शाम के ७ वजे। निश्चित समय पर वहां केवल एक श्रोता था। बिना किसी की प्रतीक्षा किये उसीके सामने उन्होंने बोलना आरंभ कर दिया।

१५ मई '४३

बापू आज मैक्सवेल वाला पत्र दुरुस्त करते रहे। सैमुएल वाले पत्र की आखिरी नकल आज गई। भाई ने मैक्सवेल के पत्र को टाइप किया। बापू ने उसको इतना काटा-छांटा था कि पढ़ना कठिन हो गया था।

१७ मई '४३

सुवह पौने सात वजे उठी। चाय इत्यादि के वाद खेलने गई। मालिश से आज छुट्टी मिली। भाई ने वहां मेरी जगह ली। मैंने अपने कपड़े इत्यादि संभाले। अव अपनी डायरियां आदि पूरी कर लेती हूं ताकि कल से सारा कार्यक्रम ठीक तरह चला सकूं।

दोपहर को कातते समय भाई बापू को लुई फिशर का एक भाषण सुना रहे थे। भाषण वहस के वाद का था। अच्छा था, इसलिए कातने में काफी समय गया। कल का अखवार भी दोपहर को पढ़ा। साढ़े चार वजे से रसोईघर में काम करती रही। पंद्रह-वीस मिनट तक वापू की 'आत्मकथा' पढ़ी।

वापू मैक्सवेल वाला पत्र फिर से पढ़ते रहे और सुधारते भी रहे। पत्र दस बजे तैयार हुआ।

१८ मई '४३

सुबह मालिश के समय मीराबहन ने मैक्सवेल वाले पत्र की सुधारी हुई नकल के वारे में अपनी सम्मति बापू के सामने प्रकट की। बापू ने 'ह्यूमन्स' (humans) शब्द इस्तेमाल किया था। वे कहने लगीं, "ह्यूमन (human-beings) क्यों नहीं ?" उन्होंने 'ह्यूमन्स' शब्द कभी सुना नहीं था। बापू ने वताया कि वह इस्तेमाल होता है।

आज रामायण के पढ़ने के समय मैक्सवेल वाले पत्र की मैंने नकल पढ़ी और अपने सुझाव दिये। एक सुधार करने में काफी साहित्य देखना

पड़ा। आखिर बापू ने वह सुधार स्वीकार कर लिया और उसे लेकर एक नया पैरा ही बढ़ा दिया। सुधार बापू के उद्‌गार 'सब लोग अपने को आज से स्वतंत्र मानो' के बारे में था। मैक्सवेल ने वह उद्‌धृत किया था। बापू ने इसका उत्तर लिखा था। प्रार्थना के पहले का कातने के सिवा आज का सब समय इस काम में गया। शेष कार्यक्रम नहीं चला सकी।

प्रार्थना के बाद मैंने अखबार देखे और भाई ने ज्वालामुखी और भूकंप की उत्पत्ति समझाई।

शाम को तूफान आया। साथ ही वर्षा भी। शाम का सारा कार्यक्रम बिगड़ गया। खाने के बाद थोड़ी देर और कैरम खेलते रहे, पीछे बापू के साथ घूमे।

प्रार्थना के बाद नया कार्यक्रम भाई ने और मैंने बैठकर बनाया।

२० मई '४३

आज मैक्सवेल के पत्र की साफ टाइप-नकल तैयार हुई। बापू ने दस्तखत भी किये, मगर देर हो गई थी, इसलिए पत्र जा नहीं सका। कल छुट्टी है। शनिवार को जावेगा।

बापू सरकारी पुस्तिका के जवाब को देखते रहे। शाम को फिर वर्षा हुई।

आज मैंने आइसक्रीम बनाई। बापू के लिए थोड़ी-सी बकरी के दूध की बनाई। उन्होंने एक ही चम्मच भर ली, बाकी भाई को दे दी।

शाम को हम लोग अपना एक खेल खेलते रहे। कपड़े की गेंद बनाई और उससे खेले। पीछे डोरी फांदते रहे। डॉ० साहब इसमें शामिल नहीं हुए। एक टांग की दौड़ में भी नहीं। पीछे एक डोरी बरामदे में बांधकर उस पर मेरी ओढ़नी को जाली के तौर पर रखकर रिंग खेलते रहे।

इतने में बापू घूमने को निकले। हम लोग भी साथ हो गए। घूमते समय टयूनीसिया-डे की बातें होती रहीं। दूसरी इधर-उधर की बातें हुईं, लेकिन कहानी नहीं सुनाई। सुबह भी कहानी शुरू ही हुई थी कि स्वेज नहर का जिक्र आया, फिर उसी की बातें होती रहीं।

रात को प्रार्थना के बाद इतने पतंगे उड़ने लगे कि बापू बत्ती रखकर काम नहीं कर सके। सो गए। करीब साढ़े दस बजे फिर वर्षा हुई। हवा चलने लगी। बापू की खाट पर पानी आता था, इसलिए जगह बदली। सोने का वक्त हो गया था, सो गई। भाई दिन भर भाषण तैयार करते रहे।

: ४८ :

शैतान व ईश्वर

२२ मई '४३

आज शाम को बापू ने मीराबहन से शैतान और भगवान की बात करते-करते नीचे लिखी बातें कहीं। मीराबहन उन्हें लिखकर बापू को दिखा गई। बापू ने उसे पास किया। यह नकल मैंने देखी, तो अच्छी लगी। उसे यहां देती हूं: "शैतान कोई व्यक्ति नहीं है। वह एक उसूल है—सत्य का इंकार, जब कि दैवी शक्ति सत्य का उसूल है। इसलिए वह जीवन देनेवाली चीज है, जीवन है, ब्रह्म है। सत्य का इंकार तो मृत चीज है, मगर जैसे कभी-कभी शव में जीवन का आभास होता है, यह भी इंसान को धोखे में डाल सकता है और माया से भ्रमित इंसान इस मरी हुई चीज के पीछे भागता है और समझता है कि यही जीवन का मकसद है।

"शास्त्र बताते हैं और मैं भी इसे मानता हूं कि सतयुग में पहुंचने के पहले कलियग या शैतान के युग में से गुजरना होता है। इस में शक नहीं कि आज हम कलियग में से गुजर रहे हैं। भले ही हम नये युग का प्रभात इस जीवन में देखें या न देखें, हमारे लिए हमारा यह पक्का विश्वास ही काफी है कि सतयुग आनेवाला है और उसे लाने के लिए हम जिंदा रहते हैं और मेहनत करते हैं।"

आज भी बादल थे, मगर वर्षा नहीं हुई। शाम को भाई, मीराबहन

इत्यादि सब खेले। मुझे वापू टॉटेनहम की पुस्तिका का उत्तर लिखवाते रहे। रात को भी प्रार्थना के वाद वही काम चलता रहा। वापू कहते थे कि कल सब काम छोड़कर इसी में लगेंगे।

कहानी कहते समय वापू ने स्वेज नहर की चर्चा करते हुए अरब और मिस्र की वातें वताईं।

२३ मई '४३

सुवह प्रार्थना जल्दी हुई, इसलिए प्रार्थना के वाद मैं सो गई। साढ़े छः वजे उठी। चाय के बाद खेलने गई। स्नानादि के बाद वापू को खाना देकर खद खाकर पीछे दोपहर को मैं वापू के साथ बैठी। उन्होंने लिखवाना शुरू किया। एक वजे के करीव सो गई। ढाई से चार वजे तक फिर लिखवाते रहे।

शाम को कहानी में वापू पोर्ट सईद और 'मुक्तिसेना' ('साल्वेशन आर्मी') की कथा सुनाते रहे।

२४ मई '४३

आज वापू का मौन है।

२५ मई '४३

आज वापू कहने लगे, "अगर तू कर सके तो मैं तेरा अभ्यास कुछ समय के लिए बंद कराना चाहता हूं। अपना सारा खाली समय तू मुझे दे दे और मैं सारा समय इस पुस्तिका का उत्तर तैयार करने में दूं। मुझे जो लिखाना हो लिखाऊं, जितनी दफा उसे फाड़ना हो फाड़ूं।" मुझे इसमें क्या उज्र हो सकता है।

सुवह घूमते समय अफ्रीका की वातें होने लगीं। वापू ने बताया कि जुलू लोगों पर क्या-क्या जुलम हुए हैं। फिर डच लोगों के साथ अंग्रेजों की लड़ाई की बातें बताते रहे। मेफिकिंग (Maffiking)[1] शब्द की

---

१. मेफिकिंग शहर की याद में मेफिकिंग-दिन मनाने की प्रथा शुरू हुई थी। उस दिन शराव आदि पीकर जशन मनाया जाता था। उस पर से अंग्रेजी 'मेफिकिंग' शब्द बना, जिसका अर्थ है शराब पीकर आनंद मनाना।

व्युत्पत्ति बताई, पीछे हिंदुस्तान पर आए। वोले, "इतने वड़े देश को, जिसकी सभ्यता इन लोगों की सभ्यता से बढ़-चढ़कर है, ये लोग इस प्रकार से दवाकर बैठे हैं। ईस्ट इंडिया कंपनी ने क्या-क्या किया! मैं तो इन सव बातों का विचार करता हूं तो खून खौलने लगता है। मौलाना मुहम्मद अली कहा करते थे, हम लोगों से तो आप वहुत आगे जाते हो। आप हिंसा मानते नहीं हो, वरना आप में इन लोगों को मजा चखा देने की शक्ति है; क्योंकि इस विषय में आपकी भावना वड़ी जवर्दस्त हैं और फिर आपके पास वुद्धि भी है।"

२६ मई '४३

आज शाम को जव हम लोग खेल रहे थे, भंडारी आये और वापू को एक वंद लिफाफा दिया। टॉटेनहम का पत्र था। लिखा था कि सरकार बापू का खत जिन्ना साहव को नहीं दे सकती और इस विषय में एक विज्ञप्ति निकालने वाली है। विज्ञप्ति की एक नकल भी साथ भेजी है। वापू ने रात को उसका उत्तर लिखवाया।

वापू ने सरकारी पुस्तिका के काम के लिए दूसरा सब काम छोड़ दिया है। मेरा भी सारा समय उसीमें ले लिया है और लिखाया करते हैं। बेचारी वा सेवाग्राम में कभी सारा समय वापू के कमरे में नहीं वैठती थीं, इसलिए उन्हें क्या पता कि वापू कितना समय लिखने-लिखाने का काम करते हैं। यहां देखती हैं तो चकित होती हैं। कह रही थीं, "पहले तो कभी इतना नहीं लिखते थे। लिखते थे तो कोई किताव।" भाई ने समझाया कि हमेशा यही काम चला करता है।

२७ मई '४३

आज करीव पौन बजे टॉटेनहम को लिखे गए वापू के पत्र की साफ टाइप-नकल तैयार हुई और तुरंत ही कटेली साहव को डाक के साथ भेजने को दे दी गई। ढाई वजे अखवार आये। उनमें सरकार की विज्ञप्ति आ गई थी। बापू समझते थे कि शायद उनका उत्तर जाने तक वह नहीं छपेगी; मगर डॉ० गिल्डर ने कहा था, "यह सरकारी विज्ञप्ति की नकल तो आपको शिष्टाचारवश भेजी है। जैसे यहां आ पहुंची, वैसे ही प्रेस को भी दे दी

होगी। ऐसा होगा तो आज दोपहर को पता लग जावेगा।" यही हुआ। शाम को बापू ने टॉटेनहम को दूसरा पत्र लिखवाया।

ग्यारह बजे बापू मीराबहन के साथ बातें कर रहे थे, "अंग्रेजों ने क्या-क्या अत्याचार नहीं किये। सोते हुए जुलू लोगों को बच्चों-सहित गोली से उड़ा देते थे; क्योंकि उनके सरदार ने यह कहने की हिम्मत की थी कि हम तुम्हें टैक्स नहीं देंगे। उन पर पोल-टैक्स लगाया ताकि टैक्स का पैसा पैदा करने के लिए वे लोग काम करें। हिटलर ने इससे अधिक क्या किया है?"

२८ मई '४३

अखबार से पता चलता है कि जिन्ना ने वाइसराय को लिखे गए बापू के पत्र को रोकने के बारे में जबान नहीं खोली, पर अखबारों ने उनके भाषण का इस हेतु का जो हिस्सा उद्धत किया था कि अगर बापू उन्हें पत्र लिखें और वाइसराय उसे न भेजें तो वे देख लेंगे, उस पर नाराजी बताई है। भाई कहने लगे, "वह कह सकता है, अगर सचमुच आपका हृदय-परिवर्तन हुआ है तो अपने सत्याग्रह के आंदोलन को वापस कर लो; क्योंकि हम इसके विरुद्ध हैं। हम इसे मुसलमानों के विरुद्ध मानते हैं।" बापू कहने लगे, "हां, संभव है।" मगर मुझे यह अशक्य-सा लगा।

आज टॉटेनहम को दूसरा खत गया। बापू ने कल उनका पत्र छापने की मांग की थी।

२९ मई '४३

बापू प्रार्थना के बाद सोये नहीं थे; मगर मुझे लिखवाने के लिए रोका नहीं, खेलने को भेज दिया। खेलने के बाद घूमने के लिए बापू के साथ निकली तो सही; मगर बीच में से आना पड़ा। बापू बहुत अच्छी बातें बता रहे थे। भाई ने बात की कि ये एमरी वगैरा इस तरह से झूठ बोलते हैं। उन्हें लगता है कि हम तो इंसान हैं ही नहीं। हमारे साथ झूठ इस्तेमाल करने में क्या हर्ज है। एमरी ने जो निवेदन भारत सरकार से किया है, वह श्वेतपत्र (ह्वाइट पेपर) में छपा है। उसमें जापान के प्रति पक्षपात का आरोप नहीं है। इसी पर बात चली; क्योंकि जापान के प्रति पक्षपात-

पूर्ण आरोप तो सरकार की पुस्तिका में भरा ही पड़ा है। बापू कहने लगे, "यह तो है; मगर अपने यहां ही कितने आदमी इस किस्म के पड़े हैं कि जो झूठ और सच को परखने की मेहनत करें?" मैंने कहा, "बापू, तो फिर हिंदुस्तान का होगा क्या? आजाद होने पर ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता रहेगी तो वह आजादी क्या होगी?"

बापू बोले, 'अगर हम सच्चे होंगे तो हिंदुस्तान का भला-ही-भला है। मैं इससे भी आगे जाकर कहता हूं कि मैं अकेला भी आखिर तक सच्चा रहूंगा तो हिंद का भला-ही-भला है। महाभारत में एक बड़ा संवाद है कि कृष्ण अकेले विना हथियारों के क्या कर सकेंगे; मगर कृष्ण के पास तो धर्म था, सत्य था, इसीलिए उनकी जीत हुई।" मैंने कहा, "वहां पर पांडव भी तो सत्य पर थे न!" बापू ने कहा, "तू ऐसा मानती है तो गलती करती है। कौरवों की अपेक्षा पांडव अच्छे थे; मगर उनमें भी अनेक दोष थे और मनुष्य की हैसियत से कृष्ण भी सर्वथा दोषरहित कहां थे? गीता में कहा है न: 'अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहमद्‌भि वाप्यते' अर्थात् देहधारी के लिए अव्यक्त वनना, सर्वथा अनासक्त वनना, कठिन है। कठिन क्या अशक्य ही है; मगर जगत में इसी तरह से काम चलता है। सब मिलाकर जिधर भलाई अधिक रहती है, उसी को ईश्वर वचा लेता है।"

बापू टॉटेनहम की किताब का उत्तर लिखने को भाई से कहने लगे, "मैं इतना तो देखता हूं कि मैं धीमा पड़ गया हूं। एक चीज को तुरंत पढ़कर समझ लेने और याद रख सकने की शक्ति कम हुई है,मगर ईश्वर को जितना काम कराना होगा, उतनी शक्ति देगा। जितनी शक्ति देगा, उतना करके संतोष मानूंगा।"

सुबह घूमने जाने से पहले मुझसे भी वही वात कह रहे थे, "इस किताब (टॉटेनहम की पुस्तिका) के एक-एक वाक्य में जहर भरा है। इसका वहुत सचोट जवाव दिया जा सकता है। अगर मैं उसे कर पाऊं तो इसमें से अनेक परिणाम भी आ सकते हैं। मगर मैं देखता हूं कि मैं धीमा पड़ गया हूं। एक वार पढ़ता हूं तो कुछ-न-कुछ खुलता है। दोबारा पढ़ता हूं तो फिर कुछ और खुलता है। प्यारेलाल करे तो मुझे काफी मदद मिल सकती

है। थोड़े अभ्यास के बाद तू भी कर सकेगी, ऐसा मुझे लगता है।" मैंने कहा, "आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि आप धीमे पड़ गए हैं। यह किताब ऐसे पेचदार ढंग से लिखी है कि एक दफा पढ़कर उसे पूरी तरह समझ लेना कठिन है।"

मन में बड़ा बुरा लग रहा था। महादेवभाई का स्मरण हो रहा था। आज वे होते तो बापू को कितनी मदद दे सकते।

मालिश-स्नानादि के बाद बापू फिर लिखाने बैठे। दोपहर को सोने के बाद अखबार आए। जिन्ना का उत्तर करीब-करीब जिन शब्दों में भाई ने पहले से सोचा था, वैसा ही अखबारों में था। यह चकित करनेवाली बात है कि इंसान किस हद तक जा सकता है।

सरकार ने बापू का खत जिन्ना को नहीं दिया। इस पर 'हिन्दू' में एक लेख था जिसका शीर्षक था—'भगवान हमें हमारे मित्रों से बचावे' (गॉड सेव अस फ्रॉम अवर फ्रेन्ड्स')। बापू शाम को भी लिखाते रहे। रात को साढ़े नौ बजे कहने लगे, "अब मेरा दिमाग खाली हो गया है। बंद करेंगे।" बापू पर यह जवाब लिखने का बोझ बहुत पड़ रहा है।

कल मीराबहन सोने के समय बापू को गीत सुनाने आईं तो कुछ बातें होने लगीं। बापू ने कहा, "मैं इस सरकारी पुस्तिका का उत्तर लिखने में बहुत मेहनत कर रहा हूं, मगर उसके पीछे हृदय से सतत यह प्रार्थना निकलती है कि मेरी कलम से एक भी शब्द ऐसा न निकले जिसमें सत्य की गूंज न हो अथवा जिसमें जरा भी हिंसा का रंग हो।"

३० मई '४३

मीराबहन ने कल रात की बातों का सार लिखकर बापू को दिया। बापू ने उसे सुधारा। सुधारी हुई नकल यह है—"मैंने (मीराबहन ने) बापू से पूछा कि जिन लोगों के विचार ईश्वर के बारे में कच्चे हैं, उनकी मदद कैसे की जा सकती है? मेरा खयाल है कि उनके सामने धर्म की रूढ़िबद्ध बातें नहीं रखनी चाहिए, उनकी जगह सीधी-सादी भाषा में परम आत्मा की बात करना और जिन आदर्शों में हम विश्वास रखते हैं, उनके अनुसार अपना जीवन बनाकर जीती-जागती मिसाल खड़ी करना चाहिए।"

बापू ने उत्तर दिया, "तुम्हें परम आत्मा की बात करने की कोई जरूरत नहीं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सत्य अपने-आप काम कर लेता है। सत्य ही परमात्मा है। वह हमेशा मौजूद है और हरेक जीव में काम कर रहा है। इसलिए इंसान उनके बीच अपना आदर्श जीवन रखे और उनकी आवश्यकतानुसार सेवा करे। लिखने-पढ़ने और सामान्य गणित जानने की भी कीमत तो है। इसलिए निरक्षर लोगों के ज्ञान की वृद्धि करना एक खास सेवा है। यह सेवा करना पढ़े-लिखों का धर्म है। बाकी, अगर हमारे जीवन में सचाई है तो उसका असर अपने-आप उन लोगों पर पड़ेगा। जो ईश्वर यानी सत्य को ढूंढ़ते हैं, उन्हें वह मिल जाता है। अगर हम सत्य यानी ईश्वर को अपने आसपास के लोगों से ज्यादा पहचानते हैं—इस बारे में दावे से कुछ कहना कठिन है—तो हम उन्हें अधिक दे सकेंगे, वह अपने-आप उन्हें हमसे मिलेगा।"

दिन में बापू लिखवाते रहे। चार बजे लिखवाना बंद कर दिया। पीछे खुद उसे दोबारा पढ़ते रहे। रात को उसे दोहराकर पूरा किया।

जिन्ना साहब ने जो बयान कल निकाला है, उसमें उन्होंने कमाल ही कर दिया है। आज रविवार को तो अखबारों से उसपर कुछ निकला नहीं। कल पता चलेगा कि उसका लोगों पर क्या असर हुआ।

३१ मई '४३

आज बापू का मौन है। उन्होंने जो कल लिखाया था, उसे मैंने पढ़ा। दोपहर को भाई के साथ बैठकर फाइलें वगैरा ठीक कराईं। सरकार का जवाब आया कि लार्ड सैमुएल को बापू का पत्र नहीं भेजा जा सकता। जिस कारण जिन्ना साहब को पत्र नहीं दिया गया, उसी कारण लार्ड सैमुएल को भी नहीं भेजा जा सकता। बापू को लगा कि जिन्ना साहब और सैमुएल, दोनों को एक कारण लागू नहीं हो सकता।

१ जून '४३

लार्ड सैमुएल को पत्र भेजने के विषय में आज बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर दिया।

३ जून '४३

भंडारी ने कहलवाया कि जिन्हें चश्मा चाहिए, वे अपने पैसे से लें। बापू को यह ठीक नहीं लगा। पहले विचार किया कि जानें दें; मगर बाद में विचार बदला। कहने लगे कि सरकार लोगों को बंद करके रखे, उनकी कमाई का साधन बंद करे तो पीछे उनका सब खर्च सरकार को उठाना चाहिए।

४ जून '४३

बापू ने भंडारी को लिखा कि सरकार मनु को चश्मा दे, नहीं देगी तो भले वह लड़की अपनी आंख खोये।

बा की सांस बहुत फूल जाती है।

५ जून '४३

बा को सुबह पांच बजे हृदय की धड़कन का दौरा हुआ। दो-तीन मिनट ही रहा।

आज मनु का सोलहवां जन्मदिन था। भंडारी का उत्तर आया कि सरकार की तरफ से चश्मा मिलेगा।

कैदियों को आम और खजूर बांटे

८ जून '४३

शनिवार को चार बजे तक अखबार पूरे कर दिए; मगर बापू का काम रात को शुरू किया। रविवार-सोमवार तक उसी काम में लगी रही। आज भी वही चल रहा है। आज सुबह तो पत्र का टाइप होना भी शुरू हो गया है। अभी काफी काम बाकी है। परिशिष्ट (अपेंडिक्स) भी अपने-अपने स्थान पर रखने हैं। यह जवाब तैयार करने में कम-से-कम एक हफ्ता और लगेगा।

९ जून '४३

मीराबहन को गठिया का दर्द हो गया है। कंधे और हाथ के जोड़ों की मालिश मुझसे कराया करती हैं। मगर आज बापू ने उन्हें सलाह दी कि उपवास करके इसकी जड़ निकाल डालो। डॉक्टर गिल्डर से शाम को बातें कीं। उन्होंने उपवास के विषय में कोई अड़चन नहीं बताई, इसलिए

कल से मीरावहन उपवास करेंगी। बापू को आशा है कि तीन-चार उपवास के वाद फल देना शुरू कर सकेंगे। मीरावहन उपवास के दौरान में यहां आने के वाद अपने विचार और अनुभव लिख डालने का विचार कर रही हैं।

सरकारी पुस्तिका के जवाव के परिशिष्ट की सामग्री तैयार करती रही। उसे आज करीव-करीव पूरा कर डाला?

१० जून '४३

कल रात भाई रात भर टाइप करते रहे—एक मिनट भी नहीं सोये। दिन में भी आधा-घंटा ही सोयें। दोनों वक्त खेले भी खूव। सुवह खेलने के वाद ताजा हो गए, ऐसा कहते थे।

आज सरकार का जवाव आया। जिन्ना साहव को लिखे वापू के पत्र पर निकाली गई सरकारी विज्ञप्ति के विषय में बापू को सूचना देने से इंकार किया गया था।

अनपढ़ गंवार लोगों को सेवा कैसे करनी चाहिए, इस बारे में बापू ने मीरावहन को जो लेख सुधार कर दिया था, वह बहुत संक्षिप्त था, मानो सूत्रों में लिखा गया हो। इसलिए उन्हें बापू से उसे समझना पड़ा। बापू ने कहा, "जब मैंने तुम्हारी लिखी अपनी बातचीत की रिपोर्ट देखी तो मैं समझ गया कि मैंने जो कहा था, उसे अधिक छोटा और अधिक स्पष्ट करके मुझे कहना चाहिए था। मैंने अब उसे सूत्र रूप में लिख डाला है। सच्ची बात तो यह है कि कल ही मैं पढ़ने-लिखने और सामान्य गणित की कीमत पूरी तरह समझा। आज तक मैं उनके प्रति लापरवाह रहा हूं; मगर कल मैं समझ गया कि उनकी जो कीमत है और उनका जो स्थान है, वह और किसी का नहीं। निरक्षर लोगों की सेवा करते समय हरेक का यह धर्म है कि उन्हें ज्ञान दे। जो आदमी पढ़ नहीं सकता, लिख नहीं सकता, जमा और बाकी करना भी नहीं जानता, वह बहुत चीजों के बारे में अज्ञानी रहता है। मगर पढ़ने-लिखने और गणित के ज्ञान से वह अपना विकास उत्तरोत्तर कर सकता है। इसका यह अर्थ है कि जब मैं उसे लिखना-पढ़ना सिखाता हूं तो ऐसे तरीके से सिखाऊं की उसकी अपनी ज्ञान बढ़ाने

की इच्छा तीव्र बने। मेरे लिए तो यह सवाल ही नहीं उठता कि माला फेरी और चलते बने। मेरा उसको लिखना-पढ़ना सिखाने का यह मकसद नहीं कि सब तरह से उसे आगे बढ़ाना है। अगर मेरे सिखाने से उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधरती है, तो बहुत अच्छा है, लेकिन मेरा असल हेतु तो है उसकी आत्मा का विकास करना और उसके लिए मुझे उसकी भौतिक सेवा करके उसके निकट पहुंचना है। उसका शरीर तो सामने है; मगर उसकी आत्मा को अभी वह पहचानता नहीं है। दिन-प्रति-दिन जैसे वह मेरी सेवा स्वीकार करता जाता है, उसके मन में जिज्ञासा पैदा होगी कि मेरा अपना जीवन कैसा है।

"फिर वह मेरे भौतिक जीवन से आगे भी कुछ है, यह देखने लगेगा। वह सोचेगा कि मैं क्यों कभी-कभी आंखें बंद करके आसन लगाकर बैठता हूं? मैं इस तरह बैठकर किसकी रटन करता हूं? जब इस जिज्ञासा के वश होकर मुझसे पूछेगा कि इन सब चीजों का क्या अर्थ है तब मैं उसे बता सकता हूं। इस ज्ञान का उसपर क्या असर होगा, उसकी चिंता करना मेरा काम नहीं। आत्मा के काम में दखल देना मेरा काम नहीं। जब मैं किसी इंसान के आगे खड़ा होता हूं तब जिस हदतक ईश्वर मेरे हृदय में विराजमान है, उसी हदतक वह मेरे सामने खड़े व्यक्ति में भी प्रवेश करेगा। मेरा हेतु यह नहीं कि वह मेरा धर्म स्वीकार करे। मेरा हेतु यह है कि वह मेरे द्वारा ईश्वर का दर्शन कर सके। वह तभी हो सकता है कि अगर ईश्वर मेरे हृदय में विराजमान हो और अपने दिन-प्रति-दिन के जीवन में, कार्य में, मैं सचमुच उसको व्यक्त करता हूं।"

: ४९ :

सरकारी आरोपपत्र और उसका उत्तर (२)

११ जून '४३

बापू कह रहे थे कि कल से पहले का सब कार्यक्रम फिर से शुरू होना

चाहिए, मगर मैं समझती हूं कि वह नहीं हो सकेगा। टाइप-नकल को आज पढ़ना शुरू किया। कुछ समय बापू ने मेरे साथ पढ़ा और साथ-साथ सुधार कराते गए। कुछ समय मैंने अकेले पढ़ा। आज मीराबहन के साथ कुछ नहीं किया। पंद्रह पन्ने ही पढ़ पाई। सब मिलाकर करीब ४० पन्ने हैं औंर परिशिष्ट अलग।

रात को सरकार का पत्र आया। टॉटेनहम के सेक्रेटरी ने बापू की जिन्ना वाली विज्ञप्ति के बारे में जो दूसरा पत्र सरकार को लिखा था, उसकी और लार्ड सैमुएल को पत्र न देने के बारे में भेजे गए बापू के पत्र की पहुंच थी। लिखा था कि उस बारे में सरकार को कुछ और नहीं कहना है। वह अपना निश्चय बदल नहीं सकती। सभी यह पत्र पढ़कर हँसने लगे। बापू भी हँसकर कहने लगे, "जवाब देते हैं, यह उनकी मेहरबानी है!" मगर उन्हें सैमुएल वाले पत्र के बारे में सरकार के उत्तर से कुछ आश्चर्य हुआ। उन्हें आशा न थी कि उसका भी ऐसा ही उत्तर आवेगा। सरकार दूसरी विज्ञप्ति निकाल सकती थी। वे लोग लिख सकते थे कि आप ठीक कहते हैं। लार्ड सैमुएल वाला पत्र, जिन्ना साहब के पत्र के बारे में जो विज्ञप्ति निकाली गई थी, उसकी श्रेणी में तो नहीं आता; मगर हम उस पत्र को दूसरे कानून से रोकते हैं।

१२ जून '४३

बापू आज भी मेरे साथ 'सरकारी बाइबिल'[1] के अपने उत्तर की टाइप-नकल पढ़ते रहे और सुधार भी करते रहे। ३२ पन्ने आज पूरे हुए। अभी आठ-दस और हैं। कल पूरे हो जावेंगे।

१३ जून '४३

आज 'सरकारी बाइबिल' पूरी की। बीच-बीच में बापू ने कई जगहों पर सुधार करते समय शब्द बढ़ाये थे। परिणाम-स्वरूप कई जगहों पर खाली जगहें छूट गई थीं। भाई को ये जगहें भरनी पड़ीं।

---

१. हम लोगों ने जेल में टॉटेनहम की पुस्तिका को मजाक में 'सरकारी बाइबिल' नाम दिया था।

भाई कुछ उदास थे। जिन्ना इत्यादि की गालियां पढ़ते-पढ़ते हम लोग ऊब जाते हैं; मगर बापू के मन पर उनका कोई असर नहीं होता। वे तो अचल बैठे हैं। वे जानते हैं कि आज जो भी हो रहा है, उस सबका परिणाम शुभ ही होनेवाला है हिंदुस्तान के लिए। व्यक्तियों का तो उन्हें कभी विचार भी नहीं आता। अपने-आप की, अपने मान की उन्हें कुछ पड़ी ही नहीं।

यह लिखने-लिखाने का काम करते हुए बापू मनु को आधा घंटा जरूर सिखाते हैं। हर रोज थोड़ी गीता भी सिखाते हैं। दस-बीस मिनट तक एक रोज व्याकरण व एक रोज भूमिति सिखाते हैं। बापू पढ़ाने में बिल्कुल लीन हो जाते हैं। कह रहे थे, "मैं यह सब काम 'सरकारी बाइबिल' का उत्तर लिखना आदि करता तो हूं, मगर मुझे इसमें रस नहीं है, भाररूप लगता है। हां, भूमिति में, व्याकरण में, संस्कृत में मैं लीन हो सकता हूं।"

१४ जून '४३

आज बापू का मौन था, तो भी उन्होंने कुछ समय मेरे साथ परिशिष्ट की टाइप-नकल मिलाई। बापू के हाथ में 'हरिजन' था। मैं टाइप-नकल पढ़ती जाती थी। भूल मिलती तो बापू मेरा ध्यान खींचते थे। मैं सुधार लेती थी। बाकी समय वे संस्कृत और 'गुलीवर्स ट्रैविल्स' पढ़ते रहे। एक दिन कह रहे थे, "संस्कृत के दो वाक्य भी पढ़ लूं तो वे ज्ञान में वृद्धि ही करते हैं। इसलिए मुझे वह पढ़ना अच्छा लगता है।"

१५ जून '४३

वर्षा बंद है, सो बेडमिंटन कोर्ट सूख गया है। चूने की कमी है, इसलिए डोरी की लाइनें बनाईं। इतने दिनों के बाद बाहर खेल सके। अच्छा लगा।

बा आजकल सब खेलों में बहुत रस लेती हैं। सुबह-शाम बेडमिंटन व रिंग देखने आती है। हम कुर्सी डाल देते हैं। वे बैठी देखा करती हैं। रात को कैरम देखती हैं। मीराबहन बता रही थीं कि बा शाम को अकेली कैरम खेलने का अभ्यास भी कर रही थीं। मीराबहन ने प्रोत्साहन दिया। बा ने करम बोर्ड की पॉकेट में सात बार मोहरा डाला। रात को कटेली

साहव वगैरा ने बा से खेलने को कहा। बा वहुत रस से खेलती रहीं। इन खेलों ने वा का जीवन वदल-सा दिया है। उनकी निराशा और उदासी बहुत कम हो गई है।

इसी तरह ग्रामोफोन से भी बा का खूब मनोरंजन होता है। सुवह घंटा-डेढ़-घंटा ग्रामोफोन वजता है। तव बा लीन होकर भजन सुनती रहती हैं। यह वहुत अच्छा है।

१६ जून '५३

आज रात को बापू ने टॉटेनहम की पुस्तिका के उत्तर को दोबारा पढ़ लिया। आखिर के एक पैराग्राफ को सुधारना वाकी है, ऐसा कहते थे। सिर पर से भारी बोझ उतरा। मुझे भी ऐसा ही लगता हैं। पर मेरा काम तो अभी बाकी है। भाई अब उसे पढ़कर अपने सुझाव तैयार कर रहे हैं। पीछे हम सब बारी-वारी से पढ़ेंगे। फिर उसकी साफ नकल होगी। एक हफ्ता शायद इसे जाते-जाते और लग जावेगा।

१७ जून '४३

सुवह घूमते समय पंजाव के किसानों की खुराक की वात हुई। पंजाबी किसान की निडरता की बात मेरे मुंह से सुनकर बापू कहने लगे, "हां, पर याद रखो, एक गोरे को देखकर वे थर-थर कांपने लगते हैं।" बात सच्ची है। पठान क्या और जाट क्या, दूसरे किसी की परवाह उन्हें है नहीं। विशाल काया रखते हैं, मगर गोरों से थरथर कांपते हैं।"

पीछे कहानी चली। मिसेज़ डेनियल के यहां से कैसे निकले, अलग कमरे लेकर रहे, गाना, नाचना, भाषण देना सीखा और छोड़ा। यह सव सुनाया।

मालिश के वाद सोये नहीं। टॉटेनहम की पुस्तिका के उत्तर की उन्हें वड़ी चिता थी। आखिर का पैराग्राफ फिर से लिखना चाहते थे। करीव सारा दिन उसी में गया।

१८ जून '४३

आज बहुत दिनों के वाद दोपहर को रामायण पढ़ी। थोड़ी संस्कृत और व्याकरण भी पढ़ी। भाई के साथ कुछ देर काम किया। बाकी दिन यों ही चला गया।

१९ जून '४३

बापू के उत्तर के परिशिष्ट की सामग्री टाइप होकर आ गई थी। उसे देखती रही।

गेहूं का आटा नहीं मिलता। आज से बाजरे की रोटी बनानी शुरू की है। बापू ने भी खाई।

आज बापू समझाते रहे कि कैदी की हैसियत से हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। कहने लगे, "मेरा शरीर चल सके तो मैं इन कैदियों की ही खुराक खाऊं।"

२० जून' ४३

बापू आज अपने लिखे उत्तर में भाई के किये हुए सुधारों को ध्यान से देखते रहे। मैंने दोपहर उनकी आत्मकथा पढ़ी। दो-तीन रोज में उसे पूरा करने का विचार है। सोच रही थी—बापू दक्षिण अफ्रीका गये, तब चौबीस वर्ष के थे। मैं पच्चीस पूरे कर चुकी हूं। अर्थात् मुझ से छोटी उमर में उन्होंने कितने बड़े-बड़े काम करने शुरू कर दिए थे और हम लोग यहां बच्चे-से बनकर बैठे हैं। मगर यह बापू का प्रताप है। उनके पास बैठने से ही ऐसी भावना उठती है। अगर अस्पताल में बैठी होती तो ऐसा नहीं हो सकता था। जो हो, बापू उस उमर में जितनी प्रगति कर पाए थे, हमारे जैसे सारी जिंदगी में भी कर पाएं तो बहुत है। इतने पर भी बापू कहते हैं कि वे तो सामान्य आदमी हैं। जो उन्होंने किया, वह सब कर सकते हैं।

वर्षा धमकी देकर चली जाती है। अच्छा लगता है। सूखे कोर्ट पर हम खेल सकते हैं।

२१ जून '४३

शाम को प्रार्थना के बाद मैक्सवेल का बापू के पत्र का उत्तर आया। बापू वह रूखा-सूखा उत्तर पढ़कर बहुत हंसे।

२२ जून '४३

आज बापू ने मैक्सवेल वाले पत्र का उत्तर लिखा। भाई ने टाइप किया। 'बाइबिल' का उत्तर आज डॉ० गिल्डर पढ़ते रहे। भाई ने कल रात को जो टाइप किया था, उसे मिलाने में कुछ समय गया। दोपहर

दो घंटे सोयी, सो कुछ खास काम न कर पाई। शाम को बापू के साथ बाइबिल (असली) पढ़ी।

बापू अशांत-से लगते हैं। आज रक्त-चाप भी अधिक था। कल रात को बारह बजे सोये थे।

२३ जून '४३

आज डॉक्टर गिल्डर मालिश करने नहीं आये। वे 'बाइबिल' का उत्तर कल से पढ़ रहे हैं। ११॥ बजे बापू खाना खा रहे थे। उस समय वे उनके पास अपने सुझाव लाये। बापू ने बाद में कुछ बातों के बारे में हमें फिर विचार करने को कहा। शाम को हम लोग फिर आधा घंटा बैठे। पीछे रात को भी करीब एक घंटा लगा। दो पैराग्राफ अभी और तैयार करने को रह गए हैं।

२४ जून '४३

बापू ने जो दो पैराग्राफ लिखने को कहा था, आज मालिश के बाद उन्हें लिख डाला। दोपहर को डॉ० गिल्डर ने बापू का उत्तर लौटाया, पीछे मुझे जो कुछ पूछना था, मैंने पूछा। डॉ० गिल्डर पहला पन्ना ले गए। आज से वह उसे टाइप करना शुरू करना चाहते थे।

२६ जून '४३

रामायण में भरत-मिलाप पढ़ते-पढ़ते मैंने बा से कहा, "बाहर जाकर आपको भरत-मिलाप का सिनेमा दिखा लावेंगे।" बा कहने लगीं, "मैं अब यहां से कहां वापस जानेवाली हूं!" मैंने और डॉ० गिल्डर ने समझाया तब मान गईं। कई बातों में बा बालक की तरह भोली हैं। बस शांत मन से कैरम खेलने को चल दीं।

अखबार बहुत से इकट्ठे हो गए थे। मैंने काफी पढ़ भी डाले। आशा है, सोने से पहले सब पुराने काम पूरे हो जावेंगे।

मीराबहन का दर्द कम है, ऐसा वे कहती थीं। दर्द का ढंग भी कुछ बदला है।

: ५० :

मनोरंजक घटना

२७ जून '४३

मेरे बालों में चिकना सफेद मैल बहुत है। निकलता ही नहीं। एक दिन विचार आया कि बाल निकालकर इसका इलाज करें तो शायद साफ हो जावे। भाई ने और बापू ने इस विचार का समर्थन किया। बापू कहने लगे कि उनके सिर में भी यही था, जो इसी तरह अच्छा हुआ था। मीरा-बहन से बात की। उन्होंने बाल काटने से मनाही की। डॉ० गिल्डर के बालों में भी यही तकलीफ है। मेरी बात सुनी तो वे कहने लगे कि पहले वे करके देखें, फिर मैं करूं। मगर बाद में उनका मन बदल गया। कहने लगे, "बापू कहें तो मैं बाल कटाऊं।" बापू कहने लगे, "मैं क्यों कहूं ?" आज मैंने बाल धोये थे। बापू कहने लगे, "बाल निकालना है तो आज ही निकालो।" मेरा मन काटने को होता नहीं था। यह भी विचार आया कि ऐसा इलाज यहीं किया जा सकता है। बाहर जाकर यह नहीं हो सकेगा। बापू और भाई मजाक करने लगे कि हिम्मत नहीं पड़ती। मैंने कह दिया, "तो भले काटें।" बस कहने की देर थी। तुरंत बापू ने कैंची उठाकर पहले मेरी चुटिया काटी, फिर बाकी के बाल काट डाले। बुरा तो लगा; मगर अब क्या हो सकता था। सब काटकर दामोदर कैदी से उस्तरा फिरवा दिया। मीराबहन तो रोने जैसी हो गईं। कहने लगीं, "मुझे पता होता कि तुम इतनी जल्दी फिसल जाओगी तो मैं तुम्हें ज्यादा रोकती।" कटेली साहब को भी बड़ा आघात लगा। कहने लगे, "हम सीपी-चंदन मंगा देते, उससे तुम्हारा सिर साफ हो जाता। इतने अच्छे बाल क्यों निकाल दिए ?" मनु, बा सबको बुरा लगा। बापू कहने लगे, "कल्पना की बात है न। मुझे तो तुम्हारा यह बिना बालों का सिर और चेहरा अच्छा दिखता है।" रात में डॉ० गिल्डर मजाक करने लगे, "जब बुढ़िया हो जाओगी, तब इन बालों की 'विग' (टोपी) बनवाकर पहनना।" कटेली साहब कहने लगे, "मुझे पता दें कि कहां बनती है। अभी से बाल भेजकर

'विग' बनवा लें, ताकि अभी ही पहनी जा सके।" उनसे मेरा मुंडा सिर नहीं देखा जाता।

रात में मैं सो न सकी। तकिये में सिर लगता तो तकलीफ होती। सिर की चमड़ी बहुत नाजुक थी। बालों की जड़ें कपड़े में अटकती थीं।

२८ जून '४३

बापू का आज मौन है। 'बाइबिल' का उत्तर आखिरी बार पढ़ते रहे।

: ५१ :

सरकारी आरोपपत्र और उसका उत्तर (३)

२९ जन '४३

बापू आज भी 'सरकारी बाइबिल' का उत्तर पढ़ते रहे। उससे बहुत थक गए हैं। रात कह रहे थे कि इतनी मेहनत उन्हें किसी दूसरी चीज पर नहीं करनी पड़ी। मुझे जो चर्चा करनी थी, सुझाव देने थे, उनमें से कुछ तो दोपहर को दिये और कुछ रात को। सोने में करीब ग्यारह बज गए। कितने दिनों से ऐसा ही हो रहा है।

आज बा को बुखार था। कल रात से उनका शरीर दुखता था और सर्दी लग कर बुखार आया था। छाती में नया कुछ नहीं। पेशाब में भी अल्ब्यूमिन का निशान तक नहीं। संभव है, मलेरिया हो। आज जांच के लिए रक्त नहीं लिया। फिर आवश्यकता पड़ी तो लेंगे। बा को सुई लगवाना बहुत नापसंद है।

३० जून '४३

आज बा की तबीयत अच्छी है। बुखार नहीं हैं।

आज सुबह मैं प्रार्थना में नहीं गई, क्योंकि रात को मुझे बुखार-सा लगता था। सिर में दर्द-सा था। मगर दिन में सब अच्छा रहा। इरादा है कि कल से अपना कार्यक्रम पूर्ववत चलाना शुरू कर दूं।

१ जुलाई '४३

खाने के समय बापू लिखाने लगे। ढाई बजे तक लिखवाते रहे। फिर सोने को लेटी। नींद मुश्किल से आई। साढ़े तीन बजे उठी तो सिर में दर्द था। बिस्तर से उठी तो बहुत ठंड लगने लगी। मापा तो १००.६ बुखार निकला। चाय के साथ दस ग्रेन कुनीन खाई।

२ जुलाई '४३

साढ़े सात बजे उठी। बुखार ग्यारह बजे तक उतर गया। अखबार देखे। बापू ने 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर में जो नये सुधार किये हैं, वे देखे। कल और आज की डायरी लिखी। आज शाम को बाइबिल भी पढ़ी।

बापू बहुत थक गए हैं। आज खून का दबाव भी ज्यादा था। 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर पर बहुत मेहनत करनी पड़ी है। आज शाम को घूमते समय कह रहे थे, "ईश्वर ऐसे मुझे उबार लेता है। उत्तर पूरा हुआ और थकान चढ़ी। इतनी मेहनत न करता तो जो सुधार किये हैं, वे कर नहीं सकता था।" रात को प्रार्थना के बाद उन्होंने तुरंत सोने की तैयारी की। चार-पांच दिन के बाद ठीक तरह से सिर और पैरों की मालिश करवाकर सोये।

४ जुलाई '४३

बापू ने टॉटेनहम की 'बाइबिल' का जो जवाब दिया है, उसके परिशिष्ट पर मैंने नंबर डाले। शाम को सात बजे तक यही काम किया। पीछे खाने को गई। फिर घूमने को।

५ जुलाई '४३

बापू का आज मौन है। उन्होंने आज टाइप-नकल समाप्त की। मैंने परिशिष्ट की और अन्य चीजों की सूची तैयार की।

बापू आजकल अखबार देखने का भी समय नहीं निकालते। आज 'डान' दो-तीन दिन के बाद आया। मैंने हँसते-हँसते कहा, "बापू, अब तो दूसरा काम छोड़िये। आपके मित्र का अखबार आया है" बापू ने कहा कि उन्होंने सबसे पहले आते ही 'डान' पढ़कर उसमें निशान भी

लगा दिए थे। ऐसे ही दो-चार दिन पहले मैंने हँसी में कहा था, "सब अखबार छोड़कर—काम छोड़कर—आप 'डान' पढ़ने का समय निकाल लेते हैं। जिन्ना साहब के आप बहुत भक्त बनते जा रहे हैं।" बापू ने कहा, "भक्त के अधीन हूं।" मैंने कहा, "जिन्ना साहब यह बात सुनेंगे तो नाराज हो जावेंगे।" हँसी चलती रही।

शाम को मनु को बुखार आ गया। खेलने में भाई, मैं और डॉक्टर गिल्डर थे। वर्षा आई, सो बंद करना पड़ा।

६ जुलाई '४३

भाई मीराबहन के साथ टाइप-नकल मिला रहे थे। बहुत धीरे काम चल रहा था। बापू ने कहा कि यह काम पूरा होना ही चाहिए। शाम तक भाई ने पैंतीस पन्ने पूरे कर लिये थे। रात को मैं भी भाई के साथ पूरा करानेवाली थी, मगर मनु को फिर बुखार आ गया। उसे दवा-पानी देना था और बा की मालिश करनी थी, इसलिए बापू ने मुझे छुट्टी दी। गुसलखाने से आकर वे खद भाई के साथ बैठ गए। दस बजे के बाद अपने दूसरे काम पूरे करके मैंने उनकी जगह ली और उन्हें सोने को भेजा। मैंने और भाई ने ग्यारह बजे के बाद सब पूरा किया। सोने को बारह बजे।

८ जुलाई '४३

कल शाम को मीराबहन कह रही थीं कि उनके हाथ को आराम पहुंचा है; मगर आज सुबह उन्होंने बताया कि कुछ भी फायदा नहीं, अस्पताल जाना चाहिए। जेलवालों को उन्हें अस्पताल भेजना ही चाहिए। मुझसे पूछने लगीं, "अस्पताल में क्या-क्या करेंगे?" मैंने बताने का प्रयत्न किया। कहने लगीं, "सुई तो मैं कभी नहीं लगवाऊंगी।" मैंने कहा, "तब तो आपको अस्पताल जाना ही नहीं चाहिए।" बोलीं, "अभी यह बात क्यों कहती हो? मैं एक बार जाऊं तो सही। पीछे देखेंगे, क्या होता है। डॉक्टर मेरा अस्पताल जाना आवश्यक न मानें तो भी मैं जो आवश्यक समझती हूं, वह कह तो सकती हूं न!" बाद में उन्होंने भंडारी को पत्र लिखा। उसे बापू को सुनाने लगीं कि इतने में कलेक्टर आ गया और

मीराबहन के हाथ के विषय में पूछने लगा। उन्होंने बताया कि तकलीफ कम नहीं होती। अस्पताल जाने की इच्छा प्रकट की। वह कहने लगा, "हां, वह हो सकेगा।" इसलिए मीराबहन ने अपने पत्र में कलेक्टर के मत का भी जिक्र कर दिया।

९ जुलाई '४३

रात भर वर्षा हुई। आज दिन में भी होती रही। सुबह खासी वर्षा में बापू और मैं महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाने गये। वर्ष पूरा होने को आया है। किसको कल्पना थी कि समय इस तरह से जावेगा। पिछले साल इन दिनों मैं भाई की बीमारी के कारण सेवाग्राम गई थी। महादेवभाई आखिरी रोज मुझे तांगे में बैठने के समय कहने आये, "तुम जल्दी आ जाना। मुझे बापू की चिंता रहती है। आनंदमयीदेवी ने कहा कि इस वर्ष बापू के जीवन को खतरा है।" उनका प्रेम और भक्ति अद्‌भुत थे। खतरा किसके जीवन को था, वह हम आज जानते हैं। कौन कह सकता है कि बाबर की तरह उन्होंने बापू का खतरा अपने ऊपर नहीं ले लिया? महादेवभाई तो गये; लेकिन उनके बिना अब बापू के आसपास के जीवन में बसंत ऋतु देखने में नहीं आती। सबके मन मुरझा गए हैं। महादेवभाई का मृदुल हास्य कठिन-से-कठिन समय के बोझ को भी हल्का कर देता था। अब हम वह कहां से ला सकते हैं?

फजलुल हक का निवेदन और गवर्नर को गया हुआ उनका पत्र अखबार में पढ़ा। पत्र बहुत अच्छा था।

काफी सर्दी हो गई है। वर्षा बंद ही नहीं होती। मीराबहन ने भंडारी से उन्हें अस्पताल ले जाने को कहा था। उन्होंने आज सिविल सर्जन को भेजा। उन्होंने मालिश करके रोग की गांठ को तोड़ने की सलाह दी और कहा कि अस्पताल जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

१० जुलाई '४३

कल शाम को मीराबहन बापू से पूछ रही थीं कि आजाद हो जाने के पश्चात हिंदुस्तान की जमीन का बंटवारा कैसे किया जायगा? बापू ने उन्हें स्काचमैन का किस्सा सुनाया—"वह जहाज के कप्तान से मिलने

गया। जवाब मिला कि कप्तान नहीं है। वह उठा और यह कहकर चल दिया—'कप्तान से कह देना कि मालिकों में से एक मिलने आया था।' जहाज बनाने का उद्यम राष्ट्र का है, इसलिए राष्ट्र का हरएक स्त्री-पुरुष मालिकों में से एक है। यह उसकी दलील थी। यहां जमीन लोगों की है और हरएक उसका मालिक है। संपत्ति राज्य की होगी। दरअसल जो हल चलावेगा, उसकी जमीन होगी। शासनतंत्र हर तरह उसकी मदद करेगा। अच्छा बीज देगा और जरूरी तालीम वगैरा देगा। दक्षिण अफ्रीका में आज यह सब हो रहा है। वहां राज्य तुम्हारे खेत में बाड़ लगा देता है, कुआं खोद देता है और हर तरह की मदद बिना नफा लिये पहुंचाता है। मुनाफाखोरी नहीं होती, इसलिए दाम बहुत कम पड़ते हैं। शर्त एक ही होगी कि जो जमीन लेता है, वह मेहनत करके उपज बढ़ावे, निकम्मा या आलसी बनकर न बैठा रहे।"

मीराबहन ने पूछा, "क्या आप ऐसी कोई परिस्थिति सोच सकते हैं जबकि किसान को निकाला जा सकता है?" बापू ने कहा, "नहीं, अगर वह जमीन को फिजूल न पड़ा रहने दे तो।" फिर उन्होंने बताया कि कैसे हेनरी जार्ज ने यह सिद्धांत चलाया था कि जमीन के सिवा दूसरी किसी चीज पर कर न लगाओ। जमीन को ठीक तरह काम में लाया जाय तो वह इतनी उपज दे सकती है कि स .के लिए काफी हो।

बापू बाद में संरक्षण (ट्रस्टीशिप) के सिद्धांत पर आ गए। बोले, "आजाद हिंद में जमीन नये सिरे से तकसीम होगी। जमींदारों से हम ट्रस्टी बनने को कहेंगे और सुझायेंगे कि वे मन से मालिकपन की भावना निकाल दें। तब उन्हें खासा कमीशन मिलेगा।

"मगर उनको अपनी शक्ति और ज्ञान का उपयोग जनता के लिए करना होगा। मेरे सामने जमनालालजी की मिसाल है। उनका दान लाखों का था। अगर मैं उन्हें प्रोत्साहन देता तो वे सब कुछ दे डालते। लेकिन मैं नहीं चाहता था कि वे अपनी सामर्थ्य से बढ़कर कुछ करें। घनश्यामदास बिड़ला भी उस आदर्श पर अमल करने की पूरी कोशिश कर रहा है, लोग भले उसके विरुद्ध कुछ भी कहें। आजाद हिंद में कानून बनेंगे और अगर

कोई ट्रस्टी न बनना चाहे तो उसकी जमीन ले ली जायगी और उसे योग्य हरजाना भर ही दिया जायगा। जो वह मांगेगा सो नहीं मिल सकेगा।

"गोलमेज परिषद् में सर तेजवहादुर सप्रू ने मुझसे पूछा, 'तो क्या लोगों की जागीरों की जांच-पड़ताल करेंगे?' मैंने कहा, 'हां।' इतने से ही मैंने अनेक दुश्मन खड़े कर लिये। मगर हमें यह सब करना ही पड़ेगा। हमें देखना होगा कि कोई व्यक्ति जमींदार बना कैसे? अगर उसका पिछला चलन अच्छा होगा तो उसे हरजाना देंगे।"

मीराबहन ने पूछा, "क्या इसी तरह निजी (प्राइवेट) व्यापार और निजी पूंजी भी उड़ा देंगे?" बापू ने कहा, "नहीं, निजी पूंजी का उपयोग होना ही चाहिए, नहीं तो हम प्रगति नहीं कर सकते, मगर व्यापारियों को अपने कर्मचारियों को मुनासिब तनख्वाह देनी होगी, बुढ़ापे और बीमारी में उनकी संभाल का प्रबंध करना होगा और उनको रहने योग्य मकान भी देना होगा।"

बापू ने दिन में दो बार कातना शुरू किया है। एक समय मैंने उन्हें 'लाइट आव एशिया' पढ़कर सुनाई और एक दफा बाइबिल की साहित्यिक भूमिकावाला भाग भी सुनाया।

११ जुलाई '४३

बापू द्वारा दिये गए टॉटेनहम वाली पुस्तिका के उत्तर की आखिरी नकल को पहले प्रूफ के साथ मिलाने में मैंने काफी समय दिया। यह काम कल रात से चल रहा था। पांच-छः पन्ने करते ही बत्तियां बुझ गईं। कागज संभाल-कर सोने को गई तो बत्तियां फिर जल उठीं; मगर फिर तो सो ही गई।

आज सुबह कटेली को पकड़ा। दोपहर को भी उनसे सहायता ली और जितने टाइप किये पन्ने तैयार थे, उतने मिला डाले।

१२ जुलाई '४३

आज आकाश कुछ खुला है। 'सरकारी बाइबिल' का उत्तर टाइप करना डॉ० गिल्डर कल पूरा करेंगे। परसों या नरसों वह चला जायगा। बहुत बड़ा बोझ सिर से उतरेगा। मजाक चल रहा है कि उस दिन को किस तरह मनाना चाहिए।

१३ जुलाई '४३

आज टाइप करने का काम पूरा हुआ। डॉ० गिल्डर, मैं और भाई— तीनों ने बैठकर प्रूफ सुधारे और दूसरी नकलों में वही संशोधन किये। तीन पन्ने फिर से टाइप करने को निकाले। डॉ० साहब ने एक तो टाइप कर डाला और दो सुबह करेंगे। थोड़ा-सा परिशिष्ट का काम भी है।

१४ जुलाई '४३

सुबह बापू ने सब परिशिष्टों का एक सूचीपत्र तैयार करने को डॉ० गिल्डर से कहा। वे बोले, "इस सूचीपत्र के सिवा बाकी सब दो-ढाई बजे तक आपको मिल सकेगा। सूचीपत्र भी शाम को मिलेगा।" दोपहर को बापू ने सूचीपत्र टाइप करने का काम भाई को सौंपा। डॉ० गिल्डर ने कहा, "मेरी मशीन पर ही न कर लो! मैं थोड़ा आराम कर लूं।" भाई उनकी मशीन पर टाइप करने बैठे। एक बजे से लेकर चार बजे तक आधा काम कर पाए। खयाल था कि आधे घंटे का काम है; मगर इस मशीन से वे काफी वाकिफ नहीं थे। मशीन पुरानी है और कई जगह धोखा दे जाती है। उधर डॉ० गिल्डर का काम भी रुका था। आखिर उन्होंने भाई को सलाह दी कि वे अपनी ही मशीन पर सब काम करें, क्योंकि इस नकल में कुछ दोष भी आ गया था। भाई ने अपनी मशीन पर एक घंटे से भी कम अर्से में सब कर लिया। डॉ० गिल्डर ने भी अपना काम पूरा किया। मुझे कुछ आखिरी जरूरी देखभाल करनी थी। पन्नों को नंबर देने आदि का काम मैंने किया। करीब साढ़े सात बजे शाम को बापू को सब कुछ दिया। सचमुच सिर से भारी बोझ उतरा। डॉ० गिल्डर तो एक हफ्ते से दिन भर टाइप में ही लगे रहते थे, यहां तक कि दोपहर का सोना और कैरम खेलना भी छोड़ रखा था।

डॉ० गिल्डर ने टाइप करना कैसे सीखा, इसका इतिहास बड़ा रोचक है। देश में पढ़ाई पूरी करके वे एम० डी० करने विलायत गये और वहां पांच साल पढ़े। वहां पर उन्हें बार-बार आनेवाला ज्वर (रिलैप्सिंग फीवर) हुआ। उसके बाद एक आंख में मोतियाबिंद हो गया। मोतिया-बिंद का कारण किसी की समझ में नहीं आया। डर था कि कहीं दूसरी

आंख में भी न उतर आवे, इसलिए उन्होंने टाइप करना सीखा, ताकि आंख न रहे तो मरीज को नुसखा टाइप कर दिया करेंगे। ईश्वर-कृपा से दूसरी आंख बची रही। बाद में पता चला कि कभी-कभी 'रिलैंप्सिग फीवर' के परिणाम-स्वरूप मोतियाविंद हो जाता है।

बापू को टाइप-नकल सौंपकर हम खेलने गये। आज सूखा दिन था। नीचे खेल सकते थे। बापू ने हमारी खातिर प्रार्थना पंद्रह मिनट देरी से की। घंटी इसलिए नहीं बजाई कि हम खेल पूरा करके आवें।

कल कटेली साहब अपने घर जा रहे हैं। बापू ने उनके बच्चों के लिए कुछ मिठाई भेजने को कहा था। शाम को मैंने बेसन की मिठाई और चिवड़ा बनाया। एक-एक डिब्बा भरकर उनको दे दिया। एक-एक यहां के लिए रखा।

बापू ने रात को टाइप-नकल देखी और दस्तखत कर दिए। एकाध सुधार करना था, वह मुझसे कराया। सवा दस बजे सोने को गए। मुझे भी आज कैरम खेलने का शौक हुआ। बा खेलकर आ गईं थीं। टाइप-नकल को पंच करके बांधना, बादामी कागज का बड़ा लिफाफा बनाकर उसमें उसे डालना, यह काम मीराबहन ने लिया था। सब सामान उन्हें देने गई तो डॉ० गिल्डर, कटेली और मीराबहन खेल रहे थे। मैं भी उनके साथ बैठ गई। दस मिनट खेली। पीछे आकर सोने की तैयारी की। ग्यारह बजे आई। मीराबहन ने पौने ग्यारह के बाद अपना काम शुरू किया। कौन जानें कब सोई होंगी। भाई रात को साढ़े बारह बजे सोये। पढ़ते रहे थे।

१५ जुलाई '४३

सुबह मीराबहन बापू के उत्तर का लिफाफा ठीक करके ले आईं। बापू ने भाई को लिफाफे पर पता लिखकर कटेली साहब को दे देने के लिए कहा। करीब नौ बजे वह लिफाफा कटेली साहब के हाथों में गया। जाने के बाद पता चला कि सूचीपत्र को नंबर देने में छोटी-सी भूलें रह गई थीं, पर अब वे सुधारी नहीं जा सकतीं। वे इतने महत्व की भी नहीं थीं कि आज पत्र लिखकर सुधारी जावें। 'वर्धा की इंटरव्यू' की तारीख

और 'अमेरिकन ओपिनियन' में एक छोटा उप-शीर्षक देना भूल गए थे। ऐसा लगता था कि ये दोनों भूलें एक ही जगह हैं, मगर वे थीं अलग-अलग।

कटेली दोपहर को पांच दिन की छुट्टी पर गये। उन्हें एक मुकदमे में गवाही देने जाना था और उनकी मां भी बीमार थीं। उनसे मिलना था। दोनों काम हो जावेंगे। करीव एक साल के वाद वे जेल से वाहर निकले।

डॉ० गिल्डर आज दोपहर में खूब सोये। पांच वजे जव चाय पीने आये तव हम लोग हँसने लगे कि परीक्षा पूरी करने के बाद जैसे दिमाग हल्का महसूस होता है और विद्यार्थी खूब सोते हैं, वैसे ही डॉ० गिल्डर भी सोये हैं।

१६ जुलाई '४३

रात को मेरे सिर में सख्त दर्द रहा। वापू 'एना किंग्सफोर्ड' की वात सुनाने लगे। उसने खुराक पर एक किताब लिखी है। कहने लगे, "वह वीमार रहा करती थी। उसे लगा कि दवा से वह अच्छी नहीं होगी, इसलिए नई शोध की। तुझे भी ऐसा करना चाहिए।"

रात को बापू ने विचार किया कि 'वापू ने आठ अगस्त वाला प्रस्ताव वापस ले लिया है', इस अफवाह के बारे में उन्हें सरकार को लिखना चाहिए। सुवह ही लिखा कि सरकार को प्रकट कर देना चाहिए कि यह अफवाह गलत है। आगे लिखा, "मेरे पास वह प्रस्ताव वापस लेने की सत्ता ही नहीं और ऐसा करने की मेरी इच्छा भी नहीं।" डॉ० गिल्डर ने इसे टाइप कर दिया। डॉ० साहब आये थे। उनके हाथ यह पत्र भेजा।

: ५२ :

जेलखाना नहीं, सुधार-गृह

१७ जुलाई '४३

बापू ने फिर से रामायण के चुने-चुने हिस्सों पर निशान लगाने शुरू किये। एक संक्षिप्त रामायण निकालने का उनका विचार है। भाई

उसका गुजराती अनुवाद कर लेंगे तो वह एक अच्छी चीज वन जावेगी। प्रार्थना के वाद रात का समय बापू इस काम में लगाते हैं। दिन में दो वार करीव पौन-पौन घंटा कातते हैं, अखवार पढ़ते हैं और खाली समय में भूगोल की किताव पढ़ते हैं। मनु के साथ गीताजी, व्याकरण और ज्यामिति करते हैं; मेरे साथ वाइविल, रामायण (वाल्मीकिकृत) और संस्कृत व्याकरण। मैंने उन्हें 'लाइट ऑव एशिया' सुनाना आरंभ किया है। आजकल कोई-न-कोई किताव मुझसे सुना करते हैं।

१८ जुलाई '४३

आज वापू की स्वास्थ्य वाली किताव के अंग्रेजी अनुवाद का वाकी हिस्सा पूरा करना आरंभ किया। भाई ने रामायण का अनुवाद शुरू किया।

२० जुलाई '४३

शाम को मीरावहन के हाथ में दर्द रहा। दर्द की दवा ('एस्पिरिन') खाकर सो गईं। खाना नहीं खाया और रात को कैरम भी नहीं खेलीं। दस बजे वापू के पास आकर थोड़ी देर बैठीं।

डॉ० गिल्डर ने फ्रेंच भाषा की एक डॉक्टरी की किताव मुझे पढ़कर सुनाना शुरू किया। आज बीस मिनट तक सुनाई। भाषा कठिन लगती है। धीरे-धीरे पढ़ें तो समझना आसान है, खासकर डॉक्टरी की किताव।

२१ जुलाई '४३

सुबह हम लोग प्रार्थना पूरी करके सोने गये तो वरामदे में से सिपाहियों को जाते देखा। मैंने कहा, "श्री कटेली आज आनेवाले हैं। इसलिए ये लोग डर के मारे जल्दी उठ रहे हैं, नहीं तो कटेली साहव की गैरहाजिरी में सात बजे उठते थे। चाय के समय पता चला कि प्रार्थना चल रही थी तव कटेली साहव आ गए थे। उनका सामान वाद में रघुनाथ लाया। मिठाई वगैरा काफी लाये हैं, दस पौंड विस्कुट भी।

२२ जुलाई '४३

सुबह बेडमिंटन खेलने लगे तो वर्षा आ गई। वापस आकर पिंग-

पाँग खेले। कल तो मीराबहन भी खूब खेली थीं, मगर बाद में हाथ दुखा सो उन्होंने खेलना बंद कर दिया है।

दिन में आकाश साफ हो गया है।

बापू की पुस्तक का अनुवाद चल रहा है। इस महीने के अंत तक पूरा नहीं हो सकेगा।

बापू अब रात को भाई का रामायण वाला गुजराती अनुवाद सुधारते हैं, इसलिए उन्हें दस बज जाते हैं।

२३ जुलाई '४३

मीराबहन की एक टांग में भी दर्द शुरू हुआ है। बा को कल रात खूब खांसी आई और छाती वगैरा दुखी। उनके साथ मैं कुछ समय तक जागी। परिणाम-स्वरूप सुबह प्रार्थना समय न उठ पाई। बुरा लगा। बिजली का चूल्हा फिर बिगड़ गया है, जिससे मीराबहन को बड़ी कठिनाई होती है।

२५ जुलाई '४३

बापू की मालिश करने आज मैं गई, इसलिए अनुवाद का समय उसमें गया।

बापू और भाई अखबारों की कतरनें निकालने का काम करते रहे। कल रात ग्यारह बजे सोने गए, इससे खून का दबाव बढ़ रहा है।

२६ जुलाई '४३

बापू का आज मौन था। कल रात को बापू जल्दी बिस्तरे पर चले गए थे। इसलिए आज सुबह खून का दबाव कुछ कम रहा—१७६/१०४ के लगभग।

२७ जुलाई '४३

बापू का खून का दबाव आज बहुत ज्यादा है—२०६/११६। एक कारण यह है कि सुबह प्रार्थना के बाद वे सोये नहीं।

उन्होंने 'थियोलोजी इन इंग्लिश पोएट्स' पढ़ ली है। इसे पढ़कर उनके मन में विचार उठा है—"जिन लोगों में इस प्रकार के साधु पैदा हुए हैं, उन्हीं में से आज के सरकारी राजनीतिज्ञों जैसे लोग कैसे निकल

सके हैं। इन लोगों के मन में भी कहीं-न-कहीं भलाई का अंश होगा ही।" इसलिए बापू को लगा कि लिनलिथगो को एक छोटा-सा पत्र अपना हार्दिक दुःख बताने के लिए लिखना ही चाहिए। कहते थे कि न सो सकने का कारण ये विचार न थे। उन्हें दूसरा काम करना था। कतरनें निकालने में भाई की मदद करना स्वीकार करने के बाद उन्हें वही काम करना चाहिए था। इसलिए वे विचार करते रहे कि कतरनों की अनुक्रमणिका (क्रॉस-इंडेक्स) कैसी बनानी चाहिए। आश्चर्य है कि बापू छोटी-से-छोटी चीज भी उठाते हैं तो उसमें अपने प्राण उँडेल देते हैं।

श्री कटेली जब से वापस आये हैं, बहुत उदास रहते हैं। अब वे इस जेल से उकता गए हैं।

२९ जुलाई '४३

सुबह आकाश खुला। दिन में थोड़ी वर्षा हुई।

मनु, मीराबहन और मैं—तीनों सलवार और कुर्ता पहनने लगे हैं। यह पंजाबी पोशाक यहां खूब चली है। बापू को भी पसंद है। मैंने एक दिन सलवार और कुर्ता पहना तो कहने लगे, "बस यही पोशाक पहनो।" फिर मनु को भी वही पोशाक पहनने को उन्होंने कहा। मेरे कपड़े उसके ठीक आ गए। यहां रोज घर में धो लेते हैं। थोड़े कपड़ों से काम चल जाता है।

श्री कटेली रात को उपवास करते हैं। उनके घुटने में और हाथ में दर्द है, इसीलिए उन्हें ऐसा करना ठीक लगता है।

३० जुलाई '४३

बापू खूब काम करते हैं। कतरनें निकालना, कातना, मनु को सिखाना, मेरे साथ रामायण और बाइबिल पढ़ना, आदि। अब उन्होंने लैंसबरी का जीवन-चरित्र पढ़ना शुरू किया है और संभवतः जल्दी पूरा कर डालेंगे।

रात को बापू जल्दी सो जाते हैं, इसलिए खून का दबाव कम हो रहा है।

३१ जुलाई '४३

बापू ने ४८ दिन तक सरकारी आरोपों का जवाब तैयार करने में

लगे रहने के कारण काता नहीं था। ८ जुलाई से कातना शुरू किया तो रोज दो बार कातने लगे। कातने में खूब समय देते थे। सब दिनों का कातना, ७५ तार रोज के हिसाब से पूरा करना और ३१ जुलाई तक रोज दो बार कातना चाहते थे। आज वह सब हिसाब पूरा हुआ। तार हिसाब से अधिक निकले।

१ अगस्त '४३

आज से बापू की मालिश करना मेरा काम और स्नान में उनकी मदद करना भाई का काम तय हुआ है, सो साढ़े आठ से दस बजे तक भाई और साढ़े नौ से सवा ग्यारह बजे तक मैं काम कर सकूंगी।

सुबह घूमते समय जेल की बातें होने लगीं। हमारे यहां एक पंद्रह-सोलह वर्ष का कैदी लड़का है। उसने थोड़ा-सा अनाज चुराया था। इस भुखमरी में कौन नहीं चुरा सकता? उसके लिए उसे साल या दो साल की सजा मिली है। सबके साथ वह भी शायद पक्का चोर होकर निकलेगा। भाई कह रहे थे, "यह क्रम बदलना चाहिए। कैदियों को काम का वेतन भी मिलना चाहिए। अमेरिका में तो न जाने कितना रुपया अपनी ही कमाई का लेकर कैदी जेल से निकलते हैं।"

बापू कहने लगे, "मेरा मत तो यह है कि जेलखाना होना ही नहीं चाहिए। सब सुधार-गृह होने चाहिए। इसी तरह सजा की मद्दत भी नहीं होनी चाहिए। जब कैदी सुधर जावे और प्रमाण-पत्र प्राप्त कर ले तभी छूट जावे। आज जो चलता है, सब करुणाजनक है।"

अमेरिका की जेलों में दिल बहलाने के कैसे-कैसे साधन हैं, भाई इस बारे में बताते रहे। कोई जेल में बहुत तूफान मचाए तो उसे जेल के सामाजिक कार्यक्रम में से तथा दिल-बहलाव की चीजों में से निकाल देते हैं। यह बहुत बड़ी सजा हो जाती है, लेकिन इसकी बहुत कम आवश्यकता पड़ती है।

आज बापू का रक्त-चाप आदर्श निकला—१६६/९८। उन्होंने चार रात और पांच रोज से जल्दी सोना शुरू किया है। इससे अब सब ठीक हो गया है। कह रहे थे, "रात को काम न कर सकना मुझे चुभता है; मगर कोई चारा नहीं है।"

रात को भाई कहने लगे, "८ अगस्त को कुछ करना चाहिए।" मैंने कहा, "१५ अगस्त का दिन मनाना चाहिए, जिसमें कैदियों को खिलाना, उपवास और गीता-पारायण का क्रम हो।"

भाई ने कहा, "तबतक गीता कंठ कर लो।"

२ अगस्त '४३

बापू का मौन है। सरकार का पत्र आया है कि वह ८ अगस्त के प्रस्ताव को वापस लेने संबंधी अफवाह को रद्द करने की आवश्यकता नहीं समझती।

३ अगस्त '४३

आठ तारीख की शाम को झंडा-वंदन और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने का कार्यक्रम तय हुआ है। बापू शायद प्रतिज्ञा में कुछ परिवर्तन करेंगे। उपवास करने का विचार था, मगर डॉ० गिल्डर से बापू उपवास नहीं कराना चाहते थे। अगर सब करेंगे तो वे भी करेंगे, इसलिए उपवास का विचार हमने छोड़ दिया है। पंद्रह तारीख को हम उपवास करेंगे। डॉ० साहब न करें, ऐसी सलाह उन्हें दी तो है, पर डर है कि वे मानेंगे नहीं।

बापू और भाई कतरनें निकालने के काम में जुटे हैं। बापू ने लैंसबरी का जीवन-चरित पढ़ डाला और अब 'रेड वर्चू' पढ़ रहे हैं।

रूस के प्रति बापू के मन में मान बड़ा है। कहते थे, "अगर लड़ाई में कोई जीतने के लायक है तो रूस। रूस में सब कुछ लोगों का है, इसीलिए वे इतनी बहादुरी दिखा रहे हैं।"

: ५३ :

'हुकूमत जाओ'-दिन की संवत्सरी

८ अगस्त '४३

सुबह डॉ० शाह और कर्नल भंडारी आये। मीराबहन की नाक के

पानी की परीक्षा करवाने का विचार किया है। 'हुकूमत जाओ' दिन की पहली संवत्सरी है। गत वर्ष आज के दिन शाम को मैं बंबई पहुंची थी। उस रोज किसी को खयाल भी न था कि क्या-क्या घटनाएं इतने समय में होनेवाली हैं।

दोपहर को बापू, भाई, डॉ० गिल्डर, मनु और मैं—सबने ढाई से साढ़े तीन बजे तक काता। मीराबहन और बा को बीमारी के कारण छुट्टी थी।

सुबह स्नान के बाद बापू ने स्वतंत्रता-दिवस वाली प्रतिज्ञा को थोड़ा बदलकर 'हुकूमत जाओ'-दिवस की प्रतिज्ञा तैयार की। शाम को झंडा-वंदन था, इसलिए चाय के बाद हम लोग झंडा-वंदन के लिए भजन तैयार करने बैठे। पौने सात बजे झंडा-वंदन किया। झंडे का गीत गाकर डॉ० साहब ने झंडा फहराया और प्रतिज्ञा पढ़ी। प्रतिज्ञा यह थी :

"हिंदुस्तान सत्य और अहिंसा के द्वारा हर मानी में पूरी आजादी हासिल करे—यह मेरा प्रत्यक्ष उद्देश्य है और वर्षों से रहा है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए आज 'हुकूमत जाओ'-दिवस की पहली संवत्सरी के रोज प्रतिज्ञा करता हूं कि जबतक यह उद्देश्य पूरा न हो जाय, तबतक न मैं खुद चैन लूंगा, न जिन पर मेरा असर है, उन्हें चैन लेने दूंगा। मैं उस अदृष्ट दैवी शक्ति से, जिसे हम गॉड, अल्लाह, परमात्मा आदि परिचित नामों से पहचानते हैं, इस प्रतिज्ञा के पूरा करने में इमदाद मांगता हूं।"

प्रतिज्ञा पहले अंग्रेजी में और फिर हिंदुस्तानी में डॉ० गिल्डर पढ़ गए। फिर हिंदुस्तानी में हम सबने उनके पीछे-पीछे उसे दोहराया।

प्रतिज्ञा के बाद 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' गाया, फिर 'वंदेमातरम्' गाकर समारोह पूर्ण किया। झंडा गाड़ने की जगह लिपाई की थी और गोल चक्कर के किनारे-किनारे गमले रखे थे। सुंदर दृश्य था।

रात में बापू ने पौने ९ बजे मौन लिया।

९ अगस्त '४३

सुबह यरवदा जेल की तरफ से जयजयकार की आवाजें आने लगीं।

हम याद कर रहे थे कि कैसे पिछले साल इस समय बापू को गिरफ्तार करके स्टेशन पर लाया गया था और कैसे वे यहां आये, आदि-आदि। स्वतंत्रता का प्रण लेकर हम सब निकले थे—महादेवभाई उसे पूरा कर गए। कोई ऐसा दिन नहीं जाता, जब महादेवभाई का स्मरण बार-बार न आता हो।

१० अगस्त '४३

अखबारों में, देश में नवीं अगस्त को मनाने का कैसे प्रयत्न किया, इसकी खबर थी। इतनी सख्ती और इतनी भुखमरी होते हुए भी लोग इतना कर सके, यह हिम्मत की बात है। लेकिन देश की शक्ति अगर इतनी ही रह गई है तो हमें सचमुच यहां सात वर्ष और बैठना होगा।

आज मुझे रसोईघर का भी काम करना पड़ा। रसोईघर में चोरी होने लगी है, इसलिए वहां ताला लगाने का विचार हो रहा है।

११ अगस्त '४३

सुबह श्री कटेली ने खुद बैठकर अपने सामने खाने का सामान एक अल्मारी में रखवाकर ताला लगा दिया।

पंद्रह तारीख को गीता-पारायण करने का विचार है। मैं, मनु और भाई आगे से बापू के पास शाम को चार बजे गीता-पाठ करेंगे।

: ५४ :

महादेवभाई की बरसी

१४ अगस्त '४३

आज महादेवभाई को गये ५२ हफ्ते पूरे हो गए।

कल कैदियों को खाना खिलाना है। दस बजे प्रार्थना में बैठेंगे। हम सब लोग उपवास करेंगे। मीराबहन को मैंने फूल सजाने में मदद देने को कहा है। 'व्हेन आई सर्वे दि वंडरस क्रॉस' वे प्रार्थना में गायगी। दोपहर को एक घंटा सामूहिक कताई होगी।

बा की तबीयत अच्छी नहीं। दो-चार रोज से उनका शरीर दुखता है। मेरी तबीयत भी ढीली है। कल जब से जुलाब लिया है तब से उल्टी का-सा आभास होता है, इसलिए आज सिर्फ मौसंबी खाई।

दोपहर दो बजे के करीब बा को दिल की धड़कन का दौरा हुआ। चार बजे के करीब कुछ कम हुआ, पर छः बजे देखा कि फिर चल रहा था। शाम को मैंने डॉ० शाह से दिल की धड़कन का चित्र लेने की मशीन लाने को कहा। वे कोयाजी के यहां गये। 'उनका सहायक शाम की छुट्टी पर गया हुआ था, वह मुश्किल से मिला। यहां बापू ने प्रार्थना जल्दी पूरी कराई। भजन और रामायण छोड़ दिये, ताकि डॉ० शाह वापस आवें तब तक लोग तैयार हो जायं। राह देख-देखकर बापू गुसलखाने गये। आकर सोये तब कहीं सवा-नौ-साढ़े-नौ बजे मशीन आई। दौरा अभी जारी था। चित्र लेकर वे लोग वापस गये। करीब ग्यारह बजे मैंने देखा कि दौरा बंद हो गया था। रात को वह अच्छी तरह सोयीं। मनु करीब बारह बजे तक बा के पास सोई, पीछे अपनी खाट पर गई। मैं सुबह प्रार्थना में नहीं उठी; क्योंकि उस वक्त पसीना आकर बुखार उतर रहा था। कल शाम को चार बजे के लिए भजन का और ईशोपनिषद् का अभ्यास किया।

१५ अगस्त '४३

रात में पानी पड़ रहा था। डर था कि सवेरे भी ऐसे ही रहा तो समाधि की सजावट करने और प्रार्थना करते समय अड़चन आवेगी, परंतु तीन बजे बारिश थम गई। भाई सुबह प्रार्थना के बाद नहीं सोये। मैंने भी न सोने का इरादा किया था, मगर मतली आती थी और चलने-फिरने से बढ़ती थी, इसलिए सो गई। सात बजे उठी, तब तबीयत ठीक थी। आकाश में बादल घिरे थे। पिछले वर्ष भी महादेवभाई की मृत्यु के दिन ऐसा ही था। जल्दी से स्नानादि से छुट्टी पाई। बापू सवा सात बजे घूमने जानेवाले थे। मैं सात बजकर बीस मिनट पर पहुंच गई और फूल इकट्ठे किये। पौने आठ बजे हम लोग महादेवभाई की समाधि पर गये। मीराबहन, डॉ० साहब, कटेली साहब, सब आये थे। मनु कुछ देर से आई। बा के पास थी। मीराबहन ने फूल सजाने में मदद की।

वहुत सुंदर सजावट हो गई। कल शाम को गोवर से लिपाई कराई थी। सव सुंदर लगता था। डेलिया का एक फूल भी लहलहा रहा था मानो महादेवभाई की खातिर ही आज खिला हो। उसे ॐ के वीच लगाया। गीताजी का पाठ रोज की तरह किया। आज वातावरण में गंभीरता अधिक थी।

महादेवभाई की समाधि (वा ने इसे 'महादेव का मंदिर' नाम दिया है) से लौट कर भाई वापू की मालिश करने गए। मैंने कैदियों के लिए खिचड़ी, सव्जी और कढ़ी का सामान दिया। पीछे सफाई पर लगी। जिस कमरे में महादेवभाई के शव को पिछले साल रखा था, वहां का सामान निकलवाया। कमरा जैसा उस समय था, वैसा ही कर दिया। कमरे में उसी तरह वीच में जेल की चद्दर विछाई। मीराबहन ने जिस तरह जेल की चादरों के वीच पड़े शव पर फूल सजाये थे, उसी तरह आज चद्दर पर सजाये। जहां महादेवभाई का सिर था—उनका मधुर मुख था, वहां फूलों का 'ॐ' वनाया, पांवों के पास सलीब। सिर के पास एक कटोरे में सुगंधि-सामग्री सुलगाकर रखी। शव के पास जहां बापू वैठे थे, वहीं उनकी गद्दी रखी, उनके पास ही वा की वैठक, सामने डॉ० साहव और कटेली साहव के लिए जगह। वीच में धूप इत्यादि के पास वापू के वाद मैं, फिर भाई, फिर मनु और उसके बाद मीराबहन अर्धचंद्र-सा बनाकर बैठे। सामग्री में से खूब धुआं उठ रहा था। गले में जाता था, सो जरा पीछे हटाकर रखना पड़ा। जिधर शव के पांव थे, उधर मनु ने तुलसी की वत्ती जलाकर रखी। पौने दस वजे बापू स्नानघर से निकले। महादेवभाई के कमरे में आये। मैंने कहा, "बापू, देखिये, सिर की जगह 'ॐ' है; क्योंकि महादेव-भाई 'ॐ' में लीन हो गए न?" बापू कहने लगे, "हां, वह तो है ही।" दीवारों पर जो फर्नीचर रह गया था, उस पर और अलमारियों आदि पर मीराबहन ने सुंदर फूल सजाये। सुलगती हुई सुगंधि-सामग्री गत वर्ष शव के पास सुलगाई हुई सामग्री का शेष भाग थी।

डॉ० शाह आये और कहने लगे, "मुझे पता नहीं था कि आज महादेव-भाई की संवत्सरी है।" बापू ने हँसकर जवाब दिया, "कोई हर्ज नहीं। आप भले आये। आपको हम बाहर नहीं निकालेंगे।" डॉ० शाह कहने

लगे, "हां, खास करके महादेवभाई की संवत्सरी से आप मुझे कैसे निकाल सकते हैं?"

दस वजने में पांच मिनट पर घंटी बजाने को बापू ने कहा। मैंने जाकर वजाई। ठीक दस बजे प्रार्थना शुरू हुई। ईशोपनिषद् का पहला और आखिरी श्लोक, फिर 'वैष्णव जन' गाया गया। पीछे मीरावहन ने 'नारायण-नारायण' की रामधुन चलाई। भाई ने 'ओजअबिल्ला' और डॉ० साहव ने 'मजदा अन्मोई' चलाया। मीरावहन ने 'व्हेन आई सर्वे दि वंडरस क्रॉस' गाया। इसके बाद मीरावहन, डॉ० साहव और कटेली साहव चले गए। हमने 'ॐ पार्थाय प्रतिबोधिताम्' से शुरू करके गीता-पारायण किया। साढ़े ग्यारह वजे सब समाप्त हुआ। बात-बात में बापू भाई को बताने लगे कि महादेवभाई की मृत्यु के दिन कमरे की बिलकुल ऐसी ही सजावट थी। शव के स्थान पर आज फूलों की सेज बनाई थी। मुंह की जगह 'ॐ' था, जो अब की तरह पीले कनेर के फूलों से घिरा हुआ था। पांवों की जगह '†' बनाया था। मैंने पूछा, "महादेवभाई की आत्मा क्या इस समय यहां होगी?" बापू वोले, "मुझे इसमें जरा भी शक नहीं।"

बापू को और बा को गरम पानी और शहद तथा मीरावहन को गरम दूध देकर मैं और मनु नीचे रसोई में कैदियों का खाना देखने गईं। कढ़ी बननी बाकी थी। महादेवभाई को कढ़ी कितनी प्रिय थी! अपने हाथ से बनाकर उन चार दिनों में उन्होंने हमें खिलाई थी, इसलिए उनकी स्मृति में कैदियों के लिए कढ़ी बनाई गई थी।

बापू के कहने से मैंने सोडा की गोली खाई और पानी पिया। इतनी सख्त मतली होने लगी कि मुझे खाट पर पड़ना पड़ा। साढ़े बारह बजे कैदियों का खाना तैयार किया। बापू ने खिचड़ी, मीरावहन ने कढ़ी और डॉ० गिल्डर ने सब्जी बांटी। मुझे वहां से जाना पड़ा; क्योंकि बहुत मतली होती थी। बापू ने कैदियों को बताया कि आज उन्हें क्यों खिलाया जा रहा है। सब सामान सिपाहियों को भी भेजा गया। कटोरी में थोड़ा-सा मेरे चखने के लिए रखा।

बापू कैदियों को खिलाकर लौटे। मुझे लेटे देखा तो नाराज होने लगे और बोले कि मौसंबी का थोड़ा रस लेना चाहिए था। पूरा उपवास नहीं करना चाहिए था। मैंने रस लिया। तो भी मतली बंद नहीं हुई। साढ़े तीन बजे तक पड़ी रही, इसलिए कातने में शामिल नहीं हो सकी। मनु रात में कम सो सकी थी। वह भी साढ़े तीन बजे सोकर उठी। हम दोनों ने जाकर रसोईघर में काम करना शुरू किया। कैदियों के लिए हलुआ और चाय बनाई। जितना अच्छा हलुआ मैं बना सकती थी, बनाया। उसमें बादाम, इलायची, लौंग इत्यादि सब डाला। बापू के लिए सब्जी और दूसरों के लिए रोटी और सब्जी बनाई। साढ़े पांच बजे कैदियों को मीराबहन ने चाय बांटी और बापू ने हलुआ। पौने छः बजे बापू खाने बैठे और सवा छः पर दूसरे सब लोग। बापू ने हलुआ चखा। "मिठास कुछ ज्यादा थी, नहीं तो बहुत अच्छा बना था," ऐसा उन्होंने कहा। कैदियों को बहुत अच्छा लगा।

१६ अगस्त '४३

रात में एक बजे बापू ने जगाया। चंद्रग्रहण पड़ रहा था। आधा चंद्रमा ढका था। मनु को भी जगाकर दिखाया। डेढ़ बजे फिर देखा कि तीन-चौथाई चांद ढक गया है? पीछे सो गए। सुबह प्रार्थना के बाद मैं फिर सो गई। थकान थी। साढ़े छः बजे उठी। तैयार होकर घूमने गई। सवा आठ बज गए थे। आकर बा की मालिश आदि की। मनु का हाथ कट गया था, सो उसे छुट्टी दी। खाने के बाद डॉ० साहब के पास थोड़ा पढ़ा। एक बजा। उन लोगों का खाना बाहर से आता है। डेढ़ बजे तक नहीं आया, इसलिए जो कुछ घर में था, वह मैंने उन्हें डेढ़ बजे खिलाया। दो बजे उनका खाना आया। वह शाम के लिए रखा।

बा को आज भी बहुत कमजोरी लगती है और शरीर दुखता है। मेरी तबीयत अभी अच्छी तरह सुधरी नहीं है। आज भाई की फाइलों का काम करना था, वह नहीं हो सका।

: ५५ :

अहिंसा का बाह्य चिह्न—चर्खा

१७ अगस्त '४३

सुबह घूमते समय बापू बताने लगे—"पंद्रह तारीख को तू कात नहीं सकी, वह मुझे चुभा। तबीयत ठीक नहीं थी, मगर तबीयत को ठीक रखना तेरा काम था। दृढ़ संकल्प रहता कि तबीयत ठीक रखकर कातना है तो वह होता ही। मेरी दृष्टि में चर्खा गीता का अमल है। गीता सिद्धांत बताती है। गीता-पाठ का महत्त्व है, पर यदि मुझसे कोई पूछे कि गीता-पाठ करूं या चर्खा कातूं, तो मैं कहूंगा कि चर्खा कातो। जो समझपूर्वक कात सकता है, उसे गीता पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। चर्खा कार्यरूप में परिणत अनासक्ति है।" मैंने पूछा, "यह कैसे ? क्या आप यह कहना चाहते हैं कि गीताजी में कर्मयोग का जो पाठ है—'अनासक्त होकर, फल का विचार न करके, लोगों की हँसी की परवा न करके कातना' यह उस पाठ पर अमल करना है ?"

बापू कहने लगे, "ऐसा नहीं। कर्म का फल तो है ही, मगर जो फल प्रत्यक्ष नहीं उसके बारे में दृढ़ विश्वास रखना अनासक्ति है—जैसे कि कातने से हम स्वराज्य लानेवाले हैं, इस श्रद्धा में भी आसक्ति तो है, पर वह अनासक्ति है। राम-नाम में आसक्ति आसक्ति नहीं कहलाती। राम-नाम में आसक्ति रखनेवाला आदमी दूसरी वस्तु के बारे में अनासक्त है। यही नियम मैं चर्खे को भी लागू करता हूं। चर्खे के कारण मेरी बड़ी हँसी हुई है। अभी तक होती है, पर मुझे उससे क्या ? मेरा विश्वास दृढ़ है, इस बारे में कोई शंका नहीं है।"

चर्चा पूरी नहीं हुई थी कि इतने में डॉ० साहब और कटेली साहब बेडमिंटन खेलने आये। बापू ने मुझे खेलने को भेज दिया।

बा की मालिश के बाद मीराबहन को देखा। उनके स्नायु-संस्थान (Nervous System) की अच्छी तरह परीक्षा की।

आज सुबह प्रार्थना के बाद मनु की खाट पर चूहा आ गया। उसे

भगाया। वह चूहे से बहुत डरती है। उस खाट पर फिर वह सोई ही नहीं, हम लोग मजाक करने लगे कि रोटी लेकर खाती-खाती सोई होगी, नहीं तो चूहा खाट पर क्यों आता।

१८ अगस्त '४३

आज भी सुबह प्रार्थना के बाद उठ गई। उठकर साढ़े छः तक स्नानादि से फारिग हो गई। आधा-पौन घंटा पढ़ने को मिल गया। पीछे घूमी, खेली, बा की मालिश की और डॉ० साहब के साथ पढ़ा। अभी पौने ग्यारह बजे अनुवाद करने बैठती हूं।

दोपहर और रात को मैं 'लौस्ट वर्ल्ड'[1] (Lost World) पढ़ती रही। बहुत अच्छी किताब है। रस से भरी है। भाई की फाइलों का थोड़ा-सा काम भी किया।

१९ अगस्त '४३

आज सुबह प्रार्थना के बाद सो गई। बा ने मनु से और बापू ने भाई से मालिश कराई। बाद में स्नान के समय कपड़े वगैरा धोने का काम मैंने किया। आज अनुवाद नहीं कर सकी और डॉ० गिल्डर के साथ पढ़ा भी नहीं। 'लौस्ट वर्ल्ड' ही पढ़ती रही और पूरी करके उठी।

सुबह घूमते समय बापू उस दिन वाले चर्खे और अनासक्ति वाले प्रसंग पर फिर आए। बोले, "तूने पंद्रह तारीख को कातने का संकल्प किया था तो उस संकल्प को पूरा करने के लिए जो हो सके, करना चाहिए था। तबीयत संभालनी चाहिए थी। संकल्प शुभ हो, दृढ़ हो तो पूरा तो होता ही है। फिर दोपहर को नहीं कात सकी तो रात को या दूसरे दिन उस संकल्प को पूरा करना चाहिए था।" मैंने कहा, "तबीयत संभालने की खातिर, पंद्रह तारीख को अच्छी-भली रहने के लिए ही तो अंडी का तेल लिया था, मगर असर उलटा हुआ। मैं यह नहीं समझती थी कि दोपहर की जगह शाम को या रात को भी काता जा सकता है।" बापू कहने लगे, "क्यों नहीं? कातना कोई ऐसी चीज नहीं है, जो दूसरे

---

१. लेखक A. Conandoyle।

समय पर नहीं हो सकती ! और अगर कातना अच्छी चीज है तो एक रोज ही नहीं, हर रोज कातना चाहिए, पहले से ज्यादा दृढ़ होकर कातना चाहिए। चर्खे की बहुत हँसी उड़ाई गई है, अब भी उड़ाई जाती है, मगर मुझ पर उसका कुछ असर नहीं होता। मनु भी सवाल किया करती है कि 'दिन भर काता जाय तो ढाई-तीन गुंडी ही तो कात सकते हैं न! इससे क्या फायदा? कातना मानो वक्त खोना है।' मगर मैं कहता हूं कि तीस कोटि लोग पंद्रह मिनट भी काता और बुना करें तो हिंदुस्तान को करीब-करीब मुफ्त में कपड़ा मिल सकता है। ऐसा करें तो स्वराज आज हाथ में है। गरीब-से-गरीब, दीन-से-दीन को स्वराज दिलाने का दूसरा रास्ता नहीं। दूसरी तरह से तो तानाशाही ही आ सकती है जैसा कि जर्मनी और इटली में चलता है। रूस में भी वही हाल है, मगर चूंकि वहां राज सबके लिए है, सचमुच प्रजा के लिए है, इसलिए वह अच्छा दिखता है; लेकिन उसकी शोभा भी टिक नहीं सकती। उसके टिकने का रास्ता एक है: अहिंसा को लें और हिंसा का त्याग करें। चर्खा अहिंसा का बाह्य चिह्न है। अब रही अनासक्ति की बात, सो दूसरी सब चीजों में अनासक्ति अच्छी है, मगर चर्खे में आसक्ति रखना तो और भी अनासक्ति है।"

वा आज भी नाराज हैं। कल से दूध मात्र पीती हैं—शाक-भाजी, कुछ नहीं लेतीं।

२१ अगस्त '४३

आज दोपहर बापू को कतरनों के काम में मदद देती रही।

आज खूब वर्षा हुई। शाम को खेल नहीं सके।

: ५६ :

हिंसा के बीच अहिंसा

२२ अगस्त '४३

बहुत दिनों के बाद सुबह बेडमिंटन खेली। कटेली साहब का हाथ दुखता है, खेलने में कठिनाई आती है, तो भी खेलना उन्हें अच्छा लगता है।

सेवाग्राम से किताबें, टाइपरायटर, चर्खा, घी इत्यादि चीजें आईं। भंडारी सुबह अपने साथ लकड़ी की दो पेटियां लाये थे।

दोपहर को डेढ़ घंटा कतरनें निकालने का काम किया।

प्रार्थना के बाद बापू का मौन शुरू हुआ। मैं रात को बहुत कम काम कर पाई। सिर में दर्द था।

२३ अगस्त '४३

आज जन्माष्टमी है। बा ऐसे दिन कैदियों वगैरा को सामान्यतः कुछ देना चाहती हैं; मगर आज पूछने पर उन्होंने इंकार किया।

दिन में मैंने भाई की फाइलों का काम किया। मीराबहन ने बालकृष्ण की मूर्ति के आस-पास सुंदर फूल सजाये। बा वहां जाकर खूब भक्ति-भाव से पूजा कर रही थीं।

२४ अगस्त '४३

मीराबहन ने आज भी सुंदर फूल बालकृष्ण की पूजा में सजाये थे; मगर मैं देखने जाना भूल गई।

दिन में मैं कतरनें निकालने का काम करती रही। २५१ नंबर की कतरन तक के संग्रह का कार्य पूरा किया। बाइबिल का समय भी उसी में गया।

शाम को घूमते समय मीराबहन बापू से फिर पूछने लगीं कि स्वराज्य में जमीन का बंटवारा कैसे किया जायगा? बापू ने बताया, "जमीन राज्य की होगी। मैं मान लेता हूं कि शासन-तंत्र ऐसे लोगों का होगा, जो इस आदर्श को माननेवाले होंगे। अधिकांश जमींदार खुशी से अपनी

जमीन छोड़ देंगे। जो नहीं छोड़ेंगे, उनसे कानून छुड़वा लेगा।" मीरा-बहन ने कहा, "तो पहला काम होगा लोकमत को तैयार करना ?" बापू ने उत्तर दिया, "लोकमत को तालीम मिल चुकी है। वह आज लगभग तैयार है।"

अचानक बाहर से 'इंकलाब जिंदाबाद'–'महात्मा गांधी की जय'–'गांधीजी को छोड़ दो' के नारों की आवाज आने लगी। पता लगा कि पंद्रह बिहारी मोर्चा लेकर आये थे। सब गिरफ्तार हो गए हैं। सब सिपाही उधर ही भाग गए थे। हम हँसने लगे, "सब पहरेदार उधर चले गए हैं। इधर से हम भाग सकते हैं।" बापू कहने लगे, "वे उधर इसलिए चले गए हैं कि वे तुम्हारा विश्वास रखते हैं कि तुम लोग ऐसा कुछ नहीं करोगे।" हो सकता है कि यह बात ठीक हो और बाहर के ७२ पहरेदार हमें बाहर जाने से रोकने को नहीं, पर बाहरवालों को अंदर आने से रोकने को ही रखे गए हों।

२५ अगस्त '४३

आज सुबह ग्यारह बजे के करीब फिर जय-जयकार सुनाई दी। बापू कहने लगे, ऐसा लगता है कि मेरे पहले शिक्षण के अनुसार इन लोगों ने सर्वथा अहिंसक लड़ाई का यह तरीका निकाला है। पकड़े जाने के ही लिए आते हैं और एक बार पकड़े गए तो पूर्णतया शांत रहते हैं। एक भी सिपाही दस-बीस की टोली को पकड़ने के लिए काफी है।"

शाम को भाई बहुत दिनों के बाद रिंग खेलने को आये। खेलने से कुछ तकलीफ नहीं हुई। मन नहीं खेली। उसे थोड़ा बुखार था। आज से उसे कुनीन मिक्चर देना शुरू किया है। गोली काम नहीं करती लगती।

कल 'धम्मपद' पढ़ा। आज 'पास्ट एंड प्रेजेंट' पढ़ना शुरू किया है। रात को भाई के साथ फिर वही पढ़ा। वे कुछ उस समय के इतिहास की बातें बता रहे थे।

२६ अगस्त '४३

दोपहर का समय कतरनों में गया। डॉक्टरी अभ्यास नहीं होता। यह चुभता है।

शाम को घूमते समय मीराबहन बापू से कुछ पूछा करती हैं। मैंने बापू से कहा कि चर्चा का विषय आज क्या था? उन्होंने बताया, "उनके (मीराबहन के) मन में कुछ गलतफहमी है कि हम जापान का सामना किस तरह से करेंगे। मैंने समझाया कि सरकारी फौजें अपने ढंग से, हिंसक लड़ाई से, उनका सामना करेंगी और हम अहिंसक तरीके से। पहले मैं कहा करता था कि हिंसा चलती हो तब अहिंसा नहीं चल सकती, मगर अब मैं आगे बढ़ा हूं। हिंसा के बीच अहिंसा न चल सके तो वह अहिंसा अपंग है।" भाई ने पूछा, "क्या अहिंसा और हिंसा का सहयोग हो सकता है?" बापू ने उत्तर दिया, "क्यों नहीं, अभी देखो, हम रूस और चीन की मदद करना चाहते हैं न? हिंद आजाद होकर जापान का सामना अहिंसक तरीके से करे तो क्या रूस या चीन को मदद नहीं मिलेगी?" यद्यपि रूस और चीन हिंसक लड़ाई लड़ रहे हैं, हमारी अहिंसा उनकी मदद करेगी।" भाई ने आगे सवाल उठाया। मगर प्रार्थना का समय हो गया था। बापू ने बाद में यह चर्चा चलाने को कहा।

२९ अगस्त '४३

आज दोपहर को एक सुंदर पक्षी बा की खाट पर आ बैठा। मैं खाना खाकर आई तो बापू बा की खाट के पास खड़े उसे देख रहे थे। वह काला था। उसके पंख लंबे थे और पीछे की तरफ लंबी-तीखी पूंछ का-सा उसका आकार था। मैंने कहा, "मीराबहन को बुलाऊं?" बापू बोले, "हां!" मीराबहन कमरे में न थीं। बापू को और भाई को लगता था कि पक्षी बीमार है। मीराबहन इसे ज्यादा होशियारी से पकड़ सकेंगी। आखिर मीराबहन डॉ० गिल्डर के कमरे में मिलीं। वे आईं। सबकी आवाज सुन कर पक्षी फुर्र से उड़ गया। मुझे अफसोस हुआ। मैंने अच्छी तरह देखा न था। मीराबहन की ही खोज में रही थी।

घूमने में हम लोग जब नहीं होते तब मीराबहन बापू के साथ आती हैं। कोई और आ जाता है तो भाग जाती हैं। मैंने उनसे एक बार इसका कारण पूछा तो बोलीं, "दो की बात और है। वे अच्छी तरह बातें कर सकते हैं।" मैंने कहा, "आप भले बातें करें, हम सुनेंगे। और हमारी बात तो

कोई ऐसी है नहीं कि दो में ही हो सके।" वे कुछ घबराहट में पड़ गईं। सच यह है कि उन्हें मनुष्य की अपेक्षा वृक्षों, बकरियों और पक्षियों का साथ अधिक अच्छा लगता है। आज मीराबहन घूमने के समय बापू के साथ आईं।

कल शाम घूमते समय मैंने बापू से पूछा था, "हम लोगों ने अंग्रेजों की मदद करने की बात सोची थी। पहले आपने कहा था कि उन्हें बिना शर्त मदद देनी चाहिए। लेकिन अब आप कहते हैं कि अगर वे हिंदुस्तान की मांग स्वीकार न करें तो उनके साथ लड़ना चाहिए। इन दोनों परि-स्थितियों में सचमुच विरोध नहीं है; क्योंकि आज हम मानते हैं कि हम स्वतंत्र हुए बिना उनकी मदद नहीं कर सकते। क्या मेरी यह धारणा सही है?" बापू कहने लगे, "इसमें मैं इतना ही कहूंगा कि उस समय की हालत में बिना शर्त मदद देना ही उचित था। मेरी बात कांग्रेस ने मानी होती तो नुकसान नहीं होने वाला था। बाद में क्या होता, यह कहा नहीं जा सकता, मगर कांग्रेस ने यह न माना। वल्लभभाई ने भी, जो हमेशा मेरी बात मानते हैं, कहा कि 'यह मैं नहीं मान सकता।' इसका परिणाम यह हुआ कि हम अंग्रेजों को उनके असली रूप में देख पाए। उसे देखकर हम बिना शर्त मदद की बात नहीं कर सकते। चीन और रूस की हमें मदद करना हो तो हमें पहले स्वतंत्र होना चाहिए।"

मैंने पूछा, "क्या अहिंसक और हिंसक लड़ाई में सहयोग हो सकता है? वे लोग हिंसक लड़ाई लड़ते हैं और हम अहिंसा द्वारा उनकी मदद करना चाहते हैं। इसी तरह अंग्रेज यहां रहकर जापान के साथ हिंसक लड़ाई करें और हम अहिंसक लड़ाई करके उनकी मदद करने की बात करें तो क्या यह संभव है?" बापू कहने लगे, "इसे सहयोग का नाम न दिया जाय। हम अपनी अहिंसा के द्वारा अपनी रक्षा करते हैं, इसका परिणाम यह आता है कि रूस को, चीन को, अंग्रेजों को, जो हिंसक लड़ाई करते हैं, इससे फायदा पहुंचता है। इसमें हिंसा के साथ सहयोग करने की बात नहीं आती। जापानी हिंसक लड़ाई करते हैं तो अहिंसक पक्ष क्या चुपचाप बैठा रहे? यह नहीं हो सकता। हमें अहिंसक लड़ाई चलानी होगी।

इस तरह हमारी अहिंसा पूरी तरह दीप्यमान नहीं होगी, यह ठीक है; मगर अहिंसा को हिंसा से भरे जगत में अपना स्थान बनाना हो तो उसे हिंसा के बीच आकर काम करना होगा। उससे हिंसक लड़ाई करनेवालों को भी बिना फायदा पहुंचे नहीं रह सकता और अंत में अहिंसा की सफलता देखकर वे हिंसक मार्ग को छोड़ भी सकते हैं। लेकिन यह सवाल निरर्थक-सा है। मौका आने पर क्या होगा, यह कौन कह सकता है। अहिंसक ऐसे मौके पर अपना मार्ग देख लेगा।"

३० अगस्त '४३

बापू का मौन है। दिन भर वे अपनी कतरनों का काम करते रहे। कई बार कह चुके हैं कि उन्हें इस काम में बड़ा रस आता है। असल में जो भी काम वे हाथ में लेते हैं, उसी में उन्हें रस आने लगता है। पिछले साल मैंने और भाई ने कुछ कतरनें निकाली थीं। उनमें पर्चियां[1] आदि लगाने का काम पहले बापू ने मीराबहन को सौंपा था। थोड़ा-सा करने के बाद मीराबहन कहने लगीं, "शायद इससे भी हाथ को तकलीफ होती है। कतरनें खोवें नहीं, इससे बापू को लगा कि छोटी-छोटी कतरनें रखनी ही न चाहिए, और जोड़कर लंबी कर लेना ज्यादा अच्छा है। मेरा एक बड़ा गत्ता पड़ा था। उसे काटकर दो किये ताकि तीन-चार कालम चौड़े और पूरे अखबार की लंबाई की कतरनें उसमें आ सकें, मगर जब कतरनें बढ़ गईं तो उन्होंने देखा कि उठाते समय गत्ता लचक जाता है, इसलिए कटेली साहब से लकड़ी के पट्टे बनवाने को कहा। मैंने प्लाईवुड का पता लगाया तो ७ × ३२ इंच की माप के तख्ते का दाम ५०) के करीब पड़ता था। बापू इतना खर्च करवाना नहीं चाहते थे, इसलिए जेल में मामूली लकड़ी के पट्टे बनाये गए। बापू अब कतरनें उसमें रखते हैं। उन्हें दिन भर पर्चियां लगाने का काम करते देखकर मैंने भी उनकी मदद करना शुरू किया। परसों पुराना संग्रह पूरा हो गया। कल से बापू अनुक्रमणिका

---

१. कतरनों के सिरे पर अखबार का नाम, तारीख इत्यादि डालने के लिए पर्चियां चिपका दी जाती थीं।

बनाने के काम में लगे हैं। २५-२५ कतरनों को सीं कर, उनका बंडल बना लिया। नई कतरनों में पर्चियां लगाने का काम मुझे दिया है। रोज के नये अखबारों की कतरनें भाई निकालते हैं। दस रोज के पुराने चार अखबारों— हिंदू, हिंदुस्तान टाइम्स, हिंदुस्तान स्टैंडर्ड और स्टेट्स मैन की निकालने लायक कतरनों पर भाई निशान करते हैं। बापू उन्हें देख जाते हैं, फिर वे अखबार डॉ० गिल्डर और कटेली साहब के पास जाते हैं। वे लोग उनमें से कतरनें निकालकर पर्चियां वगैरा लगाकर बापू के पास लाते हैं। बापू उन्हें नंबर देकर अनुक्रमणिका बनाते हैं। इस तरह सब घर कतरनों के काम में लगा हुआ है। आशा है, एक महीना और लगेगा और यह पुराने अखबारों में से कतरनें निकालने का काम पूरा हो जावेगा।

१ सितंबर '४३

आज हम लोग बापू के साथ घूमने चले। भाई ने बात चलाई। उन्होंने उस रोज पूछा था, "अंग्रेजों को आप यहां लश्कर रखने की इजाजत देते हैं। मगर जापान कह सकता है कि इससे तो हम मर जाते हैं। तुम्हारे घर से ये हमें पत्थर मारते हैं, इसलिए या तो तुम्हीं इन्हें निकालो या हमीं को निकालने दो। तब अहिंसा क्या उत्तर देगी?"

मैंने कहा, "मैं जो इस प्रश्न का उत्तर समझी हूं, वह बापू सुनें, और मुझे सुधारें। एक तो यह कि अंग्रेज इतने समय से यहां हैं। वे हमें अपनी आजादी न्यायपूर्वक लेने देते हैं; मगर अपनी रक्षा के लिए यहां रहना भी चाहते हैं। तो हमारा उनके प्रति यह कर्त्तव्य है कि हम उनकी अनुकूलता का विचार करें और उन्हें रहने दें। जापान के प्रति हमारा कोई फर्ज नहीं है। दूसरे हमारी सहानुभूति अंग्रेजों के साथ है। हम नहीं चाहते कि वे युद्ध में हारें। जिस काम के करने में उन्हें हार का डर हो, वह हम उनसे नहीं करवाना चाहते।" बापू कहने लगे, "यह ठीक है; मगर इसमें मेरी दलील पूरी-पूरी नहीं आ जाती। संपूर्ण अहिंसा के सामने हिंसा टिक नहीं सकती, यह शाश्वत नियम है। अगर सारा हिंदुस्तान अहिंसक होता तो अहिंसा द्वारा जापानी आक्रमण का सफल मुकाबला किया जा सकता है, इसे अंग्रेज स्वयं देख सकते हैं। तब यहां पर हिंसक साधनों से जापान

का मुकाबला करने के लिए उनके यहां रहने का सवाल ही न रह जाता। किंतु बात यह है कि अंग्रेजों के सामने आज है क्या कि जिससे वे यह मान सकें कि हमारी अहिंसा सफल होगी? ऐसी हालत में मेरी अहिंसा मुझे मजबूर करती है कि मैं उन्हें यहां रहने दूं। अपनी रक्षा के लिए अपने खर्च पर वे यहां रहें तो मैं उन्हें इंकार नहीं कर सकता। अगर सारा हिंदुस्तान अहिंसक रहता तो उनके यहां रहने का प्रश्न उठ ही नहीं सकता था। कोई कहे कि ऐसी अहिंसा लोगों में कभी आने की नहीं है तो उससे यह नियम नहीं बदलने वाला। मगर आज जब सारा हिंदुस्तान अहिंसक नहीं है तब मैं अंग्रेजों से अहिंसा में विश्वास रखकर यहां से चले जाने को कैसे कह सकता हूं?"

यह बात करते-करते हम महादेवभाई की समाधि पर पहुंच गए। फूल चढ़ा कर प्रार्थना करके वापस लौटे तो भाई कोई दूसरी बात करने लगे; मगर बापू ने कहा, "मेरा मन अभी उसी प्रश्न पर है। तुम्हें याद रखना चाहिए कि इस चीज की उत्पत्ति कैसे हुई। मेरे स्वभाव में यह चीज पड़ी है कि अपनी भूल देख लूं तो उसे ढांप नहीं सकता। दूसरे लोग तर्क पूर्ण ढंग से बात करने पर जोर देते हैं। उन्हें डर रहता है कि एक बात कहकर कुछ दूसरी ऐसी बात मुंह से न निकल जावे, जिससे पहले की बात अतर्क पूर्ण मालूम पड़े। मुझे ऐसा कुछ है ही नहीं। मुझे एकमात्र सत्य से वास्ता है। दक्षिण अफ्रीका में अपने एक मुकदमे के हिसाब में मैंने भूल देखी। मैंने बड़े वकील से कहा। उन्होंने मुझे समझाया। 'ऐसी भूल स्वीकार की तो समझो कि मुकदमा तो हाथ से गया ही, साथ ही वकालत भी खत्म। मुझ से तो यह न हो सकेगा। मुझे तो वकालत चलानी है।' मैंने नम्रता से कहा, 'तो मुझे भूल स्वीकार करने दीजिए।' मैं गया और मुकदमा जीत कर आया। भूल सुधारने से मेरे मवक्किल को कुछ ज्यादा देना पड़ता था। जज इस बात को पहले न देख सके। बोले, 'मि० गांधी, तो क्या यह धोखादेही न थी?' मैंने भी जरा तेज होकर उत्तर दिया, 'क्या आप मेरी भलमंसाई का ऐसा दुरुपयोग करेंगे।' तब वे सीधे हो गए। आज भी उनका चेहरा मुझे याद है। सो जब लुई

फिशर ने मेरी योजना की त्रुटि मुझे बताई तो उसके इशारा करते ही मैं कायल हो गया। यह ठीक है कि मैंने खुद पहले से ही यह चीज देख ली होती और 'अंग्रेजो जाओ' इस मंत्र के साथ ही उसे भी रखा होता तो वह अधिक सुशोभित होती। मुझ पर आज जो जहरीले हमले इस बारे में हो रहे हैं, वे न होते; मगर वह तो नहीं हुआ। तो जब मुझे त्रुटि नजर आ गई तब मुझे उसे सुधारना ही था। हरेक चीज के दो पक्ष होते हैं। मेरे काम से जापान को नुकसान भी हो तो मैं क्या करूं। जो चीज मेरे सामने है, उसे यथाशक्ति मैं शुद्ध भाव से संपूर्णतया अहिंसक वना सकूं तो मेरे लिए बस है। उसके दूसरे परिणामों का हम आज विचार न करें; क्योंकि यह सनातन सत्य है कि शुभ कार्य का परिणाम अशुभ नहीं आ सकता। वे लोग भले रहें, जैसे रक्षा करनी है, करें। मैं अपनी रक्षा अहिंसा से करूंगा। अपनी अहिंसा को सफल करके वता सकूं तो मुझे उनके साथ अहिंसक मार्ग लेने के लिए दलील करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वह अपने-आप इस तरफ आवेंगे।"

भाई बोले, "हम इन्हें बर्मा को गुलाम वनाने में क्यों मदद दें? अगर ये लोग सच्ची नीयत से हिंदुस्तान का राज्य छोड़ते हैं तो इन्हें वर्मा की स्वतंत्रता की घोषणा पहले से करनी चाहिए। यह करवाकर हम इनकी मदद करें।"

बापू कहने लगे, "ऐसा करना अपने ऊपर वेईमानी का आरोप लगवाना होगा। वे कहेंगे कि हम लोग कुछ करना ही नहीं चाहते, इसलिए एक-के-पीछे-एक हुज्जत निकालते हैं। हमें दूर की वात में नहीं पड़ना चाहिए। अहिंसा के सिद्धांत के अनुसार हमारा अंग्रेजों के प्रति ठीक व्यवहार क्या है, इतना ही हमें विचारना है। वाकी श्रद्धा रखनी चाहिए कि शुद्ध विचार से जो कार्रवाई की जाय, आगे जाकर उसके परिणाम भी ठीक ही निकलेंगे। तुम इतना समझो कि हिंदुस्तान सचमुच आजाद हो जावे तो उसके परिणाम बहुत दूर तक जावेंगे। बर्मा की आजादी उसके गर्भ में पड़ी है।"

२ सितंबर '४३

आज अखवार में बापू और वर्किंग कमेटी के साथवालों को छोड़कर बाकी कैदियों को महीने में एक मुलाकात मिलने की खबर थी। डॉ० गिल्डर के लिए अवश्य ही एक समस्या खड़ी हो गई। मुलाकात की इजाजत से लाभ उठाना हो तो उनको वापस यरवदा जाने के लिए सरकार के साथ झगड़ा करना चाहिए। क्या ऐसा करना उचित है? यरवदा जाकर एक तो जेल की जेल, दूसरे खर्च, और तीसरे बापू का साथ छोड़ना। वैसे भी यहां का वातावरण उन्हें अनुकूल है। यह सव छोड़ना या मुलाकात छोड़ना? मैंने कहा, "खर्च की उन्हें क्या परवाह है?" बापू कहने लगे, "ऐसा नहीं, कौन जाने कवतक यहां रहना है। वे प्रतिष्ठावाले आदमी हैं। अव कांग्रेस को कभी छोड़ेंगे नहीं। यह भी जानते हैं कि मैं लोगों को भिखारी वनानेवाला हूं, सो जो धन है, उसे संभालकर रखेंगे ताकि वह उनकी लड़की को मिल सके।"

मैंने कहा, "क्या और एक वर्ष में यहां भी मुलाकातें नहीं शुरू की जायंगी?" बापू कहने लगे, "छः वर्ष में जरूर शुरू होंगी।"

३ सितबर '४३

सुबह घूमते समय मीराबहन सोवियत रूस-संबंधी एक किताब के बारे में बात करने लगीं। वहां तीन-चार व्यक्ति गये थे। जो जिस विषय में रस रखता था, उसके वारे में उसने लिखा। मैंने हँसकर पूछा, "मीरावहन, आप जावें तो किस विषय को लें?" वे कहने लगीं, "मास्को तो सामान्य हालचाल का पता लगाने ही जाऊं; मगर वहां के देहातों में खास ध्यान देने की बातें हो सकती हैं। मेरा खयाल है कि बापू के चुने हुए उन तीन-चार लोगों के साथ जाना चाहिए, जो खास-खास विषयों में ज्ञान रखते और रूस में उन विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हों! ठीक है न बापू?" बापू हँसकर वोले, "छः साल के बाद यह चर्चा करना।" मीराबहन भी हँस पड़ीं।

उपवास पर लिखना शुरू न कर सकी। यही सोचती रही कि कौन-सा कागज इस्तेमाल करूं।

४ सितंबर '४३

रात बापू की मालिश करते समय बरामदे में सन्नाटा-सा छा रहा था। दूर से मीराबहन वगैरा के कैरम खेलने की आवाज आती थी। सामने बगीचे में भी सन्नाटा था। मैंने बापू से पूछा, "आप इतनी बार जेल गए हैं, अकेले भी रहे हैं, तकलीफें सही हैं, पर कभी आपको अकेलापन अथवा निराशा मालूम होती थी ?"

बापू बोले, "अकेलापन तो कभी नहीं लगा। दक्षिण अफ्रीका में मुझे एकांत कोठरी में रखा था, मगर मुझे उसमें कुछ तकलीफ नहीं लगती थी। उलटा सुपरिटेंडेंट आता था तो चुभता था कि अब यह मेरा थोड़ा समय बरबाद करेगा। मैंने अपना लंबा कार्यक्रम बना रखा था। संस्कृत सीखना, तमिल सीखना और अंग्रेजी की किताबें तो पढ़नी थीं ही। मैं जूते बनाने का काम भी सीखने लगा था। इसलिए मेरी कोठरी में ही मुझे जूते बनाने का सामान दे दिया गया था। मुझे किसीके साथ तो काम करने दिया ही नहीं जा सकता था। मगर मुझे तो अकेले काम करना अच्छा लगता है। सब कार्यक्रम बना और छूटने का हुक्म आया। हर दफा जेल छोड़ना मुझे बुरा-सा लगा है। निराशा और शून्यता भी कभी नहीं महसूस हुई। हां, दक्षिण अफ्रीका में कभी-कभी उदासी आ जाती थी। बाहर क्या होता होगा, यह विचार मन में उठते थे। यहां ऐसा कभी नहीं हुआ, कारण कि मैंने जेल में क्या भाव रखना चाहिए, इसकी एक नई फिलॉसफी बना ली है और इस बारे में काफी लिखा है। लिखता तो दक्षिण अफ्रीका में भी था, मगर वहां पर तो यह नया सिलसिला था और यहां की तरह पढ़े-लिखे बहुत चर्चा करनेवाले लोग भी नहीं थे। यहां तो इतने लोगों के साथ इस बारे में वाद-विवाद करना पड़ा है कि वह चीज दिमाग पर काबू पा गई। दक्षिण अफ्रीका में बीजगणित सीखना शुरू किया था; क्योंकि गणित सीखने से मन को एकाग्र करने की शक्ति आती है।"

मैंने पूछा, "क्या अब भी आपको मन को एकाग्र करने के लिए अभ्यास करने की आवश्यकता हो सकती है ?" बापू बोले, "अब भी हो सकती है, मगर तब तो बहुत थी।"

५ सितंबर '४३

सुबह प्रार्थना के बाद बापू ने मुझे बुलाया और कहा, "आज पारसियों की पटेती[1] है। रांगोली से साल मुबारक लिखना चाहिए। चाय की मेज पर मेरी मेज के फूल रख दो।" कल शाम को ही रामायण में एक जगह वर्णन आया था कि एक भी वानर ऐसा न था, जिससे राम ने कुशलक्षेम न पूछी हो। बापू भी छोटी-से-छोटी बात नहीं भूलते।

मैं आटे से 'साल मुबारक' लिख रही थी और एक दरवाजे पर पूरा करके दूसरे पर शुरू कर रही थी कि कटेली साहब एक तश्तरी लिये नीचे आये। उसमें डॉ० साहब के लिए फूलों का हार, गुलाब जल, नारियल, सिंदूर इत्यादि था। डॉ० साहब आये तो उन्हें भेंट किया। मैंने दोनों को सिंदूर का टीका लगाया। फिर दोनों जने बापू को प्रणाम करने आये। चाय के बाद सब्जी इत्यादि चढ़ाकर कुछ समय बेडमिंटन खेले। सिपाहियों से मैंने कह रखा था, सो वापस आने तक सब तोरण बंध गए थे। मैंने मालिश के काम से छुट्टी ली। कटेली और डॉ० साहब के दरवाजों पर चावल के आटे से 'साल मुबारक' लिखा। उनके लिखने-पढ़ने की मेज पर फूलों से लिखा। डेलिया के फूल सजाये, फिर स्नान किया और कपड़े धोये। पौने बारह बजे खाली हुई। साढ़े आठ बजे के नाश्ते के समय के लिए सवेरे मीराबहन ने मेज पर फूल रखे थे। दोपहर उन्होंने सलाद तैयार की; मगर वे लोग उसे खाना भूल गए।

श्री कटेली ने सूरत से मिठाई मंगाई थी, सो घर में कुछ करने की मनाही की।

६ सितंबर '४३

बापू का मौन था। रामायण इत्यादि का पाठ बंद रहा। दोपहर के समय 'डॉन' के छुटे हुए अंकों की एक सूची बनाई। यह पत्र बहुत अनियमित आता है। बापू शिकायत लिखवाना चाहते हैं। शाम को

---

१. पारसियों का नये साल का त्यौहार।

सवा सात बजे कोई खेलने नहीं गया। पीछे मैं और मनु व डॉ० साहब और कटेली साहब थे। अच्छी कसरत हो गई।

७ सितंबर '४३

डॉक्टर साहब के पास सरकारी पैंफ्लेट 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' की कल एक दूसरी प्रति आई है। पहली को फिर से छापा है। पहली में लाल स्याही के जो सुधार थे उन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया।

८ सितंबर '४३

कल वजन का कांटा नहीं आया था। आज सबका वजन लिया गया। मनु चार पौंड घटी। उसने सुबह-शाम खेलना शुरू किया है; मगर खाना कम कर दिया है। अब वह उबला खाना खाने लगी है और मीठी चीजें नहीं खाती। इस बात की चर्चा सभी कर रहे थे। डॉ० गिल्डर ने भी बापू से कहा कि उसकी खुराक बढ़नी चाहिए।

बा अच्छी हैं, मगर कमजोरी बहुत आ गई है।

शाम को बापू के पास थोड़ी देर तक बाइबिल पढ़ी। बताने लगे कि उनकी दृष्टि से डॉक्टर को स्थितप्रज्ञ होना चाहिए और कभी किसी वजह से संतुलन नहीं खोना चाहिए।

९ सितंबर '४३

शाम को बापू के पास पढ़ने बैठी तो वे समझा रहे थे कि कुछ भी हो, किसी भी चीज से मन का संतुलन बिगड़ना नहीं चाहिए। किसी भी चीज का दुःख क्यों माना जाय?

१० सितंबर '४३

आज पारसियों का त्यौहार है। जरथुस्त का जन्म-दिन है। मैं सुबह प्रार्थना के बाद सोई नहीं।

बापू ने सरकार को पत्र लिखा कि 'बाइबिल' के उत्तर की पहुंच अभीतक क्यों नहीं आई?

बापू की कतरनों का थोड़ा काम किया। आज भी दिन भर कुछ नहीं पढ़ा।

११ सितंबर '४३

भाई को यहां आये आज एक वर्ष पूरा हुआ।

कल माताजी का पत्र आया था। वे बहुत परेशान हैं, इससे बहुत चिंता होती है।

बापू कतरनों के काम में लगे हुए हैं। एक दिन कह रहे थे, "मैं अपने जीवन के आखिरी दिनों में तुम लोगों के लिए एक खासी चीज तैयार कर जाऊंगा।" मैंने कहा, "आखिरी दिनों में क्यों? अभी तो आप को कम-से-कम पचास वर्ष और रहना है। १२५ वर्ष की बात तो आपने भरी सभा में की थी।" बा कहने लगीं, "किसके लिए छोड़ जाओगे? सुशीला के लिए?" बापू कहने लगे, "जो मेरा काम करेंगे, उनके लिए।" बा बोलीं, "अभी तो सुशीला और प्यारेलाल ही सब करते हैं न?"

बापू को कतरनों के काम से बहुत संतोष है। भाई से कह रहे थे, "तुम देखोगे कि एक सुंदर चीज बन गई है। जो कतरन चाहिए, उसे निकालते एक मिनट की देर भी नहीं लगती। लाइब्रेरी की अलमारियों की तरह इनमें एक क्रम है। अनुक्रमणिका देखो और जो चाहो निकाल लो। अनुक्रमणिका संपूर्ण है। तो भी मैं अखबारों में से एक-एक की कतरनों को तारीखवार रखने का प्रयत्न कर रहा हूं ताकि बिना सूची के भी कोई देखना चाहे तो उसे बहुत मुश्किल न पड़े।" मीराबहन से कह रहे थे, "मेरा मन मां का-सा हो गया है। मां जितना अपने बच्चे को दूध पिलाती है, उतना ही ज्यादा उसे प्यार भी करती है। मैं भी जितना ज्यादा इस काम में लगता हूं, उतना ही ज्यादा उसमें दिल लगता है।

"मैं रोज उसे ज्यादा अच्छा करता हूं। सरकारी पैंफ्लेट-जैसी यह चीज नहीं है। वह तो करना ही था, इसलिए किया था। यह तो खुशी से करता हूं, सो इसमें लीन हो जाता हूं। मुझे बाकी सात साल यहां पर यही काम करना हो तो मुझे वह खटकेगा नहीं।"

मीराबहन हँसी करने लगीं, "हां, क्योंकि यह आपका बच्चा है और जबतक दूसरे बच्चे इसकी जगह न लें, यह आप पर कब्जा रखेगा। यहां से जाने से पहले दूसरे बच्चे इसकी जगह लेने ही वाले हैं।"

१२ सितंबर '४३

घूमते समय बहुत दिनों बाद बापू ने अपनी कहानी सुनाई। मनु ने कोई कहानी कहने को कहा था। बापू इधर-उधर की सुनाते थे। वह भी अच्छा लगता था; मगर मैंने कहा, "बापू, आप अपनी कहानी सुनाइए न ?" तब बापू ने जो आरंभ की थी, उसी को आगे कहना शुरू किया। विलायत में जब एक कमरा लेकर रहते थे तब का वृत्तांत था। सुबह दलिया, एक पाइंट[1] दूध और थोड़ी रोटी लेते। दोपहर को बाहर छः पेनी (आना) वाला भोजन लेते। शाम को दो छोटे सेब और रोटी घर पर खाते। दिन भर अभ्यास करते। मैट्रिक्युलेशन की तैयारी के लिए उन्होंने ट्यूटर रखा था, जो हफ्ते में दो बार घंटे-दो-घंटे का समय अन्य दो विद्यार्थियों के साथ उन्हें देता था। लैटिन में खास मदद की आवश्यकता पड़ती थी। पहली बार तीन महीने की तैयारी के बाद परीक्षा दी, फिर भी लैटिन में असफल रहे। दूसरी बार रसायनशास्त्र की जगह 'ताप' (Heat) और 'प्रकाश' (Light) लिया था। एवलिंग की पुस्तक पढ़ी और परीक्षा देकर तुरंत ब्राइटन चले गए। और वहां वे एक महीना रहे। एक-एक मिनट अभ्यास में लगाते थे। साथ में फ्रांसीसी भाषा की रॉबिसन क्रूसो ले गए थे। उसे पढ़ते थे। अपना खाना स्वयं पकाते थे। उनका खर्च सत्रह शिलिंग प्रति हफ्ते का था। बताने लगे कि कैसे वे परीक्षा के नतीजे के तार की राह देखते थे। आखिर एक दिन बाहर से आ रहे थे तब सीढ़ी चढ़ते समय मकान-मालकिन ने उनके हाथ में तार दिया। पास हो जाने की खबर से कितना खुश हुए, यह सब बताया।

यही सब बातें उनकी 'आत्मकथा' में लिखी हैं, लेकिन बापू के मुंह से सुनने में और ही रस आता है।

बापू के जन्म-दिन पर क्या करना चाहिए, इस पर सुबह चाय के समय बात चली। देसी तिथि के अनुसार जन्म-दिन २६ सितंबर को आनेवाला है।

बापू का मौन है। रामायण इत्यादि का पाठ बंद रहा।

---

१. एक पाइंट—बीस औंस यानी लगभग पौने दस छंटाक।

रात को मौन छोड़ने के बाद भाई वापू से कहने लगे कि उन्हीं की पसंद के उनके लेखों का एक संग्रह निकाला जाय। वापू वोले, "वह अच्छा तो होगा, मगर इस वारे में इतना काम हो चुका है कि अभी और न किया जाय तो भी चल सकता है। प्रभु कर रहा है। निर्मल वोस का काम अच्छा माना जाता है। आनंद ने भी खूव मेहनत की है। गुजराती में नगीनदास अमुलकराम के काम की पूरी कीमत नहीं आंकी गई; मगर उस काम पर अपार मेहनत हुई है।"

भाई कहने लगे, "उस गुजराती संग्रह का वहुत-सा भाग अंग्रेजी में नहीं आया है, इसलिए उसका अनुवाद होना चाहिए।"

भाई आजकल बहुत उत्साहित हैं। खूब काम करते हैं। बापू को इससे वड़ा संतोष है। यहां पर नियमितता की आदत पड़ जावे तो बाहर जाकर उनका काम वहुत आसान हो जायगा।

१७ सितवर '४३

कल से शाम को कातने के समय कार्लाइल की किताव भाई वापू को पढ़कर सुनाते हैं। मैं उतने समय में कात लेती हूं और फिर मनु को सिखाती हूं। भाई को यह कार्यक्रम अनुकूल है।

आज सुवह घूमते समय वापू मीरावहन के साथ इसेबेला डंकन की वात कर रहे थे। उन्हें लगता था कि जिन पुरुषों के संपर्क में वह आई, उन्होंने अगर उसकी निर्दोष वुद्धि की रक्षा की होती तो कौन जाने आज वह कितनी उन्नति कर गई होती। कुछ रुककर बोले, "मेरा यह दृढ़ मत है कि स्त्री जव भी गिरती है, उसे गिरानेवाला पुरुष होता है। पुरुष अधिकतर मेरे साथ इस विषय पर सहमत नहीं होते, मगर मेरा मत अचल है।" मीरावहन को यह पुरुषों के प्रति कठोर मत लगा; मगर लौटने का समय हो गया था, इसलिए चर्चा आगे चल नहीं सकी।

रात को मालिश के समय भाई वापू से बोले, "आज सरकार की नीति का विरोध वाहर रहकर पूर्णतः अहिंसा के द्वारा कैसे किया जा सकता है?" वापू कहने लगे, "अहिंसा के द्वारा ऐसा करने का सबसे अच्छा रास्ता अनशन है। हजारों की संख्या में लोग ऐसा करें तो चमत्कारी

परिणाम आ सकता है, मगर इस रास्ते पर चलनेवालों में भी पूर्ण अनासक्ति व अहिंसा और ईश्वर में दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिए।" भाई ने कहा, "अनशन कठिन है। लोग करना शुरू तो करें, मगर उस पर टिके रहना आसान नहीं है। इससे तो हाराकिरी ज्यादा आसान है।" बापू बोले, "अनशन में ईश्वर को जैसा करना हो, वैसा करने का मौका मिलता है। वह स्वाभाविक और सीधी क्रिया है, इसलिए हाराकिरी से यह तरीका ज्यादा अच्छा है।"

१८ सितंबर '४३

परसों सरकार की तरफ से खबर आई थी कि मध्यप्रांत की सरकार मनु को छोड़ने का विचार कर रही है। अगर वह स्वेच्छा से रहना चाहे तो आज की शर्तों के मुताबिक रह सकती है। मनु ने रहना पसंद किया।

मीराबहन को मित्रों को पत्र लिखने की इजाजत मिली है। आज उनसे पुछवाया गया कि वे जिन्हें पत्र लिखना चाहती हैं, उनके नाम बतावें और कारण बतावें कि उन्हें क्यों लिखना चाहती हैं। नाम तो उन्होंने पहले से ही दे रखे हैं। बापू का मत है कि ज्यादा कड़ा जवाब होना चाहिए। मीराबहन आज उत्तर तैयार कर लाईं, मगर यह काफी कड़ा नहीं था। अब दूसरा उत्तर लिखने का प्रयत्न करेंगी।

आज बापू ने सीताफल (शरीफा) के बीज बोये। पांच गड्ढे खुदवाये थे। तीन में दो-दो बीज बापू ने डाले और दूसरों में डॉ० गिल्डर से डालने को कहा। पांच बीज बाकी थे। डॉक्टर साहब ने तीन एक गड्ढे में और दो दूसरे गड्ढों में डाले। पानी डालकर हम लोग वापस आ गए। महादेवभाई की समाधि के चारों ओर भी सीताफल बोने के लिए गड्ढे खुदवाये हैं।

२१ सितंबर '४३

चित्रकारी का अभ्यास मैं सोमवार के दिन ही करती हूं; मगर भाई कहते हैं कि तस्वीर जल्दी पूरी करूं तो अच्छा हो। मैंने उनके पास से सुबह का वक्त लिया। वे बापू की मालिश में गये। मैं चित्र बनाकर

पौने बारह बजे लौटी। आकर जल्दी खाना खाया ताकि रामायण में ज्यादा देर न हो। भाई ने बापू से जाकर कहा, "इसे रामायण न कराइये। जल्दी खाना खाती है।" बापू को पहले से ही बुरा लग रहा था कि आज कार्यक्रम तोड़कर चित्रकारी का अभ्यास करने को गई। खूब डांट पड़ी। बोले, "अगर जाना ही था तो मुझसे पूछ लेना चाहिए था।" मैंने गलती स्वीकार की। नतीजा यह हुआ कि रामायण केवल पंद्रह ही मिनट हुई।

२२ सितंबर '४३

सुबह घूमते समय बापू मीराबहन के साथ बातें करने लगे। मीराबहन बोलीं, "सरकार आपकी अहिंसा को पहचानती नहीं है। थोड़ी हिंसा देखकर उसे लगता है कि सब हिंसा-ही-हिंसा है। क्यों न हो, आखिर आपको भी तो इतने वर्ष यह पहचानने में लगे कि हिंसा के बीच अहिंसा काम कर सकती है अथवा नहीं। आप तो कहते थे कि जरा भी हिंसा हो तो अहिंसा नहीं चल सकती।" बापू ने कहा, "हां, अगर वह इस चीज को पहचाने तो उसका व्यवहार दूसरा ही हो। और मुझे देर लगी, इसका मुझे अफसोस नहीं है। मेरे लिए तो यह मेरा स्वाभाविक विकास था। अन्य प्रकार से मैं इस तरह आगे चल ही नहीं सकता था। मुझे तो एक-एक कदम टटोलकर चलना है न! नया रास्ता निकालना है, सो इसी तरह मैं प्रगति कर सकता हूं।"

२३ सितंबर '४३

आज सुबह ग्यारह बजे स्नान-घर में मैं नहाने के टब में खड़े होकर फव्वारे के नीचे स्नान कर रही थी। पैर में साबुन लगाया था। इससे फिसली और टब में गिरी। सिर टब के किनारे पर लगा। घड़ी भर बेसुध-सी रही; मगर ठंडा पानी तो ऊपर से पढ़ ही रहा था, इसलिए होश में आ गई। पर उठा नहीं जाता था। सिर में खूब चोट आई थी। मुश्किल से साबुन धोकर कपड़े पहने और आकर बा की खाट पर सो गई। किसी की आवाज सहन नहीं होती थी, इसलिए भाई के कमरे में दरवाजे बंद करके दिन भर पड़ी रही।

शाम को हिम्मत करके उठी और कतरनों में कुछ पर्चियां लगाईं। पीछे वहुत ही धीरे-धीरे चली। आवाज से सिर में धक्का-सा लगता था। रात को प्रार्थना में भी नहीं वैठ सकी।

: ५७ :

जेल में बापू का दूसरा जन्मदिन

२४ सितंबर '४३

मंगलवार की रात को हम लोग विचार कर रहे थे कि वापू के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में क्या करना चाहिए। आज भाई कहने लगे कि हम सब धर्मों का एक मंदिर वनाकर उसे अच्छी तरह सजावें। मैंने इसमें जोड़ा, "और हम सब धर्मों के प्रतिनिधि बनकर वापू को साल-मुवारक कहने जावें। उस मंदिर में बापू के दीर्घायु होने की प्रार्थना करें।" भाई को यह पसंद न था। वापू को किसी तरह की कृत्रिमता पसंद नहीं है और अभिनय से अरुचि है। मीरावहन आदि खेल रहे थे। मैंने मीरा-वहन से जाकर वात की। वे कहने लगीं, "धार्मिक चीज यानी प्रार्थना आदि के साथ अभिनय की चीज को मिलाना मुझे अच्छा नहीं लगता। अगर कुछ देशों के नेताओं वगैरा की नकल हो तो ठीक है।" मैंने कहा, "तो ऐसा ही कीजिये। डॉ० गिल्डर को स्टालिन और कटेली को रूजवेल्ट वनाइये। आप स्वयं च्यांग काई-शेक बनिये।" वे वोलीं "तुम मैडम च्यांग काई-शेक बन जाओ। उसका भी तुम्हारी तरह छोटा कद है और वाल कटे हुए। प्यारेलाल को चर्चिल वनना पड़ेगा। वही एक मंछकटा है।" "मगर वे सव लोग मोटे हैं। हमसे ऐसा मोटा कैसे बना जाय? सव अपने-अपने काम का विचार करें।" यह कहकर मैं साढ़े दस वजे लौटी।

दूसरे रोज भाई वोले, "मुझे तो अभी भी यह नहीं जंचता। मैं मीरा-बहन से बात करूंगा।" मीरावहन से उन्होंने वात की तो उन्होंने सब

धर्मों के मंदिर की बात पसंद की। भाई ने कागज का मंदिर बनाने को कहा, पर मीराबहन ने मिट्टी का बनाने का विचार किया। सब धर्मों के प्रतिनिधि भी बापू को साल मुबारक कहने आयें। मंदिर में प्रार्थना करने हम लोग न जावें, यह उनकी सलाह थी। मीराबहन कहने लगीं, "सुशीला को फ्राक और टोपी पहनाकर पारसी लड़की बनावेंगे। मैं सिख बन जाऊंगी, डॉ० साहब पठान, प्यारेलाल क्रिश्चियन और मनु हिंदू साधु।"

मनु के बाल लंबे होने के कारण आखिर उसे ही पारसी लड़की बनाने का विचार किया गया। मुझे रोमन कैथोलिक साधु और भाई को मद्रासी ब्राह्मण बनाने की सोची। भाई की नापसंदगी जारी थी। कहने लगे, "मुझे तो अच्छा नहीं लगता। करना ही है तो मुझे छोड़ दो।" मैं चुप रही। शाम को मीराबहन मुझे बुलाकर ले गईं और क्या करना चाहिए, यह सोचने लगीं। मैंने कहा, "भाई से पूछ लो तब पीछे कुछ तय करेंगे।" रात को मैं बैठी अखबार पढ़ रही थी। भाई जल्दी सो गए थे।

२५ सितंबर '४३

आज भी सुबह प्रार्थना में नहीं उठी। रात को नींद बहुत देर से आई थी। साढ़े तीन बजे बा को बड़ी खांसी आई थी, तब उठी थी। उसके बाद अच्छी नींद आई, सो सुबह तक सोती रही। सुबह भाई फिर कहने लगे, "स्वांग भरने में मैं भाग नहीं लेना चाहता।" मीराबहन से भी यही कह आए। मैंने समझ लिया कि यह प्रस्ताव अब गया। पारसी कपड़े मंगाये थे, सो लौटा दिए। भेजकर आ रही थी कि मीराबहन ने मुझे बुलाया। कहने लगीं, "पूरा स्वांग हम करेंगे।" मैंने कहा, "मैंने तो कपड़े लौटा दिए।" बोलीं, "वापस मंगवाओ।" मैंने कहा, "अब आप ही मंगवाइये।" उन्होंने जाकर मंगाये। फिर अपनी एक सलवार डॉ० साहब को दी। उन्होंने एक सफेद कुर्ता, ऊपर से वास्कट व चेक का एक लंबा कोट पहना। भाई ने पगड़ी बांध दी। डॉक्टर साहब खासे पठान बन गए। मीराबहन ने डॉ० साहब की पतलून, लाल कुर्ता, सफेद कोट और अपने ओढ़ने की लहरियादार पगड़ी पहनी। कोट के ऊपर की जेब

में रेशमी रूमाल बाहर झांक रहा था। भाई ने मेरे कटे बालों की दाढ़ी बनाकर उन्हें दी। पेस्टिल रंग से मूंछ बनाई। बस, दयालसिंह कालेज का सिख जवान तैयार हो गया। उसी तरह से अकड़ कर चलती थीं। हँसते-हँसते हमारे पेट में बल पड़ गए। मनु को पारसी कपड़े पहनाये गए। मैंने मीराबहन का एक लंबा कालासा ऊन का चोगा पहना। कमर में रस्सी बांधी। पेस्टिल से कुछ नई जमती हुई दाढ़ी-मूंछ मीराबहन ने बना दीं। ख्रिस्ती साधुओं के जत्थे में दाखिल होनेवाला नया नवयुवक तैयार हो गया। भाई आज तैयार नहीं हुए।

फैसला किया गया कि नवयुवक साधु एक गुलदस्ता और ईसाई धर्म फैलाने की किताबें भेंट करे। पारसी लड़की फल दे। सिख जवान हलुआ और मिठाई तथा पठान सूखी मेवा और मद्रासी ब्राह्मण नारियल व नीबू भेंट करे।

कल कैदियों को देने के लिए बेसन की मिठाई और चिवड़ा मैंने और मनु ने मिलकर बनाया। बहुत थक गई। रामायण पढ़ी। बापू ने बाइबिल पढ़ी और मैंने सुनी। सुनते-सुनते कतरनों का काम भी करती रही। दोपहर सो नहीं सकी सो साढ़े तीन बजे सो गई। डर था कि आज रात को जागना ही होगा, इसलिए दिन में जो नींद न ली तो काम बिगड़ेगा। शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "पिछले साल तुम लोग रात भर जागे थे, इस बार मत जागना।" भाई कहने लगे, "बापू, सारा साल आपका, एक रात हमारी।" मैंने कहा, "बापू, कल के कार्यक्रम का निश्चय कर लें।" कार्यक्रम की बात के सामने और बातें टल गईं।

आज शांतिकुमारभाई के यहां से सामान आया। बापू की तीन धोतियां, हाथ पोंछने के दो रूमाल, एक छोटा रूमाल और एक नारियल। नारियल पर स्वस्तिक का चिह्न था और उसे एक पीली पगड़ी पहनाई हुई थी। साथ में सुंदर सूत का कता एक हार था।

रात को भाई ने जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम एक खत लिखा। डॉ० गिल्डर ने उसे टाइप किया। दोनों ने मिलकर सबके नये नाम रक्खे। भाई ने सबके विज़िटिंग कार्ड तैयार करने का काम अपने ऊपर लिया।

दोपहर मैंने सिपाहियों और कैदियों के लिए थालियों में मिठाई रखी। रात को मीराबहन, मनु और डॉक्टर साहब की भेंट के लिए सामान तैयार कराया। भाई ने बरामदे में श्लोक लिखे। मीराबहन ने दोनों किनारों पर रेखाएं खींचीं। मैंने उन पर रांगोली डालकर उसे पूरा किया। पहले सफेद रांगोली से श्लोक लिखना आरंभ किया, मगर सफेद संगमरमर पर वह अच्छा उठता नहीं था। मीराबहन ने कुछ कुंकुम, कुछ गुलाल और सफेद रांगोली, सब मिलाकर बहुत सुंदर हल्का तरबूजी रंग बनाया। मेरा काम रात के दो-ढाई बजे पूरा हुआ। डेढ़ बजे मीरा-बहन आईं। मेरे लिए अभी तीन लाइनें और आखिर का ॐ पूरा करना बाकी था। इसलिए मीराबहन ॐ बनाने लगीं। उन्हें पौन घंटा लगा होगा। उतने समय में मैंने तीनों लाइनें करीब-करीब पूरी कर लीं। दो-तीन शब्द रह गए थे। पूरा करके हम लोग सोने को चले। ढाई बज चुके थे।

बरामदे की सजावट पूरी हुई तो इस तरह की थी—नीली पेंसिल के निशान सफेद रांगोली के थे, स्याही के निशान तरबूजी रांगोली के, लाल पेंसिल के निशान गुलाल के।

बापू के कमरे की तरफ से शुरू करके पहले कमल का-सा आकार बनाया, फिर लिखा :

सत्यमेव जयते नानृतम्
जीवेम शरदः शतम्
पश्येम शरदः शतम्
श्रृणुयाम शरदः शतम्
अदीनास्याम शरदः शतम्
प्रब्रवाम शरदः शतम्
भूयश्च शरदः शतात्
असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय

अंत में ॐ और स्वस्तिक के चिह्न अंकित किये। बापू घूमने को निकले तब सामने से यह सब पढ़ सकें, इस तरह लिखा था।

२६ सितंबर '४३

सवेरे पांच बजे बापू ने मुझे प्रार्थना के लिए उठाया। बापू को प्रणाम करके प्रार्थना की तैयारी की। मनु प्रणाम करना भूल गई। प्रार्थना के लिए सब लोग बैठ गए, तब मैंने उसे याद दिलाया। वह समझती थी कि जब हार देंगे तभी प्रणाम भी करेंगे। जब मैंने कहा तब भागी-भागी गई। बापू खाट पर लेट गए। वहीं जाकर प्रणाम कर आई।

साढ़े छः बजे डॉ० गिल्डर उठे। विजिटिंग कार्डों पर नाम टाइप करना बाकी था। भाई रात में नहीं टाइप कर सके, क्योंकि आवाज होती थी। मैंने डॉ० गिल्डर को टाइप करने को कहा। उन्होंने तैयार कर लिया।

सात बजे कटेली साहब आये। वे पारसी पगड़ी और लंबा सफेद कोट पहने थे। एक सुंदर, हाथ के बने बटुवे में ७५) रु. हरिजन-फंड के लिए बापू को भेंट किये और प्रणाम कर गद्‌गद् कंठ से कहने लगे, "बहुत जीओ और आपके मनोरथ सफल हों। आपकी फतह के लिए मैं दुआ करता हूं।"

सुंदर दृश्य था! डॉक्टर साहब ने खत तैयार करके मुझे दिया और मैंने कटेली साहब को दे दिया। उसमें बापू को उनके जन्म-दिवस पर बधाई देने के लिए भेंट करने की सरकार से आज्ञा मांगी थी।

जल्दी से चाय-दूध पीकर हम लोग अपने-अपने कपड़े पहनकर चले और डाइनिंग रूम के खाली हिस्से में जा बैठे। कटेली साहब बापू के पास खत लेकर गये। बापू ने मेहमानों से मिलने आने में थोड़ी देर लगाई। मुझे डर लगा कि बापू को कहीं यह सब नापसंद न हो। मगर बापू तो अपना काम पूरा करके उठना चाहते थे, ताकि सीधे घूमने को जा सकें। बापू आकर खड़े हुए। हँसते-हँसते बोले, "आप लोग कहां से आये हैं?" पहले जेरबाई (मनु) बैठी थी। वह अपनी फल की टोकरी लेकर उठी

और बोली, "महात्माजी, साल मुबारक।" उसके बाद ब्रदर लॉरेंस (मैं) बैठ थे। वह अपना गुलदस्ता और 'माउंट ऑव ब्लेसिंग्स' भेंट करते हुए बोले, "भगवान करे, आप दीर्घायु हों।" पीछे रामाचुल्लू नांबूद्रीपाद (भाई) बैठे थे। अपने नारियल और नीबू की भेंट लेकर। कोखती[1] पहने बैठे थे। मलयाली भाषा का अभिनय करते बोलते हुए बापू के सामने लेट गए और साष्टांग प्रणाम किया और भेंट दी। फिर सरदार शमशेर सिंह (मीराबहन) मिठाई का थाल भेंट करते हुए 'सत् श्री अकाल' बोले और आखिर में सरदार सिकंदर अकबरखान (डॉ० गिल्डर) सूखे मेवों और सेवों की टोकरी लेकर आगे आए। बोले, "तीड़ा माशे मलंग बाबा[2]।" और हाथ मिलाया। सब लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहे थे। बापू और बा भी बहुत हँसे। बापू कह रहे थे कि सबका भेस संपूर्ण था।

बापू मेहमानों को साथ लिये महादेवभाई की समाधि की ओर चले। नीचे उतरे तो सिपाहियों की कोठरियों के पास आने पर कटेली साहब ने जोर से पुकारा, "जमादार किधर है?" बेचारा....तैयार नहीं था। उन्होंने फिर पुकारा, "जमादार किधर है? बाहर के आदमियों को कैसे आने दिया?"...आंखें मलते-मलते जल्दी से कपड़े पहनकर निकला। श्री कटेली उससे फिर वैसे ही बोले। उस बेचारे का चेहरा देखने लायक था। पीला पड़ गया। इतने में सब लोग हँस पड़े। बाद में कह रहा था कि उसने डॉ० साहब और मीराबहन को तो बिलकुल ही नहीं पहचाना।

समाधि पर फूलों का एक हार महादेवभाई की तरफ से बापू को पहनाया। फूल चढ़ाकर और प्रार्थना करके वापस लौटे। मीराबहन अपनी बकरियों को सजाने लगीं। मैं और मनु ऊपर आये। कपड़े बदले। मुझे तो वह ऊनी पोशाक बहुत चुभ रही थी। बकरियों के लिए बिस्कुट

---

१. ओढ़ने का वस्त्र जिसे ट्रावनकोर की यात्रा में इस्तेमाल किया था।

२. पठान अभिवादन, जिसका शाब्दिक अर्थ है, "आपको कभी थकान न हो।"

लेकर नीचे गए। सब बकरियों को हार भी पहनाये गए थे। अच्छी दिखती थीं। तीन ने बिस्कुट खाये। बाकी को बिस्कुट पसंद न थे।

बापू ने कहा था कि आज खेलना जरूर चाहिए। जाली लगवाकर हम लोग बेर्डा-टन खेल आए।

आज बा ने बापू के हाथ के कते सूत की लाल किनारी की साड़ी पहनी। मनु बता रही थी कि जब सेवाग्राम से वह जाने लगीं तब बा ने उससे कहा था, "यह साड़ी जानकी बहन के यहां रख दो। यहां कहीं जब्ती वगैरा हो तो यह सुरक्षित रहे। मरते समय यही मेरी देह पर हो।"

मनु ने और मैंने भी लाल किनारी की साड़ी पहनी। अच्छा लगा।

घूमने से लौटकर भाई और डॉ० गिल्डर ने बापू की मालिश की। मैंने कैदियों के लिए खाना पकवाने का सामान निकाला। फिर सुबह जो मिठाई आदि आई थी, वह संभाली। बापू के लिए बाजरे की खिचड़ी चढ़ाई।

बापू ने कहा था, "देखो, ऐसा न करना कि हम लोग स्वाद के चक्कर में पड़ जायं। हमें तो ऐसा कार्य करना है जिससे यह जाहिर हो कि हम असलियत में बंगाल के भुखमरे लोगों की विपदाओं में हिस्सा बंटा रहे हैं।" सो यह तय हुआ कि हम सब लोग बाजरा खायें। कैदियों के लिए भी बाजरे की खिचड़ी, सब्जी और कढ़ी पकाई गई। बापू के लिए सादी खिचड़ी बिना छौंक और मसाले के तैयार की और उसीमें थोड़ा-सी सब्जी भी डाल दी। बा, मीराबहन और मैंने उसीमें से थोड़ी-थोड़ी ले ली। मनु और भाई ने कैदियों वाला खाना खाया। मैंने और डॉ० गिल्डर ने भी कढ़ी चखी। उसमें मिर्च बहुत थी।

बापू स्नान करने निकले। उस समय हम लोग अपने-अपने सूत के हार तैयार कर रहे थे। एक बापू के लिए और दूसरा बा के लिए। हारों के नीचे गेंदे का एक-एक फूल लगाया और गुलाल के ७५ टीके। साढ़े ग्यारह-पौने बारह बजे सब तैयार होकर गये। डॉ० गिल्डर ने स्वतंत्रता के दिन, राष्ट्रीय सप्ताह आदि के अवसरों पर जो सूत काता था, उसका एक छोटा-सा हार बनाया। पहले बा ने बापू के टीका लगाकर हार

पहनाया, फिर डॉ० गिल्डर, मीराबहन और कटेली साहब ने फूलों का हार पहनाया, फिर भाई ने। आखिर में मैंने और मनु ने बापू और बा के टीका किया और हार पहनाया।

डॉ० गिल्डर और कटेली साहब भी पीछे टीका करने आयें और बा के लिए चप्पल, लकड़ी का चम्मच और कांटा, अपने यहां के पेड़ के नारियल और गुड़ और गेहूं की एक-एक कटोरी लाये थे। उनके फूलों के हार बहुत ही सुंदर थे। एक चंदन की माला भी लायें थे। बापू और बा फूलों के ढेरों में बहुत ही सुंदर दीख पड़ते थे। सुबह शांतिकुमारभाई के यहां से फूलों की टोकरी आई थी। रघुनाथ भी बाहर से फूल लाया था। मीराबहन ने कमरे में उन्हें सजाया। सिपाही लोग तोरण सवेरे ही बांध गए थे। कमरा महक रहा था।

इसके बाद प्रार्थना में बैठे। पहले 'ओ गाड अवर हेल्प इन एज़ेज पास्ट' गाया। फिर 'मूकं करोति वाचालं', 'ईशावास्य मिदं सर्वं', 'अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्' 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव', 'असतो मा सद्गमय' आदि श्लोक[1] गायें।

---

१. (१) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठांते नम उक्ति विधेम॥

'सब मार्गों के जानने वाले हे अग्निदेव! जिस रीति से हमें (अपने) ध्येय की (निश्चित) प्राप्ति हो, उस रीति से, तुम हमें अच्छे रास्ते ले चलो। हमसे हमारे कुटिल पापों को अलग कर दो (मिटा दो)। हम तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हैं।'

(२) ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा-मृतं गमय।

'हे प्रभो! मुझे असत्य से सत्य में ले जा। अंधेरे से उजाले में ले जा। मृत्यु से अमरता में ले जा।'

श्लोकों के पाठ के बाद 'अउज अबिल्ला' और 'वैष्णवजन तो तेने कहीए' गाये और राम-धुन चलाई। सब कुछ भली प्रकार संपन्न हुआ। तब बापू को खाना खिलाया। बा भी बैठ गईं। दोनों ने साथ खाया। खाने के बाद सिपाही हार पहनाने आये। सबको एक-एक संतरा और एक-एक मोसंबी दी। इतने में कैदियों का खाना आया। खिचड़ी, कढ़ी, सब्जी और एक-एक मोसंबी सबको दी। पीछे हम लोगों ने खाया। पौने दो बजे लेटी, मगर नींद न आई। ढाई से साढ़े तीन तक काता। सूत उतारकर कतरनों के काम में बैठ गई। आज सबका संकल्प था कि सब लोग मिलकर पर्चियां चिपकाने का काम पूरा करें। साढ़े चार बजे बापू ने बाइबिल पढ़ी। मैंने सुनी।

पांच बजे कैदियों की चाय तैयार हो गई। सबको बेसन की मिठाई, चिवड़ा, गांठिया,[१] नमकीन सेव और चाय के दो-दो प्याले दिये। सिपाहियों को मिलाकर ३२ आदमी थे। इन्हें भी खिलाया। साढ़े पांच बजे कतरनों का काम पूरा हुआ।

बापू को दूध दिया और हम लोगों ने खाखरा, दूध तथा फल लिये। इतने में वर्षा आ गई। खेलना तो हो ही नहीं सकता था।

मीराबहन शाम के चार बजे से मिट्टी का सार्वधार्मिक मंदिर बनाने में लगी थीं। भाई भी मदद कर रहे थे। दोनों घूमने नहीं आये। आठ बजे घूमकर लौटे तो बापू के कमरे का दरवाजा बंद था। वहां मंदिर

---

(३) त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

'हे देवों के देव! तू ही मेरी माता है, तू ही मेरा पिता है, तू ही मेरा भाई है और तू ही मेरा मित्र। तू ही मेरी विद्या है, तू ही मेरा धन है और तू ही मेरा सब कुछ है।'

१. बेसन की बनी नमकीन।

सजाया गया था। लकड़ी के एक पट्टे पर गीली मिट्टी की तह जमाकर उसके ऊपर एक तरफ मस्जिद, एक तरफ गिर्जाघर और बीच में महादेव का मंदिर बनाया था। उसके पास ही सरकंडों के छिलकों का मंडप बनाकर उसके अंदर पीले कनेर के फूलों से अगियारी[1] का स्थान बनाया था। सामने बगीचा। फूलवाली छः-छः, नौ-नौ इंच की छोटी टहनियों को गीली मिट्टी में गाड़कर बगीचा बनाया था। आटे के छोटे-छोटे दीपक बनाकर उनमें घी की बत्तियां सामने और दाएं-बाएं रखकर जलाई थीं। बापू प्रार्थना के लिए भीतर आये तब बिजली बंद थी। वहां छोटे-छोटे दीपक जल रहे थे। पीछे की तरफ जंगली झाड़ियों के गमले और सामने दोनों तरफ फूलों के गमले थे। सुंदर दृश्य था। कमरे के बीच-सामने फूलों का 'ॐ' और उसके दोनों तरफ फूलों के 卐 स्वस्तिक बने थे। जितने फूलों के हार इत्यादि आये थे, वे दीवारों पर लटका दिये गए। कमरा फूलों से महक रहा था। बड़ा अच्छा लगता था। प्रार्थना में पहले 'ह्वेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रॉस' गाया गया, फिर हमेशा की तरह प्रार्थना हुई। 'हरि ने भजतां हजी कोई नी लाज जती नथी जाणी रे' भजन गाया। मीराबहन ने 'गोपाल राधेकृष्ण' गोविंद 'गोविंद गोपाल' की धुन चलाई। प्रार्थना के बाद बापू की सिर-पैर की मालिश इत्यादि करके सब लोग सो गए। बहुत थके थे।

२७ सितंबर '४३

सुबह उठकर कल का बनाया हुआ दृश्य देखा तो विचार आया कि स्वप्न-चित्र की तरह यह सब विलीन हो जायगा। उसकी स्मृति को स्थायी कैसे बनाया जाय, यह सोचते हुए भाई मुझसे कहने लगे, "इस मंदिर की एक तस्वीर बनाओ।" मैं अपने तैल वाले रंग और ब्रुश लेकर बैठी और सवा ग्यारह तक काम किया। फिर बापू का खाना लाने को गई। दोपहर कुछ अखबार देखे, कुछ पढ़ा, डायरी लिखनी शुरू की। समय बीत गया।

---

१ पारसियों का पूजा-गृह।

२८ सितंबर '४३

सुबह साढ़े ग्यारह बजे तक मैंने चित्रकारी की। डॉ० गिल्डर की तबीयत अच्छी न थी, इसलिए बापू की मालिश भाई ने और मैंने की।

दोपहर बाद मनु को मैंने अंग्रेजी सिखाई। कुछ स्वयं पढ़ा और कुछ कतरनों का काम भी किया।

आज सुबह कलक्टर और डॉ० शाह ने मंदिर देखा। कलक्टर ने कहा, "मेरे खयाल में ये फूल इसी बगीचे के हैं।" डॉ० शाह देखकर खुश हुए।

२९ सितंबर '४३

आज मंदिर मीराबहन के कमरे में चला गया। साढ़े नौ बजे चित्रकारी करने बैठी और साढ़े ग्यारह बजे तक की। बाकी दिन का कार्यक्रम हमेशा जैसा ही रहा।

शाम को अंधेरा जल्दी हो जाता है। कल कटेली साहब ने बापू को सूचना की कि घूमने को सात बजे निकलें ताकि पौने आठ बजे वापस आ सकें। कल डॉ० साहब खेलने का समय पांच से छः बजे का करने को कहते थे। पहले तो मैंने इंकार किया। साढ़े पांच बजे बापू को खाना देना होता है और पांच से साढ़े पांच तक उनके पास पढ़ना; मगर बापू को पता लगा तो उन्होंने आग्रह पूर्वक पांच का समय रखने को कहा। बापू शाम को साढ़े छः बजे कातेंगे। उसी समय पढ़ने का क्रम रखा जायगा। खाना वे पौने छः बजे लेंगे। मैं पौने छः बजे वापस आ जाया करूंगी, यह तय हुआ। आज पांच बजे खेलने को गये। नीचे कोर्ट गीला था। ऊपर बरामदे में खेले।

बापू का खाना पौने छः बजे हुआ और कातना साढ़े छः से सात तक। सात बजे वे घूमने चले गए। पौने आठ से सवा आठ तक मैंने भाई के साथ इतिहास पढ़ा। प्रार्थना के बाद अखबार इत्यादि देखे। बैठी थी कि जोर से आंधी, तूफान और वर्षा हुई। बाहर पड़े हुए सब बिस्तर अंदर लाने पड़े। सब लोग अंदर ही सोये। मच्छरों ने सबको खूब हैरान किया।

आज अवंतिकाबाई गोखले के यहां से बापू के लिए दो जोड़ी धोती आईं। बापू कहते थे कि जरूर आवेंगी। आज तक वे इसमें कभी चूकी नहीं हैं।

३० सितंबर '४३

दोपहर को आज मनु की परीक्षा थी। कल उसे प्रश्न लिखाये थे। आज उसने उत्तर लिखे और मेरे पीछे पड़ गई कि अभी देख दो। मैंने रात को प्रार्थना के बाद देखा। वाक्य बनानेवाला प्रश्न उसने बहुत खराब किया था। दूसरे अच्छे थे। दिन भर से शोर मचा रही थी— "मैं फेल हुई तो रात को पढ़ा करूंगी।" उसकी आंखें कमजोर हैं, इसलिए रात को पढ़ने से बापू मना करते हैं।

मनु पास हो गई, तो भी रात में पढ़ने की इजाजत बापू से मांगने लगी। मगर बापू कब इजाजत देनेवाले थे। रात को दिलरुबा बजा सकती है, इतनी इजाजत उन्होंने दी।

१ अक्तूबर '४३

सुबह चाय के समय कटेली साहब कहने लगे, "२२ अक्तूबर को डॉ० गिल्डर का जन्म-दिन है। उस दिन क्या करना है?" दो विचार मुझे आए। उनमें से एक तो बाद में रद्द हो गया और दूसरा स्वैटर तैयार करने का अभी है, सो अच्छी ऊन मिली तो तैयार करेंगे।

कल शाम को भाई पृथ्वीचंद का पत्र आया। उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। लिखा था कि उन्होंने सरकार को तार-पर-तार दिये, पर समय पर न छोड़े जाकर वे पत्नी की मृत्य के बारह दिन बाद पेरोल पर छोड़े गए। हिंदू स्त्री के लिए मत्यु से पहले पति का दर्शन बड़ी चीज है। बहुत करुणाजनक घटना है। भाई पृथ्वीचंद बड़े अशांत हैं। हम उन्हें पत्र भी नहीं लिख सकते। आखिर शांति देनेवाला भगवान ही तो है न!

३ अक्तूबर '४३

सुबह बहुत-से फूल तोड़े थे; मगर मैं पहुंची तबतक बापू ने प्रार्थना शुरू करवा दी थी। उनके कहने से फूल वापस ले आए। शाम को फूलों

की चार थालियां समाधि पर लेकर गये। बा कहने लगीं, "शंकर भगवान से कहना कि प्रसन्न हों और हमें जेल से निकालें।" बा हमेशा महादेव-भाई की समाधि को महादेव या शंकर भगवान का मंदिर कहती हैं। आज समाधि की सजावट बहुत सुंदर हुई।

अभ्यास वगैरा फिर से नियमित शुरू हुआ है। अच्छा लगता है। लिखना कल से शुरू करूंगी।

४ अक्तूबर '४३

आज मैंने मालिश से छुट्टी ली। सुबह इतिहास पढ़ा। दोपहर सारा समय संस्कृत-व्याकरण पढ़ती रही। शाम को कतरनों का काम करने और कातने के समय भाई पं० जवाहरलालजी की 'ग्लिम्प्सेज ऑव वर्ल्ड हिस्ट्री' ('विश्व इतिहास की झलक') पढ़कर सुनाते रहे। कार्लाइल की किताब लाइब्रेरी से फिर से निकालने के लिए कहा है।

रात को अखबार आदि देखे।

५ अक्तूबर '४३

बापू अपनी कतरनों के काम में लगे हैं। भाई को अब यह बहुत अखरता है। 'बापू का समय क्या ऐसी चीजों में लगने देना ठीक है?' यह सवाल उन्हें सताता है, मगर बापू अब उसे छोड़ने को तैयार नहीं। आज मैंने पूछा, "इन कतरनों पर इतनी मेहनत होती है। इनका उपयोग कितना होगा?" बापू कहने लगे, "यह तो तुम लोग जानो। प्यारेलाल तो उपयोग करेगा ही। मैं नहीं करनेवाला हूं। मगर मैंने अपने जीवन में ऐसी बहुत-सी चीजें की हैं, जिनका उपयोग मेरे अपने लिए नहीं था।"

बापू पाखाने चार दफा जाते हैं। उस समय वे जवाहरलालजी का लिखा इतिहास पढ़ते हैं—थोड़ी देर तक मालिश के समय भी पढ़ते हैं। सब मिलाकर डेढ़ घंटे से अधिक नहीं होता है। बाकी समय अखबार देखने या कतरनों की अनुक्रमणिका बनाने के काम में लाते हैं। एक घंटा मेरे और मनु के लिए निकालते हैं। दोपहर खाने के समय मेरे साथ उनकी रामायण भी होती है और मीराबहन बाइबिल का कुछ अंश जो उन्हें अच्छा लगे या उनकी समझ में न आवे, पढ़कर सुनाती हैं। शाम

को अखबार सुनाती हैं। आधा घंटा बापू कातने के लिए निकाल लेते हैं तब भाई पढ़कर सुनाते हैं। दो-तीन रोज से करीब पौन घंटा बा बापू से लेती हैं। गीता का उच्चारण सीखती हैं। बापू अर्थ भी बताते हैं। आजकल हम सब एक-एक मिनट नियमित हिसाब से काम में लगाते हैं।

६ अक्तूबर '४३

मैंने शाम को घूमना बंद कर दिया है। सात बजे डॉ० गिल्डर के पास जाती हूं। उन्हें कुछ डाक्टरी पाठ लिखने थे। मैंने कहा, "मुझसे लिखाया कीजिए, जिससे कि आपका काम भी हो जायगा और मुझे भी कुछ अनुभव और ज्ञान हो जायगा। साथ ही सभी चीजें दुहरा लूंगी।" उनके पास शाम का ही वक्त था। बापू ने इस काम के लिए घूमना छोड़ने की इजाजत खुशी से दे दी।

८ अक्तूबर '४३

आज से शाम को सवा सात से सवा आठ बजे तक डॉ० गिल्डर के पास जाने का समय रखा है। १५ मिनट घूमने के निकाले, बिलकुल न घूमने से स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। बा को आज बुखार नहीं है।

१० अक्तूबर '४३

एक-दो रोज से बापू का यह क्रम रहने लगा है कि जवाहरलालजी का लिखा जितना इतिहास वे पढ़ते हैं, उसका सार मुझे दोपहर को सुनाते हैं, ताकि शाम को कातने के समय वह किताब पढ़ी जाय तो उसका क्रम बराबर मिल जावे।

११ अक्तूबर '४३

बापू का आज मौन था। भाई दिन भर कतरनों का काम करते रहे। शाम को मैं भी उनके साथ बैठी। रात को साढ़े ग्यारह बजे काम पूरा हुआ। करीब पौने दो सौ कतरनें तैयार हुईं। अखबारी कालम की लंबाई के बराबर कतरनोंवाली पर्चियां बनीं। कई-एक पर्चियां छोटी-छोटी पर्चियों को एक साथ जोड़कर बनी थीं।

१२ अक्तूबर '४३

आज बापू ने दो दिन की कहानी इकट्ठी सुनाई। बीस मिनट लगे।

सोकर उठी तो कतरनें लेकर बैठी, फिर मनु को सिखाया। मैंने बापू को सुबह चालीस कतरनें दी थीं। सोचा था कि दिन भर चलेंगी, मगर उन्होंने साढ़े ग्यारह बजे तक पूरी कर डालीं। मुझे अब दूसरी जल्दी तैयार करके देनी हैं। विचार किया कि अब सब पूरा करके ही उठना अच्छा है। भाई भी मेरी मदद करने आ बैठे। पांच बजे खेलने की घंटी हुई। उस समय थोड़ा काम बाकी था। मैंने सोचा कि शायद आज भी ये लोग पिंग-पौंग खेलेंगे। काम पूरा करके ही उठना चाहिए। आज नीचे का कोर्ट खेलने के लिए तैयार था। सब लोग सीधे वहां गये थे। कुछ मिनट तक हमारी राह देखी। सिपाही को हमें बुलाने भेजा। मैंने कहलाया कि अभी आती हूं; मगर उसके दो मिनट बाद ही सब लोग वापस आ गए। डॉ० गिल्डर कल से ही नाराज हैं, आज और चिढ़ गए। बहुत मुश्किल से उन्हें मनाकर खेलने भेजा, छः बजे तक खेले। वे बहुत अच्छा खेलते हैं। शाम को जब मैं उनके पास लिखने गई तब उन्होंने वही बात चलाई। उन्हें कई दिनों से चिढ़ आ रही थी। भाई अक्सर देर से आते हैं। मुझे भी कई दफा पांच-सात मिनट की देर हो जाती थी। जेल में जहां चार-पांच खेलनेवाले हों, वहां वक्त पर सबको आना ही चाहिए। इस बात पर डॉक्टर साहब जोर दे रहे थे।

: ५८ :

सच्चा धर्म

१३ अक्तूबर '४३

२२ ता० को डॉक्टर साहब का जन्म-दिन है। उस दिन क्या करना है, यह हम सब विचार करते थे। बापू ने कहा, "डॉ० साहब के लिए गुड़ के सिगार बनाओ। कल मावा बनवाया था, उसमें कोको डालकर लंबे-

लंबे चाकलेट बनाये। डॉ० साहब से मैंने सुनहरी वर्क और सिगारों के खाली डिब्बे मांगे थे। भाई ने गुड़ के सिगार कागज में लपेटकर दो सुंदर पैंकेट तैयार कर दिए।

१५ अक्तूबर '४३

आज सुबह घूमने के समय बापू ने जवाहरलालजी की किताब की कहानी सुनाई। फिर जेलों में उन्होंने क्या-क्या अभ्यास किये, यह सब बताते रहे। रानडे की 'दि राइज़ ऑव मराठा पावर' और जदुनाथ सरकार की शिवाजी पर पुस्तक जरूर पढ़नी चाहिए, यह सुझाया।

१६ अक्तूबर '४३

आज महादेवभाई को गए दूसरे वर्ष के आठ हफ्ते पूरे हो गए। सुबह खूब फूल तोड़े। मैं और मनु, दोनों सजावट करने गईं।

पैंकेट को चित्रित करने में ढाई-तीन घंटे लगे। चीज सुंदर तैयार हुई है। उगता हुआ चंद्रमा और चढ़ता सितारा, यह चित्रकारी ढकने पर की है और चारों ओर नीला रंग। मीराबहन को बहुत पसंद आया। अब सामने 'घणुं जीवो'[1] लिखना बाकी है। मेजपोश भी तैयार करना है।

बापू के पास अनुक्रमणिका बनाने के लिए कतरनें नहीं हैं। इससे सारा खाली समय अब पढ़ने में देते हैं।

आज भाई ने कुछ कतरनें दीं। एक-दो दिन में डॉक्टर साहब के पास से भी आ जायंगी। तब काम फिर बढ़ जायगा। बापू को इस काम का बोझ नहीं लगता। कहते थे, "यह काम पूरा होगा तब मुझे फिक्र होगी कि कौन-सा दूसरा ऐसा ही काम हाथ में लूं।"

१७ अक्तूबर '४३

सुबह घूमते समय पाकिस्तान की बात होने लगी। बापू ने बताया कि किस प्रकार एक समय आगाखां ने मुसलमानों को पत्र लिखा था कि पाकिस्तान इस्लाम के विरुद्ध और मुसलमानों के लिए शर्म की बात है। बोले, "वह सच्चे हृदय का आग्रह था। आज भले ही वह बदल जाय तो

---

१. 'जुगजुग जिओ'

भी उस उद्‌गार की कीमत कम नहीं होती। जैसे कि मैं आज कहने लगूं कि अहिंसा निकम्मी है तो एक समय मैंने जो अहिंसा का सिद्धांत लोगों के सामने रखा था, उस सत्य की कीमत कम नहीं होगी।"

बात सिखों और मुसलमानों के संबंध पर आई। मुसलमानों का गुरु को मारना, गुरु गोविंदसिंह के बच्चों को जीते-जी चुनवा देना, इस पर चर्चा होने लगी। किस प्रकार इस कारण से सिखों के मन में मुसलमानों के प्रति तिरस्कार है, गुरु गोविंदसिंह के लड़कों को पकड़वाने में ब्राह्मण रसोइये का हाथ था, इसलिए सिख ब्राह्मण के प्रति भी तिरस्कार कर सकते हैं, आदि बातें हुईं। मैंने कहा, "पंजाब में तो ब्राह्मण के प्रति मान है ही नहीं, यह कहा जा सकता है।" बापू कहने लगे, "हां, यह है। जब मैं पंजाब गया था तब मुझे तो लगा था कि वहां कोई ब्राह्मण है ही नहीं। बात तो यह है कि ब्राह्मण बहुत समय से अपना ब्राह्मणत्व खो बैठे हैं। नहीं तो हिंदुस्तान गुलाम बनता ही नहीं।" मैंने पूछा, "क्या आप मानते हैं कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को निकाल फेंका और वह अच्छा नहीं हुआ?" बापू बोले, "मैं मानता ही नहीं कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को निकाल फेंका। उसका अच्छे-से-अच्छा भाग उन्होंने ले लिया। आज जितना बौद्ध धर्म हिंद में है, उतना न चीन में है, न जापान में, न बर्मा में, न लंका में। बुद्ध भगवान अगर आज आवें तो कहेंगे कि बौद्ध धर्म का सत्व तो हिंदुस्तान में ही है, बाकी सब तो भूसा है।"

मीराबहन कहने लगीं, "ईसा आवें तो कहेंगे कि आज ईसाइयत कहां है?"

बापू बोले, "हां, ईसा आज जिंदा हों तो सारे यूरोप को अपनाने से इंकार करें और कहें, यूरोप आज ईसाई नहीं है।"

मीराबहन बोलीं, "लेकिन साम्यवादियों को छोड़कर! ईसा ने कहा है—'मैं भूखा था। तुमने मुझे खाना खिलाया।' किसी ने पूछा—'कब?' उन्होंने कहा—'मेरे इन अदने-से-अदने भाइयों के लिए तुमने जो किया, वह मेरे लिए किया।' और साम्यवादियों ने तो समाज के पिछड़े हुए, दबे हुए लोगों के लिए, बहुत-कुछ किया है।"

बापू ने उत्तर दिया, "हां, मगर साथ ही ईसा साम्यवादियों से यह पूछें कि उन्होंने इतने खून और कत्ल किये, सो क्यों ?"

मीराबहन ने कहा, "नहीं जी, आपकी तरह ईसा जीव-हत्या के विरोधी नहीं थे।"

बापू बोले, "तो क्या तुम उस मत की नहीं हो जो यह मानते हैं कि ईसा ने कहा था—'जो तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसके सामने तुम बायां गाल भी कर दो ?' वह क्या सिर्फ उनके १२ शिष्यों के लिए ही था ?"

मीराबहन इसका उत्तर न दे सकीं। कहने लगीं, "मगर दूसरों ने साम्यवादियों से कहीं अधिक खून बहाया है।"

बापू बोले, "हां, मगर तो भी ईसा उन्हें क्षमा नहीं कर सकते। यह सब ईसा के शिक्षण के साथ मेल नहीं खाता।"

१८ अक्तूबर '४३

आज बापू का मौन है। मैंने दिन भर मेजपोश का काम किया। शाम को मीराबहन के साथ पिंग-पौंग खेली। वहां से आकर बापू के लिए दूध ले जाने की तैयारी में थी और फलों का सलाद बना रही थी कि जमादार रघुनाथ को बरामदे में दौड़ते देखा। पूछा तो पता चला कि सरकार का पत्र आया है। जाकर देखा कि 'बाइबिल' वाले बापू के उत्तर का जवाब था, खासा लंबा और जहर से भरा। सरकार ने ढिठाई की हद कर दी। बापू ने पढ़ा तो हँस दिये। सबने पढ़ा और सबको लगा कि आज तक आनेवाले पत्रों में यह पत्र सबसे खराब है। भाई तो तिलमिला उठे। बोले, "साफ जाहिर है कि सरकार बापू को किसी प्रकार उत्तेजित करके उनके प्राण लेना चाहती है।"

१९ अक्तूबर '४३

सुबह घूमते समय मीराबहन कहने लगीं, "वाइसराय के जवाब में और टॉटेनहम के कलवाले पत्र में कितना फर्क है। वाइसराय ने आपके पत्र का उत्तर देने की तकलीफ उठाई और फिर जो भी कहना था, नरमी के साथ कहा; मगर टॉटेनहम ने तो पूरी कोशिश करके अपने खत में जहर

भर दिया है। जीत से इन लोगों का दिमाग ठिकाने नहीं रहा।"

बात चली कि जो सचमुच बड़े होते हैं, उनकी जबान ज्यादा मीठी होती है। इस पर बापू कहने लगे, "यह क्यों भूल जाते हो कि उपवास के समय वाइसराय का आखिरी खत इससे भी ज्यादा खराब था।"

बा की तबियत अच्छी नहीं है।

शाम को घूमते समय मीराबहन कहने लगीं, "बापू, आप नहीं मानते कि आपको जेल में रखने की इतनी कोशिश ये लोग कर रहे हैं, उसका कारण यह नहीं कि आपने कुछ किया या करते; मगर अंग्रेजों को यह अनुकूल है कि आप सब लोगों को वे बंद रखें, जिससे आपकी गैरहाजिरी में वे लोग हिंदुस्तान के बारे में अपनी गंदी चालबाजी को अमल में ला सकें।"

बापू बोले, "इसमें कोई शक नहीं है।"

मीराबहन कहने लगीं, "अगले रोज मैंने हंटिंगडन की किताब में पढ़ा था कि हिंद तीन चौथाई से अधिक अंग्रेजी साम्राज्य का भाग है, तब मैं उनकी चालबाजी समझ पाई।"

इसी सिलसिले में आस्ट्रेलिया और अफ्रीका में अंग्रेजों ने क्या-क्या किया, इस पर बात चली। मीराबहन ने कहा, "यह सब न्याययुक्त है, इसे सिद्ध करने के लिए बस बाइबिल के पन्ने खोलने की जरूरत है।" सच है। धर्म को जैसा चाहे वैसा रंग दिया जा सकता है।

२० अक्तूबर '४३

मेजपोश मैंने पूरा किया। कपड़े के बीच में कुछ और भी काढ़ने का इरादा था, मगर बापू नाराज होने लगे, "मेरा तो इतनी मेहनत करने का इरादा ही नहीं था। कल चारों कोनों पर काम किया, उसके लिए रात को देर से सोई। जो तेरा संकल्प था कि दूसरे कामों में विघ्न न पड़े, उसको तूने भंग किया। मीराबहन ने कहा है, इसलिए तू अभी और करना चाहती है। पीछे दूसरा कोई और कहेगा तो और करने लगेगी। मेरे खयाल में इस तरह काम करनेवाले गिरते हैं।"

मैंने मेजपोश के बीच में जो काढ़ना आरंभ किया था, उसे उधेड़ डाला। पीछे पैकेट पर चित्र बनाया। बापू ने उस पर 'घणुं जीवो' लिखा।

मेरा बारीक ब्रुश अच्छा नहीं है। उससे लिखना बापू के लिए कठिन था, इसलिए बापू से कलम की नोक से लिखवाया। रंग तैलरंग थे। साढ़े ग्यारह बजे कलक्टर आया। पीछे खाने के बाद रामायण पढ़ी। थोड़ा सोई, पर नींद नहीं आई। मेजपोश के एक कोने में बापू ने तमिल में, दूसरे कोने में भाई ने उर्दू में, तीसरे कोने में कटेली साहब ने गुजराती में डॉक्टर साहब के नाम का पहला अक्षर लिखा। चौथे कोने में मीराबहन ने कल हिन्दी में लिख दिया था।

२१ अक्तूबर '४३

रात को पंद्रह मिनट तक कैरम खेली। डॉक्टर साहब के लिए बनाई हुई सब चीजें मैंने कटेली साहब को दे दी हैं, वे डॉक्टर साहब को उनका पार्सल बना कर देंगे। मीराबहन ने बकरी पर एक कविता लिखी है। कविता के पृष्ठ में ऊपर बकरी का एक चित्र बनाया। एक कैदी से मिट्टी की बकरी बनवाई है, सुंदर बनी है। दोपहर को बकरियां आवाज कर करके डॉ० साहब को सोने नहीं देतीं, ऐसी शिकायत एक दिन वे करते थे। इसी बात को लेकर मीराबहन ने कविता बनाई है। कुल मिलाकर पांच पार्सल बन गए हैं—बकरी का, पेंटिंग वाले पैकेट का, मेजपोश का और दो पैकेट सिगार व चॉकलेट का।

बापू ने अपने सूत के ६२ तारों का हार उनके लिए बनाया है। हम सब उन्हें फूलों के हार पहनावेंगे।

२२ अक्तूबर '४३

सुबह साढ़े सात बजे हम सब डॉ० गिल्डर के कमरे में गये। बा ने उन्हें टीका लगाया, हार पहनाया और नारियल वगैरा दिये। बापू ने अपना सूत का हार पहनाया। कटेली साहब ने फूलों का हार पहनाकर टीका लगाया। फिर उन्हें खाने के कमरे में ले गए। डॉ० साहब ने चाय पीते-पीते सब पार्सलों को खोला। यह सब करते-करते करीब आठ बज गए, बापू भी वहीं बैठे थे। बाद में हम सब घूमने गये। लौटकर डॉक्टर साहब बापू की मालिश करने लगे। मैंने और मीराबहन ने बापू का कमरा फूलों से सजा दिया।

दोपहर को मैंने कैदियों को खाना खिलाया, शाम को उन्हें चाय इत्यादि दी। बाद में नीचे नये कोर्ट में खेलने गए। मीराबहन भी आईं। रात को बा तीन दिन के बाद कैरम खेलने गईं।

बापू ने टॉटेनहम के पत्र का उत्तर लिखा।

२४ अक्तूबर '४३

बापू टॉटेनहम के पत्र का उत्तर सुधार रहे हैं। यदि तैयार हो गया तो कल सुबह ही डाक से जावेगा।

बापू तीन-चार दिन से बा को गरम-ठंढा कटि-स्नान देते हैं। आधे घंटे से बढ़ाते-बढ़ाते एक घंटे तक ले जावेंगे।

२६ अक्तूबर '४३

डॉ० गिल्डर ने जो लिखाया था उसे दुहराकर उन्हें दिया। बाकी समय रोज का कार्यक्रम चला। 'मार्गोपदेशिका' कल पूरी हो गई थी। आज भंडारकर की दूसरी किताब शुरू की। यह ज्यादा कठिन है।

सुबह घूमते समय बापू से भाई ने पूछा, "आपको श्रीनिवास शास्त्री की खुली चिट्ठी कैसी लगी?" बापू ने उत्तर दिया, "भाषा तो अच्छी है। मगर और कुछ नहीं है।"

भाई ने कहा, "उनका तो यही कहना है न कि किसी भी प्रकार आप बाहर निकल आवें!"

बापू बोले, "वे इतनी बात नहीं समझते कि 'किसी भी' तरह बाहर आकर मैं कुछ काम नहीं कर सकता हूं।"

भाई कहने लगे, "शास्त्रीजी के पत्र का उत्तर लिखूं?"

बापू ने कहा, "उत्तर तो एक मिनट में लिखा जा सकता। यह इतना ही है—'आप क्यों नहीं समझते कि अपनापन खोकर मैं हिंदुस्तान के काम का न रहूंगा।'

२७ अक्तूबर '४३

शाम को घूमते समय पाकिस्तान के बारे में मीराबहन ने बात चलाई। बापू कहने लगे, "मैं तुम्हें अपना मत बता चुका हूं। पाकिस्तान नहीं बनेगा; क्योंकि मुसलमान खुद पाकिस्तान लेना नहीं चाहेंगे। अर्थशास्त्र

की दृष्टि से वह चल नहीं सकता। इसी कारण वह राजनीति की दृष्टि से भी नहीं चल सकता। जिन्ना साहब उसे देखकर भयातुर हो उठेंगे और उसकी इच्छा नहीं करेंगे।"

२८ अक्तूबर '४३

आज भाई के कमरे की सफाई कराई। वहां अक्सर पानी चला जाता है और भाई को दरवाजे वंद रखने पड़ते हैं। वहां कुछ वदबू भी आने लगी थी। कमरे से निकाली हुई पुस्तकों की एक सूची वनाने में मेरा दोपहर का सारा समय गया।

वा की तवीयत वहुत अच्छी है, जलन विलकुल नहीं है। वापू ने उन्हें गरम और ठंडे पानी का कटि-स्नान देना आरंभ किया था, उसीका यह फायदा दीख पड़ रहा है।

: ५९ :

जेल में दूसरी दीवाली तथा अन्य उत्सव

२९ अक्तूबर '४३

आज हम लोग जेल में दूसरी दीवाली मना रहे हैं। जब आये थे तब कल्पना तक न थी कि यहां इतने अरसे तक रहना होगा।

सुवह महादेवभाई की समाधि पर खूब फूल सजाये। रात को अगर की वत्तियों की दीपावली का आयोजन किया। अगरवत्तियों का 'ॐ' और '†' अंधेरी रात में वहुत सुन्दर लगते थे। वापू घूम-फिरकर वहां आये। भाई और डॉ० गिल्डर वहां पहले से ही बत्तियां सजा रहे थे। बत्तियों को जलाने के पहले अंधेरा हो चला था, इसलिए मिट्टी का एक दीपक जलाया। दीवार पर रखने का विचार था, मगर वैसा करने से दीपक वुझ जाता था। फिर वहां रखने से ॐ की शोभा भी कम होती थी।

दिन में रोज की तरह सब कार्यक्रम चला। शाम के समय कैदियों को खजूर, चाय और पकौड़े दिये।

सुबह प्रार्थना में बापू ने 'और नहीं कुछ काम के, मैं भरोसे अपने राम के'[1] और शाम को 'श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन' वाले भजन गवाये। इस प्रकार दीवाली खत्म हुई।

३० अक्तूबर '४३

बापू की मालिश के बाद ग्यारह-साढ़े-ग्यारह तक मैंने डॉक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ीं। बापू का बाकी काम भाई ने किया, साढ़े ग्यारह तक अच्छा चला।

आज नया हिंदू वर्ष आरंभ होता है। इच्छा थी कि दिन अच्छा निकले, सब काम व्यवस्थित हो, मगर साढ़े ग्यारह के बाद सब बिगड़ा और रात तक बिगड़ता ही चला गया। मेरे खराब दिनों में से एक दिन यह भी कहा जा सकता है।

मनु के सिर में दर्द है, शायद मलेरिया की तैयारी होगी। इसलिए रात में बापू, बा और मनु की व्यवस्था करके साढ़े दस बजे सोई।

३१ अक्तूबर '४३

बाइबिल का शुरू किया हुआ भाग 'न्यू टेस्टामेंट' आज पूरा किया है। 'ओल्ड टेस्टामेंट' (पुराना करारनामा) नामक अध्याय अब आरंभ किया है।

कर्नल भंडारी आये। बापू स्नान को चले गए थे, उन्हें मिल नहीं सके।

रात को चंद्रमा बहुत सुंदर लगता था। कल बादलों के कारण नहीं दिखाई दिया था।

रात को मैं बापू की मालिश करने के बाद कुछ पढ़ने बैठी, मगर कल रात अच्छी नींद नहीं आई थी।

सुबह पढ़ने के समय नींद लगती थी। कम काम कर पाई।

---

१. और नहीं कछु काम के, मैं भरोसे अपने राम के-और०
दोऊ अक्षर सब कुल तारे, वारी जाऊं उस नाम पै-और०
तुलसीदास प्रभु राम दयाघन, और देव सब दाम्र के-और०

डॉ० गिल्डर के डॉक्टरी पत्र-पत्रिका पूरे पढ़कर जल्दी लौटाने थे; मगर जल्दी सो गई। साढ़े ग्यारह बजे तक तीन बार नींद में से चिल्लाकर मैं उठी, माताजी को पुकारती थी। बापू बता रहे थे कि तीसरे समय तो इतने करुण-क्रंदन की आवाज निकली थी कि उनसे सहन नहीं हो सकी।[1]

१ नवंबर '४३

बापू के काम से छुट्टी लेकर डॉक्टरी पत्र-पत्रिका पूरे किये और लौटा दिए। दूसरे नये ले आई। गुरुवार तक सब पूरे करने हैं। बापू का मौन था, मगर बाइबिल तो उनके साथ पढ़ी। मनु को भी बापू ने सिखाया। पता नहीं 'मार्गोपदेशिका' मौन रहकर कैसे सिखाई होगी।

बा की तबीयत कुछ ढीली है। आज दोपहर को उन्होंने कटि-स्नान नहीं किया। बापू आजकल एक घंटा (३ बजे से ४ बजे तक) बा को स्नान कराने में देते हैं। कल शाम को कहते थे, "मुझे यह बड़ा अच्छा लगता है कि इस अवस्था में मुझे बा की सेवा करने का अवसर मिल गया है। इससे मुझे पूरा संतोष है। बा को भी अच्छा लगता है। बा अब इसमें तन्मय हो गई है, हँसती है और खुलकर बातें भी करती है। बा मेरा समय बचवाना चाहती है; मगर मैंने उसे समझाया है कि मेरे काम की वह चिंता न करे। वह हुआ तो क्या और न हुआ तो क्या! बा को स्नान से फायदा भी बहुत है। कहती थी कि जलन तो बरसों से थी, मगर मालूम नहीं अब वह कहां चली गई।"

२ नवंबर '४३

शाम को बहुत जोरों से वर्षा हुई। खेलने का कोर्ट भीग गया।

बापू को शाम को कुछ थकान लगती थी। वे जवाहरलालजी की लिखी पुस्तक 'ग्लिंप्सेज ऑव वर्ल्ड हिस्ट्री' की बात करते रहे। कह

---

१. बाद में पता चला कि उस दिन मेरी भाभी का, जो मुझे सगी बहन की तरह प्यार करती थी, ऑपरेशन हुआ। वह सारा समय मुझे याद करती थी, पुकारती थी। ऑपरेशन बिगड़ने से उसकी मृत्यु हो गई।

रहे थे, "मुझे कुछ लिखना हो तो मैं इसी किताब का अनुवाद करूं और वह मुझे अच्छा भी लगे।"

हम लोग बापू के पीछे लगे हैं कि वे अब कतरनों का काम छोड़कर कुछ लिखना शुरू करें। आश्रम का इतिहास, महादेवभाई के संस्मरण, आत्मकथा का दूसरा भाग—सभी कुछ तो लिखना है। अभी 'स्वास्थ्य की चाबी' नामक पुस्तक भी पूरी करनी है।

३ नवंबर '४३

बापू ने आज महादेवभाई के विषय में अपने संस्मरण लिखने शुरू किये। शाम को पंद्रह मिनट मिले। उसी समय में लिखना शुरू कर दिया। भाई कह रहे थे, "मुझे बड़ी ईर्ष्या होती है कि इतने थोड़े समय में बापू कैसे लिख सकते हैं।" मैंने कहा, "अगर मालूम हो कि क्या लिखना है तो वह हो सकता है।" भाई बोले, "इतना हृदय भरा होना चाहिए कि बस पानी उंडेलने की तरह अपने-आप कलम चलती जावे।" बापू के साथ तो ऐसा होता ही रहता है।

मैंने डॉक्टरी अभ्यास आज काफी किया।

७ नवंबर '४३

मीराबहन को बापू के पास आये १८ साल हो गए। आज १९वां वर्ष आरंभ हुआ है। बापू के पास आने के दिन को वे अपना जन्म-दिन मानती हैं, इसलिए आज उनका जन्म-दिन मनाया गया। सुबह जब वे साढ़े सात बजे के करीब बापू के पास आईं, तब हम सबने उन्हें हार पहनाये। बापू ने उन्हें अपने सूत का हार पहनाया। मजाक किया जा रहा था कि मीराबहन की १९वी वर्षगांठ उनकी ५२ साल की उमर में आई है।

मैंने उन्हें अपनी एक बारीक साड़ी दी। बापू को यह बहुत अच्छा लगा। साथ ही खादी का एक तौलिया और बनाया हुआ गुड़ दिया। बापू को भेंट-स्वरूप आया हुआ गोदरेज साबुन और ब्राह्मी तेल भी उन्हें दिया।

कैदी पहलवान ने एक गाय, दो बैल, एक बछड़ा, एक बकरी और दो लेले मिट्टी के बनाये थे। वे भी भेंट किये। वे बहुत सुंदर बने थे,

उन पर रोगन लगाया गया था—सब लकड़ी के एक खोखे में बंद थे। दूसरी चीजें—टीका, दियासलाई, साबुन इत्यादि के पार्सल बनाये थे। बापू के पास ही मीराबहन को नाश्ता और बा को चाय ला दी। पीछे पार्सल खुलने लगे। इसमें सवा आठ बज गए और बापू घूमने चले गए। हम लोग थोड़ा खेले।

डॉ० गिल्डर ने कार्ल मार्क्स की प्रसिद्ध पुस्तक 'कैपिटल' के दोनों भाग एक साथ मंगाये थे। १२) में मिले। सामान्य कीमत ७) से अधिक नहीं है। किताबों की कीमत स्थिर करने के उद्देश्य से कल-परसों एक सरकारी हुक्मनामा निकला है, ताकि मनमानी कीमतें न ली जा सकें। डॉ० गिल्डर ने यदि दो दिन बाद पुस्तक खरीदी होती तो पांच रुपए बचते।

८ नवंबर '४३

बापू को थोड़ा-थोड़ा जुकाम लग रहा है, नाक बहुत टपकती है। दिन भर उनका मौन था। सुनसान-सा लगता था।

बा ने आज तुलसी की शादी मनाई है। तुलसी के ऊपर गन्नों का मंडप बनाया, हार पहनाये, फूल चढ़ाये, फल की भेंट सामने रखी और रांगोली वगैरा बनाईं। सुंदर दृश्य था।

९ नवंबर '४३

बापू का जुकाम खूब जोरों पर है। शाम को डॉ० शाह आये, तब मजाक होने लगा। उनको पहले-पहल जुकाम मैसूर से लौटने पर हुआ था। मैंने कहा, "आप मैसूर से जुकाम लाये हैं और वह यहां सबको बारी-बारी से दबा रहा है।" वे बोले, "हां, जुकाम बहुत खराब चीज है । मुझे खांसी इस जोर से आती है कि क्या कहूं।"

शाम को बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया कि आपके पत्र पर विचार किया जा रहा है। बापू ने वह पत्र लिखते समय बहुत संयम से काम लिया था। कह रहे थे कि पहले उन्होंने तीखा जवाब देने का विचार किया था, फिर सोचा कि व्यंग में उत्तर दें, मगर अंत में मीठे-से-मीठा उत्तर देने का निश्चय किया। देवल नया आया है, उसको पहले-ही-

पहले व्यंग भरा तीखा पत्र भेजना ठीक नहीं है। इसलिए सरकार के पत्र में भरे हुए जहर को पी गए और शांतचित्त होकर उत्तर लिखा।

अब की बार सरकार का अपमान भरा दो शब्दों का उत्तर नहीं आया, नहीं तो लिखा होता कि सरकार ने आपको जो लिखा है, उससे ज्यादा कुछ नहीं कहना है।

आज बा ने तुलसी-विवाह का प्रसाद नारियल, शक्कर, अनार और गन्ना कैदियों और सिपाहियों में बांटे।

: ६० :

भाभी का ऑपरेशन और मृत्यु

१० नवंबर '४३

सुबह बापू ने अंडी का तेल लिया, खूब असर हुआ। मालिश के समय तबीयत अच्छी थी। स्नान-घर में जब स्नान कर रहे थे तो मुझे थके-से लगे। मैं चश्मा वगैरह धोने लगी। लौटकर देखा तो पैर धो रहे थे, मगर बहुत धीमे-धीमे। टब में स्नान कर रहे थे तभी मैंने पूछा था—"आप थके-से लगते हैं।" कहने लगे, "नहीं, यों ही सुस्ता रहा हूं।" तब मैं दूसरा काम करने लगी। साबुन में कपड़े भिगोने लगी। इतने में देखा तो बापू तौलिये से मेरी तरफ इशारा कर रहे थे। बाद में बताते थे कि उन्होंने मुझे बुलाया भी था, मगर मैंने सुन नहीं पाया। मैंने पूछा, "क्या चक्कर आता है?" कहने लगे, "नहीं, तू मेरी देह को पोंछ दे।" मैंने कहा, "बैठ जाइए।" मगर बापू ने इंकार कर दिया। मैंने देखा कि उनके पैर कुछ लड़खड़ा रहे थे, इसलिए मैंने उनकी कमर में दोनों हाथ डालकर उन्हें उसी पाटले पर बिठा दिया जिस पर वे खड़े थे।

कहने लगे, "पाखाने की हाजत है।" मैंने पूछा, "कमोड यहीं लाकर

रख दूं ?" उन्होंने इंकार किया, पर बाद में मान गए। उन्हें कमोड पर बिठाकर सहारा दिये खड़ी रही। बापू को जम्हाई बहुत आ रही थी। वे सफेद होते जा रहे थे। नाड़ी की गति बहुत धीमी पड़ गई थी। मैंने भाई को बुलाया। उन्होंने आकर बाल्टी वगैरा हटाकर जगह खाली की। गादी बिछाई। पूछा, "डॉ० गिल्डर को बुलाऊं?" बापू ने इंकार किया, मगर भाई कहने लगे कि वे बुरा मानेंगे कि उन्हें खबर नहीं दी। डॉ० गिल्डर बुलाये गए। बापू को गादी पर सुलाया गया। दो-तीन मिनट में वे बिलकुल ठीक हो गए। रक्त-चाप मापा तो १३५/८२ निकला। इतने में बा आईं। पूछने लगीं, "यह क्या किया?" मन में उनके चिंता थी। ऊपर से हँसने का प्रयत्न कर रही थीं। बापू ने उत्तर दिया, "अब तो कुछ भी नहीं।" पंद्रह-बीस मिनट बाद वे उठकर बाहर आये। थोड़ा-सा सोये, फिर उठकर खाना खाया। दोपहर को खूब सोये, पर कमजोरी दिन भर रही।

मैं दोपहर को एक मिनट भी नहीं सो सकी। भाई ने मोहनलालभाई का पत्र दिया। मेरी भाभी शकुंतला के ऑपरेशन के बारे में था। अस्पताल में दाखिल करा दिया गया था, तो भी समय पर इतनी ढील हुई कि जान के लाले पड़ गए। खत में लिखा था कि शरीर में नाड़ी में रक्त देने की तैयारी कर रहे थे, मगर उसके बिना ही तबीयत सुधर रही थी। अभी खतरे से बाहर नहीं है। मुझे, हो सके तो, पेरोल पर आने के लिए लिखा था। सरकार भेजेगी तो चली जाऊंगी। बाकी इस सरकार से भीख कौन मांगे।

११ नवंबर '४३

कल रात मैं बारह बजे तक सो नहीं सकी। माताजी, शकुंतला और मोहनलाल की ही याद आती रही। सुबह प्रार्थना के बाद भी नहीं सो सकी। बापू के उठने पर उनसे पूछकर मोहनलाल और डॉ० हरजगीर को तार किया कि शकुंतला की खबर तार से भेजो। सरकार ने मोहनलाल का तार सीधा भेजने की इजाजत दी, मगर डॉ० हरजगीर को बंबई सरकार की मार्फत तार गया। बाद में पता चला कि तार गया ही नहीं।

सरकार का हुक्म है कि रिश्तेदारों को ही तार-खत भेजा जा सकता है, इस पर भी डॉक्टर को तार नहीं कर सकते।

बापू की तबीयत अच्छी है। कल से बा को दोपहर का स्नान देना शुरू किया है।

१२ नवंबर '४३

मेरे तार का उत्तर तो नहीं आया, पर मोहनलाल का भेजा हुआ ४ नवंबर का तार आज दोपहर को मिला। मोहर से पता लगा कि यह तार यहां ५ नवंबर को आ गया था, मगर यहां से बंबई और बंबई से यहां फिर आया है। इसमें शकुंतला के ऑपरेशन की खबर है, उसकी हालत नाजुक है। बहुत बुरा लगा। अप्रैल में इसी तरह माताजी की बीमारी के समय खबर देर से मिली थी। पर सौभाग्य से माताजी अच्छी हो गई थीं। लेकिन शकुंतला का न जाने क्या हाल हुआ हो। शाम को विचार आया कि वहां सब कुशल ही होगी, नहीं तो अभी तक खबर जरूर आती।

१३ नवंबर '४३

सुबह खबर मिली कि ९ नवंबर को मोहनलाल का एक दूसरा तार आया था, किंतु बंबई भेज दिया गया है। बस, इस खबर से तो होश गुम हो गए। तार में क्या लिखा होगा? शकुंतला है भी या नहीं! दिन भर सख्त बेचैनी रही।

बंबई सरकार को पत्र लिखा कि इस तरह की खबर देने में इतनी ढील करना समझ से बाहर की बात है, पर सरकार को क्या पड़ी थी? उसकी निगाह में कैदी इंसान थोड़े ही था! दिन भर उत्तर की राह देखती रही, पर कोई उत्तर न आया।

१४ नवंबर '४३

आज भी तार की राह देखते-देखते दिन गया। मैं बड़ी बेचैन हो गई। बापू कहने लगे, "जब हमें दूसरा तार, जो बंबई गया है, मिलेगा तभी पता चलेगा। मेरी समझ में पहले तार का उत्तर ही वह तार है— भला हो या बुरा। मैं मानता हूं कि बुरा नहीं हो सकता।" मुझे डर लगा

कि पहले तार में आया था—'हालत खतरनाक है' तो दूसरे में होगा—'चल वसी'। वापू वोले, "ऐसा हो सकता है, मगर मैं मानता हूं कि तार अच्छा ही होगा। डॉक्टर ने ही शायद तार किया हो कि शकुंतला की हालत नाजुक होने के कारण तुझे पेरोल मिलने में आसानी हो। शायद उनसे सरकार की तरफ से कहा गया हो कि वे अर्जी देंगे तभी पेरोल मिल सकती है। ऐसी हालत में डॉक्टर तुझे तार करेंगे।" मैंने यह वात मानने की कोशिश तो की, पर दिल वुझा रहा। भाई भी कहने लगे, "तुम व्यर्थ ही चिंता करती हो, मुझे तो निराशा नहीं लगती।" बाद में मैं सोचने लगी, 'शायद शकुंतला अच्छी हो रही होगी और मोहनलाल अधिक कुछ कहना न चाहता हो। शायद वह सोचता हो कि चलो, इसी वहाने पेरोल पर मैं वहां हो आऊंगी।'

शाम की प्रार्थना में 'हरि तुम हरो जन की भीर' गाकर 'डूवते गजराज राख्यो' ज्यों ही गाया कि मेरा गला रूंधने लगा।

१५ नवंबर '४३

आज वापू का मौन था। मैं दोपहर खाना खाकर सो गई। एक वजे उठी। बापू के पैरों में मालिश करने लगी। इतने में श्री कटेली को वरामदे में से जाते देखा। मेरा माथा ठनका, लगा कि कुछ खराव खबर है। इसलिए मुझे तार देना नहीं चाहते, भाई को देकर आये हैं। मन में हुआ कि बापू से कहूं। दौड़कर भाई से पूछूं। मगर अपने-आपको रोका। बापू सोने की तैयारी में हैं। उनकी नींद क्यों बिगाड़ूं? बाद में पूछ आऊंगी। और शायद श्री कटेली उधर किसी दूसरे ही काम से गए हों! यह विचार चल ही रहा था कि भाई ने तार लाकर बापू के हाथ में दिया। मैंने कहा, "वोलते नहीं हो, खराव खबर है न?" बापू ने सिर हिलाकर 'हां' कहा। मैंने पूछा, "शकुंतला गई?" बापू ने सिर हिलाया, "हां।" डर तो था ही, पर आशा बंधी थी कि वह तो अच्छी ही होगी। मगर वह कहां से? वह तो सोमवार, ८ नवंबर को ही चल वसी थी। मैं उठकर वगीचे में एकांत में जा वैठी। दुःख के मारे फटते हुए हृदय से सोचती रही कि माताजी और मोहनलाल अब क्या करेंगे। ऐसी देवी जगत में

कहां मिल सकती है ? रिश्तेदार क्या, मित्रवर्ग क्या, जिस किसी को मिली, उसी का मन हर लिया। उसकी हँसती मूर्ति मेरे सामने नाचने लगी। उसकी मीठी आवाज मेरे कानों में गूंजने लगी।

भाई आकर मुझे वापस ले गए। उठकर कातना शुरू किया। पढ़ना तो असंभव था ही। आंखों से अश्रु-धारा बह चली। बापू ने आकर यह देखा तो उन्होंने अपना मौन-व्रत तोड़ना चाहा, पर मैंने ऐसा न करने को कहा। उन्होंने सब कार्यक्रम चालू रखने को कहा, मगर मेरे सामने तो शकुंतला थी।

मीराबहन आईं। सहानुभूति दिखाने लगीं, "तुम वहां होतीं तो उसका तुम्हारे प्रति विश्वास ही उसे बड़ी मदद करता।" पर मैं वहां होती कैसे ? सरकार की तरफ से तार देने में इतनी ढील हुई थी कि भाभी ८ तारीख को ही गुजर गई और मुझे १५ तारीख को उसकी मृत्यु का तार मिला।

हम घर में तीन बहनें हैं—तीनों डॉक्टर। और शकुंतला के काम एक भी न आई ! मोहन ने प्रकाश या सत्या को ही बुला लिया होता ! मुझे भी तो उसने ऑपरेशन करवाने के बाद ही लिखा। नतीजा यह हुआ कि खबर मुझे उसके ऑपरेशन के समय नहीं, बल्कि मृत्यु की मिली।

शाम को प्रार्थना में 'मंगल मंदिर खोलो' गाया। 'जीवन वन अति वेगे वटाव्यूं' गाते समय आवाज जवाब दे गई। मनु को किताब दी कि गीत को चलाए, पर वह भी रोने लगी। मुश्किल से किसी तरह भजन पूरा किया। रामायण की एक चौपाई पढ़कर बंद कर दिया।

१६ नवंबर '४३

सुबह एक-एक अंग दुखता था। सिर में सख्त चोट खाए हुए इंसान की-सी मेरी स्थिति हो रही थी। कल शाम को बच्ची के विषय में पूछने को तार तैयार किया था, आज सुबह वह भेजा। दोपहर को मोहनलाल का तार आया कि तुम कहो तो बच्ची को तुम्हारे पास ही भेज दूं। सरकार को इस बारे में लिखता हूं, इत्यादि। सरकार आने दे तो मैं उसे खुशी से रखूं, मगर सरकार कभी आने नहीं देगी। मनु तो उछल पड़ी कि बेबी

आवे तो वड़ा अच्छा लगेगा, मगर इस वात का विचार करना भी वेकार है। मोहनलाल तार से उत्तर मांगते हैं। तार लिखा—"तार मिला। इजाजत मिलनी मुमकिन नहीं लगती। मेरी सलाह है कि दूसरी दो वहनें वारी-वारी से माताजी के पास रहें, जवतक कि वच्ची खतरे से वाहर नहीं हो जाती।"

वापू कह रहे थे, "तू पेरोल की अर्जी देकर चली जा।" मैंने कहा, "उससे क्या फायदा? महीने-डेढ़ महीने में वेवी वड़ी और समझदार तो हो नहीं जावेगी। फिर मेरे साथ हिल जावेगी तो मेरे यहां आने के समय उसे और भी कष्ट होगा। माताजी को भी दुवारा सदमा होगा।"

तार कल जावेगा, पीछे पत्र लिखना होगा। वापू ने कल शाम सरकार को भेजने के लिए एक पत्र तैयार किया था। उसमें मुझे तार देर से मिलने के बारे में शिकायत थी। कहा गया था कि उनके साथ रहनेवालों को कैदियों के साधारण हकों से भी वंचित रखा जाता है, यह ठीक नहीं। मिसाल के तौर पर डॉ० गिल्डर की वीमार पत्नी अथवा उनकी लड़की उनसे मिलने नहीं आ सकतीं। ऐसे ही बा के और मनु के बारे में लिखा था। शाम को चार वजे वह पत्र गया। सामान्यतः यहां की डाक रजिस्ट्री से जाती है, मगर रजिस्ट्री का समय वीत गया था, इसलिए बापू के कहने पर पत्र विना रजिस्ट्री के ही गया। कल उसकी नकल रजिस्ट्री द्वारा भेजी जावेगी। बाद को प्रार्थना के समय बापू डॉ० गिल्डर से मजाक कर रहे थे, "डॉक्टर, मुलाकातों के लिए तैयार रहना।"

१७ नवंबर '४३

आज दोपहर को वा के नाम छगनलालभाई का पत्र आया। 'शकुंतला का ऑपरेशन करना पड़ा। अव चिंता का कोई कारण नहीं है।' हां, अव चिंता काहे की! अव तो शकुंतला भगवान की गोद में सुरक्षित है। पीछे पत्र में लिखा था कि उन्होंने वा के पत्र से समझा था कि मनु और सुशीला को सरकार ने छोड़ दिया है, मगर वे दोनों अपनी खुशी से वा और बापू की सेवा कर रही हैं। वा को यह खटका। उन्होंने वापू से

जाकर तार तैयार कराया कि यह बात गलत है। सिर्फ मनु को ही छोड़ने की बात थी, सुशीला को नहीं। मैंने समझाया कि तार की क्या आवश्यकता है, मगर वे नहीं मानीं। उन्हें लगा कि माताजी को ऐसा अनुभव नहीं होना चाहिए कि सुशीला छूट सकती थी, तो भी माताजी की मदद के लिए नहीं गई।

सवेरे बहुत धुंध थी। सामने का दरवाजा भी नहीं दिखाई देता था।

१९ नवंबर '४३

दिन बहुत खराब गया। गीताजी में रोज पढ़ती हूं कि मृत्यु का स्वरूप क्या है, मगर जब उस ज्ञान पर अमल करने का अवसर आता है तब असफल सिद्ध होती हूं। बीते वर्ष में महीनों तक महादेवभाई की मूर्त्ति आंखों के सामने नाचती रहती थी, इस वर्ष शकुंतला की है। प्रार्थना के लिए आंखें बंद करती हूं, पर शकुंतला सामने आ खड़ी होती है—वही मधुर मुस्कान, वही हँसता हुआ चेहरा। रात को सोने के लिए आंखें बन्द करती हूं, तब फिर वही हाल होता है। मेरे जैसे, जिन्हें ईश्वर ने इतना सब दिया है, असंतुष्ट रहते हैं, मगर वह लड़की हमेशा संतुष्ट थी। निराशा-जैसी चीज उसके पास थी ही नहीं। वह चली गई और हम यातना भुगतने को रह गए।

सरकार पर गुस्सा आता है, जिसने हमें बंद करके इस तरह प्रियजनों का वियोग दिखाया—जब तक तन में प्राण हैं, मैं सरकार से लड़ती ही रहूंगी। वह खत्म होगी या हम!

२० नवंबर '४३

महादेवभाई की समाधि पर प्रार्थना करते समय उनकी मूर्त्ति के साथ-साथ शकुंतला की मूर्त्ति भी रहती है।

२१ नवंबर '४३

मीराबहन को थोड़ा-सा बुखार है। जुकाम अच्छा हो जाने पर भी अभी तक उनका गला खराब है। हाथ में भी बहुत दर्द होता है। मृत्यु की खबर ने भी उनपर असर किया है।

२२-२३ नवंबर '४३

दो दिन तक डायरी नहीं लिखी। कुछ करने को मन नहीं होता। बापू कल मुझसे कह रहे थे, "मुझे नहीं मालूम था कि तुझमें इतना राग है।" मैंने कहा, "मैंने कभी किसी पर ऐसा असर नहीं डाला कि मुझमें वैराग्य है।" बापू कहने लगे, "वैराग्य भले न हो, पर उसमें और राग में फर्क है।" जो भी हो, मैं शकुंतला को भूल नहीं सकती।

लक्ष्मी भाभी ने बा को पत्र भेजा है। शकुंतला की मृत्यु का भी थोड़ा हवाला था—'बहुत दुःख और वेदना उसने सहन की; मगर मृत्यु के एक घंटा पहले तक सबको पहचानती थी। शव को नहला-धुलाकर और लाल चुनरी ओढ़ा कर लाये तो नई दुलहन-सी लगती थी।' वह नई दुलहन भगवान की थी, उसी के पास चली गई।

लक्ष्मी भाभी का एक तार भी आया है। उससे 'बेबी अच्छी है' यह जानकर संतोष हुआ। ईश्वर उसे दीर्घायु करे!

२४ नवंबर '४३

'कांग्रेस की जिम्मेदारी' पैंफ्लेट के संबंध में बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया। कोरा जवाब था—'आपने आठ अगस्तवाले प्रस्ताव के बारे में मत नहीं बदला। कांग्रेस कार्यकारिणी ने भी अपना रुख नहीं बदला। सो आपको मिलने देने में कोई फायदा नहीं।' बंबई सरकार को बापू ने जो पत्र लिखा था, उसका भी जवाब आया कि आगे से तार जल्दी मिला करेंगे। डॉ० गिल्डर की मुलाकात के बारे में उनकी लड़की ने भी लिखा है। उसी सिलसिले में बापू का पत्र दिल्ली भेजा गया है।

२५ नवंबर '४३

आज मीराबहन की तबीयत थोड़ी अच्छी रही, बुखार ९९.४ से ऊपर नहीं गया। सारी दोपहरी उनकी सेवा में गई। एनीमा दिया और स्पंज भी किया।

२६ नवंबर '४३

प्रकाश का पत्र आया है। उसे भी मृत्यु का ही तार मिला था। वेचारी तुरंत आई। माताजी को बीस-बीस दस्त आते थे, तीन दिन के इलाज से कुछ फायदा हुआ। वेवी को अस्पताल से लाई। उसे हरे दस्त आ रहे थे, मुंह में दाने भी थे; पर अब अच्छी है।

२८ नवंबर '४३

सोचती हूं कि मृत्यु से इतना क्या घवराना, जब कि सभी को आगे-पीछे एक-न-एक दिन जाना ही है! मगर यह विचार तो पीछा ही नहीं छोड़ता कि शकुंतला अब कभी नहीं मिलेगी।

वेवी का विचार आता था। भंडारी आए तो मैंने पूछा, "मेरे भाई ने मुझे तार किया था कि वे वेवी को मेरे पास रखने के लिए अर्जी दे रहे हैं। उसका क्या हुआ?" उन्होंने बताया, "अर्जी मेरे पास आई थी। सरकार को भेजी है।" मालूम नहीं, सरकार इजाजत देगी भी या नहीं।

२९ नवंबर '४३

आज बापू का मौन है। डॉ० गिल्डर को आज मुलाकात का अवसर मिलेगा, भंडारी कल कह गए थे। डॉ० साहब जल्दी तैयार हुए, मगर गाड़ी करीब साढ़े बारह बजे आई। दो सिपाही साथ गए। साढ़े तीन वजे डॉ० साहब वापस आये। अभी एक मुलाकात मिली है, दूसरी मुलाकातों की वात चल रही है। दो हफ्ते में पता चलेगा। डॉ० गिल्डर बहुत खुश हैं।

बापू ने मोहनलाल के पत्र-तार आदि दोपहर को मांगे। रात के समय सरकार को भेजने के लिए एक पत्र तैयार किया। वेवी के विषय में सरकार को मोहनलाल ने लिखा है। सरकार स्वीकार करे तो अच्छा है, नहीं तो मुझे पेरोल पर छोड़ दे। हां, इससे कुछ दिक्कतें अवश्य बढ़ जायंगी। बापू और बा को कष्ट होगा, वे कष्ट सहन कर लेंगे। मुझे लगता है, वापू एक व्यक्ति के वारे में इन लोगों को क्यों लिखें? उनके पास बहुत बड़े काम पड़े हैं, मगर बापू ने लिखा ही। वे छोटी चीजों से ही बड़ी चीजों पर आते हैं।

: ६१ :

बा के बारे में चिंता

बा की तबीयत परसों से अच्छी नहीं है। कल स्नान-घर में उन्हें इतनी कमजोरी लगने लगी कि उन्होंने मुझे आवाज दी। मैं जाकर उन्हें बाहर लाई। अपने-आप उठने की उन्हें हिम्मत न होती थी।

३० नवंबर '४३

कल रात बापू ने सरकार को लिखा था कि वह मोहनलाल की अर्जी के अनुसार देवी को न भेज सके तो सुशीला को पेरोल पर छोड़े। मुझे लगा कि बापू तो पेरोल के खिलाफ हैं, फिर मेरे लिए क्यों लिखें? बापू इस बात पर विचार कर रहे हैं। इस संबंध में मैंने भाई से भी बात की।

आज इस पत्र ने ही दिन का सारा समय ले लिया।

बा का दम खूब फूल रहा था। रात को ऑक्सीजन मंगाकर रखी; क्योंकि बा की हालत किसी भी समय बिगड़ सकती है।

१ दिसंबर '४३

मैंने और डॉ० गिल्डर ने सरकार को पत्र लिखा कि बा की हालत अच्छी नहीं है। उन्हें नियमित मुलाकात मिलनी चाहिए। वह दवा-रूप काम करेगी। कच्ची नकल मैंने तैयार की थी, जिसे रात में टाइप कर लिया।

२ दिसंबर '४३

मालिश के समय बापू को उस पत्र के बारे में बताया, जो कल बा के संबंध में तैयार किया था। डॉ० गिल्डर से उन्होंने कहा, "अगर यह पत्र भेजना डॉक्टरों को अपना धर्म लगे तो भेजें।" डॉ० गिल्डर को लगता था कि अभी तो बापू ने उनके और मेरे बारे में भी सरकार को लिखा है। एक और मांग करना शायद ठीक न हो। मुझे लगता था कि भेजना हो तो जल्दी ही भेजना चाहिए; क्योंकि आज बा की तबीयत इतनी बिगड़ गई है और दो हफ्ते बाद अच्छी भी हो सकती है। दूसरी

बार विगड़े तबतक की राह देखनी चाहिए। अगर मुलाकात बा के लिए दवारूप है तो उसमें देर क्यों की जाय! बा हर बार खतरे से बच ही जायंगी, यह मानने का कोई कारण नहीं। आखिर डॉ० गिल्डर कहने लगे, "हम डॉ० शाह से सब हाल कह देंगे। वे अपने-आप लिखें तो ज्यादा अच्छा होगा।" डॉ० शाह आज आये नहीं सो कुछ कर नहीं सके।

बा की तबीयत कुछ ज्यादा ढीली है। उनमें स्नान करने की शक्ति नहीं है, इसलिए उन्होंने स्पंज ही किया।

बापू बहुत विचार में पड़े दीखते हैं, बा की चिंता में हैं।

३ दिसंबर '४३

आज बा की तबीयत कुछ अच्छी है। डॉ० शाह आकर कहने लगे कि उन्होंने बा को छोड़ने के लिए लिखा है। डॉ० गिल्डर ने बताया कि वे छूटना तो चाहती नहीं हैं। मुलाकात की सुविधा के लिए लिखना चाहिए था कि जिससे बा का मन कुछ शांत हो। शायद डॉ० शाह इस बारे में लिखेंगे। मीराबहन के बारे में भी डॉ० शाह ने लिखा है कि या तो उन्हें अस्पताल में भेजा जाय या उन्हें छोड़ दिया जाय। यहां उनका इलाज नहीं हो सकता।

मीराबहन बापू से कुछ सवाल पूछना चाहती हैं ताकि एकाएक छूटने का हुक्म आ जावे तो उन्हें कठिनाई न आवे।

४ दिसंबर '४३

आज शनिवार है, महादेवभाई की मृत्यु का दिन। आजकल फूल नहीं हैं। सिपाही ने थोड़े फूल इकट्ठे किये, उन्हीं की सहायता से समाधि की सजावट की।

कल रात में बा की तबीयत बहुत खराब थी। दम के कारण बहुत कम सो सकीं। हम लोग भी कम सो पाए। सवेरे दातुन वगैरा उन्हें खाट पर ही कराई।

मैंने शाम को बाइबिल के समय भी संस्कृत पढ़ना शुरू किया है ताकि अगर पेरोल पर जाना हो तो संस्कृत की दोनों किताबें घर से ही पक्की कर लाऊं, परन्तु शंका है कि सरकार जाने की इजाजत दे ही देगी।

तीन दिन पहले हम शाम को खेलकर लौट रहे थे तो सीढ़ी के पास कैना (अकीक) के फूलों में एक छोटा-सा पक्षी बैठा फड़फड़ा रहा था। भाई ने पकड़ लिया। कहने लगे कि मीराबहन को दिखायेंगे। ऊपर लाये। मीराबहन ने कहा, "यह शकरखोरा का बच्चा है। इसे दो-चार दिन रखें और जब इसमें उड़ने की शक्ति आ जाय तब जाने दें।" बापू की छोटी-सी रद्दी की टोकरी थी। उसमें पत्ते बिछाकर, बीच में एक दातुन आरपार रखी। उस पर उसे बिठाया। टोकरी के मुंह पर वे कपड़ा बांध देती हैं कि कहीं बिल्ली न खा जावे और हवा भी अंदर जाती रहे। उसे शहद खिलाती हैं, पानी पिलाती हैं। बापू के पास जब बाइबिल पढ़ने आती हैं तो उसे साथ लाती हैं। दरख्त की एक टहनी वहां रख देती हैं और जंगल का-सा वातावरण पक्षी के लिए बन जाता है। फूल लेने जाती हैं तो उसे साथ ले जाती हैं। वह धूप में उछलता-कूदता रहता है। पहले दिन मीराबहन को डर लगा था कि वह बीमार-सा लगता है। मगर धूप में खूब उछलने लगा, इसलिए उनको लगता है कि एक-दो दिन में वह उड़ जावेगा।

बा की तबीयत अच्छी नहीं। दोपहर को स्पंज किया। बाद में उन्होंने थोड़ी नींद ली। आज वह इतना घबरा रही थीं कि एक बार कहने लगीं, "बस, मैं अब चार-पांच घंटे की मेहमान और हूं।" मैंने कहलाया, "नहीं बा, अभी तो चार-पांच वर्ष हैं।"

शाम को वे कुछ स्वस्थ हुईं। सुबह कटेली साहब पूछ गए थे कि बा किस-किस से मिलना चाहती हैं। बापू ने लंबी सूची दी और कहा कि याद आवेंगे तो और नाम बतावेंगे।

रात में नींद कम आई। बापू भी कम सोये। बापू का रक्तचाप ज्यादा है।

५ दिसंबर '४३

भंडारी और शाह आये। खबर मिली कि सरकार ने देवदास और रामदासभाई को आने के लिए तार दिया है। रामदासभाई ने टेलीफोन किया कि नीमू भाभी आज दोपहर तक पहुंचेंगी। वे

खुद और बच्चे नहीं आ सके। वे लोग सरकार के तार से बहुत घबरा गए होंगे।

बा की तबीयत आज अच्छी है। रात में नींद अच्छी आई। मुलाकात की आशा से उनकी तबीयत में काफी सुधार हुआ है। नीमू भाभी तो शाम को सवा छः बजे आईं। एक घंटे की मुलाकात थी। खाली बा और बापू को वहां रहने की इजाजत थी। श्री कटेली सारा समय हाजिर रहे।

पता लगा है कि देवदासभाई कल आ रहे हैं।

कल रात में बड़ी सर्दी थी। सुबह मीराबहन ने देखा कि पक्षी रात की सर्दी में खत्म हो गया था। बहुत बुरा लगा। मीराबहन ने गड्ढा खोदकर उसे दबाया। वहां एक पत्थर स्मृति के तौर पर रखा और उस पर कुछ लिखा भी।

कल से शाम को कटेली साहब ने खेलना शुरू किया है। अच्छा लगता है।

कल मीराबहन ने बापू से कुछ प्रश्न पूछे थे। आखिरी प्रश्न समाजवाद पर था। बापू कहने लगे, "इस प्रयोग की ओर आदमी उदासीनता नहीं रख सकता और रखनी भी नहीं चाहिए।

"मुझे इसमें बहुत रस आ रहा है। चीन और रूस का इतिहास पढ़ा। इसमें शक नहीं कि ये लोग जनता की सेवा के लिए ही सब कुछ कर रहे हैं; मगर उनका पाया हिंसा में है। हिंसा के बिना वे रह नहीं सकते और हिंसा हमेशा टिक नहीं सकती। इसलिए यह प्रयोग भी अंत में निष्फल होगा, ऐसा मुझे लगता है। आज तक हिंसा ऊपर के वर्ग वालों के हाथ में थी, अब वह जनता के हाथ में आई है। यह कोई नहीं कह सकता कि इसका परिणाम क्या होगा।"

मीराबहन ने चीन की बात चलाई। कहने लगीं, "हिंसा के प्रश्न को छोड़कर अगर देखा जाय तो समाजवादियों में और आपके शिक्षण में ज्यादा अंतर नहीं है।" बापू ने कहा, "मशीन का प्रचार भी तो है।" मीराबहन बोलीं, "मगर वह इतना बुरा नहीं। उसे आसानी से फेंका

जा सकता है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?" बापू कहने लगे, "मुझे तो उससे उलटा लगता है। उद्योग का, मशीन का प्रचार हिंसा की जड़ है और उसे निकालना आसान नहीं। उसे निकालना शायद हिंसा को निकालने से भी ज्यादा कठिन है।"

मीरावहन ने कहा, "मगर वे लोग जल्दी ही समझ जावेंगे कि इस पथ पर चलना मूर्खता है। रूस की आवादी कम है, सो वे तो सदियों अपनी मूर्खता समझे विना इस रास्ते जा सकते हैं, मगर चीन की आवादी ज्यादा है। वे लोग जल्दी ही समझ जावेंगे कि उद्योग वढ़ाने में, मिलें वढ़ाने में, उनकी बर्वादी है।"

६ दिसंबर '४३

आज बापू का मौन है। बापू ने बा की मुलाकातों के बारे में एक पत्र सरकार को लिखा, मगर बाद में उसे न भेजने का निश्चय हुआ। डॉ० शाह आये। कहने लगे, "श्रीमती रामदास को आने की इजाजत फिर मिलनी चाहिए।" वे भंडारी से भी यही कह कर आए होंगे। रात को खबर मिली कि उन्हें आने की इजाजत मिलेगी।

दोपहर को अखबार में देखा कि देवदासभाई आज दोपहर पूना पहुंच रहे हैं। शाम को हम लोग खाने की तैयारी में थे कि पता चला कि देवदासभाई आये हैं। बा ने तो कह दिया कि कल आवें, आज बापू का मौन है। मगर बापू ने अभी आने को कहा। कारण पूछा तो बापू ने लिखा, "अगर बा को रात में कुछ हो जावे तो?" मौन छोड़ने के बाद रात को समझाने लगे, "महादेव ने जाते समय क्या एक घंटे का भी नोटिस दिया था? वह तो बीमार नहीं था, मगर बा तो, हम सब जानते हैं, किसी भी दिन बगैर नोटिस दिये जा सकती है। कहीं कुछ हो जावे तो हमेशा के लिए मन में अफसोस रह जावे। देवदास तो वा से मिलने आ रहा है, मुझसे नहीं। मेरे मौन के कारण उसे रोकना ठीक न था।"

देवदासभाई आये। उन्होंने वापू को शकुंतला का सब हाल सुनाया। बाद में माताजी, मोहनलाल और बेवी के समाचार वताये। बेबी अच्छी है, सब लोग हिम्मत रख रहे हैं।

देवदासभाई अभी बैठे ही थे कि इतने में बा की छाती में दर्द अधिक होने लगा। बापू ने देवदासभाई को भेज दिया। बाद में हम लोग बा की सेवा-शुश्रूषा में लगे रहे।

बा की तबीयत कुछ अच्छी दीख पड़ी, इसलिए हम लोग घूमने आये और प्रार्थना के बाद काता। प्रार्थना भीतर हुई; क्योंकि कल से बा ने अंदर सोना शुरू किया है। बा के पास रात के १२ बजे तक बैठी और उन्हें सुलाकर सोई।

७ दिसंबर '४३

आज से बापू ने सुबह घूमने जाने का समय आठ बजे का कर दिया है; क्योंकि सुबह सर्दी बहुत पड़ती है। धूप में घूमना अच्छा लगता है। शायद कल से सवा आठ पर ही निकलें।

डॉ० गिल्डर वगैरा ने सुबह का नाश्ता छोड़ दिया है, साढ़े दस-ग्यारह बजे खाना खाते हैं। रसोईघर का सिपाही बीमार है, इसलिए कल से मैं ही रोटी बनाती हूं। एक दूसरे कैदी को भी सिखाया है, शायद वह अब बना लेगा।

नीमू भाभी साढ़े तीन बजे आईं और घंटे भर बाद गईं। बाद में देवदासभाई आये। बापू को यह सब समाचार सुनाते रहे। माताजी ने सरकार को अर्जी दी थी कि वह या तो मुझे छोड़े या उन्हें मेरे पास रखे। यह न हो सके तो महीने में कम-से-कम एक मुलाकात की व्यवस्था करे। पंद्रह दिन बाद जवाब आया कि इन बातों में से एक भी नहीं हो सकती।

मैंने जब यह सुना तो बड़ा अफसोस हुआ। बापू को भी अच्छा नहीं लगा। उनका मत है कि मुझे छुड़वाने की कोशिश करना फिजूल है। सत्याग्रही को यह शोभा नहीं देता। जो करने या मरने की बात कहकर आते हैं, उन्हें तो सरकार छोड़े तो भी वे फिर जेल जाने की तैयारी किये रहते हैं।

बेबी के विषय में देवदासभाई ने बापू को बताया कि उससे तो क्या माताजी और क्या मोहन—सबका मन लगा हुआ है, इसलिए उसको

वहां से हटाने की कोशिश ही नहीं करनी चाहिए। इस पर बापू विचार करने लगे। सोचने लगे कि जो खत लिखा था, वह वापस ले लेना चाहिए या नहीं। पेरोल वेवी के लिए मांगी थी, उसके लिए आवश्यकता न हो तो मेरी या मेरी माताजी की खुशी के कारण पेरोल मांगना ठीक नहीं। मुझे भी लगा कि बापू का जो पत्र गया है, उससे किसी तरह का गोलमाल नहीं होना चाहिए। माताजी की खातिर पेरोल मांगे तो वह एक स्वतंत्र विषय होगा, वेवी के साथ वह विषय मिलाना नहीं चाहिए। घूमते समय यही चर्चा चली।

देवदासभाई के जाने के बाद बापू को दूध वगैरा दिया, पीछे घूमने गए। प्रार्थना के बाद काता।

८ दिसंबर '४३

सब सोच-विचार कर बापू ने वेवी के यहां आने या मेरे पेरोल पर छोड़े जाने के बारे में अपनी मांग को वापस न लेने का निश्चय किया। उन्होंने देवदासभाई के मान जाने पर ही वह कार्य करने का विचार किया था, मगर देवदासभाई ने यह पसंद नहीं किया। उन्हें लगता था कि वेवी का क्या भरोसा है। फिर माताजी व मोहनलाल की बड़ी समस्या के कारण भी यह बात इष्ट थी। मैंने बापू से कहा कि उन्हें जो ठीक लगे वह करें, मगर बापू को लगा कि देवदास ने जो खबर दी है, उसका आश्रय लेकर कुछ भी करना हो तो उसकी सम्मति से ही करना चाहिए।

किशोरलालभाई की तबीयत जेल में बहुत खराब रहती है। वजन ७५ पौंड हो गया है। इस बारे में बात करते-करते बापू कहने लगे, "मैंने तो किशोरलाल को खोने की पूरी तैयारी कर ली है, मुझे यह सुन कर जरा भी आश्चर्य न होगा कि किशोरलाल महादेव की तरह नागपुर जेल में ही चल बसा। अहिंसक लड़ाई दूसरी तरह चल नहीं सकती।"

इस परिस्थिति में भी सत्याग्रहियों को जेल से छुड़ाने के लिए आंदोलन की बात करते हुए बापू कहने लगे, "व्यक्तियों के लिए ऐसा करना ठीक

नहीं है, खासकर सरकारी अमलदारों से मिलकर उनसे ऐसी मांग करना तो एकदम अयोग्य है। जो आदमी इन लोगों के पास कुछ भी मांगने जाता है, वह कुछ खोकर आता है। अपना तो खोता ही है, मगर हिंदुस्तान का भी कुछ खोकर आता है। खुला सार्वजनिक आंदोलन लोग कर सकते हैं, मगर वह तो ऐसे सब के लिए होगा, एक अकेले व्यक्ति के लिए नहीं।"

बा की तबीयत अच्छी नहीं है। दिन में तो कुछ ठीक रही, मगर शाम को ज्यादा बिगड़ी। पेट में तकलीफ थी। भाई बाहर से उन्हें उठाकर अंदर लाये। शाम को हम लोग घूमने गए थे, उस समय भी बा को कुछ घबराहट हुई थी। मुझे बुलवाया था, तभी मैंने निश्चय किया था कि जबतक बा कुछ अच्छी न हों, उन्हें एक मिनट भी अकेले नहीं छोड़ूंगी।

बापू का रक्तचाप कभी-कभी ज्यादा रहता है, सामान्यतः सुबह १९२/१०४। उन्हें बा की काफी चिंता रहती है। कहते थे, "मुझे आशा थी कि बा को साथ लेकर बाहर जाऊंगा; मगर अब वह आशा छूट गई है।"

बा को 'स्ट्रोफैंथस' नाम की दवा देना बंद कर दिया है। आज नीमू भाभी और देवदासभाई बा से मिलने आये। सबका स्वागत करने और विदा करने का काम बापू को करना पड़ता है; क्योंकि दूसरों को तो उन्हें मिलने की इजाजत नहीं है।

९ दिसंबर '४३

रामीबहन, मनु मशरूवाला, बा के भाई और देवदासभाई बा से मिलने आये। दोनों बहनें साथ आईं, फिर मामा और देवदासभाई आये। सुना है कि जब बापू ने मनु की पीठ जोर से ठोंकी तब रामीबहन की बच्ची इतना डर गई कि सारा समय रोती रही। मनु की बच्ची मजे में रही। मनु ने बा को 'कहं के पथिक, कहं कीन्ह है गमनवां' गाकर सुनाया और उसकी बच्ची ने नाचकर बताया। दूर से मीराबहन गाना सुन रही थीं। बोलीं, "असल गाना ग्रामोफोनी गाने से कितना अच्छा लगता है।"

बा को आज 'डेरीफिलिन' के दस बूंद दिये। उससे छाती का दर्द बैठा। बारह-एक बजे के बाद उनका दिन अच्छा गया और रात को नींद भी अच्छी आई।

१० दिसंबर '४३

बा के साथ देवदासभाई की आखिरी मुलाकात है। अगर सरकार ने इजाजत दी तो लक्ष्मी भाभी और बच्चों को लेकर देवदासभाई फिर आवेंगे।

बा की तबीयत दिन भर अच्छी रही। रात में बहुत अच्छी नींद आई। खांसी के मिक्सचर के अलावा उन्हें कोई दवा नहीं दी। ऐसा सुधार चालू रहेगा तो बा बहुत जल्दी अच्छी हो जायंगी। बापू को इसमें शक है। वे बहुत कम आशा करते हैं।

शाम को भंडारी आये, कल से छुट्टी पर जा रहे हैं। वे देवदास-भाई से बातें करके चले गए। श्री कटेली मुलाकात की रखवाली करने में लगे थे, इसलिए भंडारी को लेने या विदा करने नहीं गए।

११ दिसंबर '४३

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। उनकी समाधि पर प्रार्थना करते समय शकुंतला की याद हो आती है।

रोज डाक की राह देखा करती हूं। न घर से ही कोई खबर आती है, न बापू के पत्र का सरकारी जवाब ही आता है।

बा की तबीयत दिन भर अच्छी रही।

पेट के ऑपरेशन के बाद जो पलंग इस्तेमाल किया जाता है, वह आ गया है और कल से बा के काम में लाया जायगा।

मनु की तबीयत अच्छी नहीं और भाई की भी शाम को बिगड़ी, इसलिए बापू और बा की मालिश मैंने ही की। सोने को जाते-जाते ग्यारह बज गए।

१२ दिसंबर '४३

सुबह के समय बा अच्छी थीं; पर दोपहर में ढीली पड़ गईं। शाम को फिर अच्छी दिखती थीं।

सुबह कर्नल भंडारी की जगह कर्नल अडवानी आये। महादेवभाई की मृत्यु के दिन उन्हें देखा था—आज फिर देखा।

आज मैंने सर फीरोजशाह मेहता की जीवनी पढ़ डाली। डॉक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने का इरादा फिर किया है।

१३ दिसंबर '४३

भाई की तबीयत कल रात से ढीली थी, आज दोपहर उन्हें बुखार आ गया और १०३.२ डिगरी तक पहुंच गया। शाम को उन्होंने कुनीन लेना आरंभ किया है।

बापू का मौन है। मेरे विषय में जो पत्र उन्होंने सरकार को लिखा था, उसका सरकारी उत्तर दोपहर को आया। सरकार ने मुझे पेरोल पर छोड़ने की या बेबी को यहां रखने की, दोनों प्रार्थनाओं को नामंजूर कर दिया है।

बापू ने लिखा, "मुझे तू लड़ने दे तो मैं पेट भर कर लड़ूं।" परंतु मुझे यह बात ठीक नहीं लगी। बापू लड़ाई में उतरें तो कहां जाकर अटकें, इसका पता नहीं चल सकता।

बा अच्छी हैं। रात को खूब सोईं।

१४ दिसंबर '४३

बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर लिखा और भाई ने उसे टाइप किया। पत्र का भाव यह है कि सरकार की कार्रवाई अनुचित हुई है।

भाई को ९९.६ डिगरी बुखार है, मगर काम तो वे करते ही रहे।

कल मैंने अपना ऊनी शॉल उधेड़ डाला, बेबी के लिए उसमें की ऊन से कपड़े बनाकर भेजूंगी। यहां नई ऊन तो कहां से मिल सकती है?

कल से हम लोगों ने बेडमिंटन खेलना आरंभ किया है। रात में बा कम सोईं।

१५ दिसंबर '४३

भाई को आज भी ९९.६ डिगरी बुखार था। शाम के वक्त वे खेलना चाहते थे, मगर डॉ० गिल्डर ने मना कर दिया। तब बापू के साथ घूमने निकले।

कल से डॉ० गिल्डर ने बांह के अंदर की ओर की नाड़ी के लकवे पर (पैरेलेसिस ऑव रेडियल नर्व) पर लेख लिखवाना शुरू किया है।

डॉ० शाह आज कह रहे थे कि बा के लिए किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो बता दें। मैंने कुछ दवाएं लिख कर दीं और एक पहियेदार कुर्सी के लिए भी कहा। बाहर धूप में से बा को गुसलखाने ले जाने के लिए कुर्सी पर उठाकर लाना पड़ता है। तीन आदमी—मैं, भाई और मनु उठाते हैं। बा को यह अच्छा नहीं लगता। पहियेदार कुर्सी में एक ही आदमी ला सकेगा।

आज मीराबहन बापू से कहने लगीं कि वे 'जंगली जानवर और अहिंसा' पर प्रकाश डालें। बापू बोले, "मेरी अहिंसा मनुष्य तक ही जाती है। जंगली जानवरों को खोज-खोज कर मारने की सलाह नहीं दूंगा, मगर शेर या चीता कहीं हमला करे तो उसे वहां के लोग मारें। उसके लिए तालीम लें तो मैं रोकूंगा नहीं। जितनी जल्दी हो सके, कम-से-कम तकलीफ देकर उसे मारना चाहिए।"

सवाल उठा कि यह तालीम सभी लें या एक व्यक्ति? और एक व्यक्ति जो चुना जाय, वह शारीरिक बल के आधार पर या अन्य गुणों के कारण? बापू ने कहा, "अगर एक को ही चुनना हो तो वह सार्वजनिक मत से चुना जाना चाहिए, शारीरिक बल के कारण नहीं, मगर लोगों का वह कितना विश्वासपात्र है, इस माप से। मुझे लगता है कि यह तालीम गांव के सब लोग लें तो अच्छा है, नहीं तो एक आदमी दूसरों पर बाद में सत्ता जमा सकता है। वह ऐसा न भी करे तो भी लोगों के मन में ऐसा भाव पैदा तो होगा कि वह तालीमयाफ्ता आदमी उनसे ऊंचा स्थान रखता है। यह योग्य नहीं है।"

१६ दिसंबर '४३

बा आज रात को देर में सोईं। मैं बारह बजे तक उनके पास थी। मनु मेरे जाने के वाद बा के ही पास सो गई। भाई के सिर में दर्द था, पर बाद में अच्छा हो गया और वे रात के बारह बजे तक पढ़ते रहे।

१७ दिसंबर '४३

बा के लिए पहियेदार कुर्सी आ गई है। शाम को बा को उस पर बिठाकर घुमाया। उन्हें बहुत अच्छा लगा।

बा की तबीयत कुछ ठीक थी। शाम को एकाएक धड़कन का दौरा हो गया, लेकिन गर्दन की एक विशेष नस को दबाने से चंद मिनटों में ही बंद हो गया। उसके बाद वे निर्बल हो गईं और दस बजे रात को सो गईं। अचानक दो बजे उन्हें बड़ी खांसी आई—करीब घंटे भर परेशान करती रही। पीछे चार बजे सो पाईं। शाम को क्वीनीडीन की गोली दी थी। ताकत के लिए 'ईस्टन सिरप' देती हूं; क्योंकि बा शक्ति की दवा मांगती हैं।

१८ दिसंबर '४३

दिन में बा ने करीब ५ घंटे की अच्छी नींद ली। शाम को डॉ० शाह और अडवानी उनसे मजाक करने लगे, "सरकार का हुक्म है कि रात में अच्छी तरह सोना।" रात को खबर मिली कि देवदासभाई कल तीन-साढ़े-तीन के बीच आवेंगे। आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है, परंतु फूल बहुत कम होने के कारण सजावट न हो सकी।

१९ दिसंबर '४३

कल रात में बा एक बजे के करीब सो पाईं। मैं उनके पास ढाई-तीन बजे तक बैठी रही। बाद में गई। परिणाम-स्वरूप सुबह की प्रार्थना में आज भाग नहीं ले सकी।

भाई प्रार्थना के बाद दिन भर खाली समय में मोहन और तारा[1] के लिए तस्वीरों का एक अल्बम तैयार करते रहे। वे लोग लगभग साढ़े तीन बजे

---

१. देवदासभाई के बच्चे।

आये। अल्वम की किताव साढ़े चार वजे तैयार हुई। मैंने भी दो एक घंटे उसमें दिये। मनु ने थोड़ा समय दिया। भाई ने तैयार करके बापू को दिखाई, वापू ने उसे पसंद किया।

देवदासभाई के बच्चों के स्वास्थ्य को देखकर वापू को असंतोष हुआ। शाम को घूमते समय कहने लगे, "मैं अपने-आपको आदर्श पिता मानता हूं। मेरे किसी भी बच्चे का शरीर ऐसा सूखा न था। सभी वालक हमेशा स्वस्थ रहे हैं। ये बच्चे तो दुष्काल में से आये लगते हैं।"

बा की तबीयत अच्छी रही। अडवानी सुवह आये तो कहते थे कि देवदासभाई को एक ही मुलाकात मिलेगी; परंतु बंबई सरकार द्वारा उन्हें सूचित किया गया था कि मुलाकातें अधिक मिलेंगी।

२० दिसंबर '४३

आज श्री कटेली सरकार की ओर से आकर पूछने लगे कि बा को हृदय का रोग कव से है। मैंने वताया कि खांसी तो वरसों की है और उससे हृदय का कमजोर हो जाना भी स्वाभाविक है। मगर हृदय में अब का-सा दर्द पहले नहीं था, दर्द तो पिछले साल सितंबर से शुरू हुआ है। कटेली साहब ने डॉ० गिल्डर से भी यही वात पूछी। गिल्डर को भी हृदय में कभी कुछ मिला न था। बाद में बा को आनेवाले हृदय के दौरों की तारीख भी उन्होंने मुझसे मांगी।

कल रात में नींद न आने के कारण बा के कहने पर मैं उन्हें अपनी खाट पर ले गई। वहां भी उन्हें नींद नहीं आई। पास ही होने के कारण वापू भी नहीं सो सके। डेढ़ बजे उन्हें अंदर लाई। मैं दो वजे के बाद और बा तीन वजे के बाद सोईं।

दो वजे से मनु बा के पास बैठी और उनके पास ही सोई। पांच बजे उठी तब अपनी खाट पर गई। वे दोनों सुबह आठ बजे तक सोती रहीं।

आज भी दिन में देवदासभाई लक्ष्मीवहन और बच्चों समेत आये। वापू का मौन रहा।

२१ दिसंबर '४३

कल रात में बा को बहुत कम नींद आई, दमे का दौरा-सा था। कुछ

नाराज भी थीं, इसलिए किसी को पास भी नहीं बैठने दिया। रोज एक-दो वजे से आठ बजे तक सोती थीं, मगर आज तो सुवह ६ वजे से ही सोईं और आठ बजे उठ गईं। कुल मिलाकर मुश्किल से दो-तीन घंटे सोई होंगी। हम लोग भी नहीं सो पाए। देवदासभाई सपरिवार आज फिर आये। कल सुवह लक्ष्मीबहन और बच्चे दिल्ली चले जावेंगे।

डॉ० शाह से मैंने कहा कि बा के लिए वे नर्स भेजें। सरकार ने किसी औरत रिश्तेदार को बुला लेने की इजाजत दी है।

बा कनु को बुलाना चाहती हैं, प्रभावती का नाम भी दिया है। वे कहती हैं, "एक कनु आवे तो काफी है। मुझे और किसी की जरूरत नहीं है।"

२२ दिसंबर '४३

कल रात को मैंने बा के पास रात भर रहने का निश्चय किया था। बा को इससे संतोष रहेगा। बापू की खाट मीराबहन के कमरे के नजदीक ले गए। मेरी खाट बा ने दरवाजे के सामने रखवाई और मनु भी उनके नजदीक ही भीतर सोईं। मगर मैं तो बा के पास ही रही।

खांसी के डर से बा ने आज भी नींद की दवा मांगी। मैंने बारह वजे उन्हें एक गोली दी, ग्रामोफोन बजाकर सुनाया। बा एक बजे सो गईं; मगर सोते में आवाज बहुत करती थीं। आवाज सुनकर बापू डेढ़ वजे के करीब आये। भाई और डॉक्टर गिल्डर भी आये। डॉ० साहब हम तीनों को खड़ा देखकर डर-से गए; मगर मैंने बताया कि चिंता का कोई कारण नहीं है। बा शाम को कुर्सी पर बैठकर हम लोगों का खेलना देखने आईं और रात को कैरम भी देखा। दिन में उन्होंने कुछ नींद भी ली और कल से आज का दिन अच्छा लगा।

कल वेवल का भाषण पढ़ने के बाद मीराबहन ने यहां से जल्दी जा सकने की आशा छोड़ दी है।

२३ दिसंबर '४३

कल रात बा कैरम का खेल देखते-देखते अपनी सब बीमारी भूल गईं और सुबह आठ बजे तक सोती रहीं। दिन में कभी-कभी दर्द बताती थीं, मगर नींद अच्छी आई।

दोपहर मणिलालभाई का पत्र आया। पत्र के साथ ही उनके बच्चों के चित्र भी थे। बा चित्र देखकर खुश हो गईं।

बा ने दिन में दो बार एनीमा लिया। रात को वे आज फिर कैरम देखने गईं। दस बजे मैं उन्हें ले गई तो उन्होंने मुझे एक खेल खेलने को बिठा लिया। वे मानती हैं कि मीराबहन जीतें तो उनकी जीत है; क्योंकि वे खेल में उनकी साथिन रही हैं, मीराबहन अकेली खेलती हैं तो हार जाती हैं।

२४ दिसंबर '४३

बा सुबह सवा आठ बजे के बाद उठीं। मनु और मैं बारी-बारी से खेलने जाती हैं। एक बा के पास रहती है तो दूसरी खेलने जाती है।

मेरी और मनु की रीढ़ की हड्डी सीधी नहीं। उसके लिए बापू ने लोहे का एक डंडा लटकने के लिए लगवाया है, इसलिए उस पर थोड़ी देर लटकी; पर शरीर जरा-सा अकड़ गया।

दिन में बा को दर्द की कुछ शिकायत रही। शाम के समय कहने लगीं कि कैरम देखने नहीं आऊंगी, इसलिए डॉ० गिल्डर वगैरा बा की खाट के पास ही कैरम ले आए। बा ध्यान लगाकर दस बजे तक खेल देखती रहीं और अपना सब दर्द भूल गईं। बाद में मालिश करवा कर सोईं।

: ६२ :

अहिंसा में विचार-शुद्धि

२५ दिसंबर '४३

अडवानी और शाह शाम को आये और बोले कि सरकार ने कनु और प्रभावती को यहां भेजने से इंकार कर दिया है। किसी दूसरे को बुलाने के लिए वे कहने लगे। तब बापू ने कहा, "मैं सरकार को बार-बार 'न' कहने का मौका नहीं देना चाहता। मैं उसका दृष्टिबिंदु भी जानता हूं। उसे लगता है कि यह आदमी दगाबाज है, जापान के साथ

मिला है, इसलिए वह मेरी हरेक चीज को अविश्वास की नजर से देखती है।"

किसी ने पूछा कि उपवास के समय सरकार ने कनु वगैरा को क्यों आने दिया था? बापू बोले, "तब उसे आशा थी कि यह आदमी बचेगा नहीं, मगर अब वह देखती है कि इसके हाथों अभी तो उसे और तकलीफ मिलनी है। इसीलिए वह ऐसा कर रही है।"

सुबह बात करते-करते मैंने बापू से पूछा, "जितना प्रचार आपके और कांग्रेस के विरुद्ध इस समय हो रहा है और हुआ है, वैसा कभी पहले भी हुआ था? इतना प्रभाव विरोधी लोग कभी डाल सके हैं क्या?" बापू बोले, "आज तक भी वे कोई प्रभाव नहीं डाल पाए। मुझे तो निराशा होती नहीं है; क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे मन में जरा भी असत्य या हिंसा नहीं है, इसलिए इस लड़ाई का परिणाम बुरा हो नहीं सकता। अगर मैं अपने मन में असत्य या हिंसा पाऊं तो दूसरी बात है। तब तो मैं खुद ही कांप उठूंगा।"

मैंने पूछा, "जिन्ना के भाषण से स्पष्ट है कि वह चाहता है कि आप किसी भी प्रकार जेल से न निकलें। मुस्लिम लीग भी आपकी गैरहाजिरी में अपना प्रभाव जमा रही है। इसका क्या किया जाय?" बापू कहने लगे, "जिन्ना तो चाहता है कि जबतक कांग्रेस जेल में है, वह अपना सिक्का जमा ले, जितना कर सकता है करवा ले; मगर मैं नहीं मानता कि वह सचमुच प्रभाव डाल रहा है। हिंदुओं पर तो उसका कुछ भी असर नहीं। मुसलमानों पर भी मेरी दृष्टि से बहुत कम है; क्योंकि वह सत्य-पथ पर नहीं है।"

२६ दिसंबर '४३

आज बा का दिन बहुत अच्छा गया। स्नान के बाद दो ग्रेन एस्प्रीन दी थी, उससे दर्द वगैरा शांत रहा। दोपहर को देवदासभाई सपरिवार आये। बापू ने उन्हें जल्दी भेज दिया ताकि दूसरे भी आ सकें। उनके बाद जमनादासभाई आये। बाद में सामलदासभाई सपरिवार आये। उनके बाद रामदासभाई और कनु। सबको बापू ने जल्दी-जल्दी विदा किया। तो भी वे साढ़े छः के बाद ही घूमने निकल सके।

२७ दिसंबर '४३

आज दोपहर को देवदासभाई, रामदासभाई और कनु आये। कनु शायद वधवार को फिर मिलने आयेगा।

आज वा के लिए पागलखाने से डॉ॰ शाह ने एक आया भेजी। वेचारी हमारे साथ कैद हो गई है। अब घर नहीं जा सकेगी। घर में उसके तीन वच्चे हैं, वे नानी के पास रहेंगे।

२८ दिसंबर '४३

आज वा के पेट में कुछ गड़बड़ रही।

दोपहर को देवदासभाई सपरिवार आयें।

२४ तारीख के दिन वापू जव घूमकर आये थे तो मुझे वता रहे थे कि मीरावहन को उन्होंने समझाया कि 'अहिंसा में विचार-शुद्धि' अनिवार्य वुनियादी चीज है। मीरावहन ने उस दिन की वातों का सार लिख लिया था, जो इस प्रकार है: "अहिंसा में सवसे आवश्यक चीज है सही विचार-धारा। प्रश्न उठ सकता है कि सही विचार क्या है ? सही ध्यान और सही योजना वनाना ही सही विचार नहीं है, वह है मूल तत्त्वों की ठीक पहचान। मिसाल के तौर पर, 'ईश्वर है' यह सही विचार है; 'ईश्वर नहीं है'—यह गलत विचार है। 'मुझे ईमानदार होना चाहिए'—यह सही विचार है; 'वेईमानी भी कर सकता हूं' यह गलत विचार है। जव आदमी को सही विचार की आदत पड़ जाती है तो सही कार्य अपने-आप होता है, मानो कि परिस्थिति के कारण हम कार्य तो सही करते हैं, पर सही विचार की आदत नहीं। तव उस सही कार्य का उतना असर नहीं होगा और करनेवाले को सच्चे-सही कार्य का फल नहीं मिलेगा। सही विचार के विना अहिंसा में श्रद्धा या निष्ठा की जीवित शक्ति नहीं होगी और जिसे सही विचार की आदत नहीं, वह चाहे भी तो ऐन मौके पर उसका कार्य सही नहीं हो सकता।"

२९-३१ दिसंबर '४३

वा की तवीयत साधारण है, मगर नींद अच्छी ले लेती हैं। २९ को कनु, धीरू, मनु के पिताजी, उसकी वहन व कुछ और लोग आये। कनु ने वा को दो भजन सुनाये।

१-६ जनवरी '४४

इस हफ्ते में सामलदास गांधी, केशुभाई, राधावहन, संतोकवहन, कुंवरजीभाई और उनकी वड़ी लड़की---इतने लोग वा से मिलने आये। वापू और वा के सिवा मुलाकात में और कोई नहीं रहता। कुंवरजीभाई ने मुझे मुलाकात के समय वुलाया; मगर मुझे उनसे मिलने की इजाजत नहीं है।

बा को रात में अच्छी नींद नहीं आई थी। वे ढीली थीं। छः तारीख को देवदासभाई और कांति आये। देवदासभाई वेवी की तस्वीरें लाये। उन्होंने मुझको वुलवाया। मेरी इच्छा जाने की नहीं थी, पर जव मनु ने आकर कहा कि वापू, कटेली और देवदासभाई वुलाते हैं तो मैं गई।

रात को सरकार की तरफ से खबर मिली कि वापू तार के बाहर धूप में नहीं घूम सकते और कनु एक दिन छोड़कर आया करेगा।

७ जनवरी '४४

आज दोपहर को देवदासभाई, काशीवहन, वच्चू और प्रभुदासभाई की पत्नी अपनी दोनों लड़कियों के साथ आये। हम लोग भी थोड़ी देर के लिए वुलाये गए।

डॉ० गिल्डर को रात में वुखार आया था, इसलिए बापू और वा की मालिश मैंने की।

मनु की आंख दुखती है।

१५ जनवरी '४४

९ तारीख के दिन से बापू घूमने के समय मौन रहते हैं। वाकी समय में भी बा के काम के और मेरे व मन के साथ पढ़ने के समय को छोड़कर लगभग मौन ही रहते हैं। घर का वातावरण इसी कारण गंभीर बन गया है।

मीरावहन दो रोज से फिर बीमार हैं। जुकाम है, साथ ही थोड़ा वुखार भी है। वा की खुशी के लिए हम लोग उनके पास ही कैरम खेलते हैं।

बा ने कल कहा था, "संक्रांति है, इसलिए तिल की मिठाई बांटनी चाहिए।" कल तो बाजार से सामान आ नहीं सकता था, इसलिए आज

मंगाकर मिठाई बनाई। मूंगफली और दो-दो लड्डू सब सिपाहियों को और कैदियों को बांटे। हम लोगों ने भी थोड़ा खाया।

प्रभावतीबहन ११ तारीख की शाम को आ गईं। बा की सेवा में वह खूब हाथ बटाती हैं।

रात को बा सो नहीं पातीं, इसलिए पास में किसी-न-कसी को बैठना ही पड़ता है।

१७ जनवरी '४४

बापू का बाहर धूप में घूमना बंद हुआ तब उन्होंने अडवानी से कहा कि पूरब की तरफ वाली बाड़ को सीधा करवा दिया जाय तो खुले में घूमने को हो जाय। सरकार ने शीघ्र ही बाड़ सीधी करवा दी। खासा अच्छा रास्ता तैयार हो गया।

बा की तबीयत सुधरती नहीं दीखती। सुबह अच्छी रही तो शाम को खराब—यही क्रम चल रहा है। जेल की तकलीफों ने उनकी परेशानी और भी बढ़ा दी है। मुलाकाती आते हैं तो कुछ ठीक रहती हैं। उनके जाने पर फिर वही हाल होता है। मन-बहलाव की व्यवस्था होती तो वे शरीर की व्यथा भूल जाती हैं।

बापू का आज मौन है, पर इस तरह आजकल रोज ही रहता है। उनका रक्तचाप ज्यादा रहता है। इस बारे में मैंने डॉ० गिल्डर से बातें कीं।

१८ जनवरी '४४

आज भी बापू का रक्तचाप बहुत बढ़ा है। सरदी के कारण बढ़ जाता है, वैसे गर्मी के कारण दिन में गिर जाता है। सर्पगंधा देने से सुबह की सरदी में बढ़ने नहीं पाता, नहीं तो सुबह बहुत बढ़ जाता है।

बापू ने आज खजूर नहीं खाये; क्योंकि पांच चीजों से अधिक तो वे खाते ही नहीं हैं। दवा का स्थान भी पांचों चीजों में गिना जाता है।

बा की तबीयत दिन भर अच्छी रही। शाम को साढ़े चार बजे घबराहट शुरू हुई। मुझे बुलाया, जाकर कुछ तसल्ली दी और खाट को धूप से साये में किया, पानी पिलाया, दबाया। बाद में कुछ ठीक लगीं।

देवदासभाई सवा पांच बजे गये। बाद में शाह और भंडारी जब आये तो बा ने उनसे देवदासभाई को कल फिर भेजने को कहा।

रात को बारह बजे तक मैं, एक बजे से प्रभावहन और साढ़े तीन बजे से भाई बा के पास बारी-बारी से बैठे।

१९ जनवरी '४४

सुबह घूमकर मैं जब लौटती हूं तो तुरंत बा को एनीमा देती हूं। बाद में दस बजे तक बापू की मालिश करती हूं। फिर बा की मालिश, स्नान आदि कराकर स्वयं स्नान करती हूं। समय मिलता है तो अगर भाई बापू के कपड़े नहीं धो पाते हैं तो मैं ही उन्हें धोती हूं। फिर नित्य का काम चलता है। यह करते-करते ११।।-११।।। बज जाते हैं। खाना खाकर रामायण, बाइबिल, आधा-आधा घंटा (१२ से १ तक) चलता है। देर से जाऊं तो उतना ही कम समय मिलता है। तब बापू के पैरों की मालिश करके आराम करती हूं और २-२।। बजे भीतर आती हूं। रसोई का थोड़ा काम देखकर पढ़ने बैठती हूं। पांच बजे तक कातना, पढ़ना, बा का कोई काम हो तो वह, यह सब करती हूं। पांच से छः बजे तक सब लोग खेलते हैं। ६ से ६।।-६।।। तक बापू को खाना देने, खुद खाने और रसोई का काम देखने का क्रम चलाती हूं। बाद में घूमने जाती हूं। बापू साढ़े छः बजे निकल जाते हैं। मुझे अक्सर देर हो जाती है। वे ७। बजे तक वापस आ जाते हैं।

बापू जब अपने पैर धोने लगते हैं तबतक मैं उनका चर्खा तैयार रखती हूं। पीछे रक्तचाप का माप लेकर बापू को चर्खा कातते समय शेक्सपियर पढ़कर सुनाती हूं। २० मिनट से आधा घंटे तक पढ़ने का समय मिलता है।

सवा आठ बजे प्रार्थना होती है। रात को बापू की मालिश की जाती है। पीछे कैरम खेलना पड़ता है। १०।-११ बजे तक भाई के साथ शेक्स-पियर पढ़ती हूं और बाद में सो जाती हूं। आजकल की यही दिनचर्या है।

आज दोपहर देवदासभाई दो से तीन बजे के बीच आये। बा अच्छी

थीं, लेकिन शाम के चार बजे उनकी तबीयत कुछ घबराती थी। मैं सांप और सीढ़ी का खेल (Snakes and Ladders) ले आई। उसमें उनका मन बहल गया।

२० जनवरी '४४

आज दोपहर कनु, मनु की बहन और बहनोई दो बच्चों के साथ बा से मिलने आए। कल बा कहती थीं, "माताजी नहीं आ सकतीं।" कैसे आये!

दोपहर माताजी और मोहनलाल का पत्र आया। बेबी अच्छी है।

: ६३ :

बा की निराशा

२२ जनवरी '४४

बा की तबीयत ठीक नहीं है। उन्हें दिन में बेचैनी रही और सारी रात खराब गई। उनके मन में से अच्छी होने की इच्छा और आशा ही उठ गई है। देवदासभाई नहीं आये। कनु आया तो बा को भजन वगैरा सुनाकर चला गया।

सरकार के तीन नोटिस आये हैं। उनमें यह बताया गया है कि मैं और मीराबहन—दोनों क्यों नजरबंद किये गए हैं। लिखा है—"तुम लोग गांधीजी से निकट का संबंध रखती हो और चूंकि सार्वजनिक सत्याग्रह की हलचल में हिस्सा लेना तुम्हारे लिए संभव था, इसीलिए तुम्हें नजरबंदी में रखा गया है।" बापू ने इसका उत्तर लिखा है, जिसे मैंने अभी देखा नहीं है।

२३ जनवरी '४४

आज बापू और मीराबहन के उत्तर तैयार हो गए। भाई रात को बैठकर टाइप करते रहे।

बा के पास एक रात मैं और मनु तथा एक रात भाई और प्रभावती

रहें, यह तय किया है। रात को बा के पास ११ से २। बजे तक मैं रही, बाद में सुबह प्रार्थना के समय मनु रही।

२४ जनवरी '४४

बापू और मीराबहन ने सरकारी पत्र के जवाब आज भेजे। रामदास-भाई, सुमित्रा और हरिलालभाई बा से मिलने आये। कनु भी आया, मगर बातों के कारण भजन वगैरा अच्छी तरह नहीं हो सके।

३७५

२५ जनवरी' ४४

आज डॉ० सिम्काक्स सुबह के समय मीराबहन को देखने आये। शाम को फिर आये। उन्होंने मीराबहन को बेहोश करके उन जोड़ों को तोड़ा, जहां मांस-पेशियां जुड़ गई थीं। डॉ० साहब बुद्धिमान जान पड़ते हैं। वे बापू से भी मिले।

दोपहर देवदासभाई, रामदासभाई, सुमित्रा और हरिलालभाई मुलाकात करने आये।

२६ जनवरी '४४

आज स्वतंत्रता-दिन है। सबने चौबीस घंटे का उपवास किया। कैदियों के लिए पकौड़े और चाय बनाई।

शाम को सवा सात बजे झंडाभिवादन करने गये और वर्ष की प्रतिज्ञा पढ़कर तीन भजन गाये।

आज के मुलाकातियों में रामदासभाई, सुमित्रा, कनु और हरिलाल-भाई थे।

२७ जनवरी '४४

डॉ० गिल्डर आज अपनी पत्नी और लड़की से मुलाकात करने गये। पिछले दफा की तरह जेलों के इंस्पेक्टर जनरल के दफ्तर में मुलाकात हुई। डेढ़ घंटा मिला।

डॉ० सिम्काक्स सुबह मीराबहन को देखने आये। तीन हफ्ते बाद फिर आवेंगे। मीराबहन का बुखार दूर हो गया है।

बा की तबीयत साधारण रही।

२८ जनवरी '४४

कल रात मैं दो बजे तक बा के पास रही। बाद में मनु बैठी। उसने बताया कि बा केवल २ से ५ बजे के बीच आधा घंटा ही सोई थीं। उसके बाद अच्छी नींद ली। दोपहर रामदासभाई और सुमित्रा आये।

सुमित्रा बा के पैर दबाती थी और उनकी पीठ पर हाथ फेरती थी। कल रामदासभाई और सुमित्रा नागपुर वापस जावेंगे।

२९ जनवरी '४४

बापू सुबह चार बजे उठ गए। प्रार्थना जल्दी हुई। 'टाइम्स' में सर चिमनलाल सीतलवाद का पत्र प्रकाशित हुआ है। पहला भाग तो कुछ ठीक था, मगर आखीर का बहुत खराब था।

३० जनवरी '४४

बापू आज भी साढ़े चार बजे उठ गए। दिन में भंडारी वगैरा आये।

बा की रात खराब गई। अचानक प्रभावती की घड़ी का एलार्म बज गया, उससे बा बहुत डर गईं।

बापू शेक्सपियर पढ़ने में लगे हैं। कहते थे कि इसीलिए उनका उर्दू पढ़ना रुक गया है। वे यह नहीं निश्चय कर पाते कि क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें। सच तो यह है कि बा की बीमारी के कारण उन्हें भी पढ़ने का समय कम मिलता है। चिंता तो रहती ही है।

३१ जनवरी '४४

रात में बा को मुश्किल से पौन घंटा नींद आई। एनीमा के बाद बहुत दम चढ़ा, नाड़ी भी खराब थी। ऑक्सीजन और कोरामीन दी, तब कुछ दबा।

डॉ० गिल्डर ने और मैंने सरकार को लिखा कि डॉ० जीवराज मेहता और डॉ० बिधानचन्द्र राय को सलाह देने के लिए भेजा जाय। बापू ने सरकार को याद दिलाया है कि कनु, दीनशा और मुलाकातियों पर से प्रतिबंध हटा लिये जायं।

दोपहर को श्रीमती पंडित का पत्र बापू को मिला। सरकार ने लिखा

है कि यह पत्र आपको अपवादस्वरूप दिया जाता है। आपका पत्र भी (यदि कोई खटकने वाली बात न होगी तो) अपवादस्वरूप ही भेजा जावेगा।

कनु आया। उसे शाम के सात बजे तक रहने दिया गया। बा को अच्छा लगा। भंडारी दो बार बा को देखने आये। बा को दिन में काफी बेचैनी रही।

१ फरवरी '४४

रात में बा को नींद कल से अच्छी आई। पिछले २४ घंटों में कमजोरी बढ़ गई है। अगर तबीयत जल्दी नहीं सुधरती तो बा को खो देने का अंदेशा है।

मैं सुबह बापू की मालिश के बाद १० बजे से लेकर १२ बजे तक बा की सेवा में थी। स्पंज आदि करके उनको मैंने एनीमा दिया तो एनीमा लेने के बाद उनके लिए उठकर बैठना कठिन हो गया। दिन में भी बेचैनी काफी रही। खबर मिली कि कनु आज भी आ सकता है और शाम के ७ बजे तक रह सकता है। कनु एक बजे आया। थोड़ी देर बाद संदेश आया कि वह हमारे कैंप में दाखिल हो सकता है। कनु ने खबर दी कि कल प्रेमाबहन और मणिबहन छूटकर आ गई हैं। शाम को पौने छः बजे भंडारी डॉ० जीवराज मेहता को लेकर आये। डॉ० मेहता बापू को नहीं देख पाए। बा को उन्होंने देखा और नया नस्खा लिखा। बा को अच्छा लगा।

कनु शाम को पांच बजे अपना सामान लेने गया था, वह रात को साढ़े आठ बजे वापस आया और रात को मीराबहन के साथ मैं और वह कैरम खेले।

बा की देखभाल के लिए बारी-बारी से ड्यूटी करने के लिए एक सूची बनाई।

उन्हें पांच मिनट भी अब अकेले नहीं छोड़ा जा सकता।

२ फरवरी '४४

बा की तबीयत अच्छी रही। रक्तचाप भी आज कुछ ज्यादा है।

परसों ९०,५० था, कल ८८।५६ और आज १००।५८ है। आवाज में भी कुछ तेजी है। सुवह स्पंज कराने के वजाय उन्होंने स्नान किया।

वापू को कल सर्पगंधा दिया था। सुवह उनका रक्तचाप थोड़ा कम रहा। दोपहर को खूब उतर गया—१४४/८४ था। शाम को १५६।९८ हो गया, इसलिए शाम को सर्पगंधा फिर दिया, ताकि कल सुवह न वढ़े।

आज शाम को कनु ने प्रार्थना कराई। अच्छा लगा। दिन में उसने रोज की तरह वा को भजन सुनाये।

३ फरवरी '४४

कल रात में बा वहुत कम सोईं और दिन में वहुत बेचैन रहीं। रक्त-चाप का माप ८४,५२ था। चिंता हो गई कि रात को ही कहीं कुछ न हो जाय। इसी विचार से रात को अपनी ड्यूटी लगाने का निश्चय किया, मगर वापू के कहने से यह विचार छोड़ दिया। उन्हें लगता है कि वा समझ जावेंगी कि सुशीला खतरे के कारण उनके पास बैठी है। इसका असर उन पर खराब होगा।

४ फरवरी '४४

कल रात में बा को बड़ी अच्छी नींद आई। दिन में भी बहुत सोईं। दो वार अपने-आप दस्त हुआ। ब्रोमाइड के असर के कारण चेहरा अच्छा नहीं दीखता, तो भी कल से तवीयत अच्छी कही जा सकती है।

सुवह डॉ० शाह आये। बा ने उन्हें किसी वैद्य को वुलाने को कहा। उन्होंने मंजूर किया। वा पहले भी वैद्य के लिए कई बार आग्रह कर चुकी हैं।

दोपहर को वापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया। लिखा था कि कनु जेल में रह सकता है। वैद्य और डॉक्टर आदि लाने के बारे में सरकारी डॉक्टर विचार करेगा। मुलाकात के समय कितने लोग उपस्थित रहें, इसका निश्चय जेलों के इंस्पेक्टर जनरल करेंगे।

५ फरवरी '४४

वा की तवीयत खराव है। कल रात को घबराकर कह उठीं कि मैं जाती हूं। गीता-पाठ कराया और भजन कराया। वापू भी करीब घंटा भर वैठे। वाद में दो घंटे तक सो नहीं सके।

सुबह मालिश के समय बापू ने डॉ० गिल्डर से बातें कीं। आज से दीनशा का आना शुरू हुआ है। पहले सूचना मिली कि उनके आने के समय डॉक्टरों के सिवा और कोई नहीं रह सकता, बापू इससे बहुत उत्तेजित हो गए। सरकार को पत्र लिखाया, मगर बाद में कहा गया कि सरकारी सूचना को समझने में थोड़ी भूल हो गई। बापू और दूसरे परिचारक भी जा सकते थे, मगर बा के रोग के सिवा दूसरी कोई बात नहीं कर सकते थे। तब बापू ने पत्र को फाड़ डाला।

६ फरवरी '४४

बापू ने दीनशा के दो बार आने की इजाजत ली। उनके आने पर खुद और नर्सों के बा के पास जाने के बारे में भी उनका मत जाना। शाम को बापू ने डॉ० गिल्डर से बातें कीं। रात में बा के कारण तीन घंटा जागे थे, इसलिए थकान थी। बा की तबीयत तो गिरती ही जाती है। वैद्य लाने के बारे में भंडारी ने पूछने पर कहा कि वह सरकार से मालूम करेंगे।

७ फरवरी '४४

प्रार्थना देर से हुई। बापू ने सरकार को दो खत लिखे, जिनमें पूछा कि उनके पिछले पत्र का जवाब मिलेगा या नहीं और अगाथा हैरीमन को उनका जवाब भेजा गया या नहीं?

कल रात बा के पास मेरी ड्यूटी थी, इसलिए सोने का प्रयत्न करते-करते दिन बहुत खराब गया। शाम को बापू और भाई की कुछ बातें सुनीं, फिर बापू की मालिश करके सोने गई, पर बहुत कम सो सकी।

: ६४ :

हालत और बिगड़ी

८ फरवरी '४४

बा रात में बहुत बेचैन रहीं। आज पहली बार पांव पर सूजन साफ

दीख पड़ी है। दीनशा मेहता ने एनीमा दिया, पर निकला कुछ नहीं। बा ने मुझे बुलाया और बोलीं, "तू एनीमा दे।" मैंने समझाया कि डॉ० मेहता से अधिक अच्छी तरह एनीमा मैं नहीं दे सकती, मगर बा नहीं मानीं। आखिर मैंने दिया। कुछ मल निकला। फर्क इतना ही था कि मैंने पानी बहुत धीमे-धीमे चढ़ाया था।

बा का दिन आज भी खराब गया। बापू शाम को कहने लगे कि अब बा को एनीमा देना छोड़ दो। कमजोरी इतनी है कि कमोड पर अपने-आप बैठी नहीं रह सकतीं।

अगर इजाजत मिली तो डॉ० मेहता के आरोग्य भवन से डबल रोटी मंगाई जा सकेगी।

९ फरवरी '४४

रात में मैं बा के पास थी। पौने दो बजे बा जागीं और खांसीं, बेचैनी थी। १२ से पौने दो बजे तक वे अच्छी तरह सोई थीं। उनके पास बैठी-बैठी थोड़ी देर के लिए मैं भी सो गई। पीछे सोचा कि ऐसे नहीं सोना चाहिए। अगर कुछ हो जावे तो! मैंने कुछ भजन वगैरा सुनाये और शर्बत दिया। ढाई बजे जब मैं सोने जा रही थी तब बा कनु से अत्यंत करुण स्वर में कह रही थीं, "कनुभाई, सुशीला मेरी बहुत सेवा करती है।" बहुट चोट लगी। कितने दिनों तक अब यह स्वर और सुनने को मिलेगा? हमारी सेवा क्या प्रभु निष्फल ही जाने देगा? मैं इस चिंता के कारण फिर सो ही नहीं पाई।

बापू ने बा की वैद्य बुलाने की इच्छा पूरी करने के लिए डॉ० शाह से कहा। डॉ० शाह ने भंडारी से कहा। भंडारी ने आयंगर को फोन किया। आयंगर ने दिल्ली को फोन करने की बात कही। कोई नतीजा नहीं निकला।

१० फरवरी '४४

रात में बा को बिलकुल नींद नहीं आई। बापू ३-३० से ५-१५ बजे तक उनके पास रहे। डॉ० गिल्डर को उन्होंने बा को ऑक्सीजन देने के लिए जगाया। मुझे बहुत थकी जानकर नहीं जगाया।

दिन में बा की बेचैनी कम रही। नींद भी अच्छी आई। पेशाब बहुत कम आता है। कल बा ने पानी और दूध वगैरा लगभग ४४ औंस लिया, पर पेशाब सात ही औंस निकला। कुछ दस्त के साथ भी। तो आज पेशाब लाने की दवा दी। कोई उपाय न सूझा तो पेशाब लाने के लिए इंजेक्शन देना पड़ेगा।

आजकल बा की बीमारी के कारण पढ़ना, लिखना या कातना, कुछ भी नहीं कर पाती।

११ फरवरी '४४

आज सुबह बापू वैद्य भेजने के बारे में सरकार को पत्र लिख ही रहे थे कि भंडारी आकर कहने लगे, "वैद्य या हकीम—कोई भी बुलाया जा सकता है। हां, जिम्मेदारी बापू को ही लेनी होगी।" इसलिए पत्र फाड़ डाला गया। बापू ने यहीं के किसी वैद्य को ही तुरंत बुलाने के लिए कहा और शिवशर्मा नामक वैद्य को बुलाने के लिए तार करने को कहा।

रात को एफ़ेडीन मंगवाई ताकि रक्तचाप बढ़ाया जा सके। मैंने एक बार यही दवा देने को कहा था, मगर डॉ० गिल्डर ने सुझाया था कि इसके देने से रक्तचाप के बढ़ाव को हृदय बर्दाश्त नहीं कर सकेगा; लेकिन आज बोले, "यह खतरा उठाया ही जाना चाहिए। बात यह है कि इतने धीमे रक्तचाप से गुर्दे काम नहीं कर सकेंगे और पेशाब भी बहुत कम आवेगा। इस कारण, शरीर में जहर इकट्ठे होते हैं और स्थिति भयंकर हो जाती है। रात को भंडारी ने यह दवा भेजी। दवा का असर यह हुआ कि रात में पेशाब आठ औंस हुआ और नींद अच्छी आई।

१२ फरवरी '४४

रात को खबर मिली कि शर्मा सुबह साढ़े दस बजे आवेंगे।

शर्मा बारह बजे आये। बापू ख़ाना खाते-खाते उठे। दो बजे जब शर्मा चले गए, तब उन्होंने खाना पूरा किया। शर्मा कुशल जान पड़ते हैं।

शर्मा की दवा शुरू हो गई है। दोपहर को एक छोटी पुड़िया दी, रात के नौ बजे जुशांदा और बड़ी पुड़िया दी और १०॥ बजे सौंफ का अर्क और छोटी पुड़िया।

रात को ग्यारह बजे से बा को बड़ी बेचैनी शुरू हुई। रात के सवा दो बजे लिख रही हूं। नींद नहीं आ रही है। दिमाग भी ठिकाने नहीं है। बापू तीन बार आ चुके हैं। अब भाई आकर बैठे हैं। शर्मा को फोन किया था। वे कहते हैं कि पेशाब न होने के कारण ही बेचैनी है, लेकिन किया ही क्या जावे! उन्होंने बा के सिर में मालिश आदि करने को कहा था। सो सब किया, मगर हालत में कोई तबदीली नहीं हुई।

१३ फरवरी '४४

रात में डॉ० गिल्डर को जगाकर पूछा कि बा को क्या कुछ देना चाहिए? दवा तो वैद्य की चल रही है। हम लोग कुछ दें भी कैसे? आखिर बापू की सलाह से शर्मा को फोन किया। बा की बेचैनी बढ़ी-सी लगी। घबरा गईं। कहने लगीं कि तुम्हीं लोग दवा दो। उनको समझाया।

बा को नींद नहीं आ रही थी, इसलिए डॉ० गिल्डर से बोलीं, "मुझे अपने कमरे में ले चलो।" बापू आये तो उनसे बोलीं, "मुझे अपनी खाट पर ले चलो।" पीछे मुझसे कहने लगीं, "मुझे प्यारेलाल के कमरे में ले चलो।" तड़के के समय तो खाट से उठकर खड़ी हो गईं और बोलीं, "बापू के पास जाती हूं।" मच्छरदानी में थूकने लगीं, बस कुछ ठिकाना ही न था। मुश्किल से रात कटी। ढाई से सवा तीन बजे तक भाई भी आये। कनु को भी जगाया। वह अकेले बैठने में डरता था, इसलिए साढ़े तीन तक मैं उसके साथ रही और बाद में सो गई।

दिन में बा को दो बार दस्त हुआ, उससे तबीयत कुछ हल्की हुई। शर्मा आये तो बा ने शिकायत की। उन्होंने समझाया तो वे शांत हो गईं।

सवेरे पुड़िया खिलाते समय बा बापू के सामने आनाकानी करने लगीं। शर्मा ने छोटी पुड़िया देने को कहा था, जिसे खिलाते-खिलाते मुझे और बापू को पौन घंटा लग गया। बा मानती ही न थीं। बोलीं, "सुशीला को ही खिलाओ, नहीं तो आप खुद खा लो।" बाद में मैंने कहा कि शर्मा ने कहा है कि बा से हाथ जोड़कर विनय करके कहना कि वे दवा खा लें। इसपर वे पिघलीं और दवा खाई।

दिन में बा ने दशमूलारिष्ट व पाउडर खाया। शाम को उन्हें इतना अच्छा लगा कि आठ-दस दिन के बाद आज फिर कुर्सी पर बैठकर घूमने की इच्छा प्रकट करने लगीं। इसलिए घर के बरामदे का एक चक्कर लगाया, बालकृष्ण के पास ७ मिनट और तुलसी के पौधे के पास पांच मिनट रहीं। हम लोग घूम रहे थे। सुना तो ऊपर आ गए। बा हमें देखकर खूब हँसीं। सभी बहुत खुश हुए।

प्रार्थना के बाद बा का दाहिना कंधा और हाथ कांपने लगे। शायद यह एल्कोहल का असर हो।

रात में फिर बेचैनी शुरू हुई। एक बजे तक नींद नहीं आई। तब शर्मा को बुलाया। उन्होंने आकर एक ऐसी गोली दी कि खाते ही बा सो गईं।

शर्मा दिन भर यहीं रहे। शाम को पांच बजे बाहर गये। रात को साढ़े नौ बजे फिर आ गए और रात भर बाहर मोटर में सोये। भीतर सोने की इजाजत न थी। सुबह भंडारी आये। बापू ने इस बात पर कि वैद्य को उचित लगे तो वह भीतर क्यों न सोये, भंडारी से काफी कहा; मगर कुछ न हुआ। लाचार होकर उन्हें अगले दिन फिर मोटर में ही सोना पड़ा। दूसरा कोई चारा ही न था।

१४ फरवरी '४४

पूछने पर शर्मा ने कहा कि अरिष्ट में २ प्रतिशत से अधिक एल्कोहल नहीं था। डॉ० गिल्डर का कहना है कि १२ प्रतिशत तक होता है। शर्मा यह भी कहते हैं कि अरिष्ट के कारण बा के हाथ नहीं कांपे। बा का दिन अच्छा नहीं गया। पाखाना न होने से बेचैनी रही। शर्मा ११॥ बजे आये, पर बा की बेचैनी देखकर वापस गये और ४ बजे आकर उन्हें दुशांदा पिलाया और पेट पर कुछ लेप किया।

साढ़े सात बजे बा को दस्त हुआ। रात को एक बार हुआ। बापू की सलाह से मैंने और डॉ० गिल्डर ने जाकर देखा कि बा के पैरों की सूजन बढ़ी है, कम नहीं हुई। पेशाब भी कम निकलता है। फेफड़े पीछे की ओर तो साफ़ थे, मगर आगे की ओर बलगम से भरे हुए थे। ऐसा

इसीलिए है कि वे आगे की ओर झुककर बैठती हैं। नाड़ी भी वैसी ही है।

सवा दस बजे शर्मा आयें। बापू ने उनसे कहा कि डॉक्टरों के अनुसार तो बा में कोई सुधार नहीं दीखता। शर्मा भी कहने लगे कि दो दिन में कुछ कहा नहीं जा सकता। बापू ने कहा, "जबतक आपको आत्म-विश्वास हो तबतक आप इलाज करें और जो देना चाहे, दें। जब आप से कहा जाय तब इलाज छोड़ने और दुवारा इस मामले को हाथ में लेने की तैयारी रखें।" आखिर शर्मा एक पाउडर देकर चले गए।

शर्मा आज भी मोटर में ही सोये। बापू ने इस विषय में सरकार को कड़ा पत्र लिखा है कि आवश्यकता पड़ने पर वैद्य को यहां सोने की इजाजत होनी ही चाहिए। दूसरा एक और पत्र उन्होंने मुलाकातियों के विषय में लिखा; क्योंकि कल दोपहर सामलदास गांधी वगैरा आये, उन्होंने बताया कि अब मुलाकात की इजाजत मिलने में कठिनाई होने वाली है।

सरकार का उत्तर आया कि जिन शर्तों पर डॉ० गिल्डर को मुलाकात मिली थी, उन्हीं के अनुसार हम लोगों को भी मुलाकातें मिलेंगी।

१५ फरवरी '४४

कल रात में बा को बेचैनी रही, इसलिए उन्हें ऑक्सीजन दी और उन्हीं के पास बैठी रही। तीन बजे बापू और सवा तीन बजे वैद्य आये। दवा दी, मगर नींद तब भी नहीं आई। सवा चार बजे भाई को बा के पास बिठाकर मैं सोने गई।

दिन में बा अच्छी रहीं, पर शाम के ८ बजते ही बेचैनी बढ़ गई। ९९ डिग्री बुखार है, पेट में पानी है और शायद अब फेफड़े में भी भरने लगेगा। सूजन भी ज्यादा है। वैद्य ने सुबह पेशाब लाने का इंजेक्शन देने को कहा। बापू बोले कि इंजेक्शन तभी देना जब उसके बिना काम न चले। इस खयाल से इंजेक्शन लगाने का विचार कल शाम तक के लिए स्थगित कर दिया गया। बेचैनी के कारण बा के पास पहले मैं और प्रभावहन बैठी थीं और अब प्रभावहन और मनु बैठी हैं।

१६ फरवरी '४४

रात को मैंने कनु को बा के पास बिठाया; क्योंकि एक बजे मैं सोने जा रही थी कि बापू ने कहा कि मनु की तबीयत अच्छी नहीं। कटेली साहब वैद्य को बाहर पहुंचाकर खुद सोने गए। बापू को यह देखकर दुःख हुआ कि कटेली साहब को भी हम लोगों की खातिर जागना पड़ता है।

दिन में दो बजे बापू ने भंडारी के नाम एक पत्र लिखा कि वैद्य को तो भीतर ही सोने की इजाजत मिलनी चाहिए। तीन बजे वे सो गए। नमक के कानून के विषय में एक तार सरकार को भेजने का विचार कर रहे थे।

पत्र काफी सुधार के बाद साढ़े ग्यारह बजे भेज दिया गया। उसमें हम लोगों के सुझाये हुए सुधार करके बापू ने उसे कनु को लिखाया था। मीराबहन ने बापू को स्नान कराया।

मथुरादासभाई सकुटुंब और राधाबहन बा को देखने एक बजे आयें और पौने तीन बजे चले गए। चार से पांच बजे तक बापू और मैंने थोड़ी नींद ली। ५ से ६ तक बापू ने हम सबके साथ वेवल वाला पत्र सुधारा।

दिन में बा का पेशाब नहीं उतरा। वैद्य कहने लगे, "अभी तक मैं डरकर चलता था, मगर आज तो जो कर सकूं, करना शुरू कर दिया है। पेशाब न उतरे और बा की तबीयत में दो दिन में सुधार न हो तो मैं दूसरे चिकित्सकों को भी अवसर दूंगा।"

१७ फरवरी '४४

रात दो बजे तक बा के पास मेरी ड्यूटी थी। बा को नींद बहुत कम आई। बेचैनी अधिक नहीं थी, पर सांस बहुत फूलता था।

वैद्य ने आकर एक गोली बा को खिलायी। बा आध घंटे तक सोईं, बाकी समय भजन सुनती रहीं और कभी-कभी खुद भी मेरे साथ गाने लगती थीं।

बापू ने कनु और मीराबहन के विषय में थोड़ी बात की।

दोपहर सरकार से आध घंटे की इजाजत लेकर हरिलालभाई

आये। बा को यह अच्छा नहीं लगा। बोलीं, "दो भाइयों में इतना मतभेद क्यों किया जाता है? देवदास रोज आ सकता है, लेकिन हरि-लाल एक बार और वह भी आध घंटे के लिए! यह क्या बात है?"

बापू वहीं बैठे हजामत बनवा रहे थे। यह सुनकर बा से पूछने लगे "हरिलाल क्या हर रोज आवे?" बा ने कहा, "हां!" बापू ने कटेली साहब से कहा। हरिलालभाई अब रोज आया करेंगे। पूना में आठ रोज रहेंगे। बापू ने उन्हें मेहता के यहां रहने की सलाह दी, मगर हरिलाल-भाई को धर्मशाला अधिक पसंद है।

दिन में बा को दम की बड़ी शिकायत रही, पर बेचैनी नहीं थी। मैंने तीन बार ऑक्सीजन दी। वैद्य की दवा से दस्त तो काफी हो गए, मगर पेशाब नहीं उतरा। रात में बा को १००.२ डिगरी बुखार हो गया, साथ ही बेचैनी भी हो गई। बापू मुझसे कहने लगे, "बा तुम्हारे हाथ में फिर आवे तो मेरी सलाह तो यह है कि अब दवा देना बंद कर दो।" मैं बोली, "यह कैसे हो सकता है? जबतक किसी दवा से फायदा होते दीख न पड़े तबतक डॉक्टर रोगी को दवा देता ही जाएगा न?"

कल बा के फेफड़े देखेंगे। वैद्य की दवा का असर अगर कल तक अच्छा न दीख पड़ा तो शायद वे चले जावें। वे आज यहीं सोवेंगे।

१८ फरवरी '४४

रात में बा को नींद नहीं आई। भाई उनके पास थे। ३॥ बजे मैं और बापू जब बा को देखने गये, तो उन्होंने बताया कि वैद्य ने बा को दो बार दवा दी है तो भी उन्हें नींद नहीं आई। बुखार भी रात में १००.२ डिगरी रहा। ४ बजे हम लोग बा के पास से हटे तो बापू कहने लगे कि अब प्रार्थना क्यों न कर ली जाय?

बापू प्रार्थना के लिए तैयारी कर ही रहे थे कि वैद्य ने आकर कहा कि वे चिंता के मारे रात भर सो नहीं सके; क्योंकि बा का इलाज करने में वे सफल नहीं हो रहे हैं।

रात में वैद्य ने बा को अच्छे-से-अच्छे रसायनों की दवा दी, मगर नतीजा कुछ न निकला। उनके कहने पर बापू ने मुझसे और डॉ० गिल्डर

से कह दिया है कि हम लोग बा का इलाज जैसे चाहें वैसे करें। इसलिए मैंने तुरंत पेशाब लाने और दिल को ताकत पहुंचाने के लिए दवाइयां दीं। डॉ० दीनशा ने मैगसल्फ का एनीमा बा को दिया। बाद में कहते थे कि मल बहुत निकला। मैं आई तबतक सब फेंक चुके थे।

दोपहर को डरते-डरते पारे के इंजेक्शन की आधी मात्रा बा की नस में दी। इंजेक्शन का पता बा को नहीं चला और प्रयत्न सफल रहा। सैकड़ों में एक को ही इस इंजेक्शन से तुरंत नुकसान होता है। पांच बजे और पेशाब हुआ। हम सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। बा भी दिन में खूब सोईं। चार बजे एक संगीत-मंडली आ गई। बा उठीं, तब कुछ संगीत हुआ। पौने पांच बजे बा को पेशाब लगा, इसलिए उसे रोक दिया गया।

बापू ने वैद्य के आने के विषय में भंडारी को फिर लिखा। भंडारी ने शाम को आकर कहा कि वे आते रह सकते हैं। लेकिन रात को भीतर नहीं ठहर सकेंगे। आज हरिलालभाई नहीं आये। मेहता के यहां टेलि-फोन करने को कह गए थे। जब फोन से बताया गया कि उन्हें आने की इजाजत मिल गई है तो पता चला कि वे वहां गये ही नहीं। शाम को मेहता के आने तक उनकी खबर न थी।

शाम को छः-सात बजे बा को बेचैनी शुरू हुई। परीक्षा करने पर पता लगा कि दाहिने फेफड़े के ऊपरी भाग में निमोनिया के चिह्न मिले। रात को ये चिह्न और बढ़े। यह देखकर रात की दवा में सल्फा की दो गोलियां भी शामिल कर दीं। डर था कि पेशाब कम है, सल्फा कहीं गुर्दों में बैठकर और अधिक तकलीफ न दे। मगर आखिर खतरा उठाया ही। रात को बुखार १०० डिगरी रहा। मैं बा के पास २ बजे तक बैठी। १२ बजे तक नींद की आधी मात्रा दवा देने पर उन्होंने २ बजे तक अच्छी नींद ली। दो-ढाई घंटे तक ऑक्सीजन भी ली।

१९ फरवरी '४४

आज बा को १॥ सी० सी० पारे की दवा और २५ प्रतिशत ग्लूकोज भी नस में दिया, मगर पेशाब नहीं हुआ। इससे निराशा हो रही है। सुबह

कुनीन में आधा चम्मच सुनहरी मैगसल्फ दी थी, इसलिए दो-तीन पाखाने हो गए और पेशाव केवल एक बार चार औंस हुआ। बाद में दो वार करके एक औंस और हो गया। अगर सेलिर्गन (Salyrgan) का असर हो जाता तो देती। दिन में बा काफी सोईं, मगर नींद थकान और दवा के कारण है। वहुत चिंता हो रही है।

बापू वा के पास काफी समय तक बैठते हैं। वैद्य भी आये थे। वापू से वातें करते रहे। वापू पर उनका बहुत अच्छा असर पड़ा है।

२० फरवरी '४४

रात को बा ने खासी नींद ली। लगभग रात भर ऑक्सीजन चलती रही। बार-बार 'राम-राम' चिल्लाती थीं। साढ़े तीन बजे ऑक्सीजन की नली वा ने निकाल डाली। सुबह सवा पांच बजे से उन्हें वड़ी वेचैनी लगने लगी। मैंने ऑक्सीजन की नली फिर डाली, तव थोड़ा शांत हो सकीं। वापू आये और वा की खाट पर बैठकर ही प्रार्थना करने लगे। कल के सेलिर्गन के इंजेक्शन का असर न होने के कारण निराशा छाई थी। तिस पर बा की बेचैनी ने और चिंता बढ़ा दी। दो बजे के बाद बापू ने मुझे बा के पास से भेज दिया।

सवको लग रहा है कि अब वा जाती हैं। बा 'हे राम, हे राम' इतने करुण स्वर से कहती हैं कि सुना नहीं जाता।

१ बजे बा की नाड़ी खराब हो गई, मगर थोड़ी देर में सुधर गई और दिन भर इधर-उधर चलती रही। रामधुन और भजन बा के पास दिन भर होते रहे। वे भी बीच-बीच में जोरों से गाती थीं। बापू काफी समय तक बा के पास बैठे।

सुबह सवा नौ बजे दिमाग शांत करने की दवा दी। परिणाम-स्वरूप वा घंटे-डेढ़-घंटे के लिए सो गईं। उठीं तो दातुन मांगीं। अच्छी तरह घिस-घिसकर दातुन की। नाक में पानी चढ़ाया। तत्पश्चात चाय भी पी।

सबको वड़ा आश्चर्य हुआ कि बा में इतनी शक्ति कहां से आ गई; मगर थोड़ी देर बाद वेचैनी शुरू हुई। पेशाब बहुत कम हुआ।

बा शाम को एनीमा के लिए चिल्लाने लगीं। बापू बोले, "अब बा की दवा राम-नाम ही है, दूसरा सब उपचार छोड़ दो।" सुबह दवा देने के अलावा मैंने फिर दवा नहीं दी, लेकिन मुझे यह बात पसंद नहीं आई। इच्छा थी कि दिल की ताकत बढ़ानेवाली दवा पूरी मात्रा में दूं। बापू से मैंने इसके लिए कहा भी, पर वे बोले, "मेरी तो वृत्ति है कि बा को पानी और शहद के सिवा कुछ भी न दो। वह खुद मांगें तो अलग बात है। ऐसी ही दवा की बात है। बा जाये, तो भले। बा की व्यथा का दृश्य करुण है, मगर मुझे बहुत प्रिय है। बस राम-धुन के सिवा उसे चैन नहीं। आज मैंने उसके मुंह से 'राम' के सिवा और कुछ सुना ही नहीं। मैं दवा को मानता ही नहीं। लड़कों की कैसी-कैसी बीमारी में भी मैंने दवा नहीं दी। बा के बारे में मैंने ऐसा नहीं किया। अब समय आ गया है कि अब तो दवा छोड़ूं। ईश्वर को बचाना होगा तो ऐसे ही बचा लेगा, नहीं तो बा को मैं जाने दूंगा।"

इसलिए बा ने जब एनीमा मांगा तो बापू ने उसे टालने का प्रयत्न किया और कहा, "अब राम-नाम ही तेरी दवा है।" मगर मैंने कहा, "वे चाहती हैं तो लेने दीजिए।" तब बापू मान गए। एनीमा दिया, खूब मल निकला। बा तब शांत होकर करीब दो घंटे तक सोईं।

डॉ० दीनशा मेहता दिन भर यहीं रहे। रात के लिए भी इजाजत मांगी। बंबई से टेलीफोन आया कि वे रह सकेंगे।

शाम को एनीमा के बाद बा की हालत इतनी अच्छी रही कि मैंने बापू से कहा कि यदि ऐसी ही हालत रात के बारह बजे तक रही तो मैं दवा देना शुरू कर दूंगी।

भंडारी, शाह और वैद्य सुबह बा की हालत पूछने आये। तभी खबर मिली कि बा की मृत्यु यदि हो गई तो कोई व्यक्ति बाहर न जा सकेगा। वैद्य यह सुनते ही जल्दी चले गए। उन्हें साढ़े तीन बजे की गाड़ी से जाना था।

इस खबर से जान पड़ता है कि सरकार का इरादा महादेवभाई

की तरह बा की अंतिम क्रिया यहीं होने देने का है, मगर क्या उनके लड़कों के मांगने पर भी शव उनको न देगी?

सुना है कि रामदासभाई नागपुर से चल पड़े हैं। शायद देवदासभाई भी आ रहे हैं। शाम को बा एकाएक बहुत तेजी में आकर हरिलालभाई के न आने पर नाराजी दिखाने लगीं। जब उन्हें बताया गया कि दो लड़के आ रहे हैं तब कुछ शांत हुईं।

मैंने भंडारी से पेनिसिलीन के लिए कहा। वे कोशिश करेंगे। फौजी अस्पताल में तो नहीं मिली। डा० विधान राय यहां होते तो ऐसी चीजें उनके द्वारा खोजी जा सकती थीं। जेल में बैठे-बैठे आदमी क्या कर सकता है।

साढ़े नौ बजे से बा की बेचैनी फिर शुरू हुई है। मीराबहन रामधुन सुना रही हैं।

: ६५ :

अंतिम रात्रि

२१ फरवरी '४४

रात में नींद की दवा देने पर १२ बजे तक खूब सोने के बाद बेचैनी फिर शुरू हुई, पर ऑक्सीजन देने पर वे सो गईं।

अब बा के पास एक व्यक्ति से काम नहीं चलता। मनु के आग्रह पर मैंने उसे बारह बजे जगाया। मेहता भी १। बजे आ गए। डेढ़ बजे मैंने मनु को सुला दिया। बापू रात को दो बार आये। १ से १॥ बजे तक वे बा के पास बैठे, मगर बा ने बैठने नहीं दिया। इतनी बीमारी में भी उन्हें बापू के आराम का खयाल था। बापू १॥ बजे उठकर चले और साथ ही बा का थूक पोंछने के दो रूमाल उठाकर धोने ले गये। मैंने कहा, "लाइये, मैं धो दूं।" मगर उन्होंने धोते-धोते कहा, "मुझे ही धोने दे।"

कल दिन में डॉ० गिल्डर मुझसे कहने लगे, "जरा ध्यान रखो।

निमोनिया है। बा के आसपास काफी ज़हरीले कीड़े फैल रहे हैं। बापू वहां बहुत न बैठें।" मैंने कहा, "मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं कुछ कहूं।" कल दोपहर खाने-पीने के बाद बापू बा के पास बैठे थे। बा ने उनसे जाने को कहा; क्योंकि वे सोना चाहती थीं। मैंने कहा कि आप अब उठ जाइए; क्योंकि अगर बा आपका सहारा लेकर सो गईं तो फिर आप उठ न सकेंगे। तब बापू उठ तो गए, मगर बाद में बोले, "मुझे थोड़ी देर बैठने दिया होता तो क्या था!" मुझे लगा कि मैंने उन्हें उठने के लिए कहा ही क्यों! वे खुशी से बैठें। इसीलिए आज मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं बापू से कुछ कहूं।

डॉ० गिल्डर कहने लगे, "पास भले बैठें, मगर मुंह के नज़दीक न रहें।" मैंने कहा, "यह कहना भी कठिन है।" तो वे बोले, "हां, मैं अब समझा। आखिर, बापू यह देखते हैं कि साठ साल का साथ छूट रहा है, इसलिए वे बा से दूर नहीं रह सकते। हम भी उनसे कुछ कह नहीं सकते।" रात के करीब ११॥ बजे बा मेरी गोद में पड़ी थीं। मेरा एक हाथ उनकी नाड़ी पर था। एकाएक नाड़ी इतनी कमजोर हो गई कि मिलती ही न थी। मुझे लगा कि बा क्या सोते-सोते ही चली जावेंगी। प्रभावतीबहन को आवाज दी कि नाड़ी वापस आ गई और रात भर ऊंची-नीची चलती रही। दो बजे मैं सोने को गई और सात बजे तक सोती रही। यहां तक कि बापू ने मुझे जगाकर कहा कि डॉ० गिल्डर बहुत देर से बा के पास खड़े हैं। उन्हें मुक्त कर मैं गई तो गिल्डर जा चुके थे। नाड़ी वगैरा ठीक थी।

मैं जब बा के पास गई तो वे मुझसे कहने लगीं, "मुझे अंडी का तेल दे।" मैंने समझाने की कोशिश की कि अब उसकी आवश्यकता नहीं, उससे आपको थकान होगी। वे तेल मांगना भूल जावें, यह सोचकर मैं वहां से हट गई। इतने में प्रभावतीबहन आईं और कहने लगीं, "बा अंडी के तेल के लिए चिल्ला रही हैं।"

मैं और डॉक्टर दोनों नहीं देना चाहते थे। इतने में बापू ने जाकर बा को समझाया, "एक बात तो यह कि तू गुस्सा करना छोड़ दे। करना हो तो

अकेला मुझ पर कर। दूसरे, अब दवा लेनी छोड़ दे। कल से तू राम-नाम लिया करती है, वह मुझे बहुत भला लगता है। अब तो राम-नाम को हृदय पर अंकित कर ले। राम-नाम जिंदा रखेगा तो जीयेंगे, नहीं तो चले जायंगे।"

बा ने बापू की सब शर्तें शांति से सुनीं। ऐसा लगता था मानो उन्होंने सब कुछ स्वीकार भी कर लिया। थोड़ी देर बाद जब मैं बा के पास गई तो बापू बा से कह रहे थे, "रोगी कभी अपनी दवा खुद नहीं करता। और मैं तो तुझे कहता हूं कि अब तू दवा छोड़ दे। सब कुछ भूल जा। मुझे भी भूल जा। राम में ही मन को पिरोले।"

बाद में बापू मुझसे बोले, "बा अब अंडी का तेल नहीं मांगेगी।" मैंने कहा, "अच्छी बात है।" फिर बापू घूमने को गए। बा मेरी गोद में पड़ गईं। १० बजे मैं उठकर गई। थोड़ी देर बाद जब बा के पास फिर पहुंची, बापू भी आ गए। बा मेरी तरफ़ उंगली हिलाकर बोलीं, "तो अंडी का तेल नहीं दिया न?" मैंने कहा, "शाम तक अगर पाखाना न होगा तो अंडी का तेल दूंगी।" डॉ० गिल्डर ने भी समझाया। दीनशा ने भी। आखिर आधी चमची अंडी के तेल में लिक्विड पेराफीन डालकर दी। बा ने वह लिया। बाद में पानी भी। डेढ़ बजे ऑक्सीजन शुरू करके मैं सोने गई। डॉ० गिल्डर उनकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। मैंने बापू से कहा, "बा जब अंडी का तेल लेने के लिए इतना आग्रह करती हैं तो दूसरी दवाएं रोकना कहां तक ठीक है।" बापू का मौन था। उन्होंने लिखकर दिया, "विरोध करने की अब मेरे लिए बात ही नहीं रहती।"

एक प्याले में हृदय को ताकत देने वाली दवा निकाली और डॉ० गिल्डर से यह कहकर कि बा के जागने पर दवा पिला दें, मैं सोने चली गई।

एकाएक चार बजे गीता-पाठ की ध्वनि सुनकर उठ बैठी, मगर कोई खास बात न थी। बा को सुनाने के लिए गीता-पाठ हो रहा था।

दोपहर साढ़े तीन बजे हरिलालभाई आये।

मैंने रामधुन सुनाना शुरू कर दिया। बा शांत होकर सुनने लगीं।

छाती में दर्द बताने लगीं। मैंने उन्हें दवा दी और वे मेरी गोद में पड़ी रहीं। ५ बजे मैं खेलने गई।

सवा छः बजे के करीब देवदासभाई वगैरा आये। बा उनसे मिलकर रोने लगीं। मनु भी रोने लगी। मैंने बा से पूछा, "क्या मनु भजन सुनावे ?" बा ने 'हां' कही। मनु ने गाना आरंभ किया तब दोनों का रोना बंद हुआ। बा देवदासभाई से भी मिलकर रोईं और बोलीं, "बापू तो साधु हैं। उनको तो बहुत काम है और बहुत जिम्मेदारियां हैं।. . . इसलिए तू सबको संभालना।"

देवदासभाई ने बताया कि बा के पास रात को रहने की इजाजत तो उन्हें है, मगर दूसरों को नहीं है। कहने लगे, "संतोकबहन और मनु बा के पास रहें तो बा को अच्छा लगेगा।" देवदासभाई ने इसीलिए मुझे बापू के पास भेजा कि वे जाकर श्री कटेली से संतोकबहन के रहने की इजाजत लें। बापू ने कागज पर लिखा, "कटेली सरकार को फोन करें कि बा की सेवा के लिए तो ज़रूरत नहीं है, लेकिन उसकी शांति के लिए संतोकबहन को रहने के लिए सरकार इजाजत दे तो अच्छा हो।"

आठ बजे तक तो उन लोगों को जाना था ही, वे चले गए।

करीब सात-साढ़े सात बजे से मैं बा के पास बैठी। कनु ग्रामोफोन बजा रहा था। बा मेरा सहारा लेकर १॥ घंटा सो गईं। साढ़े नौ-पौने दस पर प्रभावतीबहन को बा के पास बिठाकर मैं बापू की मालिश करने गई। लौटकर देखा तो बा सो रही थीं।

बा ने आज न के बराबर खाया। खाने में उनकी अरुचि कई दिनों से बढ़ती जा रही है। बापू ने कहा था, "अभी बा को दूध-चाय भी न दो। अपने-आप मांगे तो अलग बात, नहीं तो शहद और पानी ही दो।"

आज बा को पानी और शहद से भी अरुचि हो गई। निगलने में कठिनाई होती थी। मैंने पूछा, "खांसी की दवा लोगी ?" पर हां कहकर भी उन्होंने दवा नहीं ली। कहती थीं, "मुझे सुला दो।" प्रभाबहन से बोलीं, "हम दोनों यहीं सो जायं।"

बा को दवा देने के लिए बत्ती जलाई तो देखा कि बिस्तर में उन्होंने

पाखाना किया है और उन्हें कुछ मालूम न था। प्रभावहन की मदद से मैंने बा के सब कपड़े बदले। फिर बा को सहारा देकर बैठी। प्रभावहन कपड़े धोने गई और फिर आकर बा के पास बैठी। मैंने उठकर बा की बीमारी की नोट-बुक में सब हाल लिखा। ११ बजे देवदासभाई आये और १ बजे तक बा के पास रहे। मैंने १ बजे प्रभावतीबहन को सोने भेज दिया।

बा की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। आधी नींद में रहती जान पड़ती हैं। सिर में दर्द भी बताती हैं। देवदासभाई खड़े-खड़े उनका सिर दबा रहे थे। उन्हें लगा कि बा सो गई हैं, इसलिए उन्होंने दबाना बंद किया, पर बा फिर मुझसे कहने लगीं, "सुशीला, तू भी थक गई!" मैंने कहा, "मुझे थकना क्या! लाओ न, मैं दबाऊं!" मैंने सिर दबाना शुरू किया।

डेढ़ बजे बा को पेशाब की हाजत हुई। पेशाबदान मांगा। डॉ० मेहता का लाया हुआ रबड़ का पेशाबदान काम में लाई। पेशाब ढाई औंस हुआ—कुछ चादर पर भी पड़ा। बा पेशाबदान पर बैठी थीं तभी बापू भी आ गए। बा कुछ अस्पष्ट शब्दों में बोलीं। दो बजे तक नशे की-सी हालत में पड़ी रहीं। सिर में चक्कर था—दर्द था। तीन बजे के बाद सोईं। बा की स्थिति अच्छी नहीं लगती थी।

२२ फरवरी '४४

सात बजे उठकर मैं हाथ-मुंह धोकर बा के कमरे में घुसी ही थी कि बा ने मुझे आवाज दी—"सुशीला।" मैंने पास जाकर पूछा, "क्या है बा?" कहने लगीं, "सुशीला, मुझे घर के अंदर ले जा। मेरी टहल कर।" मैंने कहा, "बा, तुम घर के अंदर ही तो हो। यह देखो, तुम्हारे पास 'हे राम' का चित्र है।" थोड़ी देर में वे फिर बोलीं, "मुझे घर में ले चलो।" मैंने कहा, "बापू के कमरे में जाना है?" बा बोलीं, "हां!" मैंने कहा, "बापू के कमरे में ही तो हो।" मुझे लगा कि बा शायद बापू के पास जाना चाहती हैं। बापू बगल के कमरे में फल के रस का नाश्ता कर रहे थे। जब घूमने जाने को निकले तो मैंने कहलाया कि नीचे जाने से पहले दो मिनट बा के पास हो जायं। बापू बा वाले कमरे में गये। थोड़ी देरें खड़े रहे, फिर

बोले, "मैं घूम आऊं।" बा ने कहा, "ना।" बा हमेशा खुद ही बापू को कहा करती थीं कि घूमने जाओ, मगर आज उन्हें लगा कि मेरे पास बैठो तो ज्यादा अच्छा हो। सो बापू बा की खाट पर बैठ गए। दस बजे तक बैठे रहे। बा बस उनकी गोद में पड़ी थीं।

बापू उनसे 'राम' में ध्यान लगाने को कहते थे। दूसरी जो सेवा चाहिए, बैठे-बैठे करते थे।

मैं दस बजे तक आई। देवदासभाई के साथ बैठी। उन्हें नाश्ता कराया। उन्होंने बा के बारे में टॉटेनहम से जो बातें हुई थीं, वे सुनाईं। उसने साफ कहा था "अगर हम बा को छोड़ दें और उनकी हालत ज्यादा बिगड़े, पीछे गांधीजी को न छोड़ा जाय तो तुम्हें वह निष्टुरता की पराकाष्ठा लगेगा।"

बा बापू की गोद में शांति से पड़ी रहीं। उनके चेहरे का भाव इतना शांत था और उस समय बा और बापू की जोड़ी इतनी भव्य लगती थी कि डॉ० गिल्डर कह उठे कि यह दृश्य तो चित्र लेने लायक हैं।

दस बजे मैंने बा से कहा, "अब मैं बैठूं। बापू नहाने-धोने जायं।" बा ने 'हां' कहा। बापू उठे। पहले थोड़ा घूमे, फिर थोड़ी मालिश कराई और स्नान किया। मैं अकेली बा के पास थी।

एकाएक मन में विचार उठा कि बा से अपनी सब जाने-अनजाने की हुई भूलों की माफी तो मांग लूं। मगर मेरे मुंह से शब्द निकले ही नहीं। यह भी विचार आया कि बा कहीं ऐसा न समझ बैठे कि वे जा रही हैं, इसलिए मैं उनसे माफी मांग रही हूं।

आज सुबह साढ़े सात बजे जब बा मेरी गोद में पड़ी थीं तब बोलीं, "सुशीला, कहां जायंगे? मर जायंगे?" बा जब पहले कभी ऐसी बात करती थीं तब मैं कहती थी, "नहीं, नहीं बा, यह क्या बोलती हो? हम सब साथ घर जायंगे।" मगर आज बा को इस तरह कहने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी। मैंने कहा, "बा, एक दिन हम सबको मरना ही है न! किसीको आगे, किसीको पीछे, एक ही ठिकाने जाना है।"

इसपर बा शांत हो गईं। सिर हिलाकर 'हां' कहा। उस भावना

को मैं फिर जगाना नहीं चाहती थी। कठिनता से मैंने कहा, "बा, तुम मुझसे नाराज हो? कल अंडी के तेल के लिए नाराज हो गई थीं न।" मुझे लगा कि किसी बात को लेकर मैं बा से आगे-पीछे की माफी मांग लूं। मगर बा थकी बहुत थीं। उन्होंने कुछ जवाब दिया, शायद कहा, "नाराज नहीं हूं।" मगर मैं पूरा समझ न सकी। आगे नहीं बोली।

मेहता और देवदासभाई गये। मेहता घर गये हैं और देवदासभाई पेनिसिलीन लेने। एकाएक बा ने कहा, "मेहता कहां गया? मालिश करे।" मैंने कहा, "घर गये हैं, थोड़ी देर में आते हैं।" मगर कनु ने कहा, "अभी गये नहीं हैं, जा रहे हैं।" बुलाने पर मेहता आये और बा के हाथ-पैरों पर पाउडर की मालिश कर दी। दस-पंद्रह मिनट बाद वे चले गए।

भंडारी बापू से मिलने आये। बोले, "देवदासभाई बा का फोटो लेना चाहते हैं। सरकार ने आपकी राय लेने के लिए मुझे भेजा है।" बापू ने कहा, "जहां तक मेरा संबंध है, मुझे इन चीजों की परवाह नहीं; मगर बेटे, रिश्तेदार और मित्र फोटो लेने का आग्रह कर सकते हैं। इसलिए मैं मानता हूं कि सरकार को फोटो लेने की इजाजत देनी चाहिए और आजकल तो ऐसे फोटो लेने का रिवाज हो गया है।"

भंडारी ने आश्चर्य-भरे स्वर में कहा, "ऐसी बात है?" बापू बोले, "आप क्या मृत्यु-शय्या पर पड़े या मरे हुए लोगों के फोटो हर रोज अखबारों में नहीं देखते?" भंडारी ने उत्तर दिया, "हां, तो मैं सरकार से यही कहूं न कि आपके लिए फोटो लेना या न लेना—दोनों बातें समान हैं। बापू कहने लगे, "हां, मुझे दोनों समान लगते हैं, मगर मैं देखता हूं कि सरकार की शोभा यह दरख्वास्त स्वीकार करने में हैं।"

भंडारी चले गए। प्रभावतीबहन को बिठाकर मैं भी चली गई। स्नान किया और पंद्रह मिनट घूमने में प्रार्थना की।

लगातार दो रोज से मेरे हृदय में 'मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्' की भावना उठा करती है। भगवान, क्या बा को अच्छी नहीं कर सकते हो? पौने बारह बजे मैं बा के पास आई और प्रभावतीबहन को भेजा। बापू नहाकर निकले, मगर बाहर चले गए। एक बार खाकर

वैठें तो अच्छा है। उनकी यही इच्छा रहती है; क्योंकि एक वार बा के पास बैठकर उनका वहां से उठने का मन ही नहीं होता। आजकल वे तीन-चार रोज से मशीन की पीसी हुई सब्जी और दूध ही लेते हैं। सो दस-पंद्रह मिनट में पूरा हो जाता है। साढ़े बारह बजे के लगभग बापू बा के पास आकर वैठे। थोड़ी देर में बा खाट पर सीधी सो गईं। महीनों से वे सीधी न सो सकी थीं। हमें लगा कि कहीं जाती तो नहीं हैं। देवदास-भाई को फोन कराया। वे सोने की तैयारी में थे। फौरन आ गए। थोड़ी देर में दीनशा मेहता भी आ पहुंचे। बा से भजन और रामधुन के वारे में पूछा तो उन्होंने इंकार कर दिया। बापू की सलाह से महादेवभाई वाले कमरे में गीता-पाठ होने लगा, जिससे वा के कान में भी ध्वनि जाती रहे। पहले कनु वैठा। इतने में देवदासभाई कैमरा लेकर आये और उन्होंने गीतापाठ शुरू कर दिया। कनु देवदासभाई का लाया हुआ कैमरा सुधारने लगा, लेकिन सुधार न सका। तव देवदासभाई दूसरे कैमरे का प्रवंध करने गये। दीनशा को इसके लिए वाहर भेजा।

कल रात से वा को पानी पीने में अरुचि हो गई है, मगर जब सुना कि देवदासभाई गंगाजल लाये हैं तो मुंह खोल दिया। वापू ने एक चम्मच गंगाजल मुंह में डाला। वा तुरंत पी गईं और वोलीं, "बस ?" मानो कि उन्हें और चाहिए। बापू कहने लगे, "वस, अव फिर लेना।" बाद में गंगाजल फिर लिया। जल में तुलसी के पत्ते भी डाले गए थे।

थोड़ी देर में बा को कुछ शक्ति मिली। उठ वैठीं और संतोकवहन केशुभाई, मनु, रामीबहन वगैरा से बातें कीं। भीड़ न हो, इसलिए दूसरे सब चले गए।

गीता-पारायण के बाद संतोकवहन और मनु ने बा को भजन सुनाये।

फोटो के खयाल से बापू वा के पास वैठने वाले नहीं थे। मैंने उनसे कहा कि अभी आप बा के पास वैठें। मैं थोड़ा सो लूं। बापू मान तो गए, पर वा के पास वैठे नहीं। वा दोपहर उनपर थोड़ा नाराज हो गई थीं। वे दुःखी थीं। सब पर कभी-कभी नाराज हो जाती हैं। वापू कहने लगे, "अभी उसको अच्छा नहीं लगेगा। जब वुलावेगी तब जाऊंगा"।

मैं दूसरे कमरे में गई। वहां देवदासभाई आदि बैठे थे। पेनिसिलीन आ गई है, मगर दोपहर बा की हालत इतनी खराब थी कि वह उनके लिए इस्तेमाल नहीं की। अभी हालत अच्छी थी, सो देवदासभाई को लगता था कि क्यों न आजमाई जावे।

दोपहर बा संतोषबहन से कहने लगीं, "देवदास ने मेरे लिए बहुत धक्के खाये हैं। बहुत सेवा की है।"

देवदासभाई से भी कहा, "तूने मेरी बहुत सेवा की है। बहुत धक्के खाये हैं। अब तू अपना कर्त्तव्य पूरा कर।"

देवदासभाई बोले, "बा, सेवा तो डॉ० गिल्डर, सुशीला, मनु, इन लोगों ने की है। मैंने क्या किया है?"

अंतिम समय पर देवदासभाई के आ जाने से बा को बड़ा आनंद और संतोष था। रामदासभाई के विषय में देवदासभाई ने कहा, "बा, रामदास-भाई आये हैं।" बा बोलीं, "क्या जरूरत थी?" उनके मन में हमेशा यह भावना रहती है कि रामदासभाई को सफर का खर्च नहीं पड़ने देना चाहिए। देवदासभाई से बात करके बा ने आंखें बंद कर लीं और ईश्वर की प्रार्थना करने लगीं—"हे कृपालु राम, अब तो तेरी भक्ति चाहिए, तेरा ही प्रेम चाहिए।" पीछे बोलीं, "हे भगवान, पशु की तरह पेट भर-भर कर खाया है। क्षमा करना।"

उनकी वृत्ति बिलकुल सात्त्विक हो गई थी—उनका चेहरा उस समय देखने लायक था।

शाम को साढ़े पांच बजे भंडारी और शाह पेनिसिलीन लाये। डॉ० गिल्डर को बापू का मत जानते हुए उसे देने में संकोच होता था। भंडारी और शाह ने बापू से पूछा तो वे बोले, "सुशीला और डॉ० गिल्डर देना चाहें तो भले दें।" थोड़ी देर बाद डॉ० गिल्डर ने मुझसे आकर कहा कि बापू बिगड़ रहे हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं था कि पेनिसिलीन के इंजेक्शन बार-बार देने पड़ेंगे। बापू का मत है कि बा मृत्यु-शय्या पर हैं, इसलिए अब पेनिसिलीन क्या देना। और लोगों का मत है कि जबतक श्वास है तब तक उपाय करना चाहिए। इतने में बापू ने मुझे देखा, पूछा, "तुमने क्या

तय किया है ?" मैंने कहा, "पेनिसिलीन देंगे।" बापू बोले, "क्या तुम और डॉ० गिल्डर, दोनों मानते हो कि देनी चाहिए ?" मैं 'हां' न कह सकी। देवदासभाई से बातें करते समय यही बात हुई थी। मुझको निराशा हुई—इसलिए कि बा को बचाने का उपाय होते हुए भी उसका उपयोग नहीं कर पा रही हूं। साथ ही मानसिक शांति भी मिली कि व्यर्थ ही बा के शरीर को छेदना नहीं पड़ेगा।

प्रभावतीबहन अभी बा के पास जा बैठी थीं तब बा ने करुण स्वर में पुकारा था—"बापूजी !"

प्रभावतीबहन ने कहा, "बुलाऊं ?" बा कुछ बोलीं नहीं। बापू सवा सात बजे घूमने को चले जाते हैं। आज पेनिसिलीन के कारण पहले डॉ० गिल्डर से बात की, पीछे देवदासभाई को समझाया। सो उन्हें देर हो गई थी। जाने के लिए गुसलखाने में तैयार होने को आये। इतने में प्रभावतीबहन ने बुलाया। बापू आकर बा के पास बैठ गए। बा दो बार उठकर सीधी बैठीं। बहुत बेचैन थीं। बापू ने पूछा, "क्या होता है ?"

अजाने प्रदेश में खड़े एक छोटे बालक की तरह अत्यंत करुण स्वर और तोतली जबान से उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ पता नहीं चलता।"

मैंने नाड़ी देखी—बहुत कमजोर थी। मगर मुझे लगा कि ऐसा तो कई बार हो चुका है, बा अभी ठीक हो जावेंगी। इसलिए मैं बरामदे में कनु से कहने गई कि अब फोटो ले लो। मगर उसने कहा कि बापू ने मना किया है। मैंने कहा कि फोटो के बारे में उन्होंने कहा था कि अकस्मात ले लोगे तो भले ले लेना, अब उसके लिए भी मना कर रहे हैं।

बा के भाई माधवदास आये। बापू कहते थे कि बा ने उन्हें पहचाना, उनकी आंखों में पानी आया, परंतु वे उनसे बात नहीं कर सकीं।

इतने में भीतर कुछ गड़बड़ सुनी। देखा कि बा अंतिम बार उठने की कोशिश कर रही हैं और बापू कह रहे हैं, "अब पड़ी ही रह न !" बा उनकी गोद में पड़ गईं, आंखें पथरा-सी गईं और गले में घड़घराहट आरंभ हो गई। ये सब मृत्यु के स्पष्ट लक्षण थे। अचानक श्वास लेने के लिए

मुंह खुल गया और दो-चार श्वास लेकर बा सांसारिक बंधनों से मुक्त हो गईं।

: ६६ :

बा चली गईं

बापू ने सब तकिये निकालकर बा का सिर अपने हाथ पर ही टिका लिया। खाट की आड़ की गई थी, वह नीची कर दी गई। सब लोग आसपास खड़े थे। बापू ने आंखें बंद कर लीं। अंत समय में सब लोग 'राजाराम राम राम सीताराम राम राम' गाने लगे। मेरे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। किंकर्त्तव्य विमूढ़ की भांति मैं खड़ी रह गई। डॉक्टर होकर भी मृत्यु को तटस्थता से देखना मैंने नहीं सीखा।

दो-तीन रोज से बार-बार यही भावना उठती है कि ईश्वर किस प्रकार मनुष्य का घमंड उतारता है। जमनालालजी की मृत्यु की खबर सुनी तो लगा कि मैं पास होती तो उन्हें बचा लेती। उसके बाद ईश्वर ने मिनटों में दूसरा अवसर मेरे सामने महादेवभाई की मृत्यु का रखा तब मुझे लगा कि मेरे पास सब साधन न थे—जेल में सब साधन कहां से होते। आज ईश्वर ने बा को मेरे ही सामने उठाया और चुनौती-सी दी कि कुछ कर सकती है तो कर; मैं कुछ न कर पाई। गिल्डर-जैसे अनुभवी डॉक्टर, शर्मा-जैसे कुशल वैद्य और दीनशा-जैसे प्राकृतिक चिकित्सक, कोई बा के काल को न टाल सका।

७-३५ पर बा की आत्मा मुक्त हुई। रामधुन पूरी हुई। देवदासभाई फूट-फूट कर रोने लगे और 'बा-बा' पुकारने लगे। बापू ने उन्हें शांत करने का प्रयत्न किया। सब की आंखें भीग गईं, पर मेरी सूखी थीं। अभी तक मेरी विमूढ़ता दूर न हुई थी। अवसर आने पर हमेशा मेरा ऐसा ही हाल रहा है। महादेवभाई की मृत्यु के समय भी ऐसा ही हुआ था और अपने काका की मृत्यु के समय भी।

आखिर बापू उठे और मुझसे कमरा खाली करवाने को कहा। बा को स्नान कराने के बारे में आदेश देते हुए बोले, "तू और मैं दोनों मिलकर बा को स्नान करावेंगे, जैसा कि महादेव के वक्त किया था।"

बा को आज विशेष लाल किनारी की साड़ी, जो बापू के काते हुए सूत से बनाई गई थी, पहनाई जायगी। बा जब बापू के साथ सेवाग्राम से बंबई जाने लगीं तब यही साड़ी उन्होंने मनु को दी थी।

अफवाह थी कि आश्रम जब्त हो जावेगा। इसीलिए बा ने कहा, "यह मेरी साड़ी संभाल कर रखना। जब मैं मरूं तब मुझे यह पहननी है। दूसरी तो बापू के हाथकते सूत की कौन जाने कब मिलेगी।"

मनु ने तब यह जानकीबहन के यहां रखवा दी थी। बा यह साड़ी यहां मंगवाना चाहती थीं, मगर पता न चला था कि कहां रखी है। मनु जब यहां आई तो उसने आश्रमवालों को एक पत्र लिखा और बा के लिए उसे मंगवा लिया। आज बा के लिए यह साड़ी पहनने का दिन आ गया।

बा के शव को बापू के स्नान-घर में रखा। इतने में भंडारी आ गए। सरकार ने पुछवाया था कि शव के बारे में बापू की क्या इच्छा है। बापू ने तीन प्रस्ताव सरकार के सामने रखे :

"(१) सबसे अच्छा तो यह होगा कि शव मेरे लड़कों व रिश्तेदारों को सौंप दिया जाय। इसका अर्थ यह होगा कि अंत्येष्टि-क्रिया आम जनता के सामने होगी और सरकार उसमें रुकावट न डालेगी।

"(२) अगर यह न हो सके तो महादेव की भांति दाह-क्रिया यहीं हो। सरकार यह कहे कि सिर्फ रिश्तेदार ही क्रिया के समय हाजिर रह सकते हैं तो मैं इसे स्वीकार न कर सकूंगा, जबतक कि वे सब मेरे मित्र, जो मेरे लिए कुटुंबियों के समान हैं, उसमें शामिल न हो सकें।

"(३) अगर सरकार को यह भी मंजूर न हो तो वे सब लोग, जिन्हें बा से मिलने के लिए यहां आने की इजाजत दी गई थी, वापस चले जायंगे

और अंत्येष्टि-क्रिया में वे ही मौजूद रहेंगे, जो मेरे साथ यहां नजरबंद हैं।"

तब बापू भंडारी से कहने लगे, "बा अपना राज्य लेकर चली गई, अब मेरा राज्य है। उसकी खातिर मैं बहुत-सी बातों को बर्दाश्त कर लेता था, मगर अब मुझे वैसा करने की जरूरत नहीं। मेरे लिए मित्रों और रिश्तेदारों में कोई फर्क नहीं है।"

बापू कहते गए, "आप साक्षी हैं कि अपनी पत्नी की इस सख्त बीमारी से किसी प्रकार का राजनैतिक लाभ न उठाने की मेरी हमेशा कोशिश रही है, मगर हमेशा मेरी इच्छा यह रही है कि सरकार जो कुछ भी करे, अच्छे ढंग से करे। मुझे डर है कि आज तक उसका अभाव रहा है। क्या यह आशा रखना बड़ी बात होगी कि कम-से-कम मरीज की मृत्यु के बाद सरकार जो कुछ करेगी, अच्छा ही करेगी!"

भंडारी के पूछने पर बापू ने बताया कि मित्रों की संख्या लगभग सौ होगी और देवदास ही निश्चित करेगा कि कौन आवे, कौन नहीं।

उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि सार्वजनिक दाह-क्रिया होगी तो जनता का प्रदर्शन पूर्णतया शांत होगा। "मेरे लड़के मर जायंगे, मगर अशांति नहीं फैलने देंगे।"—बापू ने कहा।

बा जब विदा ले रही थीं तब मथुरादासभाई सपरिवार दरवाजे पर खड़े थे, मगर उन्हें अंदर नहीं आने दिया गया। भंडारी ने बापू से कहा, "अगर वे अंदर आकर फिर बाहर गये तो खबर फैल जायगी और फलस्वरूप शहर में गड़बड़ हो सकती है।"

बापू बोले, "अगर वे भीतर आ जावें और एक-दो घंटे यहीं रहें तब तक आप सरकार से हुक्म जारी करा सकेंगे तो सब काम ठीक हो जायगा न? बजाय इसके कि सड़क पर खड़े-खड़े इंतजार करें, अंदर हों तो ज्यादा अच्छा होगा।" इस पर मथुरादासभाई को भीतर आने की इजाजत मिली।

बापू बा के शव को नहलाने से पहले मुंह-हाथ धोने लगे। इतने में

कटेली साहब बापू के पास आये और बोले, "दाह-क्रिया यदि सार्वजनिक रूप से हो तो आप बाहर तो न जाना चाहेंगे ? "

बापू ने उत्तर दिया, "मैं नहीं जाऊंगा। मेरे लड़के ही सब-कुछ कर लेंगे।"

शव को स्नान कराते समय बापू ने कहा कि जो बहनें चाहें, अंदर आ सकती हैं। मैं और बापू साबुन लगाकर बा का शरीर साफ करने लगे और प्रभावतीबहन पानी डालने लगीं। मनु और कनु बा के कमरे में फिनाइल का पोता लगा रहे थे। मैंने बा के बाल धोये और पैर साफ किये। फिर पीठ साफ की।

बा को नहलाकर और शरीर पोंछकर जेल के एक चादर पर लिटा दिया और उस पर गंगाजल छिड़का। इसके बाद उन्हें बापू के सूत की लाल साड़ी पहनाई। श्रीमती ठाकरसी की भेजी हुई हरे किनारे की एक साड़ी को गंगाजल में भिगोकर सुखाया और शव के नीचे बिछा दिया। बा के बालों को कंघी की। बापू कहने लगे कि बालों को खुले ही रहने दो। बा के बाल बांधने की डोरी उन्होंने स्वयं धोई।

बा की कंठी और चूड़ियां उतार ली गईं। मनु ने बा की कंठी के साथ-साथ बापू से बा की चूड़ियां भी ले लीं।

संतोकबहन ने तुलसी की एक नई कंठी बा को पहनाई और बापू के सूत का हार भी उनके गले में डाला। बापू के सूत को रंगकर उसके गजरे बनाए और बा के हाथों में पहनाये। मनु मशरूवाला ने माथे पर कुंकुम का लेप किया और चंदन का टीका लगाया। ऐसा लगता था, बा सो रही हैं। बहुत सुंदर लगती थीं।

उन्हें उठाकर बाहर लाये। एक जेल की चादर पर उन्हें लिटाया। मीराबहन ने चूने से एक लंबी चौकी बनाई थी। चौकी के सिरहाने ॐ बनाया था और पैताने 卐 बनाई थी। मृत्यु के बाद व्यक्ति लंबा हो जाता है। यह अनुभव मुझे महादेवभाई की मृत्यु के समय पर पहली बार हुआ और आज भी उसी की पुनरावृत्ति हुई। बा के पैरों ने 卐 को ढक लिया। उनके सिरहाने और पैताने 'हे राम' के चित्र शोभित हो रहे थे। हम लोग कंबल बिछाकर बा के चारों ओर बैठ गए।

इतने में भंडारी सरकारी जवाब लेकर आये और बताया कि आम जनता के सामने दाह-क्रिया करने की इजाजत तो सरकार नहीं दे सकती, मगर मित्र और रिश्तेदार सौ तक की संख्या में यहां सम्मिलित हो सकते हैं। देवदासभाई दरवाजे पर रहकर जिसे अंदर आने देना चाहेंगे, वे सभी अंदर आ सकेंगे। स्वामी आनंद, श्रीमती ठाकरसी और शांतिकुमार भी आ पहुंचे। मीराबहन और मनु वगैरा ने शव पर फूल चढ़ाये। जो दीपक बा तुलसी के पौधे के पास रखा करती थीं, वहीं घी का दीपक बा के सिर के पास आज जल रहा है। दोनों तरफ धूप सुलगाई गई है।

बापू सिर के पास एक ओर बैठे। प्रार्थना करवाई गई। गीता-पाठ करने वाले बा के पांवों के पास बैठे। उनमें जमनादासभाई, केशुभाई, राधाबहन, भाई, कनु, प्रभाबहन, मनु और मैं थे। पहले बापू ने कहा कि सब जने दो-दो अध्याय बोलें, मगर वह ठीक न लगा। कनु कहने लगा कि सबकी ध्वनि बदला करेगी—अच्छा नहीं लगेगा। मैंने कहा कि देवदासभाई स्वर उठावें—हम सब उनके पीछे बोलेंगे। बापू कहने लगे, "पाठ मधुर नहीं होगा तो मैं कहीं भी बंद कर दूंगा।" अन्य भजनों के साथ-साथ गीता का सम्पूर्ण पारायण एक घंटा २५ मिनट में पूरा हुआ। बापू उसमें एकदम तल्लीन हो गए। बाद में कहने लगे, "बहुत ही अच्छा चला। बड़ा ही मधुर पाठ था। देवदास अपनी पुरानी चीज को भूल नहीं गया, यह मुझे बड़ा अच्छा लगा।"

अब कल कौन-कौन आवेगा, इस पर बात चली। प्रस्ताव रखा गया कि बम्बई से आनेवालों के लिए बा की दाह-क्रिया का समय कल क्या ९ बजे से बढ़कर ११-१२ बजे का नहीं हो सकेगा? बापू ने उत्तर दिया, "मैंने मित्रों को बुलाने की बात जब की थी तब बंबई मेरी कल्पना से बाहर थी। मैंने तो सोचा था कि पूना से ही मित्र लोग आयेंगे। इसलिए तुम लोग बंबई की बात छोड़ दो।"

हम लोगों ने प्रार्थना की, "बापू बा को देखने की कितनी अधिक लालसा लोगों में होगी, आप इसका खयाल करें। और इसी निमित्त

आपके भी दर्शन उन्हें हो जायेंगे तो वे शांति पावेंगे और आज के बाद तो इस महल के दरवाजे पर दोहरा ताला लगनेवाला है ही।"

तब बापू बोले, "तो भी मैं बा की मृत्यु का ऐसा उपयोग नहीं करना चाहता। लोगों को खबर हो जाएगी तो वे आना ही चाहेंगे। फिर हम खामखा क्यों किसी को तकलीफ दें।"

किसी ने कहा, "कम-से-कम फोन तो करने दीजिए कि जिसके पास साधन हों, वे आ सकते हैं।"

मगर बापू नहीं माने। उन्होंने श्रीमती ठाकरसी से कहा कि स्थानीय लोगों को ही बुलावें। इसके बाद मनु और संतोकबहन के सिवा अन्य लोगों को बाहर भेज दिया गया।

बा को पेनिसिलीन देने के बारे में बापू ने मना किया था। उसकी बात करते हुए वे कहने लगे, "ईश्वर ने मेरी श्रद्धा की परीक्षा ली। मना करके मैंने ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा और सिद्धांत की दृढ़ता बता दी। ऐसा न करता तो भी बा को इंजेक्शन देने का समय ही नहीं रहा था।"

मैंने कहा, "हां, पिचकारी अभी उबल ही रही थी कि बा चल दीं।

बापू बोले, "कुछ होनेवाला तो था ही नहीं। मैंने अगर मना न किया होता तो बस मेरी लाज जानेवाली थी।"

देवदासभाई कह उठे, "फोटो के बारे में भी यही बात है। बापू ने मना न किया होता तो भी कनु कुछ कर नहीं पाता। कैमरे में फिल्म बैठाता ही कि इतने में बा चल देतीं।"

एक बजे के करीब बापू खाट पर लेटे। २॥ बजे तक मैं देवदासभाई के पास बैठी। बा के स्मरणों की बात करती रही। प्रभाबहन, मनु मशरूवाला और देवदासभाई शव के पास तीन बजे तक बैठे। तीन से पांच तक कनु और संतोक बहन बैठे। पांच से सात बजे तक मैं और भाई बैठे।

: ६७ :

अंत्येष्टि-क्रिया

२३ फरवरी '४४

बापू साढ़े छः बजे उठे, प्रार्थना कराई और फल का रस लिया। तब उन्होंने सबको नाश्ता करने की सलाह दी, मगर संतोकबहन ने कहा कि शव को जलाकर स्नान किये बिना पानी नहीं पिया जा सकता। हम लोंगों ने कुछ नहीं खाया-पिया। केवल डॉ० गिल्डर और श्री कटेली ने चाय पी।

७॥ बजे बापू फिर रात की जगह आकर बैठ गए। हम लोगों ने बगीचे में से ताजे फूल लेकर सजावट की।

मैं, कनु और कटेली दाह-क्रिया की जगह देखने गए। महादेवभाई की समाधि के पश्चिम की तरफ वाली दीवार हटा दी गई थी। समाधि के पास ही बा के शव के लिए स्थान तैयार हो रहा था। बा हमेशा कहा करती थीं, "मुझे कहां बाहर जाना है! मुझे तो महादेव के पास ही आखिरी नींद में सो जाना है।"

वह सच ही हुआ। मुझे हमेशा आशा रही थी कि बा को अपने साथ लेकर जावेंगे। वह आशा मिट्टी में मिल गई। स्वतंत्रता की वेदी पर इस जेल में यह दूसरा बलिदान हुआ। क्या ऐसे-ऐसे बलिदान हर साल देने पड़ेंगे? हमें यह सहर्ष स्वीकार हो सकता है, मगर भगवान बापू को इस जेल से सही सलामत बाहर निकाले और पूर्ण विजयी बनने की शक्ति प्रदान करे। यही अंतरात्मा की प्रभु से विनती है।

धीरे-धीरे लोग बाहर से आने लगे। सबसे पहले नरगिसबहन, पीछे और सब लोग। श्रीनिवास शास्त्री, केलकर, कृष्णा हठीसिंग और उनके पति आदि आये। पता लगा कि शांतिकुमार की पत्नी हवाईजहाज से आ रही हैं।

महादेवभाई की दाह-क्रिया जिन ब्राह्मणों ने कराई थी, वे ही फिर आ पहुंचे।

कटेली ने शव के लिए शुद्ध खादी मंगाई थी, लेकिन बापू ने उसे यह

कह कर अलग करा दिया कि "खादी बेकार जलाना नहीं चाहता। यह गरीबों के काम आवेगी।"

रात को श्रीमती ठाकरसी ने चंदन की लकड़ी के बारे में बापू से बात की। बापू ने उत्तर दिया, "जब मैं गरीबों को चंदन की लकड़ी से नहीं जला सकता तो बा को, जो उस व्यक्ति की पत्नी है जो अपने-आपको गरीब-से-गरीब मानता है, चंदन से कैसे जला सकता हूं।"

कटेली बोले, "मेरे पास चंदन के दो पेड़ कटे पड़े हैं।" बापू कहने लगे, "तुम तो जो दोगे, वही काम में आएगा। आखिर सरकार को ही तो सारा इंतजाम करना है।"

ब्राह्मणों और रिश्तेदारों ने मिलकर अर्थी तैयार की। ब्राह्मण लोग देवदासभाई से पूजा करवाने लगे। इसके पहले मनु मशरूवाला ने बा की आरती उतारी थी। 'वैष्णवजन' वाला भजन गाया गया और रामधुन गाई। यह सब हो चुकने पर सब लोगों ने बा को प्रणाम किया। मैं स्वयं बा के चरणों पर सिर रखकर अपनी भूलचूकों के लिए क्षमा मांगने लगी। उस समय मैं अपने-आपको रोक न सकी, आंखों से आंसू गिरने लगे।

लीलावती आसर आईं, कल दिन भर पूना में थीं; मगर जीवित बा के दर्शनों का सौभाग्य उनके लिए नहीं था। बापू की गोद में गिरकर फूट-फूट कर रोने लगीं। जब लोग आने लगे तो दरवाजे के पास ही खड़े हो गए। मृदुला भी पहुंच गई। बालुकाका गेरुवे कपड़े पहने एकतारा और करताल बजाते हुए कीर्तन कर रहे थे। लोग दर्शन करके बगीचे में जाकर बैठते थे।

साढ़े नौ बजे के बाद अर्थी सजी। बालुकाका के लाये हुए तिरंगे झंडे से शव को ढंक दिया गया। सिंदूर में रंगे हुए सूत की आंटियों से शव को अर्थी पर बांधा गया। यह सूत मेरा काता हुआ था। झंडे को फूलों से सजाया।

कनु ने उस समय कई फोटो लिये। जीवित बा के पास बैठे हुए बापू का चित्र तो वह न ले सका, पर मृत बा के पास बैठे हुए बापू का फोटो लिया। फोटो लेकर कैमरा श्री कटेली को सौंप दिया गया। वे ही सब सामान अपने पास रखेंगे।

श्मशान में कुछ आवश्यक पूजा आदि के पश्चात कनु, जयसुखलालभाई, शांतिकुमारभाई, कमलनयन बजाज वगैरा ने चिता की लकड़ी चिनी। शव को चिता पर रखवाकर बापू ने प्रार्थना करवाई। ईशावास्यमिदं सर्वं, असतो मा सद्गमय, अउज़-अ-बिल्ला, मजदा अ मोइ वहिश्ता, व्हेन आई सर्वे दि वंडरस क्रॉस, मंगल मंदिर खोलो, रामधुन (राजा राम राम) तथा गीता के बारह अध्याय चले।

तब देवदासभाई ने साढ़े दस बजे चिता में आग दी।

बापू एक लकड़ी का सहारा लिये खड़े थे। कुछ लोगों ने दौड़कर कुर्सी का प्रबंध किया और कुछ ने उनसे बैठने की प्रार्थना की; पर बापू ने बैठने से इंकार कर दिया। मीराबहन ने बापू के ऊपर अपने छाते से छाया कर ली।

ज्वाला जब खूब भड़की तब लोगों को कुछ पीछे हटना पड़ा। बापू भी हटे और इमली के पेड़ के नीचे जाकर कुर्सी पर बैठे। आशा थी कि बारह बजे तक क्रिया पूरी हो जायगी, मगर अग्निदाह ही साढ़े दस बजे शुरू हुआ।

बा के शरीर में पानी भरा था। इसलिए जलने में बड़ा समय लगा। अधजला शव जब बांस से चिता पर ठीक रखने के खयाल से हटाया जाता था तब बार-बार नीचे लुढ़क जाता था। भयानक दृश्य था। सिर के पास अभी और लकड़ियां रखने की आवश्यकता थी। दूर से फेंकने पर लकड़ियां ठिकाने पर न पड़कर इधर-उधर गिरती थीं। आखिर कनु हिम्मत करके पास जाकर लकड़ी ज्वाला में रखकर आया। उसकी आंखों की पलकें मुंह और हाथ झुलस गए। शांतिकुमारभाई सब समय लकड़ी डालते रहे।

लगभग दो घंटे बाद बापू से कहा कि वे जायं, हम लोग पूरा करके आवेंगे। बापू उठनेवाले थोड़े ही थे, बोले, "६२ वर्ष साथ रहकर अब आखिर के दिन मुझे इतनी क्या जल्दी लगी है! बा भी क्या कहेगी!" यह सुनकर सब चुप हो गए। बहुत-से लोग चले गए और बहुत-से बैठे रहे, पर बापू नहीं उठे।

साढ़े चार बजे सब क्रिया संपन्न हो गई। बापू तब ऊपर आये। मैं स्वयं साढ़े तीन बजे के बाद बहुत घबरा गई थी। धूप में खड़े रहने से प्यास बढ़ रही थी, थकान थी और सिर चकरा रहा था। इतने में आई हुई एक बहन ने कहा कि उसे गुसलखाने में ले चलूं। कटेली से पूछकर मैं उसे ऊपर ले गई। जाकर पहले तो ठंडे फर्श पर लेट गई, फिर स्नान किया। स्नान के बाद भी नीचे नहीं आ पाई। चार बजे कृष्णा हठीसिंग ऊपर आईं। उनके सिर में दर्द था। डॉ० गिल्डर ने 'एस्प्रिन' दी, चाय पिलाई। दुबारा नीचे आई तो बापू ऊपर आ रहे थे। उनके स्नान की तैयारी कराई। मगर उन्हें तो पहले सबको विदा करना था। सो कुछ लोग बरामदे में खड़े रहे। आखिर सब लोग एक-एक करके चले गए तब बापू ने स्नान करके भोजन किया। केवल देवदासभाई इसलिए रह गए कि उन्हें बा के फूल चुनकर शुक्रवार के दिन जाना है। शुक्रवार तक वे बाहर न जा सकेंगे।

रामदासभाई अभी तक नहीं आये। आये तो यहां रह सकेंगे। छः बजे भंडारी आये। बापू ने उनसे कहा कि बा की सेवा के लिए जो लोग आये थे, उनमें से कनु भले जावे, मगर थोड़े दिन बाद। उसे बाहर बहुत काम है। मनु यहां अभ्यास के लिए रहना चाहती है। बापू रखने को तैयार हैं—सरकार रहने दे तो। नहीं तो उन्हें अपने पास उसे रखने का कोई कारण नहीं है। प्रभा तो कैदी हैं। उनको या तो यहीं रहने दें, अगर यहां से ले ही जाना हो तो उन्हें बिहार वापस ले जावें। दूसरी जगह न ले जाव। भंडारी ने इन बातों को ध्यान में रखने का वचन दिया।

देवदासभाई और भाई साढ़े छः बजे खाने को बैठ ही रहे थे कि रामदास-भाई आ पहुंचे। उन्हें बहुत सदमा हुआ था। खूब रोये। देवदासभाई उन्हें चिता के स्थान पर ले गए। उसके बाद वे स्नान करने गए। देवदास-भाई और भाई खाने को बैठे। रामदासभाई को मनु ने खाना खिलाया। ७। बजे हम सब नीचे गये—महादेवभाई व बा को फूल चढ़ाये, फिर सवा आठ बजे प्रार्थना हुई। बा के शव वाले स्थान पर घी का दिया जलाया और धूप अगरबत्ती सुलगाई। घर सूना है। बा का कमरा सूना है।

हम सबका मन सूना है। बा की मृत्यु आदर्श भले ही हो, मगर करुण भी बहुत है। उनकी तीव्र इच्छा थी कि एक बार बाहर जाकर अपने लड़के-बच्चों के बीच बैठें, मगर ईश्वर को यह मंजूर न था।

बातों के दौरान में बापू से पूछा गया कि बंगाल के दुष्काल के बारे में उनका मत क्या है। बापू ने कहा, "मैं मानता हूं कि कांग्रेस बाहर होती तो यह होता ही नहीं, अर्थात कांग्रेस उसको निबटा लेती और इतने लोग नहीं मरते।" इस पर किसी ने पूछा, "तो क्या इसका यह मतलब नहीं कि कांग्रेस को किसी भी तरह बाहर न जाना चाहिए? कई लोग कहते हैं कि क्या ऐसी हालत में अपने स्व-मान को लेकर जेल में बैठे रहना अनुचित नहीं है?" बापू ने उत्तर दिया, "अपना स्व-मान रखने के लिए जो जेल में जाता है, वह मूर्ख है।"

प्रश्नकर्त्ता ने जल्दी से अपना प्रश्न सुधारा, "अपना स्व-मान नहीं, देश का स्व-मान।" बापू बोले "जो देश के स्व-मान की खातिर प्राणों की बाजी नहीं लगाता, वह मूर्खों का सरदार है। बात यह है कि आज की परिस्थिति में कांग्रेस बाहर रहकर भी कुछ नहीं कर सकती। उसके हाथ में सत्ता हो तभी कर सकती है, और वह है नहीं। इसीलिए कांग्रेस आज बाहर नहीं है।"

इसके बाद दूसरी बातें हुईं। पता चला है कि सरकार के गोपनीय आंकड़ों के अनुसार सन् '४२ की लड़ाई में हमारे ५०,००० आदमी उन्होंने मार डाले हैं। मगर ऐसी चीज वह प्रकट थोड़ा ही करने देनेवाले हैं।

प्रार्थना के बाद बापू ने काता। कुछ तार आये थे। भाई वह पढ़कर सुनाते रहे। थोड़ा समय बातें चलीं। सोने को गए तो १२ बजे थे। मैं तो खाट पर साढ़े बारह बजे जाकर पड़ी, मगर नींद कहां! दो बजे का घंटा सुनने के बाद सो सकी। सोचा था कि डायरी पूरी करने के बाद सोऊंगी, मगर सब सोने को चले गए थे। बा के कमरे के सिवा और कहीं बत्ती नहीं जलाई जा सकती थी; क्योंकि सब जगह लोग सो रहे थे। बा के कमरे में इतना सूना लगता था कि वहां बैठना कठिन था, इसलिए जल्दी खाट पर जा पड़ी।

देवदासभाई ने बापू के पैरों की मालिश की, भाई ने सिर की। रामदासभाई संकोचवश नहीं गये थे—"कहीं ठीक न कर सकूं तो!" यह बात उनके नम्र स्वभाव की सूचक थी।

: ६८ :

वियोग-वेदना[1]

२४ फरवरी '४४

सुबह प्रार्थना के लिए सब उठे। प्रार्थना मधुर थी। बाद में कुछ लोग सो गए। कनु, प्रभा और मनु—तीनों कातने बैठे। देवदासभाई ने कहा था कि घूमने के समय उन्हें जरूर जगा लिया जाय। एक बार उन्हें जगाया। वे फिर सो गए। पहले विचार किया कि दुबारा न जगाया जाय, मगर फिर उनके आग्रह का विचार करके और यह सोचकर कि वे यहां दो-तीन दिन ही हैं, कौन जाने बापू से फिर कब मिल पावेंगे, उन्हें फिर जगा दिया।

बापू सुबह घूमने जाने लगे तब सभी लोग उनके साथ हो लिये। बापू यह देखकर बोले, "आज तो मंडल भरा है। जो बात बा के जीते-जी न हो सकी, वह उसके चले जाने के बाद अपने-आप हो गई है।"

बा की समाधि के स्थान पर हम लोग गये। चिता अभी तक धधक रही थी। बापू ने कहा कि राख रखनी हो तो अभी रख ली जाय, मगर देवदासभाई ने कहा कि अभी तो पूरे २४ घंटे भी नहीं हुए हैं। श्री कटेली और डॉ० गिल्डर भी फूल लाये। कुछ सिपाही भी फूल लाये थे। समाधि को सजाकर प्रार्थना की।

महादेवभाई की समाधि को फूलों से खूब सजाया और प्रार्थना पूरी की। बा की एक बात याद आ गई, दिल भर आया। वे कहा करती थीं, "मुझे तो महादेवभाई के पास जाकर आखिरी नींद सोना है।"

---

१. यह विवरण २७ फरवरी को लिखा गया था।

आज सचमुच ही वे महादेव के पास ही पड़ी हैं। उनकी याद के सामने मुझे शकुंतला की याद भूल गई है।

खाने के समय बापू को समवेदना के १५० तार पढ़कर सुनाये गए। चार बजे के करीब बा का सामान खोला गया और देवदासभाई की सहायता से यह निश्चित किया गया कि बा की कौन-सी चीज किसे देनी है। पिछले साल बा ने एक सफेद शॉल मुझे दिया था। देवदासभाई ने वह मुझे फिर दे दिया। मेरा आग्रह यह था कि घर के आदमियों को देने से कुछ बचे तो मुझे दिया जाय। भाई के सूत की एक साड़ी बा के पास थी। वह देवदासभाई मुझे देने लगे। भाई ने वह लक्ष्मी भाभी को देने को कहा। मैंने कहा, "मुझे साड़ी देनी ही हो तो राजकुमारी के सूत की कती हुई साड़ी, जो पिछले साल नये वर्ष के दिन मुझे बा देना चाहती थीं, वह दे दीजिए।" अंत में देवदासभाई ने बा का बिस्तर खोलकर वह निकाली और मुझे दे दी। बा का नमदा बापू के लिए रखा गया।

रात को बापू ११ बजे तक बात करते रहे। बा के स्मरणों की बातें थीं।

बा के श्राद्ध के बारे में बातें करते समय देवदासभाई कहने लगे, "गंगा में अस्थियां प्रवाहित करने से कोई लाभ नहीं होगा।" परंतु बापू बोले, "बा की श्रद्धा और भक्ति के विचार से उसकी अस्थियां गंगा में ही जानी चाहिएं।" बाद में प्रयाग ले जाना तय हुआ। बापू १२ बजे के बाद सोये।

रामदासभाई और देवदासभाई ने मिलकर बापू की मालिश की। दोपहर को रामदासभाई ने उनके पैरों की मालिश की थी।

२५ फरवरी '४४

सुबह की प्रार्थना में देवदासभाई ने भजन गाया। बड़ा ही मधुर था। बेचारे रात को सो नहीं सके थे। बहुत खिन्न चित्त हैं। अभी कह रहे थे, "जीवन का सब सौंदर्य और माधुर्य धीरे-धीरे जा रहा है। पहले महादेव-भाई गये और अब बा।"

भाई से बातें करते-करते कहने लगे, "क्या कहूं, तुम लोग अंदर हो और हम बाहर हैं; मगर बा पर जो यहां बीती, वह मुझपर कितने अरसे

से बीत रही है। ऐसा लगता है कि जीवन में से कुछ हमेशा के लिए चला गया है और पहले जैसे दिन अब वापस आनेवाले नहीं हैं।"

भाई बोले, "हां, एक ही आश्वासन है कि थोड़े ही दिनों में हमें भी अनंत विश्राम करने को मिलेगा। हमारे प्रियजन पहले से ही वहां हमारी राह देख रहे हैं। वहां जाकर फिर सब इकट्ठे होंगे।"

सुबह जब हम लोग घूमने गए तो मनु और प्रभावती ने बा के शव की राख शीशियों में भर ली। कल शाम को भी भरी थी। चिता पर बा के शव के साथ पांच कांच की चूड़ियां भी डाली गई थीं। प्रभावतीबहन और रघुनाथ को पांचों चूड़ियां मिल गईं। इतनी प्रचंड ज्वाला में भी वे न तो पिघलीं और न टूटीं। ब्राह्मण कह रहा था कि यह शुभ शकुन है, अखंड सौभाग्य का चिह्न है।

ब्राह्मण एक बजे आया। देवदासभाई से पूजा कराई। चिता अभी तक बड़ी गरम थी, इसलिए अस्थियां चुनने से पहले पानी डालना पड़ा। अस्थियां चुनी जाने के बाद राख इकट्ठी की गई। बापू पहले तो खड़े रहे, पर बाद में नीम के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गए। हरिलालभाई भी आ पहुंचे।

साढ़े दस बजे ब्राह्मण ने बापू से कहा कि पौन घंटे बाद उनकी जरूरत पड़ेगी। इस पर बापू मालिश आदि पूरी करवा कर ११॥ बजे फिर नीचे गए और आवश्यक पूजा वगैरा पूरी की। इसके बाद उन्होंने ऊपर आकर खाना खाया।

चिता पर से आकर देवदासभाई और रामदासभाई ने स्नान किया। एक बजे देवदासभाई, रामदासभाई, हरिलालभाई तथा भाई एक साथ भोजन करने बैठे। बापू हरिलालभाई को खाने के समय देखने आये। हरिलालभाई के दांत तो हैं नहीं, इसलिए डबल रोटी, कोको और सब्जी ले रहे थे। खाते-खाते कहने लगे, "यह सब मुझे दक्षिण अफ्रीका की याद दिलाता है।"

मैं सोच रही थी कि अपने बेटों को एक साथ बैठे देखकर उन्हें खिलाते हुए बा कितनी खुश होतीं। देवदासभाई कहने लगे कि बा होतीं तो वे भी बापू की तरह हरिलालभाई को देखने आतीं।

बापू ने हरिलालभाई से बातें कीं।

बा की चीजों को अपने यहां रखने के लिए किसी संग्रहालय ने बापू से प्रार्थना की थी। बापू को यह नापसंद है। कहते हैं, "यह तो मूर्ति-पूजा हुई। जो बा को पहचानते हैं, जिन्होंने बा की सेवा और भक्ति की है, वे भले ही बा की चीजें अपने पास रखें। मनु बा का डोरा पहनती है तो उसे लगेगा कि यह डोरा पहनकर कोई भी बुरा काम कैसे किया जा सकता है। मैं इस तरह की योजना पसंद करता हूं, लेकिन संग्रहालय में कोई चीज रखना मुझे पसंद नहीं है।"

प्रार्थना के बाद तीनों भाई सामान संभालकर चलने लगे। देवदासभाई ने जो साड़ी लक्ष्मीबहन के लिए निकाली थी, वह मुझे मेरे आग्रह पर दे दी। अब लक्ष्मीबहन को वह साड़ी मिलेगी, जिसे भाई ने बा के लिए बनाया था। मुझे यह बात अच्छी लगी। गर्मी के दिनों में बा की साड़ी पहनूंगी और ठंढक के दिनों में उनका दिया हुआ शाल ओढ़ूंगी।

रात को पौने दस बजे तीनों भाइयों को विदा किया। देवदासभाई जब बा का बिस्तरा बांध रहे थे तब बापू उधर से गुजरे और बोले, "देखो, बिस्तरा वैसे ही बांधना जैसे बा बांधती थी।" बा सचमुच ही अपना बिस्तरा बड़ी सुघड़ता से बांधती थीं।

२६ फरवरी '४४

आज महादेवभाई की निधन-तिथि है। मगर अब उनके पास बा भी पहुंच गई हैं।

बा की मृत्यु के धक्के से बापू अभी संभल नहीं पाए हैं। बासठ वर्ष का साथ—विलायत के तीन वर्ष और जेल-यात्राओं आदि के कुछ और समय के अलावा वे कभी बा से अलग नहीं रहे। बचपन में भी वे साथ खेला करते थे। शादी से भी पहले यानी बासठ वर्ष से पांच-सात वर्ष पहले से वे दोनों साथ में खेला करते थे। ऐसे साथी का चला जाना साधारण घटना नहीं है।

देश को बा के जाने का भारी धक्का पहुंचा है। सैकड़ों तारों के अलावा

मालवीयजी का भी तार देवदासभाई के नाम आया है कि बा के फूल लेकर त्रिवेणी आओ। देवदासभाई तो पहले से ही तैयार बैठे हैं।

बा की राख का बोरा एक मोटर में रखकर देवदासभाई अन्य लोगों के साथ गये।

सुबह ८। बजे बापू घूमने निकले। उनके और मनु के अलावा सबने स्नान कर लिया था। ८।। बजे बा और महादेवभाई के 'मंदिर' पर फूल चढ़ाने गये। बापू ने बा की समाधि पर गुलाब का फूल चढ़ाया। मीराबहन ने इस फूल को बीच में रख कर चारों ओर फूल सजाये। सबने अपनी-अपनी पुष्पांजलि अर्पित की। डॉ० गिल्डर और कटेली अभी रोज आते हैं, थोड़े फूल भी लाते हैं। सजावट होने पर बारहवें अध्याय का हमेशा की तरह पाठ होता है। कनु और प्रभावहन ने बापू की मालिश की। प्रभाबहन ने स्नान कराया और कनु ने उनके कपड़े धोये। मनु ने खाना दिया।

आज शाम को बापू कहने लगे, "मेरा मन बा को छोड़कर और किसी चीज का विचार ही नहीं करता। आज 'डॉन' में एक लेख पढ़ते-पढ़ते मुझे लगा कि वेवल कौन है—वाइसराय है या और कोई!" मैक्सवेल के व्याख्यान को लेकर जो पत्र बापू ने लिखा था, उन्होंने उसे खाने के समय सुधारा और कनु ने उसे टाइप किया।

मैंने बापू से कहा, "बापू, बा के जाने का असर आप पर महादेवभाई के जाने से भी अधिक हुआ है।" बापू बोले, "हां, हो सकता है। महादेव तो क्षणभर में चला गया, मगर बा ने हफ्तों तक कठिन वेदना सही। मुझे वे दिन भूलते ही नहीं हैं।" बापू दो बजे बाद सोये और तीन बजे उठे। तब बा की मृत्यु पर आये हुए गवर्नर के पत्र का उत्तर लिखा। मिट्टी की पट्टी पेट पर रखकर सो गए। उनका रक्तचाप इस समय आदर्श है। सुबह १७०/९८ तथा शाम को १५६/९६ रहा। मगर थकान बेहद है।

जिस मेज पर बा सिर रखकर सोती-बैठती थीं, वह बापू के आदेश से उनके पास लाई गई। इस पर अब उनका नाश्ता रखा जायगा। कहते हैं, "मेरे लिए यह मेज बड़ी ही कीमती हो गई है। इस पर सिर रखे बा

का चित्र मेरे सामने हमेशा रहता है। एक ओर मुझे इस बात से संतोष है कि बा मेरे हाथों-ही-हाथों गई और दूसरी ओर ६२ वर्ष से भी अधिक समय की साथिन को खोकर मैं दिग्मूढ़-सा हो गया हूं।" शाम को घूमते हुए भी बा की बातें होती रहीं।

अंत समय की बात करते हुए बापू बोले, "बा का इस तरह अंतिम समय मुझे बुलाना और मेरी गोद में जाना यह एक अद्‌भुत बात है।"

मैंने उत्तर दिया, "बापू, इससे साफ जाहिर होता है कि ऊपर से बा चाहे जितना भी आपसे नाराज रही हों, अंदर से आपमें उनकी बड़ी श्रद्धा और अटूट प्रेम था। मझे कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिला कि जहां पत्नी इस तरह से पति की गोद में सोई हो।"

बापू बोले, "वह तो है ही, मैंने स्वयं ऐसा उदाहरण कहीं नहीं पाया। हम लोगों में तो ऐसा पति-पत्नी-संबंध सामान्यतः रहता ही नहीं है।"

पढ़ने की बात करते हुए बापू बोले, "पढ़ना तो शुरू करना ही है।" मैंने कहा, "बापूजी, थकान दूर हो जाने दीजिए। इसमें एक या दो हफ्ते भले चले जायं।" बापू कहने लगे, "हां, थकान तो मुझे बहुत है। बस अभी मुलतवी रखेंगे।"

शाम को ७। बजे घूमने निकले। फूल चढ़ाकर ८ बजे लौटे। ८। बजे प्रार्थना की। बाद में बापू अखबार पढ़ते रहे।

२७ फरवरी '४४

प्रार्थना के बाद थोड़ा सोये। घूमने जाने में मुझे देरी हो गई। प्रभाबहन और मनु के यहां रह सकने के प्रश्न पर आज बापू ने भंडारी साहब को गुसलखाने में ही बुलवाकर पूछा। भंडारी ने उत्तर दिया कि वे बंबई से कुछ जवाब भेजेंगे। बापू ने कहा कि क्या सरकार को इस बारे में पत्र लिखा जाय? भंडारी बोले कि हां, इससे उन्हें काम बनाने में बड़ी मदद मिलेगी।

एक बजे बापू ने खाना खाया। मनु ने पैरों की मालिश की। मंगलवार को बा की मृत्यु को आठ दिन हो जावेंगे। मनु के कहने से हम लोगों ने उस रोज अखंड चर्खा चलाने का क्रम बनाया। बापू सुबह ७-३० से

८-३० तक कातेंगे। अखंड चर्खा शुरू करेंगे और बुधवार को शाम के ६-३५ से ७-३५ तक कातेंगे।

बापू की थकान अभी चल रही है। बा का स्मरण उन्हें उसी तरह व्यथित करता रहता है। आज फिर कह रहे थे, "बा की मृत्यु भव्य थी। मुझे उसका बहुत हर्ष है। जो दुःख है वह तो अपने स्वार्थ के लिए। ६२ वर्ष के साथ के बाद उसका साथ छूटना चुभता है। कितनी ही कोशिश करूं, अभी मैं उन स्मरणों को मन से निकाल नहीं सकता।" बापू की पानी की बोतल को गीले कपड़े में लपेटने की जरूरत थी, बापू ने अपना पुराना मिट्टी बांधनेवाला पट्टा फाड़कर इस्तेमाल करने को कहा। बोले, "यह बहुत बार बा के लिए इस्तेमाल होता था, इसलिए इसकी मेरे पास बहुत कीमत है।"

घूमने के बाद प्रार्थना हुई। पीछे प्रभावतीबहन और मनु के यहां ठहर सकने के विषय में बापू ने सरकार को पत्र लिखा। भाई ने उसे टाइप किया।

२८ फरवरी '४४

बापू रात को दो बजे तक जागते रहे। पता नहीं, वे कब सोये। उनका आज मौन है। सुबह नाश्ते के बाद भंडारी को लिखे गए कलवाले पत्र को उन्होंने फाड़ डाला और दूसरे पत्र में लिखा कि दोनों लड़कियों को यहां रखने के विषय में सरकार से दरख्वास्त करना अनुचित है। इसी विचार के कारण वे सो नहीं सके। अपनी दरख्वास्त वापिस चाहते थे। मनु को बाहर जाना अच्छा नहीं लगता है, इसलिए उसे इस बात से आघात पहुंचा।

मैंने और डॉ० गिल्डर ने मालिश से पहले बापू के फेफड़ों तथा शरीर की परीक्षा की। सब कुछ ठीक है। खून का दबाव १७४/१०० है।

आज मैंने कृष्णा हठीसिंग की लिखी किताब 'विद नो रिग्रेट्स' [१] पढ़ डाली। बहुत अच्छी है।

शाम को जाकर देखा कि बा की समाधि भी महादेवभाई की बगल में तैयार हो गई है। कनु ने अखंड चर्खे का कार्यक्रम तैयार किया।

---

१. इसका अनुवाद 'कोई शिकायत नहीं' के नाम से प्रकाशित हुआ है।

: ६९ :

सत्याग्रह और सत्ता

२९ फरवरी '४४

वा को गये आज एक सप्ताह हो गया। बा के विना सन्नाटा छाया हुआ है।

सुवह मैंने अखबार में देवदासभाई का वा-संबंधी लेख पढ़ा तो अपने को रोक न सकी और आंसू बहने लगे।

आज अखंड चर्खा-कताई शुरू हुई। पहले बापू ने एक घंटा काता, फिर मीराबहन ने आधा घंटा, मनु ने दो घंटे, प्रभावतीबहन ने दो घंटे, भाई ने तीन घंटे और मैंने दो घंटे काता। पीछे ४ बजे से ८ बजे रात तक कनु ने काता। बापू ने शाम को ६-३५ से लेकर ७-३५ तक काता।

जयप्रकाश और प्रभावतीवहन की चर्चा करते हुए बापू ने कहा, "ऐसा उदाहरण जगत में मिलना कठिन है। इन दोनों ने 'विषय-सुख कभी भोगा ही नहीं। यह बात नहीं कि मैंने प्रभा को मना किया था। मैंने तो उसे समझा दिया था कि अगर कभी जरा-सी भी इच्छा हो जाय तो उसे दवाना नहीं। जयप्रकाश भी समझ गया। इसीलिए उसने कभी प्रभा पर दवाव करने का विचार तक नहीं किया। इन दोनों का प्रेम तो पराकाष्ठा पर है और इनके जीवन का एक-एक क्षण देश के ही अर्पण है। यह छोटी चीज नहीं है।"

मैंने पूछा, "स्वतंत्रता देवी के आगे तो महान बलिदान चढ़ते जा रहे हैं। मगर देवी प्रसन्न कब होगी?"

बापू बोले, "प्रसन्न तो हो रही है।"

मैंने पूछा, "प्रसन्न होकर अपना साक्षात्कार कब करावेंगी? मैं उस दिन की बात कर रही हूं, जब हिंदुस्तान पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करेगा।"

बापू ने उत्तर दिया, "सच्चे अर्थों में पूर्ण स्वतंत्रता की बात तो कौन कह सकता है।"

मैंने कहा, "'पूर्ण स्वतंत्रता' शब्द का अत्यंत व्यापक अर्थ मैंने नहीं लिया। इसका आशय तो इतना ही है कि विदेशी सत्ता हटे और लोग अनुभव करें कि अब उनका अपना राज्य है।"

बापू कहने लगे, "वह तो है। वह आवेगी ही।...मगर मैंने तो कहा है न कि सत्याग्रह हमें अपने ध्येय की ओर ले जा सकता है, परंतु सत्याग्रहियों के हाथ में सत्ता न आवे तो भी वे सत्ताधारियों पर अंकुश रख सकेंगे।"

मैं बोली, "आपने गये वर्ष भी यही बात कही थी, लेकिन स्पष्ट शब्दों में लिखा कहीं नहीं है। कांग्रेस-मिनिस्ट्री को पुलिस का उपयोग जब करना पड़ा था तब आपने कहा था कि अगर राजकाज इतनी भी हिंसा के बगैर नहीं चल सकता तो सत्याग्रही सत्ताधारी नहीं बनेंगे, बल्कि उन पर अंकुश रखकर संतुष्ट रहेंगे।"

बापू कहने लगे, "हां, मैंने लिखा है; मगर कलम दबा-दबाकर, ताकि हमारे लोगों को दुःख न हो। कहीं वे यह सोचकर निराश न हों कि अब तो हमें सत्ता मिल ही नहीं सकती। मेरे मन में यहां आकर एक विचार और पक्का होता जा रहा है कि हो सकता है कि सत्ता सत्याग्रह की मर्यादा से बाहर की चीज हो।"

१ मार्च '४४

बापू के पत्र का उत्तर वेवल ने भेजा। बा की मृत्यु पर उन्होंने सहानुभूति प्रकट की है। बा की बातों का उत्तर उनके भाषण में आ गया था, यह कहकर भाषण की नकल भी पत्र के साथ ही भेजी है। मैं जब खेलने गई तभी बापू ने घूम लिया और ७-३५ पर उनका कातने का समय पूरा हुआ। फिर प्रार्थना की। प्रार्थना में मनु और प्रभाबहन रोने लगीं। प्रभाबहन तो अचानक उठ कर चली गईं।

२ मार्च '४४

सुबह पांच बजे सब लोग उठे और गीता-पारायण किया गया।

बा की मृत्यु के बाद आज दसवें दिन मैंने और कनु ने २४ घंटे का

उपवास किया। मनु ने आठवें दिन फलाहार किया था, इसलिए आज उपवास नहीं किया।

बापू शाम को कहने लगे, "बा का जाना एक कल्पना-सा लगता है। मैं उसके लिए तैयार था, मगर जब वह सचमुच ही चली गई तो मुझे कल्पना से अधिक एक नई बात लगी। मैं अब सोचता हूं कि बा के बिना मैं अपने जीवन को ठीक-ठीक बैठा ही नहीं सकता। इसी तरह इन लड़कियों (मनु और प्रभा) के जाने की बात है। मुझे लगता है कि सरकार इन्हें ले जायगी। मैं नहीं कह सकता कि इसका मुझपर क्या असर होगा। तुम सभी एक-एक करके चले जाओ तो हो सकता है कि मैं अकेला ही रह जाऊं। हां, वह दयाजनक स्थिति होगी।"

शाम के वक्त प्रभाबहन को एक नोटिस मिला है कि उनकी गिरफ्तारी क्यों हुई थी?

: ७० :

फिर अपने-अपने कर्त्तव्य पर

४ मार्च '४४

कल के अखबारों में एक लेख बटलर द्वारा कामन्स-सभा में बा के संबंध में दिये गए भाषण के आधार पर निकला है। उस लेख को पढ़कर बापू विचार में पड़ गए हैं। सुबह चार ही बजे उठ बैठे और प्रार्थना आदि के बाद भाई को जल्दी से पत्र लिखवाया। पत्र मुझे दिया गया और मैंने उसमें सुधार किये, इसी प्रकार सब के सुधार लिये गए।

एक पत्र बापू ने और लिखवाया। बापू के खर्च के विषय में गृहमंत्री ने असेंबली में जो भाषण दिया था, उसी के संबंध में यह पत्र था। बाद में बापू ने इस पत्र में और सुधार किये।

२-१० पर दोनों पत्र लिखवा कर भेजे गए।

शाम को बापू ने उस नोटिस का उत्तर लिखवाया, जो प्रभावहन को दिया गया था। मैंने उसका अंग्रेजी अनुवाद करके साफ नकल तैयार की।

शाम को बापू घूमते समय कनु से बात कर रहे थे कि बा के स्मारक के लिए पैसा इकट्ठा करना है। बापू की अगली जयंती पर ७५ लाख रुपया इकट्ठा करने की बात पहले से ही चल रही थी। कनु बापू से इस विषय पर पूछ रहा था। बापू ने कहा, "दोनों फंड साथ मिला दो। बा मुझमें में समा गई थी। कौन है ऐसी स्त्री, जो इस तरह अपने पति की गोद में प्राण दे? अंतिम समय में उसने मुझे बुलाया। तब मैं नहीं जानता था कि वह जा रही है। और मैं घूमने नहीं चला गया था, वह भी ईश्वर का ही काम था। पेनिसिलीन के कारण ही मैं रुका। मृत्यु-शय्या पर पड़ी हुई को इंजेक्शन क्या देना था? मगर जब बा के पास बैठा तो समझ गया कि बा अब जाती है। बा के नाम से विश्वविद्यालय खोलना मैं एक निकम्मी बात समझता हूं। उसे विश्वविद्यालय में रस कहां था? चर्खा इत्यादि में तो वह रस लेती थी। यह फंड हम दोनों के निमित्त इकट्ठा हो तो लोगों पर बोझ नहीं पड़ेगा। बा का हिस्सा मेरी जयंती में हमेशा रहा है। इस फंड का उपयोग चर्खा और ग्रामोद्योग के लिए होगा। नारायणदास को उसके कारभार में पूरी मेहनत और जिम्मेदारी लेनी होगी।" पीछे दूसरी घरेलू बातें उससे करते रहे। इतने में फूल चढ़ाने का समय हुआ। वहां से आकर प्रार्थना की।

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। प्रार्थना-स्थान पर पहले से अधिक गांभीर्य और शांति होती है। बा, महादेवभाई और शकुंतला, यह त्रिमूर्ति अब प्रार्थना के समय मेरी आंखों के सामने रहती है। तीनों के चेहरे प्रफुल्लित देखने में आते हैं।

५ मार्च '४४

बापू सुबह तीन बजे उठ गए। फिर नहीं सो सके। चार बजे प्रार्थना के लिए सब उठे। कनु और भाई रात को देर से सोये थे। बापू को उन्हें उठाना ठीक नहीं लगता था, मगर कनु का आज यहां आखिरी दिन

है, सो उसे उठाया। प्रार्थना के वाद वापू सो गए। कनु कुछ लिख रहा था। बापू से उसे कुछ और बातें पूछनी थीं।

वापू सुबह वेवल को पत्र लिखने के बारे में विचार कर रहे थे। सुबह लिखवाने का विचार किया, मगर फिर प्रभावहन के उत्तर का अनुवाद देखने लगे। वोले, "अगर प्रभा को जाना पड़े तो उससे पहले यह जवाव यहां से भेज सके तो अच्छा है। सो यह काम पहले करना चाहिए।"

घूमने के बाद मालिश के समय वेवल को जानेवाला पत्र मुझे लिखवाने लगे। कटि-स्नान लेने के समय भी लिखवाया। स्नान-घर से निकल कर फिर थोड़ा लिखवाया। दोपहर में सोने के वाद फिर लिखवाने लगे। शाम को साढ़े छः वजे पत्र पूरा हुआ। कनु साथ-ही-साथ टाइप करता जाता था। यह कच्ची नकल है। नौ वड़े-वड़े फुलस्केप कागज तैयार हुए। वापू की धारणा से पत्र ज्यादा लंबा हो गया है।

शाम को घूमने के समय बापू ने कनु से थोड़ी वातें कीं। प्रार्थना के वाद तो उसे जल्दी जाना ही था। सामान उसने तैयार रखा था। बापू मौन लेने लगे तो कनु कहने लगा, "मुझे भेजकर ही अब मौन लीजिए।" उसे जाना अच्छा नहीं लगता था। वह आग्रह करता तो शायद बापू उसे रखते भी, मगर बाहर वह काफी काम कर सकता है। इस दृष्टि से उसे आग्रह करना अच्छा नहीं लगा।

साढ़े नौ बजे कनु को हम सब नीचे छोड़ने गये। मनु दही और शक्कर उसके लिए ले गई थी। सबको प्रणाम करके उसने वह खाया, फिर दो वार बापू को प्रणाम करके चलने लगा। मैंने कहा, "कनु भाई, अब तो वाहर ही आकर मिलेंगे।" डॉ० गिल्डर बोले, "हां भाई, अव इस तरह न आना।" भाई कहने लगे, "नहीं, हमें लेने के लिए आना।" कटेली हँसने लगे, "आप लोग जाओगे तव खवर किसको होने वाली है। दूसरे दिन अखबार में ही लोग देखेंगे कि बापू छूट गए।" मगर कनु किसी को उत्तर देने की स्थिति में न था। वह रो रहा था। दरवाजे के पास पहुंचा तब तो सिसकियां लेने लगा।

६ मार्च '४४

प्रार्थना के बाद रोज का कार्यक्रम चला। नाश्ता वगैरा करके सवा आठ बजे बापू घूमने निकले। सड़क पर किसी की मधुर बंसी बजाने की ध्वनि सुनाई दे रही थी।

फूल चढ़ाकर वापस लौटे। प्रभावतीबहन की जगह मनु ने और कनु की जगह डॉ० गिल्डर ने बापू की मालिश की। डॉ० गिल्डर इतने दिन बापू की सेवा न कर सकने के कारण बेचैन-से हो गए थे। वे बहुत प्रेम से मालिश करते हैं।

स्नानादि के बाद बापू ने वेवल वाला पत्र और हम लोगों के बारीबारी से सुझाव मांगे। सबके सुझावों को देखकर कल सुबह बापू पत्र को फिर पढ़ेंगे।

जैसे-जैसे दिन जा रहे हैं, बा के बगैर घर ज्यादा-से-ज्यादा सूना लगता जा रहा है। उनकी बीमारी में चौबीसों घंटे की दौड़-धूप रहती थी। अब तो कुछ काम ही नहीं। बहुत बुरा लगता है।

बापू ने हम सबसे बा की मृत्यु के बाद तुरंत अपने-अपने संस्मरण लिखने को कहा था। वे स्वयं भी लिखने का विचार करते हैं। मैंने संस्मरण लिखने शुरू कर दिए हैं।

आज से मैंने प्रभावतीबहन के साथ आई हुई 'स्नेहयज्ञ' नामक किताब पढ़नी शुरू की है।

७ मार्च '४४

बा को गए आज दो हफ्ते पूरे हो गए। मगर कल की जैसी ही बात लगती है। इसी तरह एक के पीछे एक प्रियजन विदा होते जायंगे।

सुबह सवा पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। बाद में बापू वेवल वाला पत्र सुधारते रहे। स्नानघर से निकलकर खाते समय, पीछे दोपहर सोने के बाद पांच बजे तक वही क्रम चला। इतने परिवर्तन हुए कि भाई को उसकी कच्ची टाइप नकल फिर तैयार करनी पड़ी। अभी वह फिर पढ़ा जायगा।

८ मार्च '४४

सबेरे सवा पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे।

बापू ने वेवल वाले अपने जवाबी पत्र में फिर इतने सुधार किये हैं कि

मीराबहन को बैठकर लिखवाना पड़ा। भाई ने भी दिन का अधिकांश समय उसे टाइप करने में लगाया, खा-पीकर सात बजे फिर बैठे और रात को एक बजे तक पत्र का कार्य करते रहे।

सुबह मैंने बापू से पूछा कि वेवल को जानेवाले जवाबी पत्र का क्या अच्छा परिणाम निकलने वाला है? वे बोले, "मैं कोई आशा बांधकर नहीं बैठा। उसके भाषण में एक-दो वाक्य ऐसे मिले कि उनके आधार पर मुझे लिखने-जैसा लगा, सो लिख डाला है। जो होना होगा सो होगा।"

९ मार्च '४४

कल ११-१५ पर 'स्नेहयज्ञ' को पूरा कर लिया।

भाई कलवाला पत्र टाइप करने में लगे हैं। मैंने और मीराबहन ने मदद की। एक बजे दिन में पत्र तैयार हुआ। बापू उसे पढ़ते-पढ़ते सो गए। ढाई बजे उठकर पूरा किया। सवा तीन बजे पत्र गया।

भाई और मीराबहन ने दो बजे खाना खाया।

दोपहर को मैंने 'गुड अर्थ' पढ़ना शुरू किया। बापू भी उसे पढ़ते हैं, इसलिए अधिक देर तक उसे नहीं पढ़ पाती। भाई भी उसे पढ़ने लगे हैं।

भंडारी कह गए हैं कि मनु और प्रभाबहन के यहां से जाने के संबंध में बंबई सरकार ने दिल्ली को लिखा है। बापू को लगता है कि अब इन दोनों के जाने का हुक्म आनेवाला है।

१० मार्च '४४

सुबह सवा पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। आजकल मनु बापू की आत्मकथा पढ़ रही है। अफ्रीका में बापू के अपमानों का वर्णन पढ़कर कहने लगी, "अरे, बापू ने कितने अपमान सहे! मेरे जैसा व्यक्ति तो रो-रोकर ही मर जाता।" मैंने कहा, "रोने से और ज्यादा अपमान होता।"

फिर यह चर्चा होने लगी कि कुछ वर्ष पहले जब बापू आये तो भारत के लोग अंग्रेजों के सामने कितना झुककर रहते थे। मैंने स्वयं फीरोजशाह मेहता की जीवनी में पढ़ा है कि वे इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हुए भी अंग्रेजों के प्रति मधुर और खुशामद भरी बातों से काम लेते थे। बापू बोले, "यह ठीक है। मेरी भाषा में वही चीज थी, जो लोगों के अपने मन में थी;

मगर लोग यह बात कह नहीं पाते थे। इसीलिए तो लोग मेरे पीछे पागल हुए। फिर मैं लोगों की ही भाषा में बोलता था, जिससे वे मेरी बात समझ सकें। अंग्रेजी कभी नहीं बोलता था। उस समय का रिवाज था कि ऐसी भाषा बोलनी चाहिए, जिसे जनता समझ ही न पाए। मैंने इससे उलटा शुरू किया। नतीजा यह हुआ कि बिहार में मैं अदालत में हाजिर हो ही रहा था कि जनता ने दरवाजे तोड़ डाले। सारा बिहार मेरे पीछे पागल हो गया।"

मैंने कहा, "कितने ही लोग टीका करते हैं कि गांधी और नेहरू आज जो हैं, उसका कारण अंग्रेजों द्वारा उनका अपमान करना है। अंग्रेज लोग भी यही कहते हैं कि इन लोगों में हमने ऊंच-नीच का भाव पैदा किया, इसीलिए ये आज हमें तकलीफ दे रहे हैं।"

बापू बोले, "बात सच्ची है। दक्षिण अफ्रीका में मेरा अपमान न होता तो मेरा जीवन दूसरा ही होनेवाला था। अपमान वहीं से शुरू हुआ। उसी के परिणामस्वरूप मैंने काठियावाड़ छोड़ा। फीरोजशाह का यह कहना कि 'ऐसे अपमान तो अनेक सहने पड़ेंगे', मुझपर बड़ा असरकारी हुआ। मगर इस बात को ऊंच-नीच का भाव नहीं कह सकते।"

मैं कहने लगी, "बहुत से लोग कहते हैं कि रूस के गत बीस वर्षों का और हिंदुस्तान का इतिहास देखो तो पता चलेगा कि कितना फेर है।"

बापू ने उत्तर दिया, "यह बात भी ठीक है, मगर उन लोगों ने हिंसा के आधार पर ही सब कुछ किया है। हमारी अहिंसा की शक्ति ऐसी है कि उसका माप ही नहीं हो सकता। उन लोगों की हिंसा के द्वारा पाई हुई चीज कितने दिन टिक सकेगी, यह कौन जानता है।"

मैंने कहा, "मेरे विचार से हिंदुस्तान के आज के इतिहास की तुलना रूस के पिछले बीस वर्ष के इतिहास से नहीं करनी चाहिए, बल्कि आने-वाले सौ वर्षों के इतिहास से करनी होगी। ये हमारी तैयारी के दिन हैं—जाग्रति लाने के दिन। अहिंसा के द्वारा जनता में जाग्रति ज्यादा जल्दी आई है। इतना तो सब लोग मानते हैं कि गांधीजी ने देश में जाग्रति तो पैदा कर दी है, मगर आगे क्या ? मेरा उत्तर है कि जाग्रति जल्दी आ सकी

है; क्योंकि अहिंसा को हिंसा की तरह छिपकर काम नहीं करना पड़ा। स्वतंत्रता भी इस रास्ते से हिंसा के रास्ते की अपेक्षा जल्दी आनेवाली है।"

बापू कहने लगे, "मुख्य बात अहिंसा की है। हिंसक रास्ते से पाई हुई स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं होती, स्थायी नहीं होती। हिंदुस्तान का प्रयोग बिलकुल नया है। इसका परिणाम क्या आता है, वह देखने की बात रही।"

मीराबहन को लगता है कि बापू के पत्र के परिणामस्वरूप अगर सरकार उन्हें छोड़ दे तो उसके लिए उनकी तैयारी होनी चाहिए। वे अपने आश्रम के नक्शे भी बना रही हैं और कनु से इस बारे में काफी चर्चा कर चुकी हैं।

शाम की प्रार्थना साढ़े आठ बजे होती है। बापू साढ़े नौ बजे खाट पर पहुंचते हैं। दस बजे उनका काम पूरा होता है। हम लोग साढ़े-दस-ग्यारह बजे सोते हैं। मैं पर्ल बक की 'गुड अर्थ' पढ़ती रही।

बापू ने बा के मृत्यु-संबंधी आये हुए पत्रों की सूची बनाने और उन्हें नंबर देने का काम प्रभावतीबहन को सौंपा। दोपहर को भाई के साथ कागज फाइल कराने का काम किया। समय जाते पता नहीं लगता।

कल से बापू ने प्रभावतीबहन को गीताजी का उच्चारण, संस्कृत और अंग्रेजी सिखाने का निश्चय किया है। रोज भंडारी की राह देखते थे कि आवें तो पता चले कि प्रभावती और मनु के बारे में क्या तय हुआ। वे कल आए तो, पर कुछ खबर न दे सके, इसलिए बापू को और प्रभावती-बहन को लगा कि जितने दिन हैं, उनका तो ठीक उपयोग कर लिया जावे।

११ मार्च '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। बा की मृत्यु का दिन मंगल का है। इसलिए अब समाधियों की लिपाई हफ्ते में दो बार हुआ करेगी। आजकल फूल बहुत होते हैं। डॉ० गिल्डर और कटेली फूल इकट्ठे कर लाते हैं, इसलिए सारे हफ्ते भर अच्छी सजावट होती है। प्रभावतीबहन बापू से रोज कहा करती हैं कि समाधियों के दरवाजे के स्थान पर एक ऊंचा दरवाजा बने और उसपर बेलें चढ़ाई जायं। पहले तो बापू उनसे यही कहते रहे कि उनका यहां रहना निश्चित हो जाय तो दरवाजे का काम

करेंगे, लेकिन इतने दिनों से किसी प्रकार का सरकारी आदेश नहीं आया, इसलिए बापू आज मान गए। बापू काफी देर तक 'गुड अर्थ' पढ़ते रहते हैं और रोज के अखबार देखते हैं।

मीराबहन आजकल दोपहर को पौन घंटे और शाम को एक घंटे तक बापू से सवाल पूछती हैं।

बापू अभी तक स्थिर-चित्त नहीं हो पाए। कहते हैं कि सुचित्त हो जाने पर वे बा के संस्मरण लिखना शुरू करेंगे।

मनु को आज बुखार नहीं था, मगर दो बार उल्टी हुई। मलेरिया की दवा का असर हुआ लगता है।

१२ मार्च '४४

सुबह पांच बजे प्रार्थना को उठे। पीछे हमेशा का कार्यक्रम चला। ९ बजे घूमकर लौटे। मनु और प्रभावतीबहन को ४ से ५ तक सिखाया। आज शाम को खेलते समय वर्षा के साथ-साथ ओले पड़े और बाद में इतनी गर्मी बढ़ गई कि प्रार्थना के समय बापू ने पंखा उठाया।

भाई आजकल टाइप करने और फाइलों को व्यवस्थित करने में लगे हैं। शाम को घूमने भी नहीं निकलते।

आज मैं साढ़े दस बजे रात तक बापू का काम करती रही। फिर डायरी लिखी। नींद नहीं आ रही थी, लेकिन बापू का कहना है कि समय होने पर तो खाट पर जाना ही चाहिए।

: ७१ :

मीराबहन की आश्रम-योजना

१३ मार्च '४४

बापू का आज मौन है। एक-दो रोज पहले वे और अधिक मौन लेने का विचार करते थे। एक सोमवार का ही मौन हम लोगों के लिए इतना कष्टकर होता है तो बापू के अधिक मौन लेने से हमारी क्या गति होगी!

असल बात तो यह है कि आजकल बापू की मनःस्थिति ठीक नहीं है, इसलिए उनसे कुछ भी कहने में डर लगता है। उनमें भीतर-ही-भीतर बड़े-बड़े परिवर्तन होते दीखते हैं; पर यह सब है क्यों, इसका पता नहीं लगता।

मैंने 'गुड अर्थ' पढ़ी, थोड़ा लिखा और प्रभावतीबहन को एक घंटा सिखाया। मीराबहन ने मान लिया है कि वे अब जल्दी ही छूटनेवाली हैं। उनकी हरेक बात से यही ध्वनि निकलती है, परंतु छूटने की संभावना बहुत कम है। बापू भी कहते थे, "इसके भोलेपन और इसकी कल्पना-शक्ति का कोई पार नहीं है।"

समाधियों के दरवाजे पर हरे बांसों का एक तोरण बनाया है। उस पर तीन तरह की बेलें चढ़ाई जायंगी, जो बकरियों से बच जायं तो ठीक है। वर्षा ऋतु के बाद समाधि-स्थान के चारों कोनों में सरव के चार वृक्ष लगाये जायंगे।

मीराबहन ने अपने आश्रम की सारी योजना बनाकर बापू से उसे स्वीकृत करा लिया है। आश्रम के ध्येयों में से एक बात भाई को खटकी है। वह यह कि 'लोगों को आत्म-रक्षा (Non-aggressive defence) के लिए तैयारी कराना।' अहिंसा के सिद्धांत के साथ यह ध्येय कहां तक संगत है, भाई की समझ में यह नहीं आता। वे कहते हैं, "मैं जानता हूं कि मीराबहन के द्वारा इस ध्येय का दुरुपयोग नहीं होगा, मगर दूसरे लोग इसे लेकर इसका दुरुपयोग अवश्य करेंगे।" बापू का मौन छूटने पर वे उनसे इस बारे में पूछेंगे।

१४ मार्च '४४

समाधियों के नये दरवाजे को मनु ने आज खूब सजाया। बड़ा सुंदर दीखता है।

घूमते समय बापू भाई को मीराबहन के आश्रम-संबंधी प्रश्न को लेकर समझाने लगे, "किसी पर हमला किये बिना अपनी रक्षा करने में हिंसा का समावेश नहीं है। यह देखना चाहिए कि मीरा ने कौन-सी भाषा का प्रयोग किया है। एक जगह उसने लिखा है—गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम चलाना ही उसके आश्रम का ध्येय होगा। तो वह तो शुद्ध अहिंसा हुई।"

भाई ने कहा, "हमला किये बिना आत्म-रक्षा' (Non-aggressive Self-defence) एक खास अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है..."

बापू बोले, "लोग क्या समझेंगे या क्या कहेंगे, मुझे इसकी कुछ नहीं पड़ी है। 'अहिंसा-अहिंसा' कहने से ही अहिंसा थोड़े आती है! जब हम अहिंसा पर अमल करके दिखा देंगे तब लोग अपने-आप देख सकेंगे कि हम क्या करना चाहते हैं या क्या कर रहे हैं। सो इसका काम भी जब आगे बढ़ेगा तब लोग अपने-आप उसे देख सकेंगे।"

: ७२ :

अंग्रेजों की नीति

खाने के समय मीराबहन उस पत्र की चर्चा करने लगीं, जो बापू वेवल वाले पत्र के जवाब में भेज रहे हैं। बापू ने उसमें बा के विषय में काफी लिखा है। बापू कह रहे थे कि उनके मनोभावों को समझाने के लिए उस भूमिका की आवश्यकता थी। वे कहते हैं, "सामान्यतः लोग यह मानते हैं कि हिंदुस्तानियों को अपनी पत्नियों की परवाह नहीं होती है। उनकी इस मान्यता के कारण भी हैं। पत्नी की परवाह करना हिंदुस्तान में कुछ हद तक नयी चीज है, मगर मेरे लिए बा की कितनी कीमत थी, यह बताने के बाद ही वेवल को मैं यह समझा सकता था कि उसके झूठे वक्तव्य से मुझे कितना दुःख हुआ।"

इसके बाद वेवल के पत्र में एक जगह आता था 'पीपल्स ऑव इंडिया' (Peoples of India), इसके बाद 'हुकूमत जोओ', और यह बापू को अखरा।

मैंने और बापू ने 'गुड अर्थ' पढ़ लिया है।

१५ मार्च '४४

खाने के समय मीराबहन से 'पीपल' और 'पीपल्स' वाले पैराग्राफ की बात करते हुए बापू कहने लगे, "अगर वह (वेवल) हिंदुस्तानियों को

एक 'प्रजा' मानता है तो हिंदुस्तान के कुदरती ऐक्य की दलील को भी अपनी बात के समर्थन में इस्तेमाल कर सकता है। अगर वह यह मानता है कि हिंदुस्तान में एक से अधिक 'प्रजाएं' हैं, तो देश के कुदरती ऐक्य की बात करना फिजूल है। कुदरती तौर पर तो यूरोप भी एक मुल्क है, मगर हम जानते हैं कि वहां कई राष्ट्र हैं। इसलिए उसे एक मुल्क या वहां के लोगों को एक नहीं कह सकते।

"इसी तरह अगर हिंदुस्तानी लोग एक प्रजा नहीं हैं तो पर्वतों की दीवार या समुद्रों का विस्तार हिंद को एक राष्ट्र नहीं बना सकता।

"अंग्रेज लोगों को गर्व है कि राजनैतिक दृष्टि से उन्होंने हिंदुस्तान को एक राज्य बनाया। एक तरह से यह सही भी है। भूतकाल में भी ऐसे प्रयत्न हुए हैं। अशोक और दक्षिण भारत के कुछ राजाओं ने इस प्रयत्न में काफी सफलता पाई थी, मगर पूरी सफलता अंग्रेजों ने ही पाई है, चाहे इसमें भी उनका निजी स्वार्थ ही क्यों न रहा हो। अब अंग्रेज अपने किये पर पानी फेरना चाहते हैं। यह कैसी शर्म की बात है कि अगर वे हिंदुस्तान का शोषण नहीं कर सकते तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

'हुकूमत जाओ' के आंदोलन की बात करते हुए बापू बोले, "उन्हें समझना चाहिए कि उन्होंने किस तरह से हिंदुस्तान को चूसा है। हिंदुस्तान का सारा खून चूसा जा रहा है। एक-एक विदेशी सिपाही हिंद को भारी पड़ता है। तुम तो यहां सरकारी अमलदार की बेटी की हैसियत से भी रही हो और मेरे साथ एक हिंदुस्तानी की तरह भी। तुम जानती हो कि दोनों के रहन-सहन में कितना फर्क है। तुम्हारा खर्च तब कितना होता था और अब कितना होता है? हिंदुस्तान कहां से उनके लिए खाना लावे? मुझसे यह मत कहो कि वह सब खर्च हिंदुस्तान में ही होता है। खर्च तो हिंदुस्तान का खून ही होता है न! आज हिंद में जो कागजी रुपया चल रहा है, उसकी कीमत ही क्या है? फौजी लोग नोटों की गड्डी उठा लाते हैं और सब्जी, दूध, घी, फल जो भी चाहें, उठा ले जाते हैं। गरीब हिंदुस्तानियों के लिए कुछ नहीं बचता, उनके बच्चों के लिए दूध नहीं मिलता और वे सब कठिनाइयां सहन करते हैं विदेशी सरकार की खातिर।

सिपाहियों की कुर्बानियों की बातें करते हैं। कहते हैं कि परदेशी लोग हमारी रक्षा के लिए यहां आए हैं, मगर क्या सचमुच वे हमारी सेवा करने के लिए हैं ? मैं कहता हूं कि वे यहां इसलिए हैं कि उन्हें वेतन मिलता है। वेवल से लेकर नीचे तक के सरकारी अमलदारों को लो। उनमें से कोई भी 'वालंटियर' कहलाने का अधिकारी नहीं है। कहा यह जाता है कि हिंदुस्तानी सिपाही 'वालंटियर' हैं। सिपाहियों को 'वालंटियर' कहते हैं। यह बेचारा गरीबी का मारा भरती होता है और भूख का मारा होने से सिपाही बनता है। जितने विदेशी लोग यहां पड़े हैं, वे यहां की गरीबी को और जनता की भुखमरी को बढ़ाते हैं। ये सिपाही यहां चाहे थोड़े-से ही हों, मगर उनका खर्च इतना हो जाता है, जितना खर्च हिंदुस्तान के करोड़ों भूखों पर होता है।

"इससे जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति कटुता का भाव आने लगा है। इसे रोकने के लिए कुछ करना चाहिए। शायद वे कहें, 'हम हिंदुस्तान को आजादी देना चाहते हैं, मगर जरा धीरज रखो।' तुम्हारा जवाब यह होना चाहिए, 'नहीं, हिंद को आजाद करने का मौका आज है। आज ही यह कटुता मित्रभाव में बदली जा सकती है।' मैं जानता हूं, वे कहेंगे कि जो चल रहा है, उससे उन्हें संतोष है। और ऐसा क्यों न कहें ? उन्हें जो चाहिए सो हिंद से मिल सकता है। बाल्डविन से जब मैंने क्लाइव और वारेन हेस्टिंग्स के कारनामों की बात की तो उसने मुझे जवाब दिया, 'हमने हिंदुस्तान में जो किया है, उसका हमें गर्व है।' वे अब भी ऐसा ही कह सकते हैं। तब मेरा जवाब वही होगा, जो मैंने बाल्डविन को दिया था कि 'ऐसी हालत में मुझे आपसे कुछ कहना नहीं है।'

"'हुकूमत जाओ' आन्दोलन ने लोगों के हृदय में अंग्रेजों के प्रति अपना गुस्सा प्रकट किया। उस गुस्से को निकालने का यह एक सीधा और निर्दोष रास्ता था और ब्रिटेन को समझाने का प्रयत्न था कि वह कुछ करे, जिससे इस गुस्से की जगह मित्रता और कृतज्ञता की भावना लोगों के हृदय में उठे। मगर मेरी शिकायत यह है कि उन्होंने कांग्रेस के दृष्टिबिंदु को समझने की कोशिश तक न की। 'हुकूमत जाओ' आंदोलन के नाममात्र

से वे इतना चमकते हैं, यही बताता है कि उनकी नीयत साफ नहीं। हिंद को लूटना बंद करने का उनका इरादा नहीं, नहीं तो मौलाना साहब और जवाहरलाल की अपील की तरफ ध्यान देते और मेरे भाषण पर गौर करते। आठवीं अगस्त के 'हुकूमत जाओ' प्रस्ताव में भी कांग्रेस ने ब्रिटेन के प्रति उचित मित्रता बताने की कोशिश की। कांग्रेस चाहती है कि मित्रराष्ट्र युद्ध में जीतें और उनकी जीत पक्की करने के लिए ही कांग्रेस ने कहा, 'हिंदुस्तान के साथ न्याय करो।' अगर वे इस चीज को समझते तो बाकी सब ठीक हो सकता था। अब भी समझें तो हो सकता है।"

१६ मार्च '४४

डॉ० गिल्डर की टांग में 'साइटिका' का दर्द है। मनु और भाई ने मिलकर बापू की मालिश की।

गृह-मंत्री ने असेंबली में बा को दी गई सुविधाओं के संबंध में जो वक्तव्य दिया था, वह अखबारों में प्रकाशित हुआ है। हम सबको वह चुभा है। इतनी तकलीफें देकर और झगड़े करने के बाद अब सरकार यह बताना चाहती है कि उसने बा की सभी आवश्यकताएं पूरी कीं।

बापू शाम को भाई से कहने लगे, "हो सके तो तुम इसका उत्तर लिखो।" भाई ने मुझसे भी अभ्यास के तौर पर उत्तर लिखने को कहा।

१८ मार्च '४४

भाई ने दिन में वह पत्र लिखकर बापू को दिया तो बापू ने देखा कि उस पत्र में लिखी हुई लगभग सभी बातें वे अपने पत्र में संक्षेप में पहले ही लिख चुके हैं। इसलिए पत्र को रोक दिया। वे खुद ही फिर लिखेंगे।

खाने के समय बापू मीराबहन से बोले, "मानो कि वाइसराय आज कहे कि 'हमें हिंदुस्तान से इतना रुपया मिल रहा है, इतने सिपाही मिल रहे हैं तो कांग्रेस क्या इससे ज्यादा देगी? कांग्रेस को खुश करने से हमें और क्या मिलेगा?' तब मैं कहूंगा कि 'कांग्रेस और कुछ भी करनेवाली नहीं। हां, उसके द्वारा आपको लोगों का दिल और आत्मा मिलेगी और आम लोगों की सद्भावना।' सिपाही को अपनी तनख्वाह की पड़ी है और व्यापारी को अपनी तिजारत की। मगर किसान, जो हिंदुस्तान की ९० प्रतिशत

जनता है, हिंदुस्तान की जमीन के साथ बंधे हैं। अगर किसान आजादी के उल्लास का अनुभव करेगा तो अपने देश की आजादी के लिए आखिरी दम तक लड़ेगा।

"अगर हिंदुस्तान खुश होगा, संतुष्ट होगा तो आप एक-एक हिंदुस्तानी सिपाही को पूर्वी लड़ाई के मैदान में भेज सकते हैं। हिंदुस्तानी सिपाही ब्रह्मदेश की लड़ाई में लड़ने के लिए अधिक उपयुक्त हो सकते हैं। अंग्रेज या अमरीकन सिपाहियों की निस्बत हिंदुस्तानी सिपाही सस्ते भी पड़ेंगे। आज आप हिंदुस्तानियों को पूर्व में इस्तेमाल नहीं कर सकते; क्योंकि आपको डर है कि हिंदुस्तानी सिपाही हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने लगेंगे।

"हिंदुस्तानी सिपाहियों को आपको आधुनिक लड़ाई की तालीम देनी होगी, मगर उसके लिए हम आपके कुछ अफसर मांग लेंगे, चाहे वे अंग्रेज हों या अमरीकी या रूसी।"

मीराबहन बोलीं, "आपने फिशर से कहा था कि मित्रराष्ट्रों की फौजें अपने खर्च पर यहां रह सकती हैं। तो फिर इन हिंदुस्तानी फौजों के खर्च का क्या होगा?"

बापू ने उत्तर दिया, "खर्च के बारे में जो आज व्यवस्था है, वही रहेगी। एक तो बाकायदा हिंदुस्तानी फौज होगी। उसके अलावा मित्रराष्ट्र अपने लिए सहायक सेना की भरती करेंगे और उसका खर्च उन्हें देना होगा, सिवा इस हालत के कि हिंदुस्तान की रक्षा के लिए इस्तेमाल हो या लड़ाई लड़ने में हिंदुस्तान का अपना हित सधता हो, जैसे कि ब्रह्मदेश में और उसके लिए वह अपने सिपाही वहां भेजें।

"मैं यह कहूंगा कि अगर अंग्रेजों को इनमें से कोई भी बात नहीं जंचती तो उन्हें जापान पर जीत बहुत महंगी पड़ेगी। लड़ाई के अंत में गुस्से से भरा असंतुष्ट हिंदुस्तान उनके सामने खड़ा होगा।"

बापू के कहने से भाई ने मीराबहन से 'Non-aggressive Self-defen:e' के अर्थ के बारे में स्पष्टीकरण के लिए बात की थी। मीराबहन का कहना था कि उनका इससे तात्पर्य 'अहिंसात्मक ढंग से आत्मरक्षा'

(Non-violent Self-defence) ही है। भाई ने जब कहा कि आज कल 'अहिंसात्मक ढंग से आत्मरक्षा करने' का अर्थ रूढ़ हो गया है तब मीराबहन ने स्वीकार किया कि एक प्रसिद्ध संस्था के विधान की भाषा ऐसी चौकस होनी चाहिए कि कोई भी उसका दूसरा अर्थ न कर सके। उसमें विपरीत अर्थों की गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए।

अखबार में किसी ने बापू को यहां से हटाने की मांग की है। गृह-मंत्री ने उत्तर दिया है कि इस पर विचार किया जायगा। इस पर बहुत चर्चा चली। बापू को लगता है कि यह उनके पत्र का परिणाम है। उन्होंने लिखा था कि सरकार उन पर इतना खर्च क्यों करती है।

१९ मार्च '४४

आज सुबह जब भंडारी आये तो बापू को यहां से हटाने की बात पर मजाक चलता रहा।

बा को दी गई सुविधाओं के संबंध में गृहमंत्री ने जो वक्तव्य दिया था, बापू ने उसका जवाब एक संक्षिप्त किंतु शानदार विरोध-पत्र द्वारा दिया है।

: ७३ :

जेल में मन-बहलाव

२० मार्च '४४

बापू का बा के बारे में विरोध-पत्र आज गया है। उनका आज मौन-दिन है, इसलिए वे दिन भर 'अरेबियन नाइट्स' पढ़ते रहे।

२१ मार्च '४४

आज बा की मृत्यु का दिन है। सिपाही काफी फूल इकट्ठे कर लाए, मगर दरवाजे पर रखने के लिए फूल जरा देर से पहुंचे। समाधियों के दरवाजे को फूलों से सजाया गया।

पारसी लोगों का आज त्यौहार है। बा हमेशा त्यौहार के दिन डॉ०

गिल्डर और कटेली के लिए कुछ-न-कुछ बनाने की व्यवस्था करवाया करती थीं, मगर आज उनके लिए बाहर से इतना खाने को आ गया कि और बनाना बेकार लगा। आज की जगह कल पूरनपूरी बनाने का विचार किया। मालिश के समय डॉ० गिल्डर जरा देर से आये। बापू ने कारण पूछा। मैंने बताया कि बाहर से खाना आने में देर हो गई थी, इसलिए डॉक्टर साहब को नाश्ता करना पड़ा। इस पर बापू को लगा कि उनके लिए हमें भी कुछ करना चाहिए था। दोपहर को बापू के फिर कहने से मैंने लकड़ी के एक छोटे-से रंगीन डिब्बे में एक रूमाल पर डॉ० साहब का नाम लिख कर उसमें रखा और पार्सल बनाया। रामनायक ने बापू के लिए एक बड़ा चौरस रूमाल बनाया था, जिसके बीच में रंगीन धागे का काम था—इसे भी लिया। प्रभाबहन से बारीक खादी लेकर रामनायक ने दो रूमाल बना दिये। बड़े रूमाल के किनारे हम तीनों ने मिल कर बनाये और उन्हें धोकर और इस्त्री करके तीनों रूमालों पर नाम डाल कर एक दूसरा पार्सल बनाया।

शाम को प्रार्थना होने के समय डॉ० साहब को कुंकुम का तिलक लगाकर फूलों की माला पहनाई और पार्सलों की भेंट दी। बक्स पर स्वयं बापू ने नाम लिख दिया था, इसलिए उसकी बड़ी कीमत हो गई। आज का दिन इसी काम में गया।

: ७४ :

बा की स्मृति

२२ मार्च '४४

बा को गए आज एक महीने पूरा हुआ। इसी तरह उस दिन तारीख २२ और तिथि तेरस थी। सुबह प्रभावतीबहन ने पूजा की। मनु ने बा की तस्वीर रखकर पूजा की। ८॥ बजे प्रार्थना में ईशावास्यमिदं, नम्यो, असतो मा सद्गमय, अउजबिल्ला, मजदा और गीता का बारहवां अध्याय

पढ़ा। सजावट बड़ी अच्छी थी। कैदियों को खिलाने और प्रार्थना का कार्यक्रम रखा गया।

पकौड़ी, हलुआ और पूरनपूरी बनाई। दो बजे बापू पूछने आये, "बा पुछवाती हैं कि कितनी देर है।" उसी समय मैंने कैदियों को बुलवाया था। सबको साथ ही पौने तीन बजे खिलाना शुरू किया और सबने भरपेट खाया। ६॥ बजे बापू को घूमने निकलना था और ७-३५ पर प्रार्थना शुरू करनी थी।

बीमारी के दिनों में बा की खाट बापू के कमरे में रहती थी। वहां जिस मेज पर बा सिर रखा करती थीं, उस पर मैंने मेजपोश डालकर विष्णु और लक्ष्मी की मूर्त्तियां प्रतिष्ठित कीं। उनके चरणों के पास वह चित्र रखा, जिसमें बा बापू के पांव पखारती हुई दिखाई गई हैं। इसके नीचे मीराबहन का बनाया हुआ मिट्टी का विष्णु-मंदिर रखा। लगता था, मानो बा मंदिर से उठकर भगवान के चरणों में पहुंच गई हैं। इस दृश्य के पीछे तुलसी के पौधे रखे, ऊपर दीवार पर 'हे राम' की तख्ती लटकाई और सामने के भाग में रांगोली से सजावट की। उसमें ॐ और 卐 बनाये, सुंदर दृश्य था।

७-३५ पर प्रार्थना शुरू हुई। हमेशा की प्रार्थना के साथ-साथ 'वैष्णवजन,' 'गोपाल राधाकृष्ण' 'गोविंद गोविंद गोपाल' (यह धुन बा को बहुत प्रिय थी), 'ह्वेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रॉस' तथा रामायण हुई। मीराबहन ने करताल बजाई। पीछे गीताजी का पारायण किया। ९। बजे सारा कार्यक्रम अच्छी तरह समाप्त हुआ। प्रभा, मनु और मैं नीचे जाकर समाधि पर बत्ती रख आये। रात को बैठकर कातने की बापू ने मनाही की।

२३ मार्च '४४

शाम को घूमते समय बापू कुछ थके-से लगे। पूछने पर कहने लगे, "एक तो मेरे पत्रों के सरकारी जवाब नहीं आते हैं, इसलिए मन पर बोझ है। दूसरे, बा के जाने का धक्का अभी तक दूर नहीं हुआ। बुद्धि कहती है कि इससे अच्छी मृत्यु बा के लिए हो नहीं सकती थी। मुझे हमेशा यह डर रहता था कि बा अगर मेरे पीछे रह जायगी तो अच्छा नहीं। मेरे

हाथों में ही चली जाय तो मुझे अच्छा लगे; क्योंकि बा मुझमें समा गई थी। मैं शोक में पड़ा रहता हूं, ऐसा भी नहीं है। बा का विचार करता रहता हूं, वह भी नहीं। क्या है, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता।"

: ७५ :

असंतोष और प्रगति

२४ मार्च '४४

सवेरे घूमते समय चर्चा चली थी कि जापानी अगर सचमुच आगे बढ़े तो हमें क्या करना होगा। बापू बोले, "हो सकता है कि जब भी हम जेल से निकलें, हमें जापान का सामना करना होगा। उनके वश में होने का तो सवाल उठता ही नहीं। लोगों से हम क्या करवा सकते हैं, किस प्रकार उन पर काबू रख सकते हैं, यह तो उन्हें देख कर ही तय करना होगा। आश्चर्य है कि ऐसे आदमी को सरकार जापान की तरफ झुकने-वाला कैसे कहती है।

२५ मार्च '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। उनको डेढ़ वर्ष से अधिक हो गया है, इसलिए हफ्तों की गिनती तो भूल गई है; मगर वह दिन इतना ताजा है कि मानो सारी घटना कल ही हुई हो। अब उनके साथ बा भी जा मिली हैं। मन में आया है कि यह चितास्थान जगदंबा और महादेव के मंदिर के नाम से पूजा जायगा। वहां जो नीम लगाया था, उस पर नये पत्ते आ रहे हैं।

गर्मी बढ़ने लगी है, इसलिए बापू सुबह शाल लेकर नहीं निलकते।

शाम को माताजी की मुलाकात के बारे में बात हुई। प्रभाबहन ने कहा, "इतनी दूर से आनेवाले को एक से अधिक मुलाकातें मिलनी चाहिए। देवली में मिलती थीं।" बापू बोले, "वे दिन गये।" रात में मैंने भाई की फ़ाइलों का काम किया।

२६ मार्च '४४

बापू ने भंडारी और शाह से पूछा, "सुशीला की माताजी इतनी दूर से फिर नहीं आ सकेंगी, इसलिए एक से अधिक वार मिलने नहीं दिया जा सकता क्या ?" भंडारी ने बंबई सरकार से दरियाफ्त करने को कहा। बाद में बापू कहने लगे, "माताजी को अनुकूल हो तो उन्हें एक महीना रोक लिया जाय, दीनशा के वहां वे अपना इलाज भी करावें, लड़की की भी संभाल हो। फिर दुबारा मिलकर महीने के बाद जावें।"

भाई को संकोच हो रहा था कि दीनशा पर इतना बोझ कैसे डाला जाय, लेकिन बापू को कोई हर्ज नहीं लगता था। बोले, "उसके यहां मैं किसी भी रोगी को भेज सकता हूं, यह बरसों से उसके साथ समझौता है।"

२७ मार्च '४४

बापू का मौन है। मुलाकात के लिए उन्हें मौन में ही जाना होगा, यह अच्छा नहीं लगा। पर इससे यह फायदा भी था कि आज जाने से रामायण वगैरा में नागा नहीं पड़ेगा। सोमवार को यों ही नागा होता है।

बापू की शिकायत का सरकारी उत्तर आया है। बुरा है। काशीबहन का भी पत्र आया है।

बापू ने मीराबहन के साथ बातें करते हुए उन्हें बताया कि चीनी सहयोग मंडलियां (Chinese Coops) हिंदुस्तान के लिए क्यों उपयोगी नहीं हैं? चर्खासंघ में और इंडस्को[1] (Industrial Co-operatives) में क्या फर्क है?"

रात को एक बड़ा सांप बरामदे में पाया गया। मीराबहन के हाथ में टार्च थी, इसलिए वे बाल-बाल बच गईं, नहीं तो पैर उसी पर पड़ता। सिपाहियों ने आकर उसे मार डाला।

२८ मार्च '४४

आज सुबह घूमते समय बापू सात्त्विक, राजसिक और तामसिक असंतोष का भेद समझाने लगे, "प्रगति के लिए असंतोष आवश्यक है,

---

१. औद्योगिक सहयोग मंडल।

मगर असंतोष जिस प्रकार का होगा, प्रगति उसी के आधार पर होगी। तामसिक असंतोष वाला मनुष्य मात्र ईर्ष्या के वश होकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करेगा। राजसिक असंतोष वाले के मन में निर्दोष स्पर्द्धा का भाव रहेगा, किंतु सात्त्विक असंतोष में किसी के साथ मुकाबले का सवाल ही नहीं उठता। मनुष्य स्वतंत्र होकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है। फिर राजसिक असंतोष वाला मनुष्य राजसी वृत्ति से काम करेगा। वह दौड़-धूप से भरा रहेगा। सात्त्विक भाव से प्रयत्न करने वाला शांति से—सौम्यता से काम करेगा।"

जमादार. . .हमें मोटर में इंस्पेक्टर-जनरल पुलिस के ऑफिस में ले गया। हम लोग सीढ़ियां चढ़ रहे थे तब ऊपर के बरामदे में से माताजी को देखा। बेबी ने पेशाब कर दिया था, इसलिए वे कपड़े धोने गसलखाने गई थीं और वहीं से आ रही थीं। उन्होंने हमें नहीं देखा। ऑफिस के दरवाजे पर हम उनसे मिले और साथ ही भीतर गए।

बेबी बड़ी सुंदर लगती है। वह भूखी थी, इसलिए दूध पिलाने पर सो गई। थोड़ी देर में माताजी ने उसे जगा दिया।

हमें आशा थी कि दूसरी मुलाकात मिलेगी, मगर भंडारी तो बंबई चले गए थे। अडवानी इस बारे में कुछ जानते न थे। इसलिए यह तय हुआ कि खुद मोहनलाल बंबई जाकर पता करें और माताजी को दीनशा के यहां छोड़ जायं।

हम लोग दो बजे वहां से वापस लौटे। बापू तभी उठे थे। उन्हें सब बताया तो बातों में तीन बज गए।

: ७६ :

बा के बारे में सरकार की सफाई

बापू रात भर सो नहीं सके। सुबह चार बजे उठकर बा-संबंधी सरकारी उत्तर का जवाब तैयार करने लगे।

२९ मार्च '४४

आज बा की मृत्यु पर लॉयड जॉर्ज का समवेदना-पत्र बापू को मिला।

३० मार्च '४४

आज पता चला कि हमें दूसरी मुलाकात न मिल सकेगी। बुरा लगा।

बापू ने अपना पत्र सुधारा। हम सबने भी उसे देखा। प्रार्थना के बाद बापू कहने लगे कि बा की अंत्येष्टि-क्रिया के बारे में सरकारी पत्र में था—'पूछने पर पता चला कि पहले या दूसरे चुनाव में आपका किसी तरफ खास पक्षपात न था।' और यह उनको खटका था। मैंने और भाई ने इस वाक्य की ओर उनका ध्यान दिलाया था, मगर बापू ने आज इस वाक्य को पकड़ा और हम लोगों से कहने लगे, "मैं ध्यान न दूं तो मेरे साथ झगड़ा करना चाहिए। अगर डरते रहोगे कि बापू का रक्तचाप बढ़ जावेगा या बापू नाराज हो जावेंगे तो मेरा काम नहीं कर सकोगे।"

३१ मार्च '४४

प्रार्थना के बाद बापू सोये नहीं। सरकार को पत्र लिखने के विचार से इतने भरे थे कि घूमने के बाद २०४/११६ रक्तचाप निकला। स्नान करते समय भी उसी विचार में लीन रहे। उसके बाद बाहर निकलकर लिखवाना शुरू किया।

साढ़े छः बजे बापू मुझसे बोले कि उन्हें लिन्-यू-टांग की किताब पढ़कर सुनाऊं, मगर मैंने उनसे आराम लेने को कहा—तब वे आंख मूंदकर लेटे और सो गए।

१ अप्रैल '४४

मैंने जब डॉ० गिल्डर से कहा कि बापू के पत्र का पांच बार संशोधन हो चुका है तो वे बोले, "छठी बार मैं संशोधन कराऊंगा।" उन्होंने जो कमियां निकालीं, वे मुझे भी खटकी थीं। मैं एक पत्र तैयार करके बापू के पास ले गई। उन्होंने पत्र को खूब काट-छांट डाला था। हमारे सुधारों को समझाकर वे घूमने गए। अपना सुधारा हुआ पत्र वे हमें दे गए कि जिससे हम उसे अच्छी तरह देख लें और दोनों में से जो पसंद करें, वे उसे ही भेजने का निश्चय करेंगे। हम लोगों ने दोनों पत्रों को मिलाकर एक

तीसरा पत्र तैयार किया। बापू पौने दस बजे वापस आये तब डॉ० गिल्डर ने किये हुए परिवर्तनों को पढ़कर उन्हें सुनाया। बापू ने स्वीकार किया। स्नानघर में मुझसे उन्होंने वह पत्र पढ़कर सुनाने को कहा। उन्होंने उसमें कुछ और सुधार करवाये, यहां तक कि खाते समय भी सुधार करवाते रहे। बारह बजे पत्र पूरा हुआ। भाई ने तीन बजे तक टाइप कर दिया और चार बजे वह साधारण डाक से चला गया। सोमवार को इसी पत्र की एक नकल रजिस्ट्री से भेजी जावेगी।

भाई रात गए तक पत्र की नकलें टाइप करते रहे। चाहते हैं कि सोमवार के लिए नकलें तैयार हो जावें। नकलों के साथ परिशिष्ट भी टाइप की।

२ अप्रैल '४४

सवेरे बापू को घड़ी देखने में देर हो गई, इसलिए छः बजकर बीस मिनट पर प्रार्थना के लिए उठे, वह भी प्रभाबहन के उठाने से। वे उस समय साढ़े चार का समय समझ रहे थे। घंटे और मिनट की सुइयां देखने में भूल हो गई थी।

घूमते समय बापू कहने लगे कि पिछले साल की निस्बत इस साल कम गर्मी पड़ रही है। पिछले साल उपवास के बाद मार्च में पंखा चलाना पड़ता था, मगर इस साल अभी तक पंखे की जरूरत नहीं है।

बा की शिकायतों वाले बापू के पत्र में स्पष्ट किया गया था कि किस प्रकार बार-बार बा के लिए सहूलियतें मांगी गईं और किस तरह बार-बार कहने के बाद मौका निकल जाने पर सहूलियतें मिलीं—इससे भंडारी को चिंता हो गई कि कहीं उनपर विपत्ति न आ पड़े, इसलिए वे अपने बचाव की खातिर आज आकर कहने लगे, "यह पत्र की क्या बात है? आपने मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया?" डॉ० गिल्डर बोले, "बुलाया तो था, मगर आप यहां नहीं थे।" भंडारी ने कहा, "दीनशा को इसीलिए पहले नहीं भेजा कि आप उनकी जरूरत नहीं समझते थे।" गिल्डर बोले, "मैंने तो आपसे कभी नहीं कहा कि दीनशा की सेवाओं की आवश्यकता नहीं।" भंडारी ने उत्तर दिया, "हां, वह तो ठीक है। मैंने भी ऐसा कुछ

नहीं कहा। मैंने यह कहा था कि उन्हें सलाह के लिए नहीं बुलाया जा सकता; क्योंकि वे डिगरीधारी डॉक्टर नहीं हैं। पता नहीं, सरकार इससे क्या समझी।"

बापू बोले, "और दाह-क्रिया के बारे में सरकार कहती है कि उसने पूछा और पता चला कि मुझे पहले दो चुनावों में कोई पक्षपात नहीं था, यह क्या बात है?"

भंडारी ने जवाब दिया, "मैंने तो शब्दशः आपका संदेश टेलीफोन पर पढ़कर सुनाया था। और मैंने कुछ नहीं कहा।"

फिर भंडारी भाई से पत्र लेकर डॉ० गिल्डर के कमरे में बैठकर पढ़ने लगे। बापू की मालिश पूरी करके डॉ० गिल्डर वहां गये और भंडारी से बातें करते रहे। बापू ने मुझसे कहलाया कि वे भंडारी को भी एक पत्र लिखेंगे। मैं कहने गई तो भंडारी मुझसे बोले, "यह पत्र लिखने से पहले मुझे बुला क्यों न लिया?" मैंने बताया, "आपको बुलाया तो था, मगर आप चले गए थे। मैं तो खुद आपसे मिलना चाहती थी; क्योंकि आपने कहा था कि माताजी से मेरी दूसरी मुलाकात हो सकेगी।" वे बोले, "हां-हां, वह तो अडवानी कर सकता था।" मैंने कहा, "अडवानी से कहा था। उन्होंने कहा कि वे कुछ नहीं कर सकते।" भंडारी बोले, "मुझे तो लगता है कि उसमें कोई दिक्कत नहीं हो सकती थी।" डॉ० गिल्डर ने बतलाया, "सुशीला का भाई आयंगर के पास गया था, वहां से 'न' मिली।" भंडारी बोले, "मैं करता तो ऐसा न होता।"

मैंने कहा, "मेरी माताजी इस समय बंबई में हैं। यहां आने वाली हैं। बापू ने उन्हें इलाज के लिए दीनशा के यहां रहने को कहा है। इसलिए आप अब भी कुछ कर सकते हों तो करें।" वे कहने लगे, "उनके आने पर मुझे खबर करना।" बाद में उन्होंने किया-कराया कुछ नहीं।

सुबह बापू ने भंडारी को पत्र लिखा। शाम को भंडारी स्वयं आये और फिर वही बातें कहने लगे, "दीनशा के बारे में मैंने पहले समझा था कि आप उसे डॉक्टरी सलाह के लिए बुलाते होंगे। इसीलिए मैंने कहा था कि उसे बुलाया नहीं जा सकता।" बापू बोले, "मैंने तो आपसे स्पष्ट कहा था कि वह डॉक्टरों के नीचे काम करेगा।" भंडारी ने कहा, "जब आपने

यह कहा तब मैंने उसके आने की इजाजत मांगी थी।" बापू बोले, "बा तो बहुत दिनों से कह रही थीं। मुझसे जैसे ही आपने पूछा, मैंने स्पष्ट कर दिया था कि वह आकर क्या करेगा।"

भंडारी कहने लगे, "बा ने पहले अडवानी से कहा था कि दीनशा को भेजो। अडवानी ने मुझसे कहा या नहीं, यह मुझे याद नहीं। मैं १७ जनवरी को आया। उसके बाद ही बा ने मुझसे कहा। बा के कहने पर तो मैंने कुछ किया नहीं, मगर आपके कहने पर फौरन अमल किया।" बापू बोले, "मैंने तो हताश होकर सरकार को लिखा था; क्योंकि जबानी कहने का कोई असर देखने में नहीं आया।" भंडारी ने जवाब दिया, "यह पता चलते ही कि आप उन्हें सलाह के लिए नहीं, बल्कि इलाज और एनीमा या मालिश करने के लिए बुलाते हैं, मैंने उनके आने का इंतजाम किया।" डॉ० गिल्डर ने बताया, "मगर सलाह के लिए उन्हें बुलाने का कभी सवाल ही नहीं उठा।"

दाह-क्रिया के बारे में भी भंडारी ने कहा, "मैंने तो अक्षरशः आपकी दरख्वास्त उन्हें सुना दी थी। कल जाकर मैं सब कागजात देखूंगा। आपको उत्तर की जल्दी तो नहीं है न ?" बापू ने कहा, "नहीं।" अपने और कागजों के साथ भंडारी बापू का कल वाला पत्र भी मांग गए।

बापू ने कौंसिल ऑव स्टेट में दिये गए कोनरन स्मिथ के वक्तव्य के बारे में भी एक पत्र सरकार को लिखा। शर्मा को बुलाने की तारीख उन्होंने ९ फरवरी बताई थी, जब कि ३१ जनवरी के अखबारों में शर्मा का नाम आ गया था और ३ फरवरी को फिर से याद दिलाई गई थी।

: ७७ :

बापू की जागरूकता

३ अप्रैल '४४

भाई ने आज भी काफी टाइप का काम किया। बापू का मौन है।

वेवल का उत्तर आया है जिसमें मुझे तो सूखी 'न' लगती है। मीराबहन और भाई उसमें से कुछ आशाजनक अर्थ निकालने की सोच रहे हैं। अभ्यास के तौर पर बापू ने उसका उत्तर लिखने को कहा। परसोंवाले पत्र की आज एक नकल रजिस्ट्री से गई।

४ अप्रैल '४४

आज सबका वजन लेने का दिन है। डॉ० गिल्डर का वजन ६ पौंड घटा। मनु का और मेरा वही-का-वही रहा। मीराबहन और बापू एक-एक पौंड घटे। प्रभावहन और भाई का वजन बढ़ा।

बा की समाधि पर मीराबहन ने शंखों का 'हे राम' बनाया। हम लोगों ने शाम को देखा।

मीराबहन ने अपना उत्तर पाठरूप में लिखकर दोपहर में बापू को दिया। मैंने भी चालीस मिनट में अपना जवाब लिखकर बापू को दिया।

शाम को घूमते समय पाकिस्तान की बात होने लगी। बापू कहने लगे "मैंने कहा है कि जिसे मैं पाप समझता हूं, उसमें 'हां' कैसे करूं! मगर तुम्हें लेना हो तो लो। तुम्हें कौन रोक सकता है। मैं गो-हत्या को पाप मानता हूं, मगर उसके लिए मुसलमानों के साथ झगड़ा नहीं करता। अपनी बात मैं उन्हें सुना देता हूं। उन्हें वह चुभती नहीं। खिलाफत के दिनों में मैं उनसे कहता था कि खिलाफत तुम्हारी गाय है। मैं उसे अपनी गाय मानता हूं। मेरी गाय को तुम अपनी गाय मानो। मगर मुझे तुम्हारे साथ सौदा नहीं करना है। जो करना है, अपने-आप करो। एक साल तक यह चला भी। लाखों गाएं बचीं। मुसलमानों ने अपने-आप उन्हें बचाया।"

५ अप्रैल '४४

आज सुबह खाने के कमरे में से जाते समय बापू ने देखा कि वहां लिखने की मेज पर खाने का सामान रखा है। उन्हें वह चुभा और सबको उन्होंने ऐसा न करने की हिदायत दी, "लिखने की मेज पर यह सब सामान देखा तो मुझे चभा। मुझे लगा कि कटेली को भी बुरा लगता होगा, मगर हमें बुरा न लगे, इसलिए वे कुछ कहते नहीं। मैं उन्हें इस परिस्थिति में नहीं

डालना चाहता। उनसे मेहरबानी भी नहीं चाहता। वे मेहरबानी करके हमें यह मेज इस तरह इस्तेमाल करने दें तो उससे तो बेहतर यह है कि हम उसे काम में न लें। इसीलिए मैंने यह हिदायत की। पहली बात तो यह है कि कटेली से पूछना चाहिए। उन्हें इसके इस तरह इस्तेमाल में लाने में कोई हर्ज न हो तो मुझे भी नहीं है। मुझे खुश करने के लिए तुम कुछ न करो।"

: ७८ :

जेल में दूसरा राष्ट्रीय सप्ताह

६ अप्रैल '४४

आज राष्ट्रीय सप्ताह शुरू होता है। कल शाम बापू बता रहे थे कि सन् १९१९ में उन्होंने ६ अप्रैल के दिन सत्याग्रह को जन्म दिया और रौलट एक्ट का विरोध करने के लिए प्रार्थना, उपवास और हड़ताल का एलान किया। देश-भर में जबर्दस्त हड़ताल हुई। उससे पहले हड़ताल शहरों में ही होती थी। अब देहातों में भी आरंभ हुई। हड़ताल का निश्चय जिस समय किया गया, उस समय वक्त इतना कम था कि लोगों तक संदेश पहुंचाना कठिन था। मगर इस चीज में ईश्वर का हाथ था। इसलिए जागृति की लहर तो अपने-आप ही लोगों में फैल गई और छः अप्रैल को देशभर में व्यापक हड़ताल हुई। अधिकाधिक संख्या में लोगों ने २४ घंटे का उपवास किया। हड़ताल कई-कई स्थानों में १३ अप्रैल को मनाई गई। लोगों की मांग थी कि सत्याग्रह करने से पहले एक हफ्ते का समय और दिया जाय ताकि सत्याग्रह के लिए कुछ तैयारी की जा सके। अमृतसर में सारा हफ्ता मनाया गया। लोगों की मान्यता थी कि १३ तारीख को जनरल डायर द्वारा गोली चलवाने से पहले सरकार ने डुग्गी पिटवाकर घोषणा की कि जलियांवाला बाग में सभा होगी और वहां जो आदमी भाषण करनेवाला था, वह सरकार का ही आदमी था। इस तरह लोगों को वहां इकट्ठा करके, बिना किसी तरह का नोटिस दिये, डायर ने उनपर

गोली चलाई। वह तो मशीनगन लानेवाला था, लेकिन गली तंग थी, इसलिए नहीं ला सका। बाद में उसने स्वयं कबूल किया कि अगर बारूद न खत्म हो गई होती तो वह और चलवाता रहता।

प्रभावहन ने पूछा, "उसे सजा नहीं हुई?" बापू ने उत्तर दिया, "जांच करवाई गई थी और कामन्स-सभा ने उसे जनरल के पद से हटा दिया, किंतु लॉर्ड-सभा ने उसका स्वागत किया और उसे हीरों से जटित तलवार भेंट की।" भाई बोले, "बर्मिंघम नगर के निवासियों ने भी उसका ऐसा ही स्वागत किया था। आश्चर्य है कि उस समय की इन घटनाओं के बावजूद भी अगस्त १९४२ के समय सरकार हमारे लोगों से बंबई में सड़कों पर झाड़ू लगवा सकी।"

प्रभावहन ने कहा, "बिहार में ऐसा ही हुआ।" बापू बोले, "हां, एक तरफ सारे देश में जागृति आई है और दूसरी तरफ यह है कि लोग आज भी डरकर ऐसे काम कर देते हैं। मगर बात तो यह है कि उस वक्त लोग सरकार के डर से थर-थर कांपते थे। आज दो वर्ष से सरकार का जो दमन चल रहा है, उसके सामने रौलट एक्ट और जलियांवाला बाग कोई चीज नहीं है। तो भी लोग इस समय कांपते नहीं हैं, उनपर इसका कुछ भी असर नहीं हुआ है।"

बापू एक और अवसर पर बात करते हुए कहने लगे, "सरकार की इतनी सख्ती के परिणाम से कांग्रेस बहुत ऊंची उठ गई है। आज सब कांग्रेस का ही नाम लेते हैं। दूसरे दलों के लोग सरकारी झंझटों में नहीं पड़ते। पड़ें तो बहुत कुछ उन्हें मिले भी। लेकिन ऐसे दलों के लोग समझ गए हैं कि इससे देश को कोई फायदा नहीं होने का। देश के लिए कुछ करना हो तो वह कांग्रेस के ही मार्फत हो सकता है। इसीलिए सभी लोग कांग्रेस को रिहा किये जाने की मांग करते हैं।"

आज सभी का २४ घंटे का उपवास रहा। सुबह छः से शाम के छः बजे तक अखंड चर्खा चलाया। मैंने, मीराबहन ने और भाई ने दो-दो घंटे, मनु ने साढ़े तीन घंटे, प्रभावहन ने ८ घंटे तथा बापू और डॉ० गिल्डर ने एक-एक घंटा काता।

बापू ने सुबह प्रार्थना के बाद उठकर वेवल के पत्र का उत्तर तैयार किया। हम सबको वह जरा तीखा लगा, मगर बापू को लगता था कि दूसरा रास्ता नहीं है। कहने लगे, "वह पत्र तीखा है ही नहीं।" स्नान के बाद उसे फिर से पढ़ा। दोपहर को भाई ने कच्ची नकल टाइप की। मैंने उन्हें लिखवाया।

मैंने और भाई ने बापू से कहा, "इस तरह का पत्र न लिखें तो क्या हर्ज है?" वे बोले, "लिखना तो चाहिए। न लिखूं तो मैं नीचे उतरता हूं और लिखूं तो ऐसा ही लिख सकता हूं।"

रात को डॉ० गिल्डर प्रार्थना के बाद बोले, "यह पत्र लिखने का हेतु क्या है? क्या आगे के लिए पत्र-व्यवहार बंद करने का?" बापू ने कहा, "हां, यह परिणाम हो सकता है।" डॉ० गिल्डर ने कहा, "मगर इसका असर क्या होगा? न सिर्फ आप, बल्कि सारा आंदोलन, सारी लड़ाई बदनाम होगी।"

बापू ने कहा, "हां, वह भी हो सकता है। लोग कह सकते हैं कि इस आदमी से तो हमारी कभी पट ही नहीं सकती। इसके साथ बात क्या करना? मगर इस डर से कि जगत क्या कहेगा, सत्याग्रही कभी कोई काम नहीं करता। वाइसराय के पत्र में मैं कोई रास्ता खुला पाता ही नहीं हूं। देखूं तो झट कूद पड़ूं। जैसा उसका पत्र है, वैसा ही जवाब होना चाहिए, ताकि वह समझ ले कि मैं उसका अर्थ समझ गया हूं। अगर कोई रास्ता निकलना भी होगा तो इसी तरह निकलेगा।"

बापू फिर दक्षिण अफ्रीका की बात करने लगे कि कैसे स्मट्स ने वहां उनसे बात करने से भी साफ इंकार कर दिया। वे ट्रांसवाल पर चढ़ाई कर रहे थे और ३,००० आदमियों को अपने हाथों खिलाते थे। स्मट्स ने कहा, "बात करना है तो यहां से लौट जाओ।" मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे और आगे बढ़े। अंत में उसे उनके साथ समझौता करना पड़ा।

बापू कहने लगे, "उस लड़ाई के आरंभ में सब लोग मेरे विरुद्ध थे। बा समेत सोलह आश्रमवासियों को लेकर मैंने लड़ाई शुरू की। जो लोग

मेरे साथ चर्चा करते, उनसे मैं कहता, 'भाई, मैं कहां यह लड़ाई चला रहा हूं। भगवान मुझसे जो कराता है, मैं करता हूं।' आखिर छः महीने में उस लड़ाई का सफल अंत आया। सत्याग्रह का यह नियम है कि 'कोई क्या कहेगा' इस विचार से सत्याग्रही कभी कोई कदम न उठावे। मैं सच्चा हूंगा तो मेरे हाथों हिंदुस्तान का बुरा कभी होनेवाला नहीं है। अभी मैं जो कहता हूं, उसे घमंड न माना जाय, मगर मुझे विश्वास है कि हिंदुस्तान का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। बिगाड़ूं तो मैं ही बिगाड़ सकता हूं। मैं कभी हिन्दुस्तान को बिगाड़ूंगा नहीं। लोगों को लगे कि मुझसे निभ ही नहीं सकती तो वे मुझे छोड़ सकते हैं। मैं तो नाचूंगा। मैं तो यहां बैठा हूं। उन्हें जो करना है, करें।"

डॉ० साहब बाद में कहने लगे, "बापू जब सत्याग्रह के कानून की बात करने लगते हैं तब हमारा मुंह बंद हो जाता है।"

७ अप्रैल '४४

सुबह घूमते समय मैंने बापू से पूछा कि जिस सत्याग्रह की बात वे कल कर रहे थे, क्या वह दक्षिण अफ्रीका का आखिरी सत्याग्रह था? उन्होंने जवाब दिया, "हां, वह आखिरी सत्याग्रह था। शुरू किया गया था १६ जनों को लेकर, मगर वह जंगल की आग की तरह फैला और इतना प्रचंड साबित हुआ कि छः महीनों में समझौता हो गया। हमारी गैरहाजिरी में बच्चों ने फिनिक्स का आश्रम चलाया। देवदास और प्रभुदास-जैसे १२-१२ बरस के लड़के रह गए थे और १६ बरस से ऊपर के सभी जेल में थे। पहाड़-जैसे जुलू लोग आसपास पड़े थे। गोरों का मिजाज इतना बिगड़ रहा था कि कुछ ठिकाना न था, मगर बच्चों के साथ क्रूरता करना कठिन था। बच्चों का काम बहुत अच्छी तरह चला। जोहांसबर्ग के दफ्तर का काम मिस श्लेजन ने संभाला। वह करीब २२ वर्ष की थी, मगर बड़े-बूढ़े तक उससे सलाह लेने आते थे। उसने वास्तव में अद्भुत काम किया—हिसाब संभालना, लड़ाई चलाना और 'इंडियन ओपीनियन' प्रकाशित कराना, यह सब उसके जिम्मे था। उसके लेख भी उन दिनों अद्भुत हुआ करते थे।"

मैं बोली, "यह तो यही हुआ कि उन दिनों उसकी जीभ में सरस्वती आकर बैठी थी।"

बापू ने कहा, "बस यही है, नहीं तो उसने इस तरह का काम न पहले किया था, न बाद में।"

भाई को बापू वाले मसविदे से संतोष नहीं था, इसलिए उन्होंने एक नया तैयार किया है। खाने के समय बापू उसे लेकर बैठे और मुझे एक नया ही पत्र लिखवा डाला। तीन बजे मैंने, मीराबहन ने और भाई ने अपने-अपने सुझाव उनके सामने रखे। बहुत से सुधार किये गए और ७-८ बजे बापू ने फिर से नया पत्र लिखवा डाला। लिखाते समय भी सुधार करवाते रहे। आठ बजे घूमने निकले और २० मिनट घूमे। रात को विचार आया कि डॉ० गिल्डर की भी राय ली जाय और सुधार किये जायं। चाहते थे कि पत्र आज चला जाय अथवा न जा सके तो कम-से-कम पूरा तो हो ही जाय।

डॉ० गिल्डर कल सुबह बापू के सामने अपने सुझाव पेश करेंगे।

८ अप्रैल '४४

बापू ने अपने पत्र में कहा है कि समानता के बिना सहयोग नहीं हो सकता। डॉ० गिल्डर ने अपने सुझाव में इसका विरोध किया। इसी तरह बापू ने लिखा है कि हाकिम और रैयत एक होकर काम नहीं कर सकते। इसका विरोध भी डॉ० गिल्डर ने किया। बापू ने कहा, "सचमुच राजा-प्रजा एक मंच पर नहीं इकट्ठे हो सकते। जब ऐसा संभव नहीं होता तब राजा प्रजा का सेवक बन जाता है, राजा नहीं रहता।" अनेक राजतंत्रों की चर्चा करते हुए बापू ने कहा, "इंग्लैंड, अमेरिका या रूस—कहीं भी राजा-प्रजा में सच्चा सहयोग नहीं है।" बाद में उन्हें विचार आया कि कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां भी आ सकती हैं, जब राजा-प्रजा में तथा स्वामी-सेवक में सहयोग हो सकता है।

घूमते समय बापू ने हम लोगों को समझाया, "मानो कि एक मालिक बिलकुल गुंडा है और नौकर पर जुल्म करता है। मगर एकाएक सर्प निकलता है और दोनों पर हमला करता है। तब वे दोनों सहयोग करेंगे

और मिलकर सर्प को मारेंगे। इस तरह अनेक परिस्थितियां ऐसी हो सकती हैं, जिनमें असमान व्यक्तियों या दलों में सहयोग हो सकता है, इसलिए मेरा यह कहना कि सच्चा सहयोग समान दलों में ही हो सकता है, ठीक नहीं है। यह सच है कि इस खास जगह पर समानता के बिना सच्चा सहयोग नहीं हो सकता, मगर सामान्य नियम के रूप में यह चीज सच्ची नहीं है। मुझे यह बात सूझनी ही चाहिए थी, मगर हम सब अक्सर ऐसी भूल करते हैं और झट सामान्य नियम पर आ जाते हैं। अगर मेरा यह पत्र ज्यों-का-त्यों चला जाता तो मेरी हँसी होती। डॉ० गिल्डर ने तो सिर्फ इशारा किया, मगर अब मैं उनसे आगे जाता हूं। अब यह पत्र नया ही लिबास पहनेगा और छोटा भी हो जावेगा।"

सबेरे घूमकर, फूल चढ़ाकर ऊपर आये और स्नानादि के बाद बापू पत्र लेकर बैठे। बारह-साढ़े बारह बजे से लिखाना आरंभ किया। पत्र दो बजे से पहले पूरा हो गया।

बापू ने कल से प्रभाबहन को गीता का उच्चारण सिखाना आरंभ किया है। आज उन्हें और मनु को २० मिनट सिखाया, साथ ही संस्कृत भी पढ़ाई।

९ अप्रैल '४४

खाने के समय रोज की तरह रामायण वगैरा पढ़ी। आजकल बापू थके-से रहते हैं। रामायण दो-चार मिनट पहले ही बंद कर देते हैं। पहले वे नियत समय से अधिक पढ़ा करते थे। मैंने पूछा तो बोले, "रामायण में रस तो और ज्यादा आता है, मगर आजकल शक्ति कम है।"

खबर मिली है कि प्रभाबहन को मंगलवार के रोज भागलपुर भेजने का हुक्म आया है। बापू की बात सच निकली कि एक-न-एक दिन प्रभावती को जाना ही होगा।

बापू कहने लगे, "यह तो बस चलने का आरंभ है। दूसरा नंबर मनु का होगा, पीछे बाकी सबको यहां से हटावेंगे। मैंने तो तीन चीज में भविष्य कहा है। तीनों होने ही वाली हैं। लेकिन इसमें भविष्यवेत्ता की बात नहीं है; केवल अनुभव की ही है।"

मैंने प्रभावहन और मनु के लिए एक डिब्वे पर चित्रकारी करनी शुरू की है, कल सुबह पूरी होगी।

सुबह भंडारी आये थे। उस समय प्रभावहन के बारे में कुछ नहीं कहा। शायद वाद में खवर आई होगी।

१० अप्रैल '४४

प्रभावहन को कल सवा पांच बजे जाना है। बड़ी हिम्मत से काम ले रही हैं। बापू का मौन उन्हें आज बहुत अखर रहा है। उन्होंने ही आज बापू की मालिश वगैरा की।

११ अप्रैल '४४

सवेरे उठते ही प्रभावहन कहने लगीं, "कल इस वक्त मैं कहां हूंगी। बापू, अब तो थोड़े ही घंटे रह गए।" बापू बोले, "इसी तरह थोड़े मिनट रह जायंगे और फिर तू चली जायगी।"

घूमते समय बापू बोले, "तेरा जाना चुभता तो है। एक तरफ से लगता है कि तू यहां पर रहती तो तेरा अभ्यास वगैरा अच्छी तरह से चलता। दूसरी तरफ से खुशी होती है कि भले तू जावे। यहां पर तो सुख का जीवन वन गया है। जेल में हम तकलीफें सहन करने के लिए जाते हैं, तपश्चर्या करने जाते हैं। यहां तकलीफ नहीं है। दूसरी जगह तुझे कुछ तकलीफें तो सहन करनी पड़ेंगी। मेरी दृष्टि से वह इष्ट है। मैंने तुझे समझाया है कि कैसे अपने-आप अभ्यास किया जाता है। ऐसा करेगी तो तेरा कल्याण ही है।"

सुबह नाश्ते के समय और बाद में खाने के समय प्रभावतीवहन बापू से कुछ प्रश्न पूछने लगीं।

बापू को लगता है कि संभव है, थोड़े दिनों वाद बिहार सरकार प्रभावती को छोड़ दे। छूटने के बाद वह क्या करेगी, इस बारे में वे वोले, "मैं यहां बैठा तुझसे वहुत नहीं कह सकूंगा। बाहर का क्या वातावरण है, दूसरे कार्यकर्त्ता व मित्रगण क्या राय देते हैं—वह सब देखकर तू तय करेगी। इतना कहे देता हूं कि आज जेल जाने की खातिर जेल जाने की

बात मेरे पास नहीं। मगर तू देखे कि बाहर रहकर कोई काम ही नहीं कर सकती, खादी का काम भी नहीं कर सकती, तो जेल में जायगी। जेल से बचने की खातिर तू कुछ न करेगी। काम करते-करते तुझे पकड़ लें तो भले पकड़ लें। मगर मुझे लगता है कि तुझे इस बारे में विचार करने में कुछ कठिनाई नहीं आनेवाली। वातावरण में से तू अपना रास्ता अपने आप ढूंढ़ लेगी।"

साढ़े बारह बजे से लेकर अढ़ाई-तीन बजे तक कटेली ने प्रभाबहन के सामान की तलाशी ली। पीछे सब सामान बंद करके चाबी अपने साथ ले गए। जो सिपाही प्रभावतीबहन को लेने आवेंगे, उनके मुखिया को वे चाबी दे देंगे। प्रभावतीबहन कहती थीं कि इतनी बारीकी से उनकी तलाशी आज ही हुई है।

तीन बजे के करीब कटेली साहब आये—कहने लगे, "अभी-अभी टेलीफोन आया है कि जिस गाड़ी से प्रभाबहन को ले जाना था, वह आज नहीं जा रही है। अब उन्हें कल सुबह दस बजे तैयार रहना होगा।" हम सब बहुत खुश हुए।

प्रभाबहन के पास रास्ते में पहनने के लिए रंगीन साड़ी नहीं है। बबूल के रंग में रंगी एक साड़ी, जो बा ने दो-एक महीने यहां पहनी थी और मुझे दी थी, मैंने उन्हें दी। उन्होंने बापू की दो धोतियां, एक तौलिया, एक छोटा रूमाल और उनके सूत की आंटी भी ली।

१२ अप्रैल '४४

सुबह उठे तो लगता था कि कौन जाने आज भी पुलिस जाना मुल्तवी कर दे। घूमने के बाद प्रभाबहन और डॉ० गिल्डर ने बापू की मालिश की। मैंने डिब्बे पर चित्र पूरा किया। सबको बहुत पंसद आया। प्रभाबहन इस 'हे राम' वाले डिब्बे में बा का कोई चिह्न रखेंगी।

ऐसा लगता था कि बापू स्नानघर में होंगे, तब प्रभाबहन चली जावेंगी। पर जब कोई नहीं आया तो बापू ने हम दोनों को खाना खाने के लिए भेज दिया। १२॥ बजे बापू सोने के लिए लेटे। वे कह रहे थे, "अगर आज नहीं ले जावेंगे तो कल मैं भेजूंगा नहीं।"

इतने में खबर मिली कि मोटर आ गई है और सामान नीचे जा रहा है। बस उठे। प्रभाबहन तार के अंदर से जाकर समाधियों को प्रणाम कर आईं। मैं और मनु साथ थीं। हम सब उन्हें पहुंचाने दरवाजे तक गए। एक बड़ी-सी पुलिस-लारी खड़ी थी। उसमें करीब आधे दर्जन सिपाही और एक मेट्रन थी। वह तो यहां सुबह से ही आकर बैठी थी।

प्रभाबहन ने बड़े धीरज से काम लिया, मगर तार के दरवाजे से बाहर जाने के बाद मैंने उन्हें साड़ी के पल्ले से आंख पोंछते देखा। क्या स्थिति है कि मन का दुःख हल्का करने के लिए अगर आंसू भी आवें तो इतने लोगों में उनकी नुमाइश होगी, इस डर से उन्हें रोकना पड़ता है। आखिर जेल जेल है और कैद कैद ही है!

एक बजे उन्हें विदा करके हम लोग ऊपर आये। प्रभाबहन के जाने से घर इतना सूना हो गया है कि बा के अवसान के समय का-सा वातावरण फिर बन गया है।

बापू तीन दिन से शाम को इतना थक जाते हैं कि बड़े धीरे-धीरे चलते हैं। अच्छा नहीं लगता। विचार आता था कि क्या किसी रोज सचमुच इतने दुर्बल हो जायंगे कि इतना धीमा चलें!

१३ अप्रैल '४४

आज राष्ट्रीय सप्ताह पूरा हुआ।

बापू का लिखा हुआ टॉटेनहम के पत्र का उत्तर आज डाक से गया। छः तारीख को उसका पत्र आया था। बापू ने दिन में बिलकुल आराम नहीं लिया। उपवास भी था। शाम को उसकी कमजोरी के कारण घूमते समय कुछ कम धीमे चलते थे। पांव घसीटकर चलने-जैसी बात न थी। पिछले दो दिन की कमजोरी का कारण मुझे तो हल्का बुखार लगता है। परसों प्रभाबहन ने रात में उनसे कहा था, "बापू, लगता है कि आपको बुखार है।" बापू ने हँसकर टाल दिया। मगर कल रात को उन्हें खूब पसीना आया। पसीना आने का दूसरा कोई कारण न था। बुखार उतरा होगा। सो आज जब कि उपवास था, बुखार न होने से शक्ति अधिक लगी।

शाम को सवा सात बजे झंडा-वंदन हुआ। वहां से सीधे फूल चढ़ाने गए, घूमे, प्रार्थना इत्यादि के बाद सोने की तैयारी की। बापू आज कहने लगे, "जो आदमी प्रार्थना के समय नियम का पालन नहीं करता, मेरी दृष्टि से वह दूसरा कोई नियम पालन नहीं कर सकता।"

डायरी लिखने की चर्चा करते हुए बोले, "भले लगे कि यह काम तो रोज करते हैं, इसे लिखने में क्या फायदा, तो भी लिखने में फायदा तो है ही। आखिर सूर्य रोज निकलता है तो वह निकम्मा थोड़े ही है। हम अपना कार्यक्रम व्यवस्थित बना लें, समय पर सब काम करें तो पीछे डायरी लिखने में कोई मुश्किल आ ही नहीं सकती। हम अपना काम यंत्र के समान समय पर करें, मगर यंत्र बनकर नहीं। यह सब प्रकार की प्रगति और सफलता के लिए अमोघ शस्त्र है।"

: ७९ :

बापू को मलेरिया

१४ अप्रैल '४४

प्रातः हमेशा की तरह प्रार्थना के लिए उठे। नाश्ते के बाद घूमने गए। खाने के बाद मैंने उनके साथ रामायण पढ़ी, फिर भाई के साथ शेक्सपियर पढ़ा। पीछे सो गई। ढाई बजे उठी तो देखा कि भाई ने मोहनलाल का एक पत्र बापू को दिया। उसके साथ और कई कागज थे। मैं मनु को सिखाने दूसरे कमरे में चली गई। बापू पेट पर मिट्टी रखकर वह पत्र पढ़ने लगे। तभी आकर भाई मुझे बताने लगे कि पत्र पढ़ते समय बापू के हाथ बहुत ही कांप रहे थे।

तीन बजे बापू की आवाज सुनी। मुझे लगा कि भाई के साथ बातें कर रहे हैं। मगर मनु ने कहा—नहीं, तुम्हें बुला रहे हैं। मैं गई तो कहने लगे, "पूरी दस आवाजें दीं हैं। पेशाब की बोतल ले आ।" मुझे बड़ा दुःख हुआ। देखा कि बापू कांप रहे हैं। पूछा, "क्या हुआ बापू?" कहने लगे,

"बुखार आवेगा। बोतल लाई?" बाद में मैंने उनकी पीठ और मनु ने उनके पैर दबाये। पेट पर मिट्टी रखते ही बापू को सर्दी लगने लगी थी। उठकर किसी तरह पिछला दरवाजा बंद कर आए, मगर गुसलखाने जाने की हिम्मत न हुई, गिर जाने का डर लगा और इसीलिए मुझे आवाज दी। मन-ही-मन में निश्चय किया कि कुछ भी हो, बापू को अकेले छोड़ के नहीं जाऊंगी। जो कुछ करना होगा, यहीं बैठकर करूंगी और दूसरा कोई पास बैठा होगा तभी उठकर जाऊंगी।

थोड़ी देर बाद उनका कांपना कम हुआ। बुखार ९८.६ डिगरी था। 'ब्लडस्लाइड' लेने का विचार किया। स्लाइडें घर में न थीं। कटेली से कहकर अस्पताल से मंगवाईं। चार बजे खून की फोटो (Blood Smears) लीं। उस समय बुखार १०२.६ डिगरी था। पांच बजे भंडारी आये। तब बुखार १०३.६ डिगरी था। मैंने, भंडारी और डॉ० गिल्डर ने बापू से कुनीन लेने को कहा। मगर वे कहने लगे, "कल बुखार आवेगा तो लूंगा।" हम सबने कहा, "मगर कल तो बुखार की बारी है न?" वे बोले, "तो परसों सही। अगर परसों बुखार आया तो मैं कुनीन लेने में हुज्जत नहीं करूंगा। मैं मानता हूं, आज दोपहर को मैंने कुछ भी न खाया होता तो बुखार आने वाला नहीं था। अब मुझे खाना छोड़ने का उपचार करके देखने दो।" आखिर हम लोगों ने आग्रह छोड़ दिया। बुखार में उनके साथ दलील करके उन्हें थकाना ठीक नहीं लगा।

भंडारी के जाने के बाद बापू को सरसाम होने के कुछ आसार दीख पड़े। बापू पांच-पांच, दस-दस मिनट पर समय पूछते थे। एक बार तो हठपूर्वक पेशाब करने गुसलखाने गये। बाद में उन्हें यह बात याद तक नहीं रही। साढ़े पांच बजे हम लोगों से घूमने जाने को कहने लगे। उन्हें लगा कि साढ़े सात बजे गए हैं। छः बजे बुखार उतरना शुरू हुआ। रात को नौ बजे ९९.६ डिगरी था। पसीना खूब आया। नींद भी अच्छी ली। खाने में नीबू का पानी तथा शहद लिया।

१५ अप्रैल '४४

आज महादेवभाई का मृत्यु-दिन है। मैं सोचती हूं कि बापू के बुखार के कारण वे कितने घबरा गए होते और बा का तो न जाने क्या हाल होता!

कल बापू कह रहे थे, "अच्छा हुआ, बा के सामने मुझे बुखार नहीं आया, नहीं तो बा तुम सबको मेरी सेवा में धकेलती और खुद किसी की सेवा न लेती।" मैंने कहा, "वह तो है ही। मगर वे तो उससे भी आगे जातीं। बीमार होकर भी वे उठकर आपकी सेवा करने लगतीं।" बापू बोले, "हां, बा का काम ऐसा ही है।"

फिर जरा संभले। कहने लगे, "मैंने कहा, 'ऐसा है', मगर कहना चाहिए था, 'ऐसा था।' " मैं बोली, "आपके लिए तो बा आज भी हाजिर हैं, चली थोड़े ही गई हैं।" बापू ने कहा, "हां, यह ठीक है।"

दोपहर को उन्हें बुखार न लगता था, मगर पेट पर मिट्टी रखकर बुखार मापा तो ९९.६ डिगरी निकला। सुबह बापू समाधि-स्थान पर आये थे। समाधि की शोभा अद्भुत थी। बहुत सुंदर फूल सजाये थे। बाद में मीराबहन के बाल-कृष्ण मंदिर में भी गये थे। साढ़े चार बजे १०१ डिगरी था। बापू को स्वयं इतना बुखार नहीं लगता था। पांच बजे भंडारी आये तब बापू का बुखार १०२.१ डिगरी था। सबके कहने पर भी बापू ने कुनीन नहीं ली। केवल फलों का रस और मौसंबी के रस में पानी मिलाकर पिया। वे मानते हैं कि इससे कल बुखार नहीं आयेगा। शाम को साढ़े छः बजे उनका बुखार उतरना शुरू हुआ। रात को नौ बजे ९९.४ डिगरी था।

वे दिन भर लेटे रहे और 'कांस्टिपेशन एंड अवर सिविलाइजेशन' किताब पूरी की।

कल से आज उनकी तबीयत अच्छी है।

१६ अप्रैल '४४

सुबह बापू प्रार्थना करने के लिए उठे। दातुन करने गुसलखाने गये और कुर्सी पर बैठकर की। मगर कहते थे कि उन्हें कुर्सी की जरूरत नहीं थी।

साढ़े ग्यारह बजे तक बापू की तबीयत ठीक रही। इतने में मीराबहन ने आकर कहा कि बापू को बेचैनी-सी है और उन्हें बुखार आनेवाला है। मैं आई तब बापू आंखें मूंदे पड़े थे और भाई पांव दबा रहे थे। थोड़ी देर बाद उन्होंने करवट ली तो मैंने बुखार मापने की बात की, मगर बापू ने कहा कि सोकर उठूं तब लेना। एक बजे वे सोकर उठे तो बुखार १०१.७ डिगरी था। मैंने कुनीन लेने की बात की तो बोले कि शाम को लेंगे, मगर बाद में मान गए और सेवाग्राम से आई हुई कुनीन में से अंदाज से तीन ग्रेन ली। उसे नीबू के रस में घोलकर छः औंस पानी और थोड़ा-सा सोडा बाईकार्ब डाला तब धीरे-धीरे दस मिनट में उस कड़ुवे शरबत को पिया। पीते जाते थे और मजाक में कहते जाते थे, "खूब, बहुत खूब।" हमसे (मनु और मुझसे) कहते थे, "तुम भी बोलो, 'बहुत खूब।'" बाद में अफीमचियों का किस्सा सुनाने लगे। फिर नीलाम की बातें करते रहे। मनु हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई। मैंने दो-तीन बार कहा, "बापू, बोलने में शक्ति न खर्च करें।" लेकिन वे माने नहीं, "यह तो कुनीन का अमल चढ़ाने के लिए है। 'राम अमल मां राता माता'...।" भजन की यह कड़ी दो-तीन बार जोर-जोर से बोले। मुझे शक होने लगा कि यह बुखार का दिमाग पर असर तो नहीं है। था कुछ ऐसा ही।

कुनीन पी चुकने के बाद ही उन्हें जोर-जोर से सर्दी लगनी शुरू हुई। बहुत कांपने लगे। पौने दो बजे उल्टी हुई, पीछे चुपचाप पड़े रहे। सवा दो बजे भाई ने मुझ से आग्रहपूर्वक आराम लेने को कहा। तीन बजे जब मैं वापस आई तो पता चला कि ढाई बजे फिर उल्टी हुई थी। उस समय बापू बहुत थक गए थे, पेशाब भी हुआ था। मैंने पेशाब देखा, उसमें उल्टी पड़ी थी—पीली, पित्त की उल्टी थी। मैंने बापू से पूछा कि मतली शांत हुई या नहीं तो कहने लगे कि अब शांत है। कुछ पानी वगैरा लेने को कहा तो इंकार कर दिया। थर्मामीटर कांपते हुए हाथ से मुंह में रखकर उन्होंने बुखार मापा तो १०४.८ निकला। उन्होंने कई बार कहा कि गुसलखाने जायंगे; मगर रोकने से रुक गए। बोतल में पेशाब किया। वे बुखार की बेहोशी में बोल रहे थे। मैंने डॉ० गिल्डर की सहायता से उनको स्पंज किया और सिर तथा

पेट पर ठंडी मिट्टी रखी। बुखार उतरना शुरू हुआ। मीराबहन ने श्री कटेली से कहलाया कि दीनशा को बुला दें। पांच बजे भंडारी और दीनशा आए। सवेरे जब भंडारी आये थे तब बापू अच्छे थे और वे उनसे ऊपर छत पर सोने को कह रहे थे कि जिससे मच्छरों से बचाव हो सके।

दीनशा बिना कुनीन के इलाज करने की बात कह रहे थे। मैंने और डॉ० गिल्डर ने विरोध किया। बिना कुनीन लिये बुखार रुक भी जाय और बार-बार आए तो यह खतरा उठाना हम नहीं पसंद करते थे। बापू के लिए एक ऊंचा पलंग बिछाया। रात में पौने सात बजे वे सो गए और साढ़े सात तक सोये। खूब पसीना आया। भीगे हुए कपड़े बदलकर पीछे कुनीन की दूसरी मात्रा दी। इस बार उसमें दो औंस पानी डाला। ऊपर से मौसंबी का रस पिलाया। थोड़ी देर तक मतली हुई, फिर थम गई। आठ बज गए थे।

बापू का बुखार ९८.४ डिगरी रहा। कमजोरी अभी काफी है।

१७ अप्रैल '४४

बापू को आज तीन खूराक कुनीन (एक बार में तीन ग्रेन की मात्रा) दी। उन्होंने मौसंबी का रस, नीबू, पानी और शहद ही लिया। दूध नहीं लिया। उन्हें चार दस्त आये, चौथा कुछ पतला आया। इसलिए डर लगने लगा कि अधिक दस्त आ गए तो काम कठिन हो जायगा।

उनका बुखार आज साधारण से भी नीचे रहा, पर रात को ९९ डिगरी हो गया।

आज उनका मौन दिन है। सुबह पांच बजे वे बोले थे; क्योंकि उनके विचार से अपनी या दूसरों की बीमारी के समय मौन रखना कठिन हो जाता है। बाद में हमेशा की तरह उन्होंने पूरा मौन धारण किया।

सरकार ने एक छोटी-सी विज्ञप्ति बापू की बीमारी के संबंध में अखबारों में दी है। 'टाइम्स' ने इस विज्ञप्ति को स्थान तो मुखपृष्ठ पर ही दिया है, लेकिन इतने छोटे टाइप में कि पहली निगाह में उस पर ध्यान ही नहीं जा पाता। विज्ञप्ति में लिखा था कि गांधीजी को तीन दिन से

मलेरिया है और कमजोरी भी है, किंतु उनकी हालत इस उमर में जितनी अच्छी हो सकती है, उतनी है। लगा कि आखिरी वाक्य लिखकर भविष्य में किसी भी प्रकार की गंभीर स्थिति पैदा होने पर सरकार ने अपना बचाव कर लिया है।

शाम को बापू बालकृष्ण-मंदिर में पहियेवाली कुर्सी पर बैठकर गये और बरामदे का एक चक्कर लगाया।

१८ अप्रैल '४४

बापू की आज बुखार की बारी थी, पर बुखार नहीं आया। कुनीन की तीन मात्रा लीं। कुनीन तो लेते ही हैं, दूध लेना भी शुरू किया है। शाम को वे कुर्सी पर बैठकर समाधि-स्थान पर आये। वहां से लौटकर थोड़ी देर नीचे ही हवादार स्थान में बैठे। सब सामान नीचे लाए। सिपाहियों की लालटैन ली और प्रार्थना की, किंतु लालटेन का तेल कम होने से रामायण की एक ही चौपाई हो सकी।

कर्नल शाह बाहर गये हुए हैं, इसलिए भंडारी को रोज यहां आना पड़ता है।

रात में सख्त गर्मी पड़ी। अब तो ऋतु-परिवर्तन हो गया है और गर्मी के दिन आरंभ हो गए हैं।

: ८० :

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

१९ अप्रैल '४४

आज सुबह बापू ने कुनीन नहीं ली। उन्हें चक्कर-से आने लगे हैं और कम सुनाई देने लगा है। कहते थे कि मेरा सिर चकराया हुआ-सा महसूस होता है। कुनीन बंद कर देना चाहते थे। बहुत समझाने-बुझाने के बाद उन्होंने और दो दिन तक तीन-तीन ग्रेन की मात्रा में कुनीन लेना स्वीकार किया था, किंतु आज फिर छोड़ दिया। बुखार नहीं

आया और सुबह-शाम चलकर समाधियों तक गये। थकान महसूस नहीं हुई।

रात में सोते समय भी कुनीन की ही बातें करते रहे। कुनीन लेना उन्हें अच्छा नहीं लगता।

२० अप्रैल '४४

सुबह प्रार्थना के बाद बापू सोये नहीं। दोपहर को अच्छी नींद ली। दोपहर के भोजन के बाद बापू भाई से बोले, "मुझे लगता है कि मनु की भलाई अब उसे यहां से भेज देने में है। वह बा की खातिर आई थी, सो अब वह बात तो रही नहीं। मेरी सेवा के लिए रखने का तो कभी सवाल था ही नहीं। मुझे सेवा की आवश्यकता भी नहीं है। रहा उसे उसके अभ्यास के लिए यहां रखने का प्रश्न। सो मुझमें अब वह आत्म-विश्वास नहीं है जो पहले था कि मैं उसे बहुत कुछ दे सकूंगा। इसलिए उसे रखने का उत्साह नहीं होता। मैं मानता था कि वह जो मुझसे पा सकती है, वह कहीं से नहीं पा सकती, मगर आज मैं टूट गया हूं। मैं मानता था कि मुझे मलेरिया कभी नहीं आवेगा, तुम सबको भले ही आ सकता है, मगर मेरा वह घमंड दूर हुआ। मैंने हमेशा माना है कि मनुष्य बीमार पड़ता है अपने पाप के कारण। जिसका अपने मन पर पूरा काबू है, जिसका मन पूर्णतः स्वस्थ है, वह बीमार नहीं पड़ सकता। मैं कहां हूं, यह नहीं जानता, मगर अपने-आपको जहां मानता था, वहां तो नहीं हूं। इस विचार ने आज मुझ पर काबू पा लिया है। मेरे मन की कैसी दयाजनक स्थिति है, वह तुम लोग नहीं जानते हो।"

मैंने कहा, "यह तो मलेरिया के कारण आई हुई कमजोरी और कुनीन का असर है। थोड़े दिनों में यह सब दूर हो जायगा। शरीर में शक्ति आवेगी और उदासी चली जायगी।"

बापू बोले, "शरीर में शक्ति भले आ जावे, मगर पहले-जैसा आत्म-विश्वास कैसे वापस आ सकता है।"

मैंने उत्तर दिया, "मलेरिया तो आपको पहले भी आ चुका है—सेवाग्राम में, साबरमती में, चंपारन में। उससे तो आप निराश नहीं हुए। फिर

ऐसा क्यों सोचते हैं? उसके बाद भी तो आपने बड़े-बड़े काम किये हैं।"

बापू कहने लगे, "काम तो अब भी करूंगा। चंपारन में मलेरिया आया था, तब से लेकर आज पच्चीस वर्षों में क्या मैंने कुछ भी प्रगति नहीं की? मैं मानता था कि मैं उस स्थिति से बहुत आगे बढ़ गया हूं, मगर अब उस मान्यता के विषय में शक पैदा हो गया है।"

भाई ने समझाया, "आध्यात्मिक दृष्टि से तो आप आगे बढ़े हैं, पर समय के बीतने के साथ-साथ शरीर जीर्ण भी तो होता है न।"

बापू बोले, "नहीं, शरीर दुर्बल भले हो, लेकिन जिसने अध्यात्म में प्रगति की है, वह बीमार नहीं पड़ता। उसकी सब शक्तियां और स्वास्थ्य अंत तक कायम रहते हैं।"

भाई ने कहा, "दूसरे शब्दों में वह जीवन्मुक्त हो जाता है। मैं आपकी बात समझता हूं। यह तो एक तरह की सिद्धावस्था की बात हुई, सो उस तक आप नहीं पहुंचे।"

बापू कहने लगे, "सिद्धावस्था की भी बात नहीं है। हां, जहां तक मैं अपने को पहुंचा हुआ मानता था, वहांतक नहीं पहुंच पाया हूं।"

मैं बोली, "आप किसी भी पहुंचे हुए, अत्यंत संयमी, पूर्ण स्वस्थ मनवाले व्यक्ति को लाइये, मैं उसे मलेरिया का बुखार चढ़ा देने का ठेका लेती हूं। एक दफा नहीं तो दस दफा मच्छरों के काटने से उसे मलेरिया होगा और वह कुनीन से उतर भी जावेगा।"

बापू ने कहा, "इस बुद्धिवाद से तू मेरी मान्यता को हिला नहीं सकेगी। मैं जानता हूं कि अपनी बात सिद्ध करने के लिए मेरे पास सबूत नहीं है, तो भी मेरी वर्षों की यह मान्यता है कि जिसका मन पूर्णतः स्वस्थ यानी स्वच्छ है, उसका शरीर स्वस्थ रहना ही चाहिए।"

दोपहर को बापू ने दही लिया और शाम के समय दूध तथा सवेरे केवल फल का रस लिया। तबीयत ठीक है, पर कमजोरी बहुत आ गई है।

शाम को बापू ने जेल-बदली और मनु को छुड़वाने के विषय में सरकार को पत्र लिखा। मनु वाला पत्र मनु के आग्रह के वश नहीं भेजा।

२१ अप्रैल '४४

सुबह प्रार्थना के बाद बापू सोये नहीं। रात को अच्छी नींद ली।

बापू ने कल कुल मिलाकर एक पौंड भोजन लिया था; दूध-दही मिलाकर आज सवा पौंड लिया। चीजें सब कल की जैसी ही थीं। सुबह मौसंबी का रस, दोपहर को दही और शाम को दूध। कुनीन खाने का कोर्स आज पूरा हो गया।

शाम को सरकार द्वारा भेजे हुए बा की मृत्य के संबंध में सहानुभूति-सूचक वहुत-से पत्र आये। बा पर लिखी हुई टॉमस की किताब भी आई है। पहले ही पन्ने पर लिखा था कि बा के तीन ही लड़के जीवित हैं—रामदासभाई को उन्होंने छोड़ ही दिया है। अंदर कितना सही लिखा होगा, वह कौन जाने। सुवह-शाम जितनी शक्ति हो, उतना बापू ने चलना आरंभ किया, मगर बहुत चलने की शक्ति उनके पैरों में नहीं। बस एक चक्कर बगीचे का लगाया।

२२ अप्रैल '४४

आज बा की मृत्यु का दिन है। उन्हें गए दो महीने पूरे हो गए। बा के बिना बापू को अपना जीवन बिताना आज भी करीब उतना ही कठिन है, जितना कि बा के जाने के बाद पहले हफ्ते में था। शायद ही बापू पूरी तरह से वैसा कर सकें। उनके मलेरिया-ग्रस्त होने में एक कारण यह भी है। बा के चले जाने से उनका शरीर इतना दुर्बल हो गया कि मलेरिया का सामना करने की शक्ति बहुत कम हो गई। सो मलेरिया आया।

प्रातः ८ वजे फूल चढ़ाने गये, लौटकर सीधे ऊपर आये। बगीचे में एक भी चक्कर नहीं लगाया। पहले दिन की दो खूराकों से ही उनका बुखार उतर गया। वे मानते हैं कि बाद में दी हुई कुनीन अनावश्यक थी।

बा की स्मृति में कैदियों को सब्जी, कढ़ी और खिचड़ी खिलाई गई। सिपाहियों ने भी खाया-पिया।

दोपहर बाद ३ से ४ बजे तक सबने काता। डॉ० गिल्डर ने एक घंटे में ११० तार निकाले। यह बड़ी अच्छी प्रगति है।

शाम को ७-३५ से ९ बजे तक प्रार्थना, रामायण और गीता-पारायण हुआ।

२३ अप्रैल '४४

आजकल खूब लू चलने लगी है। बापू के कमरे में परसाल की तरह दोनों ओर खस की टट्टी लगी रहती है। परसाल जब बा को बापू के कमरे में लगी टट्टियों की ठंढक न सहन हो सकी और जब बापू ने देखा कि बा भाई के कमरे में सोने जाती हैं तो खुद गरमी सहन करना पसंद किया और कमरे की टट्टियां निकलवा दी थीं।

बापू की देसी मच्छरदानी इतनी मोटी थी कि उसमें हवा भी ठीक से न जा पाती थी, इसलिए श्री कटेली से कहकर दूसरी बारीक कपड़े की मच्छरदानी बनवाई है। बहुत अच्छी है।

बापू ने सुबह-शाम समाधि पर जाने का समय ८ बजे का रखा था, मगर सुबह खूब धूप होती है, इसलिए कल से पौने आठ या उससे भी जल्दी आया करेंगे। दो-तीन रोज से, जब से बापू समाधि पर आने लगे हैं तब से...वगैरा सिपाही समाधियों को हमारे आने से पहले अच्छी तरह सजा रखते हैं, पर आज बापू कहने लगे, "अपने हाथ से सजावट करना ज्यादा अच्छा लगता है।" इसलिए मैंने कल से सुबह साढ़े सात बजे जाकर फूल सजाने का निश्चय किया है।

मेरी भजनावली की जिल्द टूट गई थी। बापू की बताई हुई विधि से सुधारी जाने पर अब वह अच्छी बन गई है। महादेवभाई ने इसे मुझे भेंट किया था। उनके अवसान पर उनकी जेब से एक गीता निकली थी, जो मेरे ही पास है।

बापू में अब काफी शक्ति आ गई है, इसलिए घूमते समय खूब हँसी होती रही। वे अच्छी तरह घूमे।

भंडारी के आने पर बापू ने पूछा कि छत पर जाने के विषय में वे

क्या कहते हैं। भंडारी ने कहा कि छत पर से मधुमक्खियां उड़ा दी जायं तव जाया जा सकता है।

वाद में मधुमक्खियों की ही चर्चा होती रही।

२४ अप्रैल '४४

आज बापू का मौन है।

मेरी आंख दुखती थी, इसलिए खाने के बाद आंख पर मिट्टी रखकर सो गई। बड़ा फायदा हुआ।

भाई की रामायण की जिल्द सुधारी और रात को टॉमस की किताब पढ़नी शुरू की।

बा की मृत्यु पर सहानुभूति के पत्रों का वंबई सरकार का भेजा एक ढेर और आ गया है।

२५ अप्रैल '४४

बापू पौने आठ बजे फूल चढ़ाने गए और सवा आठ बजे वापस आये। शाम को भी इसी तरह आधा घंटा घूमे। दोपहर को बा के विषय में लिखी टॉमस की किताब मैंने पूरी कर ली और कुछ डॉक्टरी का अभ्यास किया।

२७ अप्रैल '४४

आज मैंने भंडारी से बापू के रक्त की परीक्षा कराने तथा हृदय की धड़कन का फोटो लेने के लिए कहा। आजकल बापू का रक्तचाप बहुत कम रहता है। चढ़ाव पर १४० के आसपास और उतार पर ८०-९० के बीच है, इसलिए दिल की धड़कन का फोटो लेना अच्छा है।

भंडारी कहने लगे, "कुनीन का असर तो यह नहीं है?"

डॉ० गिल्डर ने कहा, "नहीं, कुनीन तो उलटी नाड़ियों को सिकोड़ती है, इसीलिए तो कुनीन से अंधापन हो जाता है।" इस पर से नस में कुनीन देने की बात चली और पेशाब में शक्कर आने की बातें भी होती रहीं।

प्रार्थना के बाद बापू का रक्तचाप १२६/७८-८० रहा। यह बहुत कम है। मैंने बा के स्मरण लिखने शुरू किये हैं। मैं उनके इतना निकट

रही हूं कि यही नहीं तय कर पाती कि क्या लिखूं और क्या न लिखूं। ज्यों-ज्यों विचार आते हैं, लिखती चली जाती हूं। बापू जब देखेंगे तब पता चलेगा कि उसमें कुछ तथ्य हैं या नहीं।

२८ अप्रैल '४४

सुबह भंडारी आये तो पूछने लगे कि बापू का खून परीक्षा के लिए कब भेजोगे? डॉ० गिल्डर ने बताया कि डॉ० नरोना रक्त-परीक्षा करने आ रहे हैं, तभी वह भी कर लेंगे। इसलिए दो-दो बार बापू के शरीर में सूई क्यों चुभोई जाये?

भंडारी ने जाकर इंतजाम किया। श्री कटेली ने बताया कि डॉ० नरोना बारह बजे आवेंगे। भंडारी उसे लेकर करीब साढ़े बारह बजे आये और नरोना ने परीक्षा के लिए बापू का रक्त लिया।

बा की मृत्यु पर लिखे गए बहुत-से समवेदनात्मक पत्र आज फिर आये। जलसेना के एक अफसर के पत्र में लिखा है—"आज मैं ऐसे धंधे में पड़ा हूं कि आप कल्पना तक नहीं कर सकते कि मैं आपका कितना बड़ा भक्त हूं। आपकी तरफ देखता हूं और आपके आदर्श को मानता हूं। इस लड़ाई के अंत पर बहुत-से लोग यहां ऐसे हैं, जो आप पर आशा लगाए बैठे हैं।"

साढ़े चार बजे शाम को भंडारी के कथनानुसार श्री कोयाजी की मशीन आई। बापू के दिल की धड़कन का फोटो लिया गया और मशीन वापस गई। छः बजे ही खबर मिल गई कि कोई नया दोष नहीं है। हृदय के बाएं तरफ का जोर तो पुरानी चीज है।

२९ अप्रैल '४४

प्रातः ५ बजे बापू प्रार्थना के लिए उठे। उस वक्त रोज की तरह शहद और पानी पिया। नाश्ता छोड़ा, खाट पर पड़े रहे। यूरिया क्लीयरेंस टेस्ट[1] के लिए डॉ० गज्जर आनेवाले थे, पर सवा आठ बजे श्री कटेली ने कहा कि फोन किया गया था, लेकिन डॉ० आए नहीं। बापू

१. गुर्दों की खून में से यूरिया निकालने की गति।

को नाश्ता करवा दिया जाय। इतने में डॉ० गज्जर अपने दो सहायकों के साथ आ पहुँचे। बापू का पेशाब इकट्ठा किया और साढ़े नौ बजे बापू का खून लिया। खून की सामान्य परीक्षा यहीं कर ली गई। हेमोग्लोबीन (Haemoglobin) ८५ प्रतिशत, आर० बी० सी० ३७ लाख। मेक्रोसिटिक एनीमिया (Macrocytic anaemia)[1] लगता था।

खून की रासायनिक जांच के खयाल से डॉ० गज्जर वगैरा ने पौने ग्यारह बजे की गाड़ी से जाने का विचार किया, इसलिए मनु ने उन्हें नाश्ता कराकर भेजा। उनका नौकर बापू का पेशाब लेकर दोपहर की गाड़ी से जायगा।

: ८१ :

सरकार की चिंता

साढ़े दस बजे बापू को संतरे का रस दिया। बाद में जब वे भोजन कर रहे थे तब थके-से लगते थे। अभी खा ही रहे थे कि १२॥ बजे श्री कटेली आये और बोले कि जनरल कैंडी आये हैं। मैं नोटबुक लेकर उनके पास गई और उन्हें बापू का सारा हाल बताया। इतने में डॉ० गिल्डर भी आये। कैंडी ने आकर बापू को देखा और ज्यादा मात्रा में कुनीन खाने और 'आयरन टॉनिक' लेने को कहा। बापू की खूराक कैसे बढ़े, यह भी समझाते रहे। कुछ देर बाद वे कहने लगे, "देखने में तो खासे अच्छे दिखते हैं, मगर उसका कुछ महत्त्व नहीं है। अगर रक्तचाप १४० डिगरी से नीचे न जाय तो चिंता की बात नहीं।"

उन्हें लगा कि बापू को शायद इंफ्लुएंजा हुआ होगा, मगर हमने बताया कि खून में मलेरिया के जन्तु मिले हैं। टॉनिक वगैरा देने की बात करके वे चले गए।

---

१. रक्तहीनता का एक प्रकार का रोग।

दोपहर के समय मैंने अखबार में देखा कि बापू की बीमारी के कारण सरकार बहुत घबरा गई है।

आज ९ बजे रात को बत्तियां बुझाकर हमें मच्छरदानी में घुस जाने का हुक्म मिला। शहद की मक्खियों को भगाने के लिए आदमी आया है।

३० अप्रैल '४४

बापू ने 'हाउ ग्रीन वाज माइ वैली' पढ़कर पूरी कर ली। मेरे पूछने पर बोले, "अच्छी है, मगर तू न कहती तो मैं अपने-आप इसे पढ़नेवाला न था। यह किताब ऐसी नहीं है कि न पढ़ा हो तो ऐसा लगे कि कुछ रह गया।"

रात को खबर मिली कि कल डॉ० बिधान राय बापू को देखने आवेंगे। पांच बजे की गाड़ी से आकर आठ बजे की गाड़ी से वापस जाना चाहते हैं। यहां साढ़े पांच बजे सुबह आनेवाले थे।

कल से बापू ने प्रार्थना में रामायण की एक चौपाई नियत कर दी है, बाद में उसका अर्थ गुजराती में कर देने का आदेश दिया है, ताकि डॉ० गिल्डर भी अच्छी तरह चौपाई को समझ सकें।

१ मई '४४

डॉ० बिधान राय ५॥ के बजाय ७ बजे आये। कहने लगे, "कल मैं यहां से गुजरा था तब मुझे नहीं बताया गया कि बापू को देखना है।" भंडारी ने कहा, "मैंने तो कल कहा था न कि ग्यारह बजे तक ठहरो, मगर आप ठहरे ही नहीं।" डॉ० बिधान राय बोले, "उपवास के बाद के कड़ुवे अनुभव के बाद मैं इस तरह कैसे ठहर सकता था।"

डॉ० बिधान राय ने बताया कि बापू को छोड़ने के लिए विलायत में बड़ी हलचल हो रही है। हिंद-मंत्री को समाचार मिला है कि बापू अस्वस्थ हैं। दूसरे ही दिन श्री कैंडी की रिपोर्ट छपी कि 'बापू पहले से अच्छे हैं। रक्तचाप और रक्तहीनता की दशा पिछले २४ घंटों में काफी सुधरी है।' पिछले वाक्य से लोगों, खासकर डॉक्टरों को अवश्य ही लगा होगा कि रिपोर्ट विश्वास के लायक नहीं है। रक्तहीनता एक ही दिन में कैसे सुधर सकती है? डॉ० गज्जर की रिपोर्ट छपी कि गुर्दे

अच्छी तरह काम नहीं कर रहे हैं। इस पर डॉ० बिधान राय ने पूछा, "हमें ठीक-ठीक बताना था कि क्या हाल रहा बापू का ?" भंडारी ने कहा, "मैंने तो कई बार कहा था कि आप आवें।" खैर जो कुछ भी हो, डॉ० बिधान राय आये, यह हमें अच्छा लगा।

बापू को देखकर वे हम लोगों से सलाह करने बैठे। डॉ० गज्जर को वे कल फिर बुला रहे हैं। 'यूरिया क्लीयरेंस' फिर करावेंगे और कुछ दूसरी परीक्षाएं करेंगे। तब अपनी रिपोर्ट देंगे।

पौने आठ बजे डॉ० बिधान राय चले गए। डॉ० गज्जर की रिपोर्ट से जनता में कुछ चिंता बढ़ गई। आशा है कि गुर्दों पर यह असर स्थायी नहीं रहेगा।

मनु की उंगली पर 'ह्विटलो' होने की तैयारी है। मैंने और डॉ० गिल्डर ने बापू के लिए आंख का डॉक्टर और मालिश के लिए दीनशा को भेजने के लिए भंडारी से कहा।

२ मई '४४

डॉ० गज्जर अपने सहायकों के साथ छः बजे सबेरे आये। ६-२० पर बापू उठे, तब उनकी परीक्षा करके वे लोग सवा आठ की गाड़ी से वापस गये। साढ़े आठ बजे पेशाब लेकर जमादार...११-३० की गाड़ी से गया।

कल फिर २४ घंटे का पेशाब लेकर जाना पड़ेगा।

बापू जब खाना खा रहे थे तब भंडारी आए। कहने लगे, "आंख का डॉक्टर भेजेंगे। दीनशा के बारे में पुछवाया है।" शाम को खबर मिली कि दीनशा आ सकेंगे। मैंने बापू से पूछा, "दीनशा यहां कितने समय तक ठहरेंगे?" बापू बोले, "मैं इस तरह बंधना नहीं चाहता। बांधोगे तो मुझे दीनशा नहीं चाहिए। आवेगा तो जितना समय उसे आवश्यक लगेगा, रहेगा।"

जेल-बदली के विषय में बापू को भंडारी ने बताया कि विचार किया जा रहा है। बाद में डॉ० गिल्डर से कह रहे थे कि क्या १०० मील का मोटर-सफर कर सकेंगे? सोचा कि क्या अहमदनगर ले जावेंगे? अगर

ऐसा हो तो किस-किस को साथ ले जावेंगे ? वहां बापू को वर्किंग कमेटी के साथ रखेंगे या नहीं ?

दोपहर को बापू का रक्तचाप १२६/७८ और रात में १३४/७६ रहा। थोड़ा ज्यादा रहे तो अच्छा हो।

यहां से बदली करने के बारे में बापू कहने लगे, "ये लोग दूसरी चीजों पर करोड़ों रुपए व्यर्थ ही जाया करते हैं, इसलिए मेरे पर भी कुछ करें तो क्या हुआ—यह दलील गलत है। मैं हिंदुस्तान का पैसा इस तरह से क्यों खर्च कराऊं ? ये लोग अपनी जेब से कहां निकालते हैं ? निकलता तो सब मेरी ही जेब से है न, हिंदुस्तान की जेब से ही तो ! यहां दो मृत्युएं हुई हैं, इसीलिए ये मुझे यहां से हटाने की बात करते हैं। मगर मेरे सामने वह सवाल नहीं। उलटा उस कारण से तो मुझे यह जगह प्रिय है। समाधि पर जाना मुझे अच्छा लगता है, मगर हिंदुस्तान का पैसा बचाने के लिए मैं वह त्याग करने को तैयार हूं। मलेरिया का भी मेरे सामने सवाल नहीं। हिंदुस्तान में ऐसी कौन-सी जगह है, जहां मलेरिया न हो ? मेरे सामने एक ही सवाल है—खर्च का। वह कम होना ही चाहिए।"

मुलाकातों के बारे में बापू कहने लगे, "मैंने अपने लिए एक नियम बना रखा है, इसलिए केवल रिश्तेदारों से ही मैं नहीं मिलना चाहता। बा की बात और थी।"

अपनी बीमारी के कारण छूटने के विषय में बोले, "इसमें मुझे रस नहीं है। बा के जाने का मुझे बहुत आघात पहुंचा है। अभी तक है, मगर बुद्धि से मैं जानता हूं कि बा के लिए इससे अच्छी मृत्यु हो ही नहीं सकती थी। जो बात बा को लागू होती थी, वह मुझे भी लागू होती है। इसका यह अर्थ नहीं कि मैं मरना चाहता हूं। मैं जिंदा रहना चाहता हूं और भगवान से मांगता हूं कि मुझे यहां से जिंदा बाहर ले जाय और जब मैं बाहर जाऊं तब मेरे लिए कार्य-क्षेत्र तैयार हो। बीमार होकर निकलना मुझे चुभता है। सत्याग्रही को वह शोभा नहीं देता और आज की परिस्थिति में मैं निकलकर करूंगा भी क्या ?"

मैंने कहा, "पहले तो शरीर को फिर से संगठित करना होगा। अपेंडिक्स के ऑपरेशन के बाद उसी तरह जाना पड़ा था न।" बापू बोले, "सरकार छोड़ ही दे तो मैं क्या कर सकता हूं, मगर मुझे यह अच्छा नहीं लगता। इस हालत में बाहर जाकर मैं चुपचाप पड़ा भी नहीं रह सकता।"

३ मई '४४

दोपहर को भंडारी आंख के एक डाक्टर को लाये। उन्हें 'फंडस' (Fundus)[1] में कुछ मिला नहीं। बात-बात में पता चला कि डॉ० ने मेरे कॉलेज की एक पंजाबी लड़की से शादी की है। उसके जाने के बाद बापू पूछने लगे कि क्या डॉ० पंजाबी था? मैंने कहा, "हां पंजाबी ही तो लगता है।" वे बोले, "मैंने उसके साथ हिंदुस्तानी में बात शुरू की, मगर वह साहब तो अंग्रेजी ही चलाता रहा। अगर जरा भी बैठता तो मैं डांटनेवाला था कि हिंदुस्तानी जानते हो या भूल ही गए हो?"

सुबह बापू की मालिश करने के लिए दीनशा आये। मालिश के द्वारा शक्ति किस प्रकार एक शरीर से दूसरे शरीर में भेजी जा सकती है, इस पर बातें होती रहीं।

मुलाकातों के बारे में बापू ने सरकार को लिखा है कि पिछले साल की तरह मुलाकातें देनी हों तो आश्रमवासियों, मित्रों तथा रिश्तेदारों—सबको देनी चाहिए। केवल रिश्तेदारों से मैं मिलना नहीं चाहता।

बापू के अंदर जितना पानी पहुंचता है और जितना निकलता है, उसमें ४०-५० औंस का फर्क दो रोज से मिलता है।

आज बापू का २४ घंटे का पेशाब जमादार डॉ० गज्जर के पास बंबई ले गया। उनकी रिपोर्ट आने पर हम अपनी रिपोर्ट भेजेंगे।

भंडारी बता गए हैं कि कनु आ रहा है।

---

१. आंख के भीतर का एक अवयव।

४ मई '४४

आज डॉ० गिल्डर के पेशाब में 'एल्ब्यूमिन' पाया गया है। बापू ने मुझे भंडारी को इस बारे में लिखने को कहा।

बापू की बदली को लेकर अनेक अफवाहें उड़ रही हैं। देखें, आखिर क्या होता है। दोपहर को कनु आ गया। कह रहा था कि बा के स्मारक-फंड के विषय में कठिनाई हो रही है।

: ८२ :

रिहाई की खबर

५ मई '४४

प्रातः रोज की तरह पौने पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। फिर कल की डायरी लिखी। रात को शहद की मक्खी उड़ानेवाले फिर आये थे, इसलिए रात को लिख न सकी थी। स्नान आदि करके नीचे जाने के लिए उठे तो बापू की घड़ी में पौने आठ बज गए थे। साथ-साथ नीचे गये। समाधि पर प्रार्थना करने के बाद थोड़ा घूमे। सवा आठ बजे ऊपर आये। बापू की मालिश करने मेहता आये। उस समय डॉ० गिल्डर ने और मैंने बापू को लोहा सेवन करने की सलाह दी। डॉ० गिल्डर मेरी तरफ देखकर हँसकर कहने लगे, "यह छोटी-सी लड़की आपको लोहे के चने चबवाने वाली है क्या?" बापू ने दवा मंगाने की इजाजत दे दी, खाने या न खाने का निश्चय बाद में करेंगे। मगर मंगवाई है तो खाएंगे ही—ऐसी आशा है।

डॉ० गज्जर की रिपोर्ट कल आ गई थी, इसलिए उसके आधार पर चार बजे शाम को मैं अपनी रिपोर्ट लिखने बैठी, ताकि गिल्डर का और मेरा मत सरकार को भेज दिया जाय। पत्र तैयार करके डॉ० गिल्डर को दिया, जिससे उनके सुझाव भी जाने जा सकें। बापू का एक्सरे कराने के लिए भी हमने भंडारी को एक पत्र डाला। हमारी रिपोर्ट कल

सरकार को भेजी जावेगी। छः बजे खेल के बाद बापू को खाना दिया। मैं खाने बैठने ही वाली थी कि भंडारी आये। आश्चर्य हुआ कि इस समय क्यों आये हैं। कुछ पहले ही सब कैदी भेज दिये गए थे। उन्हें आज जल्दी जाने का हुक्म था।

भंडारी अचानक बापू के पास आकर बैठ गए और कहने लगे, "कल सुबह आठ बजे आप लोगों को बिना शर्त छोड़ दिया जायगा।" हम सब हैरान हो गए। बापू बोले, "आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं?" भंडारी ने उत्तर दिया, "नहीं जी, आज पत्र आया है। अब दया करके फिर वापस न आना। देखिए, चिंता के कारण मेरे तो बाल भी सफेद हो गए हैं।"

बापू हँसकर बोले, "मैं कहां आता हूं। सरकार लाती है।"

छूटने की खबर सुनते ही मेरे मुंह से निकला, "तीन महीने की देर हो गई। अगर तीन महीने पहले बापू को मलेरिया होता और वे छूट जाते तो शायद आज बा जिंदा होतीं!" बापू ने कहा, "हां, वह बिलकुल संभव था।"

बापू तो इस खबर से बिलकुल घबरा-से गए। एक तो बीमारी के कारण उन्हें छूटना अच्छा नहीं लग रहा है। दूसरे, वे कहते हैं कि बाहर जाकर करूंगा क्या! एक बार कहने लगे, "क्या यह सचमुच सेहत के ही लिए है? मुझे इसमें शक है।" फिर कहने लगे, "नहीं, बस हमें यही मानना चाहिए कि जो वे लोग कहते हैं, वही सही है। वे मुझे सेहत के कारण ही छोड़ रहे हैं।" हम लोग खाना खाने बैठे और तब समाधि पर गए। प्रार्थना के समय जोर की वर्षा हुई। मुझे लगातार बा का विचार आने लगा। उन्हें कितना शौक था बाहर जाने का! मगर उनके नसीब में यहां शहीद होना लिखा था। आगाखां महल में मृत्यु पाकर उन्हें जगदंबा होना था। और आखिर तो वे मां थीं न! शायद उन्हें लगा हो कि महादेव को बिलकुल अकेले कैसे छोड़ा जा सकता है।

श्री कटेली प्रार्थना के बाद बापू को प्रणाम करने आये। सुबह तो अफसर बनकर खड़े रहना पड़ेगा, सो अभी आकर बापू का आशीर्वाद

लिया। उनके हर्ष का पार नहीं है। वे हमेशा यही कहा करते थे, "सब लोग यहां से अपने-अपने घर जावें तो मुझे अच्छा लगेगा। दूसरी जेल में जाना, बिखर जाना, मुझे अच्छा नहीं लगता। सब लोग मेरे लिए तो बिलकुल कुटुंबीजन-से हो गए हैं।" उन्होंने बापू को सुबह प्रार्थना के लिए जगाने को कहा। बोले, "सुबह नहाकर प्रार्थना करनी चाहिए।" डॉ० साहब ने भी उन्हें उठाने को कहा। मनु बड़ी ही खुश है। उसे हमेशा यह डर लगा रहता था कि न जाने कब बापू से अलग कर दी जाय। कहती थी, "मैं हमेशा समाधि पर जाकर प्रार्थना करती थी कि महादेवभाई और बा आशीर्वाद दें कि मुझे बापू से अलग न होना पड़े। ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली।"

मगर बापू को कोई हर्ष नहीं है। गंभीर विचार में पड़े हैं। बोले, "मेरा सिर चकरा रहा है।" मैंने कहा, "बापू, बाहर जाकर बड़ी संभाल रखनी पड़ेगी।" वे कहने लगे, "मैं जानता हूं। बाहर जाकर मुझ पर सब तरफ से प्रहार होनेवाले हैं। यहां की शांति अब खत्म हुई। मुझसे जितना बन पड़ेगा, उतना आराम तो लूंगा, मगर कुछ आराम तो छोड़ना पड़ेगा ही।"

श्री कटेली प्रार्थना में हमारे साथ रामायण पढ़ा करते थे, इसलिए रामायण की एक नकल, जो देवदासभाई लाये थे, बापू ने उन्हें दे दी। कनु ने एक भजनावली और भाई ने 'एपिक फास्ट' की एक प्रति कटेली को दी। बापू का एक फोटो भी उन्हें दिया गया। सब वस्तुओं पर कटेली की इच्छानुसार बापू ने दस्तखत कर दिये। बापू ने पहले ही पुछवा लिया था कि चीजें दस्तखत के साथ हों या बिना दस्तखत के? बापू की मालिश के बाद हम लोग अपना सामान बांधने लगे। बापू ने नोटिस दिया था कि कल सुबह पौने आठ बजे सब कुछ तैयार रहना चाहिए। एक मिनट भी अधिक नहीं मिलेगा। तीन बजे तक सबका सामान बंधकर तैयार हो गया। बापू का सामान, खाने का सामान और दवाइयां वगैरा संभालने में बड़ा समय गया। भाई का सामान तो सबेरे ही बांधा जा सका। चार बजे नहा-धोकर मैं खाट पर पड़ी और पौने पांच बजे प्रार्थना के लिए उठी। एक मिनट भी नींद नहीं ली।

: ८३ :

रिहाई

६ मई '४४

प्रातः पौने पांच बजे सब लोग प्रार्थना के लिए उठे। भाई का सामान बंध रहा था। कनु खूब नींद में था। चार बजे तड़के सोया था। मनु भी थोड़ा ही सोई थी। बापू ने भी रात भर में आध-पौन घंटे की ही नींद ली थी। सब लोग स्नानादि करके प्रार्थना करने आये और 'वैष्णवजन ...' वाला गीत गाया। कल रात 'हरि ने भजता' गाया था। मीरा-बहन ने 'ह्वेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रॉस' गाया था। आज प्रार्थना के समय वे नहीं उठीं।

प्रार्थना के बाद श्री कटेली ने बापू को ७५) भेंट किये। बहुत खुश थे। कहने लगे, "आप बाहर जावेंगे तो अनेक लोग भेंट लावेंगे, मगर सबसे पहले कटेली की भेंट आपके हाथ में पहुंची है।"

प्रार्थना के बाद मैंने कटेली से विदा ली और भूल-चूक के लिए माफ़ी मांगी। उनकी आंखों में पानी आ गया। विवेक की भाषा में बोले, "माफी तो मुझे मांगनी चाहिए।" प्रार्थना के बाद बापू सोए नहीं, एकदम तैयार हो गए। कटेली ने चाय तैयार की थी। उसमें से केवल मैंने ही ली। दूसरे लोग दूध लिया करते हैं। हम सबने बचा हुआ सामान बांधा और व्यवस्थित कर लिया।

साढ़े सात बजे समाधि पर गए। आज की प्रार्थना में 'नम्यो हो', 'ईशावास्यमिदं सर्वं', 'असतोमासद्गमय', 'अउज-अ-बिल्ला', 'मज़दा' और 'ओ गॉड अवर हेल्प इन एजेज़ पास्ट' आदि सभी भाषाओं के भजन और गीता का १२वां अध्याय पढ़ने का कार्यक्रम चला। सबने प्रार्थना के पश्चात समाधियों को अंतिम बार कैदी-ढंग से प्रणाम किया। मेरे हृदय से निकला, 'बा, बापू की रक्षा करना। उन्हें सेहत, दीर्घायु और पूर्ण विजय देना। महादेवभाई, बापू की रक्षा करो और मुझे अपनी ही भांति बापू की सेवा करने की योग्यता और उन्हीं की गोद में कूच कर सकने का वरदान दो।'

पौने आठ बजे भंडारी आये। आठ बजे के पहले छूटना नहीं था। बातें करते रहे। मैंने यह देखना चाहा कि अपने साथ कौन-कौन-सा सामान ले जाऊंगी। सामान देखने पोर्च में गई। देखा कि वहां कलक्टर और एक पुलिस का अफसर बैठा है। मुझे साथ में सामान क्या लेना चाहिए, इसकी चर्चा करते देखकर पुलिस वाला बोला, "आधे घंटे में सारा सामान आपके पास पहुंच जायगा।"

भंडारी की मोटर में बैठकर मैं बापू के साथ तार के अहाते के बाहर निकली ही थी कि एक सिपाही ने कार खड़ी कराई और मुझे एक नोटिस दिया। नोटिस में लिखा था—"आगाखां महल में जो कुछ हुआ है, उसकी चर्चा करने के बारे में तुम्हें मनाही है।" सिपाही ने मुझसे इस पर हस्ताक्षर करने को कहा। मैंने बापू की ओर देखा। बापू ने कहा, "कर दे।" मैंने कर दिए। बापू बाद में कहने लगे, "यह तो मुझे भी दस्तखत करने के लिए दे सकता था, क्यों नहीं दिया सो पता नहीं।" मैंने कहा, "बेचारे अधिकारी डरते होंगे कि कहीं आप यह कहकर अड़ न जायं कि 'तब तो मुझे जाना ही नहीं है', तब वे क्या करेंगे? हां, एक बात बताइये, इस तरह के हुक्म को हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं?" बापू बोले, "पहली बात तो यह है कि दस्तखत किया सो उसका अर्थ यह नहीं है कि स्वीकार किया और दूसरे यह कि मुझे तुम लोगों से किसी तरह का तूफान नहीं करवाना है।"

बाहर के दरवाजे पर ४०-५० आदमी थे। उन्हीं में शांतिकुमार, स्वामी आनंद, जमनादासभाई और सुशीला पै थे। बापू ने किसी को नहीं देखा। मोटर सीधी हमें पर्णकुटीर लाई। कल भंडारी ने कहा था, "आप यहां रहना चाहें तो रह सकते हैं, मगर मेरी सलाह है कि न रहें। यह फौजी इलाका है। अपने लोगों के झुंड आने लगे तो किसी-के साथ भी झगड़ा हो सकता है। पर्णकुटीर में मैं खबर कर दूंगा।" बापू मान गए, सो हम लोग वहीं गए। वहां पर बापू के स्वागतार्थ खड़े हुए लोगों में से बहुतों को मैं नहीं पहचानती थी। जमनादासभाई ने बताया कि उन्हें आयंगर ने बुलाकर सारा हाल बताया था और यहां

इसलिए भेजा था कि मैं बापू से कहूं कि वे धीमे-धीमे चलें; क्योंकि वे नहीं समझते कि उनकी हालत कितनी गंभीर है।

बापू हँसी करते हुए बोले कि मनाही वाले नोटिस के हुक्म की व्याकरण गलत है। मेरे हस्ताक्षर करने के बाद भाई व डॉ॰ गिल्डर ने भी मनाही के हुक्म पर दस्तखत किये थे। डॉ॰ गिल्डर को पहले कुछ शक हुआ था कि नोटिस पर दस्तखत किये जायं या नहीं, पर जब भाई ने कहा, "दस्तखत करने में क्या हर्ज है। उससे यह अर्थ थोड़ा ही निकल सकता है कि हम उसे स्वीकार करते हैं," तब सबने कर दिया।

मिलनेवाले अधिक-से-अधिक संख्या में आ रहे थे। कई लोगों ने तो बापू से खूब ही बातें कीं, यहां तक कि शाम तक बापू एकदम थक गए। सवेरे बापू का रक्तचाप १९२/१०६ था। वे मालिश में भी नहीं सोए। दोपहर को एक घंटा सोए। उसके बाद रक्तचाप गिर गया।

शाम की प्रार्थना में देशपांडे ने 'हरि तुम हरो जन की भीर' वाला भजन गाया। बापू ऊपर छत पर बैठे थे, लोग सामने नीचे बैठे थे। प्रार्थना के बाद हरिजनों के लिए चंदा इकट्ठा किया गया। तब बापू थोड़ा घूमे।

गरम पानी पीने के लिए बापू वापस आने ही वाले थे कि श्री मुंशी और श्रीमती लीलावती, श्री रामेश्वरदास बिड़ला और दूसरे कई लोग आ गए। दस बजे बापू उठे और थोड़ा-सा घूमे। थोड़ी देर में पृथ्वीसिंह की पत्नी वगैरा और दो-चार लोग आ गए। उनके जाने पर ही बापू सोने की तैयारी कर सके। करीब ग्यारह बजे मैं बापू की मालिश वगैरा पूरी करके आई। आकर कमरे का सामान ठीक किया। डायरी लिखने बैठी। बारह बजे उठी। सोने को जा रही थी कि देखा—बापू बरामदे में खड़े हैं। वे बाहर खुले में सोए थे, पर मच्छर इतना काटते थे कि सो नहीं सके। मैंने उनका बिस्तर भीतर लगाया और मच्छरदानी लगाकर पंखा चलाया। मैं स्वयं बरामदे में जमीन पर सोई। बेहद गर्मी पड़ रही थी। खूब मच्छर लग रहे थे।

७ मई '४४

पौने पांच बजे बापू प्रार्थना के लिए उठे। बाद में वे पाखाना गए। तब आकर गादी पर बैठे। थोड़ा नाश्ता किया। कुछ तार-पत्रों के उत्तर भाई को लिखवाये। घूमने को निकले तो थोड़ी धूप निकल आई थी। आगाखां महल में, जिसे हम 'शिमला' कहते थे, बहुत देर से धूप आती थी, इसलिए वहां बापू देर तक घूमते रहते थे।

दीनशा ने साढ़े आठ बजे से बापू की मालिश की और एक घंटे से अधिक की। बापू सोते रहे। उनके स्नान करने के लिए कोई टब नहीं है। एक हौज है। वह इतना लंबा है कि बापू उसमें नीचे खिसकने लगते थे। एक वार तो दीनशा ने पैर पकड़कर और मैंने शरीर थामकर उसमें गिरने से उन्हें बचाया। थोड़ी देर में वे स्वयं उठ गए।

साढ़े ग्यारह बजे स्नान-घर से जब वे वापस आये तो उनका दरबार खचाखच भरा था। श्री मुंशी ने तो खूब ही उनसे बातें कराईं। सरोजिनी नायडू सुबह आ गई थीं। उन्होंने जाकर सबको टोका। श्री मुंशी और ठक्कर बापा ने बा-स्मारक फंड के बारे में बापू से खूब बातें कीं।

दोपहर को श्रीमती भंडारी आईं और कहने लगीं, "मेरे पति के तो बाल सफेद हो गए हैं, मेहरबानी करके अब जेल न आना। अगर आवें तो दो महीने पहले नोटिस दे दें, ताकि मेरे पति छुट्टी पर चले जायं।" भंडारी आये तो बोले, "अब तो आप यरवदा जेल से दूर ही रहें।" रात को गर्मी और मच्छरों के कारण रात भर जागने के कारण बापू अत्यंत थक गए हैं और सोना चाहते हैं, पर सो नहीं पाते। कह रहे थे, "मैं सोना चाहता था, बहुत प्रयत्न किया, मगर नींद ही नहीं आई। बस राम-नाम लेता रहा। आखिर यह कहनेवाला मैं ही तो हूं न कि राम-नाम लेते रहो—एक लाख बार लो, एक करोड़ बार लो, अंत में शांति मिलेगी ही। यह धंधा मैंने किया। उसका परिणाम आज प्रत्यक्ष देख रहा हूं। रात भर का जागरण है, दिन में भी इतना श्रम पड़ा है; मगर मैं ताजा महसूस करता हूं। मुझे कुछ सूझता ही नहीं कि मैं क्या करूंगा, क्या कहूंगा; मगर जिसने आज तक मुझे रास्ता दिखाया है, वही अब भी

रास्ता दिखायेगा। मगर इतना मैं कबूल कर लेता हूं कि मैंने कभी इतना अंधेरा महसूस नहीं किया, जितना आज कर रहा हूं।"

मैंने कहा, "बापू, इसका मुख्य कारण तो शारीरिक दुर्बलता है। उसी से दिमागी थकान भी है। शक्ति आने पर सब ठीक हो जायगा।"

दोपहर को लोग आते ही रहे। काफी भीड़ रही। सीढ़ी के सामने पर्दा लगाया, मगर कोई लाभ नहीं हुआ। सौंद्रम् और रामचंद्रन् आज आये। सौंद्रम् से बहुत-से समाचार मिले। औंधवाले अप्पाजी अपनी पत्नी समेत आये। उनकी पत्नी डॉक्टर हैं।

शाम को मुलाकातियों का तांता लगा रहा और बापू पर बहुत बोझा पड़ा। उन्हें बहुत थकान लगने लगी। प्रार्थना में रेहानाबहन ने भजन गाया। बाद में हरिजनों के लिए रुपए इकट्ठे किये।

दीनशा हम लोगों को शाम के वक्त समाधि पर ले गए। और कई लोग भी साथ थे। फूल चढ़ाकर अगरबत्ती जलाई और प्रार्थना की। हमारी इच्छा थी कि जितने दिन हम यहां हैं, समाधि पर प्रार्थना करने जाया करें। कल की थी और आज भी कर ली।

समाधि पर से लौटे तब बापू मौन ले चुके थे।

हम लोग समाधि पर थे, तभी से तूफान की तैयारी थी। रात में थोड़ी वर्षा हुई। हवा ठंढी हो गई। बापू रात भर अच्छी तरह सोए।

पुस्तकालय
आगत नं. 2033
दिनांक